खोज में उपलब्ध

हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों
का
बीसवाँ त्रैवार्षिक विवरण

[सं० २००४--२००६ वि० (सन् १९४७-४९ ई०)]

द्वितीय भाग

सपादक

डा० वासुदेवशरण अग्रवाल

नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी

सं० २०३४ वि०

प्रकाशक—नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

मुद्रक—शंभुनाथ वाजपेयी, नागरी मुद्रण, काशी

प्रथम सस्करण—सबत् २०३४ वि०, ११०० प्रतियाँ

मूल्य : [illegible]

विषय सूची

प्राचीन हस्तलिखित हिंदी ग्रथों की खोज का

बीसवाँ त्रैवार्षिक विवरण

सवत् २००४–२००६ वि० [सन् १९४७-४९]

सख्या १६७ कौशिल्या का बारहमासा, रचयिता—देवीसिंघ, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६ $\frac{७}{८}$ × ६ $\frac{२}{८}$ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—३७, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री परमेसर लुहार, ग्राम–रायपुर (अमेठी), पोस्ट–रायपुर, जिला–सुलतानपुर ।

आदि— :o: :o: :o: :o:

दरसन देयो मेरो प्रानपिआरे । तुम विना कोइ नहीं और हमारे ॥

॥ टेक ॥

कातीक कुंच प्रआग सो कीन्हा । कौसीला सोच करे मन मेरे ॥
राम लछन सीआ वन को साधारे । दसरथ प्रान तजो छन मेरे ॥
दरसन दे मेरे प्रान पीआरे । तुम विन कोइ नही और हमारे ॥

॥ अगहन ॥

अगहन गेल चले वन पीआरे । दरद होत मेरे उर मेरे ॥
चलत चलत जब पैआ पीराने । कोइ न तुम्हरे योही वन मेरे ॥
दरसन दे मेरे प्रान पीआरे । तुम विन कोइ नही और हमारे ॥

अंत—

भादौ वचन सुनत कपी धाए । पुरुव पछीम दछीन मेरे ॥
लै मुदरी हनुमान सीधाए । सीतही षोज करत वन मेरे ॥
दरसन देयो मोर प्रानपीआरे । तुम विनु कोउ ना और हमारे ॥

॥ कुवार ॥

कुआर मास सीआ सुधी पाए । कपी दल साजो लक गढ़ घेरे ॥
रावन सहीत नीसाचर मारे । लवटी आए अजोध्या मेरे ॥
दरसन देयो मेरे प्रानपीआरे । तुम वीना कोउ ना और हमारे ॥

॥ १२ ॥

देवी सींघ सीआ रघुवर के । ध्यान धरे घर बाहर मेरे ॥
तुम विन स्वामी कोइ नाही मेरा । पाय धरौ अब मोरे सीर परे ॥
दरसन देय मोर प्रान पीआरे । तुम वीना कोउ ना और हमारे ॥

इती कौसीला जी का बारहमासा सपुरन सन् १२९५ साल महीना भादौ बदी ८ अस्टमी वुधवार को तैआर हवा मोकाम सहर कलकत्ता साकीम जान बाजार प्रीतमार बाबु के काटी के दरवाजे के सामने दोकान है दोकान के मालीक पचम राम कु मी सो सही दसषत देआल दास का ॥

विषय—श्री रामचद्र जी के वनगमन पर कौसल्या जी का विलाप वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रचना निम्नलिखित रचनाओं के साथ एक हस्तलेख मे है।

१ रामचद्र के बारहमासा—भवानी।
२ बारहमासा—लालदास।
३ रैदास कबीर गस्टी—लालदास।
४ सुदामा की बारहखडी—पतितदास।
५ सुदर कवि हुद हुद की बारहमासा।
६ गरुडपुराण।
७ रामजन्म—सूरजदास।
८ सुदरकाड (रामायण)—तुलसी।
९ वैराग्य सदीपनी—तुलसी।

सख्या १६८क आदिपुराण की बालबोध भाषा वचनिका, रचयिता—दौलतिराम, कागज—देशी, पत्र—५०६, आकार—१२$\frac{3}{4}$॰ × ८$\frac{3}{4}$॰ इच पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—१२०२३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८२४ वि०, लिपिकाल—स० १८६८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर (बडा मदिर), चौडी वाली गली, चौक, लखनऊ।

आदि—श्री जिनाय नमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥ श्री गणधराय नमः ॥ अथ श्री आदिपुराण की बालावबोध भाषा वचनिका लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

प्रणमि सकल सिद्धानिकू प्रणमि सकल जिनराय।
प्रणमि सकल सिद्धात कू नौमिगणधार के पाय ॥ १ ॥

० ० ०

तिनहू भाष्यो ग्रथ यह पूरवरीति प्रमान।
तिनहीके अनुसार मुनि श्रीजिनसेन सुजान ॥२१॥
अर गुणभद्राचारिजा कहते भए पुरान।
सस्कृत वाणी विषै अद्भुत अर्थ निधान ॥२२॥
तापरि भाषा वचनिका भाषू मैं मदिमद।
लेहु सुधारि सुपडिता ग्यानरूप निरद्वद ॥२३॥

० ० ०

आगे श्री आदिपुराण के श्लोकनि परिभाषा रूप वचनिका कहे है ॥ अथानतर श्री जिनसेनाचार्य श्री भगवान रिसभदेव कू नमस्कार करि आदिपुराण का आरभ कहै है ॥

श्री भगवान रिषभदेव अनत चतुष्टय विभूति के स्वामी है ॥ अर केवल ज्ञान रूप चक्रवर्ति पद कू प्राप्त भए हे ॥ धर्मचक्र के धरणहारे ॥ ससार के भय हरणहारे ॥ तीन लोक के नाथ। तिनकू हमारा नमस्कार होऊ ॥ १ ॥ जिनेद्ररूप सूर्य ॥ अज्ञान रूप अधकार के पटल करि आछादित जगत तिनकू उद्योत के कारण केवल ज्ञान आदि अनंतगुण समूह दीप्तिकरि सोभाय-मान तिनकू नमस्कार होऊ ॥ २ ॥ अर जिनराज का सासन जयवत होहु काहुकरि जीत्या न जाय ॥ महातम जाका। पडित किये है कुमारग जाने। अरसदा प्रकास रूप है। मोक्ष लक्ष्मी का एक अद्वितीय कारण है ॥ ३ ॥ रतन त्रय मई जैन शास्त्र जीति का शास्त्र है। सो जयवत होहू। ताकरि अरहत कर्म्म रूप वैरीनि की सेना कू जीतते भये जे भगवान आदिपुरुष इद्रादि देवनि करि पूज्य तिनि राज्य विभव त्रिण समान जानि करि तज्या ॥ ४ ॥ दिगवरी दीक्षाधारी। जिनकेलार इक्ष्वाकवसी भोजवसी वडे वडे च्यार हजार राजा। केवलि स्वामी भक्ति करि यती भये ॥ ५ ॥

अत—आराधिवे योग्य है चरण जाके ॥ ऐसा विश्वभर विश्वनाथ ॥ चक्रनाथ का पिता सो तुम भव्य जीवनिकू साति के अर्थि होहु ॥४०४॥ इत्यर्षे भागवद् गुण भद्राचार्य प्रणीते त्रिषष्टि लक्षण महापुराणे प्रथम तीर्थंकर प्रथम चक्रधर पुराणे चत्वारि सत्तम पर्व ॥४७॥ इति श्री आदि पुराण सपूर्णम् ॥

॥ दोहा ॥

आदिपुराण निधान की भई वचनिका एह ।
ताको कारन भवि सुनौ धरि जिन सासन नेह ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

सब दीपन मैं जम्बूदीप । जैसे मनुषनि में अवनीप ॥
जामैं भरत क्षेत्र सुभरूप । तामैं आरिजखंड अनूप ॥ १ ॥
तामैं देस अनेक विसाल । तिनमैं ढुंढाहर सुरसाल ॥
मध्यदेस के माही एह । तामैं नगर अनेक गनेह ॥ २ ॥
नगर सवाई जैपुर जानि । ताकी सोभा अधिक बखान ॥
जहा भूप माधव वलवान । कछवाहन को तिलक बखान ॥ ३ ॥

o: o. .o

अध्यातम सैली है जहा । रायमल्ल साधर्मी तहा ॥
सो विरकत तपधारक भया । जाके घट जीवनि की दया ॥ ५ ॥
और जहा साधर्मी घने । तिनिके नाम जाय नहि गिने ॥
सुनै पुरान चरित्र अनेक । वह जीवनि की सभा एक ॥ ६ ॥

:o: •o. •o

ते सब साधरमी गुणवान । सुनिकरि पुरान आदि पुराण ॥
सबनि विचारी भाषा होय । तौ धर्म समुझ सब कोय ॥१०॥
रतनचंद दीवान सुज्ञान । जिनमारग के सरधान ॥
तिनको मित्र जु दौलतिराम । ताको तात जु आनंदराम ॥११॥
राजद्वार के सेवक सही । जिन सासन की सरधा गही ॥
कछु यक कीने ग्रंथ अभ्यास । बैठे साधर्मीन के पास ॥१३॥
रतनचन्द्र मेघडिका होय । अर टोडरमल के सुत दोय ॥
॥धादेवीदास गनेह । बालब्रह्मचारी है एह ॥१४॥
भाषा करहु धरहु इहभाव । या सम और न धर्म उपाव ॥
प्रेरक भए मित्र करि राग । जिनके जिन मारग अनुराग ॥१५॥
तब दौलति जपि जपि श्रीजिन नाम । बीतराग कौ करि परिणाम ॥
सब श्लोक निकी भाषा करी । नाना जुक्त मई रस भरी ॥१६॥

:o• :o :o:

॥ दोहा ॥

अठारह सै संवता ता ऊपरि चौबीस ।
कृष्ण पक्ष आसौज की पुण्य नषित्र गरीस ॥२१॥

सुक्रवार एकादसी पूरण भयो ग्रन्थ । होहु कल्याण प्रथी विषै चलौ धर्म कोपथ ॥२२॥
श्री अरिहंत महंत कूं बंदूं वारवार । नमसकार जिनधर्म कूं जामैं दया अपार ॥२३॥
श्रीमत आदि पुरान के श्लोक भाषा अनुमान । तेई साजु सहस्र है बुधजन करहु बखान ॥२४॥

संवत ॥१८६८॥ मिती आषाढ कृष्ण ॥११॥ पुस्तक लिषा वेनीराम अपने पठने निमित्त सुभमस्तु ॥ यादसपुस्तक दृष्ट्वा तादृस लिषतमया यदि शुद्धम शुद्धवा मम दोसो न दीयते ॥ पोथी लिषी लषनऊपुर मध्ये ॥ लषनऊमो राज्य नवाब सहादत्त अलीषा का ॥

विषय—आदिपुराण (जैन) का हिंदी अनुवाद ।

रचनाकाल

अठारह सै संवता ता ऊपरि चौबीस ।
कृष्ण पक्ष आसौज की पुण्य नषित्र गरीस ॥२१॥
सुक्रवार एकादसी पूरण भयो ग्रन्थ ।
होहु कल्याण प्रथी विषै चलौ धर्म को पथ ॥२२॥

संख्या १८६ख आदिपुराण बालबोध भाषा वचनिका, रचयिता—दौलतिराम, कागज—देशी, पत्र—५७५, आकार—१६$\frac{5}{6}$ × ८$\frac{3}{6}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप) २३०००—, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२४ वि०, लिपिकाल—सं० १९०० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर (बडा मंदिर), चूडीवाली गली, चौक, लखनऊ।

आदि—श्री जिनायनमः ॥ श्री सरस्वत्यनमः ॥ अथ श्री आदि पुराण की बालावबोध भाषा वचनिका लिख्यते ॥

॥ दोहरा ॥

प्रणमि सकल सिद्धांतिकू प्रणमि सकल जिनराय।
प्रणमि सकल सिद्धांत कू नमिगणधर के पाय॥ १॥
.० ० ०.
अर गुणभद्राचार्यजी कहते भये पुराण।
संस्कृत वाणी विषे अद्भुत अर्थ निधान॥२१॥
तापर भाषा वचनिका भाषू मैमति मंद।
लेहु सुधारि सुपंडिता ध्यानरूप निरद्वंद॥२२॥
० ० ०

आगे श्री आदिपुराण के श्लोकनि परि भाषा रूप वचनिका कहै है अथनंतर श्रीवर श्री जिनसेनाचार्य श्री भगवान रिषभदेव कू नमस्कार करि आदि पुरान आरंभ कहै है॥

श्री भगवान रिषभदेव अनंत अनंत विभूति के स्वामी है॥ अर केवल ज्ञानरूप चक्रवर्ति पदकू प्राप्त भये है॥ धर्म चक्र के धरणहारे॥ संसार के भयहरणहारे॥ तीनिलोक के नाथ तिनकू हमारा नमस्कार होउ॥ १॥

अंत—

॥ दोहा ॥

आदि पुराण निधान की भई वचनिका एह।
ताको कारण भवि सुनो धरि जिन सासन नेह॥ १॥

॥ चोपाई ॥

सब दीपन मे जंबूदीप। जसे मनुषनि मे अवनीप॥
जामें भरथक्षेत्र सुभरूप। नाम आरजखंड अनूप॥
तामें देश अनेक विसाल। तिनमे ढूंढाहार सुरसाल॥
मध्य देस के माही एह। तामैं नगर अनेक गनेह॥ ३॥
नगर सवाई जपुर जानि। ताकी सोभा अधिक प्रमान॥
जहा भूप माधव बलवान। कछवाहन को तिलक बषान॥ ४॥
० ० ०.
अध्यातम सैली है जहा। रायमल्ल साधर्मी तहा॥
०. ० ०
और जहा साधर्मी घने। तिनके नाम जाहि नहि गने॥
सुने पुराण चरित्र अनेक। यह जीवनि की सरधा एक॥ ७॥
ते सब साधर्मी गुणवान। सुनि करि पूरण आदि पुराण॥
सबनि विचारी भाषा होय। तैयामे समझे सब कोय॥११॥
रतनचंद दिवान सुग्यान। जिन मारग के सरधावान॥
तिनके मित्र जु दौलतिराम। ताको तात जु आनंदराम॥१२॥
राजद्वार के सेवक सही। जिनसासन की सरधा गही॥
.० ० :०
रतनचंद नेर्घाडका होय। अर टोडरमल्ल के सुत दोय॥
गोधा बेधीदास गनेह। बाल ब्रह्मचारी है एह॥१४॥

भाषा करहु धरहु इह भाव । यासम और न धर्म प्रभाव ।।
प्रेरक भए मित्र करि राग । जिनके जिन मारग अनुराग ।।१५।।
तब दौलति जपि जपि श्रीजिन नाम । वीतराग कौ करि परणाम ।।
सब श्लोकनि की भाषाकरी । नानायुक्त मई रस भरी ।।१६।।
:o. :o. :o.

अठारह सै सवता ता ऊपर चौवीस ।
कृष्ण पक्ष आसोज की पुष्य नषित्र गरीस ।।२१।।
सुक्रवार एकादसी पूरण भया गरथ ।
होहु कल्याण पृथ्वी विषै चलौ धर्म को पथ ।।२२।।
:o: :o: .o:

आदि पुराण पोथ लिषी सहर लषनऊ बीच ।
कर्मयोग आगे यहाँ जानो भवि जन मीत ।।२५।।
वासीगज नवाव के जोगराज तसु नाम ।
पल्लीवाल इष्वाकवस कास्यप गोत्र विसाल ।।२६।।
हाथ जुमीना एक है लष्यनापुर के माहि ।
करि पूरण सो ग्रथ यह । धार मन मे उत्साह ।।२७।।
उसमापलगज एक है वसै विहारी लाल ।
अग्रवाल सुजाति हे जीव दाया प्रतिपाल ।।२८।।
तिन लिषवायो ग्रथ यह । धर्म उपावन हेत ।
दिढ वचन करि वाधिजे धरिजे जतन समेत ।।
सवतयो एक सहस्र को ऊपर नौसे जानि ।
अस्वनिमास भूमरानपष सुक्र त्रयोदसि मानि ।।३०।।
वादिसाहि अमजद अली ताके राज सुमाहि ।
वसै लोग आनद सो ईति भीति कछु नाहि ।।३०।।

इति श्री सपूर्ण समाप्तम् ।। भा जादृस्य . पुस्तक ।।

विषय—आदिपुराण (जैन) का हिंदी पद्यानुवाद ।

रचनाकाल

अठारह सै सवता ता ऊपर चौवीस ।
कृष्ण पक्ष आसोज की पुष्य नषित्र गरीस ।।२१।।
सुक्रवार एकादसी पूरण भया गरथ ।
होहु कल्याण पृथ्वी विषै चलौ धर्म को पथ ।।२२।।

सख्या १६८ग पद्मपुराण जी की भाषा वचनिका, रचयिता—दौलतिराम, कागज—देशी, पत्र—५५०, आकार—१४ × ७ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—२०२१२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्यगद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८२३ वि०, लिपिकाल—स० १९१४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर (बडा मदिर), चूडी वाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—ॐ नमः सिद्धेभ्य ।। अथ पद्मपुराण जी की भाषावचनिका लिख्यते ।।

।। दोहरा ।।

चिदानद चेतन्य के गुण अनत उरधार ।
भाषा पद्मपुराण की भाषू श्रुत अनुसारि ।। १ ।।
:o. .o: .o:

पद्मपुराण निधान कौ हाथ जोरि सिरनाय ।
ताकी भाषा वचनिका भाषो सब सुषदाय ।।३६।।
:o: :o: :o:

पीछे मुनि सुव्रत के प्रगटै अति गुणधाम ।
सुर नर वंदित धरममय दसरथ के सुत राम ॥३८॥
शिवगामी नामी महा ग्यानी गरुणावत ।
न्यायवत बलवत अति कर्महरण जयवत ॥३९॥

० ० :०:

रामचद्र को करि प्रनति नमि रविषेण रिषीस ।
रामकथा भाषौ भया नमि जिन अति मुनि ईस ॥४५॥

आगे रविषेणाचार्य कथित पद्मपुराण के श्लोकनिपर भाषावचनिका दौलतिराय कहै है ॥

अर्थ--सिद्ध कहिये कृत्य कृत है ॥ अर सपूर्ण भये है ॥ सर्व सुदर अर्थ जिनके ॥ अर भव्य जीवनिके सर्व अर्थ पूर्ण करहे ॥ आतपृरूप है ॥ अर औरनि कौ मुक्ति के कारण है ॥ प्रसमायोग्य दर्सन ज्ञान चरित्र तिनके प्रकासन हारे है ॥ बहुरि सुरेद्र के मुकट करि पूज्य है किरण रूप केसर यौ धरै ॥ चरण कमल जिनके ऐसे भगवान महावीर तीन लोक के प्राणीनि को मगल रूप तिनकौ नमस्कार करू हू ॥

भावार्थ--सिद्धि कहिये मुक्ति सर्वबाधा रहित ॥ उपमा रहित अनोपम ॥ अविनासी सुषकी प्राप्ति ताके कारण महादेव स्वामी त होते है ॥ काम क्रोध मान मद माया मत्छर लोभ अहकार पाषड दुर्जनता ॥ छुधा त्रिषा व्याधि ॥ वेदना ॥ जरा ॥ भवरोग ॥ शोक ॥ हर्ष ॥ जन्म मरणादि रहित है ॥ सिद्ध कहिये अविनस्वर हु ॥ द्रव्यार्थिक नय करि जिनकी आदिहु नाहि ॥ अर अतिहु नाही ॥ अछेद अभेद ॥ क्लेसरहित सोकरहित ॥ सर्वव्यापी ॥ सर्वत सन्मुष ॥ सर्वविद्या के ईस्वर है ॥ यह औपमा औरनिकै नाही बनै है ॥ या ग्रथ मैं धर्म अर्थ काम मोक्ष सर्व है ॥ अठारह हजार तेइस लोक का प्रमाण पद्मपुराण सस्कृत ग्रथ है ॥ तापरि यह भाषा भई सो जयवत होह ॥ जिनधर्म की वृद्धि होहु राजा प्रजा सुषी होहु ॥

अत--

॥ चौपाई ॥

जबूद्वीप सदा सुषथान । भरतक्षेत्र तामाहि प्रमान ॥
ताम आरजषड पुनीत । बसै सो ताम लोग विनीत ॥
ताके मध्य ढुढाहर देस । निवसै जनी लोग विसेस ॥
नगर सवाई जयपुर माहि । ताकी उपमा दीजै काहि ॥ २ ॥
राज करै माधव नृप जहा । कामदार है जैनी तहा ॥

०· ० .०

रायमल्ल साधर्मी एक । जाकै घट मे सुपर विवेक ॥ ४ ॥
दयावान गुणवत सुजाण । पर उपगारी परम निधान ॥
दौलतराम सुता कौ मित्र । तासु सो भाष्यौ वचन पवित्र ॥ ५ ॥
पद्मपुराण महा सुभ ग्रथ । तामै लोग सिषर कौ पथ ॥
भाषा रूप होय जो एह । बहुजन बाचै करि अतिनेह ॥ ६ ॥
ताकै वचन हिये मे धारि । भाषा कीनी अति अनुसारि ॥

० ० ०·

आनद सुत नेमी भाषा करी । नादो विरघौ अति रस भरी ॥ ८ ॥

·० ०

सवत अष्टादस सत जानि ता ऊपर तेईस बषानि ।
शुकल पक्ष नौमी शनिवार माघमास रोहणि रिषसार ॥१०॥

॥ दोहा ॥

तादिन ग्रथ ग्रथ पुराण हह भयो ग्रथ सिवदाय ।
चऊ सघ को मगल करौ बढो धर्म जिनराय ॥११॥

इति श्री रविषेणाचार्य विरचित महापद्मपुराण सस्कृत ग्रथ ताकी भाषा वचनिका विषै बालबोध एक सौ चोवीसवा पर्व पूर्ण भया ॥१२४॥ दोहरा ॥ श्री रिषदेव कौ आदि देइ जिन चौवीसौ जेह । नमस्कार कर जोरकै मन वचतै पुनिदेह ॥ १ ॥

:०: :०: :०:

विप्र कोया ग्रंथ को लिख न कबहू देह । सुभ विचार या ग्रंथ को जानत नही सठ तेह ।।७।।
जैसे रासभ पीठ मैं भार भरयौ घनसार । सुभि गध जानत नहि करहि न सोच विचार ।।
तैसे विप्र या ग्रथ कौ लिषत करहि न विचार । तातैं शुद्धाशुद्ध कौ नहि जानत सठसार ।।६।।

इति श्री पद्मपुराण जी की भाषा महाग्रथ वचनिका दवलतराम कृत संपूर्ण ।। श्लोक ग्रंथा ।।२२५००।। सवत् १६१४ ।। मिती श्रावण सुदी ।।१२।। रविवार का पूरणकार्र पुस्तक लिखी जुग्गीमल श्रावक इष्काकवसी कास्यपगोती पल्लीकार श्रावक ने लिखी छोटे मदिर जी के वास्ते लिखी ।।

विषय––पद्मपुराण (जैन) का हिंदी गद्य मे अनुवाद किया गया है ।

रचनाकाल

संवत अष्टादस सत जानि ता ऊपर तेईस बषानि ।
शुकल पक्ष नौमी सनिवार माघमास रोहणि रिषसार ।।१०।।

संख्या १६८घ पुण्याश्रव कथाकोश भाषा बालबोध, रचयिता––दौलतराम, कागज––देशी, पत्र––३६८, आकार––८३/४ × ५ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)––११ परिमाण (अनुष्टुप)––७०८४, पूर्ण, रूप––प्राचीन, पद्य, गद्य, लिपि––नागरी, रचनाकाल––स० १७७७ वि०, लिपिकाल––स० १७८६ वि०, प्राप्तिस्थान––श्री दिगबर जैन मदिर (बडा मदिर), मोहल्ला–चूडीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि––।। श्री जिनाय नम ।। अथ पुण्याश्रव कथा कोश भाषा लिष्यते ।।

।। श्लोक ।।

श्री वीरे जिनमानम्य वस्तु तत्व प्रकासक वक्षे कथा मय ग्रथं पुण्याश्रव विधानकं ।। १ ।।

।। दोहा ।।

वर्द्धमान जिन वदि के तत्व प्रकासक सार ।
पुण्याश्रव भाषा करूँ भव्य जीव हित कार ।। २ ।।
सब जीवन कौ हित चहत करत आपको काज ।
सो गुरु मम हिरदै बसो तारण तरण जिहाज ।। ३ ।।

।। सोरठा ।।

प्रणमौ सारद माय स्यादवाद लक्षन सहित ।
जिह सेवत अघ जाय धरम ध्यान वाढै अधिक ।। ४ ।।

।। काव्य वसत तिलक छद ।।

पुण्योपजीवि तनु जेनर बोध हीन ।
जाते प्रिये प्रथम नाऽपति गुणाढ्यौ ।।
श्री जेन गेह कृतय भुवि पूजयत्यो ।
नित्य ततोहि जिन पुगवमर्चयामि ।।

:०. .० ०:

।। अस्य वृत्तस्य कथा ।।

जबू दीप पूर्व विदेह आर्य षड क्षक्षकावती देश विषै सुसीमा नाम नगर तहा वरदत्त नाम चक्रवर्त्ति राज्य करै । एक दिन सर्व सामतादि मत्रीजन सहित विचित्र रत्नमय सिहासन परि । वस्त्राभरणादि भूषित सभा म तिष्टे थो ।। कोई पुरुष वीनती करि । हे देव नगर वाह्य गधमादन गिरि विषै । शिवघोष तीर्थंकर केवल ग्यान विराजमान तिष्टे छै । सुनि करि परम हर्षवत होइ परिवार सहित समो सरण गयौ । भगवत नैं पूजि गणधरानै नमोस्तु करि । मनुष्या कै कोठे बैठ्यौ । तबही कहा एक देव । दोय देवागणा ल्याय । सौ धर्म इद्र नैं सौंपी । देषि करि चक्रवर्ति तीर्थंकर नैं पूछी । हे प्रभु ए देवी पाछे क्यौ आई । किसा पुन्य करि यां देव गति पाई । तब भगवान कही । एक बारही उपजी छै । इह नगर मैं एक माली कै दोय पुत्री कुसमावती पुष्पलता सो निति पुष्प करड वनस्यौ फूल ले आवैं ।। तव राह मैं भगवंत कौ चैत्या लौ तिह की देहली उपर एक कुसुम चढाय आवैं । इह भांति बहुत दिन हूवा । आज वे वन मैं गई थी सो सर्प

काटी पर जाय छोडि सौ धर्म इद्र के देवी हुई । ऐसा भगवान का वचन सुनि सबही पूजा विषै तत्पर हुवा ॥

अंत-- ॥ चौपाई ॥

पुण्याश्रव की कथा रसाल । पूजादिक अधिकार विसाल ॥
षट अधिकार परम उत्कृष्ट । छप्पन कथा मध्य है मिष्ट ॥ १ ॥
आदि पुराण्यादिक जे कहा । अभिप्राय तसु यामै लह्या ॥
आचारिज जिय करि अभिलाष । लिषी कथा सस्कृत भाष ॥

:o. .o: :o:

॥ दोहा ॥

रिषभदास उपदेस सू हमे भई परतीति ।
मिथ्या मति कौ त्यागि कै लगी धरम सौ प्रीति ॥२१॥
ऋषभ देव जयवत जग सुषी होहु तसु दास ।
जिन हमको जिनमत विषै कीयो महा गढास ॥२५॥
कहा लग्यौ पर अरथ मै अरे जीव मति मढ ।
स्वारथ करि परमारथो हूजे समरस गूढ ॥२३॥

.o: :o. :o:

॥ चौपाई ॥

सवत् सतरह सै विष्यात । तापर धरि सत्तर अरि सात ॥
भादव मास कृस्न पक्ष जानि । तिथि पाचै परवी परवानि ॥२८॥
रवि सुत कौ पहिले दिन जोय । अर सुर गुर कै पीछे होय ।
वार यहै गनि लीज्यौ सही । ता दिन ग्रथ समापत लही ॥

इति श्री पुण्याश्रव भाषा वाला बोध सपूर्णम् ॥ सवतु १७८६ ॥ वर्षे माघ सुदि ५ पचमी सोमवारु ॥ ॥ शुभ भवतु ॥

विषय--जैन धर्म सबधी छप्पन कथाओ का वर्णन ।

रचनाकाल

सवत सतरह सै विष्यात । तापर धरि सत्तर अरि सात ॥
भादव मास कृष्ण पक्ष जानि । तिथि पाचे परवी परवानि ॥
रवि सुत कौ पहिलै दिन जोय । अर सुर गुर के पीछे होय ॥
वार यहे गनि लीज्यौ सही । ता दिन ग्रथ समापत लही ॥

सख्या १६८ड पुण्याश्रव कथा कोश, रचयिता--दौलतराम, कागज--देशी, पत्र--१८३, आकार--१८½० × ८½० इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--१५, परिमाण (अनुष्टुप)--८१२६, पूर्ण, रूप--प्राचीन, गद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १७७७ वि०, लिपिकाल--स० १८८७ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री दिगबर जैन मदिर (बडा मदिर), चूडी वाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि--अथ पुण्याश्रव कथा कोस भाषा लिष्यते ॥

॥ श्लोक ॥

श्री वीर जिनमानम्य वस्तु तत्व प्रकासक ।
वछेकथामय ग्रथं । पुण्याश्रवाभिदानक ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

वर्द्धमान जिन वदि कै तत्व प्रगासन सार ।
पुण्याश्रव भाषा कहू भव्य जीव हितकार ॥ २ ॥

:o: :o: :o.

॥ अस्य व्रतस्य कथा ॥

जंबू दीप पूरव विदेह ॥ आर्य षड वस्त सफावती देस विषै सुसीमा नाम नगर ॥ तहां वरदत्त नाम चक्रवर्त राज्य करै ॥ एक दिन सर्वसामतादि ॥ मंत्रीजन सहित विचित्र रत्नमय सिंघासन परि वस्त्राभरनादि भूषित सभा मैं तिष्ठै थौ ॥ कोई पुरष वीनती करी ॥ हे देव नगर बाह्य गंधमादन गिर विषै सिव घोष तीर्थंकर ॥ केवल ग्यान विराजमान तिष्टै छै ॥ सुनिकर परम हर्षवंत होय ॥ परिवार सहित समोसरण गयौ ॥ भगवंत नै पूजि गण धरानै नमोस्तु करि ॥

:o: :o: :o:

अंत—

रामचंद्र मुनि अति परवीण । कथाकोस पुण्याश्रव कीन ॥
तिनकी कहा बड़ाई करौं । वचन करि निज उरमैं धरयौ ॥१८॥
अब तुम सुनहु भविक जन जोय । जाविधि ग्रंथ मैं भाषा होय ॥
जो कोउ पूछै कवि को नाम । दौलति आगै माडौ राम ॥११॥
जाति वानिया श्रावग सोय । षंडेलवाल जान्यौं सब कोय ॥
अल्ल कहियै कासलीवाल । आनंदराम स्वत वचन रसाल ॥
कारण पाय आगरे गयो । पुन्याश्रव सुनि अति सुष भयौ ॥
टोका भाषा करी चित चाय । घटि वढि पडित लेहु वनाई ॥१३॥
वसवै वास हमारो जान । घर आगै जिय मंदिर मांणि ॥

:o: :o: :o:

भूधरमल जिन धरमी टेक । रहै साहगज मै तहकीक ॥
जिन स्वमिरण पूजा परवीण । दिन प्रत कर असुभ कौ छीण ॥१५॥
हेमराज साधरमी भले । जिन वचमांनि असुभ दलमले ॥

:o: :o: :o:

संवत सत्रह सै विष्यात । तव धरि सत्तरि अरु सात ॥
भादव मास कृष्ण पष जाणि । तिथि पचै परवी पखाण ॥२५॥
रवि सुत को पहलो दिन सोय । अर स्वुर गुर के पीछे होय ।
वार यहै गनि लीज्यौ सही । ता दिन ग्रंथ समापत लही ॥२६॥

श्लोक

मगलं लेषकानां च पाठकस्यापि मगल ।
मगल सर्वलोकानां भूमिर्भूपति मगल ॥ १॥ शुभं ॥

इति श्री पुण्याश्रव भाषा बध बचनिका ग्रथ सपूर्ण ॥ शुभं भवतु ॥ श्री मिती कातिक सुदी ॥ २ ॥ संवत् ॥१८८७॥ पोथी लिषाई जीवन मल्ल ने रहने वाले जाइस के ॥

विषय—जैन धर्मानुयायी पुण्यात्माओ की कथाओ का वर्णन ।

रचनाकाल

संवत सत्रह सै विष्यात । तव धरि सत्तरि अरु सात ॥
भादव मास कृष्ण पष जाणि । तिथि पचै परवी परवाण ॥
रविसुत को पहलो दिन सोय । अर स्वुर गुर के पीछे होय ॥
वार यहै गनि लीज्यौ सही । ता दिन ग्रथ समापत लही ॥

संख्या १६८ब पुण्याश्रव कथाकोश भाषा, रचयिता—दौलतराम, कागज—देशी, पत्र—१६६, आकार—१२३/४ × ६३/४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—६६४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७७७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर (बडा मदिर), चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि--अथ पुण्याश्रव कथा कोश भाषा लिख्यते ।। श्लोक ।। श्री वीर जिनमानम्य ।। वस्तु तत्व प्रकासक ।। वक्षे कथा मय ग्रथ ।। पुण्याश्रवाभिधानक ।।

।। दोहा ।।

वर्द्धमान जिन वदि कै तत्व प्रकाशन सार ।
पुन्याश्रव भाषा कहु भव्य जीव हितकार ।।
:o: :o: :o:

अस्य वृतस्य कथा

जम्बूद्वीप पूरब विदेह ।। आर्य षड वछकावती देस विषै सुसीमा नाम नगर ।। तिहां वरदत्त नाम चक्रवर्ति राज्य कर ।। एक दिन सर्व सामतादि मत्रीजन सहित विचित्र रत्नमय सिंहासन परि वस्त्राभरणादि भूषित सभा में तिष्टौ थौ ।। कोई पुरष वीनती करी ।। हे देव नगर समीप गधमादन गिरि विषै सिव घोष तीर्थकर केवल ग्यान विराजमान तिष्टै छै ।।

अत--

अब तुम सुनहु भविक चित जोय । जा विधि यह ग्रंथ मे भाषा होय ।।
जा कोई पूछे कवि को नाम । दौलत आगरे मारघौ राम ।।११।।
जाति वानिया श्रावक सोइ । षडेलवाल जानहु सब कोइ ।।
अली कहीये कासलीवाल । आनदराम सुत वचन रसाल ।।
कारण पाय आगरै गए । पुन्याश्रव सुनि अति सुष भए ।।
टीका भाषा करी चित चाय । घटि वढि पडित लेहु वणाय ।।
:o. o: :o.
भूधरमल जिन धरमी ठीक । रहै साहिगज म तहकीक ।।
:o .o. :o:
हेमराज साधरमी भले । जिन वचमानि अशभ दलमले ।।
अध्यातम चरचा नित दरै । प्रभु के चरण सदा उर धरै ।।

।। चौपई ।।

सवत सत्रह सै विख्यात । तप धरि सत्तर अरु सात ।।
भादव मास कृष्ण पष जानि । तिथि पाचैं परवी वान ।।
रवि सुत को पहलो दिन सोई । अरु सुरगुरु कै पीछे होय ।।
वार यहै रवि लीजै सही । ता दिन ग्रथ समापत लही ।।२५।।

इति श्री पुन्याश्रव भाषा वध बचन का ग्रथ सपूर्ण ।। शुभं ।।

विषय--जैन धर्मानुयायी पुण्यात्माओं की कथाओं का वर्णन ।

रचनाकाल

सवत सत्रह सै विख्यात । तप धरि सत्तर अरु सात ।।
भादव मास कृष्ण पष जानि । तिथि पाचैं परवी वान ।।
रवि सुत को पहली दिन सोई । अरु सुर गुरु कै पीछे होय ।।
वार यहै रवि लीजै सही । ता दिन ग्रथ समापत लही ।।२५।।

सख्या १६८७ पुण्याश्रव कथाकोश भाषा, रचयिता--दौलतराम, कागज--देशी, पत्र--२७८, आकार--८६/८ × ५६/८ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--११, परिमाण (अनुष्टुप)--६११६, पूर्ण, रूप--प्राचीन, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १७७७ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री दिगबर जैन मदिर (बडा मदिर), चूडीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि--।। श्री जिनाय नम. ।। अथ पुण्याश्रव कथा कोश भाषा लिख्यते ।।

।। श्लोक ।।

श्री वीरजिनमानम्य वस्तु तत्व प्रकाशक ।
वक्ष्ये कथा मय ग्रथ पुण्याश्रव विधानक ।। १ ।।

॥ दोहा ॥

वर्द्धमान जिन वंदि कै तत्व प्रकाशन हार ।
पुण्याश्रव भाषा करूँ भव्य जीव हितकार ॥ २ ॥
सब जीवन कौ हित चहत करत आपको काज ।
सो गुरु मम हिरदै बसौ तारन तरन जिहाज ॥ ३ ॥

अंत—

जो कोई पूछै कवि कौ नाम । दौलत है जो आगै राम ॥११॥
जाति वानिया श्रावग सोय । षडेलवाल जानहु सब कोय ॥
अलि कहिये काशिलीवाल । आनंदराम सुत वचन रसाल ।
कारण पाय आगरै गए । पुन्याश्रव सुन अति सुष भये ॥
टीका भाषकरी चित्त लाय । घट वढि पंडित लेहु वणाय ॥१३॥
वसवै वास हमारो जान । घर आगे जिन मंदिर मान ।
:o: 'o' :o'
संवत सतरै सै विष्यात । तापरि धरि सत्तरि अरु सात ॥
भादव मास कृष्ण पछ जानि । तिथि पांचै परवी परवान ॥२५॥
रविसुत को पहिलौ दिन जोय । अरु सुर गुरु कै पीछ होय ॥
वार यहै गिन लीजौ सही । तादिन ग्रंथ समापति लही ॥२६॥

इति श्री भाषा ग्रंथ पीठिका दोहा चौपई समाप्ता ॥ पुण्याश्रव भाषा विवर्ण दान फल विवर्णनो षोडश वृत्ता समाप्ता ॥

विषय—जैन भक्तों की कथाओं का वर्णन ।

रचनाकाल

संवत सतरै सै विष्यात । तापरि धरि सत्तरि अरु सात ॥
भादव मास कृष्ण पछ जानि । तिथि पाचै परवीन परवान ॥

संख्या १६६ व्रत विधान रासो, रचयिता—दौलितराम (? दौलत राम), कागज—देशी, पत्र—२५ आकार—१४ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—६७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७६७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर (बड़ा मंदिर), चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ व्रतविधान रासो लिख्यते ॥

प्रथम सुमिरौ स्वामी वृषभ जिनंद ।
आदि तीर्थंकर सुष के जी वृंद ॥
तो नमो तीर्थंकर वीसद्वै ॥ नमो सनमति सदा सिव सुष धाम ॥
नमो परमेष्टी जी पचपद ता सुमिरे होय सुष अभिराम ॥
तो वरन करौ भवि जन का ॥ १ ॥

अहो नमो पारस जिन गुनह निधान ।
तास बनारसि जन्म को थान ॥
तो कमठ कमठ कमठ को मान मर्द्दन कीयो ।
बालपनै लीयो संयम भार ॥
तप करि मुक्ति पधारिया । ता पद कवि शिर इष्ट विचारि ॥ तो वरत० ॥ २ ॥

अंत—अहो बूंदी जी नग्र हाडा तनौं थान ।
राज करे बुध सिंघ कुल भांन ॥

तो पौरिण छतीस लीला करै गढ अरुकोट वन उपवन वाय ।
महल तलाव देवलघरणा श्रावग धर्म बहु भाय ।। तो वरत० ।।२७४।।

अहो जगतकीरति भट्टारक परमान ।
मूलसघ सरस्वतीगछ जांनि ।।
तो कुवा मुनि पाटई ब्रमचार आचारिज पडित भाय ।
और अरिय काजी सग मे मानत श्रावग इह अमनाय ।। तो वरत० ।।२७५।।

अहो पार्श्वनाथ चैत्या लोजी गाय ।
तहा पडित तुलछा जी वास रहाय ।।
तो सास्त्र समूह विद्या घनी । करई निरतर धर्म विहाव ।
सुषो जी काल पूरण करें तास चरचा ग्रथ पसाव ।। तो वरत० ।।२७६।।

अहो साह भामाधर सुत धनपाल । ताको चतुरभुज रूप रसाल ।।
ता सुत दौलितराम हुव कछु इक जिन गुण कहि अभिराम ।
वरत विधान रासो रच्यो ताकं पुत्र हरदेराम सदा राम ।। तो वरत० ।।२७७।।

अहो पाटणीगोत परसिध मही माहि ।
षमेलवाल जिनमतिय कहाहि ।।
तो श्रावग धर्म मारग भले करहि चरचा जिन वचन विलास ।
आन धर्म नहीं उवरे सहु परिवार बूंदीगढ वास ।। तो वरत० ।।२७८।।

:o: o :o:

अहो सवत सतरा सै सतसठि लीन । असोज शुकल दर्श परवीन ।।
तो लगन महूरत शुभ घरी वार गुरुवार नक्षतर जोग ।
तामहि ग्रथ पूरण भयो भविय सबोधन यह उपयोग ।। तो वरत० ।।२८०।।

अहो दोय सै इक्यासी जी छद निवास ।
आठ सै पचास लेषन सख्या तास ।।
तो एकसौ इकसठि तामै तप कह्या दौलितराम विविध वरणाय ।।
भवि करि मन वच काय सौं अनुक्रम सुर सुष सिव पद पाय ।। तो वरत० ।।२८१।।

इति वृत विधान रासो समाप्त लिषित जुगीमल श्रावग पल्लीवाल नवाबगज के लिषी पुस्तक व्रत विधान रासो की ।। मिति भादौ वदी १० रविवार ।।

विषय--जैन धर्मानुसार व्रतो का वर्णन ।

रचनाकाल

अहो संवत सतरा से सतसठ लीन ।
असोज शुकल दर्श परवीन ।।
तो लगन महूरत शुभ घरी वार गुरुवार नक्षतर जोग ।
तामहि ग्रथ पूरण भयो भविय सबोधन यह उपयोग ।।२८०।।

सख्या १७० महाभारत (सभापर्व, उद्योगपर्व, भीष्मपर्व और द्रोणपर्व), रचयिता--धर्मदास, स्थान--मउग्राम (उहारा), कागज--देशी, पत्र--३३०, आकार--८।। × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--२१, परिमाण (अनुष्टुप)--६०६८, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--कैथी, रचनाकाल--स० १६६४ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री प० पारसनाथ पाठक, पुराना रामपुर, डाक०--रामपुर, जिला--जौनपुर ।

आदि--श्री गणेशाय नमह कथा महारभारते सभापर्व लीखते श्री कृष्ण

दानव राकस आगे कीन्हा । जो जो चाहत हम सन लीन्हा ।
मानिक बीद्रुम औमकर पोशा । अमरक रूप रतन सब गेशा ।
वेस-देस की वस्तु लै आवही । दानव राजा हाल ही पावही ।
जहा चाही तहा तह वस्थली गैउ । रतन जरित सब हाथ जो लैउ ॥

दानव तब राकश संगे वस्तु तें लेइ आई ।
दूनव हार्थ लै कै दानव अमरेउ आई ।

भए दानव प्रात हो ते पानी । राजहि वस्तु देषावा आनी ।
नाम अनंत बीजै जेही केरा । सष दीन्ह जो पहिलेही बेरा ।
जथा ग्यान अवलोकन कीन्हा । भीमहि गदा हाथ लेइ दीन्हा ।
मनि मै कनक कती कह गहई । आउध बाटि बउध येक हरई ।

:o: :o: :o:

मध्य—धर्मदास रही भांतीन्ह भव माआ देषराइ ।
माआ मंदीर कह गऐ सभ सन बीदा कराइ ।

इति श्री महाभारते धर्मदास कृत सभा रचनोन्म प्रथमो अध्याऐ १

अंत—द्रोन पर्व एही भातीन्ह तीनी पहर दीन चारि ।
धर्मदास कवी वरना कुरु पडव की मारि ।

श्री नरसिह कृपा भै जवही । वरष पचीस केर कवी तवही ।
समत बीकर्म भुप क भऐउ । सोरह सो औ चौसटी गऐउ ।
जहा लगी उगं अथ वं भाना । ताही सलाम सकल सुलताना ।
मही वघेल वीकर्म कं सोके । उपम सत्र आही नही जाके ।
'मउ गाउ' अस देस 'उहारा' । 'वासुदेव' तेही भुंमी भुआरा ।
रीतु वसंत औ माधव मासा । पुन्य देवस तेही कीन्ह प्रकासा ।
भारथ सुने जवन फल होइ । पाछे वरती कहे सब कोइ ।

तीन्हकर तनै महा कवी धर्मदास कवीराज ।
तेन्ह के कुल मह अैसन वरनत लागत लाज ।

अपने कहेन करी वषाना । जगत वादीत जस जेही सब जाना ।
वीज्नु भगति पुरुषन्ह चलीअइ । जप तप नेम धर्म अधीकाइ ।
पडीत गुनकर पारावारा । भाषा मह कवी रीति रसारा ।
मृषावाद दोष कह डरउ । तेही वरेरन कवीत न करउ ।
अपने कहे न कीरति होइ । पर मुष अस्तुती सोभा सोइ ।
अपने सुष करषा न समाइ । इत्रौ कहे हरु होइ जाइ ।
वीन कहै घटी जानै लोगा । उदंक आषर जीभी जमोगा ।
हरीहर देव हरी ही लै आवा । चंद्रभान तेन्ह के कुल जावा ।
तेन्ह कर बस धर्म कर धामा । धर्मदास कवीराज क नामा ।

तासु तनं कुल मंडन कवी सेषर कवी गंग ।
जाकै मगस वीलास की वानी तरल तरंग ।

इति श्री महाभारते द्रोन पर्व पत्रमो अध्यऐ ५

विषय—महाभारत कथा का वर्णन ।

रचनाकाल

सोरह सौ औ चौसटी गऐउ । संमत बीकर्म भुप क भऐउ ।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता ने अपने दो पुत्रों 'कवि सेषर' और 'कवि गग' का भी नामोल्लेख किया है। इनके पुत्र भी इनके जीवनकाल मे ही रचना करने लगे थे।

द्रोण पर्व की रचना धर्मदास ने पचीस वर्ष की अवस्था मे तथा चार दिन तीन पहर मे की थी—

"द्रोन पर्व एहो भातीन्ह तीन पहर दिन चारि।
धर्मदास कवी वरना कुरु पडव की मारि।"

"श्री नरसिह कृपा मै जवही। वरष पचीस केर कवीतवही।"

इसके पश्चात् 'कर्ण पर्व' तथा 'गदा पर्व' की रचना इनके पुत्र श्रीपति और गग ने (इनके मृत्यु के पश्चात्) स० १७१६ वि० मे की थी। यह पता नही चलता कि प्रसिद्ध कवि 'गग' ये ही (धर्मदास के पुत्र ही) थे अथवा अन्य। प्रस्तुत ग्रथ 'गग कृत कर्ण और गदा पर्व' के साथ एक ही हस्तलेख मे है।

संख्या १७१ विदग्धमुखमडन, रचयिता—धर्मदास, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८ × ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—५५, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि— सारिका नीर सउउण वह गुण बन्तउ भमइ निरतरुणि घलु होतउ तरगि धइणहु फलु पतु तसु जो परि जानइ पावइ सोइ जरसु ७

गुणरु रखो घर घर चलइ सयल पियारो जिभनवु वरी लाय हुणारी। खनि वक्षइ मुघइ खणि एक ल्लीत हर्नाहि जह जाने विल्लो ८ पासा सारि प्रहेलिका जातिः

० ० ० ०

अत—. सुदाक सालसो विस्मइ चादालम् ६८

वलाहक विलेण ववलन लेहि केहि सोहइ धरणी मघाण देशरस . निल अरस लश्व वाला केहि सो पडि वेढि आहोति ६६

नलकल केहि शुद्ध मागधिकम वेरो पुछइ ककरणेराञ्चति किसणोर खाणे केहि
कघहि विन केहि सोभ समप्फ तिनि हित कयाइ।प ७०

अहितय के हिम यत्तूणकिफट वर्णाणि अलेह ताराण अत्था सग पवइ व पइनि सूत मस्स अहितप के हिम पभूण कि फट वर्णेणि अतह ताणा अत्था सणक वश्व फनि सूत नस्य भोत्तन रखोरत रतुरख सताइ या या मोहाधकार वहेस लपवितार्फान्त ७१

विषमलनम् शुद्ध पैशाचिकम जाणी जाणइ निन्दे भेवक्षि माकिस पूछइ वोल्लरे सभरे जोतिल सरस व पेडइ घानी कीम भणइ अइ सो विन्नाणो ७२

इति श्री धर्मादास कृते विदग्धमुखमण्डने तृतीय परिछेद.

विषय—शृगार काव्य (पैशाची भाषा मे)।

संख्या १७२ कवित्त (?), रचयिता—धारू, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—१३ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—२१, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—

. . . . भेष रचे सो तो झूठ कहे है।
धारू वदै नचै काठ की मूरति वाहि तौ प्राम पसू ह्वै रहे है॥२५॥

घनाक्षरी

वेद ,विधि बानी सेश शंकर बषानी छबि
अदभुत कहानी तत्व ध्यान में धसी रहै ।
बिसरै न पल एक निसु दिन सो एही टेक
बिमल बिबेक उर अंतर लसी रहै ।
'धारू' ए रीति प्रेम पूरन प्रतीति उर
नित नई प्री (ति) पद पंकज कसी रहै ।
अवध बिहारी सदा सुषदेनि हारी श्याम
मूरति तिहारी मेरे मन मे बसी रहै ॥२६॥
उत्तम शरीर नर पाइ हरि भजन को
कौल करि आइ परिपच लपटानि है ।
काम क्रोध लोभ मोह मत्सर गनीम येह
काया गढ घेरि लियो माया मे भुलाना है ।
सोर तोर सोर चहु ओर मुनियत सब
'धारू' एतो बातन्ह मे ठौर न ठिकाना है ।
मातु पितु बधु सुत दारा दीनबंधु बिनु
बिथा कोउ न जाना अत सबई बेगाना है ॥२७
सदन सनेह सुष सपति बेलास यह
छूटि जैहे आस जम फास जब डारिहै ।
सुत हित मीत परिवार भरे भवन में
राषि कवन सकै सब रोइ कै पुकारि है ॥
'धारू' भनि तब तौ भटकि भजौ भूत सब
अब वो पद बहि रहे दूरि ते निहारि है ।
कठिन को भीर पीर व्यापि है सरीर तब
बिना रघुवीर कहु कवन तोहि उधारि है ॥२८॥

मातु पिता सुत बंधु सहोदर प्राण गए कोउ साथ न जैहै ।
राषि सकै हित को जग मे सब लोग इहां के इहा पक्षतैहै ।
'धारू' भनै हरि नाम भजो जु सोई भव बंधन को निवकैहै ।
षरिचहु षाहु षिआवहु यारो धरा मे धन काम न ऐहै ॥२९॥
शुनिरहु नाम सदा सुष दायक रघुकुल कज बिपिन दिन करके ।
रहति न बिथा नेकु उर अन्तर अवढर ढरन जाहि पर ढरके ।
सुष समूह भरि करत देवस निसि ज्यो जग सघन बुद चलधरके ।
'धारू' मनै क्रम बचन कपट तजि भजि लेहु सरन सुषद रघवर के ॥३०॥

अगम . अगोचर अषडित प्रताप पुज गावै वेद चारि जाको सुजस सुधारि कै ।
सिव सनकादि ब्रह्मादि सुरसिद्ध मुनि अन्त को न पावै सभ थक्यौ हिय हारि कै ।
'धारू' भनि भूरि भय भजन अलष रूप लषि न परै मन देषहु बिचारि कै ।
मोद भरी कौशिला सो गोद लिहे अनादि ब्रह्म चुवत कपोल लोल लोचन निहारि कै ॥३१॥

मोह महा भ्रम जालनि माहि फस्यौ हे गवार न चेत करो सो ।
कौडी से जोरि करोरि किहो ले गये वन बटोरि धरा धन कोसो ।
'धारू' यहां सब झूठ प्रपच न नात न गोत नराधप रोसो ।
राम के नाम से काम सदा एह चाम रगे तन कवन भरोसो ॥३२॥

—आद्योपांत उद्धृत

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश ।

संख्या १७३ सुदामाचरित्र, रचयिता—धिरजाराम, स्थान—रामगढ शहर, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—१० X ५।। इच, पक्ति (प्रति पष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—१०८, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७८७ वि०, प्राप्ति स्थान—श्री प० नर्वदेश्वर जी, ग्राम—धनधरा, डाक०—लोटन, जिला—बस्ती।

आदि—श्री गणेशाय नमः त्रीभदी छंद ।।

तन सुदर लाला शिशु शशि भाला गौरि सुतम् ।
कर जलज विकाशा अंकुश पाशा पूरत दाशाभिष्ठ युतम् ।
वाण(ा)पति वदन सोभित रदन सुदामासदनं आपुरुदं ।
वंदो गननायक मगल दायक अज शिवगायक चरित गुढ़ं ।

दोहा

सारद गौरि महेस पगवदत हौं एक दंत ।
तूरण सभ सविधि आस मम पूरण करहु अनंत ।
नारद भारद्वाज शुक व्यासदेव हिमवत ।
अनि अनलगंधर्व रवि पुनि वदो हनिवत ।
अलप विषय मति मोहि है हरि को कथा अपार ।
कविजन चुक निवारीहौ करहु न हास हमार ।
छद वद्य जानत न हियो उपजो अति अभिलाष ।
ज्यो वामन क लोभते चहैउ चतुर शाष ।
७ ८ ७ १
नग वसु सागर चद लौ मौ संवत संचार ।
मेचक पछ वैसाष के कथा किन्ह अनुसार । ६
विष्णुसिह नृप नगर में वसौ सदासुष पाय ।
दानमान सनमान जत देषत अवर सिहाए । ७
प्रथमहि निजकुल नामकहि कहिहौ कथा रसाल ।
साकलद्वीपी कुल भयो 'मोहनाष्य' गुणमाल । ८
तासु तनै श्रीकात भौ गुण आपार मतिधीर ।
दामोदर तिन्हके तनै जासु वुद्धि गभीर । ९
मुरलीधर तिन्हके तनै तासुतनै मौ चारि ।
'धिरजाराम' सुनामतिन्ह जिन्ह ए कथा सुधारि ।१०
अनुजह 'गोविराम' त सुतं सो मनसाराम ।
दशाराम लघु सभन्हिते सोहै गुण को धाम ।११
सहर रामगढ कह रहै अहै तहा मम धाम ।
स्याम सुदामा की कथा वरणत 'धीरीजाराम ।।१२

अंत—

सवैआ

आजुहि आवनमीत कहो नहि नेकु नगारो सुनातकहि ।
कोउ नहि पथ आवत पेषहि दूरिलौ लोचन लाए रही ।
वूझत कै धिरिजा जिन्हके गुण आनद चीत्त वीशाल लही ।
केतिक सैन चलै तिन्हको जेहि कारन आवत वेगि नही ।५०

दो०

तावच सुनी हरि हसौ कहौ सुमुषि धरहु मनधिरा ।
उत दिग पग उग मग महि परि षरी जिमी ।५१
निसरि सुदामा नगरते मनमे करहि गुणान ।
गथ द्वारिका ठामरि केहि वीधी पैहौ जान ।५२

सवैश्रा

ठाढ़ु हुश्रो करजोरि जहां सुवृंद नरेंद्र भिरि घनेरो ।
झूमत द्वार षड़े गज मत्तु दुहु दिसु राजि ब्राजि श्रडेरो ।
पूछे गोको तितु मोहि भिखारीहि धुमरु श्रग कुरगु वसेरो ।
सूचति मूरति सोच भय दिज जाउ उतै फिरि वरि जाउ के डेरो ।

दोहा

होनी होए सो होए अवराषे लाजनका ।
एहि गहि दिनवर पथग सुमिरि चरन व्रजराज ।५४
महागहन वन वर गए भिलिलन भिल्ल अनेक ।
जहां तहा निरषत भय विकट भय अविवेक ।५५

—अपूर्ण

विषय—सुदामाचरित्र ।

रचनाकाल

नग वसु सागर चदलौ भौ सवत् सचार ।
मेचक पछ वैशाख के कथा किन्ह अनुसार । ६

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रथ मे कृष्ण तथा सुदामा की भेट का वर्णन अत्यत सरसभाषा मे किया गया है । रचना काव्य की दृष्टि से उच्चकोटि की है ।

सख्या १७४. अलकार मुक्तावली, रचयिता—धीर (धीरसिह), कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—६६/०×६६/०, उच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—२२७, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८५२, प्राप्तिस्थान—दयन सदन, अमेठी राज्य, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नम: अथ अलकार मुक्तावली लिष्यते ॥६०॥

॥ दोहा ॥

विघ्न हरन आनद करन गनपति होहु सहाई ।
अलंकार आरभ किय दीजे बुधि बताइ ॥ १ ॥
करि प्रणाम गुरु ब्रह्मको इनमे भेद न कोइ ।
अधम जानि ससार मै सो कारजाने दोइ ॥ २ ॥
सेषनाग नहीं कहि सक लष न अर्जुन सोइ ।
तवगुन अधिक अपार है वर्नन कैसे होइ ॥ ३ ॥
किये प्रवेस या जगत मै सबमे मिलि सम भाई ।
नमस्कार ता पुरुष कौ सवतें न्यारो आइ ॥ ४ ॥
इद्री मन वुधिम जहा मिल्यो नही सो मानि ।
नमस्कार निज रूप कौ सव त न्यारौ जानि ॥ ५ ॥

अर्थपूर्ण उपमालकार

अलकार उपमा इहै आनन चंद समान ।
साधारन प्रगास है कीनो "धीर" वषान ॥ ६ ॥
साधारन प्रगास है कीनो "धीर" वषान ॥ ६ ॥

॥ अर्थ ॥

जहा च्यारि बस्तु बर्नन होइ तहा पूर्ण उपमा अलकार होइ ॥ उपमान ॥ १ ॥ उपमेय ॥ २ ॥ उपमा वाचक शब्द ॥ ३ ॥ साधारन धर्म ॥ ४ ॥ ये च्यारि मिलै सो पूर्ण उपमा कहिये ॥

अंत--- ।। अथ प्रतिषेध ।।

करि निषेद जा वस्तु को फिरि प्रतिषेद बषानि ।
कपट यहै जुवानही तीछन वान सुजानि ।।७३।।

।। अथ विधि ।।

सिधि वस्तु फिरि वरनियै अलकार विधिवत ।
वरषा मे वन र्राह रटै कोकिल कलित वसत ।।७४।।

।। अथ हेत ।।

हेत हेत मत साथ ही अलकार इह हेत ।
उदित भयो ससि माननी मानछेद करि देत ।।७५।।
ग्रथ चंद्र अवलोकिकै दीनौ अर्थ जनाय ।
अलकार मुक्तावली कीन्ही "धीर" बनाय ।।७६।।

इति श्रीधर कृत अलकार मुक्तावली सपूर्ण लिषित जोधराज पठनार्थे महाराजाधिराज राजा जी श्री ५ चद्रभान नी सवत १८५२ चैत्र वदि ४ रविवासरे स्वभमस्तु मागल्य ददाति ।। श्री रामजी ।।

विषय---अलकार वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य---साहित्यिक दृष्टि से रचना उत्तम है । यह चद्रालोक के आधार पर रचा गया है---

'ग्रथ चद्र" अवलोकि कै दीनौ अर्थ जनाय ।
अलकार मुक्तावली कीन्ही धीर बनाय ।।

इसकी विशेषता यह भी है कि कही कही विषय को अच्छी तरह समझाने के लिये गद्य का भी प्रयोग किया है ।

सख्या १७५ बयालीस लीला, रचयिता---ध्रुवदास जी, स्थान---वृदावन, कागज---(आधुनिक, पत्र---२४४, आकार---५६० × ५४० इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)---१४, परिमाण (अनुष्टुप)---३४१६, पूर्ण, रूप---प्राचीन पद्य, लिपि---नागरी, रचनाकाल---स० १६८६ लगभग, लिपिकाल---स० १६४८ वि०, प्राप्तिस्थान---श्री हिंदी साहित्य पुस्तकालय, मौरावाँ, जिला-उन्नाव ।

आदि---श्री गणेशाय नम श्री राधावल्लभोजयति श्री व्यासनदनोजयति ।। अथ ध्रुवदास कृत लीला बयालीस लिष्यते ।।

।। चौपाई ।।

जीव दसा सुनि कछु इक भाई । हरिजस अमृत तजि विष षाई ।। १ ।।
छिन भगुर यह देह न जानो । उलटी समुझि अमरही मानो ।। २ ।।
घर घरनी के रग य राच्यो । छिन छिन लौ कपि नट ज्यौ नाच्यौ ।। ३ ।।
करी न कबहू भजन सम्हारी । ऐसे मगन रह्यौ व्यौहारो ।। ४ ।।
छं स्वासा या घट मैं चलै । जो बिछुरे तो कबहू न मिलै ।। ५ ।।
वय गई वीति जात नहि जानी । ज्यो सावन सलिता को पानी ।। ६ ।।

°o: .o °o.

जो चहत है नित्य सुख अरु मन को विश्राम ।
हित ध्रुव हित सो भजनरहू पल पल स्यामा स्याम ।

इति श्री जीव दसा लीला सपूर्णम् ।। अथ वैद्यक ग्यान लीला लिख्यते ।।

।। चौपाई ।।

वैद एक पडित अतिभारी । ठाढो सबसो कहत पुकारी ।।
जेसो रोग होइ है जाको । तैसी औषधि दैहौ ताको ।।
यह सुनि एक गयौ तिहि नेरे । ऐसो वल औषधि को तेरे ।।

मेरें विथा बढी अतिभारी । कहु मोसो कछु सोच विचारी ॥
तेरे रोग कहा है भाई । ताको औषधि देहु बताई ॥
पाप कर्म अधिको मै कीने । महादुखी तिहि रोग के लीने ॥ ६ ॥

अंत—

यह लीला हित जो ध्रुव गावं । प्रेम भक्ति सो दृढ़ करि पावै ॥१६०॥

॥ दोहा ॥

प्रथम नेह ऐसे भयो बिना यतन अनियास ।
यह रस गावत सुनत ध्रुव होत जो प्रेम प्रकास ॥१६१॥

इति श्री व्रज लीला सपूर्णम् ॥ ४२ लीला ॥ शुभ मस्तु शुभमभूयात् ॥ सवतु १६४८ **वैशाष शुक्ल अष्टम्या शनिवारे लिखित रामप्रसाद पाठक सहवासी माराये के पठनार्थं स्व आत्मार्थम् ॥ श्री राधावल्लभोजयति श्री हित हरिवशचद्रोजयति श्रीराधायैनम. ॥**

विषय—राधाकृष्ण की ४२ वृज लीलाओ का वर्णन । लीलाओ का नाम नीचे दिया जाता है—

१ जीवदसा लीला, २ वैद्यक लीला, ३ मनशिक्षा लीला ४ व्याहहुलास लीला, ५ नामावली या भक्त नामावली, ६ जावन वृहद् पुरान, ७ सिद्धान्त विचार लीला, ८ प्रीति चोवनी लीला, ९ भजनाष्टक, १० आनदाष्टक, ११ भजन कुडलिया, १२ भजन सत लीला, १३ वृदावन सत लीला (स० १६६८), १४ सुखमजरी, १५ शृगारसत लीला, १६ रसमुक्तावली, १७, सभामडल सिगार लीला, १८ श्रृगार लीला; १९ प्रियाजी की नामावली, २० अनुराग लीला, २१ रसानद लीला २२ रग विहार लीला, २३. रहस्य-मजरी लीला, २४, नेहमजरी लीला, २५ रसविहार, २६ रगहुलास, २७ रगविनोद, २८. आनददशा विनोद, २९ रहस्यलता लीला, ३० प्रेमलता, ३१ मानविनोद, ३२ वनविहार लीला, ३३ दानलीला, ३४ रतिमजरी, ३५ प्रेमावली ३६ रगरत्नावली, ३७ रस हीरावली, ३८ मनसिगार, ३९ नृत्य विलास लीला, ४० युगल ध्यान लीला, ४१ आनद लता, ४२ इसका पता नही चला ।

सख्या १७६. कोकसार, रचयिता—नद और मुकुद, निवासस्थान—जगरकैटी, कागज—देशी, पत्र—५५, आकार—१० × ६¼ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—कैथी, रचनाकाल—स० १६०० के लगभग, प्राप्तिस्थान—शारदा सदन पुस्तकालय, रायबरेली ।

आदि—

:o· o ·o·

॥ जी दोहा ॥

चारी भाती की नाएका, चारी भाती नर लोए ।
कवी मकुद ऐसी कहै सुनो रसीक रस होए ॥
भोग करन की सजीवनी सतत सुषद विलास ।
सतत सुषद वीलास मनमथ जोखनी है एह सुष दासी दास ॥
समत सोरह सौ वरष एते रसा जो आही ।
माघ मास सुकल तीथी सतमी कथा कीन्ह कवि चाही ॥
जगरकैटी वास तहा चीतासनी चीत चार ।
ताके सुत कवी नद भए कवी मकुद उजीआर ।
दुनो भ्राता गुनगनी दुनौ चतुर प्रवीन ।
दोऊ रस के हेतु करी कीन्ह कोक नवनीत ॥
जाके गुन के सग रहै कोकसार अस ग्रथ ।
जो कोउ रसीक वीचारी है जोनी परोरथस पथ ॥
अली सुमन वन अलीयन चढी विभावन कत ।
द मधु रीतु अती जाही रुची रवनी जे मन आनंद ॥

वरनौ काम अभीराम छवी विरनौ भामीनी भोग ।
सकल कोक दधि मथन करी रचो सार सुष जोग ॥

अंत—कहै कोक प्रमान सत कै जान ।
जेही जेही कहा सत कै मान ॥

इती श्री कोकसास्त्र सपुरन ॥

विषय—कोकशास्त्र विषय वर्णन ।

रचनाकाल

समत सोरह सै बरस एते रसा जो आही ।
माघ मास सुकल तीथी सतमी कथा कीन्ह कवी चाही ॥

संख्या १७७ पंचाध्याई, रचयिता—नंददास, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—८६. × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—२३४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १७८० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री डा० भवानी शंकर जी याज्ञिक, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ लिषित पंचाध्याई ॥
वदन करौ कृपा निधान श्री सुक सुभकारी ।
सुधि जोतिमय रूप सदा सुंदर अविकारी ॥
हरि लीला रस मत मुदित नित विचरत जग मे ।
अद्भुत गति कछु नाहि न परत हुई निकसत मग मे ॥
नीलोतपल दल स्याम अंग नव जोवन राजे ।
कुटिल अलक मुष कवल मनो अलि अवली राजे ॥
ललित विसाल सुभाल दिपत जानो निकरि निकर ।
क्रिश्न भगति प्रतिबिंब तिमर कहु कोटि दिवाकर ॥

अंत—यह उजल रसमाला कोटि जतनन पोई ।
समाधान हेरौ परिहरौ तोरा मति कोई ।
श्रवन सार कीरतन सार सुमिरन है पुनि ।
ग्यान सार हरि ध्यान सार श्रुति सा (र) गुथी गुनि ॥
अघ हरनी मन हरनी सुंदर प्रेम वितरनी ।
नंददास के हीए वसो नित मंगल करनी ॥

इति श्री नंददास कृत पंचाध्याई संपूरन
जद्रिस पुस्तिकं दृष्ट्वा तद्रिस लिषतं मया ।
जदवा सुध असुध मम दोस न दीयते ॥

संवत १७८० मीती पूस सुदी १३ वार सनीचर वार को लीषी दसषत डालचंद ब्राह्मन के ॥ सुभमस्तु शुभ भवत् ॥

विषय—श्री कृष्ण और गोपियों का रास वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—इसके साथ निम्नलिखित रचनाएँ हैं—

१ स्याम सनेही—आलम कृत ।

२ ब्रह्म नाममाला योग सिद्ध—नित्यानंद कृत ।

इनके विवरण ले लिए गए हैं । स्यामसनेही से लिपिकाल सं० १७७५ वि० है ।

संख्या १७८क सुदर्शन चरित्र, रचयिता—नंद (नंददास), कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—१२½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—६६३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर (बड़ा मंदिर), चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ अथ सुदर्शन चरित्र लिष्यते ॥

॥ सोरठा ॥

प्रथम सुमिरि जिन पाइ सहित सुरासुर नाग षग ।
भव भवपातिक जाइ सिद्धि सुमति साहस बढै ॥ १ ॥

॥ दोहरा ॥

इद चद अरु चक्कवे हरि हलधर पाणि नाह (?हलधर) ।
तेऊ वरनन नहि सके जिनगुन अगम अथाह ॥ १ ॥

:o. .o· :o:

॥ दोहा ॥

मन वच क्रम गुरु चरन नमि परहित उदित जुसारु ।
करहु सुमति जन नद की कहे कथा विस्तार ॥ ६ ॥

:o. o :o:

गणधर पद पावन गुन कद । भट्टारक यश कीर्ति मुनिद ॥
तापट प्रगट महि मे जसु जासु । लीला कियो मदन को नासु ॥११॥
नाम सुषेमकीति मुनिराइ । जाके नाम दुरित छय जाइ ॥
तासु पद श्रुतसागर पार । त्रिभुवनकीति कीर्त्ति विस्तारु ॥१२॥
तासु समीप सुमति कछु लई । उकति वृद्धि मेरे मन भई ॥
नैना नदि आदि जो कही । ताही विधि वाध्यो चोपही ॥१३॥
जबुदीप दीप परधान । सब दीपन मे जाको मान ॥
भरथ क्षेत्र तामे अतिचारु । शोभाकहत होत विस्तारु ॥१४॥

॥ सोरठा ॥

सर सरवर जलपूर कूप अनूप अमरामरस ।
जन धन कनक कपूर विविध भोग अर जोगनिधि ॥१५॥

॥ दोहा ॥

मगधदेश विप्यात महि जा सेवत सुर वृद ।
राजग्रह पुर तह बसे शेनिकराइ नरिद ॥१६॥

अत—

॥ दोहा ॥

अगम आगरो पवरुपुरु उट (?उच्च) कोट प्रासाद ।
तरे तरगिनि नदि वहे नीर अमि सम स्वादु ॥५०१॥

॥ चौ० ॥

भाषा भाउ भली जह रीति । पालहि बहुत गुनिन सो प्रीति ॥
नागर नगर लोग सब सुषी । पर पीरक ते कर्म्म ते दुषी ॥५०२॥
धनकन पूरन तुग अवासु । वसहि निसक धर्म्म के दास ॥
छत्राधीश हसाऊ वश । अकबर नद वैरि विध्वस ॥ ३ ॥
तषत बषन पूरो परचड । सुर नर वस नृप मानहि डड ॥
नाम काम गुन आनन वियो । रचि पचि आपु विधाता कियो ॥ ४ ॥
जहागीर उपमादेऊ काहि । श्रीसूलितान नूरदीसाहि ॥
कोशदेश मत्री मति गूढ । छत्र चमर सिघासन रूढ ॥ ५ ॥
करे असीस प्रजा सब ताहि । गुन वरने सु इतीमति काहि ।
सत सोरहसे उपरत । त्रेसठि जानहु वरिष महत ॥ ६ ॥

॥ सोरठा ॥

माघ उज्यारे पाष गुरुवासर दिन पचमी ।
बधि चोपही भाष नद करी मति सारशी ॥ ७ ॥

॥ दोहरा ॥

कथा सुदरशन शेठि की पढे सुनै जो कोइ ।
पहिले पावे देव पद पाछे शिवपुरी होइ ॥५०८॥

इति श्री सुदर्शन चरित्र महाश्शीलाधिकार नद . .

विषय--जैन धर्मानुयायी सुप्रसिद्ध सुदर्शन सेठ की कथा का वर्णन ।

रचनाकाल

सवत सोरह से उपरत । छेसठि जानहु वरिष महत ॥ ६ ॥

॥ सोरठा ॥

माघ उज्यारे पाष गुरुवासर दिन पचमी ।
बधि चोपही भाष नद करीमति सारशी ॥ ७ ॥

सख्या १७८ख सुदशन चरित्र, रचयिता--नद या नदलाल, कागज--देशी, पत्र--२४, आकार--६$\frac{३}{१०}$ × ६$\frac{७}{१०}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--११, परिमाण (अनुष्टुप)--६२७, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १६६३ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री दिगबर जैन मदिर (बडा मदिर), चूडीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि--ॐ० नम सिद्धेभ्य. ॥ अथ सुदर्शन चरित्र लिष्यते ॥

॥ सोरठा ॥

प्रथम सुमिरि जिनपाइ सहित सुरासुर नाग षग ।
भव भव पातिक जाइ सिद्धि सुमति साहस बढै ॥ १ ॥

॥ दोहरा ॥

इद चद अरु चक्कवै हरि हल हर पातिणनाह ।
तेऊ वरनन नहीं सके जिनगुन अगम अथाह ॥ १ ॥

॥ चोपही ॥

सुमिरि शारदा जिनवर वानि । करौ प्रनाम जोरिकर पानि ।
सुरिष सुमिरे पडित होइ । पापपक मल डारे धोइ ॥ ३ ॥
जे कवि कवित पुराण प्रवान । ते मानहि देवी की आनि ॥
प्रथम सुमिरि शारद मन धरो । तो कछु कवित्त बुद्धि अनुसरो ॥ ४ ॥

अत--अगम आगरो पवरु पुरु उट कोट प्रासाद ।
तरे तरगिनि नदि वहे नीर अमीसन स्वादु ॥

॥ चौ० ॥

भाषा भाव भली जह रीति । पालहि वहुत गुनिन सो रीति ॥
नागर नगर लोग सब सुषी । परपीरक ते कर्म्मते दुषी ॥५०२॥
धनकन पूरन तुग अवासु । वसहि निसक धर्म्म के दास ॥
छत्राधीश हमाउ वश । अकबर नद वैरि विध्वस ॥ ३ ॥
तष्त वषत पूरो परचड । सुर नर वस नृपमानहि डड ॥
नाम काम गुन आनन वियो । रचिपचि आपु विधाता कियो ॥ ४ ॥
जहागीर उपमा देउ काहि । श्री सुलितान तुरदी साहि ॥
कोश देश मत्री मति मूढ । छत्र चमर सिघासन रूढ ॥ ५ ॥
करे असीस प्रजा सब ताहि । गुन वरने सुद्धतो मति काहि ॥
सवत सोरह उपरत । छेसठि जानहु वरिष महत ॥ ६ ॥

॥ सोरठा ॥

माघ उज्यारे पाष गुरु वासर दिन पचमी ।
बधि चौपही भाष "नद" करी मति सारशी ॥ ७ ॥

।। दोहरा ।।

कथा सुदशन शेठि की पढ़ै सुनै जो कोइ ।
पहिले पावे देव पद पाछे शिवपुरी होइ ।।५०८।।

इति श्री सुदर्शन चरित्र महाशीलाधिकार नद . . . .

विषय—जैन धर्मानुयायी सेठ सुदर्शन की कथा का वर्णन ।

रचनाकाल

संवत सोरह (सै) उपरंत । त्रेसठि जानहु वरिष महत ।।

।। सोरठा ।।

माघ उज्यारे पाष गुरुवामर दिन पंचमी ।
बधि चौपही भाष नद करी मति सारशी ।। ७ ।।

सख्या १७८ग. यशोधर चरित्र या जशोधर चरित्र, रचयिता—नद या नदलाल, कागज—देशी, पत्र—३१, आकार—१२½ × ६¼ इच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—८५२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६७० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर (बडा मदिर), चूडीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—ॐ० नमः सिद्धेभ्य श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नम श्रीवाग्वादिनीभ्यो नमः ।। लिखित जशोधर चरित्र ।।

।। चोपही ।।

सुमिरि देउ अरहत महत । गुण आगम लहे को अत ।।
जाके माया मोह न मान । लोकालोक प्रकासन ज्ञान ।। १ ।।
जाकें कागज दोष न बैद । षितिपति रक न जाके भेद ।।
राषें हरषन विरचेवकु । सुमिरत नाम हरे अघ चक्र ।। २ ।।

अंत— **।। दोहरा ।।**

सवत सोर शे अधिक सत्तरि शावन मास ।
सुकुल सोम दिन सत्तमी कही कथा मृदुभास ।। ६ ।।

।। अरिल्ल ।।

अगरवाल वर वश गौ सुना गाँव कौ ।
गोइल गोत प्रसिद्ध चिन्ह ता ठाव कौ ।।
माताहि चदन नाम पिता भयरौ भन्यो ।।परिहा।।
नद कही मन मोद गुनी गनना गन्यो ।। ७ ।।

इति श्री जसोधर चरित्र कथा नद कवि रचित सपूर्ण भवति ।। शुभ ।। शुभमस्तु ।।

विषय—जैन धर्म कथाओ के अतर्गत यशोधर चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

सवत सोर शे अधिक सत्तरि शावन मास ।
सुकुल सोम दिन सत्तमी कही कथा मृदुभास ।। ६ ।।

सख्या १७९क शालिहोत्र, रचयिता—नकुल, कागज—देशी, पत्र—३४, आकार—६¾° × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—८१६, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६०१ वि० प्राप्तिस्थान—नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—

. . . .

. . . . . तन रण मे चल भगाइ ।।
ए लक्षण चहू वर्ण के सबके सब नहि होत ।
मिश्रित अग पहिचानिए तैसे करै उदोत ।।

विप्र योग्य है चारि तीनि नराधिप को भलें ।
वैश्व सुषद है दोइ एक सूद को चाहिए ।।
कोउ पडित कहत है राजन के सब योग्य ।
क्षत्री जाति विजै रण लेइ । धन के काज वैश्व चढि जाइ ।
औरौ काज सूद्र सुषदाइ ।।
चारिहु जाति रहैए जहि के । सपति करै सदा ए तेहि के ।।
वाजी सोवत है सदा जागत कबहु नाहि ।
कीतौ जागे रण समै कीकार मुष माहि ।।
:o: :o: .o:

॥ इलाज घोरे के पक्षाघात मारे की ॥

कूटकी १।२५ हुरहूर के बीज १।२५ माईरीयाकी १।२५ सिलाजित १।२५ हरदी १।२५ दास हरदी १।२५ सवुन १।२५ सोठि १।२५ इागुर।२५ हर १। रुसे का काहु १।२५ नहि मा औषद वूकि कै मिलाऊ ।। तीनि रोज देइ मोथी का दाना दुसेवा देव घोरा भला होइ ।।

अत--जेहि धोरे का नारा नीकसा रहै तेहि के लक्षण ।।

पेसव वार वार करै ।। क्षलकै वार वार ।। नारा मा पपटा परै नारा निकसा रहै ।। तेहि का मुतरा रोग कहो । माथ चुरत रहै टपमारा करै ।। देह कापत रहै ।। दिन दिन सुषत जाइ ।। पाछे के रग मोटि परि जाइ ।। पाय की तौ मूतरा जानी ।।

॥ तस्य औषद ॥

गुर्च का सतु २। धानी के वाउर का सत २। गोहु का सतु २। मिरिच २। चूर्ण कै कै आठ टका भरि ममाषी मा सानव ।। तेहि की दण पोडी वाधव १० एक गोजी प्रातं देव मोथी का दाना मा ।। ऊपर ते सेरे हटा की पाती का रस देव १० दाना उरिदु का देव भल भला होई ।।

इति श्री शालहोत्र नकुल कृते समाप्त ।। लिषित मतिराम मिस्र लेन शुभ भूयात् सवत १९०१ शाके १७६६ मीती कार्त्तिक शुक्ल पक्षे एकादस्य वुध वाशरे ।। राम

विषय--शुभाशुभ घोड़ों का वर्णन तथा उनके रोगोपचार आदि का विवेचन ।

विशेष ज्ञातव्य--नकुल पाडवों मे से एक भाई था और वे सबके सब परीक्षित के जन्म के पहले ही स्वर्गारोहण कर चुके थे । ऐसी दशा मे प्रस्तुत ग्रंथ का रचयिता कोई अन्य नकुल भी हो सकता है । पर अन्य प्रमाण के अभाव मे इन्हे ही रचयिता माना गया है ।

संख्या १७९ख शालिहोत्र, रचयिता--नकुल पंडित, कागज--देशी, पत्र--२१, आकार--८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--१४, परिमाण (अनुष्टुप)--४४१, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य गद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री प० आद्याशंकर जी त्रिपाठी, ग्राम--रुधवली, डाक०--मरपतहा, जिला--जौनपुर ।

आदि--श्री गणेशाय नम

सूर्यदेव नमस्वयामि वाजि वाहनमुत्तमम् सर्वदेव मयो जेष्ट वाजि रक्षा सुखाकर: १ सर्वदेव मये सूर्य सर्व ज्ञान दया पर चतुष्पादो वन्दस्य मुक्ति मुक्ति फलद २ टीका

प्रथम सूर्य देवता के नकुल नमस्कार करति है मृतलोक के देवता सूर्य है सूर्य के वाहन अस्व है ज्ञान दया रूप गउ है घोटक औ गज सभा(र) मे प्रच्छे है घटक ते राज पावे राज्य ते दाता भोक्ता होय दाना ते गउदान दे इतिहिनी मुक्ति भुक्ति लाभ होइ भाग्यवत पुरुष का कामधेनु अरु अस्व मिले सर्व अश्व वारावार नहि है लछन अलछन जानि वाजी नकुल कहै ।

अत--

श्लोक

दिन मुत्र कर पेदस्थ क्रोपे क्रोते छपात्तरे
वाजि वद्यानश्च कामा धास मुष्टि ये वर्जितम ।।

टीका

वहु कोस माम पेसाव लीदिं करावें नहि पानी वाछित दीजें खाइ ।। जैसे साव लीविक स्या पाछे दाणौ न देधो ।।१७।। इति श्री नकुल पडित कृत शालिहोत्र अश्व प्रमान परीक्षायां पंचमो अध्याय अथ रक्तश्चाप औषधि लिख्यते

विषय—अश्व विषयक रोग तथा चिकित्सादि का लक्षण वर्णन ।

संख्या १८०. बारहमासा, रचयिता—नत्थन, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—१० × ६।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप)—१६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६२२ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—श्री दलपति सिंह जी, ग्राम—प्रान का पुरा, डाक०—लाला की बाजार, जिला—प्रतापगढ़ ।)

आदि—**बारहमासा नत्थन कीत लीखते ।।**

जानें कौन पराएे मन की पीय वीन एेह गत हुई वीरहन की ।
लागे असाढ उमग घन घोरा मोरा सोर करन लागे,
गरज सुनत मोरा छतीया लरज गई एह दुख कठीन चोट सही घन की ।
पीय वीन एह गत...... ।१।
सावन समुझ हुई नही पीआ को जीव को दीना नीपट अदेसा,
चहुं दीस वदरा झुक झुक आवें उनको भावें वातें रन की ।
पीअ वीन एह गत...... ।२।
भादो भरन परनें एेह लागी रैन झुकी काली अधीआरी,
मै दुख पारी भरूं दुख भारी लागी कटारी प्रीत परन की ।
पीय वीन एह गत...... ।३।
कुआर करार कीआ पीआ नें झुठी अवध में सकल दीखाई,
टूटन चली जोगनी आपनी के राह गहुगी में माधो वन की ।
पीय वीन एह गत ..... ।४।
कातीक पंथ करें कव फेरा छोर व्याकुल जीवरा मेरा,
घर घर नारी रचें दीवारी हमकौ आस लगी दरसन की ।
पीय वीन एह गत...... ।५।
अगहन अधम सीतल दुख पाऊ तोसक वाला पोस भराऊं,
पीआ वीन जाडा मुजको सतावें देखु वेग राह आवन की ।
पीय वीन एह गत ..... ।६।
पौह मौह कर हमको त्यागे अव मन होए रहा है वैरागी,
दीन नही चैन रेन नही नीद्रा सव सुख तजा होस नही तन की ।
पीय वीन एह गत...... ।७।
माघ वसंत पूजती सव सखीआ पीआ वीन कौन वसत पुजावें,
कोस पर पहीनौं वसन वसती फूकत वीरह छार हुई तन की ।
पीय वीन एह गत...... ।८।
फागुन रग सुरग वताती कुमकुम हाथ लीएे पीचकारी,
वीर अवीर उडत है पलपल हो मदमाती सुरत सुमरन की ।
पीय वीन एह गत...... ।९।
चैत चतर की चोता जी मै फुल रही वन मे फुलवारी,
मन मोरा भौरा भओ डोलें तडफत मीन हुई त्रास मरन की ।
पीय वीन एह गत...... ।१०।
लग वैसाख साख सव खोई कुवुजा के सग प्रीति लगाई,
ऊधो हाथ सदेसा भेजा आप नही सुध लेत भवन की ।
पीय वीन एह गत...... ।११।

जेठ जुआला नीपट पडत है सूखा तन जी वडा मुरझाना,
वावत पाती फाटै न छाती असँवा वहै जैसे नदीआ सावन की ।
पीय वीन एह गत...... ।१२।

जबसे जेठ लौंद का लागा खान पान वीरहन ने त्यागा,
कहै 'नत्थन' पीतम घर आए कठ लगाऐ मै दासी पीआ के चरनन की ।
पीय वीन एह गत.. .. ।१३।

इती नत्थन कीत वारहमासा सपूरन ॥ ॥ सवत् १९२२ अगहन १२ ॥
—आद्योपांत उद्धृत

विषय—बारह महीनों का विरह वर्णन ।

संख्या १८१ नागकुमार चरित्र, रचयिता—नथमल, कागज—देशी, पत्र—७९, आकार—१२६॰ × ६६॰ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—२१३३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९८९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर, अहियागज, टाट पट्टी मोहल्ला, लखनऊ ।

आदि—ॐ नम सिधेभ्या ॥ अथ नागकुमार जी चरित्र जी की भाषा लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

विमल वस इष्याक मै तामे रिषभ जिनद ।
उदय भये दिनकर महा विगसे भवि घरिविद ॥

उमलत छद

जग वद्य भये जुग आदि विषे । सुत नाभि नरेद्र तने जग मे ।
विधि भूमि मिस नास करी सव जीव सुषि करि कै कुल मै ।
वटराज विभूति निषार सवै ॥
तप घोर कियो प्रभु ने वन मै । करि कै वृष को उपदेश भलो ।
विधि नासि असी सुभ सेवन मे ॥ २ ॥

मध्य—

चौ हजार पुनि तीन सै असिकही सब केतु ।
श्चारो दिस फहरत गगन वग गन की छवि देत ॥५२॥
धूजा भूमि आगे चल्यौ श्रेनिक नृप गुनवत ।
लष्यौ रजत मय कोठ वर विमल धवल झलकत ॥५३॥
किधौ प्रभू को सुजस इह उजल वरन मनोग ।
चहुवोर फेरि दिये प्रगट भयौ सम योग ॥५४॥

अंत—

नगर आगरो परम पुनीत । माधरमी जह है सुविनीत ॥
जह ते जेठमल साह सुजान । गुन गन मडित दया पुण्य निधान ॥३२॥
ताके तनुज दोय गुनवान । निज कुल कमल प्रकासन मान ॥
जेठो सोभा चद उदार । लघु सुत गोकुल चद उदार ॥३३॥
वस षडेलवाल अवदात । गोत विलाला जग्त विष्यात ॥
अन्योदक को कारन पाय । वसे भरतपुर मे फुनि जाय ॥३४॥

॥ दोहा ॥

नदन सोभाचद को नथमल निपट अथान ।
छद कोस पिगल तनो जामे नाहि ज्ञान ॥३५॥
सग ही चाडवाड प्रसिध । केसोदास धए तवहू रिध ।
मयाराम है ताको सही । पोतदार जाने सव मही ॥३६॥
मयाराम ने हेत करि राषे अपने पास ।
काम षजाने को दयौ नथमल को सुष रास ॥३७॥

मनोवक के जोग वसाय । वसैं वहुरिहि रायपुर ग्राय ॥
रच्यौ चरित्र तहा मन लाय । नथमल तैं निज पर सुखदाय ॥३८॥

:o: :o: :o:

संवत सत जान । ता उपर लेती सप्त मांन ॥
माघ सुक्ल पाचैं गुरवार । ग्रंथ समाप्त कीनो सार ॥४१॥

इति श्री नाग कुवार चरित्रेषु मुष्य रामचंद्र प्रणीतानसारे नथमल विलाला कृत भाषायां नाग कुमार मुकुटिमनि वरणनो नाम सप्तमो अधिकार सपूर्ण ॥ सुभ मिति ज्येष्ट सुदि ॥ २ ॥ संवत् ॥१६८६॥ हस्ताक्षर पडित दामोदर चौवे के सुभ मगल ॥

विषय—जैन धर्मानुयायी नागकुमार चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

संवत सत जान. . . . । ता उपर लेती सप्त मान ।
माघ सुक्ल पांचै गुरवार । ग्रथ समाप्त कीनो सार ॥४१॥

सख्या १८२ नवरग विलास, रचयिता—नवरग जी, कागज—देशी, पत्र—२८, ग्राकार—६॥ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—५०८, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सीताराम जी दसधी, ग्राम—मईडीह, डाक—मडियाहूँ, जिला—जौनपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

सोभीत वैजती गरे मीस चदिका चंद ।
सुमिरत नाम किसोर छवि हुलसत हिय ग्रानद । १ ।

कवित्त

कंचन लकुट कर मुकुट सुधारे सिर होत तहा इत उत चमकनि लाल की ।
नवरग कुडल की ललित झलक पर वारि वारि जैये चारु लटकोली चाल की ।
पीत पट चटकनि भौहनि की मटकनि राजि रही लटकनि तैसी वनमाल की ।
सरसिज स्याम मनमिज से मधुर सदा वसै उर मेरे ऐसी छवि नंदलाल की । २ ।

:o. ·o· :o:

दोहा

अपनी जुक्ती न लीन कछु जुक्ति कविन की पाठ ।
श्री नवरग विलास यह पगट्यौ सुमति सोहाइ । ४ ।
श्री नवरग विलास यह मान सुरस को रग ।
कोडित कवि कुल हस सम दोहा छद तरंग । ५ ।
नवरस मै श्रृगार रस पहिले किति वषान ।
फिरि पाछे सुभ वरनि हौ सकल रसनि की षानि ॥ ६ ॥

अत—३३ चिता जथा

दरसन मिलन सुवाम को कौन भांत ते होइ ।
पिय सोचै जिय मैं सुयौ चिता कहिए सोइ ।३४।

जेती सुधाई सुधा की सवै 'नवरग' सोच्यौ वसुधा चहुग्रोर ते ।
सभित लक की सकनि ते . . स मार उरोजनि की झकझोर ते ।
कौन उपाय न पीय मिलौ तजि सोच हिये कटाछनि कोरते ।
गुजत है अलि रास रचे जिनके सहजैही सुगध झकोरते ।३५।

विषय—नवरस वर्णन । श्रृगार रस का सागोपाग वर्णन ।

संख्या १८३क अस्तुति श्री बजरंग की, रचयिता—नवल (? नवलदास), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—६३/४ × ६३/४ इंच, परिमाण (अनुष्टुप)—६३, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२१ के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री हरिशरणदास जी एम० ए०, ग्राम—कमोली, डाक०—रानी कटरा, जिला—बाराबंकी।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥

॥ सोरठा ॥

वदौं पवन कुमार सुषद सिद्धि प्रद सदन जय।
मुद मंगल आगार ज्ञान ध्यान कल्यान मय॥ १॥

॥ चौ ॥

जय समीर सुत राम दुलारे। जय कपीस त्रिभुवन उजियारे॥
जय बल बुध ग्यान गुन सागर। जय सेवक मन कलम प्रभाकर॥
जय हनुमत संत सुषदाता। जय बुध विबुध कुमुद जग त्राता॥
अंजनि सुवन दवन दुष दारुन। मधुर कुजार्यति पद कजारुन॥

अंत—परो रहो द्वार पर निजु दिन सुमिरत नाम।
दीजे नवल गरीब को यह बर मन अभिराम॥
अस्तुति श्री बजरंग की पूरन सब काम।
पढ़त सुनत मंगल परम सानुकूल सिय राम॥
जो पुरान के मध्य सब बरनि नाम के अंत।
सो मन ते बिसरै नहीं यह दीजे हनिमंत।

चौ ॥ संपूरन ॥ का ॥ सु ॥ प ॥ च ॥ लिषि मुनुपडित ॥ मुकाम श्री अस्थान कोटवा

विषय—हनुमान जी की स्तुति वर्णन।

संख्या १८३ख ज्ञान सरोवर, रचयिता—नवलदास, कागज—देशी, पत्र—८५, आकार—६३/४ × ७३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—२२१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १८१८ वि०, लिपिकाल—सं० १८५१ वि०, प्राप्तिस्थान—महंत श्री रामप्रसाददास जी, स्थान—हरिगांव (सिधादास बाबा की कुटी), पोस्ट—पर्वतपुर, जिला—सुलतानपुर।

आदि—श्री गनेसाय नम अथ ग्यान सरोवर लिष्यते कीत नवलदास कै ॥

॥ सोठो ॥

सुमिरौ सतगुर पाय जो परमन करिवर वदन।
दुरमति दूरि पराय करहु कृपा सिव सक्ति सुर॥ १॥
रहे भुवन भरि पूरि सत गुर साहेब जगविदित।
नाम सजीवनिमूरि दास नेवल सुमिरहु कस ना॥ २॥
"जगजीवन" जगविदित प्रभु नारन के अवतार।
"दास नेवल" तेहि सरन होइ उतर भवजल पार॥ ३॥
कतहु सुन्ये कहु नषत है कतहु चंद कहु भानु।
"दास नेवल" सतगुर वहै जा प्रनीत करि मानु॥ ४॥
नैना माजै मत्र सो जब अएना सम होइ।
झलकि उठै सतगुर तहाँ दोसर अवर न होइ॥ ५॥

:o: .o :o:

प्रभु दूलन प्रभुपेम श्री प्रभु देवा के पाय।
नेवल सो चेरा सवन के सिद्धा सहित मनाय॥ १५॥

॥ छंद ॥

सवत अठारह से अठारह माह पूरनवासिया।
संक्राति सुदरि जानिकै रविमनि कथा परगासिया॥

निरमल सरोवर ज्ञान को अस्नान स्रोता जो करै ।
तरि जाइ पाप अगाह ते सुख मूल सागर मे परै ॥

अंत—एह सब चरित पुरान के ग्यान बषानि अघहानि ।
"दास नेवल" स्रोता तरै सुनै जो निस्चे मानि ॥२५७॥
तरै फरै फिरि ना भरै श्रोता वकता होइ ।
"दास नेवल" सोइ पाइहै अवर न पावै कोइ ॥२५८॥

॥ सोरठा ॥

धन्नि जन्म तेन्ह केर स्रोता वकता जक्त के ।
तेन्ह न भवजल फेर जेसर ज्ञान प्रमान करि ॥२५६॥

इति श्री उधव माधव सवादे ग्यान सरोवरे भाषा कृते पच दसमो अध्याइ ॥१५॥ सवत १८५१ ॥ ज्येष्ठमासे कृष्णपछे नौम्या भृगुवासरे ॥ ग्यान सरोवर सपूर्न सुभमस्तु ॥

॥ दोहा ॥

श्री जगजीवन जक्तगुरु दूलणदानि वदार ।
सगुन सर्वहित जानिसुभ सिद्धानाम अधार ॥ १ ॥
नाम आए नहै राम को दीष सत करि ग्यान ।
ताहि नयेन विच रएनदिन करि सिद्धामा निध्यान ॥ २ ॥

.o. o' .o'

अपने भुगुते वनत हे आपन कृत जो कर्म ।
सिद्धाधर हरिकारने सुमिरहु नाम सुधर्म ॥११॥

सतनाम ॥ सतगुर सहाइ ॥ सतनाम ॥

विषय—उधव माधव सवाद के रूप मे सद्‌भक्ति और भक्तों की कथा का वर्णन ।

रचनाकाल

सवत अठारह से अठारह माह पूरनवासिया ।
सक्रांति सुदरि जानिकं रविमनिकथा परगासिया ॥

सख्या १८३ग ज्ञान सरोवर (एकादसी माहात्म्य), रचयिता—नवलदास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—८½ × ६½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—१२०, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८५१ वि०, प्राप्तिस्थान—डा० भवानीदयाल सिह जी, ग्राम—ऐंनवारा, पा०—सत्थिन, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—श्री गुरुभ्ये न्म्ह श्री गनेसयान्म्हः
कथा एकादसी लीषते ॥
सुण चह प्रिय हरि गुन पातो । हरिषाए उतपति केही भांति ॥
जो अस हरिव्रत मृतलोक चलावो । सुणि प्रय वचन वहुत मन भावो ॥
एकादसि उतपति सिव गायो । सतजुग भएउ एक सुरारी ॥
ब्रह्म सृष्टि तेइ सकल वहायो । सकल देव अस्थान छडावो ॥

:o: .o :o

चंद सुर्ज आपण तेइ कीन्हा । इन्ह रवि ससिहि दुइ करि दीन्हो ॥

:o: o. .o.

सुनहि जहा कोउ सुर नर मुनि आदि । जाइ करहि वध सकल . वदी ॥
भागे विकल सुर ठौर न पायो । छीर समुद्र जाइ गोहरायो ॥
एह अजगुना अव सोअस्वामी । हमहि कहा पठवत सतनामि ॥
तीनिहु लोक ठवर कछु नाही । कह को सरन देव सव जाही ॥

अत— ॥ दोहा ॥

एइ सव चरित पुराण के ग्यानि षानि अघ हानि ।
'दास नेवल' स्रोता तहै सुनै जो निश्चै मानि ॥

तरै फिरै फिरि ना भरै स्रोता वक्ता होइ ।
दास नेवल सोइ पाइहै आवरण पइांठ कोइ ।।
।। सोरठ ।।
धन्य जन्म तिन्ह केरा स्रोता वक्ता जगत के ।
तेन्हहि भाव जल फेर जे सर ज्ञान प्रमान करि।।

इती श्री उधो मधोव सवद ज्ञान सरोवरे भाषा कृते प्रथम आवध्याये ।। श्री पोस्तक एकदसी ई संपुरानभष लोषते

।। दोहा ।।
पढे सुने मनलाइ के जो मन करि वीस्वास ।
सो नर भवने निर्फरि कै हैइ राम कर दास।।

मीती जेठ सुदी २ ।। सवत् १८५१ दीवरा सुक्रवार ।। लीषते आमन सींह वएसजो

विषय—एकादशी माहात्म्य वर्णन ।

संख्या १८३घ ज्ञानसरोवर, रचयिता—बाबा नेवलदास, कागज—देशी, पत्र—६१, आकार—१६$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—२१३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६०४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री रामनारायण मिश्र, ग्राम-मैत्रमी, डाक०-शाहमऊ, जिला-रायबरेली ।

आदि—श्री गनेसाय नम ।। श्री हनोमान जी संहाई ।। साहेव जगजीवन सहाइ ।। नाम राम राम

।। दोहा ।।
जगजीवन जग विदित प्रभु नारायन अवतार ।
दास नेवल तेहि सरन होय उतरे भव जल पार।।
।। सोरठा ।।
सुमिरौ मत गुर पाय जो परमन करिवर वदन ।
दुरमति दूरि पराय करहु कृपा शिव शक्ति सुर।।
रहे भुवन भरिपूरि सतगुर साहेब जग विदित ।
नाम सजीवन मूरि दास नवल सुमिरहु कस न।।
।। दोहा ।।
कतहु सुन्य कहु नखत है कतहु चद कहु भानु ।
दास नेवल सतगुर वहै जो प्रतीत कर मानु।।
आँषि पलक ना लागै माखी अगन जाइ ।
विन छाया कर दरसन दास नेवल कोउ पाइ।।

अंत—
।। दोहा ।।
एह सव चरित पुरान के ज्ञान षानि अघहानि ।
दास नेवल श्रोता तरै सुनै जो निहचै मानि।।
तरै फरै फिरि ना भरै श्रोता वकता होइ ।
दास नेवल सोइ पाइहै अवरन पाइहै कोइ।।
।। सोरठा ।।
धन्य जन्म तेन्हकेर श्रोता वक्ता जक्त के ।
तिन्हहि न भव जल फेर जे सर ज्ञान प्रमान करि।।

इति श्री ऊधव माधव सवादे ज्ञान सरोवरे भाषा कृते पचदसो अध्याइ ।।१५।।

इति श्री ज्ञान सरोवर कथा सपूर्णम ।। स० १६०४ सन् १२५५ भृगुवासरे समाप्त ।। संपूर्ण सुभमस्तु ।।

विषय—भागवत पुराण के अनुसार उद्धव माधव सवाद वर्णन ।

संख्या १८३ङ ज्ञान सरोवर, रचयिता—नेवलदास साहेब, निवासस्थान—धनेसा ग्राम, कागज—आधुनिक (सफेद), पत्र—१५४, आकार—८½ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप)—२८८७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१८ वि०, लिपिकाल—सं० १९६० वि०, प्राप्तिस्थान—महंत श्री गुरुप्रसाददास जी, स्थान व डाक०—बछरावाँ, जिला—रायबरेली।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री हनुमानजीग्राय नमः अथ लिख्यिते ग्रंथ ग्यान सरोवर साहेब नेवलदास कृत

॥ दोहा ॥
जगजीवन जग विदित प्रभु नारायण औतार।
दास नेवल तेहि सरण होइ उतरे भौजल पार॥ १॥
॥ सोरठ ॥
सुमिरौ शतगुरु पाय जो परसन करविर बदन।
दुरमति दूर पराध करौ कृपा शिव शक्ति सुर॥ १॥
रहे भुवन भरि पूरि शत गुर साहेब जग विदित।
नाम जीवन मूरि दास नेवल सुमिरौ कसन॥ २॥
:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥
प्रभु दूलन प्रभु श्याम है प्रभु देवी के पाय।
नेवल सुचेरा सबन के सिध्या चरण मनाय॥१६॥
॥ छंद ॥
संवत अठारह सै अठारह माह पूरणवासिया।
संक्राति सुंदरि जानि कै रविमानि कथा प्रगासिया॥
निरमल सरोवर ग्यान का अश्नान श्रोता जो करै।
तरि जात पाप अगाह ते सुख मूल सागर महं परै॥
:o: .o. :o:

पश्चिम दिसि है अवध ते नेवल रहे रटि नाम।
कोसन जोजन पाँच पर ग्राम धनेसा धाम॥१८॥

अंत—यह सब चरित पुरान के ग्यान खानि अघहानि।
दास नेवल श्रोता तरै सुनै जो निश्चै मानि॥२१॥
तरै फरै फिरि ना फरै श्रोता वकता होइ।
दास नेवल सोइ पाइहै और न पइहै कोय॥२२॥

॥ सोरठ ॥
धन्य जन्म तेहि केर श्रोता बकता जक्त के।
तिनहि न मजे फेरि जे सर ग्यान प्रमान करि॥४३॥

इति श्री उधौ माधौ सवादे ग्यान सरौरे (? सरोवरे) भाषा कृते नाम पंच दसमो अध्याय १५ इति समाप्त ग्रंथ ज्ञान सरोवर साहेब नेवलदास कृत मिति चैत वदी तिथी चतुर्दसी दिन सूकवार सम्बत् १९६० शुभ राम राम राम समाप्त

विषय—पुराणो (?) के आधार पर उद्धव माधव संवाद के रूप में ज्ञानोपदेश वर्णन।

रचनाकाल

१८ १८
संवत अठारह सै अठारह माह पूरणवासिया।
संक्राति सुंदर जानि कै रविमानि कथा प्रगासिया॥

संख्या १८३च ज्ञानसरोवर, रचयिता—नवलदास, निवासस्थान—धनेसा ग्राम, कागज—देशी, पत्र—८५, आकार—१३। × ५।। इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—२२६५, खंडित, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, रचनाकाल—सं० १८१८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० प्रतापनारायण जी मिश्र, ग्राम—सिर्राधी, डाक०—लक्ष्मीकांत गंज, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः सतगुर जी सहाय श्री हनुमंताय नमः

।। दोहा ।।

जगजीवन जग विदित प्रभु नारायन अवतार ।
दास नवल नहि सरन ह्वै उतरेउ भव जल पार । १
सुमिरौ सतगुर पाय जौ प्रसन्न करिवर वदन ।
दुरमति दुरि वहाइ करौ कृपा शिव शक्ति सुर । २
रहे भुवन भरि पूरि सतगुर साहेब जग विदित ।
नाम सजीवन मूरि दास नवल सुमिरौ कस न । ३
कतहु नषत कहु सून्य है कतहु चन्द्र कहु भानु ।
दास नवल सतगुर वहै जौ प्रतीति करि मानु । ४
आषि पलक नहि लागही माषी अग न जाइ ।
विना छुए कर दरसन 'दास नवल' कोउ पाइ । ५

·०· ·०· ·०:

रामानंद कबीरा नान्हक । नाम सेनि औ सघन वहु वानक ।
पीपा धना औ सोना मीरा । इन्हके चरन हरन भव भीरा ।।
तुलसीदास औ सूर मलूका । ह जन्मे सव गुप्त मलूका ।
तन धरि धरि हरि के गुन गाए । रहे गुप्त कोउ भेद न पाए ।

दोहा

प्रभु दूलन प्रभु षेम अरु प्रभु देवी के पाइ ।
नवल सो चेला सभन के सिध्या सरित मनाइ ।

छंद

संवत अठारह सै अठारह माह पूरनमासिया ।
संक्राति सुदर जानि कै रविदिन कथा परगासिया ।
निर्मल सरोवर ज्ञान के अस्नान श्रोता जो करै ।
तरि जाइ पाप अगाध ते सुष मूल सागर मे परै ।

दोहा

ज्ञान सरोवर ज्ञान मे ज्ञानी करत विचार ।
हिरि मिलि वाचत सुनत नर उतरै भवजल पार ।
पश्चिम दिसि अवध ते नवल रहै रटि राम ।
कोसन्ह जोजन पाच पर ग्राम धनेसा नाम ।

सोरठा

अव कछु दोस न मोर मै बाजन बाजेश तुम ।
गावो गुन प्रभु तोर मोहि कछुक वानी भयो ।

दोहा

नारद शारद सेश श्रुति भजन करत सब कोइ ।
रहै न मिटि यह जगत मै सुमिरन जेहि तन होइ ।
सुनहु उमा यह सव कह्यौ ऊधव सो भगवान ।
सत संगति महिमा विविधि ज्ञान सरोवर ज्ञान' ।

इति श्री ऊधव माधो संवादे ज्ञानसरोवरभाषा कृते वंदनादि उमा प्रश्न वर्नन नाम प्रथमो अध्यायः

अंत— सोरठा

लोयन वारिज दोन यक जव तापर तिल वसा ।
तीनि लोक तेइ कीन दास नवल अविगति कथा ।
धन भरि भवन अपार मनहु तरनि जल सों भरी ।
बूडत होइ न वार दास नवल उलचे विना ।

चौपाई

असु कहि आपु ताहि समुझावा । सहित अव वैकुंठ पठावा ।
कनक अवध जनु भयो विमाना । हरषित चले नगर नर नाना ।
यह सरसुति जेहि ना हित लागी । ते मूरुष मतिमद अभागी ।
पाप जाड लागत मरि जाही । ते कैसे सर ज्ञान अन्हाहीं ।
दिन दिन वढै भक्ति धन ज्ञाना । सव तजि सरवर ज्ञान अन्हाना ।
संतति सपति सव प्रभु देही । अंतकाल सतनाम सनेही ।
सहित विकार होइ रुज हानी । जेहि द्वारे गावै वुध ज्ञानी ।
आपु तरहि तारहि ससारा । श्रोता वकता विगत विकारा ।
पुस्तक महं नव वसन मिलाई । राखै भक्ति सहित मनलाई ।
जौ अस नेम छेम सो पावै । वार वार सतगुर कहि गावै ।
है सतगुर प्रताप एहि माहीं । श्रोता वकता नर तरि जाहीं ।
सप्त वरत वाचा जौ कोई । मास देवस प्रमान करि होई ।
तौ इक्षा पूरन तेहि केरा । होइ सत्य यह सत्य सवेरा ।
साधु द्विजन भोजन करवावै । प्रीति समेत निकट तह जावै ।
मन वाछित सो आसिष पावै । अतकाल सतगुर जहं जावै ।

छद

सुर सिद्ध मुनि गधर्व....... .....(अपूर्ण)
:o: :o: :o:

विषय—ज्ञानोपदेश तथा सतगुरु प्रताप वर्णन ।

सख्या १८३छ ज्ञानसरोवर, रचयिता—नेवलदास, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—११ × ५।। इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४, परिमाण (अनुष्टुप)—६, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० कृपाशकर जी शुक्ल, ग्राम—माही, डाक०—मभऊआ मीर, जिला—बस्ती ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

अथ लिष्यते कथा ज्ञान सरोवर कृत साहेव नेवलदास ।।

सोरठ

सुमिरौं सुरगुरु पाय जो परसत करिवर वदन ।
दुर्मति दूरि पराय करहु कृपा सिव सक्ति सुर । १
रहे भुवन भरि पूरि सतगुरु साहेव जग विदित ।
नाम सजीवन मूरि दास नेवल सुमिरहु कसन ।

दोहा

जगजीवन ज विदित प्रभु नारद के औतार ।
दास नेवल तेहि सरन ह्वै उतरे भव जल पार । ३

कतहु सुन्य कहू नषत है कतहुं चंद कहुं भान ।
दास नेवल सतगुरु वहै जो........ ... । ४

—आद्योपांत उद्धृत ।

विषय—ज्ञानोपदेश विषय वर्णन ।

संख्या १८३ज भागवत दशम स्कध, रचयिता—नवलदास, निवासस्थान—धनेसा, कागज—देशी, पत्र—२८०, आकार—१३½ × ५८/₁₀ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—७७७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८२३ वि०, लिपिकाल—स० १८३१ वि०, प्राप्तिस्थान—महत श्री गुरुप्रसाददास जी, स्थान—हरिगाँव (सिध्यादास बाबा की कुटी), डाक०—पर्वतपुर, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—श्री गनेसाए नम.

॥ सोरठ ॥

सतगुरु सावे राम तुम्ह सुक्रित सत दरस प्रभु ।
हृदय करिय विस्राम 'जगजीवन' जग तारनो॥
:०: ·० ०:

जगजीवन जगमगत है गगन महल महँ वास ।
ते सतगुर जग विदित प्रभु 'दास नेवल' करु आस॥ ७॥
·० .० .०:

वरनौ ग्राम वास अपने मन । ग्रथ रीति वहु कहत सत जन ।
दछिन दिसि वहै सुरसरि धारा । जोजन षट अवनी विस्तारा॥
पूरव दिसा अवध सुष भूरी । जोजन पाच अवनि कछु दूरी॥
उत्तर दिसि गुरु ग्राम सुहावन । अवरन सुर नर मुनि मन भावन ।
जोजन चारि अवनि विस्तारा । जोजन अरध गोमती धारा॥
पछिम दिसा लषनपुर सोहै । जोजन पाच देव मन मोहै॥

॥ दोहा ॥

एहि चारिहु के मध्य पर ग्राम धनेसा एक ।
दास नेवल आसन तहा सुमिरत सहित विवेक ।
सवत ठारह सै तहा तेइस ऊपर जानि ।
तव गावत गुन स्याम के दास नेवल रुचि मानि॥

अस्वनि मास विजै तिथि आइ । अभि निकेत ससि वासर पाई॥
तव सतगुरु प्रताप उर आवा । स्याम जन्म कीरति कछु गावा॥
श्री भागवत भक्ति सर धारा । अति पुनीत अघ काटनि आरा॥

अत—दरसन अनि हित वोध कर तजो नर मन लाइ ।
दास नेवल परतीत करु सकल दुरित दुष जाई॥

॥ सोरठा ॥

चरित समुद अवगाह दास नेवल कछु पार नहि ।
धने धने नरनाह जेन्ह हित मुनि कछु प्रगट करि॥

इति श्री हरि चरित्रे दसम सकधे महा पुराने श्री भागवते पारारान काड हरि वएकुंठ गवन वरननो नाम वतिसमो अध्याइ समाप्त॥ सवत १८३१

विषय—भागवत दशम स्कध का अनुवाद ।

रचनाकाल

संवत ठारह सै तहाँ तेइस ऊपर जानि ।
तब गावत गुन स्याम के दास नेवल रुचि मानि ॥
आस्वनि मास विजै तिथि आइ ।
अभि निकेत ससि वासर पाई ॥

संख्या १८३भ. भागवत भाषा (जन्म मध्य और पारायण काड), रचयिता—नवलदास, निवासभूमि—धनेसा (जिला सुलतानपुर), कागज—देशी, पत्र—५२६, आकार—८$\frac{१}{६}$ × ५ इंच, परिमाण (अनुष्टुप)—६२६१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८२३ वि०, प्राप्तिस्थान—प० त्रिभुवनप्रसाद जी त्रिपाठी, ग्राम—प्रान पाडे का पुरवा, डाक०—तिलोई, जिला—रायबरेलो।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥

॥ सोरठा ॥

सतगुर साचे राम तुम्ह सुकृत मत दरस प्रभु ।
हिदै करिय विस्राम 'जग जीवन' जग तारनो ॥ १ ॥

o: .o' o

बरनो ग्राम मवास अपने मन । ग्रथ रीति बहु बहुत सत जन ॥
दछिन दिसि बहै सुरसरि धारा । जोजन षट अवनी बिस्तारा ॥
पूरब दिसा अवध सुष भूरी । जोजन पाँच अवनि कछु दूरी ॥
उत्तर दिसि गुर ग्राम सोहावन । अवर न सुरनर मुनि मन भावन ॥
जोजन चारि अवनि विस्तारा । जोजन अरध गोमति धारा ॥
पछिम दिसा लषनपुर सोहे । जोजन पाच देव मुनि मोहै ॥

॥ दोहा ॥

ऐन्ह चारिउहु के मध्य पर ग्राम धनेसा एक ।
दास नेवल आसन तहा सुमिरत सहित विवेक ।
सवत अठारह सै तहा तेइस उपर जानि ।
तब गावत गुन स्याम के दास नेवल रुचि मानि ।

चौपाई

अस्विनी मास विजै तिथि आई । अभि निकेत सासि वासर पाई ॥
तब सतगुर प्रताप उर आवा । स्याम जनम कीरति कछु गावा ॥
श्री भागवत भक्ति रस धारा । अति पुनीत अघ काटनि आरा ॥
उपजहि रामचरन अनुरागा । मोह निसातम सोवत जागा ॥

. .o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

दरसन अतिहित बउध कर करत जो नरमन लाई ।
दास नेवल परतीति करु सकल दुरित दुष दाइ ॥

सोरठ

चरित समुद अवगाह दास नेवल कछु पार नहि ।
धन्य धन्य नरनाह जेन्ह हित मुनि कछु प्रगट करि ॥

इति श्री हरि चरित्रे दसम सकधे महापुराने श्री भागवत पारायन कांडे हरि वैकुंठ गवन बरननो नाम बतिसमो अध्याइ ॥२८॥ समाप्त सुभमस्तु ॥

विषय—भागवत दशम स्कंध का अनुवाद। इसमे निम्नलिखित तीन कांड है—१ जन्मकांड, २ मध्यकांड और ३ पारायणकांड।

रचनाकाल

सबत अठारह सै तहा तेइस उपर आनि।
तब गावत गुन स्याम के दास नेवल रुचि मानि॥
अस्विनि मास विजं तिथि आई।
अमि निकेत समि वासर पाई॥

संख्या १८३ज। नाम—[illegible]। रचयिता—नवलदास, निवासस्थान—धनेमा, कागज—देशी, पत्र—६८, आकार—५३ × ६१/१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—३८७२, पूर्ण रूप—प्राचीन पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३८ वि०, लिपिकाल—सं० १८५२ वि०, प्राप्तिस्थान—महंत श्री गुरप्रसाददास जी, स्थान—हरिगाँव (सिध्यादास बाबा की कुटी), डाक०—पर्वतपुर, जिला—सुलतानपुर।

आदि—श्री गनेसाय नम

सुमिर प्रथम गनेस गोसाई। जो तृभुवन हित करत सहाई॥
रिधि सिधि बुधि वकमत नहि वारा। अमिति अपतवन्ह पार उतारा॥

.o o ·o

सोरठा

सतगुर साँचे राम मत दिन कर भ्रम तम हरना।
हृदय करिय बिस्राम जग जीवन जग तारना॥ २॥

·o o ·o:

अति पुनीत वह पुर गुन ग्रामा। सो जग विदित सरदहा नामा।
तीरथ निरमल अवरन थापा। पाप ताप सब निरषत काँपा॥
ते सतगुर देवन्ह के दवा। पार तरत है जेन्ह कर षेवा॥
मै बूडत भव सागर माहीं। लीन्ह काढि अति हित गहि वाहीं॥
गहिनि वाह जिन्ह मोरि सभारी। मै वन्ह के निरषेउ उजियारी॥
भोर भानु जिमि जग उजियारे। तिन्ह के सरस चद अवतारे॥
नाम जलाली साहेब साँचे। जेन्ह की सरन पतित वहु वाँचे॥

:o: .o .o

गिरबर सुघ्रन अगम जेन्ह जाए। जगमग जुगल चद जनु आए।
तिन्ह के उर उतपति सतनामा। जो पुरविल मुनिवर कर जामा॥

·o: o o.

जगजीवन कर जस जग वाजा। जिन्ह भ्रम अगम इदु उपराजा॥
प्रवर सात दीपक उन्ह वारे। छवि जगमगत गगन जस तारे॥

:o. ·o .o·

सातहू मा एक 'दूलन दासा'। दीपक निर्मल रतन प्रकासा॥ १
दूसर 'देवीदास' उजियारे। जिन्ह वहुतन्ह करि पार उतारे॥ २
तीसर 'छेमदास' परगासा। उतरे वहुत कीन्ह जेन्ह आसा॥ ३
चौथ 'गोसाईं' दीपक भारी। उवरे वहुत मिले ससारी॥ ४

५

पंचम दीपक् में 'सिवदासा' । करहि लोग वहु जेकर ग्रासा ॥

६

षष्टम दीप जोतिसुभ तामा । 'उदय राम' ग्रस वन्हकर नामा ॥
सप्तम दीपक ग्रगम सुहेला । 'दास भवानी' थल वह रेला ॥
दीपक जन ग्रहलाद ग्रपारा । जगत विदित जस मानिक वारा ॥
दूलन दास दीप इक वारा । सिद्धादास जगत उजियारा ॥

:o: :o: :o:

जेन्ह तारेऊ मत प्रगट करि जो जग ग्रधम ग्रनत ।
'दास नवल' गुरु चरन दल ग्रव कहवावत सत ॥

:o. :o. .o

तव तुरकन फिरि चँद उर मारा । कीन्ह कविन सोइ जस विस्तारा ॥
हिंदू कटक मिटेऊ हिदुवानी । कुवरं कीन्ह देस तुरकानी ॥

दोहा

लीन्ह ग्रमल करि देस मह तुरक रहा सब छाइ ।
जूझे राजा देस के को सब सकत गनाइ ॥२४३॥

इति श्री माधव रतन ग्यान नेवलदास कृतौ समाप्त शुभमस्तु ॥ जादृस पोस्तक दृष्टा तादृस लिषितं मया ॥ जदि सुद्ध ग्रसुद्ध वा मम दोषो न दीयते ॥ सवत ॥१८५२॥ चेत्र मासे सुक्ल पछे तेरोदस्या गुरुवासरे ॥ रतनग्यान समाप्त ॥ सुभ भूयात् ॥ श्री जानकी वल्लभो जयति ॥

विषय—भक्ति ग्रौर उपदेशपूर्ण प्राचीन कथाग्रो का वर्णन ।

रचनाकाल

सवत ग्रठारह से ग्रँडतीसा । कहियत नाइ भक्त पद सीमा ॥
माघ मास सुभ पूरनमासी । कृपा समुझि हरि चरित प्रकासी ॥

सख्या १८३ट रामगीता, रचयिता—नवलदास, कागज—देशी पत्र—१२, ग्राकार—६८$\frac{9}{10}$ × ६$\frac{1}{8}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (ग्रनुष्टुप)—२७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८८५ वि०, लिपिकाल—स० १९२१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत हरिशरणदास जी एम० ए०, ग्राम—कमोली, डाक०—रानीकटरा, जिला—बाराबकी ।

ग्रादि—श्री गणेशाय नम ॥ ग्रथ राम गीता लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

प्रथम वदि सतगुर चरन रामहि करौं प्रनाम ।
मंगल को मंगल करन 'नवल' जासु गुन ग्राम ॥

॥ चौ ॥ १

मन वच कर्म सरन मै ताकी । मंगल रूप ग्रातमा जाकी ॥
सुर सतन हित लै ग्रवतारा । किये चरित प्रभु विविध प्रकारा ॥
रावनादि निश्चर सघारे । पावन जस त्रिभुवन विस्तारे ॥
गाइ गाइ रचइ चरित उदारा । नर उतरत भव सागर पारा ॥
धर्म कर्म ज्यहि विधि श्रुति बरना । कुकुस्थादि त्रिष के ग्राचरना ॥

अंत--   ॥ दोहा ॥

५ ८ ८ १
सम्वत सर वसु नाग महि माघ कृष्ण ससिवार ।
नौमी तिथि पूरन भयो यह रहस्य श्रुतिसार ॥३६॥

इति श्री रामगीता नवल दास कृत सम्पूरन ॥ सम्वत ॥१६२१॥ क्वार माँसे सुक्ल पछे तिथौ पचम्या वुध वासरे ॥ लिषत्वा मुनू पडित स्थान कुदनापुर ॥ सतन की सरन श्री राम सहाइ ॥

विषय--भक्ति और ज्ञानोपदेश ।

रचनाकाल

५ ८ ८ १
सम्वत सर वसु नाग महि माघ कृष्ण ससिवार ।
नौमी तिथि पूरन भयो यह रहस्य श्रुतिसार ॥३६॥

संख्या १८३० शब्दावली, रचयिता--नेवलदास जी, कागज--आधुनिक, पत्र--६६, आकार--७ ३/४ × ६ १/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--८५८, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १६५० वि०, प्राप्तिस्थान--श्रीयुत हरिशरणदास जी, (हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय), ग्राम-कमौली, डाक०-रानीकटरा, जिला-बाराबंकी ।

आदि--श्री गणेशाय नम ॥ अथ सब्दावली साहेब नेवलदास कृत लिप्यते ॥

दोहा

सतगुर साहेब कृपा करि दिहिनि भक्ति वरदान ।
वरनौ जस सब्दावली धरि उर अंतर ध्यान ॥ १ ॥
सब अस मान वटोरि ले पठि सिमिटि पाताल ।
चढि पताल तहँ गगन गे नवल अजायव ख्याल ॥ २ ॥

॥ अथ आरती ॥

साहेब तुम जगजीवन स्वामी । जीव जतु सब अंतरजामी ॥ १ ॥
देविदास औ दूलनदासा । यन्ह के घट सपूरन वासा ॥ २ ॥
षेमदास औ दास गोसाई । येइ साहेब सरनाई ॥ ३ ॥
जँह जँह प्रभु दीन्हे तुम ग्याना । मै मतिमद कहै नहि जाना ॥ ४ ॥
दास नेवल विसु(नु)वे कर जोरे । कब अइहौ साहेब घट मोरे ॥ ५ ॥

॥ राग गौरी ॥

तुम सो कहिये काह गोसाई ।
जीव जतु घट घट की वातै जानत अपनिहि नाई ॥ १ ॥
पडौ लाष भवन के भीतर कुरपति आगि लगाई ।
सुमिरन करत भये सब सीतल उवरै पाँचौ भाई ॥ २ ॥
व्याधा डसेउ कपोतिहि राषेउ हति सैचान रिसाई ।
तजि वैकुठ आपु हरि ध्यायो जब गज टेर सुनाई ॥ ३ ॥
अगिनि जाल अरु व्याध स्वान हरि भृगिनिहि लीन्ह छुडाई ।
दास नेवल के प्रभु सुनि लीजे साहेब समरथ साई ॥ ४ ॥

अंत--

वाँसुरिया विरहिनि वाजि रही ।
इत उत वाजत उत उर धुनि सुनि घुमरि घुमरि मन माँह रही ॥ १ ॥
अनहद धुनि श्रवरन गति वाजत समुझत वनत न जात कहा ॥ २ ॥
तान सुनत मेरो प्रान छकित भे मै विद्रावन जात रहो ॥ ३ ॥
दास नेवल भजु साँई जगजीवन मनमोहन मोरी वाह गही ॥ ४ ॥१७७॥

इति श्री सब्दावली साहेब नवलदास कृत संपूरनम् सुभ मस्तु ॥ मिती ज्येष्ठ सुदी ॥५॥ सनिवासरे ॥ श्री ॥ सम्मत ॥१६५७॥

॥ दोहा ॥

लेषक राम अधीन कवि वास रमइया ग्राम ।
जो प्रति देषा सो लिषा सिद्धि करहि श्री राम ॥ १ ॥
राम राम राम राम राम राम

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश ।

संख्या १८३ड सुखसागर, रचयिता—नेवलदास, कागज—देशी, पत्र—१००, आकार—९$\frac{1}{10}$ × ६$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—१७००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१७ वि०, लिपिकाल—सं० १९३६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री महंत गुरुप्रसाददास जी, स्थान व डाक०—बछरावाँ, जिला—रायबरेली ।

आदि—**श्री गणेशाय नम. ॥ श्री गुरचरण कमलभ्यौ नमः अथ आरम्भ शुष सागर ग्रथ साहेब नेवलदास कृत ॥**

॥ दोहा ॥

गुर गणपति शिव शक्ति शुर वंदौं रमा रमेस ।
दास नेवल हरिचरित रत, करौ कृपा उपदेस ॥ १ ॥
शुष शागर सत जल विमल कलिमल दलन प्रमाण ।
दास नेवल अस्नान करु होइ सदा कल्यान ॥ २ ॥
लेकर गुर पग त्राण रज नैन ऐन जिन दीन ।
खुली केवारी मोह कै भीतर दरसन कीन्ह ॥ ३ ॥
·o: .o· :o:

करि अजपा कछु काल जगावा । रेछ गौमती निक शुठावा ॥
रगर करत निकशी चिनगारी । भई शमूह जोति उजियारी ॥
शूझे रामचरित एहि भांति । वारौ रवि शसि नग मणि पाती ॥
कछु उपहास जानि टरि आवा । जह धन ईस धनेसा गावा ॥
ताशु दछिन वट विमल शुहावन । पीपर बाग तडाग शुपावन ॥
तह रचि विमल कुटी कुल तारणि । कही कथा परलोक सवारणि ॥

॥ दोहा ॥

अठारह सै सत्रह शम्वत कहौं वषानि ।
जेठ पचमी शुक्ल पक्ष शौमवार को जानि ॥ ७ ॥

अंत— **॥ शोरठा ॥**

अति हरि चरित अगूढ़ को शम्रथ पारै लयौ ।
दास 'नेवल' मतिमूढ़ नर तन प्रेम प्रतीत विन ॥ ७ ॥
कहत जुगल कर जोरि श्रोता वकता मित्र मम ।
टूटि लीजिए जोरि मोहि भरोसा यह भयो ॥ ८ ॥
मोहि न लायो खोरि बाजन बाजत नाथ कर ।
सो वाजन मति मोरि जानै वोहै वजाव जौ ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

पाप हरण पावण करण श्रोता लेहु नहाइ ।
शुष सागर भारवा कृत मैं एकइस अध्याइ ॥२१॥

बैसाख मासे कृष्ण पछे चतुरदस्यम् एतवार वासरे लिष्यते पर्मेश्वर दीन जो प्रति देखा सो लिखा मम दोष न दीयते शमत शूंम्वत १६३६ सन शन् १२८६ ॥

विषय—शुकदेव मुनि का चरित्र वर्णन है ।

रचनाकाल

अठारह सै सत्रह शम्वत कहौं वखानि ।
जेठ पचमी शुक्ल पक्ष शोमवार को जानि ॥

सख्या १८३इ सुखसागर, रचयिता—नेवलदास, कागज—देशी, पत्र—५७, आकार—$६\frac{६}{१०} \times ७\frac{३}{१०}$ इच पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—१३६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८१७ वि०, लिपिकाल—स० १८५१ वि०, प्राप्तिस्थान—महत श्री गुरुप्रसाददास, स्थान—हरिगाँव (सिधादास बावा की कुटी), डाक०—पर्वतपुर, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—श्री गनेसाए नम॰ ॥

॥ दोहा ॥

गुर गनपति सिव सक्ति सुर वदौ रमा रमेस ।
'दास नेवल' हरि चरित रत करहु कृपा उपदेस ॥ १ ॥
सुष सागर सत जल विमल कलिमल दलन प्रमान ।
दास 'नेवल' अस्नान करु होइ सदा कल्यान ॥ २ ॥
लै करु गुर पदत्रान रज नयन अयन जेन्ह दीन ।
षुली केवारी मोह कै भीतर दरसन कीन्ह ॥ ३ ॥
नील नलिनि गुर चरन नष नगमनि मानिक जोति ।
दास नेवल सुमिरन किये दिव्य दृष्टि हिय होति ॥ ४ ॥
:०. ० .०:

॥ दोहा ॥

अठारह सै सत्रह सवत कही वषानि ।
जेठ पचमी सुकुल पक्ष सोमवार को जानि ॥ ७ ॥
वदौ चारि मुक्ति स्रुति चारी । पुनि वदौ गिरिराज कुमारी ॥
धरम राज पद गहौ तुम्हारे । जे सब न्याव विचारन हारे ॥
वदौ सुरन्ह समेत सुरेसू । वदौ जल थल कमठ जो सेसू ॥
वदौ पवन सहित हनोमाना । पर्म भक्ति नेसु दिन जेन्ह जाना ॥

अत—

जो भक्ति कारन गान करि अरु सुनहि चरित सुहावना ।
अघ हरन भरन चरित्र पावन, ब्रह्म दोष नसावना ॥
अति अमल ग्यान प्रसन्ये तापर चढि वेवान सिधावही ।
वैकुठ धाम अराम अति गति परम सुदरि पावही ॥
पाप हरनि पावन करनि स्रोता लेहु नहाइ ।
सुष सागर भाषा कृत भै एकैस अध्याइ ॥२१॥

इति श्री नेवल दास कृत सुषसागर कथा समाप्त सुभमस्तु सवत १८५१ भाद्र कृष्ण पछ एकादसी गुर वासरे जादृस पोस्तक दृष्टा तादृस लिष्यते मया । जदि सुध असुधवा मम दोषो न दीयते ॥ श्री जगजीवन जक्त गुर दूरन दानि वोदार सगुन सर्व हित जानि सुभ सिद्धा नाम अधार ॥ नाम अएन है राम को दीष सत करि ज्ञान । ताहि नयन विच रएन दिन करि सिद्धामनि ध्यान ॥ २ ॥ बजै रैनि दिन वासुरी धरे कदम तर ध्यान । सिधा ताको का करे करम कीट परमान ॥ ३ ॥ तृकुटी ऊपर गगन गे वरन दोऊ रवि चद । राषि निहारे रैनि दिन उपजै परमानद ॥ ४ ॥

विषय—शुकदेव मुनि की कथा का वर्णन ।

रचनाकाल

अठारह सै सत्रह सवत कहौ वखानि ।
जेठ पचमी सुकुल पक्ष सोमवार को जानि ॥

संख्या १८३ग सुखसागर ग्रथ, रचयिता—नेवलदास, कागज—देशी, पत्र—५० आकार—१६$\frac{६}{१०}$ × ६$\frac{४}{१०}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—१५६४ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६०८ वि०, प्राप्तिस्थान—प० रामनारायण मिश्र, ग्राम–सेंबसी, डाक०–शाहमऊ, जिला–रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ शुकसागर लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

गुर गनपति शिव सक्ति सुर वदौ रमा रमेस ।
दास नेवल हरि चरित रत करहु कृपा उपदेस ॥
शुक सागर सत जल विमल कलिमल दलन प्रमान ।
दास 'नेवल' अस्नान करु होई सदा कल्यान ।
लेकर गुर पद त्रान रज नमन अपन जिन्ह दीन्ह ।
षुलो किवारी मोह की भीतर दरसन कीन्ह ॥

अंत— सोरठा

कहत जुगल कर जोरि श्रोता वकता मित्र मम ।
टूट लीजिये जोरि मोहि भरोसा आहय वड ॥
मोहि लाएहु षोरि वाजन वाजत नाथ कर ।
सो वाजन मति मोरि जानय वह यव जाय जी ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

पाप हरनि पावन करनि श्रोतहु लेहु नहाइ ।
सुखसागर भाषा किते भे अकइस अध्याइ ॥२१॥

इति श्री नेवलदास क्रित सुकसागर कथा समाप्त सुभ लिषा मिति फागुन सुदी ८ सवत १६०८ ॥ या विधि राम नाम रटु भाई ॥

विषय—श्री भागवत का सक्षिप्त अनुवाद ।

सख्या १८४ मगलगीत और शब्दावली, रचयिता—नेवल सिह 'नवल', कागज—आधुनिक (सफेद रूलदार), पत्र—३०, आकार—७$\frac{१}{१०}$ × ६$\frac{६}{१०}$ इच, परिमाण (अनुष्टुप)—१०५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६८८ वि०, प्राप्तिस्थान-प० त्रिभुवनप्रसाद जी त्रिपाठी, ग्राम–प्रान पाडे का पुरवा, डाक०–तिलोई, जिला–रायबरेली

आदि—श्री गणेशाय नम अथ मगल गीता ॥

मंगल—श्री गणपति पद पकज प्रथम मनावो हे ॥ ललना ॥

सत चरन सिर नाइ राम जस गावो हे ॥ १ ॥
जब जब निश्चर अधम अनीति पसारहि हे ॥ ल० ॥
तब तब राम कृपाल विविध तन धारहि हे ॥
हरहि देव मुनि पीर अधर्म नेवारहि हे ॥ ल० ॥
थापहि श्रुति मरजाद सुयश विस्तारहि हे ॥ ल० ॥
:o· :o o:

॥ अत ॥

रह्यो एक अव 'नवल' दया तेहि कीजिये ।
राम भक्ति नेवछावरि माँगत दीजिये ॥

यह मंगल शुभदायक जे नित गावहीं ।
सीता राम प्रसाद परम फल पावहीं ।।

इति श्री राम व्याह मंगल सम्पूर्णम् ।।

अंत—अथ ग्रंथ प्रति शब्दावली प्रारम्भ ।। श्री गणेशाय नमः ।।

सुमिरौं श्री गणपति अभिराम ।
शंकर सुत आकर मंगल मुद सकल सिद्धिप्रद जाको नाम ।।
एक रदन गज वदन सदन शुभ विमल बुद्धि विद्या के धाम ।
ध्यावत नर पावत अभिमत फल लहत सकल सुष सकृत प्रनाम ।।
गिरि नंदनि नन्दन जग वदन पूरन करन सकल मन काम ।।
वन्दनीय त्रैलोक विनायक दायक अखिल विस्व विश्राम ।।

।। अंत ।।

यह चरित्र दारिद दव वारिद ससृत अहि उरगारि ।
जन गायक अभिमत फल दायक 'नवल' सदा बलिहारी ।।१६।।८८।।

इति सम्पूर्णम शुभ मस्तु ।। सोमवासर श्रावण कृष्ण ५ पंचमी सं० १९८८ वि० सन् १९३१ ई०

विषय—राम जन्म उत्सव और ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या १८५ प्रबोध-रस-सुधा-सागर, रचयिता—नवीन कवि, कागज—देशी, पत्र—७८, आकार—८ ४/८ × ६ १/८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप)—२८८६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री डा० भवानी शंकर जी याज्ञिक, लखनऊ विश्वविद्यालय, जिला—लखनऊ ।

आदि—

. . . .

. चित चातुरी बिकाईया बकाई कौनि काई पैं ।।८।।

जामा मिही लाल ष्याल जरी कौ जगत मानौ
बादर पैं छरा जाल भोर के बखत ही ।
करे कर साजें संग भूषन विराजे उरमाल ही
मुष साजे लाजे मेन परषत ही ।
बीर श्री विहारी जी के कुंडल अधिक लोने
लोचन पलक भौंह भाल निरषत ही ।
फूल इस्क पेंच लाल पगिया के पेंच मन
परचौ प्रेम पेंच गोम पेंच के लषत ही ।।९।।

कवित्त नवीन कौ

मूरत रसाल चारुचंद्रका 'नवीन' भाल लोचन विसाल गुम सीखे जन कोक तें ।
जामा छबिदार छोट पीरी लाल साल नीरी पटका गुलाबी झुमे बाम भुज झोक तें ।
राजइं विपिन माहि साजइं शृंगार हार लोकित अलोक ये त्रलोक घोक ओक तें ।
झाकी की झकाझकी मे भमकि झकोर नैंन ह्वै गये निहाल बाके लाल के बिलोकते ।।१०।।

अंत—पोषत पतिका की सषी की उः नाइक की सषी व्रत

।। यथा सवैया रघुनाथ कौ ।।

जांनत हो सषी औधि लौं जीवौगी औधि तें आवत मीच अगौंडी ।
तू कहिधौं कब चूक है री जब कूक है कोइल काम की डोंडी ।

श्री रघुनाथ वसंत समे विन कंत जियंगी तौ प्रेम कनौडी ।
नाह के ऐबे की आस असाढ़ लौ पास ही काल पलास की बौंडी ॥१७॥

सवैया देव जू को सषी —खंडित

:o: :o: :o:

विषय—नायिका भेद वर्णन । विषय वर्णन करने मे कवि ने अपने समसामयिक और पूर्ववर्ती कवियो की भी रचनाएँ दी हैं ।

संख्या १८६ क. पद मुक्तावली, रचयिता—नागरीदास (सावंत सिंह महाराज), कागज—देशी, पत्र—१६८, आकार—७८/१० × ५१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—३७८७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री डा० भवानी शंकर जी याज्ञिक, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—श्री राधावल्लभो जयति ॥ अथ पद मुक्तावली लिषते ॥ या अनुक्रम की अलाप चारी मै दं नं ए दोहा ॥

सषी भोर लषि छकि रही स्यामा स्याम सुजान ।
मुदी पलक अलकं षुली अधर थकित मुसक्यान ॥ १ ॥
पौह पियरी सियरी समै लषि दंपति सुकवार ।
रंग भरे लपटानि तन अरुझे हार सिंगार ॥ २ ॥
लता भवन ललितादि सषि बजवत बीन विधान ।
मुदे नैन मुसुकावही सुनि सुनि तान सुजान ॥ ३ ॥
नोद भरे तन लटपटे छके द्रिगन की हेर ।
नागरिया के हिय बसो कुंज भुरहरी बेर ॥ ४ ॥

पद राग भरू इकताल

प्रात समै नव कुंज द्वार ह्वै ललिता ललित बजाई वीना ।
पौढे सुनत स्याम श्री स्यामा दंपति चतुर प्रवोन प्रवीना ॥
अति अनुराग सुहाग परसपर कोक कलानि पुन नवीन नवीना ।
विहाररनि दास वानिक पर वलि वलि मुदित प्रान नवछावरि कीना ॥ १ ॥

अंत—पद चर्चरी ॥ यथा समै राग ॥

विंदं गाय गोप वृंद गोकुल मधि सतत सुष संपदा निघोष मोष पगनि पेल भारी ।
वेई निद वल्लव सुत भए है प्रगटि वल्लभ गृह सोभित दुज कुल ललाम धाम वृज विहारी ।
वेई प्रेम परकर निति गोविंद कुभनादि संग ललित लुब्ध लोला रस पुष्ट कोस तारी ।
बेई दास नागर के प्रेरक मन मन सुखे सेवई विठलेस वेई गोवर्द्धन धारी ॥ ७ ॥

॥ इति संपूर्ण ॥

विषय—श्रीकृष्ण जी की व्रज लीला विषयक पद ।

संख्या १८६ख निकुंज विलास, रचयिता—नागरीदास (सावंत सिंह महाराज), कागज—देशी, पत्र—१५, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—२१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७६४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री डा० भवानी शंकर याज्ञिक, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—श्री विहाररनि विहारी जू जयति ॥ अथ निकुंज विलास ग्रंथ लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

श्री गुरु नेह सरूप ससि हिय मै करौ प्रकास ।
अष्ट यह की केलि कौ जानि परै आभास ॥ १ ॥

श्री स्यामा अरु स्याम के अमल कमल पद चार ।
तिनकौ बदन करि कहूं तिनकौ कछु विहार ॥ २ ॥
गउर स्याम निति एक रस नउतन नेह अछेह ।
एक वह श्रम एक रस एक प्रान द्वै देह ॥ ३ ॥
पिय प्यारी वृंदा विपुन नित विहार रस एक ।
विछुरत नाही पलकहू वीतत कलप अनेक ॥ ४ ॥
नव निकुंज मन कौ अगम सेवत कोटि अनंग ।
जुगल केलि आनंद को तहां अखंडित रंग ॥ ५ ॥

अंत—

अथ कवि वचन

यह वृंदावन यह मर्म यह दंपति की प्रीत ।
नागरिया के हिय बसौ निति विहार रस रीत ॥ २ ॥
उचित नही कहनी इतौ रहसि केलि रस काम ।
नागरिया कौ दोस कहा प्रेरक स्यामा स्याम ॥ ३ ॥
श्री राधे कीजै कृपा चहत नागरी दास ।
अपनै वृंदा विपिन कौ देहु वास सुषरास ॥ ४ ॥
सतरास चौरानवा पून्यौ अगहन मास ।
ग्रंथ निकुंज विलास यह कियो नागरी दास ॥१०५॥

इति श्री निकुंज विलास ग्रंथ संपूर्ण ॥ श्री रस्तु ॥

विषय—श्रीकृष्ण की निकुंज लीला का वर्णन ।

रचनाकाल

सतरास चौरानवा पून्यौ अगहन मास ।
ग्रंथ निकुंज विलास यह कियो नागरी दास ॥१०५॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रचना के साथ रचयिता की 'पद मुक्तावली' भी एक ही जिल्द में है ।

संख्या० १८६ग वैराग्य सागर, रचयिता—नागरीदास (सावंत सिंह महाराज), कागज—देशी, पत्र—१३७, आकार—११३० × ६६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—३०८२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७८८—१८०१ वि० तक, लिपिकाल—सं० १९३१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री डा० भवानी शंकर जी याज्ञिक, लखनऊ विश्वविद्यालय, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ सूर (?वैराग्य) सागर लिष्यते ॥

प्रथम देहदसा

॥ चौपई ॥

अति मद अंध और नहि सूझै । एक विष उनही को सूझै ॥
भरन पोष उनही को करे । काल व्याल ते नाही डरे ॥ १ ॥
साधन की मन बात न मानी । अति दुर्मति केवल अभिमानी ॥
बहुरि वृद्धन को बल गयो । चितः मोह महा मन छयो ॥ २ ॥
षासत थूकत चल्यौ न जाय । तहा लष्टका भई सहाय ॥
नाती पुत्र चहू दिस डोले । तिन सौ होय तोतलो बोले ॥३॥
मोह विवस गई बुधि बिलाई । गौ विवेक वैराग्य नसाई ॥
तीन अवस्था योंही षोई । धुर सौ वेलि नरक की बोई ॥ ४ ॥

:०: :०: :०:

नागरी बास हुलास सौ तेइ गए जगजीति ।
मनसा वाचा निजकरी हरि भक्तन सो प्रीति ॥१५॥
देहदसा बरनी यहँ मो मति के अनुसार ।
सत विवेकी सुनि सुकवि लीजौ याहि सुधारि ॥१७॥

इति देहदसा

अंत--

चचलता ज्यो लता लहके गुन की सरिता रस रग भिजावत ।
हारन वार छुटेन के भारन लक लग्यो लचि के बचि जावत ।
अस तमूरा फवि छवि सो चटकीली अगेट अदा हे दिखावत ।
कान निभावत नेन छकावत रूप धरे मनो रागनी गावत ॥३५॥

विषय--ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, वृजलीला, प्रेम और श्रृंगार आदि विषयों का वर्णन ।

प्रस्तुत ग्रथ मे छोटे बडे निम्नलिखित ग्रथो का सग्रह है--

१ देहदशा, २ वैराग्य वटी, ३ रसिक रत्नावली, ४ कलि वैराग्य वल्ली, ५ अरिल्ल पच्चीसी, ६ छुटक पद, ७ भक्तसार, ८ भागवत परायण विधि (रचनाकाल १७६६ वि०), ६ श्रृंगारसार, १० गोपी प्रेम प्रकाश (रचनाकाल १८००), ११ पद प्रसग माला, १२, व्रज वैकुठ तुला (रचनाकाल १८०१), १३ व्रजसार (रचनाकाल १७६६), १४ विहार चद्रिका (रचनाकाल १७८८), १५ भोर लीला १६ प्रात रस मजरी, १७ भोजनानद, अष्टक, १८ युगल-रस-माधुरी, १६ फूल विलास, २० गोधन आगम, २१ गादोहनानद अष्टक, २२ रासनाष्टक, २३ फाग विलास, २४ ग्रीष्म विहार, २५ पावस-पच्चीसी, २६ गोपी बेण विलास २७ रास रस लता, २८ रैन रूप रस २६ सीत सार, ३० इश्क चमन, ३१ छुटक दोहा, ३२, अरिल्लाष्टक ३३ साभे, ३४ कवित्त और ३५ छुटक कवित्त ।

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत ग्रथ के आरभ के ६२ पत्र आधुनिक सफेद कागज पर लिखे है ।

सख्या १८७ कामरत्न, रचयिता--नाथ कागज--देशी, पत्र--३, आकार--१० X ४ इच पक्ति (प्रति पृष्ठ)--१०, अपूर्ण (खडित), रूप--प्राचीन गद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--स० १८४० वि० प्राप्तिस्थान--श्री प० शारदाप्रसाद जी दुबे, ग्राम--बेवगवॉ, डाक०--नमुआर जिला--सुलतानपुर ।

आदि--इति श्रीनाथ विरचिते कामरत्ने रसादि शोधन मारण नाम षोडशोपदे शमाप्त. ॥ इति कामरतन समाप्तम् ॥ सम्वत् १८४० :० .०.

अथ स्फुट लिष्यते ॥ अग्नि कान्ता आनव शाहरि करवायेव चूर्ण करव से चूर्ण छेगानी भरि लेव और छेगानी भरि बात औ छेगानी भरि गाइ क घीउ लेव से प्रातहि षाइ शाभ्र प्रशङ्ग करव सकुचीकरण विधि ॥ १ ॥ दारचीनी तोरा एक १ कुकुरोदा क जरि तोरा दुइ २ छेरीक घृउ पीसव तोरा प्रवान भग लेप करायेव गाठी करण मुत्तमम् ॥ २ ॥

माजूफर सेर एक १ जायेफर सेर १ अफीम सेर आध ॥ पाताल जत्र क चुआएव से तेल चारि मासा लेव एक मासा किरमिजी लेव जवोर के पिसव तभी चुपरव अस्तभन होइ अस्त-भन होइ विधि ॥ ३ ॥

धवई क फूल तोरा एक १ करिया तिल तोरा आध ॥ गाइ क दूध स पियाइव रितु काले दिन तीनि ॥ ४ ॥ धवई का फूल तोरा एक १ स्वेत पुनर्नवा क जरि तोरा एक १ तिल तोरा आध ॥ एक वरण गएव छातरी तकर दूध ऋतु काले पियाएव गर्भ धारण होइ ॥ ५ ॥

अत--कूठ तोरा एक १ धतूरा क बीज तोरा आध ॥ वरियारा क बीज तोरा १ वव तोरा आध ॥ अस ग . . कर से पीसव तव नये भुना गधग मासा चारि लिङ्ग लेप करव स्थूलीकरण द्रोढी करणादि द्रिष्टि प्रत्ययः ॥११॥

सपेद गदहापुरणो क जरि आनव एतवार के दिन स्वेत मधु से पीसव ऋतुकाले तोरा प्रमण तीनि दिन षाये वेव गर्भ धारण होए ॥१२॥

परासक खार तोरा १ एक हरिताल तोरा एक १ केरा क जरि क पानी या पाएक तिल क तेल पाव एक इस सभ जवर कै अवटव लोम सातन विधि ॥ दादक औषदम देवा ॥ अथ मंत्रादि प्रयोग. ० ० ०.

विषय—कामशास्त्र और रसादि औषधियों का वर्णन।

संख्या १८८ सुकुमाल चरित्र, रचयिता—नाथलाल, कागज—देशी, पत्र—८०, आकार—१२¾ × ८¾ इंच, पंक्ति—(प्रति पृष्ठ) १३, परिमाण (अनुष्टुप)—२३४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य (वचनिका), लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१८ वि०, लिपिकाल—१९६७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर (बड़ा मंदिर), चूड़ी वाली गली, चौक, लखनऊ।

आदि—श्री जिनाय नम. ॥ श्री सुकमाल चारित्र लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

श्रीमत वीर जिनेस पद कमल नमू सिरनाय।
जिन वाणी उर मे धरू जजूं सुगुरु के पाय ॥ १ ॥
पच परम गुरु जगत मै परम इष्ट पहिचानि।
मन वच तन करि ध्यावते होत कर्म की हानि ॥ २ ॥
०. ० ०.
सकल कीर्ति मुनिराज इक भये महा मतिमान।
तिन न श्री सुकमाल को रच्यौ चरित हित आन ॥१६॥
ताको कछु सक्षप भव कहू मूल अनुसार।
नव अधिकारन मे कह्यौ जो मुनि नै विस्तार ॥१७॥
.० ० ०.

॥ नम. श्री विश्वनाथाय ॥

पच कल्याण भागिने महते वर्द्ध मा नाय नित्यानद गुणाब्धये ॥ १ ॥

॥ अर्थ ॥ मै जो सकल कीर्ति नामा आचार्य ताको वर्द्धमान तीर्थ करके अर्थि नमस्कार हो कैसे है श्री विश्वनाथाय कहिये शोभायमान तीन भुवन का स्वामी है अथवा स्थावर जगम सकल जीवनिका ईश्वर है अर पचकल्याण भागिने कहिये गर्भ जन्म तप केवल और निर्वाण ऐसे पच कल्यानक विरवं याको इद्रादिक देव सेव है महते कहिये सबनि के पूज्य है अथवा चतुर्विधि सघ विरवं महान श्रेष्ठ है ॥

अत—

ढूढाहड देस मध्य जैपुर नगर सोहे
चार वर्ण राह चले अपने सुधर्म की।
राम सिघ भूपति के राज माहि कमी नाही
कमी कछु दृष्टि परै मानू निज कर्म की।
वैश्य कुल जैनी को पूरव कृत पुण्य थकी
पायो यह खोलो अब मुदी दृष्टि भर्म की।
जैन वेन कान सुनो आतम स्वरूप मुनो
चारो अनुयोग भनो यही शीघ्र मर्म की ॥ २ ॥

॥ चोपई ॥

दोशी गोत दुलीचद नाम। ताको सुत शिवचद ललाम ॥
नाथू लाल तासु सुत भयो। जैन धर्म को शरणो लयो ॥ ३ ॥

श्री विवाग संग ही अमरेस । पाय सहाय पढ्यो श्रुत लेस ।
कासलिवाल सदा सुख पास । फिर कीनो श्रुत को अभ्यास ।। ४ ।।
श्री सुकमाल चरित्र रसाल । देखि कही हरिचद्र गंगवाल ।
होय वचनिका मय जो येह । सबही जन वांचे हित गेह ।। ५ ।।
विन व्याकरण पढे नहि ग्यान । मूल ग्रथ को होय निदान ।।
ऐसे प्रार्थन तने वसाय । मूल ग्रथ को पाय सहाय ।। ६ ।।
भावारथ सो लिखयो येह । देश वचनिका मय धरि नेह ।।
:o: :o: :o:
उनवीश शत ठारह सार । सावरण सुदि दशमी गुरुवार ।।
पूरण भई वचनिका येह । वाचो पढो सुनो धरि नेह ।। ९ ।।
मंगल मय मगल करन वीतराग चिद्रूप ।
मन वच तन करि ध्यावते होहे त्रिभुवन भूप ।।१०।।

इति श्री सकलकीर्ति आचार्य विरचित सुकुमाल चरित्र सस्कृत ग्रथ की देश भाषा मय वचनिका समाप्ता ।। इस सासतर को सनूमल नेम मदर जी मे दिया स १९६७ भाद्र शुक्ल १५ स०

विषय—जैन धर्म कथाओं के अतर्गत सुकुमाल चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

उनवीस शत ठारह सार । सावरण सुदि दशमी गुरुवार ।।
पूरण भई वचनिका येह । वाचो पढो सुनो धरि नेह ।। ९ ।।

सख्या १८९ नानक प्रगाश, रचयिता—नानक 'गुरु', कागज—देशी, पत्र—६१, आकार—६ × ४।। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—५८७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री जगन्नाथदास जी मठाधीश, स्थान—वनके गाँव, डाक०—कादीपुर, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—शत गुरु प्रसाद राग रामकली । नानक प्रगाश बहु अग ग्रथ वरनते

।। दोहा ।।

कर जोरे प्रनाम करी धरी चरन पर शीश ।
नानीक तुम गुरु देव जी, पुर्न बीशवे वीश ।।
परमहश तारन तरन गुर देवन गुर देव ।
अनभव वानी दीजिएं नानीक पावें भेव ।।

चौपाइ

ननी नमो गुरदेवनी देवा । नमो नमो अगम अभेवा ।।
नमो नमो नीरलव नीराशा । नमो नमो प्रमातम वासा ।
नमो नमो त्रीभुअन के सामी । नमो नमो गुर अतरजामी ।
नमो नमो प्राधीन के करता । नमो नमो पालह शहरता ।
:o. .o 'o.

दोहा

नीरमल ग्यान देह हो ब्रह्म रुप करी देत ।
जीव रूप की आपदा व्याध सबं हरी लेत ।

अत—आपु भगती उपजं नहो गुर शो नाही शील ।
नान्क मीलं न शीधु वह जो तलाव का नीर ।
जगदीश गुर मोको मीलं पुरन दीना भेव ।
नानक को डडवत है वारमवार गुरदेव ।

मब शाधुन परनाम करो वहो कर जोरो शीरनाए ।
येही दान मोही दीजिऐ भगती करौ चीत लाए ।

एती श्री नानक प्रगाश ग्रथ शपुरन

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन।

संख्या १६० महाभारत, रचयिता—नामदेव, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—६॥ X ३॥। इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—३५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७८१ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—श्री पं० जगन्नाथ जी द्विवेदी, ग्राम—महरूपुर, डाक०—कोठा रामपुर, जिला—प्रतापगढ़)।

आदि—श्री गणेशाय नम

दोहरा

भारथ कथा प्रसग व्यास वचरा अहि भाषियत ।
सकल पाप करि भग भक्ति करहि पावहि फल ।
श्री गुर चरन सरोज रज निजमन मुकुर सुधारि ।
वरनौ रघुवर विमल जस यो दायक फल चारि ।
चारि वस्तु वढते भले सुत धन धर्म प्रताप ।
चारि वस्तु घटते भले ऋनि अरि पचडा पाप ।
चरण गए विनु तीर्थ ही कर जो गये विनु दान ।
वस गए विन पुत्र ते भवन गये विनु वाम ।

दोहरा

सारद गनपति हम हरि सम के सस उपाय ।
व्यास ऋषभ म ए जो भारथ कथा सुनाय ।

चौपाई

अर्जुन करण दुरउ धनुधारी । कहहु षेत कमि की होन्हि मारी ।
अर्युन कर्ण जे पोरुष कीन्हा । सो मुनि व्यास सो वरनै लीन्हा ।
उत्यम कथा केरि सम्भाई । वाढइ धर्म पाप क्षय जाई ।
महा महह वरन मह होई । षेत पास न कादइ कोई ।
तेहि मरद आपुहि मरवावइ । मारिन हनहि ताहि सकि जानहि ।
तन झाझार अउ टूटे वाहा । तह सका न होइ जीव माहा ।
दुष दलिद्र औ पातप हरना । सुनो 'नाम देव' की सरना ।
कृस्न कीन्ह सर्वस सो भाई । भारथ कथा आपु करवाई ।
वरदा ब्राह्मण जीव साई । साह लागी सो धर्म नसाई ।

दोहरा

सत्यवती सत बाढै पापी क पातष जाई ।
सकल कथा के ठाकुर सुनइ चतुर चित लाई ।

अंत—

दोहरा

रन मह करन नेवतेउ अगार सनी अस कीन्ह ।
जेई जेई दरसन पावा सोइ सुरलोकहि लीन्ह ।
जो फल गआ वनारस कीन्हे ।
जो फल वेनी मह सिर दीए ।
जो फल अवध पुनीत नहाए ।
जो फल सेतुवध के कीए ।

जो फल गगा सागर न्हीए ।
नीवषार क्षाप कै पाए ।
महाप्रसाद जौ कर दाना ।
तुलसी सेवा दाय प्रकासा ।
गुरु सेवा कन्या कर दामा ।
भारथ कथा सोई पुन्य वषाना ।

श्री रामचंद्र महाय गुर गोविद संवत् १७८१ मार्ग सुदि ।

विषय—महाभारत कथा का संक्षिप्त वर्णन ।

संख्या १९१ त्रिकाण्ड वल्ली ज्ञान दीपिका, रचयिता—नारायणाश्रम स्वामी परमहंसकाचार्य, कागज—आधुनिक (पीला), पत्र—२४, आकार—११ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप)—२६४, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), गद्य पद्य, रचनाकाल—सं० १९०४ वि० (संभवत), लिपिकाल—सं० १९४८ वि० = १८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० देवशंकर पांडेय ग्राम—भगवानपुर वढैया, डाक०—खैरहनी, पहाड़गढ़, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नम.

ॐ तत्सद्ब्रह्मणे नम· ऊकार ईश्वर का वाच्यार्थ है। ऊंकार की मात्रा चारि ।

.o. o· :o:

वेद के अंग है ।। शी.ा ।। कल्प व्याकर्ण ।। निरुक्त ।। वेदान्त ।। शास्त्र छ है ।। न्याय ।। वैशेषिक ।। सांख्य ।। पतञ्जलि ।। मीमांसा ।। धर्म शास्त्र ये छ शास्त्र है ।। अठारह स्मृति है ।। मनुस्मृति ।। याज्ञवल्कि स्मृति तिसका टीका मितक्षरा है ।। परासर स्मृति ।। वशिष्ट स्मृति ।। गीता ।। गौतम स्मृति ।। निर्णं सिधु इससे आदि लैके अठारह है ।। अठारह पुराण है ।। ब्रह्म पुराण ।। पदुम पुराण ।। भागवत दुइ है ।। एक देवि भागवत ।। इससे आदि लै के अठारह है ।। तिन अठारहो पुराण मे पच देवता आदि लेके और देवनो की उपासना जानि लेना ।। सो भी वेद के अंतर्वर्ती हैं ।। बाल्मेकी से आदि लैके जो काव्य है ।। अमर कोश से लेके जो कोश है ।। भृगु सहिता से आदि लै के जो ज्योतिष के ग्रथ है ।। महाभारत से आदि लैके जो इतिहास है ।। अंगरेजी वो फारसी वो उर्दू वो अर्वी वो मरहटी वो बगला इत्यादिक सम्पूर्ण का वेद के अन्तरगत प्रयोजन है

अंत—नाइन उत्तम ग्राम है वसै सई के तीर ।
कनपुरिया तामे वसै वड़े वृद्धि मति धीर ।।
नाइनि से प्रारम्भ करि आये ग्राम पहार ।
तहा ग्रन्थ पूरो भयो कान्यकुब्ज के द्वार ।।
दशमी तिथि रविबार दिन एगहन मास सुजानि ।
'त्रिकाण्ड बल्ली दीपिका' पूर कीन सुष सानि ।
राम अधीन है राम कं हनूमान सुत तासु ।
शिव मंगल मगलकरण निशि दिन करत प्रकासु ।।
अज्ञान भव सिन्धु मा परे लोग सव देखि ।
सुगम मार्ग भाषामय ग्रथ कीननि देखि ।।
श्रुति स्मृति प्रमाण कारि पुनि भाषा के दीन ।
देखि बिबेकी सुगम पथ चलै जो होहि प्रबीन ।
पामर नीच मूर्ष ऊह जिनकर हृदय कठोर ।
तेरा जन दरबार पर सुनै ग्रन्थ यह मोर ।।

·o: .o. :o:

गाब्धि नद चन्द्रे च वत्सरे दशमी तिथौ ।
अश्वनी युजी वारे च रवे ग्रथौ विनिर्मितः ।।

इति श्री परमहंसिकाचार्य नारायण श्रम स्वामी विरचिता त्रिकाण्ड वल्ली ज्ञानदीपिका ्माप्ता शुभ मस्तु ।। ताः २५ दिसम्बर रोज शुक्रवार सन् १८६१ ई० मोताबिक मिति पूस बदी ।० सन् १२६६ फसली

विषय—आर्य ग्रंथों और आर्य संस्कृति का वर्णन ।

रचनाकाल

गाब्धि नन्द चन्द्रे च वत्सरे दशमी तिथौ ।
अश्वनी युजी वारे च रवे ग्रथौ विनिर्मिता ।।

संख्या १६२ उड्डीस तंत्र, रचयिता—नित्यनाथ, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—९६/८ × ६४/८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—३३६, अपूर्ण, रूप—ाचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—डा० सूरजबख्श सिंह जी, गाँव व डाक०-कटघर, जला–रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।।

एक चित्त मंत्र जपिये बीस हजार ।। देवदार चंदन वर की जर पानी सौ बाटियें विभूति ौं संजुक्त कै माथै तिलक करै तौ सर्व जन वस्य होइ ।। पयरसगा की जर पुष्य नक्षत्र मैं लीजै ।। रु रुद्रवंती लीजै ।। अरु जौकी जर लीजै ।। पुनी क्वांरी कन्या सौ सूतु कताइजै ।। पुनि वाहिनै ाथ सौ बांधियें ।। तौ सर्व पूज्यमान होई ।।

।। अथ मंत्र ।।

राय रछे भय भगवती गधीरे रेध स्वाहा ।।

।। अथ और प्रयोग ।।

आम्भाभारे की जर और गोरोचन बराबर लीजै पानी सौ वाटि तिलक कीजै तौ तीन लोक ्स्य होइ ।।

।। मंत्र ।।

ॐ नमो कद सवारि जारिनी मालिनी सर्व लोक वस्य करी स्वाहा ।।

यह मंत्र अष्टोत्तर सै वार जपै तौ सिद्धि होय ।।

अंत—रुद्र जटा सेत आ कहथा जुरी छिरहटा ये वोषद पुनर्वस नक्षत्र मैं लैके तावीज मढावै माथे मैं राखै जहा जाइ तहा वोलु ऊपर होइ मंत्र ऊ मम ह्रु ह्रीं ह्र ठः ठः फट् स्वाहा ्हा को चल तहा को यह मंत्र पढि लेइ तौ सिद्धि होइ ।

इति श्री पार्वती पुत्र नित्यनाथ . . . .

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—उड्डीश तंत्र की गद्य टीका ।

संख्या १६३ शालिहोत्र, रचयिता—निधान 'सुकवि', कागज—देशी, पत्र—१४, ाकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—४४८, पूर्ण, रूप—्चीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१२ वि०, लिपिकाल—सं० १८७८ वि० ?), प्राप्तिस्थान—श्री ठाकुर उदरेज सिंह जी, ग्राम—उमरा, डाक०—सैफाबाद, जिला—्तापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।।

विघ्न हरण सब सुख करण......वरदानि ।
करहु कृपा दीजै सुमति कहौ जोरि जुग पानि ।। १
संवत दश वसु शै जहां उपर जानौ भानु ।
सालहोत्र भाषा करि नूतन सुकवि निधान ।। २

शुक्ल पक्ष तिथि पंचमी सहित सुभग बुधवार ।
माधव मास पुनीत अति भयो ग्रंथ अवतार ॥ ३

अथ राजा वर्णन

सैयद सावल समथ्थ महि मण्डल वुद्धी निधान ।
'अकवर अली' समावली विद्या विदित विधान । ४
एक दिना नृप कविन्ह सो दीन्हो यह फरमाइ ।
सालिहोत्र जो संसकृत भाषा देहु वनाइ । ५

अमर विलसि छद

सदरि जहा भुव जानि सुजस भुव वाजि समर्प्यें ।
वली 'मुरतजाखानि' दान करि थालरि थप्यो ।
फेरि सैद महमूद सो चित्तरि वारि वारि करि ।
मुकलहृरिन घाव वस्त्र कीन्हे सवाव धरि ।
षुरुम सुसैयद साथ सुधन व्यास मता सुग्र ।
देत सकल मन कामना 'अलि अकवर' कलि प्रगट हुग्र ।

सोरठा

सुदर सांचो काम दाता ज्ञाता सूरिवां ।
अकवर अली सुनाम चिरजीव जवलगि ध्रुव ।

अथ ग्रथ प्रस्तार

दोहा

पडवपति कुल कमल रवि धरम तात धरमज्ञ ।
सत्य सिधु जारज धूरी जयति युधिष्ठिर सत्त । ८
भीमसेन अरजुन अनुज सह महदेव सुजान ।
नकुल सकुल भूषण सकल तुरग मत्र गुरमान । ९
ग्रथ देषि सव मुनिन के कीन्ही नकुल विचार ।
सालिहोत्र संछेप सो रचौ रुचिर लहि सार ।

इति श्री सुकवि निधान कृतौ भाषा सालिहोत्रे प्रथम...... ॥

अत--

दोहा

सालिहोत्र जो नकुल वर रचौ सकल सिर मौर ।
ताते जानौ वाजि के गुण औगुन सव ठौर । २१
सवको मतो विचारिकै कीनो सवै प्रमान ।
सालिहोत्र भाषा रच्यौ दीक्षित सुकवि निधान ॥ २२
मै प्रवध कीन्हो कछुक पडव मत अनुसार ।
मोमति अति लघु जानवी हरी जं सुकवि विचार । २३

इति श्री सालिहोत्र सुकवि निधान कृत भाषा समाप्त ।

विषय--घोडो के लक्षण तथा उनके रोग और औषधियो का वर्णन ।

रचनाकाल

संवत दश वसु सं जहा उपर जानौ भानु ।
सालहोत्र भाषा करी नूतन सुकवि निधान ।

संख्या १९४ नायिका भेद (अनुमानत), रचयिता--नीलकठ, कागज--देशी, पत्र--२, आकार--११$\frac{८}{१०}$ × ४$\frac{९}{१०}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--७, परिमाण (अनुष्टुप)--२८, खडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—

परम प्रवीन पति पोमिनिय प्रेम पालि प्रात पहिचाने पग पलटि पलरि पर ।
प्रषर पनेजपानि पीक पाइ प्यारी पहु परषिय पाग पेच पुहुप प्रगट पर ।
पावन प्रसिद्ध परि पूरन पुहुमि पर पुनि पुनि पछितात्ति प्रथम परेषे पर ।
प्रभु परमिति परसतन पराइ पीर प्यारे पातिसाह पढी प्रगटि परस पर ।। १ ।।
गीरवान होत वयन सयन रवि राचे कासो जानती हो नयन रग राते पीजियत है ।
निसा जेती कीन्ही तेती जानी हम महाजान करमे के आए जेसे तेसे कीजियत है ।
कीरति करी है नीको सोई भावती हे जो को भावती कहाने हीए लाज लीजियत है ।
परभान के बनाइ जागी जोहे प्यारे पं ध प्यारी सो हे पान प्रभु ताहि दीजियत है ।। २ ।।

जो दूत व्यापार मे निपुन नायिका होइ ।
हितकारी तिय पुरुष की कहियत दूती सोई ।
नारी नाहैं मिलाइवो विरहनि वेदन जोन ।
दूती के व्यवहार छमि वर्रान कहत कवि तौन ।।

।। सघट्टन ।।

मेरो कहो मानु जिय जानु सुनु कान दे के मन मे न आनु ऐरी ऐसो मानु ठानिवो ।
कवि 'नीलकठ' कहे लालन विहारी जि के एकइ वमत चित तो सो प्रीति मानिवो ।
बीते जा . . . .

.० ० .०

आंको है अमिली तहैं आवहि को अमिली कहिए री ।
को पुकारं विन काजे काहुव तूं मति हो हिए मे करे री ।
'कठु' कहे दिढ के अपने मन जो तुम हे सजनी सिष मेरी ।
जानु यहे भरि देह पियारे सो तोहि सो नेह सदा निवहे री ।।६३।।

।। सषी परिहास ।।

सोए जहा मन मोहन मोहनि 'कठ' गई तह आलि सयानी ।
वाल कि वीर गोपाल की पाग दोउ चुपचाप चोराय लै आनी ।
भोर भए हसि कोल मुही सो कह्यो यह काकि है कोलि निसानी ।
आधेक नन चितं तिरछं नव राधिक जिउ मुरि कै मुसुकानी ।।६४।।

।। नायक परिहास ।।

नागरि वैठि हुती जहँ धाम तहा घनश्याम गए सुष साने ।
अग सो अग मिले रति रग तिया पति यो लिषि पत्र मे आने ।
आगे धरे हरि 'कठ' दोउ जवही व्रषभान सुता पहिचाने ।
वे सकुची अचरा गहि आनन वे मन मोहन जिउ मुसुकाने ।।६५।।

।। प्रिया परिहास ।।

साँझ समै हिम सैल सुतां पिय रो जियें झूठेहु भानु सो कीनो ।
मान मनायो न 'कठ' कछूक वुलाए न मानिनि मोनु सो लीनो ।
पायें परे हस के हहरें चरनवुज चद सुधा रस भीनो ।
सोति ढरी पग ताँही धरी न रह्यो घिरिजा गिरिजा हसि दीनो ।।६६।।

.०: .० :०

—अपूर्ण प्रति की पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—नायिका भेद वर्णन ।

सख्या १६५ मे ग्रथ लीला, रचयिता—नेवाजदास, कागज—देशी, पत्र—८०, आकार—६ × ८। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—३६०, पूर्ण, रूप—

प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री मनोहरलाल जी कायस्थ, ग्राम—जूही, डाक०—साँगीपुर, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशाए नमः भे ग्रथ लीला ॥

साधो चरण गहो लपटाइ। पाइ गुर आपनो।
समरथ बदीछोर बरे तेहि रहो निहारी।
पीउ आपनो पइलइ मनहूर्षित नारी।
कर्म नेवारण हार सो समरथ दीनदयानल।
साधक दरसन पाइकै छिन छिन होत निहाल।
सो शमराथ सरव जग यव सो आयो भाई।
निर्गुण पद उपदेश वेश तिभ्र जनहि सुनाई।
आपन रूपा अनूप निन्द जनहि सघट विच दीन्ह लषाई।
चीन्हत निर्गुण ब्रह्म पद रहो ताहि मन लाइ।
:o: .o :o:
यहि विधि शमुभ्रत अपनी रूहि अनत विधान।
ध्यान समुझि अविचल भये तामे ज्ञान समान।
प्रभु सुकृत गुरनम गयव को मालिक भई।
कृपा कीन्ह जन जानि ब्रह्म को जुक्ती लषाई।
'दास नेदाज' समाज त्यहि चीन्हत पद निर्वान।
आनद मगन सनेहवश असमन सत्ति प्रमान।

शव्द लीला

साधो सकल दोष दुष हरण करण गुर पायउ।
सत्त गुरदीन दयाल सरण गत भाई।
धन्य जन्म सो जीव सरण जिन्ह अविचल पाइ।
चरण धोइ जलपान ध्यान धरि पायो भाइ।
·o· o. ·o
अंवर पद पहिचानि जानि मन सुरति लगई।
नित नव लाग सरोह देह की सुधि विसराई।
पर्म पुरुस गुर ज्ञान ध्यान सुकृत अग नाम।
केवल रूप आनूप अचल गती रूप अकामा।
'दास नेवाज' समाज त्येह करत सुरा रस पान।
विषै विकार विचार तजि चाषि भयो मस्तान।

भे ग्रथ लीला कुवार मासे सुकुल पक्षे दसमी सोवा मरक पूरण भयो ॥ माम सनद यइतो सवता छो

:o: ·o: :o.

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन।

संख्या १९६क वैद्यक कल्प, रचयिता—महाराज पतितदास, कागज—देशी, पत्र—४४, आकार—१०॥। × ६॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—७०४, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० चंद्रशेखर (बब्बन) मिश्र, ग्राम—भैंरोपुर, डाक०—बखशा, जिला—जौनपुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः

अथ महाराज पतितदास कृत वैद्यक कल्प कृत कृतारत शार लिष्यते

चोपाई

तीनौ जुग रिषि मुनि भें देवा। सत्य धर्म व्रत गुरात्मक सेवा ॥
काम थाम ओसधी नित धारैं। याही तेजस भयो अपारैं ॥

आयू तेज जोर वल भारी । मेव जांगो न कोइ सके मारी ॥
सत्य गायत्री गुर तप व्रता । सर्व धर्म रूप जेपा करता ॥

दोहा

हमेश कल्प धारै एकात ह्वै वहु विधि करै विचार ।
सञ्जम कै अत्म प्रमात्म लषै काह करै ससार ॥ १

सोरठ

पा गहि गुर कृपा कौन सुष पाय खाव फल वृक्ष ।
होय नाम पद लौलीन ताहि सुलभ पद चारो सप्त ॥

छद

नाहक घर घर वन वन घूमै याही मग गहि लीजिये ।
भक्ति मोक्ष मुक्ति सुजस पावै अनद मगल वसि कीजिये ।
रहत है हरषंधार निसु दिन वेद पुरा तो याही कही ।
दास पतित छल छाडि विस्वास कै झूठ नही है साचु सही ॥

दोहा

द्विज कन्या गुर ब्राह्मन पूजि कै कोई दवाई खाय ।
दास पतित शिव वाव्ध है कवहू मिथ्या जाय ।

अत—अथ नीम कल्प

चौपाई

पीसि क्षानि मधु जुत गोली कीजै । तीनि से साठि गनती कै लीजै ।
कार्तिक से धारनि कीजै । गोली एक परिमान करीजै ।
स्यामा गोक्षीर नवुल पाई । सजम सहित पकात रहाई ।
मास मास के गुनहे बहुतेरा । सवतसरे हजार वरस की आयुर्वेरा ।
महासिद्धि सर्व व्यापी होई जाई । हानि लाभ सव हाथ कराइ ।
धर्म व्रत सतवाद ध्याना । रइहे अटूट सव मिलै खजाना ।

ईति श्री सकर पारवती सवादे सर्व अवसदी न ताप जीवन रक्षा हित दास पतित भाषा कृत वर्नते सछेप गुनी सजन सजमी होइहै सो सभारि सुधारि है मम दोषो नहि दीईते शुभ सवत् १९३७ मिती वैसाख सुदी १०

विषय—वैद्यक विषय वर्णन ।

सख्या १९६ख सर्व ग्रथोक्ति, रचयिता—पतितदास, कागज—देशी, पत्र—३८, आकार—१०।×७ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० चद्रशेखर (बब्बन) मिश्र, ग्राम—भैरोपुर, डाक०—वक्शा, जिला—जौनपुर ।

आदि—

. . . . .ए अजीरन मे माठा व कचेलीआ पियै तो नीक होय वरादिक तेल कै षाऐ अजीरन मे षर पीयै तौ नीक होय अथ छिरिहीटा कै जरि कै पीसि पियै तो रज्यसुला वद होय तौ षुलै और जहा लै विष है सव नीक होय सही जावत माहूर औ जीउ कै काटे सव नीक होय अथ पोते कै रसवत मासे १ अमिलतास गूदी १ अफीम २ गेरु १ सव पीसि मकोय के रांग में मिलाय चुराय जव वुजा उठै तव सीत गरमी लेप कै एकात मे औ जव सुखि जाय तव फेरि लगावै असे अस तीनि दफै लगावै एकै रोज मे औ जवले नीक न होय तव लै लगावा करै वडी चीज है अथ पेट व्याधि जाय

:o: :o: :o:

इति श्री पतितदास विरचिते सर्व ग्रंथोक्ति प्रथमो परकरन्

अंत—अथ लकवा कै

वाघिनि दूध ५ॅ मूंग १२ मोती पक्की होय तौ रती १ औ कच्ची होय तौ रषी २।। वीर बहुटी २ कमलगट्टा के वीज १। रुद्राक्ष चरन १। कस्तूरी मासे १ छाजी छीर जुर जीव्ह पर मलै औ थोर खायो करे अथ दूसरी मुरगी कै अंडा ४ नोन भरी २५ गुराती इलाची मासे १ मृच काली २५ गोघृत १ पीसि अछे हल्ल कै कै गटई मे ले

—अपूर्ण

विषय—वैद्यक विषय वर्णन ।

संख्या १६७ पद, रचयिता– पदमदास या पदम स्वामी, निवासस्थान—पच्छिमी राजस्थान (अनुमानत), कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—६ १/२० X ५ ७/१० इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—१३५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि— **राग वरूवा**

चलो सषि देषन जाय स्याम सहैजादे वना ।।टेक।।
मालन ल्याई सेहरो दुलहा के सीस बनाय ।
वागो सोहै केसरिया सहैजादे वना ।। १ ।।
थारै माथै पचरग पाग द्वारावती से आईया ।
सहैजादे वना ।।
थारो रूकमणी लीन्हो छै नेम ।। २ ।।
या जोड़ि के कारणै थारो 'दास पदम' वलि जाय ।। ३ ।।

अंत— **राग ठुमरी**

बनडी देषन आइब माजी पडदा परै करावो ।
रग रगोलिका व्याह कुमर जी म्हानै मुषै सुनावो ।। १ ।।
के के दान दियो रुकमइये किसौ दाय जो ल्याया ।
मोड वाधि के सज्या कुदन पुर किसि वडमक करि आया ।। २ ।।
हाथ घस्यां हाथ लेवा कीन्हो कित गयो सिर को ताजै ।
धिग धिहि धिग सारे जग माहि यहि कुमर ने साजै ।
:o: .o: .o.
म्हानै लोग वोलवा देवै हस है लोग लुगाई ।
पदम भणै धिरग जीवन लाडा कि सीक वनड़ी व्याही ।। ८ ।।
:o: :o: :o:

विषय—श्रीकृष्ण भक्ति वर्णन ।

संख्या १६८ रत्नकरड (वचनिका सहित), रचयिता—पन्नालाल, कागज—देशी, पत्र—५०, आकार—१० ८/१० × ६ १/२ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—६२५, पूर्ण, रूप—पाचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६३१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मदिर, अहियागज, टाट पट्टी मोहल्ला, जिला—लखनऊ ।

आदि—ऊँ नमः सिद्धेभ्यः ।। अथ सार्थक रत्न करंड लिख्यते ।।

।। छंद चौपई ।।

ऋषभ आदि जिन केवल धार । दो विध धर्म कह्यो सुखकार ।।
तथा समंत भद्र मुनिराज । रत्न करड रच्यौ शिव पाज ।। १ ।।
तास वचनिका विशद विशाल । रचो 'सदा सुख' परम दयाल ।।
तास अर्थ हम सूक्ष्म पाय । लिषै वचनिका सुगम वनाय ।। २ ।।

॥ श्लोक ॥

नमः श्री वर्द्धमानाय निर्धूत कलिलात्मने ।
सालोकाना त्रिलोकानां यद्विद्यादर्प्पणायते ॥ १ ॥

॥ अर्थ ॥

अंतरग तो वतुमृयादि अर वहिरंग सम व शरणादि लक्ष्मी जो है ता करि वृद्धि कूं प्राप्त भयो अथवा समस्त प्रकार करि परम अतिशय कूँ प्राप्त भए है केवल ज्ञानादि प्रमाण जाके ॥ अर नष्ट किये है ज्ञान वरणादि घाति या कर्म रूप पाय आत्मा ते जानै । अर जाकी केवल ज्ञान रूप विद्या अलोक सहित त्रैलोक कूं दर्प्पण समान आचरण करै है । ऐसो अतिम तीर्थंकर वर्द्धमान जो है ताकै अर्थि नमस्कार करु हू ॥ १ ॥ ऐसै समत भद्र स्वामी इष्टदेव का गुण स्मरण पूर्वक नमस्कारात्मक मगलाचरण करि धर्म को स्वरूप कहनें की प्रतिज्ञा करै है ॥

अत— अबै या वचनिका रूप ग्रथ की पद्धति लिखियहै
आर्य क्षेत्र ढूढाहड देश । जयपुर नगर राम नृप वेश ॥
शिव मग निति तह धरत प्रकाश । ऐसो जिन भाषित को भाश ॥ १ ॥
तहा सदासुख कासलिवाल । विद्या गुरु तसु परम दयाल ॥
करी वचनिका विशद विशाल । तास तनौ लै भाव रसाल ॥ २ ॥
रत्नचद सुत पन्नालाल । सघी श्रावक दूनी वाल ॥
'रत्न करंड गुनन की माल । रच्यो वचनिका मयी रसाल ॥ ३ ॥
कियो शुद्ध वर पडित राज । फलै लाल जित शिवमय काज ॥
पढै सुनें जो भक्ति उपाय । लहे ज्ञान सम्यक सुखदाय ॥ ४ ॥
मडलेस विक्रम निर्धार । उगणीसे इकतीस विचार ॥
पोस कृष्ण सप्तमि बुधवार । पूरन भयो परम सुखकार ॥ ५ ॥

इति श्री समतभद्र स्वामी कृत विरचिते उपाशकाध्ययने रत्न करड पर पर्याये पचम परिछेदः ॥५॥

मिती मगश्र शुक्ल ६ लिखिवाई लोकमन पद्मावति पुरवार फिरोजावादे वारे जिला आगरे के ने जैपुर मध्ये हाथ पन्ना लाल जी सघी दूणीवारे के हेत अपने पढवे के

विषय—जैन धर्मानुसार सत्य धर्म का उपदेश वर्णन ।

रचनाकाल

१९ ३१
मंडलेस विक्रम निर्धार । उगणीसे इकतीस विचार ॥
पोस कृष्ण सप्तमि बुधवार । पूरन भयो परम सुखकार ॥ ५ ॥

सख्या १९९ ओषाहरण, रचयिता—परमाणद, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—११ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—८८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १५१२ वि०, लिपिकाल—स० १६१३ वि०, प्राप्ति-स्थान—श्री प० बलभद्र जी, ग्राम—दानापुर, डाक०—बरसठी, जिला—जौनपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नम श्री शारदाय नम अथ श्री ओषाहरण लक्षते ॥
श्री सभुतुतने आरघ आराधुजी । मन कम वचने सेवा साधु जी ॥
चतुरदस लोक भुवने तेह ने माने जि । तेना गुण सुलखिये पाने जि ॥ १ ॥टाला॥
याने तलख्या जाये नहि । श्री गणेसना गुणग्राम ॥
सकल कारज सिद्धयेमा मुष लेता नाम ॥ २ ॥
गजानन ने नासिका वलिदत उज्वल एक ।
आयुध करसि करधरी जेणे असुर हराया अनेक ॥ ३ ॥
सग वेसुध वुध्य श्यामा षुपत लाभ मे वली लक्ष्य ।
सीदुर सोभाछे ससीरे । उज्वल मोदक भक्ष ॥ ४ ॥

निलांबर पीताबर परंग चडे सेवक्री नीसेव ॥
माहा प्रभु जो ये येम पोषी यंजेय जय दुवल देव ॥ ५ ॥

अत--सौता वगता अने प्रछक पुरुस नारी जन ॥
दुक्रीत देहना दुख जाये पड्या पाय पावन ॥१७॥

सवंत पनर वार मा अने मास कारतीक जाण्य अष्टमी नेरवी वारे ग्रंथ संपुरण प्रमाण १८ ॥ वडो वरामा वास छे वीप्र प्रमाणद हरीतो दास ॥ एक चीते साभले मन धरी वीश्वास १९ ॥ उथलो ॥ विश्वास राये मन धरी पूरे मन ना कोउ सरस्वती सानीध कही कथा वोल्या श्री रणछोड ॥ इती श्री हरिवसे ओषाहरण परमाणद कृत सपूरणम् सवत १६१२

विषय--ऊषाहरण वर्णन ।

सख्या २०० वर्ष प्रदीप, रचयिता--परमेश्वरदत्त, निवास-स्थान--परमा का पुरा, गौरा (प्रतापगढ), कागज--देशी, पत्र--६२, आकार--८॥ × ६॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--७, अप्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप)--५६७, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १९३१ वि० और १७९६ शकाब्द, लिपिकाल--स० १९३१ वि०, प्राप्ति-स्थान--श्री प० सत्यदेव जी त्रिपाठी ग्राम--फतनपुर, डाक०--गौरा, जिला--प्रतापगढ ।

आदि--श्री गणेशाय नम॰ वन्दना श्लोक .. ..

कवित्त सवैया

गणनायक के पद पकज को करि ध्यान मनाय महेश भवानी ।
वसीवट वो जमुना तट मे महिमा मुरलीधर की उर आनी ।
कौन चहो यह ग्रथ नवीन वो काव्य की रीति कछू नहि जानी ।
'परमेश्वर दत्त' को एक आधार रही है गुरु की महिमा अति मानी ॥ १ ॥
पितृ पितामह की लखि पुण्य हृदय मह आइ भरोस महा ।
कर जोरि मनाय गुरु जन को तव तौ यह ग्रथ मै कीन चहा ।
जो वनै सो वन नहि लेव वनाय उपाय जहा जस चाही रहा ।
परमेश्वर की लखि चचलता तौ छमा करिये कछु मोर कहा ॥ २ ॥

अथ वर्षकालेवाराघानयन ॥

जन्म के शाके को हीन करे जेहि शाके मो वर्ष प्रवेश वनावै ।
जवन वचै सो गताब्द अहै सोसवाई किहे शनिवार कहावै ।
अर्द्ध को दण्ड वन पल सार्द्ध सो याही मो जन्म को इष्ट मिलावै ।
पल दड भो साठिका भाग लगाय पला को लै दड के वीच मो नावै ॥ ३ ॥
दड के लब्ध को वार मो धै तव वार मो सात का भाग लगावै ।
शेष वचै जो सो वार को दड पला मह वर्ष प्रवेश गनावै ।
जाही समै रवि जन्मक अश वो वर्ष क अश वरावरि आवै ।
ताहि समै मह वर्ष प्रवेश लगै 'परमेश्वर दत्त' वतावै ॥ ४ ॥

अत--

एक काशी से पश्चिम योजन सातय पर्मा का पुरा गाउ असै ।
तह गौतम गोत्र है मिश्र के वश म शीतल मिश्र द्विजेन्द्र लसै ।
तिनके सुत कुज विहारी कहावत पुण्यमहै अति चित्त धसै ।
तिनसे 'परमेवर दत्त' भये जिनके मनमो यह ग्रथ लसै ।१०७

:o: ·o ·o:

पुनि मुछा दशा दिन माम प्रवेश दसा दिन मास दोऊ की वतावा ॥
हायन मास वो वासर की मैं सारिणि ते कछु यत्न शिषावा ।

जातक मित्रनि मर्ग तथा तत्कालिक सालउ वर्ग जनावा ।
शिशचक्र बिचारि तथा विपता की दशा 'परमेश्वर दत्त' बनावा ।१०९
लखि सत्रह सं छानवे सवत वोनइश सै एकतीस ।
चैत वदी भृगु पचमी विषे नक्षत्र को धीश ।
ता दिन ग्रथ समाप्ति किहा मैं राधा कृष्ण के दै पद शीशा ।
नौ ऊपर सौ के कवित्त मनी परमेश्वर को मनिहैं जगदीशा ।११०

इति श्री कुजविहारी सुत परमेश्वर दत्त विरचिते वर्ष प्रदीपे जन्मपत्री भे कथनं नाम द्वितीयोध्यायस्समाप्त सवत् १९३१ चैत्र कृष्ण पचम्या . ।

विषय—ज्योतिष विषयक वर्णन ।

रचनाकाल

लखि सत्रह सं छानवे सवत वोनइश सं इकतीस ।
चैत्र वदी भृगु पचमी विषे नक्षत्र को धीश ।

सख्या २०१ सोन बीजक, रचयिता—परगनदास पाडेय, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—१०$\frac{9}{10}$ X ४$\frac{6}{10}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—२२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० जदुनाथ चतुर्वेदी, ग्राम—बदली चौबे का पुरवा (मवास), पो०—मुसाफिरखाना, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—

श्री गणेशाय नम. ।। अथ सोन बीजक ।।

उत्तम सोन सुरख रग है जेहि के कुन्दन नाम ।
मध्य सोन जरद रङ्ग है मोहराना है नाम ।। १ ।।
दोयम सोन टलुक जरद है तेहि के राशी नाम ।
सबसे नीच सेत रग है ताहि रेसमी नाम ।। २ ।।
उत्तम चादी सूष हाउ सम ताहि वेदागी नाम ।
मध्यम चादी स्याह जरद हे मिलवन जानहु सोइ ।। ३ ।।
सूचर परे कठोर अति काना निश्चय होइ ।
जस्ता जरदो दरत है, माल मुलायम होइ ।। ४ ।।
जरद निहे काला रहं सुनौ सुजन सब कोय ।
ताम्र जस्त दूनौ मिना सुवहा करव न होय ।। ५ ।।

अत—षरीद तोला भरे का दाम २१) रुपया म ४।। रती चाढे चारि तिल पराए ४।। मासा भरे का दाम १।।।) रती भरे का दाम ≡६ षरीद तोला भरे का दाम २१) रुपया मा ४।। एक तिल परामासा भरे का दाम १।।।) रती भरे का दाम ≡६।।) नेत्र मान आना)= सोहन आना)≡ राष आए कई आना ।)- पलो आना ।)= कुनक आना ।)≡ बैत आना ।।) टाजी आना माभी आना ।।)- कोन आना ।।)= सलाय आना ।।)≡ एकलाय आना ।।।)≡ दुधलाय आना १) . ० इति सोना बीजक समाप्तम् ।।

श्रावण

विषय—सोना, चादी का उत्तम, मध्यम और प्रथम भेदो का वर्णन ।

सख्या २०२क श्रीपाल चरित्र, रचयिता—परिमल कवि, कागज—देशी, पत्र—१४४, आकार—८$\frac{3}{4}$ X ८$\frac{3}{4}$ इच पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—३१६८, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत् १६५१ वि०, लिपिकाल—स० १८०७ वि० प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर (बडा मदिर), चूडीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—ॐ न्म. सिद्धेभ्यो ।। श्रीन्मो अरहतान ।। न्मो सिद्धायन ।। न्मो आयेरीयानां ।। न्मो ॐ वभ्रयान ।। नमो लोपे सर्व साधुन ।। श्री वीतराग जी ।। श्री जैन राज जी ।। श्री सरसुती गुरभे नमः ।। श्री परम गुरभे नमः ।। अथ श्रीपाल चरित्र लिष्यते ।।

प्रथम ही लीजै ॐकार । जो भवि दुष्यविनासन हार ।।
सिद्धि चक्रवृत केवल रिद्धि । गुन अनत सकल जाकी सिद्धि ।। १ ।।
प्रनउ परम सिद्धि गुर सोई । भवि सयल सब मगल होइ ।।
सिद्ध पुरी जाको सुभ थानु । सिद्ध पुरी सुभ अनत निधानु ।।

मध्य—

सवतु सोरह स उच्चरा । समयो इक्याउना आग परो ।।
मासु असाढु पहुचौ आइ । वरषा रितु को कहे वढाइ ।।२९।।
पछि उजियारौ आगै जानि । सुक्रवारु वारु परिवानि ।।३०।।
ववरु पातिसाहि गयौ । तासु सुत हिमाऊ भयौ ।।
ता सुत अकवर साहि सुजान । सो जु तपो दूसरौ भान ।।३१।।
ताकै राज न कहू अनीति । वसुधा सर कर सब जीति ।।
जबु दीप तास की आन । दूजौ न और ताहि समान ।।३२।।
जाकै राज कथा यह करी । कवि परिमल प्रगट करि विसतरी ।।

अत—उग्रग्रीय गिरि च दुर्गम उरलवर भूधतय धीरक्रतिमवर मद्रगल पाष ।।
नमखत तन्मध्य श्रीमान सिही पात भूलोक सवद्य ता ।।
तद्युज्य सुरनाथ तुल्यम तुलसक्रेन स्वर्नत ।।४१।।
विद्वन मडल पूजितोपि विसिदा नामन चद्रनयः ।
तत्पुत्रो गुर राम दासी विपिला भुतोपि भाग्य सदा ।।
त सूनु कुलदीपकस्त प्रगट नाम्नाय सकनो सिव ।
तत्पत्रो परिमल धर्म्मदास नग्रथइ क्रयता ।।४२।।

।। चोपई ।।

गापाचल गढ उत्तिम थान । सूरवीर तहा राजा मानु ।।
ताको दल वलु अगिनि असेस । गढ पर राजु करै नरेस ।।४३।।
ताके आगै भूमिया सर्व । सेवा मानि सहज ही दर्व ।।
लछिमी बहुत तासु कै जुरी । घर घर वसै छतीसौ कुरी ।।
जाके राज सुषी सब प्रजा । दुष्टनि दड देहि वहु सजा ।।
अति गरुवं तन लीनै राइ । पुन्य प्रताप सुष कराइ ।।४५।।
ताके आगै चदनु च्योद्धरी । कीरति सब जग मे विस्तरी ।।
श्रावक धर्म महा परवीन । पर उपगार दयाकर लीन ।।४६।।
जाति वरहीया गुन गभीर । अति प्रताप कुल मडन धीर ।।
ता सुत रामदास महा प्रवीन । दानु जस करनु सुष लीन ।।४७।।
तास महीन वुद्धि नही आनु । तिनि सुनियौ श्रीपाल पुरान ।।४८।।
ताकी छाह कछू मते भइ । तब श्रीपाल कथा वरनइ ।।

:o :o: .o.

और जो नर नारी व्रत करै । सो चहू गति भ्रमु हरै ।।
भव्यनि कौ उपदेस वताइ । नहिचै सो जीव मुक्ति ही जाइ ।।६१।।

इति श्रीपाल चरित्रे महापुराने ।। भवि सग मगल करन ।। वुधि जनमन रजन ।। पातिक भजन ।। श्री सिद्ध चक्रविधि दुष हरन ।। त्रभुवन सुष करन ।। भव जल तरन ।। चौपही वध परमल कृत ।। श्री जिनवदेव मंहि ग्रानयो ।। श्री सिद्ध चक्र वृतु मारलीय ।। जुवती नवरग पुरजन संगम गहि सरने सो सिद्ध भय ।। इति श्रीपाल चरित्र चौपही वध समापत संपूरनं

एकादसमो *अध्याय* ॥११॥ सुभं भव मगल ददातु ॥ ज्येष्ट सुदि ५ बुधे संवतु १८०७ लिषतं पंतिवारी आसाराम बासी ढंगवां गुजर के पोथी श्री मोदी जै सीघ जू की जु कोऊ वाचै ताकौ राम राम ....

विषय—जैन धार्मिक कथाओं के अन्तर्गत श्रीपाल राजा का चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

सवतु सोरह स उच्चरो । समयो इक्यावना आगे परो ॥
मासु अषाढ पहुचौ आइ । वरषा रितु को कहे वढाई ॥
पछि उजिआरा आगे जानि । शुक्रवार वारु परिवानि ॥

संख्या २०२ख श्रीपाल चरित्र, रचयिता—परिमल्ल कवि, कागज—देशी, पत्र—६१, आकार—१० × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—३१८५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६५१ वि०, लिपिकाल—सं० १८३५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर (बड़ा मंदिर), मोहल्ला—चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—श्री वीतराग देव प्रशादत् ॥ अथ श्रीपाल चौपही बंधु लिष्यते ॥
प्रथमहि लीजै ॐ अकारु । जो भव दुष विनासन हारु ॥
सिद्ध चक्रव्रत केवल रिद्धि । गुभ अनंत फल जाकी सिद्धि ॥ १ ॥
प्रनमौ परम सिद्धि गुरु राइ । भव्य समल सब मगल होइ ॥
सिधपुरी जाकौ सुभ थान । सिध पुरी सुभ अनंत निधान ॥ २ ॥

०　　　०　　　०

सवतु सोरह स उचरो । समाओ इक्यावन आगरौ ॥
मास असाढ पोहोचा आइ । वर्षा रितु को कहो वढाइ ॥३०॥
पछि उजारा आव जानि । सुभवारु वारु परवान ॥
कवि परिमल्ल सुध करि चित्त । आरम्भयौ श्रीपाल चरित्त ॥३१॥
बब्बर पातिसाहि होइ गया । ता सुतु साहि हिमाउ भयो ॥
ता सुतु अकवरु साहि सुजानु । सो तप तपै दूसरो भानु ॥३२॥
ताके राज न कहू अनीति । वसुधा सकल करी वसजीति ॥
जबू दीप तासु की आन । दूजौ ओरु न ताहि समान ॥३३॥
ताके राज न कहू अनीति । चल विक्रमाजीत की रीति ॥

अंत—　　**चौपही**

गोपाचल गढ उत्तिम थान । सूरवीर तहा राजा भान ॥
ताको दलु वलु बहुत असेस । गढ पै राजु करै सु नरेश ॥ १ ॥
ताके आगे भूमिया सब । सका मानि सहज हो दब ॥

०　　　०　　　०

ता आगे चादन चाधरी । कीरति सब जग म विस्तरी ॥

०　　　०　　　०

जाति बरहीया गुन गभीर । अति प्रताप कुल मडन धीर ॥
तासुत राम दास परवीन । नदनु आस करनु सुष लीन ॥५५॥
ता सुत कुल मडन परिमल्लु । बस आगरे में तजि सल्लु ।
नदौ श्री अकबर सुलितान । महिमा सागर महा सुजान ॥६४॥
जाके हृदै दया के वासु । जीवनि काहू देइ न त्रासु ॥
तामै एक अपूरब रीति । सुरभी सौ अति राषै प्रीति ॥६५॥
गाइ सिघरू बसे इक ठौर । वैर भाव नही राषै और ।
मुष मै जलु पीवै त्रनु षाई । अपन मारग आवै जाइ ॥६६॥

:०:　　　:०:　　　:०:

नादौ नगर आगरौ थान । जबू दीप प्रगट परवान ॥७१॥
बहुधा उपवन अति बने । नाना भाति महीरुह घने ॥
अब डार अति सुगम सरीर । कोकिल सुर बोलै गभीर ॥
सारो सूवा रूप अभग । परस परस बोलै धुनि चग ॥
गाहा दोहा बातै कहै । विरमै नर नारी सुष लहै ॥७३॥
नाचे मोर छता धरि सीम । भूलै नर नागर घनरोम ॥
पाडुक बोले मधुरी भाष । आप आपनै मद अभिलाष ॥
छुटके पारावत मद जोर । पिष्यत कामी के मन घोर ॥
जोगी जगम के मन जिते । व्याकुल होहि काम वसतिते ॥
भाति भाति के कुसुम अपार । पुष्यत सदल बासु अधिकार ॥
भ्रमर अनेक न छाडै पास । बोलै सबद्दु काम को वासु ॥
सदा हरित दोसै वृष हत । भवरे फूले सदा वसत ॥
तरै कालिद्री जमुना वहे । देषत पापु न तन मै रहै ॥
उजिल नीर सीत कौ गेहु । अति सुरभो मनमथ कौ गेहु ॥
अबला जामे करौ असनान । रूप आगरी परम सुजान ॥

o o o

भव्यनि को उपहास बताई । निहचै सो जीउ मुकुतिहि जाइ ॥२४००॥

इति श्रीपाल चरित्रे महापुराने भव्य सग मगल करने बुध जन मन रजने पातिग गजने . . . बध परिमल्ल कृत ॥ . एकादसमी सधि ॥११॥ श्रीपाल सपूर्ण समाप्ता ॥ लिषित हरिकृष्ण दास लुहार धौहा कौ बासी मिती कातीक सुदी १० सबतु १८३५

विषय—जैन धर्मानुयायी राजा श्रीपाल का चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

सवतु सोरह सै उचरो । समम्रो इक्यावन आगरौ ॥
मासु असाढ पाहौचौ आइ । वर्षा रितु कौ कहै बढाइ ॥
पछि उजारो आवै जानि । सुक्रवारु वारु परवान ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल स० १६५१ है । लिपिकाल स० १८३५ दिया है ।

सख्या २०२ग श्रीपाल पुराण भाषा, रचयिता—परिमल्ल, कागज—देशी, पत्र—८५, आकार—१२३/४ × ६७/८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—२७६२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६४९ वि०, लिपिकाल—स० १८५६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर (बडा मदिर), चूडी वाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—श्री सरस्वत्य नम ॥ अथ श्री श्रीपाल पुराण भाषा चौपई बध परिमल्ल कृत प्रारभ्यते सिद्ध चक्र व्रतोपरि ॥

॥ चोपई ॥

सिद्ध चक्र विधि केवल रिद्धि । गुण अनत फल जाको सिद्ध ॥
प्रणमो परम सिद्ध गुरु सोय । भव्य सघ ज्यो मगल होय ॥ १ ॥
सवत सोलह सै उनचास । मास असाढ चौमासो मास ॥
दिन अठाई पहुच्यो आय । व्रत पूजा भवि करै उछाय ॥२६॥
कवि परिमल्ल सुद्ध करि चित्त । आरभ्यो श्रीपाल चरित्त ॥
बब्बर पातिसाह जे भयो । ता सुत साह हमाऊ भयौ ॥३०॥
ता सुत अकबर साहि प्रमान । सो तप तपै दूसरो भान ॥
ताके राज न कोई अनीत । वसुधा सकल करी तिन जीत ॥३१॥
जबू दीप तास की आन । दूजो अवर न ताहि समान ॥
ताके राज कथा यह कही । कवि 'परमल्ल' प्रगट करि सही ॥३२॥

अंत-- ।। काव्य ।।

उग्र गोप गिर च दुर्गम गढ रत्नाधर भूषीतं ।
ज धीरं कृतमवर मदगल पाषान रेरावन ।
तन्मध्ये श्री मानसाहि धियते भूलोक सवविंत ।
तद्राज्य सुरनाथ तुल्य गदित तत्कान सवर्ण्यते ।।२६।।
विद्वद्व मडल पूजितो च विमदो नामेन चद्र नय ।
तत्पुत्रो गुर रामदास विपुलो भोक्तापि भोग्य सदा ।
तत्सूनु कुल दीपकस्तु प्रगटे नाम्ना सकर्णाभिय ।
तत्पुता परमतल धर्मस्तो ग्रथ इद क्रियते ।।३०।।

।। चौपई ।।

गोपाचल गढ उत्तिम थान । सूरवीर तहा राज समान ।।
ता आगे चदन चौधरी । कीरति सवै जगत बिस्तरी ।।३१।।
जाति वानिया गुन गभीर । अति प्रताप दल रजन धीर ।।
ता सुत राम दास परवान । ता सुत अस्ति यहाँ सुर ज्ञान ।।३२।।
ता सुत कुल मडन परिमल्ल । जस आगर मै अरि सल्ल ।।
ता सुत बुद्ध हीन नहि आन । ति कियो चौपही वध बषान ।।३३।।
हो है असुद्ध जहा पदहीन । फेरि सवारौ कवि जन ताहि ।
वार वार जपं कर जोरि । वुधजन मोहि देहु मति षोरि ।।३४।।

इति श्री श्रीपाल चरित्र महा पुराणे भव्य वध मगल करण बुध जन मन रजन पातिक गंजन सिद्ध चक्र व्रत दुह हरण त्रिभुवन सुष करण भव जल तरण चौपई वध परमल्ल कृत श्रीपाल प्रिया तप वर्नन स्वर्ग लोक प्रति वर्ननो सद्धि ।।११।।

।।सो सपूर्णम्।। इति श्री श्रीपाल चरित्र भाषा बद्ध चौपई वध सपूर्ण ।।

श्री सवत् ।। १८५६ ।। मिती चत्र वदी १३ श्रीपाल चरित्रे सपूर्ण भिया

विषय--जैन कथा साहित्य के अन्तर्गत श्रीपाल राजा की कथा का वर्णन ।

रचनाकाल

सवत सोलह स उनचास । मास अषाढ चौमासो भास ।।

सख्या २०२घ श्रीपाल चरित्र, रचयिता परिमल्ल, कागज--देशी, पत्र--६४, आकार--१२६/१० × ७१/२ इच, परिमाण (अनुष्टुप)--१०१५०, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १६४९, लिपिकाल-- स० १८७४ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री दिगबर जैन (बडा मदिर), चूडावाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि--ॐ श्री वीतराग जी सहाइ ।। श्री ।। अथ श्रीपाल चरित्र भाषा लिष्यते ।।

।। चोपई ।।

सिद्ध चक्र विधि केवल रिद्ध । गुण पतन जाको फल सिद्ध ।।
प्रणमो परम सिद्ध गुन सोइ । भव्य सगमो मगल होई ।। १ ।।
सिसु पुरी जाचो सुभ थान । सिध पुरुस आनद निधान ।।
प्रगटी जोति त्रिभुवन मैं आहि । अलष देव कोइ लषे न ताहि ।। २ ।।

:०· .०. ·०:

सवत सोलह से उवरो । सावन इकोवन आगरो ।।
मासु असाढ पहूचो आइ । वर्षा रितु कीउ कहै वढाइ ।।४०।।
पक्ष उज्यालि आठे जानि । सुक्रवार आठे परवानि ।।
कवि परिमल्ल सुद्ध करि चितु । आरभो श्रीपाल चरितु ।।४१।।

बावबर पतिसाहि हो जयौ । ता सुत साहि हिमाउ भयौ ॥
ता सुत अकबर साहि प्रवानु । सौ तपु तप्यौ हु सौ भानु ॥४२॥
ताकें राज न कहू अनीति । वसुधा सकललई बस जीति ॥
जबू दीप तासु की आन । दूजौ अवरु न ताहि समान ॥४३॥
ताकें राज कथा यह करी । कवि परिमल्ल प्रगट विसतरी ॥

अत—

श्लोक

उग्रं गोपरी रवन दुर्गति मठ रत्तना परं ।
भूषित जधीर श्र्मतिमंवर मदलया थान ऐरावत ।
तनमध्य श्रीमान सिहाधिपति ।
भुलोक सवद्यते तद्राज्य सुरनाथ तुल्य गदित केनपि सवरन्यते ॥१६॥
विद्वन मडल पूजितो विसदा नामेका चद्रेणय ।
तत्पुत्रो गुर रामदास विपुलो भोकापि भोग्य सदा ॥
तत्सुनू कुल दीपकस्तु मगदौ नाम्ना सकर्णोभिधः ।
तत्पुत्रो परिमल्ल धर्म स्दन ग्रथं इद क्रियते ॥

॥ चौपई ॥

गाव रुगढु गिर उतम थानु । सूर वीरता राजा जानु ॥
ता आगें चादन चौधरी । कीरति सब जग में विस्तरी ॥
जाति वरहीया गुन गभीर । अति प्रताप कुल रजनधीर ॥
ता सुत रामदास परवान । ता सुत यस्तीअहि सुर ग्यान ॥
ता सुत कुल मडन गभीर । परिमल्ल वर्स आगरें धीर ॥
ता सम वुधि नही नहो आन । तिन कीनौ चौपाई वषान ॥२०॥
होहि असुद्ध जहा पद ताहि । फेरि सवारी कवि जन ताहि ॥
वार वार जपौ कर जोरि । वुध जन मोहि देहु मति थोरि ॥२१॥

इति श्रीपाल चारित्रे ग्रथ भाषा कवि परिमल्ल विरचितायां समाप्त ॥ मिती भादौ वदी ॥ ५ ॥ सवत ॥१८७४॥ पोथी लिषी वेनीराम अपने पढने निमित्त सुभ मस्तु ॥ राज नवाव गजुदी हैदर लषनऊ वीच लिषी ॥

विषय—जैन कथा साहित्य के अतर्गत श्रीपाल राज की कथा का वर्णन ।

रचनाकाल

सवत सोलह सें उचरी । मावनइ कौ वन आगरी ॥
मासु असाढ पहुचो आई । दर्षास्ति कोउ कहै वढाइ ॥४०॥

सख्या २०२ड श्रीपाल चरित्र भाषा, रचयिता—कवि परिमल्ल, कागज—देशी, पत्र—११९, आकार—१०३/४ × ७ इच पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३ परिमाण (अनुष्टुप)—३०६४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१६४९ वि०, लिपिकाल—स० १९१३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर (बड़ा मदिर), चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—श्री वीतरागाय नम. ॥ श्री सरस्वत्यै नम. ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ अथ श्रीपाल चारित्र भाषा कवि परिमल कृत लिष्यते ॥

॥ चौपाई ॥

सिद्ध चक्र विधि केवल रिद्धि । गुण अनत फल जाके सिद्धि ॥
प्रणमौ परमसिद्ध गुण सोय । भव्य सघ जो मगल होय ॥
सवत सोलह सै उनचास । मास असाढ चौमासौ मास ॥
दिवस अढ़ाई पहुच्यौ आय । व्रत पूजा भवि करैं वनाय ॥३०॥

कवि परिमल्ल सुध करि चित्त । आरंभ्यो श्रीपाल चरित्त ॥३१॥
बावार पातिसाहि हो जयो । ता सुत साहि हिमाऊ भयो ।
ता सुत अकवर साहि प्रवानु । सो तपु तप्यौ दूसरौ भानु ॥२२॥
ताके राज न कहु अनीति । वसुधा सकल लई सब जीति ॥

अंत— ॥ काव्य ॥

उग्र गोप गिर च दुर्गम गढ रत्नावह भूषितं ।
ज धीरं कृतमवर मदगल पाषान रंराश्रत ॥
तन्मध्ये श्री मान साहिधिपते भूलोक सवदित ।
तद्राज्य सुरनाथ तुल गदित तत्कान सवरार्यते ॥
विद्वद्व मडल पूजितो च विसदो नामेन चद्रनयं ॥
तत्पुत्रो गुरु रामदाम विपुलो भोक्तापि भोग्य सदा ॥
तत्सूनू कुल दीपकस्तु प्रगटे नाम्ना सकर्णाभिय ॥
तत्पुत्रो परिमल्ल धर्म सदनो ग्रथ क्रियते ॥३०॥

॥ चौपाई ॥

गोपाचल गढ उतिम थान । सूरवीर तहा राजस मान ॥
ता गागे चदन चौधरी । कीरति सवं जगत विसतरी ॥
जाति वानिया गुन गभीर । अति प्रताप कुल रजन धीर ॥
ता सुत गमदास परवान । ता सुत अस्ति यही सूर ग्यान ॥३२॥
ता सुत कुल मडल परिमल्ल । वसै आगरै मै आरसल्ल ॥
ता सुत वुद्ध हीन नही आन । तिन कियौ चौपही वध बखान ॥
हो है असुध जहा पद हीन । फेरि सवारौ कविजन जाहि ॥
वार वार जप कर जोरि । वुध जन मोहि देहु मति थोरि ॥३४॥

इति श्रीपाल चरित्रे महा पुराणे भव्य सघ मागल करण वुधि जन मन रजन पातिक गंजन सिद्धि चक्र व्रत दुष हरण त्रिभुवन सुख करण भवजल तरण चौपई वध परिमल्ल कृत श्रीपाल पिषातम वर्णन स्वर्ग लोक प्राप्तो वर्ननो नाम सधि ॥११॥ सपूर्ण ॥ इति श्रीपाल चारित्र भाषा सपूर्ण ॥ लिषित जुगीमल्ल श्रावक पल्लीवार गुज गोठी इष्वाक वशी कास्यप गोत्री नवाव गज के वठोरी ने लिषी नेम नाथ के चैत्याल म लिषी लाला मख्खन लाल के पठनार्थ हेत लिखी ॥ समत १९१३ ॥ मासे उत्तिम मासे अगहन मासे कृष्ण पक्षे सनि वासरे ॥

विषय—जैन साहित्य के अन्तर्गत श्रीपाल राजा की कथा का वर्णन ।

रचनाकाल

सवत सोरह से उनचास । मास अषाढ चौमासौ मास ॥

सख्या २०३क मानमकर्म रचयिता—पल्टदास, कागज—देशी, पत्र—११, आकार—८॥ × ५॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—१६५, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण) पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—सती नाम आतम कर्म छद ।

भक्त के मै कहो लछन सत करहु वीचरान ।
प्रथम दामातन करीके सत से चीत वलावन ।
रहीत छल के सत सेवा द्रव तन मन वरन ।
तीलक के असनान पुजा कर्म मे चीत लावन ।
तव उतपती होय वैराग मन मे जोग पर चीत धारन ।

जोग से तव ग्यन होयं ग्यान भवती जगावन ।
भक्ती द्वावस अष्ट अंगी सोइ सत परायन ।
करें कर्म निह कर्म होय कै सोइ धर्म सनातन ।
अष्ट सीधी नौ नोधी ताही को वीसरावनं ।
जोग जात अतीत प्राप्त सोइहै अवधुतन ।
कम इद्री ग्यान इद्री येक रस कै राषन ।
पाच ततु अनुत पाचो रइनी देवस जगावन ।
वुधी चीत हकार जोगवे सोइहै मज्यासन ।
काम क्रोध श्रो मोह लालच ताही को वीसरावन ।
छुटै मुष पियास निद्रा सकल इद्री जीतनं ।
वुष्र मीत्र को यक जानं अस्त तीनि दान चीत धर ।

अत––सहज लगे सम धी जबही भजन सदा अषंडन ।
धनी जननी पीत वकी की षीजे ही हारी भक्त गनं ।
धन्य नाग्र वाहा देस धनी है जह भक्त ते वासन ।
वैकुंठ लघु है ताही परातरा सहीत मथु भयो धन ।
प्रीती सो छदा कहै सुनं जो श्री तव कत सहीतनं ।
दस पलटु मेरे पदा को अंत सम परे सीधारन ।

इति श्री साहेब पलटूदास कृत छदा अतमकर्म समपुर्ण ।

विषय––आत्मकर्म विषय वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य––ग्रंथ पूर्ण है । रचनाकाल तथा लिपिकाल का कोई उल्लेख नही । रचयिता पलटदास है ।

प्रस्तुत पुस्तक मे भक्तो को आत्मकर्म का उपदेश दिया गया है ।

संख्या २०३ख ककहरा अरल के, रचयिता––पलटूदास, कागज––देशी, पत्र––६, आकार––८॥ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)––१८, परिमाण (अनुष्टुप)––७३, पूर्ण, रूप––प्राचीन, पद्य, लिपि––नागरी, लिपिकाल––सं० १९२२ वि०, प्राप्तिस्थान––श्री जगन्नाथ दास जी मठाधीश, मठ–बनके गांव डाक०–कादीपुर, जिला–सुलतानपुर।

आदि––पलटू का केकहरा

सतगुर वचन लिषते केकहरा पलटूदास का ।
कका हो कहा वहुत समुझाय वचन कोइ नही मानं ।
षरी श्रौर कपुर दुनौ एकहि मे सानं ।
कचन घुघुची आनि तुला एकहि पर तोलै ।
अरे हा पलटू झूठा मारे गाल साच तव कैसे वोलै ।
षषा हो षरा वतावै षोट षोट का षरा वनावै ।
चोर चौतरा वैठि साहु क पकरि मागावै ।
काम क्रोध ममुए गुरु श्रौ सिष्य अनारी ।
अरे हा पलटू हमरे ततु विचार कहो को सुनै हमारी ।

अंत–– दोहा

अरल के ककहरा नाम को भाषा पलटूदास ।
सुनि गनि जो जन वूझि है होइ जोग अभ्यास ।३३।

इति श्री पलटूदास जीव का केकहरा सपूरन १ सवत १९२२ :०. :०: :०:

विषय--योगाभ्यास वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ पूर्ण है। रचनाकाल दिया नहीं। लिपिकाल सं० १९२२ वि० है। रचयिता पलटूदास है। अन्य विवरण नहीं मिलता।

प्रस्तुत ग्रंथ 'ववहरा' में ज्ञानोपदेश तथा योगाभ्यास का वर्णन है।

संख्या २०४ क. उपखान विवेक, रचयिता--पहलवानदास, कागज--आधुनिक सफेद रूलदार, पत्र--१८, आकार--८ × ६ ६/१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--१७, परिमाण (अनुष्टुप)--३८२, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १८६५ वि०, लिपिकाल--सं० १९५९ वि० सम्भवत, प्राप्तिस्थान--पं० रतन नारायण जी, ग्राम--जगदीशवा पुर, डा०--इन्हौना, जिला--रायबरेली ।

आदि--उपखान विवेक ॥

॥ दोहा ॥

महादेव गणपति गिरा गिरजा सुरन समेत ।
बन्दौ सुरपति फन पतिह राम भजन के हेत ॥
सुर सर भूसुर सरब मन जगत पितारव चंद ।
पवन तनय तुमते विनय, पहलवानदास मत मन्द ॥
करहु कृपा जन जान के देहु सुमत सत ज्ञान ।
नाम रटत लागी रहै अरु जप सुमिरन ध्यान ॥
मच्छ कच्छ बाराह नरहर सत युग वन्दौ चार ।
त्रेता बावन परशुधर रामचंद्र अनुसार ॥

·o. :o· :o:

॥ चौपई ॥

काह नेह विन बातै किहे । भुगतै कर्म मोर वरिन दिये ॥
चहिय नाम चित अन्ते लावे । भला भाड देवारी गावै ॥
तस भावै जस उपजै प्रीती । सोहै चित्र वनै जस भीती ॥
बहुत बोल कोउ सकै न बोली । अडुक गिरे रावन अस वली ॥

अंत--सतगुर 'सिध्या दयानिधि' तिन भाषा सत ज्ञान ।
पहलवान दास जानें नहो सतगुर परम सुजान ॥
कातिक शुक्ला मुक्ति तिथि हम बार कहि दीन ।
सम्वत अठारह सै पैंसठ उपखान विवेक सो कीन ॥

.o. ·o· :o:

रिषि जोजन है अवधपुर कहिय दिशा ईशान ।
पहलवानदास यह ग्रंथ तहाँ करि विवेक उपखान ॥
सर जोजन है देवसरि दक्षिण दिश कहि दीन ।
भीखीपुर यक ग्राम है तहं पोथी यह कीन ॥
है षट योजन लखनपुर पश्चिम दिशि परमान ।
सत्यनाम महिमा सरिस पोथी जुत उपखान ॥
उत्तर दिशि पहिचानिये कोटवा जोजन पाच ।
अभरन तीरथ पाप हरन जगजीवन मत साच ।
जोजन भर पूरब दिशा गुरु अस्थल हरि ग्राम ।
पहलवानदास के दानिवे सतमत दियौ जो नाम ।

इकतालीस कम दुइ सहस सम्वत भे निस्तुक ।
बैसाख मास कृष्ण पच्छ पुनि नौमी दिन सूक ।।

राम राम राम

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन ।

रचनाकाल

कातिक शुक्ला मुक्ति तिथि हस बार कहि दीन ।
सम्वत अठारह सै पैंसठ उपखान विवेक सो कीन ।।

संख्या २०४ख उपख्यान विवेक, रचयिता—पहलवानदास, निवासस्थान—भीखीपुर (रायबरेली), कागज—सफेद रूलदार, पत्र—१०, आकार—८६/१० × ६६/१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—३००, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८६५ वि०, लिपिकाल—सं० १९९८ वि०, प्राप्तिस्थान—महंत श्री गया प्रसाद जी ग्राम—भीखीपुर, डाक०—राजा फत्तेपुर, जिला—रायबरेली ।

आदि—

.. .. वडिन सहित आखिन तके ।।३५।।
सत्त नामक सुमिरन सही । और बात सब कहैम कही ।।३६।।
पाप पुण्य कर कवन गुमाना । गगरो दाना सूद उताना ।।३७।।
यह वातन के सफल न लेषु । दिन चारि चेतहु को देषु ।।३८।।

दोस नही करतार को मनमाना तोइ कीन ।
वचे त्रिगारी वोझते वकुचा चोर न लीन ।।३९।।

।। चौपाई ।।

सठ तोहि आवैन हरि परतीता । मुख हेरत सठे कर वीता ।।४०।।
राम छाडि जो और जपं । खाय उधार पयारं ताप ।।४२।।
विन सत अस को वडदानी । भेडि पूछ षाये कर पानी ।।४३।।
विन चीन्हे कोऊ वार न तरई । रास छाडि घर विनिया करई ।।

अंत—कातिक शुकला सति तिथि हस वार करि दीन ।
सवत १८६५ उपख्यान विवेक सा कीन ।।४२२।।
नाम अनत अनत गुन कहेव सुमति अनुहारि ।
श्रोता वकता सुजन जन जोरेहु टूट विचार ।।

० ० ० ०

ऋषि जोजन है अवधपुर कहिए दिशा इशान ।
पहलवान दास वह गृथ तह करि विवेक उपख्यान ।।
उतर दिशि पहिचानिए कोटवा जोजन पाच ।।४२७।।
अभरन तीरथ पाप हरण जगजीवन मत साँच ।।
जोजन भरि पूरव दिशा गुर स्थल हरि गाँव ।
पहलवानदास के दान सत मत दियो जो नाम ।।४२९।।
कम दुई सहस सवत भो निस्तक बैसाख मास ।
कृष्ण पक्ष पुनि नौमी दिन सूक ।।४३०।।

विषय—वेदात और नीति विषय वर्णन ।

रचनाकाल

कातिक शुक्ला सप्त तिथि हस वार करि दीन ।
संवत १८६५ उपख्यान विवेक सार कीन ॥

संख्या २०४ग उपखान विवेक, रचयिता—बाबा पहलवानदास, निवासस्थान—(रायबरेली), का॰ज—आधुनिक सफेद पत्र—१६, आकार—८$\frac{1}{3}$ × ६$\frac{1}{4}$ इंच, [पंक्ति प्र]ति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—१८८१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—रचनाकाल—सं॰ १८८५ वि॰ प्राप्तिस्थान—महंत श्री गुरुप्रसाददास जी, स्थान—बछरावा, जिला—रायबरेली।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ ग्रन्थ उपखान विवेक पहलवान कृत लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

महादेव गनपति गिरा गिरजा सुरन समेत ।
वदौ सुरपति फनपति राम भक्ति हित हेत ॥
सुरसरि भूसरि सर्व मुनि जक्त पिता रवि चंद ।
पवन तनय तुमसे विनय पहलवानदास मतिमंद ॥
करहु कृपा जन जानि के देहु सुमति सत ग्यान ।
नाम रटन लागी रहे अजपा सुमिरन ध्यान ॥
मच्छ कच्छ बाराह नरहरि सतजुग वदौ चारि ।
त्रेता बावन परसधर रामचंद्र असुरारि ।
कृष्ण ववध द्वापर भए कल्कि सो अवतार ।
दुख दलन पावन करन पाप हरन महि भार ॥

चौपाई

हरि के हेत देस सो वढ़ै । फूल वही जो महेसे चढ़ै ॥
का तजिराम अवर तोइ जाना । दिज भौरी कूकर सनमाना ॥
भीति पूजि यह दुनिया मरे । छूछ कुवा पत कोहरन भरे ॥
राम छोडि कहु केहि के सुधरी । चलिहि कतिक दिन जल कै चुपरी ॥

अंत—कातिक शुक्ल भूमि तिथि हसवार कहि दीन ।
समत अठारह सै पैसठि उपखान विवेक सो कीन ।

:o. :o .o.

रिखि जोजन है अवधपुर पूरब दिशा मो जान ।
पहलवानदास यह ग्रथ तह करि विवेक उपखान ॥
सोरा कोमल देवमोर दीशा दिदीस कोह दोन ।
भीखीपुर एक ग्राम है तह पोथी यह कीन ॥
उत्तर दिसि पहिचानिए कोटवा जोजन पाच ।
अवर तीरथ पाप हरन जगजीवन मत साच ॥
जोजन भरि पूरब दिसा गुरु अस्थान हरिग्राम ।
पहलवानदास के दानिवो सत चीत दियो जो नाम ॥
इन पचहुन के मध्रिमा है भीखीपुर गाऊँ ।
पहलवानदास सुमिरै तहा जुक्त विवेक हरि नाउ ॥
मम गुर सिध्या जग विदित उन गुर दूलनदास ॥
जगजीवन गुर ताहि के किहौ भक्ति परगास ॥६४॥

इति श्री उपखान विवेक संपूरन पहलवानदास कृत संपूरन ॥

विषय—ज्ञानोपदेश के साथ साथ उपखानों का भी वर्णन किया गया है।

रचनाकाल

कातिक शुक्ल भूमि तिथि हसवार कहि दीन।
समत अठारह सै पैंसठि उपखान विवेक सो कीन।

संख्या २०४घ विरहसार, रचयिता—बाबा पहलवानदास, निवासस्थान—भीखीपुर (रायबरेली), कागज—आधुनिक पीला, पृष्ठ—४७, आकार—८६/८ × ५१/२ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१० परिमाण (अनुष्टुप)—७०५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५१ वि०, प्राप्तिस्थान—महंत श्री गयाप्रसाद जी, ग्राम-भीखीपुर, जिला-रायबरेली।

आदि—श्री गनेशाय नमः श्री हनुमान सहायक ॥ अथ श्री विरहसार ग्रंथ प्रारभ्य ॥

॥ दोहा ॥

गुरु करता वदो प्रथम जोरि पानि शिरनाय।
लोहा ते कचन करै प्रीति प्रतीति दिढाय ॥ १ ॥
चारि वेद मह लोक पद सेवत कल्यान मय।
कवहु परै नहि फीक दिढ मानै परतीत जो ॥
:o. .o .o.

"जय जगजीवन" समरथ साईं। को जग दूसर तुम्हहीं नाईं ॥
निज जन जानि दया प्रभु कीजै। विरह सार सुमिरन मोहि दीजै ॥
वन्दौ दूलन दीन दयाला। मतमनि तिलक जाहि के भाला ॥
जेहि कौ कृपा भजन कछु होई। उपजै विरह नाम कै सोई ॥
सतगुर 'सिध्या' विनय सुनाऊँ। देहु ग्यान कछु कीरति गाऊँ ॥
गुन अवगाह अहै प्रभु केरे। नाहि ज्ञान वुद्धि कछु मोरे ॥
वदौं सबहि जहा लगि साधा। जिन केहु भेष राम कर बाधा ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

भौमवार तिथि पचिमी षुकुला फागुन मास।
सवत अठारह सो इक्यावन विरह सार परगास ॥६१॥
तिलोई के उत्तर कोस भरि भीखीपुर यक ग्राम।
रस्ता मऊ के निकट ही पहल्वांदास को धाम ॥
अवध पुरि कै दछि दिश तीस कोस परमान।
रस्ता मऊ के निकट ही पहल्वांदास अस्थान ॥६३॥
जगदीशपुर के पछिम दिश वेद कोश कहि दीन।
पहल्वांदास यह पोथी विरहसार जह कीन ॥६४॥

इति श्री रामचरित्रमानस पोथी विरहसार सम्पूरन जो प्रति देखा सो लिखा ॥ भूल चूक महात्मा जन अपराध छमा करके सुधारैं चौपाइ सब = ४०१ ॥ दोहा = ६४ सोरठा = ४४॥

विषय—भक्तों का माहात्म्य और मोरध्वज राजा की कथा।

रचनाकाल

भौमवार तिथि पंचमी शुकुला फागुन मास।
संवत अठारह सो इक्यावन विरह सार परगास ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सं० १८५१ है। लिपिकाल दिया नहीं पर पीले कागज पर लिखा होने के कारण ग्रंथ उधर का जान पड़ता है।

रचयिता का नाम पहलवानदास है। ये रायबरेली के अंतर्गत भीखीपुर ग्राम के रहने वाले थे। जाति के सरयूपारीण ब्राह्मण थे। प्रस्तुत पुस्तक का विवरण उन्हीं के स्थान पर लिया गया है। ये तो विरक्त थे पर उक्त स्थान पर इनके भाई की पुत्री के वंशज अब तक विद्यमान है जो महंती का कार्य करते हैं। वर्तमान महंत का नाम श्री गयाप्रसाद है।

बाबा पहलवानदास की गुरु परंपरा इस प्रकार है—

स्वा० जगजीवनदास जी (कोटवा)
|
दूलनदास जी (धर्मे)
|
सिध्यादास जी (हरगाँव निवासी)
|
पहलवान दास

संख्या २०४ड शब्द, रचयिता—पहलवानदास बाबा, निवासस्थान—धरमे (रायबरेली), कागज—आधुनिक पीला, पत्र—१२, आकार—८½ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप)—१८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९७५ वि०, प्राप्तिस्थान—महंत श्री गुरुप्रसाद जी, स्थान—हरिगाँव (सिध्यादास बाबा की कुटी), डाक०—पर्वतपुर, जिला—सुलतानपुर।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ शब्द साहेब पहलवानदास कृत लिष्यते ॥

नहि का नाम रटना गुरदीन लखाइ ।
मनहि मा बोलि जीभ न डोलि बारह बार कहिन समुझाइ ॥ १ ॥
यह रटना रिष मुनि मन भावा राधा महादेव मन अरुझाइ ॥ २ ॥
नानक नाम कबीर रटा है गोरष सिद्धि भये रट लाइ ॥ ३ ॥
अनभौ सचर तौं सधि उदर परम पुरिस पीतम दरसाई ॥ ४ ॥
पहलवानदास के सतगुर सिध्या पायउँ परमनिधि बिसरि न जाइ ॥ ५ ॥ १ ॥

साईं हम तुमसे गाँठ जुरी ।
लागि लगन कोउ अंत न पावइ बिन रसना रट रसन दुरी ॥ १ ॥
पिय पटुका चित चूँदर अटकी परी प्रेम अवरे भमरी ॥ २ ॥
सुनै श्रवन विन लखै नयन विन ते मानै यह बात फुरी ॥ ३ ॥
पहलवानदास के सतगुर सिध्या बाजी गगन मा धुनि बँसुरी ॥ ४ ॥

अंत—

बोल रे हरि नाम सुवना ।
नाम हरि का बोलु तोता तौं तोइ सुवास सलोना ॥ १ ॥
अबही भजिते सत्य सजिले आगू नहि कछु होना ॥ २ ॥
नाम जिकरि गहि सिकरि चढ़ि चलु उहाँ न माया टोना ॥ ३ ॥
पहलवानदास के गुर सिध्या पायऊ यहै सिखोना ॥ ४ ॥

इति श्री सब्द साहेब पहलवानदास कृत संपूरन सुभ मस्तु ॥ सब्द ॥ ३८ ॥

श्रावण मासे कृष्ण पक्षे तिथौ ॥१३॥ चंद वासरे ॥ श्री सम्वत १९७५ ॥ दोहा ॥ लेषक गुर प्रसाद कवि वासा रसई ग्राम ॥ जो प्रति देषा सो लिखा सिद्धि करै श्री राम ॥ १ ॥

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल का पता नहीं । लिपिकाल सं० १९७५ वि० है । रचयिता पहलवानदास है जो प्रस्तुत कुटी के प्रवर्तक बाबा सिध्यादास के शिष्य थे । ग्रंथ स्वामी से पता चला कि ये रायबरेली जिले के अन्तर्गत धरमे ग्राम के निवासी थे ।

संक्षिप्त विवरण में उल्लिखित पहलवानदास यही हैं । उनका दूलनदास जी का शिष्य भूल से लिखा गया है ।

संख्या २०५क इश्क गर्क ग्रंथ, रचयिता—बाबा पानपदास, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८$\frac{1}{10}$ × ५$\frac{6}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामप्रसाद जी बहुगुना, अध्यापक, आइ० टी० कालेज, लखनऊ ।

आदि—अथ लिषत इसक गर्क ग्रंथ ॥

बजाए इसक पौसीदे तन ।
जहीरे मुबत लाए मन ॥
कादरां दिल्ल बइर्दानी ।
मुरस दई गुफत फुरमांनी ॥
गुफतई फिकर दुरवेसा ।
न मेल्लक जिकर जिकरानी ॥
मनें पुरसीदिय मुरसद ।
कुजा मक्कां नर बानी ॥
बषाने आब आतीस बाद ।
बजाए जाय पेमानी ॥
अजायब लह एक दरियाव ।
अग वाहा गुसल कर दम पाय ॥
बुबीनम नूर नूरानी ।
सफर वो जाफसानी ॥
निजारा नूर का फल के ।
बजानम फलक एक फल के ॥
तुसदक पानपा होवें ।
महर मदरगाह का जोहै ॥ १ ॥

अजब दुरवेस दरगाही । आलम की चाह न चाही ॥
हरफ एक अलफई जाना । जो आलम नाहि पहचाना ॥
हू चाहै ऐन का साथी । वो डाली गैन की बातें ॥
बजाए जाय ऐनल हक्क । बुबीनम आतमा बेसक्क ॥
मजैए पंज हैरानी । मजं एक याद बज्जानी ॥
कुरसी अरसता दानी । बिन सीनद हुकम अमानी ॥
दरीचो अरस की वरीक । बजाए जा तरह मानी ॥
मसायक सेष नादाना । नही वोह राह पेहचानो ॥
दरे दह रब का षाना । दुरवेसौ लहा मक्काना ॥
पानप गुफतई गुफतार । मुरसद पुरमे इतबार ॥
आलम गफलतें बिसियार । मैं तेरी याधना दानम ॥ २ ॥

अंत—

हुवा है याद को कैफी । पढी एक नाम की सैफी ॥
नहीं तसबीवो जुबांनी । गजक एक जिकर की भानी ॥

अजयब गाह वो गहे । सवाले अगन निगाहे ॥
कि होवैं गौहरो बाए । बजानम धार सितारा ॥
बुबीनम मस्त जो होवैं । तवाफे डालिए दोवैं ॥
मुरसद गाह निगाहे । निगाहे गाह दिषलावैं ॥
बुगो 'पानप' गुफतारा । इगानम षुदा हमारा ॥ ३ ॥
बजुज इक नाम सहारा । तमाम आलमे गारा ॥
करू हरद्म की सुमारा । कि हरदम नाम लगावैं ॥
चचल दिल वो ठहरावैं । सुषमन घर पिगल आवैं ॥
जुबा बिन राग वो गावैं । अधर अल्लाह मकांना ॥
पौहचैं बाद का जामा । तबैं अल्लाह मेहरबांना ॥
कि होवैं रस्त वो गुस्ता । मजैं पचीस एक सता ॥
गुफत इक मुरसद से जाना । कि तानप ने सभर माना ॥ ४ ॥

इति इसक गरक बाबा पानपदास जी का लिषतं पढत सुणत सबद विचार करत मोछ मुक्त फल पावत सतगुर के चरनार बिदग नमसकार नमसकार ॥

—पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—भगवद् प्रेम वर्णन ।

सख्या २०५ख कडखे, रचयिता—पानपदास, कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—६ ५/८ × ५ ३/१० इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—२९६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री शंभुप्रसाद जी बहुगुना, एम० ए०, हिंदी अध्यापक आई० टी० कालेज, लखनऊ ।

आदि—लिषत कडके पानपदास जी के ॥

सुर्त सुलझाय ले मन समझाय ले राम लौलाय ले दाव आछा ।
सत जन कहत है ठोक प जोष कै अरे मन समझ मत छाडकाचा ॥ १ ॥
रली क्या कर रह्या रलेगा खाक मे आद की साष सुण सुन षीजो ।
सुरत के तार सूं जीव चढ जायगा तनक ठहराय तिहूँ लोक सूझौ ॥ २ ॥
अधर मैं ओड सिरमौड सब जीव की सत जन सूरमा जाय लाग्या ।
चद और सूर घर येक मे सम किये अगन के तेज सूं ब्रह्म जाग्या ॥ ३ ॥
कला उलटी धरी इडा घर पिगला सुषमना आन अमरणा गावे ।
तत्त झनकार दिन रैन सुणता रहे मोहमाया नही रहन पावैं ॥ ४ ॥
सुन की सिषर पर चद बिन चादणी द्यौस बिन सूर परगास हुवा ।
दास पानप कहै सत जानें कोई गयौ संसार सब हार जूवा ॥ ५ ॥ १ ॥
कौन तिरिया भाई कौन तिरिया कहो प्रेम की भक्त बिन कौन तिरिया ।
सकल ससार यौह नेम साधत रहे भरम के जाल मै फद मारिया ॥ १ ॥
यौह मन फिरै जैसे चक्र कुलाल को सोच विचार कुछ नाहि फेरा ।
मन असथिर बिना अरे नर मूरषा कौन कारज कहो सह्या तेरा ॥ २ ॥
राम मुष सु कहे सुर्त निस दिन बहै ऐसा मतमद ये तो नाहि सूझै ।
तत हरजन कहै द्रोह तिन सूं करै नरक मैं पडन की बूझ बूझै ॥ ३ ॥
अभौ तहकीक कर प्रेम के पथ कूं जनम हीरा फेर बनै नाहीं ।
तत्त तिरकुटी रहे सुर्न सूं पाइये लेह दीदार कर षोज माही ॥ ४ ॥
राम धुन लग रहै पलक ना विसरिये सुर्त को तार लग सार बाजैं ।
सुणत मुकता लहै दास पानप कहै सेज सूनी जाहा ब्रह्म जागैं ॥ ५ ॥ २ ॥

अत—

यो रहै आकबत षैर इमान कायम ॥ १ ॥
धणी कीं याद क हिरदै मै साधकै सोई जन सूरमा संत सायम ॥ २ ॥

बूझ सतगुर लियौ परम तासू लह्यौ जीभ बिना जिकर निस दिन पढ़ायम ॥ ३ ॥
सुर्त औ निरत कूं बांध त्रिकुटी धरै पाच ले तत तिस घर समायम ॥ ४ ॥
"दास पानप" कहै तत्त आतम लहै यौ रहै आकबत बेग ईमान कायम ॥ ५ ॥३०

विषय—निर्गुन भक्ति सबधी ज्ञानोपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता पानपदास है। प्रस्तुत रचना द्वारा इनका कोई परिचय नही मिलता ।

सख्या २०५ग पद, रचयिता—पानपदास, कागज—देशी, पत्र—५५, आकार—६८/१०×५८/१० इच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—६२६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री शभुनाथ जी बहुगुना, एम० ए०, हिंदी अध्यापक, आई० टी० कालेज, लखनऊ ।

आदि—

ये अनरा गुन निरगुन कर भरतारा ॥ टेक ॥
निरगुन तो अंतरगत व्यापी तू ढूंढ फिरी जगसारा ॥ १ ॥
आतमराम सकल घट पूरन सो है पुर्ष तुम्हारा ॥ २ ॥
जाको सेवा पतब्रत पाइये सोतं संघ विसारा ॥ ३ ॥
योहू बिभचारी मानत नाही 'जन पानप' कूक पुकारा ॥ ४ ॥

तू तो बस ले अपने देस रे हसा तेरा मिलन कब होई सी ॥टेक॥
जुगली देषन भूलिये हसा योहू तो सब वगलन का साथ रे हसा ॥ १ ॥
षोज ले जगमग देमडो हसा वोहु तो दोहु दलौ के बीच रे हसा ॥ २ ॥
जाने कूपचतावडो अनजाणं सुष जो विहाय रे हसा ॥ ३ ॥
जाण जुगत हसा मिले ह्वा तौ झिलमिल झिलमिल होय रे हसा ॥ ४ ॥
कहै पानप चितचेत ले हसा पचनोय क्या होय रे हसा ॥ ५ ॥
सोधो सब्द बवेकी साधू अकल पुरस ले गवन औराधू ॥टेक॥
सुन में सब्द रहै भरपूरा सकल निरतर सदा हजूरा ॥ १ ॥
मुष बिन जपो अजपा जापा जतनी उलट निरष लियो आपा ॥ २ ॥
बाजे बसो अनहद बीना तिसना आस सुनत भई छीना ॥ ३ ॥
काम और क्रोध लोभ सोई मारै ब्रह्म अगन अतर पर जारै ॥ ४ ॥
जुगती हरजन समद बिलोवै । वा समदर मै पवन समोवै ॥ ५ ॥
पवन समोये होय उजाला । चहु दिस बिजरी के सो चमकारा ॥ ६ ॥
द्वादम लउटै पद्म झयझकै विरला पावै सतगुर मिल कै ॥ ७ ॥
पानपदास भजो हर ऐसै तासूं नाहिन व्यापै सासा ॥ ८ ॥

अत—

अरी सषी निकट निरंतर ठाव हो ।
होरी षेलै ताल सौं ॥ टेक ॥
नाही अगर कुमकुमा केसर हू जिया के संग झकझोरी ।
नाही अबीर गुलाल सषीरी रग विना रग वाढ्यौ हो ॥ १ ॥
षेलत है विभचारी नारी आनन के संग होरी ।
आन सो षेल कौन फल पायो इनकी मत बुध थोडी हो ॥ २ ॥
बद्रीनाथ द्वारका पुहुकर तुरक मके कूं दौडी ।
घर मै पिया तज बाहर ढूंढै ये सब मन की बौरी हो ॥ ३ ॥
मै अपना पिया घर मैं पाया सुरत निरत दोय जोडी ।
दोय अमिल मिल भ्यया उजाला मिट गई सकल अंधेरी हो ॥ ४ ॥
पिया सूं लाग रहे मोरे नैना नैना जीवन मोरी ।
कहै पानप आनंद मैं षेलूं मनसा अंतर फेरी हो ॥ ५ ॥१२६॥

नमो देव देवं नमो ब्रह्म ज्ञानी नमो सेव सेव नमो तत ज्ञानी नमो संत सतगुरं जिन्हो तंत चीन्हा नमो दास पानप जिन्हो तत चीन्हा ॥ ६० ॥

विषय—निर्गुन भक्ति वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नही । रचयिता का नाम पानपदास है । प्रस्तुत रचना मे इनका और कोई परिचय नही मिलता ।

रचना का नाम नही दिया है परन्तु पदो मे होने के कारण 'पद' नाम रख दिया है ।

पदो मे कुछ शब्द राजस्थानी के भी मिलते है यथा 'देस' के लिए 'देसडा' जाने के लिये जाणै आदि । अत प्रकट होता है कि रचयिता राजस्थान की ओर का रहनेवाला था ।

सख्या २०५घ पदावली, रचयिता—पानपदास, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—१५४, आकार—८३/४ × ६३/४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—१६१७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री शभुप्रसाद जी बहुगुना, एम० ए०, अध्यापक, आई० टी० कालेज, लखनऊ ।

आदि—

अगर कुमकुमा केसर हु पिया के रग झकझोरी ।
नाही अबीर गुलाल सषी री रग विना रग बाढो हो ॥ १ ॥
षेलत है विभचारी नारी आनन के सग होरी ।
आन सु षेल कौन फल पायौ इनकी मत बुध थोडी हो ॥ २ ॥
बद्रीनाथा द्वारका पहुकर तुरक मके कूं दोडा ।
घर में पिया तज बाहर ढुढै ए सब मत की बोरी हो ॥ ३ ॥
मै अपना पिया घर मै पावो सुर्त निर्त दोय जोडी ।
दोय अमिल मिलन भयौ उजाला मिट गई सकल अधेरी हो ॥ ४ ॥
पिया सु लाग रहे मोरे नैना नैना जीवन मेरी ।
कहै पानप आनद मे षेलूं मनसा अतर केरी हो ॥ ५ ॥ १ ॥

० ० ०

रामकली

रूप अरूपी राम हमारा रूप अरूपी राम ।
देह धरे जो राम कहावे तासू न हमरो काम ॥ टेक ॥
विनसन हार देह धर आयो साहिब केहि बिध कहिए ।
साहिब कूं दूजा कर जानें तो नरक कुड मे जईए ॥ १ ॥
षोजो षोज षोज तब पायो ब्याप रह्यो सर्व माहि ।
निपट निकट कोई हरजन जानै ताको सीस मुकाम ॥ २ ॥
देषत अकल कला सुं देष्या ताहि भजूं अष्टजाम ।
पाचौ का गुर पकड लिया तब मन पायौ विसराम ॥ ३ ॥
अतरजामी अतर देष्या उलटी दिष्ट समान ।
कहै पानप जब सुर्त बिचारी परस्यो निरमल धाम ॥ ४ ॥१४॥

अत—अब हम पथ भक्ति को पायो ।
सबै पथ मै बिसर गया गुर अगम को पथ बतायो ॥ टेक ॥
गोरष दत्त भरथरी गोपी पथ गह्या निरवावे ।
सोई गुर ताका मै चेला बहु मोहि पथ बतावै ॥ १ ॥
नारद पीपा और कबीरा काहा पथ नानक पहुंचा ।
मै मैला यहु सब जग मैला वै राम सुमर भय सूंचा ॥ २ ॥
अष्टावकर जलधर फक्कर कान्हा दास मुरारी ।
कौन पथ चलवै जाय पौहचै पथ कहीए अतभारी ॥ ३ ॥

भर भर दिष्ट अदेषं देषं अकल पुर्स परमोधं ।
परम पुरस सोई दरसन पावै निस दिन तन मन सोधौ ॥१४॥
सत अनत पहुच गए चरनौ पाया पद निरबाना ॥
कहै पानप सो गुरपथ बतावै वा घर मै मोहि जानां ॥ ५ ॥१५॥
:o: :o: :o:

राग कल्याण

भूला लोग भरम नही जानै मरम न जानै हो ।
भेद अभेद नाम उजियारा गुर बिना ना पहिचानै ॥ टेक ॥
हिंदु दौड देहरा धावे मुसलमान मसीता ।
दो के मधे धणी न सूझै आगे बडी मरम की भीत ॥
जासू भेटे परम पद पावं कुछ कर मिलनै की चिता ॥ २ ॥
काया महजद मै मन मुल्ला नमाज वजी कै बोध्या ।
हुा वर तषत साह आलम का होवै जम की तलब रसीदा ॥ ३ ॥
देह देहरा आतम देवा अहर्नी अह कर पूजा ।
तिन देव मिल जोती झलकै देवन दीषै दूजा ॥ ४ ॥
पांनप कहै सुनौ भाइ साधो षोज करो क्यौ न कोई ।
तन मन षोजै ब्रह्म परगासै परगट परचा होई ॥ ५ ॥२४॥

विषय—निर्गुण मतानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या २०५ड बाणी या सबदी, रचयिता—पानपदास, का० ज—दर्शी, पत्र—१३३, आकार—६$\frac{१}{१०}$ × ४$\frac{६}{१०}$ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२ परिमाण (अनुष्टुप)—१२६७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री शंभुप्रसाद जी बहुगुना, हिंदी अध्यापक, आई० टी० कालेज, लखनऊ ।

आदि—॥ ॐ राम जी सत ॥ लिषत बाबा पानपदास जी की बाणी सबदी ॥ १ ॥

हर घट मै गीता कहे तासू परचा नाहि ।
कहु "पानप" बिनु प्रभू के परचे ये सबै नरक कू जाय ॥ १ ॥
सत साष गीता कहे साह दो भरे कुरान ।
कहे पानप साषी षडे होय दरगे परवान ॥ २ ॥
या जग मै है बडा अधेरा साहद षडा पुकारै ।
कुरान कहे गीता कहे पानप ताकूं कोय न विचारै ॥ ३ ॥
विद्या नाम अराध की भई अविद्या दूर ।
आतम षोजै पानपा हर आठौ पहर हजूर ॥ ४॥
पढ पढ पढ पत्थर भया लिष लिष लिष भया ईट ।
अतर मै लागी नहीं नेक प्रेम की छीट ॥ ५ ॥
अछर एक विचारया नाही पुसतग पढे घनेरे ।
कहै पानप बिन प्रभू के भेटे ये पडे काल के घेरे ॥ ६ ॥
पढ गुनै क्या होत है पढे गुनै ससार ।
कहै पानप चाहै मुकत कूं तो हरदम नाम सिभार ॥ ७ ॥
गीता पढी तो क्या हूवा अछर नाहि विचारया ।
परम आतम दरसन सू उधरे पानप सो सत जोग वारा ॥ ८ ॥
भगत नही कुछ गावणा पढणा भगत नही ।
अंतर धुन मथ थिर कर पानप साचा भगत सोई ॥ ९ ॥
बिना विचार बबेक बिन पढै गुनै क्या होय ।
आतम तत चीन्हा नहीं पांनप नरक पड़त है सोय ॥१०॥

आतम तत कूँ षोज ले परगट सब के आगे ।
कहै पानप अलष दरस ताकूँ होई तनक सुरत जो लागै ॥११॥
:o: :o: :o:

अछर येक अतर पढ़ लिया ताका सब विसतार ।
पानप अंछर परष सुरत सूँ पढणा दिया विसार ॥ २८ ॥

॥ इति गीता को अग सपूर्ण ॥

अंत-- ॥ अथ पारसी का अग लिषत ॥

तुर्क नमाज अरु रोजे राख्या ओर मके चल जावै ।
कहै कुरान कुरा निदे मै पानप दिल का षोज न पावै ॥ १ ॥
जिन्हो दिल म दिल कू षोजा दिल मै रूह पिरोई ।
कहै पानप जहा जहा नजर पसारी तहा तहा अल्हे दीषै सोई ॥ २ ॥
कहो मुनाबी बात का क्या कीजै इतबार ।
कहै मुफसल षाय कै कहै पानप कहणा सार ॥ ३ ॥
बईमान याद से गाफिल फुरमाया नही करता है ।
रूह पकड़ कर दिल नहीं देष्या कहै 'पानप' दोजग भरता है ॥ ४ ॥
:o o :o.

नही जगत यो हराम का रान सर्व का सोय ।
हिदू तुर्क दोउ ये भले 'पानप' हरका कोई अन होवे ॥६७॥

सबदी

विषय--भक्ति और ज्ञानोपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल, लिपिकाल अविदित है । रचयिता का नाम पानपदास है । अन्य वृत्त दिया नही ।

संख्या २०५च शब्द (?) रचयिता--पानपदास, कागज--देशी, पत्र--६०, आकार--६ ५/१० × ५ ५/१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--१३, परिमाण (अनुष्टुप)--५८५, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री पं० शम्भुप्रसाद जी बहुगुना, एम० ए०, हिंदी अध्यापक, आई० टी० कालेज, लखनऊ ।

आदि--

हरकू भूला कर्म कमावे सो राकम है भाई ।
कहै 'पानप' हरनाम विसारया वेह राकस दोजग जाई ॥ १ ॥
जैसे नाम लिषै बसतरमें ऐसे नाम हिर्दै मे धारै ।
कहै पानप जो मनसा लागे तो निहचै भौ जल तारै ॥ २ ॥
मूरष नाम लिषै बसतर मै नाम हिरदै मै नाही ।
कहै पांनप ये गाफल मर्दै निहचै नरक समाई ॥ ३ ॥
सत मिलै तो मुक्त बतावै क्रियावत होय सो चित लावै ।
चित कूँ षोजै सुर्त समावै कहै पानप सोई मुक्ता होवै ॥ ४ ॥
बिन हरनाम बात सब थोथी जेती साधना साधे ।
कहै पानप योह साधन साची जो अकल पुरुस ले गगन अराधे ॥ ५ ॥
अकल पुरुस लै गगन अराध अलग माहि ठहराय ।
कहै पानप परतीत धर जम न सतावै ताहि ॥ ६ ॥
जब सूँ लग्या तभी सूँ परगट दिन दिन अधक तमासा ।
मनसा अगम बिलभी पानप चहू दिस मै उजियासा ॥ ७ ॥
चहूदिस मै उजियासा देष्या पाँचो घेर बसाया ।
गगन मडल मै पल येक ठहरै अनहद नाद सुनन मे आया ॥ ८ ॥

जोमर है जीवत जन कोई सो हर दरसन पावै ।
जीवतड़ा मन मनसा भटकै पांनप राम हाथ नहीं आवै ॥ ९ ॥
हर सुमर्न (? सुमरन) येक पल नहीं विसरै और हिरदै मै लौ लावै ।
कहै पानप मनसा सूँ सुमरै तब उधरन की गत पावै ॥१०॥
भक्त भुलाई भ्रम कूँ धाई क्यो न सहै जम त्रासा ।
पानप कहै पार ब्रह्म घट मै ताकी धरी न आसा ॥ ११ ॥

अंत—मरकट कैसी मूठ पकड जीवज के हाथ सिहाया ।
कहै पानप सतगुरु विना योंही जनम गवाया ॥४७४॥
दरसन सूँ आनद है और आनद क्यौंही नाहि ।
दरसन बिन आनद कहै पानप नेहचै नरक समाय ॥४७५॥
यौंही फकीरी जगत मे सोवणा और षाणा ।
अंत की बार कहै जन पानप जम के हाथ बिकाणा ॥४७६॥

विषय—चेतावनी और ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या ०२५छ सोरठे, रचयिता—पानपदास, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ ३/४ × ५ ५/८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—१४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री युत शंभुप्रसाद जी बहुगुना, हिंदी अध्यापक, आई० टी० कालेज, लखनऊ ।

आदि—अथ लिषत सोरठे ॥

मनकूँ अंतर ल्याव मोती हंसा षोज कै ।
ताकै मध समाव कहै "पानप" सबद हरजन लहै ॥ १ ॥
साची कहतं बात भावै कोई कुछ करौ ।
मोकूँ साच सुहात मिथ्यामोह न भावहीं ॥ २ ॥
ब्रह्म विष्णु महेस जगत माहि येई बड़े ।
वोह अगम चवथा देस पार ब्रह्म जाहां बसत है ॥ ३ ॥
सबं सयानफ त्याग होय अयाणा जगत सूँ ।
अकल सूँ षटदल बेध कहै "पानप" कारज भगत सूँ ॥ ४ ॥
सबकी गाठी लाल गाठ षोल देष्या नहीं ।
तासूँ फिरै कंगाल "पानप" माया आपणी बिसरया ॥ ५ ॥
ब्रह्मा विष्णु महेस ये नहीं जानै नानकूँ ।
"पानप" अगम चवथा देस कोई हरजन पहुँचे धामकूँ ॥ ६ ॥
कहै पानप काया येक सी हममै तुममै येक ।
हर दरसन परगट रहै मूरष सक्यौ न ताकूँ देष ॥ ७ ॥
सक्यौ न ताकूँ देष चौडे माही आतमा ।
अकल सूँ परवेस कहै "पानप" तोहि लगी धातमा ॥ ८ ॥
अंधा सब संसार आप आप षोजै नहीं ।
बह बह मरै गवार हर दरसन घट मैं रह्या ॥ ९ ॥
कहै "पानप" विन हरनाम भौ तिरन उपाव न दूसरा ।
अगम मै सुर्त बसाव मुष जिन भजै सोई तिरै ॥१०॥
जग को सयानफ त्याग आप अयाणा होय रौह ।
आप आपमै षोज परम तत्त कूँ तब लहै ॥११॥

॥ सोरठे समाप्तं ॥—पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—आत्म साक्षात्कार द्वारा ब्रह्म मे लीन होने का उपदेश ।

संख्या २०५ज होली, रचयिता—बाबा पानपदास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६८⁄१०×५५⁄१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—५२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री शंभुप्रसाद जी बहुगुना, हिंदी अध्यापक, आई० टी० कालेज, लखनऊ।

आदि—लिषत होली ॥

जग मै जीवना मन सुपनै जेहा जाण। जग मैं जीवणा ॥
भौजल माहि काल को फदा ना रहीये रुच मान ॥ टेक ॥
माता पिता सुत भवन भ्राता तिन्हे देष मन भूल बावरे।
जाहा सूं आया ताहा कूं जाना तू कर चलने का सूल ॥ १ ॥
यह ससार चेहर की बाजी बाजीगर ता माहि।
अतकाल वोहु होइ सहाई तू तासूं कर पहचान ॥ २ ॥
गुर का सब्द हिरदै धर राषो दुरमत डारं धोय।
योहु मन पकड अकल धर मारिये तौ बहुर न मरना होय ॥ ३ ॥
'पानप' सुपना योहु निज कर जाना साच गही लो धाइ।
अब मेरा मन निहचल हूवा बैठो गवन गजाय ॥

रग होरी हो रग होरी
जहां षेलै सत सदा होरी
ये गुन गाइ कियो रग गाढो षेलत है उची पौरी ॥ टेक ॥
आयो फाग वसत तुलानो चेतनता तन मै दौडी।
चाह भई पिया के सग षेलूं बूझत हू बतवै कोरी ॥ १ ॥
पाचौं का मन अत मधमाती स्वादो के सग भई बौरी।
सतगुर दियो बताय जतन येक पकड लई करती चोरी ॥ २ ॥
पाचौ मिली एक मत कीनो षेल षेल अनुठोरी।
बाजत ताल बिरदग झाझ डफ कर विन मानो घनघोरी ॥ ३ ॥
प्रेम रग प्रीतम पर छिडकू प्रीतम के रग हू रगी।
विन रसना अनराग उठावै प्रीतम की यह रीझ भई ॥ ४ ॥
दशवै द्वार षेल रचै हे हर हर हर माची रौरी।
'पानप' कूं येही चाव बडो है हमहू षेलें उहु ठौरी ॥ ५ ॥ २ ॥

अत—

जिसका तू बदा और तिसकूं नही याद करता,
दौड दौड और और भरमहो कूं धावै है ॥ १ ॥
साहब तो हजूर नही दूर घट मै व्याप रह्यो,
देषता है सही पै परतीति नही ल्यावै है ॥ २ ॥
देषता है कौन दिष्ट ज्ञान की सूं देषै कोई,
एकही अलेष जल थल पूरन सर्ब मही है ॥ ३ ॥
सेवै चितलाइ और चितवन मै बास करै,
यो ही भक्त साची दरबार हर के सही है ॥ ४ ॥
मुष सु कहै राम विसराम जीव पावै नही,
मन मनसा बहै तातै सब बात बही है ॥ ५ ॥
बूझ सतगुर सूं पावै मनसा गगन कूं चढावै,
हर हर जिभ्या बिन गावै सेन बिरले जन लही है ॥ ६ ॥
मानुष सा जन्म रतन पाइ कै गवाव मूढ,
पर्मरथो या सत ससारी समझाई है ॥ ७ ॥
त्रिकुटी सज्म अधर छाजा जाहा बाजै अनहद बाजा,
हर आपही बिराजै जग जाणता नहीं है ॥ ८ ॥

देषता है येक और दूसरा न कोई यार,
संतो ने बिचार कै योहु साची बात कही है ॥ ६ ॥
कहै पानपदास कोई साधु मन फेर पावै, बासना बसाव
भौदू विस्मभर (? विश्वभर) तो योही है ॥१०॥

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन।

संख्या २०६ अंक कौतूहल (संक्षेप लीलावती), रचयिता—पीतमदास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६॥ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप)—१८७, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८८ वि०, प्राप्ति-स्थान—श्री पं० महादेवप्रशाद जी मिश्र, ग्राम—मिसिरवलिया, डाक—रुद्रनगर, जिला—बस्ती।

आदि—

....नो अढ़ाई सोइ।
सुधो जानि हिसाव यह मनके रुपया होइ ।१५

मनतें छटाक के दाम

जे रुपिया मन वस्तु दरि आकत ई धरिलेउ।
चालीस भजि आना सोई कहि छटाक देउ ।१६
अथ वस्तु वहुत दरि सेरनि की जेसे रुपये की ७ सेर।

दोहा

मनके सेर लगाइ धनु दरि भजु रुपिया सोइ।
दरि भागै चालीस गुने तौहू रुपये होइ ।१७
दरिते सव रुपये गुनौ मन करि देउ वताइ।
चालीस तें रुपये भजौ दरिते मन गुनि गाइ ।१८

अथ रातिव हिशाव

अश्व गजादिक जीव जे जाको राति वदेत।
शाल भरे को होइ जो ताको जानो हेत ।१९
एक दिवस के सेर जौ नौ गुन मन सो शाल।
दिन आने नोगुन गुने ढाई रुपये माल ।२०
दरि तोले की होइ जो गुनि रत्तिन करि सोइ।
भाग छानवे को लियो देउ दाम जो होइ ।२१

अंत—इच्छा थोरी होइ फल पावै जह अधिकता।
व्यस्त त्रिराशिक सोइ दूजी विधि यह जानिये।

दोहा

अपनी इच्छा होइ जो ताकी जाति जो होइ।
तहिलै गुनिये और पै इच्छा भाजक सोइ ।४२
लब्ध अंक फल मानिए सो सवसो कहि देउ।
व्यस्त त्रिराशिक भांति है समुझि चित्त मे लेउ ।४३
'लीलावति' सक्षेप यह अंक कुतूहल नाम।
गुरु व्यौहार जु काज नित क्रय विक्रय के काम ।१४४
संवत वसु वसु वसु शशी कातिक तृतीया सेत।
'पीतम' विरच्यौ पीत सो 'वैजनाथ' के हेत ।१४५

इति श्री संक्षेप लीलावती अंक कुतूहल गुरु व्यौहार पीतमदास कृत समाप्तं।

विषय—अंक कुतूहल। गणित (गुरु) विषय वर्णन।

रचनाकाल

संवत वसु वसु वसु शशी कातिक तृतीया सेत ।
पीतम विरच्यौ पीत सो वंजनाथ के हेत ।१४५

संख्या २०७ रामककहरा, रचयिता--पीताबर, कागज--देशी, पत्न--४, आकार--८$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{2}{10}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप)--५५, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि, नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री बिहारी पडित, स्थान व डाक०-सहजोरा, जिला-रायबरेली ।

आदि--ॐ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

वरनौ वदन विचित्र अतिवदि गौरि गौरीश ।
गुरु गणपति शिवराम रवि "पीतावर" के ईश ॥

॥ सोरठा ॥

कर अक्षर सो प्रीति अक्षर ब्रह्म समान सो ।
हरदम जप ईश प्रीति वरन मिलावत ब्रह्म कह ॥
करताराम सत्य जिय जानी । हे मन भजु प्रतीत द्रढ मानी ॥
खजरिराम सबही की लेही । करनी बूझि तही तस देही ॥
गर्ववास जेइ दीन्ह अहारा । तेहि रामहि भजु करि येतवारा ॥
घर वनहु सोइ भगवाना । अस विचारि हरि भजहु सुजाना ॥

अत-- ॥ छद ॥

एकराम अखड मडल व्याप्तेन चराचर ।
गुणरहित गुण गण निर्विकार निरीह गोचर गोपद ।
अचित अज अद्वैत लोक अनेकपति धरनीधर ।
सो एक राम अनतपथ जपतगत निरतर ॥
केहि विधि पिताबर मदमति सो राम की महिमा कहै ।
जो अपर को भग विधि मरीखे सुभ सहसानन लहै ।
प्रतिमुखहि जिव्हा सहस शारद बैठि बानी गावई ।
दिन प्रति निरतर राम महिमा कहत पार न पावई ॥

॥ दोहा ॥

जलसीकर अरु जलधि लष धूरियेक विस्तार ।
यहि लवराम रमे रहै वरनि सकै को पार ॥
राम ककहरा भगति रस शुनि समुझै नर कोइ ।
सुलभ होइ जो भेद यह आवागमन न होइ ।

इति श्री राम ककहरा समाप्तम् ॥ शुभ ॥

विषय--'क' से 'ह' तक के प्रत्येक अक्षर पर चौपाइयाँ रचकर राम गुणगान किया गया है ।

संख्या २०८ स्वप्न विचार, रचयिता--पिताबर राय, कागज--देशी, पत्न--१२, आकार--८ × २ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--३, परिमाण (अनुष्टुप)--६३, खडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागर, लिपिकाल--स० १८२६ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री प० ओकार नाथ जी पाडेय, ग्राम व डाक०-हैसर बाजार, जिला-बस्ती ।

आदि--

.........लखै स्वप्न दरस रघुनाथ ।
वरष एक मो फल मिलै सुनो सत्य 'रघुनाथ' ॥ ५ ॥

दुतिजा मैं सप्ना लखै अष्ट मास फल होय ।
तृतिजा मे जो देषई तीनि मास मो सोय ॥ ६ ॥
चौथ मास सपना लषै अर्द्ध मास फल पाय ।
अरूनोदं जो देषई तुरित होय रघुराय ॥ ७
ईष्ट स्वप्न जो देषवी गुप्त करव वह बात ।
अति मगल तेहि पुरुष कह देव दान उठि प्रात । ८
गऊ वृषभ हस्ती तुरग सैन अटारी देष ।
नौका रोहन लाभ फल सपना कहब विसेष । ९
भोजन वीना ग्रहन पुनि करुना लाभ बखानि ।
एही भांति औरो सुनो दीनबंधु गुन खानि ।१०
परै कीट निज अग मो जग मग कछु होय ।
भूषन विष्टा लिप्त तन अगम गम्य सुभ सोय ।११
राजा हय हस्ती लषै कवन रत सुधारि ।
ताको कुटुम बढै सदा सपना कहव विचारि ।१२
दक्षिन भुज पर सेत अहि डंसै केहू विधि आय ।
यह सप्ना फल धन मिलै कहै "पितमर राय' ।

अंत---सूज चंद मडल गिरन मक्ष सधु जायत नात ।
निर्त गीत बाजादि पुनि इसव सूचक वात ।५१
मल अरु मूत्र रहित रहे देषै स्वप्न सुभाय ।
समय पाय सुभ असुभ सब होत चराचर राय ।५२
असुभ स्वप्न जो देषवी तुरित न्हान कहु जाव ।
रक्त सार अस्नेह युत आहुति करव वितावं ।५३
पूजि परम प्रिय भूसुरहि एक सत अष्टम बार ।
जप जपाइव विप्र मन गाइत्री सचार ।५४
सुनि सकर मुष वचन तव विहसे सारगपानि ।
सिथिल गात भे मगन मन बारवार बषानि ।५५

इति भादो शुक्ल सप्तम्या समत १८२६ ।

विषय---स्वप्न विचार विषय वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य---ग्रथ आदि मे (एक पत्र) खंडित है । कुल बारह पत्रे उपलब्ध है ।

सख्या २०६ रघुराज विनोद रचयिता--पुरंदर कवि, (स्थान-जयपुर), कागज---देशी, पत्र---३६, आकार---६॥। × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)---२५, परिमाण (अनुष्टुप)-१३५०, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, रचनाकाल---स० १६८१ वि०, मुद्रणकाल---सन् १८६६ ई०, प्राप्तिस्थान--श्री प० पुरुषोत्तम उपाध्याय, ग्राम-शेखपुरा, डाक०-तेजीबाजार, जिला-जौनपुर ।

आदि---श्री गणेशाय नम अथ रघुराज विनोद कवि पुरन्दरकृत छप्पै

जय वितुंड मुख तुंड चंड गहि विघन विकर्मन ।
जय अबुद्ध नर बुद्ध करन जय वर वर्न वर्सन ।
जय दरिद्र दल दाह दीह जय दनुज निकन्दन ।
जय महेश विधु विष्णु इन्द्र आदिक सुखवन्दन ।
जय अशेष सशय समन एकदंत चव द्वरन ।
जय जयन्ति गिरिजा सुवन आठ सिद्धि नव निधि करन ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

जय जय देवी सरस्वती जय जय गौरि गिरीश ।
जय रघुपति यदुपति जयति जय रवि जयति हरीश । २ ।

जाको ध्यावत रैन दिन मानुष देव अदेव ।
ता श्री हरि को ध्यान धरि कहत चित्र के भेव । ३ ।

। चौदह वन्ध चित्रम सोरठा ।

महाधीर रघुवीर मरयादा सुठि शील के ।
मरकत श्याम शरीर मनसा पुजवत जनन की । ४ ।

त्रिपदी चतुः पदी अश्वगति कपाट बधचित्र

अंत—

जनके बीच रामसुत रहै । कहनी वेस पुरवर कहै ।
जिसके वुधि को है लवलेश । सोई जानैं इसको देश । लव ।

० :० ०

वाधवपति रघुराज दिय रहट नाम ढडग्राम ।
धडीमाल सो लसत है रैयत सुखी तमाम ।

विक्रम के उनविश तीन मे वघेल भूप विश्वनाथ काज लागि आये जयपुर को ।
साल दस के मैं राम सादी कियो रीमा जाय आप फिरि मान्यो हमे जैसे निज गुरु को ।
जोधपुर उदयपुर आदि सब नृपनते मान को कराय राख्यो मित्र करिअ को ।
ग्राम धन दाम विसराम त्यो अराम दै कै सैहि मकै साल आप राज लियो सुरको । ६ ।

·० ०: ०:

चित्र किये रघुराज हित सिरवन अनेक प्रकार ।
हनुमत हरि अष्टक कियो निज हित पर उपकार । ८
शुरू भयो वनईस मैं वाधो पतिहित मोद ।
पूरण जयपुर मे भयो यह रघुराज विनोद । ६
पूरण पूर्निमा मैं भयो चैत्र चद्र शुभवार ।
वनइस स इकतालिसे विक्रम साल विचार ।१२
सबही रस के कवित हे चित्र आदि लिखि दीन ।
रामनरेश विनोदहित अन्त पहेली कीन्ह ।१३

:० ० ०

बाधव जयपुर जोधपुर भूपन के यश छद ।
चित्रदेव रति और बहु किये पहेली बद ।१८
कविता करिवो कठिन है चूकि जात सब कवि ।
ताहि सुधारत सुजन है हँस तजिहैं सब अम्बि ।१६।।

। इति ।

विषय—जयपुर जोधपुर नरेश के यश छद तथा चित्र (देवगति) एव पहेली आदि का वर्णन ।

रचनाकाल

पूरण पूर्निमा मैं भयो चैत्र चद्र शुभवार ।
वनइस सै इकतालिसे विक्रम साल विचार ।। २

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ म पहेलियाँ और चित्रवध आदि का भी समावेश है ।

सख्या २१० रसिक रमायन, रचयिता—पुरुषोत्तम, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—$९\frac{४}{१०}$ × $८\frac{१}{१०}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, खडित, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० श्रीराम जी वैद्य, ग्राम—खजुरि, डाक०—गौरीगज, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—

. . . .

......ये । वसी सर्वथा होइ । शांकीनी नाम बाधिया ॥

इति श्री पुरुषोत्तम विरचितायां वसीकरन सहोता मोहनांनि समाप्तम् ॥

सुवरसन औषधी के जरी पान से षाइ तौ महा अस्थभन होइ ॥ सा कल्मष सो सुक्र मो मोचन होइ ॥ सेत सरिसौ के जरी पात फूल तीनि उत बीज कन्या के कातल सूत्र मा गाडा वनाइ जावत गाडे रहइ तावत अस्थभन होइ ॥

:o :o o·

आवं के आठि त्रिफला भ्रिंगराज के मूल के रस लेइय एक जरी कादव लोह चूरन चवरा सहित सिलाघसि पाकवार धूम होइ ॥

इति श्री पुरोषतम विरचिताया रसिक रसायन लोमस तन समाप्त ॥

अथ पुरषोतम विरचिताया रशिक रशायन चतुर्दश विद्या समाप्तः ॥

अंत—पहिले राष पिसाइ छानि कर रस निचोडवि कीजै तीनि वस्तु मिलाई इकातर कपरा को रग दीजै वरठइवौ मेह मे कोई वार नीर नहि भोजै ॥ अन्योभेद ॥ वस्तु दिमोना आवै ॥ गुगुल लेइ वसलोचन को पीपर को पानी करि ॥

.o: .o. ·o·

—खंडित

विषय—मोहन, उच्चाटन मंत्र सिद्ध करने तथा अन्य औषधियों का वर्णन ।

सख्या २११ जैमिनी पुराण (अश्वमेध) रचयिता—पुरुषोत्तम 'दास', निवासस्थान—दादर ग्राम, कागज—देशी, पत्र—१६२, आकार—१३ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—४००६, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६५८ वि०, लिपिकाल—सं० १८६५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० महादेवप्रसाद जी मिश्र शास्त्री, ग्राम-मिसरौलिया, डाक०—रुद्रनगर, जिला—बस्ती ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ जैमिनि पुरान ॥

प्रथमहि प्रनवौ पुरुष पुराना । आदि अंत हम प्रभु अवसाना ।
निर्गुन सगुन जानि नहि जाई । रूप स्वरूप म रहे समाई ।

o o :o:

वंदौ चरन कमल चित धरहू । कछु प्रसाद प्रभु हम कह करहू ।
वेद सहस मुक करहि प्रमाना । अचल अमूरत प्रेम निधाना ।
आदि अनादि अचित असूझा । जा कह कृपा भई तेहि बूझा ।

:o o· :o.

दोहा

नमित विप्र पुरसोतमा कहि दासन्ह के दास ।
तुव प्रसाद कछु पावो करौ कथा परकास । १

.o. :o· .o.

ब्रह्म रुद्र अरु गनपति जग जननीजस लेहु ।
पुरसोतम हरि सेवक बुधि प्रकास कछु देहु ।

जवु दीप भारत कर खडा । कनउज कर पाती परचडा ।
सप्त पुरी मह उत्तम थाना । कौसलेस सवही कोउ जाना ।
रामपुरी सरजू के तीरा । नाम अयोध्या निर्मल नीरा ।
सरग द्वार पाप कर नासन । जहवा रामचद्र कर आसन ।
तेहिते दक्षिन जोजन चारी । आदि गोमती कलि विषहारी ।
सुर नर मुनि सब दरसन करई । कोटि जन्म कर पातक हरई ।

नारायन पुर नगर सुदेना । तहा वास वस वडउ नरेसा ।
कुरुदेव ब्रह्मादि समाना । उन सरवरि कोउ राउ न राना ।
तहवा नगर बसं एक 'दादर' । जहवा जती सती कर आदर ॥
राजा रूपमाल तह रहई । वस सुवास पडित तह अहई ।
चतुर दिसा जाकर जस वाजा । दाता रूपमाल तह राजा ।

ंस वस अति निर्मल रूपमाल तेहि नाम ।
राम भगत पुरसोतम वसहि ते 'दादर' ग्राम ।

गुरु रघुनाथ के चरन मनाए । जेन्ह व्याकरन नीकछौ पढाए ।
भल कै वेद पुरान विचारा । राम नाम विनु नहि निस्तारा ।
पुनि जो पिता का अग्य सुलीन्हा । पुरुषोत्तम दास द्वारका वीन्हा ।

सम्वत सोरह स अट्ठावन । निर्मल चैत्र मास कर आवन ।
सुक्ल पक्ष प्रतिपदा सुहावा । श्री गोविंदकर कथा सुनावा ।
उत्तम देत चद्रकर वारा । मेषक सूय वसन्त प्रचारा ।
हरि प्रसाद पुरसोत्तम दासा । अस्वमेध कर कीन्ह प्रकासा ।

दोहा

अक्षर होइ असगत तत प्रभु तोहि सब लाज ।
पुरसोत्तम विनती करत हारि विनु को मोहि साज ।

अत—कहै विप्र पुरसोतम रिषि के राम अधार ।
हरि तजि आनन्द भवे राम नाम पुकार ।१५४

यहि विधि अस्वमेध भ तहिया । मो मै सब विस्तर सो कहिया ।
नीके यज्ञ कीन्ह प्रतिपाला । विछुरतहहि अब दीनदयाला ।
नृप जदुपति सो बात जनावहि । विदा देहु हम घरहि सिधावहि ।
इद्रदेव तुम जाहु तुरता । अब सब देव लोक सब सता ।
राजा चले देस परिवारा । चलि सभ इद्री महर भडारा ।
अपने अपने देसन गयऊ । मुनि रिषी तब सगहि हरि लयऊ ।
वनसपती जे चलि वन माहा । आपन आपन आश्रम जहां ।

गुप्त गोदावरि दडक रन्या । कथा सुनहिते मानुष धन्या ।
भूंखे आतम करि सनमाना । धन्य सत जे कथा वषाना ।

दोहा

पुरुसोत्तमजन भिक्षुक दाता श्री भगवान ।
यह ससार पालता दान देह कल्यान ।१५५

इति श्री महाभारते अश्वमेधे के पार्वने जज्ञ सपूरनो नाम छवनोऽध्याय ॥ इति जैमिनि पुराण भाषा सपूर्ण ॥ सवत् १८६५ ॥

विषय—महाभारत (अश्वमेध खड) का हिंदी पद्यानुवाद । जैमिनि पुराण विषय वर्णन ।

रचनाकाल

सम्वत् सोरह से अट्ठावन । निर्मल चैत्र मास कर आवन ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ पूर्ण है। ५६ खंडो में ग्रंथ की पूर्ति की गई है।

संख्या २१२ दोहा, रचयिता--पुरुषोत्तमदास, कागज--आधुनिक, पत्र--३, आकार--८३/४ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--२०, परिमाण (अनुष्टुप)--१६, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १६५०, प्राप्तिस्थान--महंत श्री गुरुप्रसाद दास जी, स्थान व डाक०--बछरावाँ, जिला--रायबरेली।

आदि--ग्रंथ लिख्यते दोहा पुरसोतमदास कृत ॥

का काम की आस तजि सदा रहै निहकाम।
पुरसोतम हरिनाम जपि पाए अबिचल धाम ॥ १ ॥
खा खरदूखन से गए दसमुख औ शिशुपाल।
पुरसोतम तू क्यो बचै सब जग खायौ काल ॥ २ ॥
गा गुर कीजे वेगिही लीजे सो उपदेस।
पुरसोतम जेहि नित जपत गिरजा सहित महेस ॥ ३ ॥
घा घायल सतगुर किए मारो नाम की चोट।
पुरसोतम सूरासोई छूट शरम का कोट ॥ ४ ॥
ना नारद सनकादि शिव सबको यह मतसार।
राम नाम सुमिरन करत पुरसोतम भे पार ॥ ५ ॥

अंत--सब तीरथ फल होत है गुर चरनोदक लेत।
पुरसोतम गुर दडवात अर्वनि अटनि फल देत ॥३६॥
मरनो है जाउर नही जीवत मर न कोइ।
पुरसोतम जीवत मरै मारवो फेरि न होइ ॥३७॥
हीरा है हरिनाम को जान् काण को मोल।
सूरनि सो सुमिरन करो पुरसोतम मति बोल ॥३८॥

इति दोहा पुरसोतमदास कृत सम्पूरनम् ॥

विषय--ज्ञानोपदेश वर्णन।

संख्या २१३ नादोदधि रचयिता--पूरनमिश्र, कागज--देशी, पत्र--१२, आकार--१३॥ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--६, परिमाण (अनुष्टुप)--३२८, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १७७० वि०, लिपिकाल--सं० १६०१ वि०, प्राप्ति-स्थान--श्री प० चक्रपाल जी त्रिपाठी, ग्राम--राजापारा, डाक०--लालगंज, जिला--प्रतापगढ़।

आदि--श्री गणेशाय नमः

जे शुभ मगल दायनी वागेश्वरी प्रवीन।
वीना पुस्तक धारिनी राग रंग लव लीन। १
भैरव पुनि हिंडोल लै मेघ बहुरि श्री राग।
दीपक कौशिक रागए गावै सुमति विभाग। २
सर्व रागिनी राग को माला सरस सोहाय।
कठ करै जो प्रेम सो दिन दिन दुति अधिकाय। ३

छप्पै

भैरवी को तिया प्रथम भैरवी वषानो।
पुनि विभाकरी होइ त्रितिय गूजरी सो जानो।
होइ चौथ गुनकरी पाच बिलावली राजै।
एन पावहुके पुत्र कहै जेहि सुनि दुष भाजै।
पुनि पुत्रनिहू की तिय कहो होइ एकते एक सरिस।
एहि विधि वरनो राग सब सरस्वती मति निज वरिस। ४

कहौ भैरवी पुत्र देव गंगाधर उजागर ।
पुनि विभाकरी सुत विभास अतिही गुन आगर ।
पुत्र गूजरी सुनहु बहुरि देशाष सुमति अति ।
प्रगट पुत्र गुन करी केर गधार धर्म्म सति ।
पुनि बेलावली सपूत सुत बेलावल जानै जगत ।
जाके गान सुजान मुनि मुनि मति निज रतिय गति । ५

अत—अहि वानी जो गाइए सोइ झुमरा होइ ।
सदा चारिपद जानिए 'पूरन' वरनै सोइ ।
गान भेद के अग जेते सव कहो पाइ प्रसग ।
जाहिराग को गानहै ताहि राग को भेद ।
सो रागाग कहाइए 'पूरन' कियो निवेद ।

इति अष्टादशभेद साहद नाहद सपूरन

अथ विहद नाद यथा दोहा

जह लो सुनिये श्रवन धुनि विनु मुष भाति अनेक नाद विजित होइ ।
नाद ब्रह्मन लीन जो कृति कहियत है सोइ ।

अथकृत दोहा

जोग यज्ञ जप तप विना मिलै ताहि लवलाइ ।
साधा सघ सरूप जो परम जोति मनलाइ ।

इति अनहद नाद

दत्त हेतु यह सत विचारी । कीन्हो नादोदधि हितकारी ।
परम सुमति सिष्य सुजान । जाचत भेद नाद को ज्ञान ।
पूछ्यो तिन्ह म तासो कहा । वाइस भेद सर्व तिन लहा ।।
सत्रह से सत्तरि परिमाना । सम्वत पूस मास शुभ जाना ।
जन्म याहिको जानवि सोई । तिथि सत्तिमी वार सुभ होई ।

इति श्री पूरण मिश्र विरचिताया नादोदधि सपूर्ण सुभमस्तु सम्वत १६०१ वैशाख ।

विषय—'नाद भेद वर्णन ।

रचनाकाल

सत्रह सै सत्तरि परिमाना । सम्वत पूस मास शुभ जाना ।

सख्या २१४क कवित्त (?), रचयिता—प्रयागदत्त (तीर्थराज), ग्राम—बाहाअोत (बस्ती), कागज—देशी, पत्र—५०, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण, (अनुष्टुप)—१८८, खडित, रूप—प्राचीन (जीर्ण-शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० जगदेव जी पाडेय, ग्राम-पुर वेद, डाक०-अमाढ, जिला-बस्ती ।

आदि—आसिरवाद छद घनाक्षरी

ध्रुवन चलहि जव लगि तारे नभ सग मेरु न चलहि जव लगि भूमि पावते ।
धाराधर जव लगि चलै न धरा को छोडि जव लगि रविचद चलै नाहि ठावते ।
'प्राग दत्त' जव लगि मेघ रहि नभ जल जव लगि पतिव्र डरै नाहि चावते ।
तव लगि जदुनाथ सिह चिरजीव रहो जव लगि अघ निचलहि हरि नावते । १

अथ वीर रश वरननम

वषतर पहिरत फाटि चद्रभाल अग जोर जग जीतिवे को लालो लहरै लगै ।
भुजा अत्र गाहिवो को फरकि फरकि उठै जदुनाथ सिह के कृपान लहरै लगै ।
'प्राग दत्त' भारी भीर सग हाल वदन के दल के उमड धराधर कहरै लगै ।
चिघरो वराह भै भभर दिगपालनन के उगिलै फेनाली जीभि झरै जहरै लगै । २

अथ दानवीर वरननम

अमित दै पन्ना पोषराज गज गौहर दै हीरन को कोश दै करोरि मुकुतान को ।
नीलमनि मानिक गौमेदक हजार दीने हेम के अभूषन दै लाल जड़ितान को ।
'प्रागदत्त' भया जदुनाथ कोह क्यो न दान वारात सकल जश देव शरितान को ।
हाथिन के हल के तुरंग रग रगन के पालकी चढाय विदा दिज देवतान को ।

अंत--

उमडि घुमडि नभ गरजि गरजि रहे कारे कारे वदरान दस दिसि ताय ले ।
कुहू लै अध्यारी कारी संग वेन सूझत है सोरहो सिगार भीजि हमैं को वचाय ले ।
'प्राग दत्त' वहि वयसि थेरि हम किशोरी कुज गयन फिराय हमहू को सग लाय ले ।
उर सो भरीहौ सुनि वीनती अहीर वारे चूँदरी न भीजै आधी कामरी ओढाय ले ।

अरुन उदोत लाली पकज को कोश वेश,
देखे पर लागै ना वरोवरी प्रवाल है ।
आवदित होत है गुलावन के दल देखे
मद करि डारे नव पद्दलव रसाल है ।
'प्रागदत्त' कहत नषाली की वनक मोहै
मेहदी के वुद रचि राखे लाल लाल है ।
ललित हथेरी शुभ चिन्ह दरशात मानो
इद वधू वृद फने रेशम के जाल है ।

विषय--वीर तथा शृगार रस की स्फुट कविताएँ ।

सख्या २१४ख सरजू शतक, रचयिता--प्रयागदत्त, निवासस्थान--बाहाजोत (बस्ती), कागज--देशी, पत्र--१, आकार--९ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--९, परिमाण (अनुष्टुप)--७, अपूर्ण (खडित), रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री प० जगदेव पाडेय, ग्राम-पूरे वेद, डाक०-अमोढा, जिला-बस्ती ।

आदि--

. . . . . . वात सोसै ।
विनती वहुतेरी प्रयाग किए हम तांकि नहो कोऊ देत असीसै ।
निकलक भए कवहू न कहू दुष दुद सहे वहुते दिन ही सै ।
शरजू पग पाहि गिनै न कछू जिन पाप औ पुन्य दोऊ सम दीसै ।३७

सिद्धि श्री त्रिपाठी पयागदत्त कृते शृ गार रश वरननो शरजू शतक ग्रथो त्रितीए तरंग ।

मध्य--

शरजू असनान को महातम

।। कवित्त ।।

कलि की अवाई जानि भारी टरवार लागै झनझुन एक वारगी हलै लगै ।
वडे काटे कीरा उतिराने मारु पछिन के विकल छुधा सो होत मज्जा निगलै लगै ।
'प्रागदत्त' कहि वाके वस कोऊ औध आयै शरजू नहाय पाप पुजन दलै लगै ।
नर्क कुड . . . .

--आद्योपांत उद्धृत

विषय--सरयू वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रथ का केवल एक पत्र ही उपलब्ध है ।

संख्या २१५ सार सग्रह, रचयिता--प्रवीन कवि, कागज--आधुनिक (पीला), पत्र--१६, आकार--१३ × ८६/१० इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--२७, परिमाण (अनुष्टुप)--

७०५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६४४ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्णविहारी मिश्र, ब्रजराज पुस्तकालय, गधौली, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नम. अथ सार सग्रह लिख्यते कवित्त ॥

राजन के राज महाराज श्री गोशाई हरिवश को जो वश सो प्रसस जग गायो है ।
तिनही मैं परम उदार महाराज सिरी चतुर शिरोमनि जू सुष सरसायो है ।
जा सुत सुघर वर लाला श्री अनद लाल तिनही को हुकुम जरूर जब पायो है ।
देषे सुने कवि कविताई जिनकी सकल सुकवि प्रवीन सार सग्रह बनायो है ॥ १ ॥
सीलता सत्य सबीलता साहस सुदरता सुघराई निकेत है ।
ओज उदारता माधुरता अति धीरज धर्म सुजान सहेत है ।
राधिका वल्लभ लाल सो प्रीति अनीति को त्यागी सुनीति ही लेत है ।
ऐसे प्रवीन गुनीन के गाहक आनद लाल सदा सुष देत है ॥ २ ॥

प्रवीन कवि के कवित्त

मद मद चलनि अनद की करनहारी काले केश केली ते हियेन को हरत है ।
तारे तेरे विमल विशाल कजरारे नैन बैन मद मधुर पहुप से झरत है ।
अमल दशन कलहसनि प्रवीन कवि अरुन कपोल शोभा अधर धरत है ।
तेरे अग अंग अनुकरन मयक मुषी मेरे मन मोहन को मन पकरत है ॥ ३ ॥

अत—इस इश्क के दरियाव मे जो गोता खाता है ।
है मरजी वा आय होती है जब मोती लाता है ।
आवाज सुनके जगल से आता है ।
सहता तीरकारी तब मागा जाता है ।
परवीन पुरुष मारिस्ता पर लुभाता है ।
जरता है तन वदन से जब प्यार पाता है ।
वीरे का पात दुरदी जर्दो दिखाता है ।
वह चूर चूर होने से तौ रग लाता है ।
खुश हुस्न के चमन में जो कोई जाता है ।
पुरजेर गुल खिल खिलाता है ।
देख अजव गजब सा नैनो का नाता है ।
रसराम आशिको का दिलदार दाता है ॥८२॥

इति श्री सुकवि प्रवीन कृत सार सग्रह ग्रथ समप्त शुभ मस्तु श्री सम्वत् १६४४ ॥ भाद्रपद २४ भौम लिखत इद पुस्तक परार्थ ॥ श्री रामाय नम ॥

विषय—शृगार विषयक निम्नलिखित कवियो के कवित्तो का सग्रह—

१ प्रवीन कवि, २ हरिनाम ३ जलालदी ४ प्रवीन राउ पातुर ५ वृजचद कवि ६ सेनापति ७ मडन ८ आलम ९ देवन कवि १० मैन कवि, ११ परवत कवि, १२ कविलाल, १३ महा कवि, १४ महाराज कवि, १५ ईश कवि १६ मधुसूदन कवि, १७ बेनी कवि, १८ छैल, १९ तुलसी २० मतिराम २१. नदलाल कवि, २२ भगवान कवि, २३ भीषम कवि, २४ बोध कवि, २५ सेनापति कवि २६ मनभव कवि, २७ मनोहर कवि, २८ चद कवि २९ दामोदर कवि, ३० अनत कवि, ३१ व्यास जी कवि, ३२ केशव पुत्र वधू, ३३ पेम कवि, ३४ कबीर, ३५ कमाल, ३६ बलिराम कवि, ३७. सिरोमनि, ३८ अहमद, ३९ नेवाज, ४० देवाल, ४१ हरिकेशव कवि, ४२ बलभद्र कवि, ४३ चितामणि, ४४ जगजीवन कवि, ४५ ससिसेखर, ४६ मकरद, ४७ पूरन कवि, ४८ दत्त कवि, ४९ आनदघन, ५० सुजान कवि, ५१ सोमनाथ ५२ सपि सुष कवि ५३ भूषन कवि, ५४ एदिल कवि, ५५ श्रीधर कवि, ५६ गग, ५७ ब्रह्म, ५८ जदुनाथ, ५९ शेख, ६० मोहनलाल, ६१ करुनानिधि, ६२ लक्षन कवि, ६३ श्रीपति, ६४ जगदीश

६५ मुकुंद कवि, ६६ हुसेन कवि, ६७ जैन दी, ६८ पुरो, ६९ गोविंद, ७० सूरदास, ७१ नदन, ७२ महीराम, ७३ दूलह, ७४ बिहारी, ७५ कल्यान, ७६ दिनेश, ७७ व्रजजीवन, ७८ नागर, ७९ सोभा कवि, ८० निधान, ८१ कविंद, ८२. प्रह्लाद कवि, ८३ जसवंत, ८४, पृथ्वीराज, ८५ वल्लभ रसिक, ८६ भोरे कवि, ८७ जगनदेव, ८८. दयादेव, ८९ अमरेश, ९० निपट कवि, ९१ ईश्वर, ९२ मनसुख, ९३ जोइसी, ९४ रामनरायन, ९५ सदानंद, ९६ मिश्र कवि, ९७ सकलकवि, ९८ नाथ, ९९ जैदेव, १०० रहीम, १०१ हरिजू, १०२ धर्म्मी कवि, १०३ वर्णधर, १०४ सेवक, १०५ केसोदास, १०६ देवीदास, १०७ गिरधर, १०८ अग्रदास, १०९ तत्ववेता, ११० सुंदर, १११ मतिराम ११२ पतीराम ११३ नेवलराम ११४ अभिराम ११५ अमृत कवि, ११६ किसोर, ११७ व्रजराज, ११८ मुरलीधर, ११९ ग्वाल, १२० दुखराम कवि, १२१ दयाराम, १२२ कुलपति, १२३ कान्ह कवि, १२४ ध्रुवदास, १२५ घनस्याम, १२६ मान कवि, १२७ हरिजन, १२८ कृष्ण कवि, १२९ धनराय, १३० शिव, १३१ वृंद, १३२ शुभ, १३३ मुरति, १३४ वीर, १३५ रसखान १३६ हरिनाथ, १३७ टोडर, १३८ सिद्ध, १३९ नंददास १४० बलि जू १४१ नरहरि, १४२ भूधर कवि, १४३ रूपराम १४४ परमेस १४५ बिसंभर १४६ ताज, १४७ देव, १४८ राम कवि १४९ उदय राय, १५० ऊधौ १५१ रस रासि ।

संख्या २१६क जानकी विजय, रचयिता—प्रसिद्ध, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—९$\frac{४}{८}$ × ६$\frac{४}{८}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—१८०, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९८ वि०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर, अचल सिंह जी, ग्राम—खजुरा, डाक०—बछरावा, ब्राच खजुरो, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नम·

॥ दोहा ॥

चरित राम सत कोटि किये विविध मुनिन विस्तार ।
अद्भुत चरित विचित्रवहु गुप्त प्रगट समार॥ १॥
भरद्वाज मुनि सन कहा बालमीक इतिहास ।
नाम विचित्र रामायन विजय जानुकी जासु॥ २॥

छंद

जै जति जै जगदंबिका जननी अखिल जग जान की ।
अति अमित जासु प्रभाव पावन गम्य नहि गति ग्यान की॥
गुन नीति पांचौ तत्व मय भव निर्गुन सगुन रूप शो ।
परशिद्धि त्रिभुवन विभव भूषित अमित सति सरूप शो॥

सोरठा

परत परम भव कूप शुरमिनि अहमित जोग जे ।
चिदानंद मय रूप ज्व लगि जानन जानुकी ।

अंत— ॥ दोहा ॥

उग्र सरूप स्व त्यागि तव सौम्य शुभग तनधारि ।
राम वाम दिसि वास लिष बहुरि विदेह कुमारि॥२०॥
शुर शव वर्षत शुमन गन वानन व्यौम निमान ।
चले अवध प्रभु जान वढि जै जै होत वषान॥२१॥

॥ दोह ॥

सियाराम राजत अवध जग अभिराम अपार ।
चरित चारु लीला ललित करत अनेक प्रकार॥२२॥

॥ छंद ॥

लीला ललित सिय राम की अति गुप्त ग्रंथन जो रही।
पावन करन हित निज गिरा परसिद्ध भाषा करि कही॥
पद कंज जानुकी प्रीति जुत जे सुनहि सादर गावही।
सौभाग्य श्री संपति सकल कल्यान कीरति पावही॥

इति श्री जानुकी विजै समाप्त शुभ भूयात ॥ १८९८ ॥ पौष मासे कृष्ण पक्षे तिथौ दसम्यां सनि वासरे ॥ देषा सो लिषा मम दोष न दीप्रते पंडित जन सो विनती मोरि। टूट अछर लेव जोरि ॥ श्री जानुकी मातृ जगत की जानै सकल जहान। जाकी कीरति निज मुष सकर कीन्ह वषान ॥ श्री रामचंद्र की जै करुना अैन

विषय—सहस्त्र वदन रावण का श्री जानकी जी द्वारा मारे जाने का वर्णन।

संख्या २१६ख जानकी विजय (अद्भुत रामायण), रचयिता—परसिद्ध, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—१३ x ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—१४४ खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० चक्रपाल जी त्रिपाठी, ग्राम राजापुर, डाक०—लालगंज, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशाय नम. अथ जानकी विजय लिख्यते ॥

छंद

जय जयति जय जगदंबिका जननी अषिल जग जानकी।
अति अतुल जासु प्रभाव पावन गम्य नहि गति ज्ञान की।
गुण तीनि पानौ तत्त्व मै नव अगुण सगुण स्वरूप ज्यौ।
'परसिद्धि' त्रिभुवन विभव भूषित अषिल शक्ति स्वरूप ज्यौ॥ १

सोरठा

परत परम भव कूप सुर नर मुनि मन मोह वस।
चिदानंद मै रूप जब लग जान न जानकी। १

दोहा

जग अविनासिनि जानकी राम वाम दिसि सोह।
सुर नर मुनि सुमिरत सदा होत विगत मद मोह। २
चरित नराकृत कीन्ह वहु स्वामि सुभग तन धारि।
जनि कीजै मनु मरम कछु जानि सो राजकुमारि। ३
सप्त रिषिन भ्रम भयो जिमि सो महिमा नहि जानि।
विजय जानकी ग्रंथ कर कहु परसिद्ध वषानि। ४

चौपाई

जब रघुवीर मारिहन रावन। निज रजधानी कीन्ह प्रभु पावन।
सीय समेत सुभग यक आसन। राजत भयो राज सिंहासन।
सुर नर मुनि गन सकल अनंदे। आइ राम पद पंकज वंदे।
शिव विरंचि सनकादिक देवा। सवन सप्रेम कीन्ह प्रभु सेवा।
सम सियराम रूप जग जानी। ब्रह्म शक्ति कहि विन . .।

—खंडित

अंत—

जय जय जग पावनि सीय सती। अविचित्र अगोचर ज्ञान गती।
परमातम अनंद अनंद मई। छिति पालन लै वल मत्तगई।
मनसा इंद्री आनमत्। वहु रूप परमा परमातमत्।
तुम्हरे चलते विधि सृष्टि कृता। सम रक्षक विष्णु महेश हुता।

तुम्हरे बल शेष धरै धरनी । तुम्हरे बल तेज तपै तरनी ।
तुम्हरे बल पवनहि तेज गहा । तुम्हरे बल वारि प्रवाह बहा ।
दश हाथ शो षोडश केरि कला । तप तेज प्रकासक सो सकला ।
जड जगम थावर जीव जिते । तुम्हरे बल व्यापक है सबते ।
तुम्हरी महिमा अवगाह महा । श्रुति शारद शेष न लेष लहा ।
तुमको जग जान न कौन अहा । तुम्हही वश विष्णु महेश रहा ।
मन मगन सबै भव कूप परे । विषया मद मोह जो धाइ जरै ।
लषि आकर कोर क्रिया जिन्हही । भव सभित व्यापत ना तेन्हही ।
करुना तन कोमल कारन है । जग जाल हियो रवि वाहन है ।
जननी जन त्रातक हो तुमही । थतव आन अघोर कहो नवही ।
हन है अघ भूरि भडार भरे । शरणागत पाहि पुकार परे ।
'परसिद्धि' पदाम्बुज प्रीति चहे । तुम्हरो जन जीवन लाह लहै ।

दोहा

यहि विधि अस्तुति प्रेम जुत कीन्ही विविधि वषान ।
अभैदान दे देवतन परम विकल भय जान ।१९
उग्र रूप सो त्यागि तब स्वामिन सुभग तन धारि ।
राम वाम दिसि वाम लिए बहुरि विदेह कुमारि ।२०
सुर सब बरषत सुमन गन बाजत व्योम निसान ।
चले अवधपति अवधपुर जय जय होत वषान ।२१
सिया राम राजा अवध जग भा परम सुषार ।
चरित चार लीला ललित करत अनेक प्रकार ।२२

छद

लीला ललित सियराम यत अति गुप्त प्रघटित जो रहा ।
पावन करन निज हित गिरा परसिद्धि भाषा करि कहा ।
पद कज जानकि प्रेम जुत जे सुनहि शारद गावहा ।
सोभाग्य सो संतत सकल कल्यान कीरति पावहा । ६

दोहा

एक सहस औ आठ शत सम्बत दश अरु तीनि ।
सुकुल द्वितीया माम मधु भाषा कथा नवीन ।२३

इति श्री राम चरित्रे श्री जानकी विज अदभुद रामायणे समाप्त शुभमस्तु ११ ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्या .० .०.

विषय—जानकी चरित्र वर्णन ।

रचयिता ने प्रस्तुत ग्रंथ में यह बताने का प्रयास किया है कि जानकी जी ही ने राम रूप में विजय पाई थी और समस्त लीला उन्हीं की थी । उसी के साथ रामचरित्र का भी संक्षिप्त विवरण दिया गया है ।

रचनाकाल

एक सहस औ आठ शत सम्बत दश अरु तीनि ।
सुकुल द्वितीया माघ मधु भाषा कथा नवीन ।२३

संख्या २१८ग जानकी विजय (अदभुत रामायण), रचयिता—परसिद्ध, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—११॥ × ४॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—१८२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री ठा० कामदेव सिंह जी, ग्राम-सिटारी, डाक०—लालाबाजार, जिला प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ जानकी विय छन्द

ॐ जयति जय जय जगदीश .न की ।
अति अतुल जासु प्रभाव पावन गम्य नहि ग्यान की ।
गुण तीनि प .... स्वरूप जो ।
प्रसिद्ध त्रिभुवन विभव भूषित अखिल शक्ति स्वरूप जो ।
शो र . जानि मन मोह वश ।
चिदानंद मग्र रूप जब लगि जानि न जानकी । २

दोहा

जा . म दिशी लोह ।
सुर मुनि शा मुनि .र मदा होत विगत मद मोह । ३
चरित नरा कृत कान्ह धारि ।
जनि कीजै मन मोह कछु जानि सुराज कुमारि । ४
शत ऋषिण भ्रम भयो जिमि सिय महिमा नहि जानि ।
'विजय जानकी ग्रथ' को कहत प्रस वखानि । ५
राम-चरित सतकोटि किय त्रिविध मुनि विस्तार ।
अद्भुत कथा विचित्र यह गुप्त प्रगट ससार । ६
भरद्वाज मुनिवर कहत वाल्मी इतिहासु ।
नाम अदभुत रामायण विजय जानकी जासु । ७

चौपाई

जब रघुवीर मारि रण रावण । निज रजधानि कीन्ह प्रभु आवन ।
सिया समेत सुभग यक आसन । राज भये राजत सिंहासन ।
सुरनर मुनिगण सकल अनदे । काम राम पद पकज वदे ।
शिव विरचि सनकादिक देवा । सबन सप्रेम कीन्ह प्रभु सेवा ।
सम सिय राम रूप युग जानी । ब्रह्म सक्ति कहि विनै वखानी ।

अन्त—

हम है अघ भूरि अडार भरे । सरणागत पाहि पुकार परे ।४०
'प्रसिद्धि' पदाबुज प्रेम चहै । तुम्हरे जन जन्म नरै निवहै ।४१

दोहा

यहि विधि स्तुति प्रम युत विबुधन जबै वखानि ।
अभै दान दिय देवि तव परम भयाकुल जानि ।४२
उग्र स्वरूप सो त्यागि तव सौम्य सुभग न धारि ।
राम वाम दिसि वाम लीय बहुरि विदेह कुमारि ।४३
सुर सव वर्षत सुभ गण बाजत व्यौम निशान ।
चले अवध प्रभु यान चढि जय जय होत धान ।४४
सियाराम राजा अवध जग अभिराम अपार ।
चरि चारु लीला ललित करत अनेक प्रकार ।४५

छन्द

लीला ललित सिय राम यह अति गुह्य ग्रंथन जो रही ।
पावन करन हित निज गिरा 'परसिद्ध' भाषा करि कही ।
:०· ०. ०.

दोहा

एक सहस अरु आठ सै सव दस अरु तीनि ।
शुक्ल द्वितीया माम मधु भाषी कथा नवीन ।४७

इति श्री जानकी विजय रामायण अद्भु चरित्रे सहस शीरा रावण निधनो कथायां समाप्तो :०:

विषय—जानकी विजय वर्णन ।

रचनाकाल

एक सहस अरु आठ सैं सत्र दस अरु तीनि ।
शुक्ल द्वितीया मास मधु भाषी कथा नवीन ।४७

संख्या २१६घ जानकी विजय (रामायण), रचयिता—परमसिद्धदास, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—१८६, **पूर्ण, रूप**—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१३ वि०, लिपिकाल—सं० १९१६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री भैया हनुमन्तप्रसाद सिंह, रियासत अठदमा, जिला—बस्ती ।

आदि—श्रीमते रामानुजाय नम. अथ जानकी विजे ॥ छंद ॥

जय जय जयति जगवंदिका जग जननि अखिल जग जानकी ।
अति अतुल जासु प्रभाव पावन गम्य नहीं गति ज्ञान की ।
गुण तीन पाचो तत्व मय मम नृगुण सगुण सरूप सो ।
प्रसिद्ध तिभुवन विभा भूषित अमित सक्ति अनूप सो । १
परत पार भव कूप सुर मुनि अहंमित जोग जे ।
चिदानंद मय रूप जब लगि जानु न जानकी । २
जडप विनासिनि जानकी राम वाम दिसि सोह ।
सम मुनि सो सुमिरत सदा होत विगत मद मोह । ३
नरकृत चरित कीन्ह बहु साम्य भुवन तन धारि ।
मुनि मन मोह कीन्ह कछु जान्यो राज कुमारि । ४
सप्त रिषिन मम भ्रम भयो सिय महिमा नहि जानि ।
विजै जानकी ग्रथ करि कह्यो प्रसग वषानि । ५
जव रघुवीर जीति रन रावन । निज रजधानि कीन्ह प्रभु आवन ।
सिया समेत सुभग यक आसन । राजत भूप राज सिंहासन ।

० ० ०

वरी विदेह कुमारि को भंजि पिनाक पुरारि ।
सुर नर मुनि हित राज तजि रह्यो वर्ष दस चारि । ६

अंत—सिया राम राजत अवध जग अभिराम अपार ।
चरित चारु लीला ललित करत अनेक प्रकार ।२६

छंद

लीला ललित सिय राम की यह गुह्य ग्रथन जो रहा ।
पावन करन हित निज गिरा 'परसिध' भाषा करि कहा ।
पद कंज जानकी प्रीति जुत जे सुनहि सादर गावही ।
सौभाग्य श्री सपति सहित कल्यान कीरति पावही ।३०
येक सहस औ आठ सैं सवत एक औ तीनि ।
सुकल यकादसि मास नभ भाषा कथा प्रवीन ।३१

इति श्री परसिधदास भाषाकृत जानकीविजे संपूर्ण । संवत १९१६ अगहन ।

विषय—भक्ति विषयक काव्य ।

रचनाकाल

येक सहस औ आठ सैं सवत एक औ तीनि ।
सुकल यकादसि मास नभ भाषा कथा प्रवीन ।३१

संख्या २१६ङ जानकीविजय रामायण, रचयिता—परसिद्ध, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—११॥ × ४॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—१८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१३ वि० लिपिकाल—सं० १९३८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० तारापसाद जी, ग्राम—हरनी, डाक०—उसवा, जिला—बस्ती।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

अथ जानकीविजय लिष्यते ॥

दोहा

रामचरित सत कोटि किये विविध मुनिन्ह विस्तार ।
अदभुत चरित विचित्र अति गुप्त प्रगट संसार । १

हरिगीतिका छंद ॥

जयति जगदंबिका जननि अखिल जग जानकी ।
अनि अतुल जासु प्रभाव पावन गम्य नहि जात जानकी ।
गुण तीन पाचौ तत्व मय सब अगुण सगुण रूप जो ।
परसिद्ध तृभुवन विजय भूषित अमित शक्ति सरूप जो ।

सोरठा

परमाया भव कूप सुरमुनि अहमित जा गए ।
चिदानंद सदाहू जब लग जानि न जानकी ।

दोहा

जगत विलासिनि जानकी राम वाम दिशि सोह ।
सुर नर मुनि सुमिरत सदा हरत विघ्न मदमोह ।

पुन

चरित नरा किय कीन्ह बहु शोभा शुभग तन धारि ।
जानकि विजय मन माहु कछु जानि सो राजकुमारि ।

अंत— हरिगीतिका छंद

लीला ललित सिय राम की यह गुप्त ग्रन्थन जो रही ।
पावन करन हित निज गिरा परसिद्ध भाषा कर कही ।
पद कंज जानकि प्रीति जुत जे सुनहि सादर गावहीं ।
सौभाग्य श्री संपति सकल कल्याण कीरति पावहीं ।२३

दोहा

एक सहस अरु आठ सै सम्वत दश अरु तीनि ।
शुक्ल दुतीया मास भाषा कथा प्रवीन ।२४
जानकि विजय एह गुप्त है प्रगट न जाना कोइ ।
जो नर सार्धा से सुनै मुक्ति होइयै सोइ ।२५
जानकि विजै जो सुनत हैं अस्थिर करि जो ज्ञान ।
पूजत मन वाछा सदा होत कल्याण ।२६

इति श्री वलमीकि रामायणे जानकी विजै नाम शहस शीश रावणस्येत द्वीपाद्विपतीम्वध समाप्त भूयात् ॥ सम्वत १९३८ शक ॥

विषय—जानकी चरित्र तथा महिमा वर्णन ।

रचनाकाल

एक सहस अरु आठ सै सम्वत दश अरु तीनि ।
शुक्ल दुतीया मास भाषा कथा प्रवीन ।२४

संख्या २१७क भँवरगीत, रचयिता—प्रागनि, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—११ × ४।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—३६१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दुर्गाप्रसाद जी कुर्मी, ग्राम—मेहरी, डाक०—इटवा, जिला—बस्ती।

आदि—श्री गणेशाय नमः

अथ भँवर गीता राग विलावल ।।

आयसु दीन्हो सखा सुजानहिं ।
स्यदन चढौ सिधारौ वृज को सुद्धि रावरो आनहि ।
कैसे है जसुदा जननी जिन्ह पालि कियौ वरवीन ।
मोहि आछत अव होत होहिगी पर पूतन आधीन ।
गहियो पाय नन्द वावा के कहियो यही सनेसो ।
जो तुम्ह कियो महा कृत हम सो गनि न सकत गुन सेसो ।
समाधान कीजेहु गोपिन के दीजेहु निर्मल ज्ञान ।
कहियो जोग जुक्ति सो 'प्रागनि' सगम त्रिकुटी ध्यान । १

राग सारग

सिष निज गाढ़े कर गहियो ।
पालागी दोऊ भैया की मैया सो कहियो ।
मै हौ तिहरे पय के पोषे सुरति करत रहियो ।
जोग सनेस सुनाइ त्रियन को प्रीति रीति लहियो ।
सीतल वचन सीचियो रस ही दहिन फिरि दहियो ।
देषि दसा उन्हहू को मोहू को दोस दियो चहियो ।
'प्रागनि' वृज नामिन के हिय को प्रेम सिधु थहियो । २

अंत—

उधौ तुम सो कही निरतर निज भक्तन मै रहत हौ ।
वेद अतीत तकौ मति काई यहे हमारौ मत हौ ।
हौ निर्लेप निरजन निर्गुन कारन ते वसु धारो ।
कर्म रहित जो आपन इक्षा प्रगट तहा जुग चारो ।
देह अदेह तकौ मति कोऊ ज्ञान द्रिष्टि जेहि होऊ ।
छाडे देह वहुरि नहि पैहौ जन्म जगत मे सोऊ ।
यह मत है देवन्ह कह दुर्लभ मधुप हिये मह राष ।
प्रागनि तो सो फेरि कहौगो देइ यकादश साषि ।५३

दोहा

फिरि नरदेह विभौ सहित होनो दुसर नाहि ।
हरि भजि सजि परलोक तकि अकथ नयो वह ताहि ।
रहिवे को तन धन नही कछु नहि चलिहै साथ ।
कछू साज नहि सग चलिहि जोगवत रहत अकाथ ।।
दियवे वँवो धर्म तप अत होत हित येइ ।
इत पाही उत वास है सुष चाहै करि लेइ । ३

इति श्री प्रागनि कवि कृत भाषा भवर गीता संपूर्ण सवत १९२५

विषय—गोपी उद्धव सवाद वर्णन ।

संख्या २१७ख भवरगीता, रचयिता--प्रागनि, कागज--देशी, पत्र--२६, आकार--६॥ × ४॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--८, परिमाण (अनुष्टुप)--३४८, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता--श्री पं० जमुना प्रसाद जी, ग्राम-मुबखरी, डाक--हरिहर पुर, जिला-बस्ती) ।

आदि--श्री गणेसाय नम. लि. भवरगीता पुस्तक प्रागनि कृतः

राग विलावल ॥

आयसु दीन्हो सबा सुजानहि ॥
स्यन्दन चढो सिधारो ब्रज को सिद्ध रावरी आनहि ।
कैसे है जसुदा जननी जिन्ह पालि कियो परवीन ।
मोहि आछत अब होहिगी परपूनन आधीन ।
गहियो पाय नद बवा को कहियो यहै सदेसो ।
जो तुम कियो महाकृत हमसो गनि न सकत गुन सेसो ।
समाधान कीजेहु गोपिन को दीजो निर्मल ग्यांन ।
कहियो जोग गुजुति से 'प्रागनि' त्रकुटी सजय ध्यान ।
सिष निजु गाटे के अहियो ।
पालागन होऊ भैया को मैया सो कहियो ।
हम है तिहर पै के पोखे सुरति करति रहियो ।
जोग सदेस सुनाइ तियन को प्रीति रीति लहियो ।
कहियो कछू न फेरि उनहू सो वहे सो सब सहियो ।
सीतल वचन सीचियो रस ही दहो न फेरि दहियो ।
देषि दसा उनकी मोहू को दोस दियो चहियो ।
'प्रागनि' वृजवासिन के हिय को प्रेम सेष्यु अहियो ।१२

अत--ऊधो तोसो कहो निरतर निज भगत हत हौ ।
वेद अतोतन को मत कोऊ यहै हमरो मतु है ।
हो निर्लेप निरजन निर्गुन कारन न वपु धारो ।
कर्म रहित हो आनि इछा प्रगटत हौ जग चारो ।
. दहत को मर्म ग्यान दिस्टि को कोउ ।
छाडे देह बहुरि नहि पहे जनम जगत मे सोऊ ।
यह मत न देवन को दुर्लभ ऊधो गुप्त हिये मो राषो ।
'प्रागनि' तो सो फेरि कही दय येकादस साषो ।

इति श्री भँवरगीता पुस्तक प्रागनि कृत समाप्ति सुभ मस्तु सन ११६५ साल ।

विषय--श्री कृष्ण चरित्र वर्णन ।

संख्या २१७ग भ्रमरगीत, रचयिता--प्रागनि, कागज--आधुनिक सफेद, पत्र--२, आकार--८$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{1}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--७, परिमाण (अनुष्टुप)--२६, खडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि--

. . . .
. .तिहारी प्रीति जाय नही वरनी ।
चातिक मोर चकोर मृगिनि जन हेसियनि तिहारी धरनी ।
यक रसना हौ कौन बापुरो सकै न वेद वखानी ।
नद नदन जे कही वतकही तै उन आपनी मानी ।
जो कबहूँ हौ कोटि तमानों उधौ जीवन पाई ।
गोपिन के गुणज्ञा पलटे पलटो दिहो न जाई ।
यहे निरतर कहि के मोहन कछु करुणा सी कीन्ही ।
प्रागन प्रभु व्रज के चलिबे को मोको अज्ञा दीनी ॥६२॥

सब मिलि यहै आसिषा देहु ।
जासो मेरो नद नदन सो बाढ़ै अधिक सनेहु ॥
पावौ वास ब्रक्ष ह्वै वन मे मागो यह फल येक ।
नित प्रतीत होइ सीस पर मेरे पद रज को अभिषेक ।
मृग मयूर मर्कट जीवादिक देह धरे हित जौन ।
कालिदी ब्रदावन वासी करी तपस्या कौन ।
जलचारिन देषी जल लीला वन वासिन बन केलि ।
प्रागन देह धरै बड़ भागी मुक्ति पाइ सो ठेलि ॥६३॥

॥ राग गौरी ॥

अब मोहि देहु आयसु देवि ।
हो तिहारो दास सब दिन सर्वदा पद सेवि ॥
चित्त तेन विसारियो तुम परम दीन दयाल ।
पाइ दरसन आपके सब मिटे जग जजाल ।
जौन मै कछु कही ढीठै कृष्ण अयसु मानि ।
छमापन ते सबै कीजिय आपनो करि जानि ।
काह विनती करौ 'प्रागन' विमल बुधि न आहि ।
भयो वदी नद नदन वेद वदत जाहि ॥६४॥
ऊधो अत न होइ अहीरी ।
कहा हमारी त्रिष मी वतिया जान कह रावरी सीरी ॥
ग्रथहु मे बरने बहु अतर बासु नगर षेर को ।
कहो समान होइ धौ कैसो सीच स्वामी चेरो को ॥
छोटे बड़े भय दुनिया मे जेते बुधि विसेष ।
भ्रगु लता हरि हतो हृदय मे मन मे धरो न तेष ।
आगी जरे होत हे काही कोऊ धो उनसो जान ।
तौ तुमही सो कही जानि कै 'प्रागन' प्रभुहि समान ॥६५॥
कहौ हम कोन बडाई जोग ।
हम करी कान्ह सँग ढीठ तिन मानत सब लोग ॥
पति छाडे पितु मातु भ्रात हू सुतन बिचारे चीर ।
वेद उलघन करि हम जैसी भुगतन बीर ॥
अपनहि आनि शुनायो शिव धनु हमको तौन उपाय ।
के तौ कटुक कहौ तुमही सो जात न आपु सुभाऊ ॥
अत बड़े तुम दूहू भाति सो नवहु सो अचरज कौन ।
मुख सो कहौ कौ विधि 'पागन' तुम करण को मौन ॥६६॥
ऊधौ भागन ही ते आये ।
दीनो दरस हमै करुणाकर लोचन जरत जुडाए ॥
सुनत रहत हे सदा समीपी काहू पुन्य न पाए ।
सिव को ग्यान ध्यान सिद्धिन को श्री मुख वचन शुनायो ॥
ये कै पंगत भई मधुप जी बज की त्रिपन सतायो ।
कौवल नैन की कृपा चाहियो दूरि निकट भल पायो ॥
'प्रागन' प्रभु चिरजीव वीर दोउ रहो मधुपुरी छायो ॥

॥ राग आसावरी ॥

सोचु भयो ऊधौ के पोचु निपट कीन्हो ।
चलत बार तीनि दिन की अग्या प्रभु दीन्हो ॥

ताते खटमास भये पूछे का कहि हौ ।
क ....॥

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—गोपी उद्धव सवाद वर्णन ।

संख्या २१७घ भ्रमरगीता, रचयिता—प्राणनि, कागज—देशी, पत्र—३०, आकार—६ १/२ × ३ ७/८ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—२८६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत भद्राम प्रसाद जी श्रीवास्तव, स्थान—किला रायबरेली, पोस्ट—रायबरेली, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ भ्रमर गीता लिख्यते ॥
॥ श्री कृष्ण उवाच ॥

सिष निज गाढे कै गहियो ।
पालागन दोउ भया को मैया सो कहियौ ॥
हौं तौ तिहारो पै को पोषो सुरति करत रहियो ।
जोग सदेस सुनाय त्रियन को प्रेम प्रीति लहियो ॥
कहियो ना कछु उन गोपिन. . . .
:o: :o.   o:
ताछिन नद षरिकते आये ।
लोचन सजल पुलकत ऊधो कर गहि कठ लगाये ॥
ता पीछे बैठे येक आसन समाचार अनुसारे ।
नीके है वसुदेव देवकी प्रीतम परम हमारे
नैन जोति वृज जोति तियन की कुसल क्षेम वल केसौ ।
कहियो तात इहा आवन को कछु हँ कह्यो सदेसो ॥
बडे सपूत भए प्राणनि प्रभु कोविद परम कहाए ।
वचन तात अब भये मनहु हम ते ऐसे फल पाये ॥ ५ ॥
जिय के ऊधो लागि विचारी ।
करुनामय सर्वज्ञ कहावत वडे निठुर गिरधारी ।
प्रगट करी न मनहि मे राष्यो पै बहुतै दुष पायो ।
ता पीछे सदेस कृष्ण को करिकै विनय सुनायो ॥
हौ गोपाल तिहारो निस दिन बेचहु तहा विकाऊ ।
जुग जुग अचल रहैगी कीरति प्रति पाले को नाऊ ॥
बातन समाधान काहे को जाको सरवसु जात ।
प्राणनि विकल पनि के प्यासे वोसन कहा अघात ॥ ६ ॥
चरचा ही मे निसा सिरानी ।
भोर भये बोले पुर तमचुर मुषरित विपुल विहग ।
सुवल सुवाहु कान्ह को लीला करत आपने रग ॥
छुटे मधुप कज कोशनिते करत मधुर सुर गुज ।
मानहु व्रजवासिन को वदत वेष धरे मुनि पुंज ॥
गोदोहन मथान वेनु रव लाग्यो चहु दिसि होन ।
प्राणनि गोपी गुण गोपाल के करत गान प्रतिभौन ॥ ७ ॥
.o: .o.   :o:

अंत—वृजवासी मोते नहि न्यारे यह करि कै परतीति ।
हौं निसुवासर तहा वसत हौं जहा निरतर प्रीति ॥
गोपी अरत्रि अनिहौ ऊधौ कहा कहैगो वेद ।
घट घट व्यापक है पुरषोत्तम स्वास हमारे वेद ॥

ताकी रिचा सकल है गोपी जैसे वारि तरंग ।
जब पूरन अवतार धरत हौ तबहि अवतरन सग ।।
इनको सोचु कहा है करिवो उधो मोहि बताऊ ।
प्रागनि तिन गोपिन की कीरति जक्त तरेगो गाइ ।।२१।।
तुम्हते कहौ निरतर वातै भक्तन निकट रहतहौ ।
भक्त हेत निर्गुन कारन ते सगुन दे हौ धारी ।
कर्म रहित अपनी इछ्या ते प्रगट होत जुग चारी ।।
देह अदेह निकट है मेरे ज्ञान दिष्टि .

.०. :० .०

—अपूर्ण

विषय—गोपी उद्धव सवाद वर्णन ।

संख्या २१८क परिक्रमा प्रकरण, रचयिता—प्राणनाथ या महामति, कागज—देशी पत्र—१० आकार—१० × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप)—२१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९५५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री हरवश राज, ग्राम—नजराना, डाक—सिरसी जिला—बस्ती ।

आदि—श्री कीताव प्रक्रमा के प्रकरन

प्रथम भोम

वडा चोक से भाले तहे वडे दरवाजे अदर ।
वडी वैठक इत गिरोह की आगुर सोई के मदर । १
दस स्याम सेत के लगते दस मदिर सामी हार ।
इन चोक को रोसनी मावर नही अनकार । २
कैन कम के वटाव इन मोम मे देषत ।
दिन पडा षेले वन मे पड़ा आरोगे इत । ३
इन चोक म साथ जो वोहोत वे बैठत ।
आवत जात वन थे वैठत इत अल वत । ४
लाड वाई के जूथ की ई वोहोत षेल करत ।
वाहेर अदर चोक मे वन मोहो लो सुष लेवत । ५

० ०. .०:

ऐ दूजी भोम जो 'अरस' की ईत वोहोत वडी विस्तार ।
ऐ नेक नेक के हेत हो जुवा कहा कहे सिफत सुमार ।१४

भोम तीसरी

वैठे हक हादी भोम तीसरी जित आवत नूर जलाल ।
ईत दोऐ पहर की बैठक ओर सेज्या सुष हाल । १

.०' '० :०'

दूजी भूमि की चेहवचा सुनी वठत इत अन्हाऐ ।
सिनगार हमे रूहम के इत जुवा वहयो न जाये ।

अत—

दसमी भोम चादनी

दसमी भोमे चादनी ऐसी भाह अतंत ।
कै कदेले कुरसिया वोस सोभा लेत तषत । १
कै वैठक मोहल चादनी हकहारी इत आवत ।
साथ सब रूहन कों सुष मन चाहे देवत । २

क्यो कहू न सुपेनीकी उजल जोत अपार ।
दोसो हासो चादनी नाही रोसन नूर सुमार । ३
ए जो गुमटिया गृहवाऐ की नगीने एक अगले से दोऐ ।
वारे हजार गुमटिया सोभा लेत अति होए । ४
चारो तरफे चह वचे ऐ सोभा अति सुदर ।
जल गिरत फुहोर मोतिओ चारो चादनी अदर । ५
गुर वाऐ फुन चेह वचे ऐ सोभा जुदी जुगत ।
अतर आवे षाल के ए सुष देषो अनत । ६

.c

केहे केहे जुवा इत क्या कहे तेज जोत रोसन नूर ।
सोतो इन जिमी जरेभी आकास नमाऐ जहूर ।१९
ताथे महामति कहे ऐ मोमना क्या कहे जुवा इन देह ।
रूह अल्ला षोले अतर लीजो लजत सव ऐह ।२०

प्रश्न १० चौपाई १९४ दसो भोम के प्रागे पीछे के तमाम हुऐ ।

विषय—धनीजद (धनदेव जी सस्थापक प्रनामी सप्रदाय) के दसो भोम के निवास का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—भाषा उर्दू । अरबी, फारसी के शब्द अधिक है ।

सख्या २१८ख प्रनालिका रचयिता—प्राणनाथ या महामति, कागज—देशी, पत्र—६६, आकार—१०×६ इच पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१ परिमाण (अनुष्टुप)—१४८६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य-गद्य लिपि—नागरी लिपिकाल—स० १९५५ वि० प्राप्तिस्थान—श्री हरवश जी राय, ग्राम—रजनाली डाक०—मिर्मा, जिला—बस्ती ।

आदि—

निज नाम श्रीकृष्ण जी ।। अनाद अछरातीत ।।
सो तो अव जाहिर भऐ सव विधि वतन सहित ।।
श्रीमत तारतम की परनालिका लिषो हे सो सुरू हुआ ।।
जव पाच तत्व तीन गुन चौदा लोक ।।

सेष साई आद दे के वेकुठ लो । पिड ओर वह्माड ।। वेराट पुरुष विद रूप ।। ता परे त्रगुन अहकार । तापरे महतत्व गाइत्री वेद ए नाद रूप ता ऊपर महा विस्न आद नारायन आदि पुरुष ताके पद महा माया महा सून्य मोहतम यह विस्तार जव कछू ना हतो । तव कहा हे के एक अद्वैत अषडानद पूरन व्रह्म सदा सर्वदा हे तिनको आद अत नाही हे ।।

चौपाई

जव प्रलै प्रक्रती होई । ना रहे अद्वैत विना कोई ।।
एक अद्वैत मडल इत । धनी अगनाके अग इत । १
अव सुनियो मूल वचन प्रकार । जव नही उपजी मोह अहकार ।
नाही निराकार नाही सुन्य । ना निरगुन ना निरजन । २
ना ईस्वर ना मूल प्रक्रती । ता दिन की कहू आपा वीती ।

कुरान के पद की चोपाई

:o: .o. :o:

सव जिमी मोहोल हक के सव ठोरो दीदार ।
सब अलेषे अषड वहै 'महामत' अरस अपार । १

:o: .o. :o:

जो कछु वीच अरस के सो सव जात षुदाए ।
ओर षिलोने वगीचे सव जाते के इप्तदाऐ । ४

तो या परकार श्री राज को अग श्री ठकुरानी जी हे ।
ओर श्री ठकुरानी जी को अग बारा हजार सखी ह ॥
:०: ˙० :०.
ऐक साहवी अरस की ओर वाहिदत्त का इसक ।
ऐ दिषलावने रहन को पेहेले दिल मे लिया हक ।

रुहे वेनिआज श्री वीच वका बार हजार आमन आप अरसकी साहिवी अपार ।११
प्रसग प्रस्न पेहिलो सपुर्ण ॥

अत— चोपई

सोई महल सोई मदिर सोई अपनो रस रग ।
सोई भाग मेवा मीठाइया सोई अपने धनी सग । १
सोई विध विध के विलास सोई पुरुष राज तलाव मानिक सोई जमुना जी सातो घाट ।
सोई मष भोम सुष मंदिर सब अरसा वाग वन पाट ॥ २
.०: ,० ०˙

जब श्री जी साहेब जी चौदा वरस के भए तब सामलिया ठाकुर सो बोना चाली भई ॥ सत्ताईस बरस के भये तब भाग जी माई की माई छेनाद साष मे हतो ॥ श्री देवचद जी सो अग्यारा बरस की जुदागी भई । फेर श्री जी साहेब जी नौतन पुरी आए । सवत् १७१२ श्री देवचद जी धाम पधारे अतरधान हाऐ श्री जी साहेब के हिरद आन बसे ॥ तब श्री जी साहेब से तीस वर्स के भऐ हते । .० ० फेर जूनागढ आऐ । .०. .०. फेर नौतन पुरी आए । .०. .० धोराजी मे ब्याह कियो । दीप बदर भोज नगर आयो । ० सवत् १७३७ की साल मो विहारी जी और श्री जी को दा निरोह भयो । सुरत आनदाबाद आयो मेरता आगरा मथुरा वृदावन हाए दिल्ली आयो । ०. .० ऐक श्री प्राननाथ जी ॥ ओर नवधा की तरवार हे ॥

.० ०˙ ०
श्री जी साहेब ने बगसीस ऐक वात मे करी ।
त्रिजिया अमनदन वुध जी ब्रह्म अष्ट सिरताज ।
हुकुम हाथ छत्र साल के दियो भो अपनो राज ।
:०. ० ०

जुगल सरूप को मूल बागो अद्भुत लाठी हाथ मे लेके सब साथ को प्रनाम ॥ निज नाम श्री कृष्ण जी अनादि अछरातीत ॥ सोतो अब जाहर भयो सब विध वतन सहीत ॥ आकडी तारतम की सातो सपूरन भई । समत १६३८ सा पगटे देस मारवाड मे उमरकोट गाउ उतपन्न ॥ समत सत्र से वारोतरे हुए धनी अलष ।

रहे वरस चौहत्तर नून भए ऐक मास ।
सोय चले मेहे राज का उमत षासलषास ।
:० .० :०.
ईत ऐक दिन ता पीछे मंदिर मे पोहोचाए मोमिन ।
०. ० :०:
साथ सोपा श्री राज को जाहिर मे श्री महाराज ।
.०. :०. ०.
तव महाराज सो कहा मे देषत हो तुम ।
निस वास्ते सबा साथ की सोप कर चलत हे हम ॥१०
आवो बापा को कहे को वेठारे पास ।
जाहिर ते बातुन भए नैना भऐ निरास ।११

श्री श्री किताव प्रनालिका सपूरन समाप्त सवत् १९५५ साल ॥

विषय—धामी (प्रनामी) सम्प्रदाय की वार्ता, श्री राज तथा ठकुरानी (राधा कृष्ण) की लीला का वर्णन तथा प्रनामी सम्प्रदाय के महात्माओं की जीवनी आदि का वर्णन। द्वैत का खंडन तथा अद्वैतवाद का निरूपण आदि सत मतानुसार ज्ञान वैराग्य तथा ज्ञानोपदेश का वर्णन।

संख्या २१८ग बीतक, रचयिता—महामत (?) स्वा० प्राणनाथ, कागज—देशी, पत्र—१५८, आकार—११ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—४१२८, अपूर्ण (खंडित), प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री महंत जी रजनौली मठ (प्रनामी सम्प्रदाय) ग्राम—रजनौली डाक—सिरसी, जिला—बस्ती।

आदि—श्री जी साहिब की जे।

श्री निजनाम श्री कृष्ण जी अनाद अछरातीत।
सो तो अब जाहिर भऐ सब विधि वतन गहीत। १
अथ तीनो सरूपो की बीतक लिखते। श्री राज जू।
भविष्य पुरान पे राजा कहे जुग चार।
बचन जोहे व्यास के ताके करो विचार।

सतरह राजा सतजुग मे ० ० ०· अब कहो त्रेता के उनतीस नाम ब्रह्मा, मारीच, कश्यप . उनइस भए द्वापर मे। प्रथम इदु नाम, तापर भयो चद्रमा फेर पुरवा राजा अब कहो कलजुग के प्रथम तो जदू नाम। ता ऊपर अजेपाल फेर महीपाल। तापर गध्रप सेन। वीर विक्रमाजित। विक्रमाचन्द्र भोज तापर गोरी पातसाह सुलतान अलीउद्दीन नसीरदी महमूद तापर सुरवाहोए, तिमिरलग बाबर हमायूं अकबर सलीम साहजहा औरगजेब।

श्री महामत कहे ऐ साथ जी शास्त्र कहे यूंकर।
आगे अपनो बीतक सो लीजो चित धर।२८

चौपाइ

अब कहू फेर मूल मिलावे की बीतक।
जेसी अग्या सुनी की सो बाता बुजरक। १
पेहले मूल अद्वैत मे भोम जहा दिसक।
तहा प्रेम खद मे भया हुकुम हक। २
ऐह षेल देषा नवी इधर उपजाई दोए।
आषर और सयन को आद अनाद फल कहो सोय। ३
ताके तीन तकरार कहे सो भयो तीनो हिंड।
ताकी बीतक जुदी जुदी माया मिथा नट ब्रह्मड। ४

अंत—

एक पहर रात लो होत होए मनुहार।
कोई आवत कोई जात हे सो कहालो कहो प्रकार।७५
सिगासन से श्री बाई जी जुगल सरूप सोहाऐ।
आनद सरूप सुतेज को कहा लो कहो बनाऐ।
श्री महामतक हे ए साथ जी भया चरचा का वखत।
अब तुम सुनीयो चित्त द लाल आगे आए बेठे दिन तखत॥७७॥

विषय—सत मतानुसार ज्ञानोपदेश वर्णन।

संख्या २१८घ श्री प्रकाश किताब की प्रकरण, रचयिता—प्राणनाथ (इन्द्रावती) (धामी पथ के प्रवर्तक), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—१११ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री महंत जी रजनौली मठ (प्रनामी सम्प्रदाय), ग्राम—रजनौली, डाक०—सिरसी, जिला—बस्ती।

आदि—

......हे निसले ओछो अमारी सार तो मोह जल सूं उतरूं पार ।
ऐ माया छे अति बलवती । उपनी छेम धनी थकी ।
मनि जन नेमना व्याहार । सिव ब्रह्मादेक नव लहे पार । ४
सुक सनकादिक ने नव टली । लछमी नरायन ने करी वली ।
विस्नु वैकुंठ लीधा माहे । सागर मिथर नमू क्या काहे । ५

:o: :o: :o:

साखी

कहे इन्द्रावती वल्लभा ऐ माया छे अति छल ।
हवे जु धमास्यूछे अमसूं एहनो कह्यो न जाऐ वल । ८
एहना आऊध अमृत रूप रस छल वल वल अकल ।
अगिन कोटन कोमल चंचल चतुर चपल ।

अंत—दई परदषिणा अति घणी करू डंडवत प्रणाम ।
सहू साथणा मनोरथ पूर जो मारा धरमी श्रीधाम ।८४
मन ना मनोरथ पूरेण कीधा मारा अनेक वार ।
यो वारने जाए इंद्रावती मारा आतम ना आधार ।८५

श्री प्रकास कीताव की प्रकरण

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या २१९ बभ्रुवाहन की कथा (जैमनी पुराण), रचयिता—प्राननाथ, कागज देशी, पत्र—३८, आकार—१० ६/८ × ५ ४/८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९ परिमाण (अनुष्टुप)—७२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६८ वि० प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नम. अथ जैमुन पुरान भाषा प्राननाथ कृत वबुरवाहन ॥

॥ चौपाई ॥

जगत मातु पितु सभु भावनी । करैंहि कृपा सुत सेवक जनी ॥
जसु तनैं जग विदीत गनेसा । मोह अषिलता मम नादता दिनेसा ॥
करी बार बदन कृपा करि भुरी । वारनौ स्वाम विमल जसु रूरी ॥
जग सोपान परम अतिपावन । प्रेम समेत सुनोहु मन भवन ॥
पुनि जन्मैजय नृप प्रिवानी । पुछत जैमुनी रिषिहि वाषा षनी ॥
वाहुरि कथ मुनि अग्र चलावहु । कहि प्रभू सुजसहि कलुष नसावहु ॥
सुनि प्रभु वचि हसेउ मुनि नथा । वरानन लागी किष्ण गुन गथा ॥
भिषम भुप निसचरा भरा । सयन सहिथ पारथ जेहि मारा ॥

॥ सोरठा ॥

लिन्हो पुर सब लुटि रक नाल के थानीक भे ।
गई बिपति सब छुटि प्रमुदित निज निज उर सकल ॥

मध्य— ॥ दोहा ॥

रुधिरा लपटे सुभट भट भय रौउद्र रस भेसु ।
किधो रजो राज रितु कन्हन्ह सोरिभित टेसु ॥

॥ चौपाई ॥

मुरं नदरुन सुर वारुरा । तेज पुज समरथ परिपुरा ॥
घयलरा हौ विर व्रीकेता । परेवा अचेत समर के षेता ॥
जेहि माथे परथ मष किन्ह । ललित तुर प्रदक्षिन किन्ह ॥
सो व्रषकेत परोमहि माहो । चेत रहित पुगदल थीर नाही ॥

अंत— ॥ छद ॥

कलिकाल सित कराल पन्नग कल कुट महामही ।
भारनि कथा भगवन कि करनि हलहल कितही ।
गोपाल लाल चरित्र पावन कहहि सुनहि जे गवही ।
जन प्रान नाथ मनाथ तेत्र चारि मजुल पावही ॥

॥ दोहा ॥

धर्म पाप परितापघन वादाव घटनि घटान ।
मनभवन पावन कथा पावन प्रचड प्रमन ॥

इति श्री वरुर वाहन कथा सपुरन सुभा समस्तु जैसि प्रति देषी तैसि लिषि मम दोस न दिजिग्रता वाकता स्रोतक विनती मोरि टट ग्रछर वाचत जोरी समता १८६८ मिति सवन वादि १३ दिन त्रेमपति लिषते सीववाकस सीघ चौहान ॥ श्री ता राम . . . .

विषय—वभ्रुवाहन की कथा का वरणन ।

सख्या २२० ना मेष मालिन या चौवेला रचयिता—प्रानसुख, स्थान—कठैरा नगर (ओडछा), कागज—दशी, पत्र—१०, आकार—९$\frac{7}{10}$ × ६$\frac{7}{10}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—२२५ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८५७ वि०, प्राप्तिस्थान—प० द्वारिका प्रसाद जी शुक्ल "शकर" (रिटा० जज), कार्यवाहक सभापति—द्विवेदी साहित्य सघ, रायबरेली, पसु टाऊन—रायबरेली ।

आदि—॥ चौवेला ॥

श्री गनपति सरसुति गुर ध्याऊ विमल बुधि कर मोरि ।
रचौ तरगभेष मालि, कौ देऊ सो अछिछर जोरी ॥
लाला लालित लाडिली लालन ललिना प्रेम समारा ।
सललि सनेह भरौ हे सागर पैरत पावै पारा ॥ १ ॥
०: ०. ०.

मध्य—लई चीकन की पहिर कचको छनिया सुजन सम्हारी ।
चारी वद लगाइ षंचक फिरकै ताहि निहारी ।
षोलौ सिदु किया को तारौ जाते गहन काडे ।
हात पाउ अरु गर सीस कौ षडो घन मुषगाडे ॥१६॥

अत—श्री वत्स कुल कहत कटेरा नग्र ओडछ वासू ।
सगुन उपासक नाम "प्रान सुष" राधा वल्लभ दासू ।
अठारा सै सताउन सवतु भादौ सुद परवाना ।
राज विरमाजीत न्रपत के रचत रग सुषदाना ॥७७॥

इते श्री सनेह सागर लीलाया श्री प्रधान कठेरा वारे प्रान सुकवि रचिताया मालिन तरग सपूर्नः समासमापता ॥ जेठ सुद १० ॥

विषय—श्रीकृष्ण और गोपियो की लीला विहार ।

रचनाकाल

अठार सै सताउन सवतु भादौ सुत परवाना ।
राज विकरमाजीत न्रपत के रचत रग गुषदाना ॥७७॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रथ निम्नलिखित ग्रथो के साथ एक हस्तलेख मे है—

१ सनेहसागर—हसराज वख्शीकृत ।
२. कातिक तरग—रामदास कृत ।

संख्या २२१ व्यवहारवाद, रचयिता—प्रियादास (?), कागज—देशी, पत्र—११०, आकार—९६/१० × ६८/१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—२४७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०४ वि०, प्राप्तिस्थान—टैगोर पुस्तकालय, विश्वविद्यालय, लखनऊ।

आदि—श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

जयतः श्रीरामचन्द्रो जयति कमलम् स्तस्य पत्नी च शंभुः ॥
जयति श्री भक्तराजी विमल मतिकरः श्री प्रियादास ईशः ॥
जयति श्री धूम्रकेतुः प्रसुर नख रुचाऽज्ञानतामिस्त्रहारी ॥
जयति श्रीयाज्ञवल्क्यो मनु नृपः शुद्ध धर्मः पुचारी ॥ २ ॥

॥ अथ मनु याज्ञवल्क्यानुसारेण व्यवहारपादो निरूप्यते ॥

व्यवहार नृपः पश्योद्विद्वद्भि ब्राह्मणै सह ॥ धर्म शास्त्रानुसारेण क्रोध लोभ विवर्जितः ॥ १ ॥ राज्याभिषेक जुक्त जो है राजा ताको प्रजा पालन परमधर्म है सो प्रजापालक धर्म विना दुष्ट को दंड दीन्हे नही ह्वै सकै औ दुष्ट सुष्ट विना व्यवहार देषे नही जानि परै तेहिते पंडितन को लैकै राजा रोज रोज व्यवहार देषै व्यवहार कौन कहावै की दुइ वादी वाद करत है तौने मा जो झूठ कहत है तौने को निरनै करिकै जौन साच कहत है तौने को स्थापन करब सो व्यवहार धर्मसास्त्र के अनुसार न क्रोधलोभते विवर्जित ह्वै कै राजा देषै इहाँ क्रोध न विवर्जित कहिनि तेहिते मत्सर मदई इ आइगे औ लोभते विवर्जित कहिनि तेहिते काम मोह यही आइगे ॥ १ ॥

अंत—औ जो राजा के मरजी के अनुसार ते पंडित लोग अन्यथा निआउ करै तौ पंडित राजा दोहुन का दंड चाही औ राजा आपन दंड वरुनाय देइ दे या सकल्प कै कै ब्राह्मन का दै रापै औ जौने वादी का न्याय छान कै कै सुद्ध ह्वैगा है औरि वा फेरि न्याय कै उजुर करै है तौ फिरि न्याय कै कै हराय कै दून दंड लेई जो असुद्ध देषि परै तौ फेरि शुद्ध कै देई जो कौनो राजा का नि. . .ष होय औ दुसरे राजा के इहाँ जाय तौ वही राजा . आ उ देषै औ जो राजा अन्याय कै जी का दंड लेइ तौ जेती द्रव्य होय तेकर त्रीसगुन द्रव्या वरुन का सकल्प कै ब्राह्मन का देइ औ जैसो दंड लीन्हिसि होय तेकर बहोरि देइ ॥ इति मिति पुम वदि १३ भोमे कास· १९०४ के साल ॥

विषय—मनुस्मृति और याज्ञवल्क्य स्मृति के अनुसार व्यवहारधर्म का प्रतिपादन।

संख्या २२२ हित चौरासी की टीका रचयिता—प्रेमदासि या प्रेमदास, कागज—देशी, पत्र—२४२, आकार—९६/१० × ७१/४ पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७ परिमाण (अनुष्टुप)—४११४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७९१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री चंद्रभान जी विद्यार्थी एम० ए० लखनऊ, विश्वविद्यालय, लखनऊ।

आदि—श्री राधावल्लभोजयति ॥ श्री मद्धरिवंश चंद्रो विराजते मनमनसि ॥ श्री हिते जू कृत चतुराशीति पदस्य अक्षरार्थ मन सवोदनार्थाय लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ श्री

वंयासकि रूप हित रसिकनि के आधार ।
तिनिको करो प्रणाम नित देहु विमल मति चारु ॥ १ ॥
उग्यौ श्री हरिवंश शशि खिली चादनी भक्ति ।
रसिक कुमुद फूले अमी श्रवत प्रेम आशक्ति ॥ २ ॥
प्रेम सरोवर विवि मिलनि फूल्यौ कमल विहार ।
पीवत रस कलहंस नित श्री हरिवंश उदार ॥ ३ ॥
श्री हित जू के पद कमल फूलौ चित ह्रद चारु ।
प्रेम दासि मन अलि तहा करहु नाम गुजार ॥ ४ ॥
:o: :o: :o:
वाणी श्री हरिवंश की प्रेम रूप निर्धार ।
तिहि वरणत भूलो न उर जानत रसिक विचार ॥ २४ ॥

कीजे तिलक कवित्त वेंध ममुझत होय अवार ।
तातें वचननि मे कहो लीजो सदा विचार ॥२५॥

अर्थ ॥ कोई जोई प्यारो करें सोई मोहि भावें इति ॥ प्यारो उचित अनुचित करें जो सो सब भाव ॥ उचित अनुचित यह क्यों लख्यो कोई सदेह करे ताको उत्तर ॥ करिबे मे दोइं ही है उचित कै अनुचित ॥ उचित तो प्यारे विनहू करे सोऊ भलो लगे ॥ अनुचित तौ प्यारे ही की भली लगे ॥ अनुचित इहा कहा अरु उचित कहा उचित कहा सो सब कहत है ॥ नाइक नाइक की क्रिपा करे सो उचित और अनुचित यह जो दास्य भाव की क्रिया करे सोऊ मोहि भावे प्रेमाधिक्य ते इति ॥

अत--

कवित्त

रस सिंहवागी तामें अक्षर अभूत तरु गोदे सरस मालारु शाखा अनुप्रास है ।
उक्ति जुक्ति पत्र चारु उपमा अपार फूल अर्थ फल प्रियालाल रस सुविलास है ।
रसिकनि हियो भूमि तामे राजे कल्पवृक्ष रूप नीर सीच्यौ गिरा हित हित शाशि है ।
उत्तमहि फलदेत रुचि रुचि अनुसार 'प्रेम दामिनी' के सुख छाया मे निवास है ॥ २ ॥

०. ० ०.

रसिकनि सो विनती करो जो नित रस मे लीन ।
जो मे कीनी धृष्टता सो क्षमियौ परवीन ॥ ६ ॥
सवह सै इक्यानवे सवत माधो मास ।
यह प्रबध पूरण भयो शुक्ल द्वैज वुधवार ॥ ७ ॥

इति श्री सपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥ श्री ॥ श्री ॥

विषय--हित हरिवश कृत चौरासी पदा की टीका की गई है ।

रचनाकाल

सत्रह सै इक्यानवे सवत माधो मास ।
यह प्रबध पूरण भयो शुक्ल द्वैज वुधवार ॥

विशेष ज्ञातव्य--टीका के अत में श्री हित वनचद जी श्री हित रूप लाल जी और श्री हित हरि जी सत्य कृत चौरासी पदा की फलस्तुति भी दी है । फलस्तुति मे प्रथम दो व्यक्तियो के दो छप्पय और अत के व्यक्ति का एक कवित्त है ।

प्रस्तुत हस्तलेख के अत मे हित हरिवश जी के फुटकर पद, कवित्त, छप्पय, कुडलिया और अरिल्ल भी दिए है ।

सख्या २२३ लीलावती (दस्तूर मालिका), रचयिता--फतेहसिह निवासभूमि--जालौन (काल्पी), कागज--देशी, पत्र--४८ आकार--८ X ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--१५, मतर्वे चम्पाय प्रेस (मेरठ) मे प्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप)--६५०, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य लिपि--नागरी प्राप्तिस्थान--श्री प० चद्रिकाप्रसाद जी उपाध्याय, ग्राम--पच पट्टी, पो०--जगमरगज जिला--प्रतापगढ़ ।

आदि--श्री गणेशाय नम ॥ अथ लीलावती भाषा लिष्यते ।

दोहा

गुरु प्रसाद कहि पुस्तक है नाम धरी गुन देषी ।
सव लेषन को गुरु कहे कवीधन को उपदेस । १
श्री गनेस जी करी क्रीपा कीन्हा उक्त प्रवेश ।
जीस कारन दस्तूर सव भाषा करें सुदेश । २
विद्या की इच्छा करो सुमिरो श्री गनेस ।
वसै सरस्वती कठ मै आवें उक्त प्रवेश । ३
बुधि प्रवेशन अरि दलन सकट हरन निदान ।
गौरीजा सुत नीहव सदा सुमीरत मन महं आन । ४

श्री जु साहिब के सरन परनासं सव दुख ।
महाराज जु चक्कवं जो को जो असथा . । ५
हिरदं स सुत सभा सिघ गुनधाम ।
अव......यकं कपत सकल जहान । ६
वुध प्रकाश........वते जीते सब अस्थान ।
दुरजन वचं न भुवन.....षक भूप समान । ७
सबं प्रजा अनंद सो करं स भ काज ।
देत असीस सो नीत नीत सदा अटल राज । ८
'फतेसिघ' कौ करी कीया दीयो सरस्वती ग्यान ।
लेषन को दस्तूर सव भाषा करो प्रमान । ९
:o: ·o· o
लाइ अक ते भागु हरि अत अक गुन लेइ ।
एक अक तर सुन्य सव सुन्य सुन्य सब होइ ।२५
एक अक तर सुन्य सव सुन्य सुन्य सब होइ ।
आदि अत दोउ गुनें सुन्य सव धर नोइ ।२६
'फते सिघ' सछेप गुर कहत यथा अनुमान ।
जाही सरस्वती दाहिनी ताको आवं ज्ञान ।२७

अत—प्रथमहि वेद विधि भनं रसतीआ वद वषान ।
भैभम चेट नाव तं जदी गुनो नोज जान ।
सालो वजद ५छ के राहकीम निरधार ।
कलपदान धोई तज हा जो कोई मद वीस्तार ।
गनकर सहीत ली वाज मे लीख खान दफतार ।

इति श्री दस्तूर मालीका भाषा लीलावती सपूर्णम् सवन १६१३ भाद्रपद ।

विषय—(लीलावती भाषा) गणित विषय वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता का वंशवृक्ष इस प्रकार है—

(महाराज) चक्रवं
|
हिरदेस
|
सभासिंह
|
वुधप्रकाश
|
फतेसिह

संख्या २२४ वद्री यात्रा कथा, रचयिता—अयोध्यानरेश वख्तावर सिंह की स्त्री (?), निवासस्थान—अयोध्या, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—१०×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप)—१५० अपूर्ण (खंडित) रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, रचनाकाल—सं० १७८८ प्राप्तिस्थान—लाल श्रीकंठ नाथ सिंह, धेनुगावां, बस्ती ।

आदि—श्री गणेशाय नम

दोहा

बदरी जात्रा कथा निज कृत लिख्यते ।
श्री गनपति पद वंदि जुग पुनि वदौ गौरीश ।
राम पदांवुज बदि पुनि गुरु पद नावो सीस । १

महाराज पद वंदौं जासु धर्म अौतार ।
धर्म मूर्त्ति दाता परम जसु गावत ससार । २
जासु दान देषत सुनत अवनीपति सकुचाहि ।
मघा रूप घन बरषत जाचक भूमि अघाहि । ३
महाराज भूपालमनि महिपालन के ईस ।
नप वखतावर सिह जेहि नावहि महिपति(?सीस) । ४
तासु रानि सुष दानि जग जात्रा कीन्ह उदार ।
हरद्वार की मग कथा वरनौ हित ससार । ५
फागुन सुक्ल एकादसी चद्रवार सुष . ।
वसु वसु नाग इदु को सम्वत करहि विचार । ६
गगा जो की मदत पर कीन्हो पृथग . ।
माश रोज की मजिल पाचो सवन . . । ७

अत—. . वास सर सव सुख कर हेता ।
मास असाढ द्वितिया . . . . ।
. क रख दिन पथहि गतकीन्हा . . ।
है दाखिल गो अा . . . . ।
६ ४
दीप वेद कर कोस मग वदरी पुरी अौ सेस ।
करि दरस भगवान के कीन्हौ भवन प्रवेश ।
३ १
लोक मास ब्रह्मड दिन लागे आवत जात ।
कीन्हौ दरशन प्रीति जुत पुलकि . . ।

—अपूर्ण

विषय—बदरीनाथ (तीर्थ) यात्रा कथा वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—कुल पाच पत्र उपलब्ध है । ये भी इस प्रकार जीर्ण है कि ठीक ठीक पढने मे नही आते । आदि म बदरी यात्रा कथा निज कृत' लिखा है ।

सख्या २२५ राम अश्वमेध (पाताल खड) रचयिता—वदनराउ, निवास स्थान—अकबरपुर हडहा (अवध), कागज—देशी, पत्र—१५६, आकार—११ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—३७१७ खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८८६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० पुरुषोत्तम दुबे, ग्राम—लेदुका, पो०—बरपुर, जिला—जौनपुर ।

आदि—

. . . . ता सुत वैस्रव नाम ।
वेद पार तप पुज द्रुज सुमति माल गुन धाम ॥

चौपही

दछिन दिसा मेरु के पासा । मुनि पुलस्त तह कीन निवासा ।
सवत वहुत करत तप वीते । विसय वास इन्द्रीगन जीते ।
जान्यौ राम ब्रह्म सव माही । कलस कोटि जिमि रवि परछाहीं ।
सो प्रभु जानि विप्र उर अपने । राम रूप दीपक जिमि घटने ।
मुनि समाधि रभा तह आइ । नाचत गावत ध्यान मिटाई ।
मुनि सहरोस वचन कहि भारी । होई गर्भ ईहा आवत नारी ।
अन जनात मन विदु कुमारी । आवत गर्भ पाडु तन धारी ।
देषत पिता पूछि सव भाषी । भूपहि सोच वहुत अभिलाषी ।

॥ दोहा ॥

वह कन्या भय साथ लै मुनि पुलस्त कह दीन्ह ।
सब गुन रूप सिरोमनि वैस्त्रवनहि सुत कीन ।

भरद्वाज मुनि सत्या कन्या । सब गुनरूप सिरोमनि धन्या ।
सो वैस्त्रवन पाइ वर नारी । पति सेवा पतिव्रता सुभारी ।
श्रीकुवेर ताके सुत भयौ । जननी जनक बहुत सुष दयौ ।
करि प्रसन्न सकर वरदायौ । धनदराज लकापुर छायौ ।
सुनहु राम लकापुर माही । प्रथम निसुद दैत्य घर आही ।

इति श्री पद्म पुराने पाताल षडे सेसवात सहित सवादे राम अश्वमेध तृतीयो अध्याय. २

अथ जग्य थापना डोहा

वात सहित मुनि कहत वहोरी नागराज विनती सुन मोरी ।
:o .o: .o.

अत—

॥ दोहा ॥

मिलन जानकी जग्य हय पावन चरित अपार ।
अति दुलभ सुर सिद्ध मन करि करि थको विचार ।

वाजमेध मै तुमहि सुनाई । वहुत काल उर रही छपाई ।
:o o o·
फिरि गुर कह्यौ मोहि समुझाई । करिए भजन छाडि कदराई ।
वल समान सव षग नभ जाही । तिमि भगवान भजन जन माही ।
यह मन समझि वुद्धि कछु आई । राम कृपा भाष चवपाई ।
o o :o.
हडहा परगुन अवधि समीपा । अकवर पुर तह भाट महीपा ।
षेमकरन हरि भक्त वषानौ । .. .. ।
छन परवीना तेहि सुत वदत महामति दीना ।
दछिन आई सग सत पाई । दया राम गुरुदेव सहाई ।
छाडि देउ सव रन की कथना । उर धरु भले राम के चरना ।
राम चरित सव मोहि सुनाऐ । वार वार जिमि सुवा पठाऐ ।
वार वार सिर धरि गुरु पाऐन । राम चरित चित रचिन उपायन ।

हडहा परगुन अवधि अकवरपुर सुभ गाउ ।
वसत भाट वासोटिया वदन राउ जेहि नाउ ।
वरस अठारह से सवत उपरही उनचास ।
माधव सुधि अष तीग कह राम जग्य कृत मास ।

इति श्री पद्म पुराणे पाताल षडे सेस वात सहित सवादे राम अस्वमेध पैतालीसमोध्याय. ४५

विषय—रामचरित्र वर्णन । विशेषतया जानकी मिलन और राम अश्वमेध कथा वर्णित है ।

रचनाकाल

वरस अठारह से सवत उपरही उनचास ।
माधव सुधि अष तीग कह राम जग्य कृत मास ।

ग्रथ समस्त पैतालीस अध्यायो मे समाप्त किया गया है । प्रथम के पाच पत्र तथा मध्य के १३४, १३५ और १३७ वे पत्र नही है । समस्त ८ पत्र खडित है ।

संख्या २२६क अनभौ प्रकाश, रचयिता—बाबा बदलीदास जी, कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—६७/१० × ५३/१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—६१२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री महंत गुरुप्रसाददास जी, स्थान व पोस्ट०—बछरांवां, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ लिषते ग्रंथ अनभौ प्रकास

॥ सोरठ ॥

गुर पद रज सिर राष अनभौ ग्यान प्रकास करि ।
तुम्हहि कहो प्रभु भाषि दास हृद बसि बिमल गुण ।
मोहि करो प्रभु दास गुर साहब शुषदान तुम ।
देहु मोहि बिस्वास नाम जाकिार छूट नहीं ।
गुर साहेब सुषदान नाम जगतर्ली सुद मदन ।
भक्ति ग्यान गुण वान खेवक भौ जल के सदा ।
जगजीवन शुषमूल मूल हरण निज दास की ।
होहु नाथ अनुकूल निज शुत सेवक जानि मोहि । ४ ॥

॥ दोहा ॥

सारु दारु प्रा लगि तर जल अगाध बरोस ।
तिमि मोहिनाथ उतारिए नमित चरण धार सीस ॥ १ ॥

अंत—चित की थिरता तो ध्यान मन का थिरता चित ।
मन थाके कारज मिटे मटे आतम मित ॥७४॥
जो चित पावै सतगति तो मन होइ निरास ।
जथा देह पारुष थके है इन्द्री रवि नास ॥७५॥

इति श्री ग्रंथ अनभौ प्रकास सम्पूर्ण सं० १८७८ पूस मासे शुक्ल **पक्ष तिथौ नौम्य भौम वार शमत १६३५ ॥**

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या २२६ख अनभौ प्रकाश, रचयिता—बदलीदास, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—३६, आकार—८६/१० × ६३/१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—५६७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६६२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री हरिशरण दास (हिंदी विभाग, विश्व भारती), ग्राम—कमाली, पा०—रानी कटरा, जिला—बाराबंकी ।

श्री गणेशाय नम ॥ अथ अनभौ प्रकास साहेब बदलीदास कृत लिख्यते ॥

॥ सोरठा ॥

गुर पद रज सिर राष अनभौ ग्यान प्रकास करि ।
तुम्है कहो प्रभ भाषि दास हृदय बसि बिमल गुन ॥ १ ॥
मोहि करु अपनदास गुर साहब सुषदानि तुम्ह ।
देहु येक बिस्वास नाम जिाकार छूट नहीं ॥ २ ॥
गुर साहेब सुषदानि नाम जगतली सुष मदन ।
भक्ति ग्यान गनवान षवक भोजल के सदा ॥ ३ ॥
जगजीवन सुष मूल मूल हरन निजदास कर ।
होहु नाथ अनुकूल नि सुत सेवक जानि मोहि ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

सारू दास मे लगि तरो जल अगाध बारोस ।
तिमि मोहि नाथ उतारिये नमित चरन धरि सीस ॥ १ ॥

अंत—जो चित पावै सतगति तो मन होइ निरास ।
जथा देह पोरुष थके है इंद्री रवि नास ॥७३॥

चित्त की थिरता तोषगति मन को थिरता चीत ।
मन थाके कारज मिटै भेटे आतम मीत ।।७४।।

इति श्री अनभौ प्रकाम ग्रथ साहेब वरलीदाम जी उक्तन सपूरन सुभमस्तु ।। अस्वनी मासे कृष पक्षे तिथौ ।। १४ ।। श्री सम्वत १९९२ ।।

।। दोह ।।

लेषक गुर परमाद कवि वामा रमई ग्राम ।
जो प्रति देषा सो लिषा लिद्धि करैं श्रीराम ।। १ ।।
धरम धाम के निकट है गुर प्रमाद अस्थान ।
प्रभु दूलन दाता जहा जानत मकल जहान ।। २ ।।

राम राम गाम राम

विषय—गुरु शिष्य सवाद के रूप मे ज्ञानादेश वर्णन ।

संख्या २२६ग भक्ति विलास, रचयिता—वदली दाम, निवासस्थान—लखनऊ, कागज—देशी, पत्र—१५२, आकार—९-३/१० × ५-७/१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—२७३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३५ वि०, प्राप्तिस्थान—महत श्री गुरुप्रमाददास जी स्थान व पोस्ट—वछरावॉ जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नम ।। लिख्यते ग्रथ भक्ति विलाश

।। सोरठ ।।

श्री गर चरण मराल मम
श्री गरुचरण मराल मम उर मानश विमल शोई ।
वाम करो मब काल वरणौ हरि के विमल गुण ।।
जगजीवन का चरण गर नत परशि धरि शीस ।
भक्ति दाम दाया करण शूल हरण जगदीश ।
जगजीवन तुम्हरी कृपा जो कछ होय शो होय ।
मोहि नही कछ ज्ञान है शुनो तुम शोध ।। ३ ।।

निज उर मान धरहु तुम धीरा । हरब शकल हृदय के पीरा ।।
और कलपवरण पूरण करिहौ । आनि उदर तुव निज अवतरिहौ ।
मन क्रम वचन जो मन वृत्त धारी । धरी देह तेहि हित महतारी ।।
जो जेहि विधि मोहि जानत नीके । पूजहु शकल मनोरथ जी के ।।
जिन करमहि पर नेह नवीना । तिन मे जननि तासु अधीना ।।
मत्र जत्र व्रत नेम अचारा । कलपाव नहि दास हमारा ।।

अत— ।। छ ।।

यह ग्रथ भक्ति विलाम पर्म पुनीत ज नर गावही ।
मत नाम सुमिरण सार साचा मर्म भि हृदय जमावही ।
यह जन्म होत सनाथ मवविधि सिद्धि मब सुख पावही ।
कहै 'दास बदली' त्यागि तन हरिधाम अत सिधावही ।।

।। दोहा ।।

पढै शुनै जो प्रीति करि भाषा भक्ति विलास ।
पाप विनासै सकल विधि पावै हरिपुर बास ।

।। शो ।।

तेहि अघ होइ विनाम भाषा भक्ति विलास शुनि ।
शुषसागर करि बास राम नाम पथ जो रमित ।।

इती श्री भक्ति विलास भाषाकृत शूत शौनक सवादे वदलिदास कृते रामचरित्रे चतुर-विंशमो अध्याय ॥२४॥ शुभमस्तु सवतु १६३५ जेठ मासे शुक्ल पक्षे छठि तिथौ वृहस्पति वासरे ॥ लेखक परमेश्वर दीन—श्री अस्थान बछरावाँ, जिला—रायबरेली श्री सतगुर साहेब सहाय ॥

विषय—सूत शौनक सवाद मे रामचरित्र वर्णन किया गया है। इसमे २४ अध्याय है।

विशेष ज्ञातव्य—ईश्वरदास कृत सतनामी सतो के भक्तमाल मे इनके सबध मे इस प्रकार लिखा है—

> भे पुनि वदलीदास भक्त अति परम प्रवीने ।
> रहत वसे चौगान शब्द पर तन मन दीने ।
> तजि प्रसग सब केर सदा एकात नेवासी ।
> खुलिगे दसौ दुआर भयो अनभौ के रासी ।
> ग्रथ कहेउ सो अति विमल शहर लखनऊ करि कुटि ।
> गुरू जलाली के चरण भरभूजी तन धरि जुटी ॥ ५ ॥

इससे विदित होता है कि ये जाति के भड़भूजा थे।

सख्या २२७. सुदामा चरित्र, रचयिता—वनमाली, निवासस्थान—घोराग, महुली (बस्ती), कागज—देशी, पत्र—४६, आकार—८॥। × ४॥ इच, परिमाण (अनुष्टुप)—८८२, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८५८ वि०, लिपिकाल—(१८५८ वि० ?), प्राप्तिस्थान—श्री प० रामनारायण जी चौबे, ग्राम—मलौली चौबे, डाक०—धनघटा, जिला—बस्ती।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ दोहा ॥

> सुमिरि गणेसहि गौरि गुर गिरा गग गौरीश ।
> रमा रमेश सुरेश सुर किन्नर रवि रजनीश ।
> सहित विद्या त्रिशक्ति सब सिधि अनन्त अलमन्त ।
> नाग पक्ष गधर्व अरु नारदादि मुनि सत ।
> मीन कमठ शूकर मनज हरि वावन भृगु नाथ ।
> राम कृष्ण हलधर वउध कहि धरिहि जातो नाथ ।
> काव्य सकल स्मृति सकल आगम निगम पुरान ।
> विनवो सर्वहि प्रणाम करि देहु कृपा करि ग्यान ।
> कलिमल ग्राह गयद मति कलियुग मरवर माँह ।
> ग्रसत पुकारत त्रसित अति राषि लेहु वजनाँह ।

चौपाई

> दशरथ पुर मडल सुष रासी । मह मोहाल महुली लघु काशी ।
> तेहि परगने मास एक ग्रामा । तह राठोर वस वहु धामा ।
> नाम घोराग ग्राम सब जाने । पश्चिम दिसि वह सरित कुआनै ।
> तेहि पुर कुल प्रगटे 'वनमाली' । कुमति कुवेर सुमति वर पाली ।
> .o: .o o

दोहा

> मम सुत हृदय प्रवेश करि अस चरित्र प्रभु कोन ।
> वार वार समुझाइ मोहि इहै सिषावन दीन ।

चौपाई

> तनय 'भवानी शकर' ज्ञानी । उन्ह मति भ्रमित मोरि पहिचानी ।
> नीम धर सुधा रस मानी । सो मन कहेउ जोरि जुग पानी ।
> सुनहु तात कछु मोर सिषावन । वरनहु हरि जस जनमन भावन ।

संमत अट्ठारह सै अट्ठावन । शुभ तिथि नाग पचमी श्रावन ।
रवि दिन कथा रुचिर अनुसारी । शुमिरि सेत शारद त्रिपुरारी

दोहा

नाम सुदामा विप्र एक भयो भक्त शिर मौर ।
वचन कर्म मन छाडि छल हरि पद पकज भौर ।

अंत— दोहा

रचन सुदामा चरित को रही लालसा मोर ।
सो हमारि मन कामना पुरएउ नदकिशोर ।
:o: .o. o·
चरित सुदामा को विमद पढं सुनै मनलाइ ।
सुख सपति सतति बढं दारिद को दुख जाइ ।
पिगल फल गण अगण के मानुष लहन प्रभाव ।
जागे रघुवर नाम है अगणो सगण सभाव ।
मिटं न मन की मलिनता ताते द्रवहि न राम ।
मन पाषडी बावरे कहा विगारत काम ।

इति श्री सुदामा चरित समाप्त शुभभूयात ॥

विषय—भक्ति विषयक काव्य । सुदामा चरित्र ।

रचनाकाल

समत अट्ठारह सै अट्ठावन । शुभ तिथि नागपचमी श्रावन ।

संख्या २२८ दपति रसिक तरग (बारहमासा), रचयिता—वनवारीदास या लाल, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—५ × ७ इन, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, इसका प्रकाशन सरस्वती प्रकाश पुस्तकालय द्वारा हो चुका है, परिमाण (अनुष्टुप)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९६६, मुद्रणकाल (?) उसी के साथ की अन्य पुस्तक के आधार पर, प्राप्तिस्थान—राज-पुस्तकालय, किला प्रतापगढ, जिला—प्रतापगढ ।

आदि—श्री रसिक तरङ्ग

यह पुस्तक सरस्वती प्रकाश पुस्तकालय मे मिलगी । श्री गणेशाय नमः

दोहा

श्याम राधिका विरह सुनि बाढत प्रेम उमद ।
तासो रसिकन करि कृपा देखिय रसिक तरग ।१।

सवैया (आषाढ)

सोवें रमापति हू लै रमा इहि मास मे होय पियाकब ऐहै ।
ग्रीषम हू अब वीत चले सखि पावस मे घन शोर मचैहे ।
प्रीतम प्यारे विना हियरा धडकं जियरा रतिया मे डेरैहैं ।
मोहि अदेस सदेस सखी 'वनवारी' मे जाय के कौन सुनैहै ।

सावन

सावन मास सुहावन पावन आवन की पतिया न पठावै ।
रात अँधेरी अकेली रहो चपला चमकै अरु काम सतावै ।
नाचत है मोरवा वन मे अरु दादुर झीगुर शोर मचावै ।
काह कहू 'वनवारी' विना यह सावन भावन मोहि न भावै ।

अंत— ज्येष्ठ

हारि तु राजो गयो सजनी रजनी यह जेठ की कैसे वितैहैं ।
सीतल मोहि करो कितनो कोउ प्यारे विना यह ताप न जैहैं ।
पानिहूँ आई न नको सखी यहि ग्रीषम मे जिय कैसे के रैहै ।
जाय है प्रान न रैहे किहूँ मलमास मे जो वनवारी न ऐहै ॥ २ ॥

पुरुषोत्तम

आवन औधि नदी पुरुषोत्तम मै वनवारी हमारो पियारे ।
आए नही इतनी कहि फूल छडी सी पडी तन नाहीं सँभारे ।
आइ गए इतने मे लला हिय लाय लये दृग ते जल धारे ।
बारहो मास छनै में सदा निन होत जू पारस के रिझवारे ।१३।

दोहा

यह वनवारीदास कृत दर्पति रसिक तरङ्ग ।
पढिय सुनिय मन गुनिय जन वढिहहि हिय रस रङ्ग ।१।

इति श्री रसिक तरङ्ग वनवारी लाल कत सपूर्णम् शुभ मि० वैशाख शुक्ल ३ शुक्र

विषय—बारह महीनो के छदो मे बारहमासा वर्णन ।

सख्या २२९ वनारसीविलास, रचयिता—वनारसीदास, कागज—देशी, पत्र—१४१, आकार—९ X ६½ इच पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—२९९६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७०१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर (बडा मदिर), मोहल्ला—चूडीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—॥ श्री वीतरागाय नम अथ वाणारसी विलास लिष्यते अथ जिन सहस्र-नाम लिष्यते ॥

परमदेव परनाम करि गुरु को करौ प्रनाम ।
बुद्धि वल वरनो ब्रह्म के सहस अठोतर नाम ॥ १ ॥
केवल पद महिमा कहूँ कहू सिद्ध गुनगान ।
भाषा प्राकृति सस्कृत त्रिविध शबद परवान ॥ २ ॥
एकारथ वाची शबद अरु दुरुक्ति जो होई ।
नाम कथन के कवित मै दोष न लागै कोइ ॥ ३ ॥

अत— ॥ अथ प्रशस्ति ॥

नगर आगरे मै अगरवाल आगरौ गरग गोत आगरे मे नागर नवल सा । सग्रही प्रसिद्ध अमैराज राज मान नीक पचवाला नल्लिनी मै भयो है कवल सा ।

ताके परसिद्ध लघु मोहन ते सघ इनि जाके जिन मारग विराजित धवल सा । ताही कौ सपूत जगजीवन सुदिढ जैन वनारसी वैन जाके हियै मै सवल सा ॥ १ ॥

समै जोग पाइ जगजीवन विख्यात भयौ ग्यातनीकी मडली मे जिसको विलास है । तिननै विचार कीना नाटक बनारसी का आपके निहारिवे कौ आरसी प्रकास है । और कवि घनीश्वरी कही है वनारसी ने सो भी एक क्रम से ही कीजे ग्यान भास है । ऐसी जानि एक ठौर कीनी सव भाषा जोरि ताकौ नाउ धर्यो यौ वनारसी विलास है ॥ २ ॥

॥ दोहरा ॥

सवह सै एकोतरै समै चैत सितपाष ।
दुतिया सपूरन भई यह वनारसी विलास ॥

इति श्री वनारसी विलास भाषा समाप्त ॥

विषय—कवि की विविध विषय सबधी कविताओ का सग्रह ।

रचनाकाल

सत्रह सै एकोतरै समै चैत सित पाष ।
द्वैतिया सपूरन भई यह बनारसी विलास ।।

संख्या २३०. श्री कृष्णजन्म खण्ड, रचयिता—बलदेवदास जोहरी, स्थान—हाथरस (मथुरा के निकट), कागज—देशी, पत्र—३२८, आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप)—११०८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६०३ वि०, मुद्रणकाल—सं० १६२४ वि०, प्राप्तिस्थान—राज्य पुस्तकालय किला प्रतापगढ, प्रतापगढ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ श्रीकृष्ण जन्मखंड भाषा बलदेवदास जौहरी कृत लिख्यते ।।

दोहा

विधि हरिहर जाते भय ताते जग परसंग ।
नंद गोप सुत प्रगट सो जय जय राधा कंत । १
बंदौ राधा रमणपद जाहि भजं अज ईश ।
हरनताप त्रय सुखकरन जन रक्षक जगदीश । २
जाहि भजे शिव शेष अज सुर मुनि इंद्र गणेश ।
श्री गिरिजा सरस्वति रटै बंदो वहो व्रजेश । ३
थूल थूलते तन धरे राम रोम ब्रह्मांड ।
ऋषि रच लघु प्रकृतिते महिदादिक बल वंड । ४
.० ०: ०
कामधेनु भारती श्रुति गण वत्सा जासु ।
सुधा दुग्ध दुहि व्यास जू ब्रह्मवर्वत प्रकासु ।१३
चारखंड ताके प्रगट ब्रह्म प्रकृत समनेत ।
कृष्ण खंड है अंत मे भाषा कीनो तेसु । ४
:०: :०˙ ०.
३ ० ६ १
गुण अकाश नव चद्रमा भादव मास पुनीत ।
असित पक्ष षष्टी सुबुध वरनत कथा विनीत ।१६
मथुरा निकट हाथरस नगरी । जोजन तीन दूर सो सगरी ।
तहा जन्म विधिना मोहि दीन्हो । वैश्य वरण प्रगट्यो मतिहीना ।
अग्रवाल मम जात बषानो । राधारमण उपासक जानो ।
'जयगोपाल' नृपति के पासा । कियो धोलपुर मध्य निवासा ।
एक दिन मोर चित्त मै आई । कृष्ण चरित्र कहौ सुषदाई ।

दोहा

इष्ट भावना प्रगट लषि कृष्णखंड के माहि ।
सुजननि हित भाषा करो जो पढ़ सुनि हरषाहि ।

अंत—

मति अनुसार कथा सुखदाई । यो बलदेव जोहरी गाई ।
जद्यपि कविता अंग न जानो । तद्यपि राधा वर गुण मानो ।
जद्यपि अलंकार नहि एका । तद्यपि हरिगुण भूषण जेका ।
जदपि कूर कविता मे कीनी । तदपि नंद नंदन रसभीनी ।
सुवरण भूषण कूर बनावै । तौऊ मोल सुवर्नेहु पावै ।
रचि पचि पीत गढ़ै जो कोऊ । सोने सम दाहै नहि सोऊ ।

त्योंही सज्जन लखि हरिनामा । राधावर चरित्र छविधामा ।
करिहैं प्रीति देइ नहि खोरी । जद्यपि कूर कवितई मोरी ।

दोहा

एक एक जन प्रति करो दड प्रणाम करोर ।
लघु कविताई दोषके देह न मोको खोर ।

इति श्री ब्रह्मवैवर्ते महापुराणे श्री नरायण नारद सवादे श्री कृष्ण जन्मखडे भाषा बलदेव दास जोहरी कृते सवत १८०४ ।

विषय—[illegible]

रचनाकाल

गुण प्रकाश नव चद्रमा भादवमास पुनीत ।
असित पक्ष षष्टी सुबुध बरनन कथा विनीत ।

सख्या २३१ शृगार सुधाकर, रचयिता—बलदेव द्विज (स्थान—दासापुर), कागज—देशी, पत्र—२५, आकार—[illegible], पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप)—८२५, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९३५ वि०, मुद्रणकाल—स० १९२३ वि०, प्राप्तिस्थान—राज पुस्तकालय किला प्रतापगढ़ प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नम

शृगार सुधाकर

श्री गणेशाय नम अथ शृगार सुधाकर ग्रथ प्रारभ ॥

दोहा

श्री राधा राधारमन धारि हिये सुख सेव ।
सुभ शृगार सुधाकरहि बरनत 'द्विज बलदेव' ।

सवैया

ज जगदेव पवार के बस मे प्रगटे भूप भए सुखदाई ।
दान औ मान कृपान बली बलदेव विनोद म प्रीति सोहाई ।१।
पारद थारसी हीरक हारसी निर्मल आरसी थारसी धाई ।
थोरति थाप तिहूँ पुर सौरति कीरति सिह की कीरति छाई ॥ २ ॥

दोहा

तासो भो पुहमी पगट 'विजासिह' सुखधाम ।
निज जस बलसो विस्व के विज किए सब काम ।३।
'जबरसिह' ताके तन जबर सब ठौर ।
काज किये नहि करिसकै जाको सरिबर और ।४।
ज्यहि छितिपति सो पगट भो सुरतरु कमोसाज ।
धन्यभाग जाहिर जगत 'दलथभन' मृगराज ।५।

सवैया

ग्राम इशानमे नदिपसी कूल जाजतहे 'हथिया' सुषसागर ।
श्री दलथभनसिह धराधिप नागर तितही गुण आगर ।
सिद्धि सिगार सुधाकर को बच जासु भन उदयादि उनागर ।
प्रेम प्रसगते तारनवृद से मोद भरे जन स. नागर । ६

सोरठा

अनुज वासु गुणधाम मुन्न उदार मति ।
बलि बलि सद अभिराम त्योंही श्री बलसिह जू । ७

दोहा

सवविधि द्विज वल देवकी पूरो प्रमुदित आस ।
नाम आपनो काव्य मे धरो नृपति द्विजदास । ८

सवैया

१ ३ ६ १

सवत विक्रमसेन महीपति को शशि राम ग्रहो भुवि चीन्हो ।
कार्तिक कृष्ण एकादशि त्यौ गुरुवार विचित्र विचारहि लीन्हो ।
श्री दलथम्भनसिह नरेस उजागर उत्तम आयसु दीन्हो ।
ग्रथ "शिगार सुधाकर को बलदेव अनन्द कृपा प्रभु कीन्हो । ९
आप सुताकर लै वलदेव यो श्री वृजराज ही को गुणगावत ।१०

अत—आनन को लहि कै जगमे तें सुआनन के मत को यह काम है ।
तू 'बलदेव' न भूलं कबो रटियो सब ठौर मुधी अभिराम है ।
चड प्रचड जथा तम तोम पे दीनन को ज्यो दुकाल मे दाम है ।
त्यौं विपदा के विदारिबे को बक केशव श्री वृजराज को नॉम है ।

इति श्री नृप दलथभनसिह आज्ञानुसार द्विज बलदेव विरचिते शृगार सुधाकर शुभमस्तु ।

विषय—१ कृष्ण चरित्र, भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन ।

रचनाकाल

सवत विक्रमसेन महीपति को शशि राम ग्रहो भुवि चीन्हो ।
कार्तिक कृष्ण एकादशि त्यो गुरुवार विचित्र विचारहि लीन्हो ॥

विशेष ज्ञातव्य—उनका वश परिचय इस प्रकार है—

१ कीरतिसिंह ।
२ विजैसिंह ।
३ जबरसिंह ।
४ दलथभन (रचयिता के आश्रयदाता) ।

सख्या २३२क. वैद्य विद्या विनोद या वैद्य विनोद, रचयिता—ब्रजभद्र, कागज—देशी, पत्र—५४, आकार—८ २/१० × ४ ३/१० इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—११४७, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६४ वि०, प्राप्तिस्थान—प० श्रीपाल जी वैद्य, ग्राम—खजुरी, डाक०—गौरीगज, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ अथ वद्य विनोद लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

शिव सुत सेइय आदि हो मन वच क्रम कै मित्त ।
कुमति विनासन सुमति कर आनद करता नित्त ॥
रूप रेष नहि जाके तिहि पूजौ धरि ध्यान ।
जडता देह निवर्त करु उत्तम दीज ज्ञान ॥
शिवा भवानी सरस्वती मै वदत हो तोहि ।
पद अक्षर लालित्य धरु षोटन आवसि मोहि ।
गुनिन्ह वुद्धि अति अगम हे ताते मोमति हीन ।
कर जोरे विनती करं जाते होत अधीन ॥

अत— ॥ अथ मलहम घाउ गभीर सरनिको ॥

घाजु ३७ तेल तिल को २० मैन २ विहरोजा चोरु ॥ २ ॥ मुस घरु जगाल २ लीला थोता २ मलहम करि फाहा दीजे घाउ नीका होइ ॥

इति श्री बलभद्र विरचिताया वैद्य विद्या विनोद समाप्तम शुभमस्तु ।। सम्वत १८६४ कातिक मासे शुक्ल पक्षे पचम्या बुध वासरे ।। पोस्तक मिदमूलेख्य टेकधर राम सरमणे ।।

विषय—आयुर्वेद विषय वर्णन ।

संख्या २३२ख विद्या वैद्य विनोद (वैद्यक), रचयिता—बलभद्र, कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—३६०, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० बुद्धिसागर मिश्र 'पचानन', ग्राम—बढ़नी, डाक०—भानगज, जिला—बस्ती ।

आदि— . . . ता एन्ह की नामक रोग ।

मार्ग पोष अरु माघ मे ओ तासु ।
पुनी अषाढ पडित कहे वाउ राज षट मासु ।
अस्वनी . . ओ वसाष जेठ मास ।
सभहि रिधि भाष ।
बहुतक ग्रथ नहि दीषहु जाई ।
इन्ह मह राज पित्त का होइ ।
दोष प्रगट ताको कहो देष ग्रथ को तत्थ ।
फागुन चैत विचारिवो कफराजा समरत्थ ।
:o. o o
परघट करौ तेहि भाति के ओषध रोग निदान ।
.o o .o.
बग वृक्ष अवलोकि के माया रचो जो मोद ।
सोभित उत्तम जोग के विद्या वैद्य विनोद ।
जो प्रवीन बहुभांतिहि औषध रोग निदान ।
ते नर अपने जन्मते सुने न आन्हि कान ।
जेन कहे कहु ग्रथ मन प्रगट करो ताहु मित्र ।
उतम वस के सवस अती छत्री कुलह निवास ।
पडित केसोदास सुत काय ग्रथ प्रकाम ।
धर्म सील रत नित्य हो किए हरिचरन सुख मोद ।
करी 'वलिभद्र' विचारि के 'विद्या वैद्य विनोद' ।
ताहि लाभ आदि हो जे कहा ग्रथन्ह भाष ।
मै कहि वैद्य विनोद मे . . . सुभाष ।

अत— सोरठा

कठ विसेषि कफ होइ निसादाह पुनि सीत दिन
मरिहै रोगी सोइ कछु न वन उपचार तिसु ।
अतरदाह वियापै जासु । सीतल देह नीद को नासु ।
अतिबल हानि स्वास अति होइ । ताको औषध करो न कोइ ।
जाको थोरो होइ अहार । मुत्र पुरीषसु वहु अधिकार ।
ऐसो रोग वियापे जासु । ताको निगिहै कर विनास ।
गुदा भ्रष्ट अरु हीन स्वर काम स्वास पुनि जासु ।
व्याकुल हुचुकी सोथ तन तेहि जम पुरहि निवासु ।
हृदय चरन कर नासिका नाभि होइ हिम जासु ।
सीस तप्त जिसको रहे जमपुर ताको वास ।
वर्प्पन घृत जल तेल मे छाया देषहु आनि ।

—अपूर्ण

विषय—वैद्यक विषय वर्णन ।

संख्या २३३. कृष्ण चद्रिका, रचयिता—वलिदेवदास, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—७८, आकार—१०½ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप—४६७२, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—राय अंबिकानाथ सिंह जी (लाल साहब), नाटन स्टेट, डाक०—सूची, जिला—रायबरेली ।

आदि—

. . . .
. . . . ई । लाल लाज तजि लेह मनाई ।
एहि विधि सुनि मषियन के बैना । रसिक राम गवने पर ऐना ॥
तिरस्कार निज प्रभु कह देखी । श्री दामहि भयो कोप विसेषी ॥

॥ दोहा ॥

परम ईश्वरी राधिका चढौ कोप मन भौह ।
श्रीदामा वोल्यौ वचन ह्वै सरोष तेहि सौह ॥ ४ ॥

॥ चौ० ॥

का यह बात कही तुम माता । मम ईश्वर सव कहँ सुख दाता ॥
विनु विचार अस अनुचित वानी । कहति क्रोध वश भई अमानी ॥
विधि हरिहर धर्मेश अनता । कारण करन एक भगवंता ॥
माया प्रकृति उमा श्री वानी । जा कह अगुन ब्रह्म करि जानी ॥
ब्रह्म शक्ति जो एक अनेका । जिमि यक वारि तरग विवेका ॥
स्वय ब्रह्म जो स्वात्मा रामा । स्वयमिद्ध परिपूरण कामा ॥
:o: o :o:

॥ दोहा ॥

परम वैश्नव विश्नु प्रिय जानि तुमहि मुनिराज ।
कह्यौं कथा श्रीकृष्ण की जगजीवन हित काज ॥ ४ ॥

इति श्री ब्रह्मवैवर्त महापुराण मते कृष्ण षडान्तर्गते कृष्ण चद्रिका द्वितीय कला वलिदेव दास कृते भाषा श्री नारायण नारद सवादे कृष्ण नाम करण लीला वर्णनो नाम सप्तम प्रकाशः ॥ ७ ॥

अंत—

जय परब्रह्म सुमंगल मूल अमगल के निर्मूल करैया ।
मूरति थूल सुरग दुकूल सुमोदक अकुश शूल धरैया ।
सिंधुर आनन कुंडल कानन, कीट उदय जनु चद्र तरैया ।
गौरि महेस कुमार गनेस हमेस कलेस अँदेस हरैया ॥ १ ॥
जै यक दत लसै दुतिवत उपाधि हरत दरिद्र दुरैया ।
ग्रीव मे लाल के माल विसाल चतुर्भुज दीन भडार भरैया ।
रतनमई अग अग विभूषण ओढर पे वलिदेव ढरैया ।
गौरि महेस कुमार गनेस हमेस कलेस अदेस . . . . ॥
:o: o. .o:

—अपूर्ण

विषय—कृष्ण चरित्र वर्णन ।

संख्या २३४. रमल (?), रचयिता—बहमन, निवासस्थान—हीरापुर (हीडो
कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६॥ × ४। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अ
ष्टुप)—४८, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, र
काल—सन् ११२१ हिजरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० रामस्वरूप जी पांडेय, ग्राम—मछेव, पा
पुरा, डाक०—लाला बाजार, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—

बहुरि चौदही अत तिसमी आधी राति निहरौ।
होन माल गज स्ताकहि अपनोक्ता रमल निकरव।
नजइल वाहिद ले यह पा अरुतदुल लग्न धरावउ।
ध्यान धरौ पहिले कादिर्के पाछे रमल सधावउ।१६
जागह पाक पाक कय डारौ जहा असुभ नहि बोलय।
जहाँ अवर खुसबोई महकय नव किताव बोलय।१७
हियरौ ग्यारह सय एकै महद जुलसी हम मतीन।
साहि बहादुर के याहद मे यह यन परवीन।१८
वहमन समसको ववदही कर्म रिहा दस ठान।
फाल्गु सुदी त्रयोदशी कियो ग्रंथ को वान।१६
जह नवाव एक राह्या खा करत नेक हय राज।
'हीरापुर हिडोन' मे सवके सिर हय ताज।२०
हाकिम वडो दलेल हय ग्हो सय फुल्लह षान।
भाई षुर्द नवाव जानय सकल जहान।२१
सनाव छे जय कृष्ण है वगत महर हिडवार।
पडं औलिया षान पय पुष्य नक्षत्र गहि स्रवण।२२
ओस्ताद औलिया खान हया मुजिस अवर रमाल।
नेक कुरे को डारने छिप नहि कछु हाल।२३
प्रथम शकल शोनहन को नवग्रह सो विस्तार।
हानिम सुअहु दुख को मुख को करत विचार।२४

अंत—ग्यारह घर फलहस हिवु रमान।
वारहे घर हजीजवु रहमान।
शनि पाचावें घर पर थान।
अदद वारहे त्रुव सियान।
महीना जिल्का वषत मुवैहु अरु सामा।
षेती वागे वर्स सुष्यात।
जरद रग पाराज निहान।
कद वडा पडित की जानि।
गुरु का दिना चाद को रात्रि।
सूरति षूव और फर्र कालादर निश मद।

—अपूर्ण

विषय—रमल (ज्योतिष विषय) वर्णन।

संख्या २३५क बारहमासा, रचयिता—आहाव या औहाव (बहाव), कागज-
देशी, पत्र—८, आकार—६॥ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, मतवाग गुशलन महम
के द्वारा प्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप)—३१२ पृष्ठ, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागर
प्राप्तिस्थान—श्री पं० गुरुप्रसाद जी मिश्र, ग्राम—हीगनगौरा, डाक०—कादीपुर, जिल
सुलतानपुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ औहाव का वारहमासा लिख्यते
सखी बिछुरन कहानी मै सुनाऊं । कि वारहमास पिव बिन क्यो गंवाऊं ।
सुनतहि आसु भरि आये नयन मे । जिसे वेदन विरह का होइ तन में ।

महीना आषाढ

आसाढ अब साम के दल मुझको घेरा । कहै घनश्याम से को हाल मेरा ।
उठी बग पांत पहिल फौज लेकर । सभाला जाय के हरवल का लरक ।
नगाड़े मेघ के वाजे गगन पर । मदन को चोव लागी मुझ बदन पर ।
उठी है फौज कारी सी घटारी । बचावे को नही घर मे मुरारी ।
चहूँ दिश श्याम बादल घेर आए । मनो मन मत्थ ने हाथी चलाए ।
गगन में मेघ घोड़े से जो धाए । जो होते कथ घर लगते सुहाए ।
सखी झीगुर नफीरी सी बजावें । पिया बिन कान की किगरी उडावें ।
लगे दादुर जो नौवत सी वजावें । अकेली सेज पर कव नींद आवें ।
छटा चमकै खडग सी बीच घन के । बिरह काटै करै दो टूक तनके के ।
वदरवा लै कमा आया गगन पर । मदन के तीर धाल मेरे तन पर ।

अत—

माहलौद

महीना लौंद का प्यारा सवन को । मिलावै जो सखी बिछुरे सजन को ।
सखी री नाम उनका मै न जानौ । कहौ सूरत उन्हो की क्या वखानौ ।
न जानौ वे फरिश्ते या परी थे । सखी मोहन के कोने वह खडे थे ।
उन्हो मे एक थी वह लग बाधे । सिरहाने अपने देखा मैने ठाढे ।
चहा मै दिल से उनके पास जाऊ । सखी आखो से आखें मै लडाऊ ।
गली उनकी मैं हाथौ सब हारौ । सखी पलको से उनके पाव झारौं ।
उन्हो की सूरतो सेवा रजाऊ । चरन उनके पकड मै पार जाऊ ।
इकाइक आख मेरी खुल गई री । न देखा कुछ बहुत हैरां हुई री ।
सखी फिर आख मदी मैने सोई । वहा देखा तो कुछ कोई न कोई ।
नसीव अपना भली मै पाया छटा । कि इतने पर मुझे माई ने पूछा ।
नसीवो मे मेरे इतना लिखा था । कि पहुचौ उस जगह प्यारा जहा था ।
भरोसा है मुझे माई का अपने । कि मैं इक बार देखा उनको सपने ।
यही इस घाव की तावीर हेगी । सदा आनद अब मुझको रहैगी ।
वही माईं मुझे पिय से मिलावें । वही मुझको गुनाहो से बचावें ।
मेरी वेदन हरगा पीव मेरा । लगावैगा सखी वह पार बेडा ।
कहै 'औहाव' सोई साईं मेरा । मुहमद है गुरु जिसका मै चेरा ।

इति वारहमासा औहाव समाप्तम् बीच मतवे गुलशन महम्मदी एहतमाम मुन्शी मुसाहिब अली मे छपो ।

विषय—बारहमासा वर्णन ।

सख्या २३५ख वारहमासा, रचयिता—औहाव (?वहाव) कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६॥ × ६ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४ बहम्ल फयज, उरई (जालौन) से प्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप)—८८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० विश्वम्भरनाथ पाडेय, ग्राम—पाखरा पाडेय, डाक०—डुमरियागज, जिला—बस्ती ।

आदि—॥श्री गणेशाय नम ॥
सखी बिछेरन कहानी मै सुनाऊ । कि वारहमास पीव बिनु क्यो गमामू ।
सुनत हो आसुभरि आये नयन मे । जिसै वेदन विरह का होय तन मे ।

बारहमासा अषाढ

असाढ अव साज कै दिन मुझको घेरा । कहै घनश्याम से को हाल मेरा ।

उठी इकपात पहले फौज लेकर । संभाला जाय के हर बल का लशकर ।
नगाड़े मेघ के बाजे गगन पर । मदन की चोब लागी मुझ बदन पर ।
उठी है फौज कारी सी घटारी । बचावें को नहीं घर पर मुरारी ।
चहू दिस स्याम बादर घेर धाये । मनौ मन मस्त ने हाथी चलाये ।
गगन मे मेघ ज्यो घोड़े से धाये । जु होते कंथ घर लगते सुहाये ।
सभी झींगुर नफीरी सी बजावें । पिया बिन कान की झिगरी उडावें ।।
लगे दादुर जो नौबत सी बजावें । अकेली सेज पर कब नींद आवें ।

.०.   .०:   :०:

जिसे ना प्रेम की कारी लगै तीर । सुका जाने कि कैसी और की पीर ।
मिताई कर सखी किन चैन पाई । न होती जग में यह वैरिन मिताई ।
सखी ज्यौं त्यौं असाढ अब बीत जैहे । न जाने कौन दिन सानन सहै है ।
कहानी प्रेम की 'औहाव' गावें । कि बारह मास नाम अपना लावें ।

अंत—

नसीब अपना सखी पाया मैं छूछा । कि इतने पर मुझे साईं न पूछा ।
नसीबो मेरे इतना कहा था । कि पहुचो उस जगह प्यारा जहाँ था ।
भरोसा है मुझे साईं का अपने । कि मै इक बार देखा उनको सपने ।
यही इक ख्वाब की ताबीर हैगी । सदा आनंद अब मुझको रहैगी ।
वही साईं मुझे पिय से मिलै है । वही मुझको गुनाहो से बचै है ।
मेरी वेदन हरेगा पीव मेरा । लगावैगा सखी वह पार बेड़ा ।
कहे 'औहाव' साईं सोई मेरा । महम्मद है गुरु उसका मै चेरा ।

बारहमासा समाप्त । औहाव कृत ।
मतबअ बहरुल फयूज
मुकाम
उरई जिला जालौन मैं लाल बैजनाथ के एहतिमाम से छापा गया ।

विषय—बारहमासा वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ईश्वर भक्ति (भगवान से मिलने) पर लिखा गया है । उर्दू के शब्द अधिक है । भाषा अवधी है ।

संख्या २३६ सुखदेव पुरान, रचयिता—बागेस्वर भारथी, निवासस्थान—बुढानपुर (नगर), कागज—देशी, पत्र—६८, आकार—११५/८ × ५६/८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—१२२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०६ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० जगन्नाथ जी पांडे, स्थान व डाक०—राजाऊ, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नम ।। श्री गुरवे नम ।। अथ सुषदेव पुरान प्रारंभ ।।
प्रथमहि बिन योजन पति स्वामी । आदि अंत तुम अंतरजामी ।।
सदा सहाई कवीन कह होहू । अब कछु दया करहु प्रभु मोहू ।।
अब बंदौ तुव आदि भवानी । वाक वादनी त्रिभुवन रानी ।।
कथा कहत जग निरभै मानौ । दया करहु कछु कीर्त बषानौ ।।
कहा चरित्र व्यास सुत केरा । रंभा सुषदेव बद नीबेरा ।।
कथा कहौ कछु ज्ञान विसेषी । श्रवणन सुना नैनन देषी ।।

।। दोहा ।।

ज्ञान चरित अमृत कथा कहौ गणेश मनाई ।
पाच देव के पाउ परि हरिहर होहु सहाई ।।

:०:   ·०·   :०:

तेज पुंज जहा रूप अपारा । तहवा व्यास मुनि जाई पुकारा ।।

नमो नमो परब्रह्म मुरारी । दया समुद्र प्रेम हितकारी ।
भव भंजन निरजन स्वामी । आदि अंत तुम अंतरजामी ।।
बसहु सकल घर दुष सुष जानहु । मन की बात सबै पहिचानहु ।
तुम हरि माता पिता गुर देवा । मन क्रम वचन तुम जानहु भेवा ।

।। दोहा ।।

कहो कहा हरि तुम सों तुम जानहु सब भेव ।
बसुधा भार उतारि कै सुषी किए सब देव ।।

अंत—सुषदेव जति चरित्र यह सुनै तो बैकुंठहि जाय ।
अतिथ 'बागेस्वर भारथी' करी कथा बनाई ।

:o: :o. o

रवि तन तपति जह बहई । तेहि तट नगर बुढानपुर अहई ।
तेहिपुर मह गीरत सवारा । बागेस्वर भारथी नाम हमारा ।।
सति पुत्र हम जाति सन्यासी । निसुदिन सदा धावै अविनासी ।।

।। दोहा ।।

सति ब्रह्मलोक की आई वसि ससार ।
तेहि सति के गर्भ मो मोह मलीन अवतार ।।

:o· o: ·o

नाचै कन्या बहुविधि सरस सब जाई ।
परै चूक सेक कछु तब ब्रह्मा रिस आई ।।
देई श्राप ब्रह्मा रिस आई । नारि औतार लेउ तुम जाई ।।

:o. :o. o

पति सो प्रीति लगावहु जब तई जीवैं कत ।
तेहि पीछे मुष राम कहि करहु देह भसमत ।।
राम नाम कहि छाड़हु प्राना । तब पावहु मुक्ति अस्थाना ।।

:o: :o o

कथा बना बागेस्वर अस्तुति कीन चितलाई ।
धर्म जग मो जिति लियो अमृत कथा सुनाई ।।

इति श्री सुषदेव चरित्र सपूर्णम् ।। समत १६०६ सौम्य नाम सवत्सरे उतरायणे माघ मासे शुक्ल पक्षे तीथौ दशमी रोज भौम्य वासरे ।। हस्ताक्षर महादेव पठनार्थ नदलाल पाडे वस्ती हिंदुस्थान ।।

विषय—व्यास पुत्र शुकदेव मुनि का चरित्र वर्णन किया गया है ।

सख्या २३७. जानकी राम मगल, रचयिता—बालकृष्ण, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६।। × ४। इच, परिमाण (अनुष्टुप)—१६, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० राधारमण जी, ग्राम—पडित का पुरा, डाक०—बेला रामपुर, जिला—प्रतापगढ ।

आदि—

नयन रहे जलपूर पिता ओर मातु के ।
ऋषि नीके राषो हो कुवर अनाथ के ।१०
आगे महामुनि विश्वामित्र जी पीछे लछिमन राम जी ।
सजल तन घनश्याम सुदर सकल पूरन काम जी ।११
राजत वदन विसाल वाके दृग सो हने ।
नासा प्रम सुधारि मुनि नाम के मन मोहने ।१२
उठी राक्षस घोर महाप्रभु वान एक सो हनी ।
विप्र काज कर पूरन करि कृपा कौशिक धनी ।१३

गास्यो गर्भ गुमान ध्यान हरि मो धरो ।
चौक परी जिय माह राम मर से डरचो ।१४
ब्रह्म अस्त्र धरि वान मारिच सुमारियो ।
सौ जोजन तन परो हे के सुधिन समारियो ।१५
मारिच मारि सुवाहु मारो मुनिन के मगल भये ।
सुर विमानन पुष्प वर्षे हर्षि मुनिन जय जय कियो ।१६
रचो सुयवर जनक राम चलि देषिये ।
आयहे कहू भूप रस रूप पेषिये ।१७

अत—पुछत मिथिलेश कोवर ऋषि कवन के ।
पुरण जिनके भाग दोनो सुत जान के ।३०
महा सुभट रणधीर दोनो गुन लाय के ।
रघुबसी महाराज दशरथ राइ के ।३१
नर नारी सब यो कहेय दोउ बश किशोर हे ।
शिव धनु कठिन कठोर केम करि तोरिहे ।३२
अष्टस मिल कष्ट करो धनुष सभाविच आनियो ।
वडे वडे भूप गयद वठे धनव किहुह न तानियो ।३३
कहूं सिया जा सुनो पिताजो धनुष को प्रण जिन करो ।
के तजि देऊगि प्राणवर यही वरो ।३४
करुणा सागर रमा जीव की जानियो ।
पीतावर कटि वाधि धनुष को तानियो ।३५
जय जय कर तिर्लोक भा खिलि आइये ।
'वाल कृष्ण' श्रीरामचद्र जानकी वर पाइयो ।३६

इति श्री जानकी राम मगल सपूर्ण ।

विषय—श्री रामचद्र जी और जानकी जी के विवाह का वर्णन ।

सख्या २३८ नेह प्रकाश, रचयिता - नारायण, कागज - ... , पत्र — १०, आकार — १०१/१० × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) — १० परिमाण (अनुष्टुप्) — १७५, पूर्ण, रूप — प्राचीन, पद्य, लिपि — नागरी, रचनाकाल — स० १९०६ वि०, लिपिकाल - स० १९८५ वि०, प्राप्ति-स्थान — डा० त्रिलोकीनारायण जी दीक्षित, हिंदी विभाग लखनऊ, विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—श्री जानकी वल्लभाय नम अथ नेह प्रकाश लिष्यते ।।

।। दोहा ।।

भूषन नग जगमग रहे दरस करत बड भाग ।
जनु द्रग अनुराग कन मनो तन मा रहे लाग ।। १ ।।
मुक्ता माल किधु भरही प्रिया हसनि लगि हीय ।
रहे अग सो उरझि अकि सज्जन मन कमनीय ।। २ ।।
गुढ वेद वेदो को निज सिद्वात स्वरूप ।
जोति मिवा आल्हादिनी सक्ति सक्ति मन भूप ।। ३ ।।
प्रकृति पुरुष ते जो परे परातत्व रस रासि ।
सो वहि परम उपासना हे जो परम उपास ।। ४ ।।
ये काकी नहि रमन है चहत महायहि सोइ ।
रमत येकही वृह्म यह पति पतनी तन होइ ।। ५ ।।
जग जिनके सुष सिधु लय उपजीवत जीव ।
पगे प्रेम रश स्वाद सो रमन प्रीयतम पीव ।। ६ ।।

अत— सोरठा

दपति नेह विलास कथा सजीवन अलिन की ।
हैव वहै परहास आन श्रवन सुष परत हो ।।१४६।।

कहत सुनत पुनि गुनति जिहि हिय दपति दरसाहि ।
सिय वर नेह प्रका . . . . व सो सदा उर माहि ॥१५०॥
प्रगटी नव श्रुति सिधु ससि गनित समय सुभ सोई ।
दुष हरनी मगल करनी भक्ति वितरनी होइ ॥१५१॥
यह मन नेह प्रकासिका पूरि भूरि हिय ग्रास ।
करहु लडेती लाल के चरनदास को दास ॥१५२॥

इति श्रीमच्चरनदासानुजीवी बाल कृष्णेन कृतेय नेह प्रकास का संपूर्न सुभ ज्येष्ठ सुद १४ बुध वासरे सवत् १८८५

विषय—राम जानकी की शृगारिक लीलाग्रो का वर्णन ।

रचनाकाल

प्रगटी नव श्रुति सिधु ससि गनित समय सुभ सोई ।
दुष हरनी मगल करनी भक्ति वितरनी होइ ॥१५१॥

विशेष ज्ञातव्य—सक्षिप्त विवरण के अनुसार प्रस्तुत ग्रथ चरनदास जी का बतलाया गया है परतु इस बार इसका रचयिता दूसरा ही है ।

प्रस्तुत ग्रथ निम्नलिखित ग्रथो के साथ एक हस्तलेख मे है—

१ सिद्धात पदावली—कृपानिवास कृत ।

२ सिद्धात मुक्तावली—जनकिशोरीशरण ।

सख्या २३६क चितावोध, रचयिता—बालदास बाबा, कागज—ग्राधुनिक पीला, पत्र—४५, आकार—६$\frac{९}{१०}$ × ५$\frac{६}{१०}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—८४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० त्रिभुवनप्रसाद जी त्रिपाठी, ग्राम—प्रान पाडे का पुरवा, डाक०—सिलोर्ट, जिला—रायबरेली ।

ग्रादि—श्री गणेशाय नम श्री गुरु चरण कमलेभयो नमः श्री सरस्वत्यै ॥ ग्रथ श्री बालदास कृत चितावोध ग्रथे लिख्यते ॥

॥ छद ॥

य गुरु महा प्रभु ग्रनन्त धर्म धाम जू ।
समस्त जगत लोचन समस्त पाप मोचन ॥
ग्रनन्द रूप सोहित महेस सेस मोहित ।
पदारविंद पकज ग्रजादि देवता भज ॥
गंभीर ग्रथ को करौ विचारि धीर धरौ ॥
प्रवद छद निमित कविन्द्र साध कोहित ॥
ग्रथाह पुन्य कीजिये दीदार दान दीजिये ॥
भनंत बालदामम प्रबन्द जगत भासियं ॥

॥ दोहा ॥

श्री सतगुर गभीरमत ग्रति विन्ती कर जोरि ।
चितावोधे जगत तेहि फिरि तेहि पाछै मोरि ॥
शरण भये शका हरो वाह गहे को लाज ।
चितावोधन ग्रथ को पूर करो महराज ॥
.०' .० :०:

॥ श्री मार्कंडेय उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

कहतु शभु ग्रतर कर भावा । कारन कौन कौन निरमावा ।
के पृथ्वी का रूप बनावा । के जल पावक को निरमावा ।
केहि विधि पवन गगन भा शकर । मोहि समुझावहु सो मुनिद्र वर ।
ग्रादि ग्रंत समुझावहु मोही । यथा जोगि जेहि भांतिन होहि ॥

॥ शकरोवाच ॥

गोपतिवरग को वरन पहीला । खोलें लोक रहित अव खीला ॥
तेहि मध्ये चित्त उतपति भयेऊ । चित्त एक पुरुख निमेंऊ ॥
तेहि न भये अचित परमातम । नहि की प्रभा अनेकन आतम ॥
परमातम ते भयो निरजन । अडप कंस जासु कर भजन ॥
तेहि का भ्राता जेठ अनादी । भगनी ज्योति और जगवादी ॥
सो अनाद मोरें है नामा । तेहि ते पचतत्व की सामा ॥
मोरे पच वक्र तन माही । सव समझाइ कहौ तुम पाही ॥
मोरे पच वक्र तम माही । सव समझोइ कहौ तुम पाही ॥

अंत—

येक देह त्रैकाल कराला । वसिकें देह २ को घाला ॥
जीतहि तिनही कहौ केहि वानी । शभु महा प्रभु अतरजामी ॥
प्राणायाम करें नित नेमा । भये सिद्धि तब आतम छेमा ॥
आतम छेम विना सब करनी । स्वारथ कौन पुरानन वरनी ॥

इति श्री वालदास कृते चितावोध ग्रथ सपूर्ण शुभ मस्तु ॥

विषय—सृष्टि, उत्पत्ति, जगत के कर्म और योग का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता आर्य सनातन धर्म के सब अगो को मानता है पर उसके साथ साथ निर्गुणवादियो की विषय शैली का भी अनुसरण करता है । शास्त्रीय ग्रथो मे प्रतिपादित सृष्टि क्रम का भिन्न वर्णन करते है ।

सख्या २३६ख चितावोध, रचयिता—वालदास, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—१०॥ X ४॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, अप्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप)—७७, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० शभुनाथ जी अध्यापक, ग्राम—शुक्लपुरा, डाक०—मानधाता, जिला—प्रतापगढ ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ चितावोध लिष्यते ॥ छद ॥

जय गुर महाप्रभु अत धर्म धाम धू ।
समस्त जक्त लोचन समूह पाप मोचन ॥
अनत रूप सोहित महेस सेस मोहित ।
पदारविंद पकज अजादि देवता भज ।
गभीर ग्रथ को करौ विचारि भीर को धरौ ॥
प्रवध छद निर्मित कविंद्र साधु मोहित ॥
पयाह पुन्य कीजिये विदार दान दीजिये ॥
भनत 'वालदास' ये प्रवर्म्व जक्त भासये ॥

दोहा

श्री सतगुर गभीर मति अति विनीत कर जोरि ।
चितावोध जक्त जेहि तेहि पाछे फीरि मोरि ॥
सरन भये सका हरो वाह गहे की लाज ।
चितावोधन ग्रथ को पूर करो महराज ॥

सर्वस्तुति श्लोक

:o: :o: :o:

दोहा

हौ सेव भांतिन सो सदा कायर क्रूर तुम्हार ।
मोर मनोरथ पूर लगि करहु सवं उपकार ॥

चौपाई

चितबोध ग्रंथ हित लागी । विनती करउ छोह छल त्यागी ।

समुझत मातु मोरि रलिकाई । मूले अंक सुधारव आई ।
मातु सदा विनती सुनि लीजै । चितावोधन सोधन कीजै ।
जय जय महावीर हनुमंता । मारन मोह उचारन संता ।
होहु सहित संतन्ह अनुरागी । चितावोध ग्रंथ हित लागी ।

अंत— दोहा

पांचहु इन्द्री द्वार से भोजन पंच प्रकार ।
तेहि का मन महा भोग करै ततकार ।
इंद्री आतम हाल अस जस बंगला दस द्वार ।
अंतर दृग दिसन्ह तव देखै देखनुहार ।
जवते इंद्री नास ही द्वार लागि वहि ठाउ ।
नयन मूदि देखै नर वकै तरजनी वताउ ।
:o: :o: :o:
मूक न पुंक अंध अरु वधिरहि पूछी भेउ ।
वुहु इंद्री अकुलात है को दहु आत्म देहु ।
वित्त हि चेतन वित्त है सव वितन्ह के वीच ।
चितौ वितैहो जहै लगि जा नगीच ।
जिमि तामा जग ताष रंग राषत है वनवाइ ।
जेहि छिन पहिरे जाहि को तव तौने ह्वै जाइ ।
वाहर भीतर है रमा यहि भीतिन्ह मन राइ ।
'बालन' जग जड जीव कै तेहिन कहा विमाइ ।
मन की चालु तड़ाग की है वीचिन्ह को ष्याल ।

—अपूर्ण

विषय—संत मतानुसार ज्ञानोपदेश तथा अध्यात्म विषय वर्णन ।

संख्या २३९ग बालपुरान (भागवत), रचयिता—बाबा बालदास, स्थान—जैनगरा, कागज—आधुनिक नीला, पत्र—५८, आकार—१०$\frac{1}{2}$ × ८$\frac{1}{4}$ इंच पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—२०३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९५९ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० बालाप्रसाद जी, ग्राम—जैनगरा, डाक०—राजा फतेहपुर, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री राम श्री गणेसय नमः श्री राम श्रीम्दभागवत भाषा बालदास कृत लिषते श्री गुरु गायत्री सहाँइ ।। श्री मत भागवत भाषा करोति वाल पुरान लिषते ।।

।। छंद ।।

गुरू ग्यान सग्यान विज्ञान रूप । गुरू ग्यान को ध्यान सिद्धि स्वरूपं ।।
गुरु ग्यान सिध्यान मध्य न सामं । गुरू ग्यान परमान रैनिदिनाम ।।
गुरू ग्यान द्रिष्टं विद्रिष्ट मद्रिष्टं । गुरू ग्यान इष्ट वसिष्टं क इष्ट ।।
गुरू ग्यान महि मंडलं द्रिष्टं मदेष्टं । गुरू ग्यान पाताल प्राण विसेष ।।
गुरू ग्यान सक्ति ग्रह पतिपाल । जै राम जै राम तुमहि पाँहि वाल ।। १ ।।
:o: :o: :o:

।। सोरठ ।।

गुरू पद पंकज रेनु ध्यान धरौं तिनके प्रथम ।
सुषमो तिमिर पतेन फिरि वनिता सुतपति मिलहि ।
सुभी सुतपति तात वदौं सुभ गुन ताहि के ।
सिद्ध सकल सरिसात निगम लाभ जाके भने ।।
:o: :o: :o:

चौपाई

येक समं नृप चलेउ सिकारा । जारा वाज कुही अधिकारा ॥
सिकरा खान तुम तवासा । चितासेर गोस्त घने पासा ॥
पील तुरग विविध विधि जोधा । चले कुज करिके सब क्रोधा ।
मन मानेक किहिनि सिकारा । तव तिरिषा मधु भयो भुवारा ॥

अत—वूज अस्थी दूज पावै कुष्टिहि मिलै सरीर ।
मोच्छा अस्थी का मोच्छ म ग्यान मिधु सत भीर ॥
श्रीमतकथा भगवत अभी मिधु अति पुज ।
पान करैं तेहि प्रान गति होइ हम तजि लुज ॥
पं पुरान व्रत सो ममुद कीन्हेउ अधम अचेत ।
वक्ता श्रोता सुजन जन करहि रुचिर सो सेत ॥

इति श्री हरि चरित्रे दसम अमकधे महापुराने श्री भागवते वक्ता श्रोता मन वाछित फद्रि सेते ॥ क्रिश्न औतार की कथा वालदास तेवारी वरननो नाम नवासिमो अध्याइ ॥८९॥ वाल पुरान इति श्री वाल पुरान कथा सपूरनम ॥ सवत् १९५६ द वालसहाँइ श्री स्वामी लालदास को सेवक ॥

विषय—भागवत दशम स्कध के अनुसार श्री कृष्ण बाल चरित्र वर्णन ।

संख्या २३९घ भागवत की अनुक्रमनी, रचयिता—बालदास, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—१२८ $\frac{3}{10}$ × ५८ $\frac{2}{10}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—म० १९२१ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥

॥ पार्वत्युवाच ॥

जो भागवत ब्रह्म मुख गाई । सछेपहि सब कथा सुनाई ॥

॥ सकरोवाच ॥

किर्त्तन कीन कृष्ण नि केवल । अरु विग्यान ज्ञान दल देवल ॥
पुनि वैराग भक्ति अरु योगा । पूर भागवत को सयोगा ॥
सछेपहि सब कथा वपानी । जो कछु वेद पुरानन वानी ॥
आदिहि कथा परिक्षित केरी । रिषि शुषदेव कृपा दृग हेरी ॥
शृगी रिषि की श्राप मिटावा । रिषि सुषदेव भागवत गावा ॥
तक्षक डसा गग के तीरा । सकल कथा सुनि त्यागि सरीरा ॥
पुनि नारद सवाद प्रसगा । आदुत (? अद्‌भुत) कथा करनि भं भगा ॥
नारद ब्रह्म केर सवादा । पार करण भौ हरण विषादा ॥
पुनि मानसी सृष्टि गति गावा । जथा योग्य जसि ब्रह्म बनावा ॥

॥ दोहा ॥

विदुर्वाद ऊधौ सेवो बहुरि विदुर मैत्रेय ।
बालदास पठिहै नितै मात पदारथ लेय ॥

अत—

सतति हीन तनै ते पावे । ग्यान हीन को ग्यान दिढावै ॥
भक्ति हीन का भक्ति अथाहा । धीरज धर्म कर्म निर्वाहा ॥

॥ दोहा ॥

सुष दाता वुध वल दरणि सुने कहे इतिहास ।
पाठ करहि ते तरहिगे वरनत 'वालन दास' ॥

इति श्री सर्वात्मा भागवत पुराणे कथा प्रसंगे कृत बालदासे भागवत की अनुक्रमनी वरननो नाम दशमोध्यायः शुभास्तुत राम शम्वत् १८२१ लिखिते जगनाथ मिश्र सिहिगौ के स्वार्थम् कातिक कृष्ण त्रयोदसी भृगुवासरे सम्पूर्णम् ।। श्रीमते रामानुजाय नमो नमः श्री गुचरण कमलेभ्यो नमः श्री रामो विजयतेत राम् राम कृष्णाभ्याम् नम् ।। हनुमान नमः श्रीराम

विषय—भागवत की अनुक्रमणिका वर्णन की गई है।

संख्या २३९ड मारकंडेय पुरान, रचयिता—बाबा बालदास, निवासस्थान—जैनगरा (रायबरेली), कागज—आधुनिक नीला, पत्र—५६, आकार—१०३/४ × ८३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—१८२० पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९५६ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० बाबाप्रसाद जी, ग्राम—जैनगरा, डाक०—राजा फतेहपुर, जिला—रायबरेली।

आदि—श्री राम श्री गणेसाइ नमः श्री मारकंडेय पुरान बालदास कृत लिषते ।। श्री गणेसाइ नमः श्री सरस्वते नमः अथ मारकंडेव पुरान लिष्यते ।। बालदास कृत ।।

।। सोरठा ।।

गुर पद पंकज रेनु ध्यन धरो निन को प्रथम ।
सुष मैं तिमिर पनेनु फिरि बंदिता सुन पति मिनहि ।।
सुरभी सुत पतितात वदौं सुभ गुन ताहि के ।
सिद्धि सलम रिसात निगम लाभ जाके भने ।।
मारद मैं मतिहीन वैठि कठ वरतहु सकल ।
सदा नेवाजहु दीन षात मूहि छोह वहु ।।
वदौं मारुत नाग तौ कृपाल के अति निकट ।
देहु रुचिर बेराग कृपा सिधु मम उरवसहु ।।

।। दोहा ।।

रिषि मुनि नारद विप्र सुर सिव विरचि श्री राम ।
पाच तनु ते जे वने तिन सबको परनाम ।।
:०· ० ०·
पुज प्रीति परमेस्वरहि ताकी कथा कहेव ।
वरन्ही दूज अति रुचिर गति नाम मारकंडेव ।।

।। चौपाई ।।

तासे मातु हेत बहु करई । दूज हिट नन ओट सो टरई ।।
ताके ग्रह विधि मुनु दूज आये । तकि वट दूज द्रिग वारि वहाये ।।
विविड़ जदि जलनी सो भाषा । तुम कस प्रीति पुत्र सो भाषा ।।
नजें छोह सुनि वचन तुम्हारा । इज ने जग मुनि कवन पियारा ।।
अत— अथ देहनाम
वपु तनु अग कलेवर काया । आतम देह करन पति जाया ।।
धाम पत्रग औ सग्रह मानी । विग्रह विधुता वचल मनि ।।
मूति मृतिका माटी छिति जानव । मन अरु अरगन नाम वषानव ।।

इति श्री हरिचरित्रे सिध मुनि अवादे कथा प्रसगे कृत वालदासे मारकडेव पुराने अमर नाम वरननो नाम सपूरनम् आपिते सुभमस्त सवत १९५६ मित कातिक वदी २ दिन सूक श्री स्वामी मराज लालदास को सेवक वाल म्हांइ मारकडेव पुरान लिषा श्री स्वामी महराज वालदास कृत लीला मारकडेव पुरान सुभमस्तु समप्त ।।

विषय—मारकंडेय पुराण की टीका।

संख्या २३९च सर्वार्थ पुराण, रचयिता—बालदास, निवासस्थान—जयनगरा (रायबरेली), कागज—देशी, पत्र—१०९, आकार—८६/८ × ५६/८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—१९०७, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४४ के लगभग, प्राप्तिस्थान—पं० बाबाप्रसाद जी त्रिपाठी, ग्राम—जयनगरा, डा०—फतेपुर, जिला—रायबरेली।

आदि—श्री गणेशाय नम श्री सरस्वत्यै नम ॥ श्री गुर चरण कमलेभ्यो नमः अथ सर्वार्थ पुराणे वेदांतव सर्व पुराणन षटशास्त्र मते कृत बालदास त्रिपाठी दयालपुर के गुर गायत्री सहाइ संवत् १८४४ मिति पौष वदि १३ त्रयोदशी ग्रथ की उत्पत्ति भई नगर उमरी कथा के श्रोत्वा तेहि के हित शरण नाम द्विवेद

॥ अथ बालदास निजवश ग्राम वर्णनो नाम ॥

सोरठा

प्रथम जोति के मूल तेहिते प्रकृति प्रसिद्ध है ।
प्रकृति के वाइस हूल वाइते फिरि ओकार है ।
तेहि दयाल पुर ते नदलला आये सो निक पुरहि विशाला ।
तेहि ते आइ बसे जैनगरा । जहा वसत द्विज सब गुन अगरा ॥

॥ दोहा ॥

जैनगरा भा जन्म मम सम विद्या सम भोग ।
बीते द्वादस वर्ष के तब दीन्हो गुर जोग ॥

॥ चौपाई ॥

सवत सत पुरान अरु सिद्धी । तब जैनगरा जन्म प्रसिद्धी ॥
रिक्ष पुष्पि वैशाष उजेरी । पाचं तिथि अरु चरन उमरी ॥

अत—

॥ दोहा ॥

जेहि जहि की सरधा सो सो पावै बाल ।
गुर प्रताप पुर शकल हि तिन्हहि मिले ततकाल ॥

॥ चौपाई ॥

जे करि परन पुरहि की कहही । तेहि का सब सुष सुलभै अहही ॥
कथा सुने सब महित विधाना । गुर प्रताप सर्वार्थ पुराणा ॥
तेहि का मिलहि . . . . .

—अपूर्ण

विषय—वेदात और षट्शास्त्रो के अनुसार ज्ञानोपदेश वर्णन ।

सख्या २४० छै ढालो रचयिता—बुधजन, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—१०½ × ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)— , परिमाण (अनुष्टुप)—१०८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८५६ वि०, लिपिकाल—स० १९०३ वि०, प्राप्ति-स्थान—श्री दिगबर जैन मंदिर, अहियागज, टाटपट्टी मोहल्ला, लखनऊ ।

आदि—॥ अथा बुधजन कृत छंढालो लिष्यते ॥

॥ सोरठा ॥

सर्व द्रव्य म सार आतम कौ हितकार है ।
नमो ताहि चित धारि नित्य निरजन जानकै ॥

॥ चौपई ॥

आयु घटै तेरी दिन रात । होय न चित रह्यौ किम भ्रात ॥
जोवन तन धन किंकर नार । सब है जल बुद बुद उनहार ॥ १ ॥
पूरन आउ बधै षिन नाहि । दियै कोट धन तीरथ माहि ॥
इद्र चक्र जेंहु का करै । आउ अत तैं देह मरै ॥ २ ॥
यौ ससार असार महान । सार आपकौ आपहू जान ॥
सुष तैं दुष दुष तैं सुष होय । समता चारो गत नहि कोय ॥ ३ ॥

मध्य—कुतसित आतम देव कृति सित गुन पुन देव का ।
पूरस सा षट भेव करै न सम्यक वान हे ॥१०॥
प्रगटा ऐसा सुभाव करचा अभाव सिध्यात का ।
वदे ताके पाय बुध जन मन वच कायते ॥११॥

इति चौथो ढाल ॥ ४ ॥

अंत—कोट वात की वात अहो बुध जन उर धरना ।
मन वच तन सुध होय गहौ जिनमत का सरना ॥
ठारा सै पचास अधिक नव सवत जानौ ।
तीज सुक्ल वैसाष ढाल षट सुभ उपजानो ॥१०॥

इती छठी ढाल सपूर्न ॥ ६ ॥ इती बुधजन कृत छे ढालो सपूर्ण ॥ समाप्त ॥ शुभ भवत् ॥

विषय—जैन मत की शरण म आने का ज्ञानोपदेश दिया गया है।

रचनाकाल

ठारा सै पचास अधिक नव सवत जानो ।
तीज सुक्ल वैसाष ढाल षट सुभ उपजानो ॥१०॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रचना के साथ निम्नलिखित रचनाए और है ।

१ दान कथा—भारामल्ल कृत ।
२ चिंतामणि पार्श्वनाथ पूजा—(सस्कृत) ।
३ क्षेत्रपाल की ६८ पूजा—(सस्कृत) ।
४ तत्वार्थ सूत्र छदोबद्ध—(सस्कृत) ।

सख्या २४१ पाडव पुरान भाषा, रचयिता—बुलाकीदास सा चन्दवद, कागज—देशी, पत्र—२०८, आकार—१२$\frac{६}{१०}$ × ७$\frac{२}{१०}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—६४२६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७५४ वि०, लिपिकाल—स० १९०९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर (बडा मदिर), चूडीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—श्री सर्वसदेवाय नम. ॥ श्री सरस्वतीभ्यो नम ॥ श्री गुरुभ्यो नम ॥ अथ पांडव पुरान भाषा लिख्यते ॥ प्रथम सवस को नमस्कार ॥

छप्पय छद

सेवत सत सुरराय स्वय सिद्ध सिव सिद्धि मय ।
सिद्धारथ सरवस नय प्रमाण सासिद्धि जय ।
करम कदन करतार करन हरन कारन चरन ।
असरन सरन आधार मदन दाहन साधन मदन ।
इह विधि अनेक गुण गण सहित जग भूषण दूषन रहित ।
तिहि नदलाल नदन नमत सिद्ध हेत सर्वज्ञ नित ॥ १ ॥

॥ दोहरा ॥

वृष नायक वृष दाय है वृषभ अरु वृषमेश ।
सृष्टि विधाता ब्रह्ममय वदो आदि जिनेश ॥ २ ॥
:o: ·o· o·

॥ सोरठा ॥

अपनो वस वषान नमस्कार करि अब कहो ।
सकल सुनौ दै कान बतन गोत कुल वर्णवै ॥२३॥

॥ अथ कविवंस वर्णन ॥

॥ दोहा ॥

नगर बयानो बहु समै मध्य देस विख्यात ।
चारु वरन जहं आचरै चारि वरण बहुभांत ॥२४॥
जहा न कोऊ दालिदी सब दीसै धनवान ।
जप तप पूजा दानविधि मानहिं जिनवर आन ॥२५॥
वस्य वंस पुरदेव ना जो थापे अभिराम ।
तिसो वंश तहां अनुसरा साहु अमरसी नाम ॥२६॥
अगरवाल शुभ जाति है श्रावग कुल परवान ।
गोयल गोत सिरोमनि व्योम कलाधर जान ॥२७॥
धर्म रसी सो अनरसा लक्ष्मी को आवास ।
नृप गन जाको आदर औ जिनेंद्र को दास ॥२८॥
प्रेमचंद ताको तनुज सकल धर्म को धाम ।
ताको पुत्र सुपुत्र है श्रावन दास [illegible] ॥२९॥
वतन बयानो छांडि कै नगर आगरे आय ।
अंत पाप संजोग ते निवस्यो सदन रचाय ॥३०॥
बुद्धि निधान सो जानिये श्रवन नगर को दास ।
सत्य वचन के जोग सो बरने या लिखि नाम ॥३१॥
गनिये सरिता स्रोत को वानता ताके गेह ।
नाम आनंदी तास को मानो रति को देह ॥३२॥
उपज्यो ताके उदर ते नंदलाल गुन वृंद ।
दिन दिन तन चतुर्यता बढ़ै दोज ज्यों चंद ॥३३॥

०॰ ० .०.

हेमराज पंडित बसै तिसी आगरे ठाइ ।
गरगगोत गुण आगनो सब पूजै जिस पाइ ॥३५॥
जिन आगम अनुसार ते भाषा प्रवचन सार ।
पंच अस्ति काया अवर कीने सुगम विचार ॥३६॥
उपजी ताके देहजा जैनी नाम विख्यात ।
सील रूप गुण आगरी प्रीति नीति की पात ॥३७॥

:०. ०. ०

हेमराज तहां जानिके नंदलाल गुण षान ।
वय समान वर देषि दो पान ग्रहन विधि ठान ॥४०॥

:०. ०. ०

अल्प बुद्धि तिनके भयो बुलचंद सुष षान ।
तहि जैनुलदे यो चहै ज्यो प्रानी निज प्रान ॥४३॥
अशोइक संबंध ते आइ इंद्र पथ थानि ।
मात पुत्र तिष्टे सही भए सुद निज वानि ॥४४॥
अहन रतन पंडित तहां शास्त्र कला परवीन ।
बूलचंद तिस हेत हो ग्यान अंस कुछ लीन ॥४५॥
कलपलता माता सही सुख करना सरवस ।
दुष हरना मो यो महा जो तस सांचिता अंस ॥४६॥
सब सुष दे तिन यो कह्यो सुनो पुत्र मो बात ।
सुभ कारज ते जग विषै सुजस होइ विष्यात ॥४७॥

:०: :०. :०.

मुनि शुभचद्र पुनीत है कठिन ग्रर्थ गभीर ।
जो पुरान पाडव महा प्रगटै पडित धीर ॥४६॥
ताकौ ग्रर्थ विचारि कै भारत भाषा नाम ।
कथा पाडु सुत पच की कीजे बहु ग्रभिराम ॥५०॥
:o: o ·o:
जननी के ये वचन सुनि लीने सीस चढाय ।
रचिवे को उद्यम कियो धरि कै मन वच काय ॥५२॥

ग्रत—॥ ग्रथ मूल ग्राचार्य वस वर्णन ॥ सवैया ॥ ३१ ॥

संगनमें मूल सगि पद्मनदि नाम भये ताके पट्ट सकलादि कीरति वखानिये ।
कीरति भुवन ताते ताके भये चद सूरि कीरति विजय सुतास पट्ट परवानिये ।
ताके पट्ट सुभ चद सुजस ग्रानद कद पाडव पुरान परकासकर मानिये ।
मति को उदोत तास पाइकै बुलाकी दास भारत विलास रास भाषा कवि जानिये ॥८६॥

॥ ग्रथ बादसाहि वस वर्णन ॥ सवैया ३१ ॥

वस मुगलाने माहि दिल्लीपति पातसाहि तिमिर लिग मोर सुत बाबर सुतयो है ।
ताको है हिमाउ सुत ताही ते ग्रकव्वर जहांगीर ताके धीर साहिजहा ठयो है ।
ताजमहल ग्रगना ग्रगज उतग महाबली ग्रवरग साहि साहि न मे जयो है ।
ताकी छत्रछाह पाइ सुमति कै उदय ग्राइ भारत रचाइ भाषा जैनी जस लयो है ॥६०॥

॥ ग्रथ ग्रथ ग्रासीर्वाद ॥ सवैया ॥ ३१ ॥

जौलौ रहै तारागण सदन सुर ईस को सागर सुभूमि रहै रहे दुतिभान की ।
सुनिवासी भौन वासी गिरि गिरि ईस वासी वसे थिर जोतिं जालो समिकेविमानकी ।
गगा ग्रादि नदी नद कर्म भूमि कल्पतरु रहे ग्रान जौलौ जग वीतराग ज्ञान की ।
भारत सुषेत माहि तौलौ सुविकास लहो भारत विलास भाषा पाडव पुरान की ॥६१॥

o· o o.

॥ दोहा ॥

इहि विधि भाषा भारती सुनी जिनुल दे माइ ।
धन्य धन्य सुत सो कही धर्म सुनेह वताइ ॥६५॥

॥ ग्रथ श्लोक सख्या कथन ॥

सख्या श्लोक ग्रनुष्टपी गनियें ग्रथ लिषाइ ।
षट सहस्र षट सतक पुनि पचपन ग्रधिक मिलाइ ॥१००॥

॥ ग्रथ सवत वर्णन ॥ दोहा ॥

सवत सत्रह सै चउन सुदि ग्रसाढ तिथि दोज ।
पुष्य रिक्ष गुरुवार को कीन्यौ भारत चोज ॥१०१॥

इति श्री मन्महासीलाभरन भूषित जनी नामांकिताया भारत भाषाया लाल बुलाकीदास विरचिताया पाडवो सुसर्ग सहन त्रय केवलो उत्पत्ति सिद्धि गमन द्वय सर्वार्थ सिद्धि प्राप्ति वर्णनो नाम षटविंसतिमः प्रभाव ॥ २६ ॥ इति श्री बुलाकीदास कृत पाडव पुराण भाषा महाभारत नाम सपूर्ण समाप्तम् ॥ पोथी लि जग्गीमल्ल श्रावग पल्लीवार इक्ष्वाक वसी कोस्य गोत्री नवाव गज के वतेरी ने लिषो लाला रिषभ दास के बेटे लाला बाबूलाल ने लिषाई यह ग्रथ ग्रपने पठनाथ हेत निमित ॥ मासे उत्तम मासे ज्येष्टमासे सुक्ल पक्षे तिथौ षष्टम्या मगल वासरे को पूरी करी ग्रथ नेमनाथ के मदिर मे लिषी ॥ समत १६०६ ॥

विषय—पाडव चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

समत सत्रह सै चउन सुदि ग्रसाढ तिथि दोज ।
पुष्य रिक्ष गुरुवार को कीन्यौ भारत चोज ॥१०१॥

विशेष ज्ञातव्य—शुभचंद्राचार्य की वंशपरंपरा इस प्रकार है—मूल संघि पद्मनंदि हुए, जिसके यह सकलादि कीर्ति थे। उनके भुवन कीर्ति और उनके चंद सूरि हुए। चंद सूरि के विजय कीर्ति और विजय कीर्ति के शुभचंद्राचार्य हुए। यह गुरु परंपरा जान पड़ती है, न कि वंश परंपरा ?

संख्या २४२ कवित्त संग्रह, रचयिता—कथा (?), कागज—देशी, पत्र—६२, आकार—७६/१० × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—८२८, अपूर्ण, **रूप**—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५८ वि० के लगभग, **प्राप्तिस्थान**—पं० लक्ष्मीशंकर वाजपेयी, ग्राम—वाजपेयी खेड़ा, डाक०—बहटा, जिला—रायबरली।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

प्रथमहि विधि हरिहर सहित गिरा इंदिरा गौरि।
गणपति रवि शशि गुरु चरण बंदौ निशि दिन सौरि॥ १॥
:०.   ०   .०
मिश्र सुकवि सुकवि सुखदेव के चरण कमल को ध्यान।
मम अभिमत फल ..   ॥ ३॥
और सुन्यो श्री मिश्र को हुते देव सरूप।
प्रगट दियो देवी जिन्हहि अपना दरश अनूप॥ ४॥
करयो अनुग्रह जासु पर श्राप दियो जेहि कोपि।
तत्फल ताको आशु भो विभव नाम कहि सोपि॥ ५॥
जो तो ओह
विद्यमान श्री मिश्र को तातों सुजन जहान॥ ६॥
तिनकी कृपा कटाछ लहि मिश्र सुकवि शिवलाल।
पंडित गुन मंडित अखिल जीवित हैं यहि काल॥ ७॥

भयो है न ह्वैहै कोऊ अब या समय के बीच एतो स्वछ सावजिनग प्रवीनो है।
विद्यागुन चातुरी को षभ सो उबरि परयौ देषो हाइ वेधा को निठुर बड़ो सीनो है।
 ८   ५   ८   १
वसु सर वसु इंदु वत्सर असित पक्ष पाँचे तिथि भृगुवार भादो को महीनो है।
मिश्र शिवलाल देव लोक को गमन कीनो अति लपलानो मन ब्रह्म पद दीनो है।

ब्रह्म तेज विद्या क्रिया सब विधि एक समान।
गोत्र भेद अंतर उनो उन इनमे कछु आन॥ ८॥
संभु सूनु समबुद्धि वर कविता के करतार।
जासु चरन को ध्यान निजु मुद मंगल दातार॥ ९॥
.०.   ०   .०
ऐसे श्री सर्वोपमा योग्य मित्र शिवलाल।
तिनके हौ चारनि सेवक कुमति कुचाल॥१२॥

तब हरिवासर हरषि इन नैनन सो रूप सुधा रावरो अचोत त अचल कै।
सो सुष हमारो वह रैनि को सपन भयो लपनो न काहू सो जदपि हियो कल कै।
मन ही मे बूझि कै बिसुरि चुप साधि रहे चलत उपाउ नहीं केहू कलछल कै।
कसकि करेजो उठै पीछिलो सुमिरि बातै हाइ अब तुम्हे हम देषन को ललकै॥

अंत—इहै हमारे मन बसै दिवस निसा सुष धाम।
चरन कमल तुव अरुन जुग लषो करै अभिराम॥
जौलो जीवन मो जगत यहि तन कीन विनास।
तोलो देस विदेस कहु लहो कर्म वस वास।
लहे कर्म वस वास वाम विधि आमन पूरै।
तुव चरनन बिन लषे रहो अतिहू किन दूरै।

विषम विषाद विछोह देषिए तेरो कोलों ।
विसरन सोल न वानि रावरी जीवन जोलो ॥
प्रानेप्रिय ....
:o: :o. :o:

—अपूर्ण

विषय—भक्ति और शृंगार विषयक कवित्त, सवैया, दोहा, कुंडलिया और छप्पय आदि छंदों का संग्रह ।

संख्या २४३क रसविलास, रचयिता—वेनी, कागज—आधुनिक, पत्र—२६, आकार—११$\frac{3}{10}$ × ८$\frac{3}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप)—११८३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७४ वि०, लिपिकाल—सं० १९५३ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्णविहारी जी मिश्र "ब्रजराज पुस्तकालय", गंधोली, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ वेनी कवि कृत रस विलास लिख्यते ॥

॥ मंगलाचरण ॥

इंदु कला कलित मलिंद गंड गुंजरत सिंधुर असुंड सुडाइंड दरसत है ।
सुर नर मुनि जाके वदत चरन युग व्याह जज्ञ दान आदि सेवा समुचित है ।
विघन विनासन प्रकासक परम पुन्य "वेनी" कवि मंगल सरूप सरसत है ।
देवन के नायक सो साँकरे सहायक सुवुद्धि वरदायक विनायक वदत है ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

गोशाइं हरिवंश के सेवक मोहन दास ।
कायथ वारह जाति मे कीन्हो सुयश प्रकाश ॥ ४ ॥
विद्या विनै विवेक ते भूतल के अवनंस ।
राधावल्लभ पंथ किय गोस्वामी हरिवंस ॥ ५ ॥
मोहन मोहन दास के भे गिरधरीदास ।
दानसील संपति सुजस पुहमी पुन्य प्रकास ॥ ६ ॥
परस्वारथ के जोगतैं जगत जथारथ नाम ।
श्री गिरधारीदास के ऐसे भे घनश्याम ॥ ७ ॥
श्री घनश्यामहु दास के कुशलसिंह सिरताज ।
दानशील सनमान सुष सोभित सदां समाज ॥ ८ ॥
कुशलसिंह के सुत सुषद हरीलाल गुन जाल ।
दान ग्यान मति मेरु से मूरति मदन विशाल ॥ ९ ॥
:o' :o. .o:
हरिलाल के सुत सुषद सूरतसिंह सपूत ।
उनकी समता को करैं विन गिरिजा के पूत ॥१२॥
:o: .o' 'o
सूरति सिंह सपूत के खूबचंद कुलचंद ।
जिनकी महिमा कहत है कवि कोविद के वृंद ॥१४॥
खूबचंद के श्री सुखद ऐसे लछिमनदास ।
वाजो वाज विहंगपर विद्या विमल विलास ॥१५॥
:o: :o' 'o:

दान सनमान खानदान मैं सरस खूबचंद वैसवारे मैं विदित वैसवारे ॥१६॥

अंत—वेनी कवि नौरस कहै लषि ग्रंथन की रीति ।
पढ़ै सुने सुष पाइहै कवि पंडित कै प्रीति ॥ ५ ॥

४ ७ ८ १
दिये वेद रिषि वसु तहा शशि सावन जिय जानि।
वेनी कवि निरमित कियो रस विलास सुख खानि॥ ६॥

इति श्री वेनीराम विरचिते रसविलास नौरस वर्णन समाप्तम् शुभमस्तु श्री सवत् १९५३ मिति पौष शुदि १४ रविवासरे॥ शिव॥

लिषित पारसी वर्ण मे तासों लिखी सुधारि।
बन्यौ अनवन्यौ समुझिकै लोजौ सुकवि विचारि॥ १॥

ता० १७ जनवरी सन् १८९७॥ श्री रामा॥

विषय—नायिका भेद और नवरस वर्णन।

रचनाकाल

४ ७ ८ १
दिये वेद रिषि वसु तहा शशि सावन जिय जानि।
बेनी कवि निरमित कियो रस विलास मुख खानि॥ ६॥

अत मे वेनीकृत ३६ कवित्त सवया भी है। इनके अतिरिक्त एक कवित्त ठाकुर का भी है।

संख्या २४३ख टिकैतराय प्रकाश, रचयिता—श्री वेनी, कागज—आधुनिक पीला, पत्र—१६, आकार—१३ × ८$\frac{5}{8}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप)—४४६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८४६ वि०, लिपि काल—स० १९४५ वि०, प्राप्तिस्थान—प० कृष्णबिहारी जी मिश्र, ब्रजराजा पुस्तकालय, गंधौली, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नम॥ छद षटपद॥

लसत भाल शशि कला चारु सिदूर विराजत।
येक दत दुति देन विघन घन सुमिरे भाजत।
सुडादड उदड महा सोभा को साजत।
भौर भूरि गजरत झरत मद जल घन लाजत।
देवाधि देव गिरिजा तनय गनकातिक सेवत चरन।
दीजै सुबुद्धि सुखदान मोहि लम्बोदर असरन सरन॥ १॥
:०. ० ०

॥ अथ राजवश वर्णन॥

सुरसरित के निकट हो महर सुपटना नाम।
जहा सदपुर भीतरी है परिगन अभिराम॥ ५॥
कानोगो है तहॉ के प्राननाथ यश नाथ।
श्रीवास्तव्य सुख्याति किय बारह जाति सनाथ॥ ६॥
है सरकार सु जौनपुर हामनेह सरसाइ।
गुन आगर नागर सबै सुरपुर सो दरसाइ॥ ७॥
निकट लाडिले पुर जहॉ बसे लाडिले गोत।
प्राननाथ भे नाह तँह सुख सपति के गोत॥ ८॥
प्राननाथ के दोय सुत भये सु उदित उदार।
रामदास अरु प्रथीमल गुन गन के आगार॥ ९॥

॥ कबित्व॥

परम प्रशराम दास पुहुमी मे भये जाके सुत पाच परसिद्ध यै गनाये है।
विश्वेश्वरदास औ कल्यानदास गगादास सुदर सरूप रूपचद मन भाये हैं।
राय दलपति राम मनसबदार भये दान औ कृपान के जहान यश छाये है।
पुन्य के निधान तेजवान गुनवान येक येक ते सरस वोरहो ते होत आये हैं॥१०॥

॥ षटपद छंद ॥

श्री विश्वेश्वरदास सुकवि पंडित मन भायक ।
रूपचद बुलचद भये तिनके सुत लायक ।
ज्ञानशील सचरित धर्म जन जन जग गावत ।
दान मान संतुषित अबहु कविकुल यशु छावत ।
कल्यानदास तिनके तनय सब लोगन के हित करन ।
शोभा समुद्र सुख साज के कायथ कुल के आभरन ।

॥ दोहा ॥

कल्यानचद के विमल मति आमकरन सिरताज ।
कवि पडित मडित किये जिन पूजे द्विजराज ॥१२॥
आसकरन के सुत भये श्री जगजीवनदास ।
दानशील सनमान करि पूजी सबको आस ॥१३॥
श्री जगजीवनदास के चाय मल्ल सुत जानि ।
जिनकी महिमा विदित है 'बेनी' कहत वषानि ॥१४॥
:o: .o: .o:
चाय मल्ल के सुत महाराजा निरमल दास ।
फैलो है सब जगत मे जिनको सुयश प्रकाश ॥१६॥
:o' 'o: :o:

भरत सो भाइ जग विदित वडाई ऐसी प्रभुताई महाराजा निरमलदास ॥१७॥

॥ दोहा ॥

महाराज अधिराज ये राजा टिकपति राय ।
उनते छोटे गुन वडे वरनत कवि समुदाय ॥१८॥
राजा निरमलदास के राय निहाल सुचद ।
सत्य ज्ञान मे लीन मे सबके आनद कद ॥१९॥
राय निहाल सुचद के तीनि तनय दरसाइ ।
प्रथम लाल जी सुख सहित सुषमा सो सरसाइ ॥२०॥
शील सिधु निकुल कमल विमल भवानी दीन ।
वेनी कवि वेनी कियो देवी दीन प्रवीन ॥२१॥
चित्रगुप्त के सुत भये बारह उदित उदार ।
एक एक ते सरस है गुणगण के आगार ॥२२॥
.o .o. o:
महाराज अधिराज यै राजा टिकपति राय ।
सब जातिन शोभा लही ज्यो सुर सुरपति पाय ॥२६॥
डालामऊ प्रसिद्ध है सुरसरि जू के तीर ।
घाट हाट सिरहै जहा राजा राय अमीर ॥२७॥
महाराज अधियें राजा टिकइत राय ।
वेनी कवि सो यो कह्यो दीजै ग्रथ बनाय ॥२८॥

॥ इति राजवंश वर्णन समाप्तम् ॥

॥ अथ कविवश वर्णन ॥

विदित करोमनि मे भये हरीराम अभिराम ।
अति उदार सरदार सुभ सपति सोभा धाम ॥२९॥
परसराम तैसे भये तिनके उदित उदार ।
कुलदीपक सोभा सहित गुण गन के आगार ॥३०॥

तिनके गंगाराम भे गंगा सन अस नेह ।
परम धरम सुभ करम हित सरस सिधु सुष नेह ।।३१।।
भागवत तिन के भये जगत यथारथ नाम ।
भगति त्रिवेनी की सदा परम धरम के धाम ।।३२।।
भागवत के तीनि सुत शुभ लक्षण सरदार ।
दत्त राय देवान फिरि माधौ राय उदार ।।३३।।
दत्त राय के दोय सुत अमर सिह सुष सिद्ध ।
सूर शिरोमनि जगत यश सिद्ध राय परसिद्ध ।।३४।।
अमर सिह के दोय सुत . . . . . . ।
तेजवान गुणवान जग प्रभुता कही न जाय ।।३५।।
सिद्ध राय के सुत भये प्रथम करोरी वीर ।
फेरि हजारी जानिये हीरालाल गभीर ।।३६।।
फेरि भवानी साह जग गुण के आगन गार ।
सील सिधु सषमा सहित सूरवीर सरदार ।।३७।।
दत्त राय के भाय शुभ शोभित राम देवान ।
भक्ति त्रिवेनी की सदा ज्ञानवान धनवान ।।३८।।
विद्याधीश स्वभाव शुभ तिनके साहेब राय ।
पार न पावत शेषहू जिनके गुन गन गाय ।।३९।।
जैपुर अरु फिरि जोधपुर उदित उदैपुर जाइ ।
सपति लै आये घरं विपुल प्रतिष्ठा पाइ ।।४०।।
·o· ·o: ·o:
सुरसरि जू के निकट ही वेती विमल निकेत ।
साहेब राय प्रसिद्धि जग विप्रन सो करि हेत ।।४४।।
जगन किये राजी सदा तिनके वाजी राय ।
पुरसोतम पुर जाय कै पूजे प्रभु के पाय ।।४५।।
परम धरम शुभ करम हित सरस सिधु सुषयेन ।
परनारी सो विमुष औ हरि सनमुष दिन रैन ।।४६।।
वाजी राय सुजान के शोभित है शिवदास ।
वय विद्या वद्धित विमल कुलभूषन गुन वास ।।४७।।
डालामऊ प्रसिद्ध है सुरसरिजू के तीर ।
घाट ठाढ शिर हे जहाँ राजा राय अमीर ।।४८।।
महाराज अधिराज ये राजा टिकइत राय ।
वेनी कवि सो यो कह्यो दीजै ग्रथ बनाय ।।४९।।
अलंकार जे सस्कृत समुझै विवुध विचारि ।
साहेब वेनी हित किये भाषा मे निरधारि ।।५०।।
० ४ ८ १
रध्र वेद वसु चद्र युत संवतसर को पाय ।
माधव सुदि पाचै रचौ अलकार गुरु ध्याय ।।५१।।

अत—इहाँ प्रस्तुत टिकैत राय अप्रस्तुत नैनादिक को शोभाय मान ह्वै वो एक धर्म्मान्यय है ।। प्रस्तुत विषै जो समान धर्म सो प्रसग वसते और ठौर हू उपकारक है ।। जैसे महल अर्थ धरो जो दीप है सो गली हू मे प्रकाश करै ।।

यतना ही ग्रंथ मिला सो लिखा गया और जब मिलेगा तब लिखेंगे—मि० अगहन वदि ८ मङ्गल स० १९४५ वि०

विषय—अलकार विषय का वर्णन ।

रचनाकाल

रंध्र वेद वसु चद्र युत सवत्सर को पाय ।
माधव सुदि पाचै रचौ अलंकार गुरु ध्याय ।।५१।।

विशेष ज्ञातव्य—यह पता नही चलता कि रचयिता के पिता का क्या नाम था। अपने आश्रयदाता का भी इन्होने पूरा परिचय दिया है। आश्रयदाता के पुरखे पहले पटना मे रहते थे। सैदपुर भीतरी परगना के वे कानूनगो थे। उनका नाम प्राननाथ था। वे श्रीवास्तव कायस्थ थे। उस समय जौनपुर सरकार थी। उसी समय लाडिलेपुर म लाडिले गोविंयो की इन्हे सपत्ति मिली।

प्रस्तुत रचना के साथ निम्नलिखित ग्रथ एक हस्तलेख म है —

१ सार सग्रह—प्रवीन कवि।

२ अलकार शृगार—शिवदास।

सख्या २४४. गोपी विरह, रचयिता—वैजनाथ, निवासस्थान—नउआडाडी ग्राम (जौनपुर), कागज—देशी, पत्र—१७, आकार—७।। × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—४१७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९१४ वि०, लिपिकाल—स० १९४७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० अमरनाथ जी शुक्ल, ग्राम–नउआडाडी, डाक०–बादशाहपुर, जिला–जौनपुर।

आदि—श्री राधा कृष्णाय नमः ।। श्री गणेशाय नमः ।। अथ गोपीविरह लिख्यते ।।

छन्द हरिपद

वन्दौ श्री गिरिजा सुत गिरिजा गिरिजापति गिरिधारी ।
गुरु पद वदि मातु पितु के पद कहौ कथा सुष मारी । १
सम्वत वनइस सै चौदह मे अगहन दुइजि विचारी ।
कृष्ण पक्ष बुध नखत रोहिणी कृष्ण चरण उरधारी । २
जिला जौनपुर परिगन मूगर बादशाहपुर गाऊ ।
वास हमारो तिहि के उत्तर नौआडाडी ठाऊ । ३
नाम हमारो वैजनाथ है विप्र त्रिपाठी हौ मे ।
वृज मे ऊधो जेहि विधि आए सो कछु चरित कहो मे । ४
जो कछु लीला नदलाल की वरनि सको मै नाही ।
तामे कछुक विरह वरनत हो समुझि सुगम मन माही । ५
श्री नन्दलाल कह्यौ ऊधो सो वृन्दावन को जाहू ।
हमरे विरह विकल वृजवाला देहु ज्ञान सव काहू । ६
अस कहि पाती लिखे शावरो नन्द जशोदा जी को ।
प्रेम पियारी मिलन हमारी सखी सखा सबही को । ७
स्वस्ति श्री सुख कन्द नन्द जू और जसोदा मआ ।
महर जठेरे कुलपुर केरे तेनको लिखत कधैआ । ८
पालागन कर जोरि सबै कोउ राम कृष्ण की जै ।
वालक जानि दया करिके फेरि कुसल आपनी दीजै । ९

अत—चलत सदेस कह्यौ श्री राधा सजल नैन कर जोरी ।
किए रास षटमास रैन मे भुजा गहे है मोरी ।१७
नारी पुरुस को जितो कर्म सव कियो हमारे साथा ।
यह सब लीला ललित कियो अब निठुर भयो वृजनाथा ।१८
बांह गहे की लाज गहो हम भव मे परन न पावे ।
देहि दरस फेरि अतकाल मे निज पदवी पहुचावें ।१९
सुनत संदेस प्रान प्यारी को प्रभुहि भयो दुख भारी ।
वार वार पछताय सांवरो फेरि धीरज उर धारी ।२०
यह ऊधो गोपी की वातै कहेउ जथामति गाई ।
भूल चूक मोरी जो है कछु कवि जन लेव वनाई ।२१

फेरि फेरि सत चरण वन्दन कर वर मागो करजोरी ।
कृष्ण चरण रति होइ अधिहि मोहि जाची एहि निहोरी ।२२
नहि कछु पिंगल मत मै जानो नहि कविजन सग कीने ।
एक भरोस कृष्ण पद वन्दन और उपाय न चीन्हे ।२३
तीस वरिस की उमिर हमारी नही वेद अधिकारी ।
जेहि तेहि विधि हरि चरित बखाने जाने निज उपकारी ।२४
जो कोउ कहै सुन यह लीला तेहि सुख देहि मुरारी ।
अपर बडाई करि नहि आई नाम महातन भारी ।२५

दोहा

श्री काशी मे आइके फागुन दसमी जान ।
शुक्ल पक्ष मे ग्रथ यह पूरन भयो बखान ॥

सोरठा

श्री शिव शिवा समेत बार बार पद वदि कर ।
वैजनाथ चित चेत रहै सदा हरि नाम पर ।

इति श्री गोपी विरह वैद्यनाथ कृते त्रयोदसोऽध्याय १३ सवत् १९४७ . ।

विषय—गोपी विरह वर्णन । ऊधो का भगवान कृष्ण का पत्र लेकर आना तथा गोपियो को ज्ञान सवाद देना । पश्चात् गोपियो का सवाद श्री कृष्ण तक पहुचाना । ग्रथ तेरह अध्याय मे समाप्त किया गया है ।

रचनाकाल

सम्वत बनइस से चोदह मे अगहन दुइजि विचारी ।
कृष्ण पक्ष वुध नखत राहिणी कृष्ण चरण उरधारी । २

सख्या २४५क. शाङ्गधर सुधाकर (टीका), रचयिता—वजनाथ, कागज—देशी, पत्र—१२९ आकार—१२३/४ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप)—७९५०, खडित, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९२१ (सभवत), प्राप्तिस्थान—श्री विद्यार्थी सार्वजनिक पुस्तकालय, बछरावा, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥

॥ दोहा ॥

नेह चारि घृत तेल कहि वसा मज्ज विख्यात ।
पियं मनुज किंचित उदित दिनकर व्योम प्रभात ॥ १ ॥

छद मतगयद

थावर जगम नेह द्वियोनि कथा वरमै तिल तेल प्रतिष्ठा ।
जगम उत्तम सर्पि सदा यमको घृत उभयदि जुष्टा ।
नाम त्रिवृत्य वसाघृत तेल महान कहे गह चारिउ दिष्टा ।
पीत दिवा त्रिचहूँ पचहूँ षटहू मतहू परहार ममिष्टा ॥ ४ ॥

छद चचला

देषि दोष काल अग्नि केवला विहीन मध्य ।
ज्येष्ट मात्र यासु वृद्धि मात्रया विरुद्ध नध्य ।
वाज काल मिथ्यया अहार औ विहार कथ्य ।
नेहि ना करोति शोक अर्श तद्रि निद्र गथ्य ॥ ५ ॥

:o: :o. :o:

॥ वा० अथोत्तर खड प्रारभ्यते ॥

प्रथम स्नेहपान क्रिया

स्नेह चारि भांति कहिये घृत १ तेल २ वसा कहे मास मे मिली चरवी ३ हाड के भीतर की मज्जा ये चारो स्नेह वैद्य सूर्योदय होते मनुष्य को पिलावं १ ते स्नेह दो प्रकार है स्थावर और जंगम स्थावर कहिये अचर जहाँ उपजं वहीं थिर रहै ऐसे स्नेह अनेक प्रकार के है तिनमें तिल का तेल श्रेष्ट है जंगम कहै चर जो श्वासा सहित है तिनसें उत्पति घृतादि अनेकनमें घृत श्रेष्ट है २

:o: .o: .o:

अंत— अथ जयपाल शोधन विधि

॥ छद त्रिभगी ॥

निस्त्वग जयपाला अंकुर निकाला त्रिदिव पच यम यमहिषा ।
लय उष्णद छालं खल करि डालं पट वेष्टित करि लेषा ।
खरपर लं नूतन लिप्त स्निग्धन रजसंनिभ लषि वारो ।
निवुआ करि भावं वहुरि सुधावं गुणवरिष्ट अधिकारी ॥

:o: o :o:

॥ दोहा ॥

पट बधं विष खड करि दोल अजापय याम ।
शुद्ध होइ वा दुग्ध गवय यामक पावक काम ३ ॥

इति श्री शार्ङ्गधर सुधाकरे वैजनाथ विरचिते जलपाल विष शोधन १ ॥

विषय—शार्ङ्गधर संहिता की हिंदी टीका ।

रचनाकाल

१ २ ६ १
युत शशि द्रगक भूमिवर्श । लय भाद्रमार्ग शितद्वासपर्श ॥
वर भूमि तनय शनिवार पाय । करिपूर शार्ङ्गधर जीय लाय ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ पत्थर टाइप मे छपा हुआ है । टीका करने के सबध में उन्होंने इस प्रकार लिखा है—

॥ छद पद्धतिका ॥

कृत भाष प्रवंधित वैजनाथ । लघु वुद्धि हस्त अधिपाथ गाथ ।
गुणकाव्य के हित छद युक्ति । गति अर्थ असकृत नवि उक्ति ॥
पुनि वुष्ट सुष्ट जल भेद हीन । दिग सभ्रम पार न वार चीन ॥
वल पिगत अचिता परात लाज । नहि सिध तरन कर कछुक साज ॥
धरि ध्यान शार्ङ्गधर धर पिनाक । तव हर्ष भयो हृदि पारताक ॥
युत शशि द्रगक जब भूमिवर्श । लय भाद्रमार्ग शितद्वासपर्श ॥
वर भूमि तनय शनिवार पाय । करिपूर शार्ङ्गधर जीय लाय ॥

संख्या २४५ख. सारगधर सुधाकर, रचयिता—वैद्यनाथ (बैजनाथ), कागज—देशी, पत्र—६८, आकार—६ × ६ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप)—२६५२, खडित, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत पाडेय श्यामनारायण जी, रियासत–जगदीशपुर, जिला–बस्ती ।

आदि. . . . . ।

:o: .o: :o:

सब औषधि ओदी शरद रेचन वमन मध्वत ।
मूल छाल तरु सबल तौ लघुजर सुमति कहत ।५४।
विचा ग्राह्य वढ आदितरु विजयसार रस जानि ।
दल ताली सादीक विटपि त्रिफलादिक फल आनि ।५५।

टीका

सब कार्य के हेत शरद ऋतु मे ओदी द्रव्य लावै और वमन विरेचन के अर्थ वसंत के अंत में ओवी वस्तु लावै। और अति स्थूल वृक्ष की जड की छाल सद्वैद्य लेते है। औ छोटे वृक्ष की जड़ ग्राह्य है।

इति श्री सारगधर सुधाकरे वैद्यनाथ विरचिते परिभाषाध्याय प्रथम १

दोहा

प्रात भक्ष भैषजा शुभ क्वाथ काल कथनीय।
प्रात माफ्त भोजन निशा सुप्त समै शरनीय। १
रेचन पित्तहि कफ वमन लेखन क्रिया सुपात।
प्रथमकाल वुधजन रचेउ सुखद रोग हत तात। २
विगरे वायु अपान के भैषज भोजन आदि।
अरुचि ओषधि दीजिये सुषप्रद भोजन वाद। ३
विगरे वायु अपान के भैषज भोजन आदि।
अरुचि ओषधी दीजिये सुषप्रद भोजन वाद। ३
विगरे वायु समान अरु मद वहि उद्दीप।
भेषज भोजन मध्यही देत वैद्यकुल दीप। ४
व्यानकीय भोजन वितयहु चकी क्षेपक कप।
ओषध भोजन औषधी विधि सपुट सम ठप। ५
:o: .o: :o:

अत—

चचला

तार वज्र स्वर्ण ताम्र सूत गध लोह ध्वस।
एक दोइ तीनि चारि पाच षष्ट सप्त अस।
मर्द वारि कन्यका भराइ कुप्पि काचरोध।
सधिसाधि हडि सँध मध्य राषु मुद्र बोध।
चूतह थापि मद मद वह्नि दै दिनेक काठि।
स्वाग शीत चूर्ण दुग्ध अर्कभाव मर्द चाढि।८३
अश्वगध काकुलो विमाय मूशली छुरान।
वारि औ तावरीज भाव तीन तीन ठान।
कंज अर्क सेरुका सतीन तीन भावनाय।
मृग्मदाग्नि चद्कपूर एल लौग ककुलाय।
सर्वघूर्ण कै मिलाउ सर्वभस्म अष्टमास।
सर्व कै इकत्र मानखड मिश्र शाणमात्र।
धेनुक्षीर दोइ पलक मिष्ट भोजनी सुपात्र।
भोगवै अपारदार शुक्रहीनता न जात।
नाम कामदेव भद्र रुष्ट पुष्ट कृत्यगात।८६

टीका

अथ मदन कामदेवरस चादी हीरा सोना तावा चारौ भस्म पारा गधक लोहा तीनौ शुद्ध ये सातौ क्रम से वढती भागले।

इति वैजनाथ विरते सुधाकरे मध्यखडे चिकित्सा स्थाने धातुरस शोधन मरण क्रिया द्वादशोध्याय

विषय—वैद्यक विषय वर्णन।

संख्या २४६क. भक्तिविनोद, रचयिता—बोधदास, कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—९⅞ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—४०५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४८ ई०, लिपिकाल—सं० १९२३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री महंत हरिशरणदास जी एम० ए०, ग्राम—कमोली, डाक०—रानीकटरा, जिला—बाराबंकी।

आदि—श्री गणेशाय नमः लिष्यते कथा भक्ति विनोद ॥

॥ दोहा ॥

सतगुर समरथ साहेब तुमरीन मोहि अवलभ ।
ग्यान प्रगट कछु होइ मोहि कथा करौ आरंभ ॥ १ ॥
निज गुर सतगुर ता गुर मइ तिनकी बलिहारि ।
कृपा करहु साधन सहित कीरति कहौ तुम्हारि ॥ २ ॥

॥ छंद ॥

जै सिधिदायक भगतन नाएक एक दत बलिहारी ।
गिरजा सिव बालक जन प्रतिपालक विनती सुनहु हमारी ।
मोमन एह आइ कीरति गई तन धरि भगतन्ह केरी ।
जब होहु सहाँई बुधि कछु पाई बार बार कहि टेरी ॥

॥ दोहा ॥

बार बार विनती करौ गजमुष दुइ कर जोरि ।
जो इछा आई मनहि सो अब पुरवहु मोरि ॥ ३ ॥
:o: :o: :o:
चैत सुदी तिथि नौमी कथा कीन्ह परगास ।
१ ८ ४ ८
समै कृष्ण वसु वेद वसु मरजी गिरवरदास ।

अंत—वैसाष महीना सतमी वरत निरजला मॉनि ।
सुकल पछ औ भौमदिन तब संपूरन जॉनि ॥६८॥
चारिसै अरसठि चौपाई दोहा अरसठि जॉनि ।
छद लिषे एहि ग्रथ षट सोरठ आठै मॉनि ॥६९॥

चौपाइ ४६८ दोहा ६७ छद ६ सोरठ ८

इति श्री कथा भगित विनोद संपूरनम् सुभमस्तु समत् १९२३ सन १२७४ कार्तिक सु २ गुर लिषि मुनू पडित मुकाम श्री स्थान कोटवा श्री सतगुर सहाइ ॥

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश।

विशेष ज्ञातव्य—विशेष विवरण के लिये देखिए गोसाईंदासकृत "कहरानामा"।

संख्या २४६ख भक्तिविनोद, रचयिता—बोधदास या बोध मल्ल, कागज—आधुनिक सादा, पत्र—२८, आकार—८½ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—४२०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—महंत श्री गया प्रसाद जी, ग्राम—भीखीपुर, डाक०—राजा फत्तेपुर, जिला—रायबरेली।

आदि—

. . . .

॥ दोहा ॥

भक्तन की महिमा लिखौ जो गुरु होहि दयाल ।
मोमे कछु गति नही छपा न तुमसे हाल ॥ ७ ॥
जहँ लहि यह ससार महँ भक्त औ होहि ।
तिन्हते विनती करत हौं कृपा कीजिये मोहि ॥ ८ ॥

भक्त जक्त कवि कोविद सबते अरज हमारी ।
कही ग्रंथ गुर कृपा ते पढ़ि सुनि लेब सभारि ॥ ९ ॥
चैत सुदि तिथि नौमी कथा कीन्ह परगास ।
समै बेद सुकर्म बस मरजी गिरवर दास ॥१०॥
भक्ति विनोदं जे पढैं तेहि मन होहि अनद ।
भक्त की कीरत लिषो कटै मोह के फद ॥११॥
भली भाँति बोधे कहा सुनि समुझा चितलाइ ।
तेहि ते दुइ दोहा लिषे जब गिरवर मन भाय ॥१३॥

अत—
जग आये जग जीवन चरना । तौने समै के भक्तन वरना ॥
भक्तिमाल नाभै कहि भाषा । तेहि माँ भक्तन महिमा राषा ॥
चारिहू जुग जे भक्त कहाए । नाभै तिनकी कीरति गाए ॥
रामेश्वर सतगुर की दाया । तवहि बोध यह ग्रंथ बनाया ॥
सतगुर दाया जेहि पर कीन्हा । तेहि के हिरदै ग्यान कह दीन्हा ॥

॥ दोहा ॥
रामेश्वर को चेला बोध भयो तेहि नाम ।
कीन्ह परावन कोटवा छाँड बदेहरा गाऊँ ॥
गिरवर करि सतसग करी सुषित सहि परिवार ।
बधू नारि मातु पितु उतरव भौ जल पार ।
पुरजन परिजन कीन्ह वर वेरा । तेहि स्वारथ लछनपुर डेरा ॥
गोमती निकट कागदी टोला । तह यह ग्रंथ कहा अमोला ॥
भक्ति विनोद नाम तेहि राषा । भक्तन को महिमा कहि भाषा ॥
परवस परे सपम नहि पाया । तेहि ते बहुरि न कथा चलाया ॥
कायथ जाति कर्म को हीना । सरन आयहु पर परवस कीन्हा ॥
यह अपराध समुझि मन आई । तवहि भक्ति विनोद बनाई ॥
करहि भक्त सब मोहि पर दाया । पदरज देहि छोडा नहि माया ॥
० ० .०.
बोध मल्ल के सतगुरु कृपा कीन्ह भरि पूरि ।
पढै सुनै चित लाइके पाप होहि सब दूरि ॥
बैसाष महीना सप्तमी बरत निरजला मानि ।
सुक्ल पक्ष औ भौम दिन तव सपूरन जानि ॥
चारि सै सरसठ चौपाई दोहा अरसठ जानि ।
छद लिषे यहि ग्रंथ षग सोरठा आठो मानि ॥

विषय—सत्यनामी पथ के भक्तों का नाम माहात्म्य वर्णन ।

संख्या २४६ग. भक्ति विनोद, रचयिता—बोधमल्ल, निवासस्थान—लखनऊ, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—[illegible], आकार—७$\frac{1}{8}$ × ६$\frac{1}{8}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप)—३७८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४७, प्राप्तिस्थान—महंत श्री गुरप्रसाद दास जी, स्थान व डाक०—वछगावाँ, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नम. श्री राम जी सहाइ श्री महावीर जी सहाइ श्री सगुरत समर्थ साइँ जगजीवन महाराज की सरन ग्रंथ पोथी भक्ति विनोद लिष्यिते ॥

॥ दोहा ॥
सतगुर समर्थ साहेब तुमरिनि मोहि अलंभ ।
ग्यान प्रगट कछु होइ मोहि कथा करौ आरभ ॥ १ ॥

निज गुरता गुर तासु गुर तिन गुर की वलिहारि ।
कृपा करहु साधन सहित कोरति कहौ तुम्हारि ॥ २ ॥

॥ छद ॥

जै सिद्धि दायक भक्तन नायक एक वत बलिहारी ।
गिरिजा शिव बालक जन प्रतिपालक विनती सुनहु हमारी ।
मो मन यह भाई कीरति गाई तन धरि भक्तन केरी ।
जब होहु सहाई बुधि कछु पाई बार बार कहि टेरी ।

॥ दोहा ॥

बार बार विनती करौं गजमुख दुइ कर जोरि ।
जो ईक्ष्या आई मनहि सो पुरवहु अब मोरि ॥ ३ ॥

अंत—रामेश्वर को चेला बोध भए तेहि नाम ।
कीन परावन कोटवा छाडि वरैठा गाउ ॥६३॥
गिरिवर का सतसंग करि सुखित महित परिवार ।
बधू नारी मातु पितु उतरव भौजल पार ॥ ६४॥

॥ चौ० ॥

पुरजन परिजन कीन्ह वसेरा । तेहि कारन लखनपुर डेरा ॥
गोमति निकट कागदी टोला । तहा यह ग्रथ कहा अनमोला ॥
भक्त विनोद नाम तेहि राखा । भक्तन की महिमा कहि भाखा ॥
परवस परे सवस नहि पावा । तेहिते बहुतन कथा चलावा ॥
कायथ जाति कर्म को हीना । सरनायहु पर परवस कीन्हा ॥
यह अपराध समुझि मन आई । तबही भक्ति विनोद बनाई ॥
करहि भक्त मोपर सब दाया । पद रज देइ छडावहि माया ॥

:o: o .o.

बोधमल्ल के सतगुर कृपा कीन भरिपूर ।
पढ़ै सुनै चित लाइक पाप होइ सब दूर ॥६७॥
वसाख महीना सतिमी बरत निराजल मानि ।
शुक्ल पक्ष औ भौम दिन तब सम्पूरन जानि ॥६८॥
चारि सै अरसठि चौपाई दोहा सतिसठि जानि ।
छद लिखै यहि ग्रथ खट सोरठ आठै मानि ॥६९॥

चौपाई ४६८ ॥ दोहा ६७ ॥ छद ६ ॥ सोरठ ॥ ८ ॥

इति श्री ग्रथ भक्ति विनोद कथा सम्पूरन कुआर वदी परेवा ॥ दिन शनिश्चर सम्वत् १९४७ सन् १८९१ ॥ इति ॥

विषय—सतनामी पथ के भक्तो का चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

वैसाख महीना सतिमी बरत निराजल मानि ।
शुक्ल पक्ष औ भौम दिन तब सम्पूरन जानि ॥

संख्या २४७. फूलमाला, रचयिता—बाबा, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—५८७/८ × ३ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—५, परिमाण (अनुष्टुप)—५१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री महंत बाबा रामशरनदास जी, कबीरपथी मठ, ऊँचगाँव, डाक०—बाजार शुक्ल, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ दोहा ॥ फूलमाला ॥
पीतम बिन पलकल नहीं कहा करौ कित जाऊँ ।
भरि भरि आवत मोगरा सो रहि रहि वाको नाऊँ ॥ १ ॥

मारग देषत दृग थके अजहूँ न आवैं पीव ।
ऐसे ही सौमन सषी कब लग राषौ जीव ॥ २ ॥
सूना मंदिर देष के मुरझानी विन कथ ।
वा लाला के दर्स को ताते प्राण रहत ॥ ३ ॥
रटत वकत त रजनी गई पंथ निहारत नाहि ।
मान गहौ वौरी सषी दौरि पिआ पै जाहि ॥ ४ ॥
तोहि मनावत पिअ अली कवकी घामै ठाढि ।
मान गहो कचनार ज्यौ नाम कहो दी छाडि ॥ ५ ॥
पीतम रस वस कीजिये कवहूँ न कीजै मान ।
हौ तोसो जूही कही अव तू समुझ विधान ॥ ६ ॥
चमली की पाषुरी रही उरज लिपिटाई ।
मानो विरहिनि घाई पर फाहा देत चढाई ॥ ७ ॥
मम न षारो नैन जल कहौ सुकारन कौन ।
लोनी मूरति वित वसै जाके असुआ लोन ॥ ८ ॥
जाहो दुष अपने कहौ देत जरे पर नोन ।
मन मेरो मेरो नहीं और सो मेरो कौन ॥ ९ ॥
चल पीतम घर आपने विरहनि की सुध लेहु ।
तुम विछुरत वाके अली चप वरन भई देह ॥१०॥
तुम विछुरत वा सुदरी वधू नवेली वालि ।
इत सजम वैरी भए नागेसरि जनलाल ॥११॥
रैनि गई मग जोहते अधरन आवे जीउ ।
को है सो सूरजमुखी जिन्ह विरमाए जीउ ॥१२॥
पिय विन सूनी सेज तन मन अगिन पसार ।
राषी छिरकि गुलाब सो तहूँ जरत अतिनार ॥१३॥
मान छडायो जो चहौ आपु सिधारौ नाथ ।
तार मनावतु केतुकी मानि न मानत नाह ॥१४॥
गन सम्हार औगुन तजै नारि सुलछिन सोइ ।
पीतम को रस वस करै सदा सुहागिन सोइ ॥१५॥
वसै जाइ परदेस मै पिय जीवन को मूल ।
कमल कली सो अति वनी राइ वेल को फूल ॥१६॥
रितु वसत पीतम विना वाको कछु न सुहाई ।
राते टेसू देख के पिअरी होइ होइ जाई ॥१७॥
मौन गहो हौ माझ को अधरन आयो जीउ ।
भोर भयो फूलो कमल वोल वोलावत पीउ ॥१८॥
अवध करी हौ पहर की वैचि चले पिय लीक ।
अवहूँ न आए स्याम घर भई दुपहरी ठीक ॥१९॥
विन तौ ज्यौ त्यौ करि गए पिय विन कछु न सुहात ।
अव फूली कमोदनी आई वैरिनि राति ॥२०॥
वहै कदम वहै कुंजन वहै नवेली ठौर ।
ऊधौ जू व्रिजनाथ विन भई और की और ॥२१॥
पीतम विन रजनी गई मो को कछु न सुहाई ।
तापर फूली चादनी मोको डारत मारि ॥२२॥
सैल सिआनो नागरी कहा करौं अव तोहि ।
मौसिरी रघुनाथ सो रूसी टूटति मोहि ॥२३॥
फूलगरी हई नीकसी सुदर महा अनूप ।
नरगसि पिय विन दृग थके देषे आधो रूप ॥२४॥

रितु वसंत आई अली नाथ रहे वसि अंत ।
अव कह करुना ए सखी जो पिय वस भय अंत ॥२५॥
जहा रोस तहां रस नही मन मै देष विचार ।
हा हा करत हौ ऐ सखी सो पिय रोस निवार ॥२६॥
पीतम विन अतिही दइ विरह दुष ओतार ।
लषत सुदरसन पीउ के गए सुदुष अपार ॥२७॥
रूप मजरी गति वनी पछिताही हौ आइ ।।
फूल लगत तिर्सूल जिम मन मे लेह विचार ॥२८॥
अधर सुधर मधवेन के कठिन परीचित होत ।
कुदन सो मुष निरषि के नैन वढ अति जाति ॥२९॥
गग अन्हाए होत फल कहो पडित समभाइ ॥३०॥
अगिआ करो हो वेसरी चोया अग लगाइ ।
सुही सारी पहिरि के परसौ पिय के पाइ ॥३१॥

मोगरा	जाही	टेसू	करुना	लाला	नागेसरि	दुपहरिआ	सुदरसन
कचनार	गुलाव	कदम	कुदन	चमेली	सदा सुहागिन	मोलश्री	केसरि
वौर	सूरजमुखी	कामोदन	रूपमजरी	कचनार	गुलाब	कदम	कुदन
जूही	केतुकी	चदन	सेवती	चमेली	सदा सुहागिन	मोलश्री	केसरि
वौर	सूरजमुखी	कामोदनी	रूपमजरी	कचनार	गुलाब	कदम	कुदन
जूही	केतुकी	चदन	सेवती	चमेली	सदा सुहागिन	मोलश्री	केसरि
सौसन	चपा	कमल	निवारी	जूही	नागेसरि	दुपहरो	सुदर्सन
लाला	केतुकी	चदन	सेवती	चमेली	सदा सुहागिन	मौलश्री	केसरि
समुन	गुलाबु	नरगिस	रूपमजरी	जाही	केतुकी	करुना	कुदन
नागेसरि	सदा सुहागिन	निवारी	सेवती	सूरजमुखो	चपा	सुदरसन	केसरि

—पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—वियोग शृंगार का वर्णन । प्रत्येक दोहे मे एक फूल का वर्णन है ।

संख्या २४८. भक्ति विवेक, रचयिता—बोधीदास, कागज—देशी, पत्र—३७, आकार—९ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—९९९, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य; लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १९३९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री जगन्नाथदास जी मठाधीश, मठ—बनके गाँव, डाक०—कादीपुर, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—लीषते पोथी भगत वीवेक

दोहा

वंन्दो गुरु पद पंकज वदीछोरी देआल प्रभु ।
तेही चरनन्ही मनरज देत शार जो मुकती अउ ॥

चौपाई

प्रथम ही वन्दो गुरु चरन पाउ पद नीवान
जेही शुमीरत अज बीश्न महेश नीश दीन धरे धेआन

प्रथम ही वन्दो चरन गुरुदेवा । जीन्हते पाएउ नीरजन भेवा ।
देव नीरजन वो शभ दाशा । तीनीलोक जाके जोती प्रकाशा ।
जीव चराचर चारो खानी । शव घट पुरन अतरजामी ।
गन गध्रव शुर नर मुनी देवा । शव पर अमल करही वशु देवा ।
चौदह भुअन जाके फीर दोहाइ । डरमाने जाके धरम राइ ।
पुर्ख नीरजन वो शभ नारी । देव दनुज शभते अधीकारी ।
प्रवश शकल वो वश भगवाना । नही कोइ इन प्र देव न आना ।
शभ कोइ शुमीरे ग्रौर अमाना । नही कोइ इन्हते पुर्ख पुराना ।

दोहा

न्ही कोइ इन्हते अन है नही दुशर करतार ।
न्ही कोइ इन्हते अगम है न्ही कोइ इन्हते पार ।
.० ० .०.

चौपाई

दाश वोधी प्रभु नाम को गावै । जेहो शुमीरत अवीचल पद पावै ।
जाको शुमिरे आदी भवानी । जा कहु शुमीर कोविद जानी ।
० ० ०
राम नाम कै दरश ते मट कठिन कलेश ।
मनशा वाचा क्रमना गावही 'वोधीदाश' ।
अत--जम नही छुएँ पावही जो नर गावही गाव ।
वहोरी न भोजल आव एक नाम चीत लाव ।
शो नर सदा वकुंठ हो कर महा शुख भोग ।
वहोरी जन्म जो पाव तो वे आपे शोग न रोग ।
'वोधीदास' वीचारो कहु चेतहु नर अग ग्यान ।
भजहु नीरकाल नीरजन वे साहा पुर्ख चौत्रान ।
वीधनी हरनी मगलो कर्ता अशा नाम नीरजान ।
अश्टशीधी औ नोवोनीधी दरशाऐक भगवान ।
पेठा हे घट भीतर वठा है सछेप ।
जन जेशो गती चाहै तव तशी मती देत ।
राम नाम की लुटी है लुट शको सो लुट ।
अतकाल पचताहुगे जव तन जेइहे छुट ।
लीखा रहे वहुत दीन मेरी शक न काए ।
लीखनीहार वापुरा शो गली गली मीटी हाए ।

एती श्री भगती विवेक कथा शपुरन शमाप्तहु पोथा रामानद शमादे नमश्तु.... ..
शंवत १६३६ शाल

विषय--भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथारंभ में 'पीपाजी तथा रामानंद में हुए संवाद' का भी वर्णन है। एकेश्वरवाद का समर्थन किया गया है, पर द्वैत का खंडन नहीं है।

संख्या २४६ विवेक वैराग्य दशक (गुरु शिष्य संवाद), रचयिता--बोधदास (?), निवासस्थान--कुटी तीतयाला (?), कागज--देशी, पत्र--१., आकार--८॥ × ६॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--११, परिमाण (अनुष्टुप)--.०८, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री पं० राजनारायण त्रिपाठी, ग्राम--गोपालपुर, डाक०--(जौनपुर) ।

आदि--॥ वीवेक वैराग्य दशक बारावा प्ररभ. ॥

॥ १२ ॥

श्री सीता राम समर्थ ॥ आधी प्रपच करावा नेट का ॥
मग ध्यावे परमार्थ विवेका ॥ येथे आलस करुका ॥ विवेची हो ॥ १ ॥
प्रपंच साडुनी परमार्थ कराल । तेणे तुह्मी कष्टी व्हाल ॥
प्रपंच परमार्थ चाल वाल ॥ तरी तुह्मी विवेकी ॥ २ ॥
प्रपंच सांडुनी परमार्थ केला ॥ तरी अमसीले नारवा याल ॥
मगतया करटचाला परनार्थ फंता ॥ ३ ॥
परमार्थ साडुनी प्रपच करीसी ॥ तरी तुये मयातना भोगी सी ॥
अती परम कष्टी होसी ॥ यन यातना भोगीता ॥ ४ ॥
साहेब का मासी ताही गेला ॥ गृही च सुखाडो न वंसला ॥
तरी साहेव कुटो तीतयाना ॥ पाहाती लोक ॥ ५ ॥
तेव्हा महत्वची गेले । दुर्जनाचे हासे जाले ॥
दुःख उदड भोगीले ॥ आपुल्या जीवे ॥ ६ ॥

अत—

मागा वोलीले उत्तम गुण ॥ तयासी मानीनी प्रमाण ॥
प्रबोध शक्ती ये लक्षण ॥ पुढे चाले ॥३८॥
वोल राया सारीखे चालणे ॥ स्वगे करुन वोलणे ॥
तयाचीव वचने प्रमाणे ॥ मानी तीजनी ॥३९॥
जे जे जना समाने ना ॥ तेते जनही मानेना ।
आयण ऐक जग नाना ॥ सृष्टी मध्ये ॥४०॥
ह्मणोती सगती अभावे ॥ मानत मानत सीकवावे ॥
हल् हल् सेवटे न्यावे ॥ विवेका ते ॥४१॥
परतु हेची ऐकाची कामे ॥ वीवेकी करील नेमे ॥
इतरते वाउडे भ्रमे ॥ भाडो चला गलेग ॥४२॥
वहुतासी माड तापे कला ॥ सैन्या वाचुनी पुरवला ॥
या कारणे वहु वाला ॥ राजी राखावे ॥४३॥

इती श्री दास बोधे गुरु शीष्य सवादे द्वादश दशके ॥ उत्तम पुरुष लक्षणी निरूपण भाम समास दशम ॥

विषय—सत मतानुसार भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन ।

सख्या २५०क. गुरु गोष्ठी (पवन गुजार), रचयिता—भगनदास, कागज—देशी, पत्र—१०१, आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—१५१५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १८६८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री महंत आशारामदास जी, कुटी गुरुदास, पचपेडवा, जिला—गोंडा ।

आदि—श्री गनेशाये नमः

श्री गुर सिषको गुर गोष्ठी । वानी श्री शतगुर वाच ।
है शतगुर भवशागर प्योवा । लाते भगन गुरु को शेवा ।
तारेहु पतीत पतग पषाना । धन्य धन्य शतगुर वलवाना ।
हो गुर पारब्रह्म भगवाना । शंवत सुरमुनी शीभु सुजाना ।
हो गुरु अलष पुरुष न मोला । जीव चराचर सभ घट वोला ।
ज्ञान बुधि मति थोरि हमारी । गुरगती अगम अपार वल भारी ।
गुरती समुझी परै नही भाई । गुरगती कहत प्रान सकुचाई ।
गुरगती हेतु सभै तजी दीन्हा । भूष प्याश भीषाहरी लीन्हा ।
प्रेम प्रीति विश्वास दृढाई । गही गुर परम चरण सुषदाई ।

सुनहु 'भगन' विश्वास हमारी । जैसे तेल द्वीप सो वारी ।
लकड़ी वीना नहोंरील डोलें । गुरुगती अगम 'भगन' को बोलें ।

छदा

तनसो गए अद्यमोत नही । हरी नाम भजे सभ सोक दही ।
गुर नाम नीरतर जानु हीय । कछु काज गणेश न आन जीव ।
तप जोग वीराग की आस नही । गुर चरन भरोश सदा नोवही ।
करी कोटि उपाय थके मनमा । गुरको हीत जानी रहो मनमा ॥
गुर दीन दयाल दया करिहै । तनरोग वीरोग सदा हरिहै ।
'भगन' गुरु से लाज नही । पट षोलि कहो अपने मनहीं ।
गुर जानत हौ अपने मनको । अब काह कहो अतरगत को ।

० :० ·०:

इति पवन गुजार ग्रथ शमस्तु पुरन दोहा । अठारह सै चौरानवे समत् ।

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन ।

सख्या २५०ख. गुरु महिमा, रचयिता—भगनदास निवासस्थान—गुरदास की कुटी, पचपेडवा, जिला-गोंडा, कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—८॥ × ६। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—२१६, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपि-काल—स० १८७६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० रामदास जी महत, जिगिना ठाकुर, डाक०—इटवा, जिला- बस्ती ।

आदि—श्री गणेशाऐ नम

ॐकारा सव सतन्ह मिलि कीन्ह वीचारा ।
गुरु की महिमा अपरपारा । गुर काम धेन
गुर कलप विरिछ । गुरु अलष पुर्ष । गुर सव देवन के देवा ।
गुर कच मुरति माधुरी । ले परसि चरन की धुरी ।

·० ० ०·

गुरु महिमा जे पढै औ गावै । सकट जुई नीवरी न आवै ।
जो आवै तौ दास कहावे । सुषाचारज अनेमुष गावा ।
रामचदा जेहि सीस नवावा । ० ० ·०:
वरहो मास सुरति जेन्ह लावा । तव ऐह भेद निरतर पावा ।
सावन सासु वहुत सुष दीन्हा । परम तत्व घट भीतर चीन्हा ।

:०: ·० :०:

दोहा

नीरमल मास कुआर है चदा उए अकास ।
गुगदास गुरु चरन मो पुलकित भगन दास ।

अंत—

अकुस ग्यान हाथ मो लीआ । मन मतग मारि वस कीआ ।
नीसुवासर मन की वलिहारी । मन सो हारि गए त्रीपुरारी ।
मन की वात मनहि मो गहे । मन को वात अनत न कहै ।
मन की वात मनहि मो राषा । मन सो सब्द सोहगम भाषा ।
मन है गुरु मनै है चेला । मनसो ध्येल अनाहद ध्येला ।

दोहा

मन मतंग मतवार हे सात दिप नौ षड ।
घुमत है पल एक मो फोरि जात व्रह्मड ।

—सपूर्ण

विषय—भक्ति ज्ञान विषय वर्णन ।

संख्या २५०ग. नामनिधि, रचयिता—भगनदास, निवासस्थान—कुटी गूंगदास, पच पेडवा (गोडा), कागज—देशी, पत्र—२७, आकार—८॥ X ६। इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—६०७, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १८७६ वि०, प्राप्तिस्थान—महत श्री रामदास जी, ग्राम—जिगिना ठाकुर, डाक०—इटवा, जिला—बस्ती ।

आदि—

. . . .

दोहा

अधाधुध की देषि कै भो मन मे अनुराग ।
भगन वसो वोहि देस मो तव साचो वैराग ।१६

चौपई

वीनु कर की वीनी अनहद वाजै । धुप दिप आरति नौ साजै ।
वीनु मुषो वै राग अलापै । तेन्हका देषि काल जम कापै ।
मारा सौंधु तह देषु समीरा । पीअत आमी हस भौ धीरा ।
मोति चुगि हुंस करु किड़ा । वरस पाये तन छुटेउ पीरा ।
देषु भगना जह पुरइनि वहकै । . . . .
चहुवोर से दामिनि दमकै । वीजलि देषु घटा वीनु चमकै ।
रवा माजि साफा जेन कीन्ह । भौ अजोर वस्तु तव चीन्ह ।
जव सीर ऊपर झलकै चदा । ता दिन छु चोलि को वदा ।

दोहा

आमी को वदा टूटिगो कमलकली विगसानि ।
तापर भवरा गुजहि सुनो सब्द दे कान ।

०   ०:   ०

नाम निधि को कथ रै निवेरा । भगन दास सोई गुर मेरा ।
दान पुन्य सव कै थके तिरथ के नहाए ।
भगनदास हरि भक्ति विनु कहु कैसे थहाराए ।

अत—

॥ छद ॥

तीरथ अनेक । हरिनाम रसना टेक ।
गुरु दीजिए मोहि दान । आषंड पद नीरवान ।
गुर ग्यान की सम सरे । तव मारु तिसौ घेरी ।
दीदार नैना डोलाना । लै मुरति सोह बोलना ।
धन झमकि महले अवती । पीय के हिअ विलमावति ।
झन झनकि विछुआ वोलहि । तव आमी अवद षोलहीं ।
रची नारि वैठी उनमुनी । चढी जात सीर पर भुनझुनी ।
गुलजार रंग कह देषता । नैनो मे साहेव पेखता ।
दीलदार दानी नुर है । रवी भानु चदा पुर है ।

दोहा

नाम रटत गनीका तरी औ रैदास चमार ।
'गुगदास' गुरु चरन मो 'भगन' उतरि गौ पार ।४७
नाम निध एह ग्रथ है देखो हीदै वीचारी ।
ईगाल पीगाल सुषमनी सद्य भगन देषु त्रीपुरारी ।
नाम निध एह ग्रथ है वाचत हरै कलेस ।
भगन सोह गमस्यासमो चलत सहस मुष सेस ।४८

ईती नामनीधी ग्रंथ सपूरन सुभमस्तु । समत १८ सै छीहत्तरी ७६ ।

छत्री जाति हमार हे भगनदास है नाम ।
गुग दास गुर चरन मो राम नाम सुषधाम ।
—सतगुर .. ।

विषय—सत मतानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश विषय वर्णन ।

संख्या २५०घ भँवर गुजार, रचयिता—भगनदास, कागज—देशी, पत्र—७२, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१० परिमाण (अनुष्टुप)—१३५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १८६४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री महंत अज्ञाराम दास जी, कुटी गूंगदास, पच पेडवा, जिला—गोंडा ।

आदि—श्री गनेशाय नम. श्री गुरुभ्य नमः ओउम् भगवत वाशदेवाय नमः अथ ग्रंथ भवर गुजार लीषते ।

आदी गुरु आपार महीमा पार कहु को पावही ।
आदी अज शनकादी मुनिवर शत कोउ धावही ।
सेस सारद जपत नीसु दीन शीभू ध्यान लगावही ।
आदी जोती परचड शामुद दरश को सभ धावही ।
गगन दीप अषड वानी कहत मोमन सकुचही ।
सहस दल को कमल फूले भवर तापर गुजही ।
झलक जोती अकाश नृमल देषु दमकत दामिनी ।
बैरदा झाकु नीसुदीन पलक सो जस भामिनी ।
पवन को नवताल लागे गगन मो घनघोर है ।
गुज शुनी शुरती लागी नीसुदीन शब्द झीगुर मो रहै ।
.०. .०. .०.
तव ज्ञान सो वरदान दीजे छीमामील धीनता ।
हकार अरु अभीमान तजिके दया प्रेम गरीवता ।
हरु लोभ लालच मोह ममता सतोष हमको दीजिय ।
काम क्रोध हकार तन मो तेन्हे गुर नीकारिया ।
अव तो नीवाहे गुरुवनि हे अवर नहीं कछु आस है ।
भगन दासा अधीन सतगुर चरन सेवक दास है ।

अत—जो गुरचरन शषी ग्रथ भवर गुजार ।
बानी अगम अपार हे गुर समथ षेवनहार ।
भगन अधम को पार उतार करनी कर्म दीन बीसराई ।
सतगुर चरन हीये गहि लाई ।
दोहा
भगन पतित को मुन है तासो कहत पुकारी ।
सरन गए की लाज काज गुर कीजिये आपन दास ।
पास नीज राषिये लीजे मोहि उवारी ।
जानी कुटील षल पतीत अरी दीजे सत समाज ।
तव जानो गुरु पूरन काज ।

सवत् १८६४ ।

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश विषय वर्णन ।

सख्या २५०ङ शब्द गुजार, रचयिता—भगनदास, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—२८६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १८६४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री महंत अज्ञाराम दास, कुटी गूंगदास, पचपेडवा, जिला—गोंडा ।

आदि——

अधरहिं अधर धवल घर छावैं ।
यहि पाच तत्र दरसावैं ।
तेहि पीछे नीरगुर्न पद पावैं ।
निर तिस अचभो वानी ।
जो कोइ सुनै सोई गुर ज्ञानी ।
तत्र भाव सभ नीरगुण होई ।
नीरगुण लखै बीरल जन कोई ।
तत्र लखा उपवन औ पानी ।
हरदम होत सोहंगम वानी ।
तत्र लखाऊ लखा कहु कैसे ।
जागै गगन शब्द धुनि जैसे ।

अंत——

दोहा

ग्रथ शब्द गुजार है उठतु सब्द ऊँकार ।
गुगदास गुरु चरन मो सुना करो झनकार ।

चौपाई

गुगदास गुर को ध्यान । जो करत है कल्यान ।
गुगदास गुर को चरन । है 'भगना' पापी शरन ।
गुगदास गुर आधार । जो करत मोहि भौ पार ।
गुगदास गुर को आस । है सरन 'भगन दास' ।

:o: o :o:

शब्द गुजार ग्रथ को नामा । पूरन होहि सकल सिधि कामा ।
कोई लिषो हीये धरि ध्याना । उपजै ज्ञान विमल वुधि नाना ।

:o: o :o:

न कछु करनी कर्म है नही कछु वुधी प्रकास ।
सकल सत को वदगी चरनन 'भगनदास' ।
यह महिमा सभ गुरन की सुनी मती मानहु रोष ।
गुगदास गुर चरन राम नामहि करे भरोश ।
शावन मास अजोर पछ अकासी भृगुवार ।
समत हेम लमीका ग्रथ सब्द गुजार ।

संमत् १८८४ ॥ सपुर भौ ॥

विषय——भक्ति तथा ज्ञानोपदेश विषय वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य——देखिए 'पवन कुमार गुंजार' का विवरण ।

संख्या २५१ आरत मोचन, रचयिता——भगवानदास, कागज——देशी, पत्र——२३, आकार——६।। × ४।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)——८, परिमाण (अनुष्टुप)——४१४, खंडित, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, रचनाकाल——सं० १८८५ वि०, प्राप्तिस्थान——श्री प० गुरुप्रसाद जी, ग्राम——धरमपुर, डाक०——परशुरामपुर, जिला——बस्ती ।

आदि——श्री गणेशाय नम ॥

गणपति शिव सारद सुमिरि द्विजगुर चरन मनाय ।
आरत मोचन कहत हौ जेहि सुनि भ्रम मिटि जाय । १
सवत अट्ठारा सै असी पाच पौष है मास ।
शुक्ल शुक्र है द्वादसी कवि कियो ग्रथ प्रकास । २
मन गुरचरन काल अनुरागहु ।
जेहि प्रसाद करि विमल सुभगमति रामचरित मानस कछु भाषहु । १

गुरु के चरण पूजी भव तरिहौ सोवत मोह निसा ते जागहु ।
जेहि प्रसाद जग द्वन्द्व न व्यापहि सोइ चरणन रज हृदय म राषहु । २
माथ नाइ कर जोरि ठाढ होइ प्रेम सहित वर मागहु ।
'भगवानदास' गुरु कृपा करहु अब भव सरिता ते बूडत टारहु । ३ ॥१॥
श्री गुरु कृपा करहु जनजानी ।
भक्ति विवेक ग्यान बल नाही वेद पुरान न जानी । १
येकहि अक भरोस पद्द तको 'आरत मोचन' भानी ।
करहु सत्य सब आरत छूटहि करौ प्रनाम जोरि जुग पानी । २
जो यह भनित सुनही की गावहि प्रेम सहित अति आरत बानी ।
ताके होइ विवेक विमल मति बहुरि होहि सुभ गुन कै षानी । ३
सोई गुनग्य सरवग्य सोइ है जाकी मति यहि ग्रथ समानी ।
गुरु प्रसाद भगवानदास कह मिलै भक्ति जेहि सकर ज्ञानी । ४ । २

अत—अब हम जाब सरण रघुवर की ।
लष्यो विचारि जहान जहा लगि प्रीति करत सब स्वारथ की । १
यहै जानि सरनागत आयो छोडि प्रीति सब जन परिजन की ।
जेहि सरनागत गयो विभीषन लाज कीन निज पावन प्रन की । २
व्याध आदि कपि गनिका तार्यौ सबते पतित अधम मति जिनकी ।
केवट करि हरिपुर को सिधायो जह न जात मति विधि हरिहर की । ३
कोल भिल्ल सब भये भक्त जन सीस राषि रज पकज पद की ।
'भगवानदास' कह दोउ कर जोरे करहु आस रघुपति निज जन की । ४ ।६१
भै रघुनाथ मोरि मति भोरी ।
राम को नाम परम मनि छोडत मरत देवस निसि काच विटोरी । १
अपने घट की मरम न पावत बाहेर फिरत विकल मति थोरी ।
मोह निसा मे भ्रमत फिरत है सूझत नही जस अध टटोरी । २
हरि जस सुधारो सबहु व्यापय विष या सजल प्रीति घनेरी ।
भगवानदास मन फस्यो कुपथ मे राघौ राम बाह गहि मेरी । ३ ।६२

—अपूर्ण

विषय—राम चरित्र तथा भक्ति वर्णन ।

रचनाकाल

रावत अट्ठारा सै असी पांच पौष है मास ।
शुक्ल शुक्र है द्वादसी कवि कियो ग्रथ प्रकास ।

सख्या २५२ अम्बिका चरित्र, रचयिता—प० भगीरथ शर्मा त्रिपाठी, स्थान—निगोहा, रायबरेली, कागज—आधुनिक, पत्र—६०, आकार—८७/१० × ६८/१० इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९६६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत भगीरथ शर्मा त्रिपाठी, ग्राम—निगोहाँ, डाकघर—तिनेरा, जिला—रायबरेली ।

आदि—अम्बिका चरित्र ॥ श्री गणेशाय नम । ॐ नमश्चडिकायै ॥

॥ दोहा ॥

सुमिरि गणाधिप शारद श्री गुरु चरण मनाय ।
सप्तशती भाषा रचो कृपा करहु सब आय ॥ १ ॥
हे सर्वे हे चण्डिके हे दुर्गा महरानि ।
हे भद्रे हे भगवती सदा करहु कल्यान ॥ २ ॥
हे जगदम्ब दयामयी सब जग की सिरताज ।
परो चरण की शरण मे पुरवहु जन मन काज ॥

हे अम्बे अब कृपा करि करहु मनोरथ पूर।
जगत जननि आरति हरनि करहु सकल दुख दूर॥

॥ सोरठा ॥

हरहु सकल ममशूल करहु कृपा निज जानि जन।
जानौ नहि कछु तूल केवल चरण तिहारि मा॥

सवैया

नहि जानत छन्द प्रबंध कछू नहि जानत हो भक्ति को सेवा।
नहि बुद्धि औ ज्ञान हृदय मे कछू भवसागर माहि परे भर नया।
मोहि पापी महा अधमाधमको नहि प्रावति है कछू दूसरि सेवा।
द्विज दीन भगीरथ की अरजी पद पंकज भक्ति यह वरलेवा॥ १॥

अत—तब सुरथ नृप बरपाय निज पुर जाय शत्रु सहारेऊ।
कीन्हो अकटक राज सो फिरि जन्म रवि सो पायऊ।
सावर्णि मनु तेहि नाम भा सिद्धि मुनि गावत कथा।
भागीरथी तेहि गान करि अम्बिका दोही मनि यथा॥

श्री मार्कंडेय पुराणे दुर्गा सप्तशती भागीरथ भाषा विरचिते अम्बिका चरित्रनाम् त्रयोदशध्याय॥१३॥

॥ दोहा ॥

सम्वत वनइस छासठा साके अठारा तीन।
सप्तशती भाषा भन्यो दया कान जगदीन॥

विषय—देवी चरित्र वर्णन किया गया है।

रचनाकाल

सम्वत वनइस छासठा साके अठारा तीन।
सप्तशती भाषा भन्यो दया कीन जगदीश॥

सख्या २५३क ब्रह्मविलास, रचयिता—भैय्या भगवतीदास, कागज—देशी, पत्र—१५८, आकार—११-$\frac{२}{१०}$ × ५-$\frac{७}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—४५६२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७५५ वि० लिपिकाल—सं० १८४ (? १८०४ वि०), प्राप्तिस्थान—श्री दिगम्बर जैन मंदिर (बड़ा मंदिर), मुहल्ला—चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ।

आदि—श्री ब्रह्म विलास लिष्यते॥ प्रथम श्री सत अष्टोत्तरी स्तोत्र। कवित्त॥ वध लिष्यते॥

ऊँकार गुन अति अगम पच प्रमेमि निवास।
प्रथम तासु वदन कीयें लहीये ब्रह्म विलास॥ १॥

॥ छप्पै कवित्त ॥

॥ छ द्रव्य कौ निश्चै व्योहार लछन इह कथन॥
दर्व इकु आकासु महि पच विराजत।
दर्व इकु चिद्रूप सहज चेतनता राजत।
दर्व इकु फुनि धर्म चलन सबको सहकारी।
दर्व इकु अधर्म रहत थिरता अधिकारी।
दर्व इकु पुदगल प्रगट अरु अरु कुघट सालीय।
निज निज सुभाव में सब मगन यह सुबोध उर आनिय॥ २॥

:o: :o: :o:

जब यह आतम करै तपस्या वाहै सकल कर्म्म वन कूंज ।
श्रुत सिद्धांत भेद बहुत बेदत जपे पच पद के गुण पुज ।
व्रत पचवाण करै वहु भेदैं इन सौं जुगत महासुष भूंज ।
तब तिहि ध्यान धुरधर कहियें प्रमातम प्रापति मै पुज ॥६७॥

.०. .० .०

दोहा

पर्म सेव पर सेव तजि निज उधरन मन धारि ।
धर्म सेव वर सेव सजि निज सुधरन धन धारि ॥

पर्म	पर	तजि	उध	मन	
सेव	सेव	निज	रन	धारि	त्रिपदी पचकोष्ठक ।
धर्म	वर	सजि	सुध	धन	

अथ ग्रंथकरता नाम नगर लिख्यते ॥

॥ चोपाई ॥

जबू दीप मे दछन भरत । तामे आर्ज षड विस तर्त ॥
तहा उग्रसेनपुर थान । नगर आगरो नाम परधान ॥ १ ॥
तहा वसे जिन धर्मी लोक । पुन्यवत वहु गुन के थोक ॥
बुधवत बहु चरचा करें । अर्थ भडार धम को भरै ॥ २ ॥
नरपति तहा राज ओरगु । जाको अग्या वहे अभगु ॥
ईत भीत व्याप नहो कोई । यह उपगार नृपत को होइ ॥ ३ ॥
तहा नृपति उतम वहु वस । ताम ऊमवाल वहुलसे ।
तिनि के गोत बहुत विस्तार । नाउ कहित नहो आवे पार ॥ ४ ॥
सबतें छोटो गोत प्रसिद्ध । नाम कटारिया रिद्धि समसिद्ध ॥
दसरथ साहु पुन्य के धनो । तिनके रिद्धि वृद्धि अति घनी ॥ ५ ॥
तिनके पुत्र लाल जो भए । धर्मवत गुनगन निरमए ॥
तिनकै पुत्र भगोतीदास । जिन यह कीनो ब्रह्म विलास ॥ ६ ॥

० ० ०

सवत सतरह से पचावन । रितु वसत वशाष सुहावन ॥ ८ ॥
शुक्ल पक्ष त्रितिया रविवार । सघ चर्तुविध कोज कार ॥
पढत सुनत सबको कल्यान । प्रगट होय निज आतम ग्यान ॥ ६ ॥
अतीत अनागत अरु वरतमान । वदन करो देव भगवान ॥
भैया नाम भगोती दास । प्रगट होहु यह ब्रह्म विलास ॥१०॥
वहुत वात कहियै कहा घनी । यहै जीव त्रिभुवन को धनी ॥
प्रगट होय जब केवल ग्यान । शुध स्वरूप वहे भगवान ॥११॥

इति भैया भगौती दास कृत ब्रह्म विलास सपूर्ण ॥ स० १८४ वर्षे मीती मिगसर वदी २ ॥ सपूर्ण ॥ जती सहज राम लिपिकृत ॥ श्री राम ॥ शुभमस्तु ॥

विषय—निम्नलिखित रचनाओ का सग्रह—

पुन्य पचीसी, अष्टोतर द्रव्य सग्रह, चेतन चरित्र, अक्षर बत्तीसी, परमसत, पूजा अष्टक, चित्र काव्य, दोहा प्रश्नोतर, जिन चौबीसी, वरतमान बीसी, परमातम, जैमालती तीथकर जैमाल, मुन के गुन की माल, पारसनाथ के छद, मद चेतना छद, परमारथ के पद, गुरु-शिष्य-सवाद, चतुरदस गुन ओर बयालीस गुन की जैमाल, परमातम कइया गत मजरी की कथा, चौपाई, निर्वाण काड, काल अष्टक, उपदेश पच्चीसी, कर्मबन्ध दस भेद आदि, ब्रह्म ब्रह्म निर्णय, अनित्य की पच्चीसी, जिन धर्म पचीसी, आदि छत्तीसो, सम्यक् ओर वैराग्य पच्चीसी, चौबीसी जिनवर जैमाल, पचे इद्रीनि की चौपाई ईश्वर निर्णय, दृष्टात पच्चीसी, मन बत्तीसी, स्वप्न छत्तीसी, जोतिकग्रथ कवित्त और फुटकर कवित्त आदि ।

रचनाकाल

संवत सतरह सै पचावन। रितु वसत वैशाष सुहावन॥ ८॥
शुक्ल पक्ष त्रितिया रविवार। सघ चतुविध कीजै कार॥

संख्या २५३ख पुन्य पचीसिका, रचयिता—भैया भगौतीदास, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—५, आकार—११·३/४ × ५·७/८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—१३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७३३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मंदिर, बड़ा मंदिर, मोहल्ला—चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ।

आदि—श्री पुनि पचोसी लिष्यते॥

॥ छप्पै ॥

प्रथमि प्रणामि अरिहत पुनि सिध नमिजै।
आचारज उवझाय तासु पद वदन किजै॥
साधु सकल गुनवत सत मुद्रा लषि वदहु।
श्रावक प्रतमा धरन उरन नमि पाप निकदहु।
सम्यक वंत सुभाव धर जीव जगत महि होहि जित।
तित तित त्रिकाल वदत भविक भाव सहित मिरनाय नित॥ १॥

श्री सिद्धदेव की स्तुति

अचल धाम विश्राम नाम निहचै पद मडित।
जथा जाति परकास वास जहा सदा अखडित।
भासहि लोकालोक थोक सुष सकल विराजहि।
प्रणमहि आपु सहाय मवगुण मदर वाजहि।
इहि विधि अनत जिय सिद्ध महि ग्यान ध्यान विलसत नित।
तिन तिन त्रिकाल बदत भविक भाव सहित नित एक चित॥ ३॥

अत— ॥ कवित्त सवैया इकतीसा ॥

ग्रीषम मै धूप परै तामै भुमि भारी जरै फूलत है आक पुनि अतिही उमही कै।
वर्षा रितु मेघ झरै तामै वृछ कई फर जरत जवासा अघ आपुही ते उहि कै।
रितु कौन दोस कोऊ पुनि पाप फलै दोऊ जसै जैसे कोए पुन्न तैसें रहे सहिकै।
केई जीव सुषी होहि केई जीव दूषी होय देषहु तमासौ भैया न्यारे नेकु रहिकै॥२४॥

॥ दोहरा ॥

पुन्न धर्म पथ कौ करै निहचै भेद न कोय।
तातै पुन्य पचीसका पढ धर्म फल होय॥२५॥
सत्रह सै तेतीस कै उत्तम फागुन मास।
आदि पषि नमिभाव सौ कहै "भगौतीदास"॥२६॥

श्री कल्याणमस्तु

विषय—सुकर्म करने के लिये ज्ञानोपदेश किया गया है।

रचनाकाल

सत्रह सै तेतीस कै उत्तम फागुन मास।
आदि पषि नमिभाव सौ कहै भगौतीदास॥२६॥

संख्या २५३ग चेतनकर्म चरित्र, रचयिता—(भैया) भगौतीदास, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—१२·३/४ × ५·३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—४५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७३२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर (बड़ा मदिर), चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ।

आदि—॥६७६०॥ अथ चेतन चरित्र लिषते ॥

॥ दोहरा ॥

श्री जिन चरण प्रणाम करि भाव भक्ति उर आनि ।
चेतन अरु कछु कर्म कौ कहूँ चरित्र वषानि ॥ १ ॥
:o: o: .o:
तव चेतन ने हसियौ कहे तुम हम सौ नहि नेह ।
मन लगाया या नारि सो मद्दा सुबुधि गुन गेह ॥११॥
तवं कुवुद्धि रिसाय के गई पोता के पास ।
आज पिए हम पर हरि ताते भई उदास ॥१२॥
तबं मोह नृप बोले वेन । सुनिवु शिक्षा इक ऐन ॥
तें मन मे मति ह्वैं दलगोर । बांधि मगावत हौ तुम तीर ॥१३॥
तब भेज्यौ इक कामकुमार । जो सब दूतन मे सिरदार ।
कहु बचन तुम मेरो जाय । क्यो रे अध अधरमी धाय ॥१४॥
अंत—चेतन गुरु यह कर्म को कह्यो चरित्र प्रकास ।
सुनत परम सुष पाइयै कहे भगोतीदास ॥६७॥
स्वत सतर बतीस को ज्येष्ट सप्तमी आदि ।
श्री गुरुवार सुहावनो रचना कही अनादि ॥६७॥

इति श्री चेतनकर्म चरित्र सपूर्ण ॥

विषय—यह (प्रबोधचन्द्र नाटक की तरह) एक रूपक कथा है, जिसमें शरीर की वृत्तियों—काम, क्रोध, मद, लोभ और चेतन, सुबुद्धि, शांति आदि का संघर्ष दिखलाया गया है ।

रचनाकाल

सवत सतर बतीस को ज्येष्ट सप्तमी आदि ।
श्री गुरुवार सुहावनो रचना कही अनादि ॥६७॥

विशेष ज्ञातव्य—ये एक गृहस्थ जैन कवि थे । इन्होंने इस तरह की बहुत सी रचनाएँ की हैं । इस सबंध में इनका यह सवैया पठन योग्य है—

लाई हौ लालन बाल अमोलक, देखहु तो तुम कैसी बनी है ।
ऐसी कहूँ तिहुँ लोक मे सुदर और न नारि अनेक घनी है ।
याही तें तोहि कहू नित चेतन, याहु की प्रीति जो तोसो सनी है ।
तेरी और राधे की रीझ अनत सो मोप कहू यह जात गनी है ॥

—हिंदी जैन साहित्य का इतिहास से

संख्या २५४. गृहदीपक, रचयिता—भवानी प्रसाद, स्थान—गोविंदपुर (गोरखपुर ?), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—१२६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६०४, प्राप्तिस्थान—श्री प० मुनेश्वर जी, ग्राम—डुभरा, डाक०—खलीलाबाद, जिला—बस्ती ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥

दोहा

एक रदन गज वदन सुभ विघुन विनासनहार ।
गृह प्रकार रचनाकरो सिद्धि करो त्रिपुरारि । १
निपट गभीर पयोधि सो ग्रथ रचनको काज ।
ताहि तरन को एक गति तेरे चरन जहाज । २
कवि जसु पावन को करतु मै मतिमद उपाइ ।
उचे फलको षर्व ज्यो उचकत बांह उठाइ । ३

मानां ग्रंथ विचारिकै वहु मुनि मत अनुसार ।
वास्तु रत्न रचना करो दीपक गृहो विचार । ४
परमन विडहर वनतरि ग्रावदीपुर के ठाव ।
भवानीचरन त्रिपाठीन गोबिनपुर हय गाँव । ५
सोमवस के राज मे सुषसे सदा सनेह ।
सर्घजीत सिंह महाराज जी सदा नीमाहे नेम । ६
तरानीधी त्रिपाठीन बड़े सिद्धि सरदार ।
देव ब्रह्म अति भक्ति विधि जाहीर सभ दरवार । ७
पाच पुत्र ताके भये वेद वित्तसुष साज ।
तामे एक कनकनिधि कनक मूल मय देह ।
सभ राजनि सिर मटुक मनि भगवति कृपा सनेह । ८
ताके सुत वृद्धनिद्धी भये देव ब्रह्म पूजा अति कीहे ।
दान मन भोगा अति सीहे नाम सुजस वसुधा लै लीहे । ९
जन्म स्थान कुमाऊ र्गार वएम तासी ताहि ।
कर्म जोग प्रधान अति विधनागति नव साहि ।१०
गोर्खपुर वाइवदिसा तीनि कोस परमान ।
मानीराम ग्राम अति जिमीदार सुरतान ।११
ताकी इछा पाइकै करौ ग्रंथ विस्तार ।
दुर्गा गनपति सारदा करै बम विस्तार ।१२

इति श्री वृद्धी निद्धी पडितवर विरचिते वस देवहार वास्तु रत्न प्रथम वेलासः १

अंत--गृहए मुहूर्त्त विचारिकै चौरट के सभलेद ।
और सुजोग विचारिकै वृद्धि जनानि जगनिदेव ।

चौकठ चक्र विचारो भाई । रवि नक्षत्र शगि लै गनि जाई ।
चारि आठ गज त्री औ नारी । सुख दुष सपति वेदन गुभारी ।

:०· .० :०.

इति श्री त्रिपाठी वृद्धि निद्धि पंडित महाराज तद्येछा भवानीचरण कवि रचिते गृह दीपके सारिणी षष्टमो व्यलास सवत् १९०४ शाके . . .

विषय--वास्तु विषय वर्णन ।

संख्या २५५ श्रीराम को परधाम वर्णन, रचयिता--भवानीप्रसाद, कागज--देशी, पत्र--१०, आकार--९ × ४ ६/७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--८, परिमाण (अनुष्टुप)--१३०, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १९२० वि०, प्राप्तिस्थान--श्री महंत जगदेवदास जी, ग्राम--पहरी रमेशपुर, डाकघर--रायबरेली, जिला--रायबरेली ।

आदि--श्री गणेशाय नम

श्री गुरु चरण सरोज को करि साष्टाग प्रणाम ।
वरणौ श्री रघुनाथ को परस्वरूप परधाम ॥ १ ॥
महिते जोजन उर्द्ध है लक्ष पचीश प्रमाण ।
वतनोई विस्तार जह वशत देवता जान ॥ २ ॥
भवरलोक ताको कहत अल्प स्वर्ग तेहि जानि ।
जाति कर्म करि नरतहा वहुरि पर्तात महि आनि ॥ ३ ॥
ताके ऊचे जानियो जोजन लक्ष पचाश ।
देवसमाज समेत जह देवराज को वास ॥ ४ ॥

अंत--तेषावत वह धाम मुनि दुर्ल्लभ जेहि श्रुति कहत ।
करत कृपा श्रीराम देत यथा रुचि त्रास सुष ॥९५॥

रघुपति धाम स्वरूप सभुसहिता के मते ।
कहेउ स्वमति अनुरूप सुखप्रद राम उपासकनि ॥६६॥

इति श्री भवानी प्रसाद कृत श्री राम को परधाम वर्णन समाप्त शुभमस्तु शम्वत १६२० माघ कृष्णे तिथि ११ ॥

विषय--श्री रामचन्द्र जी का परस्वरूप और परधाम वर्णन ।

सख्या २५६. प्रयाग शतक, रचयिता--भागवतदास, कागज--देशी, पत्र--३, आकार--१०।।। X ६।।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--८, परिमाण (अनुष्टुप)--४८, अपूर्ण (खंडित), रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि--श्री गणेशाय नमः अथ प्रयाग शतक भागवतदास कृत लिख्यते

दोहा

रामानुज पद राम पद सिय पद पद्म सुवास ।
भव रुज गद गति उच्च प्रद वंदे 'भगवत दास' । १
गंगा यमुना सरस्वती श्री माधव पद रेणु ।
कामद सिर धरि बरनि हौं 'प्राग सतक' सुर धेनु । २

अथ प्रयाग वास माहात्म्य ।

दोहा

सुलभ स्वर्ग अपवर्ग गति अरु सुरतरु सुरधेनु ।
प्राग निवासी नरन की है दुर्लभ पद रेनु । ३
जज्ञादिक सुभकर्म जे तप तीरथ व्रत दान ।
प्राग माह यक त्रुटि वसै सर्वे न ताहि समान । ४
आवत मज्जै प्राग जो अथवा मज्जै जात ।
तेहि दरसे परसे तुरित पाप पहार विलात । ५
तीरथपति के रेणु ढिग कंचन मणि केहि काम ।
कतहू परि झरि वसन ते अधम गयो हरि धाम ।
तीरथपति के रेण की धरि के सुर उर आस ।
पंच कोस भीतर भयो गुल्म लता तरु घास । ७

विषय--प्रयाग माहात्म्य वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--शतक नाम से ज्ञात होता है कि रचयिता ने इसमें सौ छंद रखे थे जिसमे से केवल चौतीस छंद ही इस ग्रंथ में है ।

सख्या २५७ जयमंगल, रचयिता--भानजा सिंह (?), कागज--देशी, पत्र--३, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--६, परिमाण (अनुष्टुप)--१८, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १८८८ वि० प्राप्तिस्थान--श्री पं० श्यामसुंदर जी शुक्ल, ग्राम--रेवली, डाक०--परियावाँ, जिला--प्रतापगढ़ ।

आदि--जयमंगल प्रारंभ श्री गणेशाय नम ॥

वरुण इन्द्र कुबेर हुताशना जम सा मीरज वारिज कूँ धारा
सुरगण आसुरा महीधरा ।
कुरु सू द सुभं श्री मंगलम् । १
जवधिरा गीरजापति गौरि गोगज मुख माधवा मरुता रागै
वरुणावै श्रवणं नल मारुता ।
कुरु सूदं सुभान्द जै मङ्गलम् । २
गणपती गीराजा वृष मध्व जोषण मुषो नदी गन डडीमा ।

मनुजा मन विमूल चराचारे ।
कुरु सूदं सुभद हरि मङ्गलम् । ३
रवि ससि कूज इदु जाग मपते भृगुज भानुज सिह ज केत
उर गणामयि जोग चराचरा ।
कुरु मुदं सुभद श्री मगलम् । ४

अत--
सिवपुरी रामणीं काचीपुरी हरि पुरी हो गया जी रामेश्वरम् ।
वदरिनाथ बटेश्वर गोचरा कुरु मुदं सुभद श्री मंङ्गलम् ।१०
जहानकीव, सुधा तव ता मका ससि दिन कूं तो मृग लोचना ।
अवधि पुरी मथुरा चित्र वेनूजा कुरु मुदं शुभद जं मङ्गलम् ११

समाप्त ।

विषय--मगल स्तोत्र वर्णन ।

सख्या २५८क नार कथा का गुटका (कथा भाषा), रचयिता--भारामल्ल, कागज--देशी, पत्र--११०, आकार--१० × ६८/१० इन्च, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--१३, परिमाण (अनुष्टुप)--३२१७, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--स० १९५३ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री दिगवर जैन मदिर (बडा मदिर), चूडीवाली गली चौक, लखनऊ ।

आदि--ॐ नम. सिद्धेभ्यः ॥ अथ सील कथा लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

पार्सनाथ परमात्मा वदौ श्री जिन राई ।
मो हिय मं वासौ करौ कहो कथा विलगाइ ॥ १ ॥

॥ चौपही ॥

प्रथमहि प्रनमो श्री जिन देव । इद्र नरिद्र करैं तुव सेव ॥
तीन लोक मं मगल रूप । ते वदौ जिन राज अनूप ॥ २ ॥
पच परम गुर वदन करो । कर्म कलक छिनक मै हरो ॥
वदो श्री सरस्वति के पाई । वदौ मन वच श्री मुनिराई ॥ ३ ॥
सील कथा जो कहो वषान । सील बढौ जग मे परधान ॥
सील समान अवर नहि जान । सीलहि ते जप तप व्रत मान ॥ ४ ॥

.० ०. ०:

उजरे कमरे पहिरे जहा । पुनि अग कसूमी वीर हो तहा ।
पहिरे गज मोतिन हार हो । मोतिन के गजरे पहिरे सार हो ॥३२॥
भुज वदन वाज पहिरं जवं । कचन सुसाजनं तबं ।
दुलरी तिलरी कठ श्री । पुनि रतन जडी मुदरी सुजडी ॥३३॥
इस विधि सौ साजी सुदर जवं । जिनराज भुवन पौचो तवं ॥
त्रभुवन की प्रतमा आगे जहा । करजोर कं नार षडी तहा ॥३४॥

अत--
निशिकी कथा यह पूरण भई । 'भारा मल्ल' प्रगट करि कही ॥
भूलि चूकि अक्षर जो होय । पडित शुद्ध करो सब कोय ॥२०॥
पढ सुनो अब जो मन लाय । जन्म जन्म के पातिक जाय ॥
दुष दरिद्र सब जाय नसाय । सो यह कथा सुनौ मन लाय ॥२१
निश सुकथा पूरण भई पढं सुनं नित सोय ।
सुष पाव जे नर त्रिया पाप नाश तिन होय ॥२२॥

इति निशिभोजन त्याग कथा समाप्तम् ॥ सपूर्ण ॥ मिति भादौ सुदि ॥ ८ ॥ संवत् ॥१९५३॥ शुभ भवत् ॥ मगल

विषय—निम्नलिखित चार जैन धार्मिक कथाओं का वर्णन किया गया है—
१ शील कथा—पत्र १ से ३३ तक।
२ दरसन कथा—पत्र ३४ से ६६ तक।
३ दान कथा—पत्र ६८ से ८६ तक।
४ निशिभोजन कथा—पत्र ८७ से ११० तक।

संख्या २५८ख दान कथा, रचयिता—भारामल्ल, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—१०$\frac{1}{2}$ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप)—६४८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६०३ वि० के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर, अहियागंज, टाटपट्टी मोहल्ला, लखनऊ।

आदि—ऊँ नमः सिद्धेभ्यः ॥ अथ दान कथा चोपई बंध भाषा लिष्यते ॥

॥ तेईसा ॥ २३ ॥

देवन मौ अरिहंत सदाअर सिद्ध समूहनि कूं चितुलाई।
सूर अचारज कूं प्रणमौ प्रणमौ जु उपाध्याय के नित पाई॥
साधुन मौति ग्रंथ मुनि गुरु परमदयाल महा सुषदाई।
जे पंच गुरु जग श्रेष्टन मौं इनिके सुमिरें भव ताप नसाई॥ १॥

॥ दोहा ॥

पंच परम गुरु प्रणमि कैं सरस्वति कूं शिर नाय।
दान कथा वर्नन करौं सुनौ भविक चितु लाय॥ २॥

॥ चौपई ॥

श्री गौतम को सुमिरौं पाई। दान कथा जु कहौं समझाय॥
दान बडौ संसार मझारी। दान करौ जु सबै नरनारी॥
दान विना धृग जीवनि होय। तातैं दान करौ सब कोय।
धन की सोभा जानौ दान। दान विना नर पसू समान॥

:० :० :०:

दान कह्यौ जु च्यारि प्रकार। भिन्न भिन्न सुनियौ नर नारि।
प्रथमहिं दीजै दान अहार। जासो लछि भरैं भंडार॥ ६॥
दूजौ ओषधि दान जु देय। परभव निर्मल तन सो लेय॥
होय निरोग जु तासु शरीर। कामदेव सम गुण गंभीर॥ ७॥
तीजो शास्त्र दान सुष कारि। तासौं उपजैं वृद्धि अपारि॥

:०· ०: .०·

चौथौ अभयदान सुषकार। सो जानौ सब मैं सिरदार॥ ६॥

अंत—

दान कथा यह पूरन भई। भारा मल्ल प्रगट करि कही॥
भूलि चूकि अक्षर जो होय। पंडित सुद्ध करौ सब कोय॥७४॥
मैं मतिहीन जु हौ अधिकार। क्षमियौ वुध जन सब सिरदार॥
पढ़ैं सुनैं सो मन वचकाय। जन्म जन्म के पातिक जाय॥७५॥
दुष दलिद्र सब जाय नसाय। जो जाय कथा सुनैं मनलाय॥
पुत्र कलत्र वेड़े परिवार। सुषु पावैं सबही नर नारि॥७५॥

॥ दोहा ॥

दान कथा पूरन भई पढैं सुनैं जो कोय।
दुष दरिद्र नाशैं सबै तुरत महासुष होय॥७७॥

इति श्री दान कथा संपूर्न समाप्तं॥

विषय—दान देने का माहात्म्य वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—बुध जन कृत 'छै ढालो' प्रस्तुत रचना के साथ एक हस्तलेख मे है । इसके अतिरिक्त निम्नलिखित रचनाएँ भी है—

१ चितामणि पार्श्वनाथ पूजा (संस्कृत) ।

२ छेत्रपालो की ६६ पूजा (संस्कृत) ।

३ तत्वार्थ सूत्र छदोवद्ध (संस्कृत)) ।

प्रस्तुत ग्रथ का महत्व लगभग वही है, जो कर्मविपाक का है ।

संख्या २५६ मगलकारी, रचयिता—भावन (?), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—१०$\frac{४}{५}$ × ४$\frac{२}{५}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—राम (?ग) सारग मगलगारी ॥

हाजिऊ कौन से रसिए सेज सवारि वरनि न जइ ।
नौ महिला पर पलगु बिछायो रतन जरित नग लाइ ॥
पलग पोस जरपोस विराजित झबन्ह की छवि छाई ।
तापर छैल छबीलो रसिआ रहो घात लौ लाइ ।
रस लुबधौ रसिआ रस कारन दुती सीष पठाई ।
बहुरि बोलाइ पान कर दीन्हो चलितै सीस नवाई ॥
चौगुनि बात चलाइ चतुर सषि मोम मिकै पघोलाइ ।
रूप सरूप अपछरा सीतु विधिनै गढी बनाई ॥
वै पुनि चतुर सकल गुन आगर रूपहि रूप लोभाई ।
सुनि सुनि सुष मानत सचु पावति अग अनग जनाई ॥
इह सुनि समझि निर्मजनु कीन्हो कुकुम सो उपटाई ।
आछो अगु अगोछन लीन्हो जोति जो चढी सवाई ॥
सषिन कपूर धरि कोछिआइ तहा लहगा दरिआई ।
मुल कटकी आगिआ रग केसरि नौगासे वद लाइ ॥
गगाजल निर्मल की चादरि सोधे छीरकि ओढाइ ।
गौन चार कचार कराय मेदुर माग पुराइ ।
बकी भौह कटाछ विमोहित देह दसा विसराइ ॥
नैनन्ह म्रिग वैनन्ह पिक लूटो विद्रुम वोठ सोहाई ।
नासा कीर वदन ससि दिन दिन षीन होत सो जाई ॥
षडत बोल दसन दामिनि दुति दारिव गेदर राई ।
गीव भै उर भुअगम वेनी लहरि अनग जनाई ॥
मेहदी सो करि चित्रु सवारो अजन दीन बनाई ।
हुलसि कुलसि कुच बाहेर आए मनमथ देषि लगाई ॥

अत—

रोमावलि सुत्त धरि जोवन प्रगटित चचलताई ।
लक सिध कटि अति विराजित जघ कदली समताई ॥
पग पकज दोऊ अति सोभित नष सिष वरनि न जाइ ।
नष छिलाइ निउनी नाउनि सो रचि जो महाउर लाई ॥
उतपति तिलक जराउ दीन्हो मानो ससि सहित तराई ।
भवरकली षोटिल अति वीराजित वारि ते छवि छाई ॥
कानन्ह पहिरि जराइ की टेढी काम की चालु चलाइ ।
नथ मानो मनमथ की फासी मनु फादै छिन माहि ॥
मकुटू पहिरु नगिनी वेसरि लाष लोग ललचाही ।
कंठ कठ सरि मोती सारी चौकी निमली सूतासाई ॥

ढोलाना ढरकि रहो मोती झलल सग लाई ।
मानहु चकाचकि जल भोरे बासु लीन्हु तह आई ॥
बाहु बाजु भाए न वारो भरित जरित लो लाई ॥
गज मोतिन गजरा अति विराजित ककन जरित समाई ॥
तहा सलोनी अधिक विराजित अगुठी सब पहिराई ।
देषि सरूप दरश अरसी मे 'भावन' अग समाई ॥

—पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—शृंगार विषयक रचना ।

एक भव्य अट्टालिका की नवीं मंजिल पर नायक रत्नजटित शय्या पर पौढ़ा हुआ है । उसे एक अभाव खटक रहा है उसने दूती को बुलाया और उसे अनेक प्रकार से प्रसन्न कर नायिका को बुलाने के लिए भेजा ।

दूती नायिका के पास गई परन्तु नायिका सहज ही में वशीभूत होनेवाली न थी । अत अनेक तर्क, युक्ति और चतुराई पूर्ण बातों से उसको रूठ रहने को उसने दिखलाया और चलने के लिये उद्यत किया । पश्चात् नायिका ने स्नान किया और षोडश शृंगार कर अपने को सजाया । बस यहीं तक का वर्णन किया गया है ।

संख्या २६०क. कवित्त, रचयिता—भावन (भवानी प्रसाद), कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६$\frac{४}{८}$ × ५ इंच, परिमाण (अनुष्टुप)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७३ वि० ..., प्राप्तिस्थान—पं० किशोरीनाथ जी दीक्षित, प्राध्यापक हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नम

वै तो तुम्है बार बार बादहि पढाइ बारि चालनि भाइ आयु पाहुने गहावता ।
रूप गुन शील प्रेम जोवर गरब गूढ ठानति गवारि मे न धावन लहावती ।
भौन जू सहे ही बनि आवत देहिन को एहि भाति जाहि जब इस्वर सहावते ।
कौन पै परेखो प्यारी पेषि यह पेषो जाइ चल न पावन कूदन कहावती ॥ १ ॥
काहे को अनेक उपचार अब ठानतो हो मेरी यह व्याधि सो असाधि कर ले जियो ।
काहू को न दोस अपसोस है न रोस कछू ईस को रजाइ सीस प्रवसि विसेषिए ।
कैसे यह होइहे अभूत बात तेरो कहो आपनाथ पानपालि पाइ अवरेषिए ॥
ऐचि ना दी गई भीनो घाट ही लो जाइहै जु टटकन टरत भाज कबहू न देषिए ॥ २ ॥

अत—शील है सहस्र वाको नेत्र हू सहस्र जानु
श्रुति हे सहस्र औ सहस्र पानि पद है ।
जीव त्वचा नासिकादि अगनन जानु सब
अगन विहीन सर्व कमन की हद है ।
सपत पताल भूमि स्वर्ग कीन्हे आवरण
तारिन पहार वन त्यों न नदी नद है ।
वहई वितस्ति मात्र घट घट विहारी ब्रह्म
भावन मुकवि कहे नेत्र वहे वद है ॥

भावन बावन सग सदा बलिदान प्रभाव ते मान न टूटयो ।
कुभकुदी घननाद ह जाइकै है हरि के पुर को सुबे लूटयो ।
रूपक बध धरो हरि को बरस्यो पट भूषन ते नहि टूट्यो ।
रावन पावन ह्वै कै महा हरि मे मिलि कै कबहू नहि छूटयो ॥

विषय—शृंगार, भक्ति और ज्ञानोपदेश संबंधी कवित्तों का संग्रह ।

संख्या २६०ख. बरवै, रचयिता—भवानी प्रसाद (? भावन), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६३/४ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—७२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७३ वि० के लगभग, प्राप्तिस्थान—डा० त्रिलोकीनारायण जी दीक्षित, प्राध्यापक (हिंदी विभाग), लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

आदि—सिद्धि श्री गणेशाय नमः

गिरा गोरि गुर गोविंद गिरिजा नाथ।
गणपति सहित नवावौ सब कहं माथ ॥ १ ॥
यहि प्रबंध में करिवे बरवै झारि।
बरन बरन को बरनन रस श्रृंगार ॥ २ ॥
अति बर बनि बर भनि बरनि न जाइ।
सब कोऊ बदन सिस करि पकरत पाइ ॥ ३ ॥
वाजपेय द्विज तिय की तुम सिर मोर।
वाज वाज वाजिन ते महि मनु मोर ॥ ४ ॥
सुकुल बरन सुकुलि है मनु न मलान।
करति हरति दुष ददनि काम कलानि ॥ ५ ॥
त्यौर करति त्यौराइनि तकि तकि कौनु।
तेरो चेरो मेरो तन मन जौन ॥ ६ ॥
तंत्र मंत्र पठकाइनि करि करि पाठ।
पकर पकर चित चोरनि मारत काठ ॥ ७ ॥
मिसिरिहु ते अति मोठे मिसिरिनि बैन।
है कछु जहर सने से तीछे नैन ॥ ८ ॥

अंत—भव सों प्रीति न चहिए भव सों चाहि।
शंकर भयो कौन विन शंकर काहि ॥९०॥
हरकहु अपनो गैयनि यार।
हरे खेत चरि डरिहै रहिहि न प्यार ॥९१॥
वृषभ पालु नोकी त्रिधि गैयनि मारि।
सो रहै तो भल है देषु विचारि ॥९२॥

इति भवानी प्रसाद कृत बरवै समाप्त श्री रामचंद्र ॥

विषय—ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र वर्ग की स्त्रियों पर श्रृंगारपूर्ण रचना की गई है।

विशेष ज्ञातव्य—विशेष विवरण के लिये देखिए 'शक्ति चिंतामणि' का विवरण पत्र। यह निम्नलिखित ग्रंथों के साथ एक हस्तलेख में है।

१ शक्ति चिंतामणि—भावन (भवानी प्रसाद)।
२ बरवै—भावन (भवानी प्रसाद)।
३ सतसई—विहारी।
४ कबित्त—भावन।

संख्या २६०ग. शक्ति चिंतामणि, रचयिता—भावन (भवानी दत्त), निवासस्थान—मयूरध्वजनगर, कागज—देशी, पत्र—६१, आकार—६३/४ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—१०९८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५१ वि०, लिपिकाल—सं० १८७३ वि०, प्राप्तिस्थान—डा० त्रिलोकीनारायण जी दीक्षित, प्राध्यापक, हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री गुरुभ्यो नमः श्री सरस्वत्यै नमः ॥

गंग की धार अपार लसं सिर तैं सही सुद्ध सुधाकर नीको।
मोदक हाथ लिए पितु गोदक सिंधुर से सिर सिंदुर टीको।

मूठि समेटि पसारि कलोल के मातु समीप करें मृदु कीको ।
भौन की सिद्धि को भाजन आइतो लाल लडाइतो पारवती को ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

गगा जू ते उतर दिसि जोजन तीनि प्रमाण ।
नाम मयूरध्वज नगर जाहिर सकल जहान ॥२५॥
तहा वसैं चारिउ बरर्ण सव निज निज रत धर्म ।
सुपथ पाउ धरतो रहै करतै रहै सुकर्म ॥२६॥
सकल जगत मे सोभि जे वेद रूप द्विज जूह ।
विद्या वल जिनको कछुक वहू नही दुरूह ॥२७॥
सकल क्षत्रगण मुकुट मणि रक्षक तासु पवार ।
सुनि जिनकी वखारि को अरि उर होत अवार ॥२८॥
वनिक धनिक ऐसे वसैं हसैं कुवेरहि जौन ।
तुद तोद जिनके लषे लज्जित होत(?न) कौन ॥२९॥

:o. 'o :o:

भाव दत्त छित्तू पुरी पाठक तहा प्रधान ।
आठ पुत्र तिनके भये विद्या वृद्धि निधान ॥३२॥
तिनमे शीतल शर्म यक ज्योतिर्विद्बुधिवत ।
चारि पुत्र तिनके भए ते चारचो मतिवत ॥३३॥
तिन चहून मे जानिये जेठे गग प्रसाद ।
विद्या वृद्धि विवेक निधि वेष्णव भक्त अविवाव ॥३४॥
तिनके द्वै सुत भे प्रगट प्रथम भवानी दत्त ।
पुनि फणीद्र दत्तहि गनो निपट अग्य उनमत्त ॥३५॥
यद्यपि कुटिल वचक निपट रचक भागन भाल ।
तदपि पढायो करि दया श्री गुरुदेव दयाल ॥२६॥
भई 'भवन' के चित्त मे कोजे कछुक वषान ।
सरस कवित्त जेहि के सुने रीझै सकल जहान ॥३७॥
१ ५ १८
ससि सर धृति सवत १८५१ प्रगट मधुरितु माधव मास ।
शुक्ल पक्ष गुर पचमी कीन्हो ग्रथ प्रकाश ॥३८॥
कहि सिंगार पुनि हास्यरस करुणा रौद्र सुवीर ।
वीभत्सद्भुत भीत पुनि सात कहत मति धीर ॥३९॥

अत—मुक्त होइ ससै न कछु करत वनै जो कर्म ।
सुनि जे अवस मास पय दुस्तर सूधो पर्म ॥९९॥
कर्म शुभाशुभ जे करै तिन सो करै न प्रीति ।
मुक्ति होइ ससय न यह सन्यासी की रीति ॥१००॥
इन चहु पथन सो कह्यो चारचो विधि की मुक्ति ।
जेहि चहिए जेहि जाइए यह वेदन की उक्ति ॥१०००॥

इति सुशक्ति चितामणौ सात वरणन समाप्तम् सवत् १८७३ मार्ग मासे कृष्ण पक्षे तिथौ एकादश्या शुक्र वासरे लेषक रामसहाइ शुक्ल ॥

विषय—नवरस और नायिका भेद वर्णन ।

रचनाकाल

ससि सर धृति सवत १८५१ प्रगर मधुरितु माधव मास ।
शुक्ल पक्ष गुर पचमी कीन्हो ग्रथ प्रकास ॥३८॥

संख्या २६०घ. शक्ति चिंतामणि, रचयिता—भावन कवि या भावन (**भवानीदत्त**), निवासस्थान—मयूरध्वज नगर कागज—आधुनिक पीला, पत्र—१७, आकार—१२½ × ८¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप)—७६५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, **पद्य**, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५१ वि०, लिपिकाल—सं० १९४४ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्णाविहारी जी मिश्र, ब्रजराज पुस्तकालय, गधौली, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री गुरुभ्यो नमः

गंगा की धार अपार लसैं सिर तैं सही शुद्ध शुधाकर नीको।
मोदक हाथ लिये पितु गोदक सिंधुर से सिर सिंधुर टीको।
मुंडि पसारि समेटि कलोल कैं मातु समीप करैं मृदु कीको।
भावन सिद्धि को भाजन आइतो लाल लडाइतो पारवती को॥ १॥

:o: :o: :o:

गंगा के उत्तर दिशा योजन तिनि प्रमान।
नाम मयूरध्वज नगर जाहिर सकल जहान॥२५॥
वसत तहा चारिउ वरन सब रत निजनिज धर्म।
सुपथ पाउ धरतैं रहैं करतैं रहै सुकर्म॥२६॥
सकल नगर मं शोभिजैं वेद रूप द्विज जूह।
विद्या बल निज को कछू कबहू नही दुरुह॥२७॥
सकल छत्र सिर मुकुट मणि रक्षक तासु पवार।
सुनि तिन की तरवारि को उरि उर होत अवार॥२८॥
वनिक धनिक ऐसैं वसैं हसैं कुवेरहि जौन।
तुब तोंद जिनके लखे लज्जित होत न कौन॥२९॥

:o: :o: :o:

जस गायक लायक सकल कवि नायक जह भाट।
वरन चारिह ते सरस जिन टारचो निज ठाट॥३१॥
भावदत्त धांतुपुरी पाठक तहा प्रधान।
आठ पुत्र तिनके भये विद्या वृद्धि निधान॥३२॥
तिनमे शीतल शर्म यक ज्योतिर्विद वुधिवत।
चारि पुत्र तिनके भये ते चारो मतिवत॥३३॥
तिन चहून मे जानिये जेठे गग प्रसाद।
विद्या बुद्धि विवेक मे विष्णु भक्ति अविवाद॥३४॥
तिनके द्वै सुत भे प्रगट प्रथम भवानीदत्त।
पुनि फणींद्र दत्तहि गनौ दोऊ अति उनमत्त॥३५॥
यद्यपि कुटिल वचक निपट रचक भाग न भाल।
तदपि पढाये करि दया श्री गुरुदेव दयाल॥३६॥
भई 'भवन' के चित्त मे कीजे कछू वषान।
सरस कवित जेहि के सुने रीझे सकल सुजान॥३७॥

१ ५ १८
शशि शर धृति संवत प्रगट मधु रितु माधव मास।
शुक्ल पक्ष गुरु पंचमी कीन्ह्यो ग्रंथ प्रकास॥३८॥
कहि सिंगार रस हास्य पुनि करुना रौद्र सुवीर।
वीभत्साद्भुत भीत पुनि सांत कहत मतिधीर॥३९॥
ए नव रस वरनन करत साहित्यिक सिद्धात।
तिनमे दोइ मुख्य है कै सिंगार कै शांत॥४०॥
ताते दोई कहति हौ जैसी कछु मति मोरि।
तिनमे प्रथम सिंगार कहि कहि हौ शांत बहोरि॥४१॥

अंत—औरौ भेदांतर विविधि इनमे होत ।
रस की षानि विचारि कै वरनत है कवि गोत ॥६४॥
गणिका एक ही भांति की कविवर वरनत जात ।
प्रेम रहित लोभन सहित याही ते अरसात ॥६५॥

इति श्री शक्ति चितामणौ कर्म विभेदो नाम पचमोध्याय ५ श्री संवत १६४४ माघ मासे कृष्ण पक्षे द्वादस्या भौम वासरे लिखितमिद पुस्तक बलदेव मिश्रेण शुभ स्थान गधौली ग्रामस्य लंबरदार श्री मन्मिश्र जुगुल किशोरस्य पाठार्थम श्री राधावल्लभोजयपि श्री शिवाय नमः ॥

विषय—शृगार और शात रस का वर्णन । ग्रथ मे निम्नलिखित पाच अध्याय हैं—

१ सयोग शृगार वर्णन—१ से ६ पत्र तक ।
२ वियोग शृगार वर्णन—६ से ८ पत्र तक ।
३ नायक वर्णन—८ से ११ पत्र तक ।
४ भामिनी भेद—११ ।
५ कर्म विनोद—१७ पत्र तक ।

चौथे और पाँचवे अध्यायों मे गडबडी है । शात रस का कोई वर्णन नहीं । सभवत ग्रथ की प्रस्तुत प्रति अपूर्ण है ।

रचनाकाल

शशि शर धृति सवत प्रगट मधु रितु माधव मास ।
शुक्ल पक्ष गुरु पचमी कीन्हचो ग्रथ प्रकास ॥३८॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रथ के साथ निम्नलिखित रचनाएँ भी है—
१ काव्य सरोज—श्रीपति ।
२ रस रहस्य—कुलपति ।
३ काव्याभरण—चदन कवि ।
४ पक्षी विलास—घासी राम ।

सख्या २६१क अमरकोश (नाम प्रकाश), रचयिता—(दास) ? भिखारीदास, निवासस्थान—टेऊगा (प्रतापगढ), कागज—देशी, पत्र—६६, आकार—१२ × ५॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—३४४१, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी रचनाकाल—स० १७६५ वि०, प्राप्तिस्थान—राज पुस्तकालय, किला प्रतापगढ, प्रतापगढ ।

आदि—सिद्धि ॥ श्री गणेशाय नम ॥
आदि गुर लायक विनायक चरनरज अजन सो रजित सुमन दिष्टि करि कै ।
दैषिकै अमर कोक तिलल अनेकनि सो इषि कै वुधनि जो सकत सेस सरिकै ।
शशंक्रित नामनि के अर्थनि जानि जानि और नाम आनि भाषा . . . ।
. . . क्रम सवके समुभिवे के कारन प्रकासौ 'दास' भाषा जोग छदवृद भरिकै ।१॥

दोहा

सुगम ठानिवो समक्रित . ।
पाहन सुतीय करन चरन सरन भरोसो एक । २
ज्यौ अहि मुष विष सीवमुष मुक्त स्वाति जल होइ ।
.. वनत ज्यो हरि अक्षर सोइ । ३
देषिन मानव दोष कहु स्वर को फेरतु कंत ।
सब्द असुद्धौ होइ तौ सोधि लेहु.. ..... । ४
र्हजि सुभिन्न वो स्वर मिलित सदांतन मो दीन्ह ।
कहू व्यक्त सजोगियो कहु दीरघ लघु कीन्ह ॥ ५

कुंडलिया

......ग्राह महि गहि लहि पुनि सुनि ग्रौर ।
जानि मानि पहिचानि गनि ग्रानि ठानि सब ठौर ।
ठौर देखि ग्रवरेखि लेखि सुविसेखि धारि धरि ।
ठीक ग्रलीक उताल हाल विष्यात ताकु करि ।
टेर राखि ग्रभिलाखि ग्रासुवद वाद सही भनि ।
सहित जुक्त जुत उक्ति छद पुरयो इन नामनि । ६
पजरिग्रे स श ष ख छ क्ष न ण ग्य ज २ ग ठान्यौ एक ।
भाषा वर्नन वूझिकै कियो न वर्न विवेक । ७

दोहा

एकै सब्द कि दोइ भय यह भ्रम उपजत देखि ।
नामनि की सख्या धरी लीजे सुमति सरेखि । ८
नामनि की सख्या धरी लीजे सुमति सरेखि । ८
सत्रह सै पचानवे एगहन को सित पक्ष ।
तेरसि मगल को भयो नम प्रकास प्रतन्ज । ६

छप्पै

स्वर्ग व्योम दिगपाल वुद्धि सब्दादि नाथ लहि ।
पातालो ग्ररु नर्क वारि दस प्रथम काड कहि ।
भूपुर सयल वनौष धीरु सिहादि नृप पुनि ।
ब्रह्मन्जवियौ वैस सुद्र वश वृति त्रिय सुनि ।
सविशेष निघ्न सकीरनो ग्रनेकार्थ त्रय वर्ग लिय ।
तगि सायन भाषा जोग लखि पूरन नाम प्रकास किय ।१०

ग्रत—

चौपई

स्वेदज कहिए कृम दशादि । ग्रडज खग ग्रहि ग्रादिक वादि ।
उद्भिज ग्रभ्दि . . . । तरु गुल्मादिक को कहि दीन ।८६
रुचिर साधु सोभन सुषम कात मनोरम चारु सुटेरहि ।
मंजुल मजु मनोग्य कहि सुभगो सुदर रुच्य जुतेरहि ।। ६०
ग्रासे चलक एक हरि राइ । जेहि सुदरइ साधन जाइ ।६१

पृयजन के दो

हृद्य ग्रभोप्सित देत पृय वल्लभ ग्रौर ग्रभोष्ट ।
छ है नाम पृय जन कहौ भाषा सिगरो सिष्ट ।६२

ग्रधम के दो:

जाप्यरेफ कुत्सित ग्रवम घटू ग्रवध निकृष्ट ।
गकूककय ग्रनक ग्रधम ग्रवंषि दश प्रति किष्ट ।६३

मलिन के दो:

मलदूषि...कच्चर मलिन कही मलील सवारि ।
मलिन नाम मनि. जि.... .. .. ।

—ग्रपूर्ण

विषय—(ग्रमरकोश) शब्दकोश वर्णन ।

रचनाकाल

सत्रह सै पंचानवे एगहन को सित पक्ष ।
तेरसि मंगल को भयो नम प्रकास प्रतंन्ज ।

विशेष ज्ञातव्य—"अभिलाषि आसुवद बादसाही भनि' से ज्ञात होता है कि इन्होंने किसी बादसाही (राजा) की प्रेरणा से प्रस्तुत ग्रंथ की रचना की थी।

संख्या २६१ख अलंकार (?), रचयिता—दास (भिखारी दास ?), कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—८॥ × ६॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९६, अपूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री गणेशाय नमः

उपमा पूरण अर्थ लुप्त उपमान अनन्वय।
उपमेयोपम अरु प्रतीप श्रौतिय उपमाचय।
पुनि दृष्टांत बखानि जानि अर्थान्तर न्यासहि।
विकस्वरो निदर्शना तुल्य योग्यता प्रकासहि।
गनिलेहु सप्रति वस्तुपमा अलकार बारह विदित।
उपमान अवर उपमेय कौ है विकार समुझिय सुचित॥ १
जह उपमा उपमेय है सो उपमा विस्तार।
होत आर्थी श्रौतियो ताको दोइ प्रकार। २
वर्णनीय उपमेय है समता उपमा जानि।
जो होइ आई आदिते सो आरथी बखानि। ३

०. .०: :०:

व्यतिरेकहु रूपकहु के भेद अनेक प्रकार।
'दास' इन्है उल्लेख युत नो तीनि निरधार।३७
पोषण करि उपमेय को दोषन दै उपमान।
नहि समान कहिए तहा है व्यतिरेक सुजान।३८

·०· ० :०·

विविध भाति उल्लास अवज्ञा अनुज्ञाहि गहि गनि।
वहुरो लेश विचित्र तद्गुनो सगुण 'दास' भनि।८५
अरु अतद्गुण पूर्व रूप अनुगुण अवरेषहि।
मिलित अवर सामान्य जानि उन्मिलित विशेषहि।८६

अंत—

जहा दोष ते गुण नही यही अवज्ञा 'दास'।
जहाँ उलन को गण वसे तहा न धर्म प्रकाश।६०

० .०· .०:

जहा अर्थ गूढोक्ति को कोऊ करै प्रकाश।
विप्रलोक्ति तासो कहे सकल सुकवि जन 'दास'।१२७

·०· ०. :०:

एक एक ते सरल लषि अलकार कहि सार।
याही को उत्तरोत्तरो कहे जिन्है मति चारु।१५३
उपमा अरु एकावली को सकर जह होइ।
ताही को रसनोपमा कहै सुमति सब कोइ।१५८
एक भाति के वचन को काज बहुत जह होइ।
का . . . .

—अपूर्ण

विषय—अलंकार विषय वर्णन।

प्रस्तुत रचना काव्य निर्णय का आठवाँ उल्लास है। स्वतंत्र ग्रंथ नही।

संख्या २६१ग. काव्यनिर्णय, रचयिता—भिखारीदास, कागज—देशी, पत्र—११२, आकार—१०$\frac{4}{10}$ × ६$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप)—३०८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन (दीमक लगा हुआ, जर्जर), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३३ वि० लिपिकाल—सं० १९३६ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्णबिहारी मिश्र, ब्रजराज पुस्तकालय, गधौली, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः

॥ छप्पै ॥

एक रदन द्वै मातु तृचष चोबाहु पचकर।
षट आनन वर वधु सेव्य सप्तर्चि भालधर।
अष्ट सिद्धि नवनिधि प्रदान दस दिसि जस विस्तर।
रुद्र ग्यारहू सुषद द्वादसादित्य बोज वर।
जो त्रिदस वृंद वंदित चरण चौदह विद्यनि आदि गुरु।
तेहि 'दास' पंचदस हू तिथिनि धरिय षोडसो ध्यान उर॥ १॥

॥ दोहा ॥

जक्त विदित उदयाद्रि सो अरवर देस अनूप।
रवि लौं पृथ्वीपति उदित तहा सोम कुल भूप॥ २॥
सोदर तिनके ग्यान निधि हिंदूपति सुभ नाम।
जिनकी सेवा सो लह्यो 'दास' सकल सुषधाम॥ ३॥
अट्ठारह सै तेतिसं संवत अश्वनि मास।
गृथ काव्य निरणै रच्यौ विजै दसै दिन 'दास'॥ ४॥

अंत—

राम को दास कहावै सबै जगदीस है रावरो दाम निवारो।
भारी भरोसो दिये अब ऊपर ह्वैहै मनोरथ सिद्धि हमारो॥
राम परेवन के कुलघालक आप रहे देवन के रिषवारे।
दारिद घालिबो दीन को पालिबो सबु को सालिबो विरद तिहारो॥४४॥

इति श्री सकल कलाधर वंसावतंस श्री मन्महाराज कुमार श्री बाबू हिंदूपति विरचिन्तायां काव्य निनय गृंथ दोष बरनन नाम पंच विंलसोलास ॥२५॥ समाप्त शुभ श्री संवत् १९३६ अषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ अष्टम्या भृगुवासरे लिषित मिद पुस्तक वलदेव मिश्रेण श्री मन्मिश्र युगुल किसोरस्य पाथार्ठ श्री कृष्ण

विषय—साहित्यशास्त्र विषय का वर्णन।

रचनाकाल

अट्ठारह सै तेतीसं संवत अश्वनि मास।
गृथ काव्य निरणै रच्यौ विजै दसै दिन दास॥ ४॥

संख्या २६१घ. छंदार्णव (पिंगल ग्रंथ), रचयिता—भिखारीदास कायस्थ, निवासस्थान—बुंदेलखंड, कागज—देशी, पत्र—६७, आकार—१० × ४॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—१३६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७९९ वि०, लिपिकाल—सं० १९०६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० आद्याशंकर त्रिपाठी, ग्राम—रुधउली, डाक०—सरपतहा, जिला—जौनपुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ छंद त्रिभंगी ॥

कर कंवन मंडित बोज अषंडित पूरन पत क्षान परम।
गिरि नंदिनि नंदन असुर निकंदन सुर उर चंदन कीर्ति करम॥
भूषन मृग लक्षन बीर विचक्षन जन प्रन रक्षन वाश धरम्।
जय जय गणनायक षल गन घायक दास सहायक विन हरन्॥ १॥

॥ कवित्त ॥

एक रद है न सुभ्र साषा वढि आई लवोदर मे विवेक तरु जोहै सुभ्र केश को ॥
सुंडादंडकं तव हत्यार है उदड यह राष तन लेश अघ विघुन असेस को ॥
मदक है मूलिन करत सुधा वारू यह ध्यान ही तेही को दिढ हरन कलेश को गनेस को ॥

॥ छप्पै ॥

श्री विनता सुत देवि परम पटुता जिन्ह कीन्हेउ ॥
छद भेद प्रस्तार वरनि वार्तनि मन लन्हेउ ॥
नर्ष्य विष्टनि आदि ज्ञान वहु विधि जिन भाषेउ ॥
जैवो चलत जनाइ प्रथम वाचा प्रन राषेउ ॥
जो छद भुजग प्रयात कहि जात भयो जल थलु अभय ॥
तेहि पिगल नाग नरेश को सदा जैति जय जैति जय ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

निज प्रगटचौ जग मै विविध छद नाम अभिराम ।
ताहि विप्नु रपकों करो किय कर जोरि प्रनाम ॥

o. 'o' :o:

पाक वित्त अतर वरन ल तुकात दे छडि ।
दास नाम कुल ग्राम कहि रामभक्ति रस मडि ॥ ५ ॥
प्राकृ भाषा सस्कृत लषि कछु छदो ग्रथ ।
दास कियो छदारनव भाषा रचित सुभ पथ ॥ ६ ॥

:o o. o:

इति श्री भिषारीदास कायस्थ विरचिते छदार्णवे मगलाचरण वर्णनो नाम प्रथम तरग ॥ १

अत—

दोहा

छदनि दोहरो चौहरो करि निज वुद्धि विवेक ॥
मन रोचक तुक आनि क दडक रचौ अनेक ॥
रागनि के वसि कीजिए ताहि प्रवध वषानि ॥
छद लिए सोउ पक्ष ह गान छदो सो गानि ॥
ग्यारह ते छवीस वरन ध्रुपद तुक एक ।
सो मिरदं वहु छद दल धर प्रवध विवेक ॥
भेद छद दडकनि को दोऊ पारावारा ॥
वरनन पथ वताइ मे दीन्हे मति अनुमार ॥
सत्रह सै निनानवे मधुव दिन वैं कविद ॥
दास वदे छदारनव समिरि सावरो इद ॥

इति श्री भिषारी दास कायस्थ कृते छदारनव दडक भेद ग्रथ सपूर्णतावरननं नाम पंच दसमो तरग ॥१५॥ श्री सवत् १९०६ ॥

विषय—पिगल ग्रथ । दडक छद के सबध मे विशेष वर्णन किया गया है ।

रचनाकाल

सत्रह सै निनानवे मधुव दिन वैं कविद ।
दास वदे छदारनव समिरि सावरो इद ॥

संख्या २६१ङ. मात्रा प्रस्तार, वर्ण मर्कटी, रचयिता—दास (भिखारीदास), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—१०।।। × ४।।। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—९६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० चत्रपाल जी त्रिपाठी, ग्राम—राजातारा, डाक०—लालगज, जिला—प्रतापगढ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ मात्रा प्रस्तार

हूं हूं कलनि को बङ्क वनं पहिले उबरे लघु आदि करोजू ।
भेद बढ़ैवे को शीश को आदि गुरु के तरे लघु एक धरोजू ।
और यथाक्रम देखि लिखौ बचें पीछे गुरु लघु लेखि भरोजू ।
याही विधान ते सर्वताहू लगि पूरन मत्र पथार करो जू । १
इतने कल के भेद है कितनो पूछं कोइ ।
पूर्व युगल सरि अङ्क वै जान्यौ सख्या सोइ । २

अथ मात्रानष्टम्

जं कल मे भेद पूछं तितनीय कला कीजं गयं लिखि पूरव युगल अङ्क लीजिए ।
पूछ्यौ अक अन्त मा धराइवा को हाथ राखि तामे लिखं अङ्कनि घटैवे रस भीजिए ।
जौनयामे घटं करो ताके तरे आगिली कला लं गुरु 'दास' वहो योही फिरि कीजिए ।
रीत्यौ परं बीत्यौ नष्ट कर्म बाकी लघु ही है पूछ्यौ जिन तिनको दिखाइ रूप दीजिए ।। ३ ।।

पाँच मात्रा के प्रस्तार मा छठवा भेद कैसा हे ऐसा कोई प्रश्न किया न्यास इहा छठए भेद कर प्रश्न है सो अन्त अक मे ८ घटावा तो शेष रहे २ इसमे ५।३ ए इ अ
१ २ ३ ५ ८
। । । । । ङ्कन घटैगे २ घटाइ दिआ से दुइ के तरे के कला लैकै गुरु भयो जिसका स्वरूप यह है ।८।। अथ मात्रोदिष्टम् ।

कहिए कितने अङ्क पर 'दास' रूप यह साज ।
करि उदिष्ट ताका उतर देन कह्यो अहिराज ।
देन कह्यो अहिराज पूर्व युगलाङ्क कलनि पर ।
लघु के शीशहि शीस गुरु हू क उपरहु तर ।
पुनि गुरु शिर को अङ्क जोरि के ठीक कहि गहिए ।
अन्त अङ्क सो घटाइ बचं बाकी सो कहिए । ४
उदाहरण सातमात्रा के प्रस्तार मे . . . . ।

अंत—

अथ वर्ण मर्क्कटी

षट पाती लिखि पहिली मे गनतीयं भयौ दूजी पाति मे द्वै ते दूनो दूनो अङ्क धरि देहु दुहुन से गुणि गुणि चौथी पाति भरो ताको आधो आधो पची छठी पातिन मे भरि देहु चौथी पची पातिहू के अकन को जोरि जोरि तीजी पांती रीती है पूरण वहो करि देहु वृत्त भेद मन्त वर्ण लघु गुरु पूछे 'दास' ताके आगे वर्ण मर्कटि पं धरिदेहु ७

अथ सूची जिते भेद पर अन्त है ता आधो गुर अत ।
तितनोई लघु अत है अक्षर सूची सत । ८

अथ वर्ण गणागण दोहा

मन भय गुण शुभ चारि है रस जत अगणो चारि ।
मनुज कविता को प्रथम तुक कीजं इन्हे विचारि । १
मति गुरु नति लहु आदि गुरु या दिलहू शुभ दानि ।
महि अहि शशि जल क्रमहि ते इष्ट देवता जानि । २
जगुरु मध्यरा मध्य लहु सगुरु अन्ततल अन्त ।
इते अशुभ गुण रवि अगिनि पवन ख देव कहत । ३

द्विगण विचार

मनहित य भजन जत उदसरस रिपु उर अवरेखि ।
कबित आदिकु गणहि परे द्विगण विचारहि देषि । ४

जनहित प्रति नीकेति कछु रिपुउ 'दास' मिलि मन्द ।
रिपु उदासही जो परै तो सब भांति कुबद । ५

विषय—मात्रा प्रस्तार तथा वर्ण मर्कटी आदि, लघु-गुरु-गण विचार वर्णन ।

संख्या २६१च. रस साराश, रचयिता—भिखारीदास, निवासस्थान—टेऊंगा (प्रतापगढ), कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—१२ × ४।। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—७६७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७६१ वि०, लिपिकाल—स० १८७६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० लालताप्रसाद जी पाडेय, ग्राम—सदहा, डाक०—रेडीगारापुर, जिला—प्रतापगढ ।

आदि— श्री गणेशाय नम.

प्रथम मगलाचरन को तीनि आत्मक जानि ।
नमस्कार अरु ध्यान पुनि आसिर्वाद बखानि ।

नमस्कार आत्मक मगलाचरन १

कदन अनेगनि विघुन को एक रदन गन राउ ।
वदन जुत बदन करो पुष्कर पुष्कर पाउ । २

ध्यानात्मक मगलाचरन

वक्र तुड कुडलित शुड नगनलित पाडु रद ।
अलि घमड मर्डलित दान मडित सुगंध मद ।

आसिरवाद आत्मक मगलाचरन

सोरठा

करो चद अवतंभ मो मनको अगमो सुगम ।
काटो 'रस 'सरिस' सुमति मथानी मथन करि । ४

वस्तु निर्देस कथन

जान्यो चहै जु थोरही दस कवित्त को बस ।
तिन्ह रसिकन के हेत यह कीन्हो रस साराश।। ५

नौरस नाम कथन

:० ·० :०:

अत—

नवनील सरोरुह अगनि केसरि रग दुकूल प्रभा सरसै ।
उर नाहर को नख संजुत चारु मायूर सिषानि को हाल सै ।
विचरै पद पानिन आंगन मे कुलकै किलकै हुलसै विहसै ।
अधराधर षोलनि तोतरि बोलनि 'दास' हिए दिन रैन बसै ।५८५

दोहा

सत्रह सै इक्यानवे नभ सुदि छठि बुधवार ।
अरवार देस प्रतापगढ़ भयो ग्रथ अवतार ।५८६
कुमति कुदूषन लाइहै सुधरयो वरनि विगार ।
सुमति समुभि सुष पाइहै विगरयो वरन सुधार ।५८७

इति श्री रस सारांस सपूरन लिख्यते सवत् १८७६ ।

विषय—नवरस विषय वर्णन ।

रचनाकाल

सत्रह सै इक्यानवे नभ सुदि छठि बुधवार ।
अरवार देस प्रतापगढ़ भयो ग्रथ अवतार । ५८६

संख्या २६१छ. रस साराश, रचयिता--भिखारीदास, निवासस्थान--टयोगा (प्रतापगढ़), कागज--देशी, पत्र--६५, आकार--९।। × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--१७, गुलशन अहमदी प्रेस, प्रतापगढ से प्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप)--११०५, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १७९१ वि०, मुद्रणकाल--स० १८९१ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री प० पुरुषोत्तम जी उपाध्याय, ग्राम-शेखपुर, डाक०-तेजी बाजार, जिला-जौनपुर।

आदि--श्री गणेशाय नमः अथ रस सारांश लिख्यते ।। दोहा ।।

प्रथम मंगलाचरन को तीन आत्मक जानि ।
नमस्कार अरु ध्यान पुनि आशिरवाद वखानि ।

।। नमस्कार मंगलाचरण ।।

कवन अनेकन विघुन को एक रदन गन राउ ।
बंदन जुत बदन करो पुष्कर पुष्कर पाउ ।।

।। ध्यान आत्मक ।। छप्पै ।।

बक तुड कुडलित सुड नग वलित पांडु रद ।
अलिपुमड मडलित दान मडित सुगंध मद ।
बाहु दंड उदंड वुष्ट भुंडनि अमुंड कर ।
बिघ्न खड कर खंड ओज सत मारतड बर ।
श्रीखड परशुनदन सुखद दास चड चडी तनय ।
अभिलाख लाख लाहन समुझि राखु आखु बाहन हृदय ।

।। आशिरबाद ।।

करो चद अवतश मो मन को अगमो सुगम ।
काटो 'रस सारश' सुमति मथाना मथन करि ।

।। वस्तु निर्देशक यत दोहा ।।

चाहत जानि जु थोरहि रस कबित को वश ।
तिन्ह रशिकन्ह के हेत यह कीन्हो रस सारश ।

।। सोरठा ।।

बानी लता अनूप काव्य अमृत फल रस फल्यो ।
प्रगट करै कवि भूप स्वाद वेदता रसिक जन ।

.o: o: :o:

।। नवरस नाम कथन दोहा ।।

अत--

नवनील सरोरुह अगनि केसरि रग दुकूल प्रभा सरसै ।
उर नाहर के नख सयुत चारु मयूर सिखीन के हार लसै ।
विचरै पद पानिन्ह अंगन मे कुल कै किलकै हुलसै विहँसै ।
अधराधर खोलनि तोतरि बोलनि दास हिये दिन रैन वसै ।

।। दोहा ।।

सत्रह सै इक्यानवे नभ शुदि छठि वुधवार ।
अरवर देश प्रतापगढ भयो ग्रथ अवतार ।

:o: :o: :o:

इति श्री भिखारी दास कायस्थ रचितायां रससारांश समाप्तम् शुभमस्तु

विषय--रस अलकार वर्णन ।।

रचनाकाल

सत्रह सै इक्यानवे नभ शुदि छठि वुधवार ।
अरवर देश प्रतापगढ़ भयो ग्रंथ अवतार ।

संख्या २६१ज. रस साराश, रचयिता—भिखारीदास, निवासस्थान—टेऊगा (प्रतापगढ़), कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—१३।× ५। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—६६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७९१ वि०, लिपिकाल—१६१० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० चक्रपाल जी त्रिपाठी, ग्राम—राजातारा, डाक०—लालगज, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशाय नम: दोहा ।

प्रथम मंगलाचरण को तीनि आतमक जानि ।
नमस्कार अरु ध्यान पुनि आसिरवाद वषानि । १

नमसकार आतमक मगलाचरण

कदनि अनेकनि विघन को एक रदन गण राउ ।
वंदन जुत वंदन करौ पुषकर पुष्कर पाउ । २

ध्यायानात्मक मगलाचरण छप्पय ।

वक्र तुंड कुंडलित सुड नगवलित पांडु रद ।
अलि गुमड मडरित दान मणित सुगध मद ।
वाहु दड उदण्ड दुष्ट झुडनि अमुड कर ।
विघन खड कर खड ओज सत मारतंडवर ।
श्रीखड परस नदन सुषद दास चड चडी तनय ।
अभिलाष लाष लाहन समुझि राष आष वाहन हृदय । ३

सोरठा

करो चंद अवतस मोमन को अगमो सुगम ।
काढो 'रस सारस' सुमति मथानी मथन करि । ४

दोहा

जान्यो चहै जु थोरही रम कवित्त को वम ।
तिन्ह रसिकन के हेत यह कोन्हो 'रम मारस' । ५
वानी लता अनूप काव्य अमृत रम फल फली ।
प्रगट करै कवि भूप स्वाद वेदना रसिक तन । ६
अधर मधुरता कठिनता कुछ तीक्षणता त्योर ।
रस कवित्त परिपक्वता जान रसिकन और । ७
रसिक कहावै ते जिन्है रम वातन्हि सो हेतु ।
रस वातै ताको कहै जो रसिकन सुष देतु । ८

नौरम नाम कथन दोहा

नौरस प्रथम सिगार पुनि हास करुण अरु वीर ।
अदभुद रुद्र विभत्सभय शात सुनो कवि धीर । ९

अत—जो रस उपजै आप सा ताको कहै स्वनिष्ट ।
होत अवर ते और मै ताहि कहत पर्रनिष्ट ।५८०
सवके कहत उदाहरन ग्रथ वहुत वढि जाइ ।
ताते सम्पूरण कियो वाल गोपालहि ध्याइ ।५८१

कवित्व

:o: ·o· :o:

नवनील सरोरुह अगनि केसरि रग दुकूल प्रभा सरसै ।
उर नाहर को नष सयुत चारु मयूर शिषानि को हार लसै ।
विचरै परि आनिन आगन मै कुलकै किलकै हुलसै विहसै ।
अधराधरि षोलनि तोतरि वोलिन 'दास' हिए दिन रैनि वसै ।५८४

दोहा

सत्रा सै इक्यानवे नभ सुदि छठि बुधवार ।
अरवर देस प्रतापगढ़ भयो ग्रंथ अवतार ।५८५
कुमति कुदूषन लाइहै सुधरयौ वरन विगारि ।
सुमति समुझि सुख पाइहै विगरयौ वरनि सुधारि ।५८६

इति श्री रस शारास भिखारीदास कायस्थ कृते संपूर्ण शुभमस्तु शवत १९१० ।

विषय—नवरस वर्णन ।

रचनाकाल

सत्रा सै इक्यानवे नभ सुदि छठि बुधवार ।
अरवर देस प्रतापगढ़ भयो ग्रंथ अवतार ।५८५

संख्या २६१क विष्णु पुराण भाषा, रचयिता—भिखारीदास, निवासस्थान—टयौंगा ग्राम (प्रतापगढ़), कागज—आधुनिक सफेद, पृष्ठ—२८५, आकार—११$\frac{3}{4}$ × ७$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, नवलकिशोर छापाखाना लखनऊ में मुद्रित, परिमाण (अनुष्टुप)—५३९१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, मुद्रणकाल—सं० १९५१ वि० (सन् १८९४ ई०), प्राप्तिस्थान—श्रीयुत लाल रमा यदुपाल सिंह कान्हवंशीय बी० ए०, साहित्य शास्त्री, साहित्यरत्न, युवराज तालुका नूरुद्दीनपुर डाक०—करहया बाजार, जिला—रायबरेली ।

आदि—अथ विष्णु पुराण भाषा पारम्भ

छप्पै

जो इन्दिन को ईश विश्व भावन जगदीश्वर ।
जो प्रधान बुद्धयादि सकल जग को प्रपच कर ।
परम पुरुष पूरब्रज सृष्टि थितिलय को कारण ।
विष्णु पुडरीकाक्ष मुक्ति पद मुक्ति सुधारण ॥
जेहि दास ब्रह्म अक्षर कहिय जो गुण उदधि तरग मय ।
तेहि सुमिरि सुमिरि पायन परिय करिय जयति जय जयति जय ॥ १ ॥

दोहा

विनय विष्णु ब्रह्मादि पुनि गुरु चरणनि शिर नाइ ।
बातें विष्णु पुराण की भाषा करौं बनाइ ॥ १ ॥
पुनि अध्यायनि सोरठा किय छप्पै प्रति अश ।
आठ आठ तुक चौपाई अनियम छंद प्रशश ॥ २ ॥

चौपाई

वेद पुराण भेद को ज्ञाना । ऋषि विशिष्ट सब जग विख्याता ॥
तिनके भई शक्ति शुभ वासर । जिन जाए शुभ पुत्र पराशर ॥
तासु गिरा सब जग सुख पूरति । सकल शास्त्र विद्या की मूरति ॥
प्रातक्रिया करिकै यक बारा । बैठहुते तेइ शक्ति कुमारा ॥

अंत—एव विप्रार्चन कृत्वा वित शाठ्य विवर्जित ।
सर्व कामान वाप्नोति याति विष्णो परम्पदम् ॥ ५ ॥

इति श्री विष्णु पुराणे पाराशरीय संहितायां षष्ठांशे तृतीयोऽध्याय ॥३॥ संपूर्णम् ॥
मुन्शी नवल किशोर (सी आई ई) के छापेखाने में छपा जनवरी सन् १८९४ ई० ॥

विषय—विष्णु पुराण का हिंदी अनुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—यह ग्रंथ विष्णु पुराण नाम से भारतवर्ष में प्रसिद्ध है। इसमें ब्रह्मा उत्पत्ति, यज्ञ वाराह उत्पत्ति, सुर-नर-तिर्यक जन्म, वर्ण, कर्म, गण, सृष्टि वर्णन, मानस सृष्टि विस्तार, लक्ष्मी

स्तुति, लक्ष्मी उत्पत्ति, भृगु वशावली वर्णित है। श्री राजा अजीतसिंह प्रतापगढाधीश ने प्रकृतायनेक निबन्धो बहुधा म प्रकाश मचार किए है। इन निबन्धो का उत्पादक नगर प्रतापगढ के ईशान दिक सीमा समीप टयोग्ग ग्राम निवासी कायस्थ कुल भूषण महाकवि असीमोपमश्राय उक्त नगर राज्याधिकारी श्री राजा अजीतसिंह के मापितृव्य महाराज हिदूपति जिनको अद्य समय शताधिक १५८ सवत्सर व्यतीत भये है तदाज्ञानुवर्ती भिखारीदास है यह निबध अत्युत्तम है जैसा वज्रमणि चक्र भूमि के आरोपण से उत्कृष्ट आभा को प्राप्त होवे पुन यह भाषा निबन्ध मुद्रित होकर प्रचलित होने के पूर्व राजा अजीतसिह वैकुण्ठ पदारूढ हो गए उनकी इच्छा पूर्ण होने के हेतु से तदात्मज श्री राजा प्रताप बहादुर सिह ने इस निबध को मुन्शी नवलकिशोर साहब (सी० आई० ई०) के यत्रालय मे मुद्रित कराए है किन्तु रस साराश शृगार निर्णय काव्य निर्णय—इन निबधो का नगर गढाधिष्ठित यत्रालय गुलाब अहमदी नामक मुन्शी अहमद हुसेन साहब डिप्टी इन्सपेक्टर मदारिस नगर निवासि स्थापित—म आरोपित कारवा के किलि प्रतापगढ के सरस्वती भडार मे स्थिर किए है कवि पडित रसिकजनो के विनोदार्थ राजा साहब हर्ष पूर्वक प्रेषित करते है पुन भिखारीदास रचित अमरकोश शतरज शतिका भाषा शिरोमणि निबन्ध द्वय आरोपण कराने का विचार है यह सूचना अग्रिम के हेतु लघु से निश्चित कर दी गई है।।"

सख्या २६१ड. शतरज शतिका, रचयिता—भिखारीदास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—९३ × ५½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—८८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—राज पुस्तकालय, किला प्रतापगढ, प्रतापगढ।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ पोथी सतरज सतिका लिष्यत।।

राजन्ह श्रीपद मंत्रिन्ह मतद सूर सुबुध्यानि कोजु सहायक।
उदर अस्व अरूढ ह्वै प्यादेह दौरि के 'दास' मनोरथ दायक।
चोसठि चारु कलानि को लाभु विसातिन बूझिये वदि विनायक।
सिधुर आनन मकट भानन ध्यान सदा सतरजन्ह लायक। १

दोहा

परम पुरुष के पाय परि पाइ सुमति सानद।
'दास' रचे सतरज की सतिका आनद कद।

अथ बिसाति सज्ञा विधान

आठ आठ चोसठि सदन मय आसन सुष पुज।
सोरह सोरह सदन तह चारि चौक के कुज।

कोठनि की सज्ञा

क च ट त प उ छ ठ थ गज उ द घ भ ठ ध सोरह वर्न।
प्रथम चौक के सोरहो कोठनि के आभर्न।
दूजो चौक उकार जुत उलटे क्रम लिषि आउ।
पुनि तिसरो नकार जुत ऊरध क्रम ठहराउ।

अथ मोहरनि को सज्ञा वर्नन।

रथ र वाजि वाइ मय है मत्रि मसित सा साहि।
पाग्या दारि वि वि सि सि पी असित रग को चाहि।

मोहरा की रासि वर्नंनन

अत— उत्तर दुत्तर दोहा

इह सिह वड्डसि जू रादुसी घुव हुन सीभु यथ ठानि।
सिधुर गुफदहै अहगि घुनर मुसि भुर घुजे मानि। ८

रथानापित प्याद बाजी प्रश्न छप्पय छंद ।
करी चा विदु पिथु पिठु विर्छुरिग पिज पोलँ ।
ठुन वम्भुनायो घुन यगन पडन माडन पाहै ।
उन सुजन रक्षन पचन वटन यातु न राहै ।
दुन याहि सहित दुहु दलनि म सोरह बारह वसु तन्यो ।
कहि 'दास' कौन विधि विमति सो सुमति विज वरहा वन्यो ।

उत्तरगीता छंद

रदु मौयि वूरो राजु पोरिजु जुरो वधूयो सीधु ।
पधना सिध न सुना सिठानव थान संभोह लीधु ।

इति श्री भिषारोदास कायस्थ कृते सतरज सतिका सपूर्णम शुभमस्तु ।

विषय—शतरज विषय वर्णन ।

संख्या २६२. डगी या डगव कथा (महाभारत), रचयिता—अभिमन (?), कागज—देशी, पत्र—५१, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—७६५, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १८३७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० गयाप्रसाद त्रिपाठी, ग्राम व डाक०—दोस्तपुर, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—

. . . .

जीम्य अभी भोजन कीन्हा । प्रम हस तंव वसन लीन्हा ।।
भउ हरेरी भरी जुवती देखा । सवइ दीन्ह कह भए संतोषा ।।
अतम रीखे अद्य ऐके देखु मह . ।
करथ लोभ उह उठइ के देखे रा
रीखे न यक स देखे लीन्ह । रवी उद जना पर्छीम कीन्ह ।
हथ क तल सो देखेउ पउ । नपुर के ल तल पजउ ।
कहै रिखे सुन इद्र भुअरा । क अद करौ वे हल तोहरा ।
तव अनवत कहै समुझइ । दुखस रीछीअन्ह के रइ ।
अंसो नव ऐइ कीन्ह गासइ । मच देखी रारवी उठ रीसइ ।
ऐन्ह तौ हम कै अध कै जन । करौ तुरत ऐन्हकर अपमन ।

।। दोहा ।।

अव सुनु पतरीउ रगी सीसय देत हो तोहि ।
रती नरी दीन छोरी निस्चे प्रपती होहु ।
जव परीखी दीन्ह दुखस । इददेव कह अऐव त्रस ।
:o: o. .o
वोलैकै मे वोली वश्व मी ग्यन मोही देही ।
ऐह अकलक गोसइ कही अमीरी हे माही ।
:o: :o. :o
इम पस मे राहतीउ पुहुमी अइउ ऐही ठव ।
वोन्ह अया मोहि दीन्ह पुहुमी रहो उर भीन ।
अतनी वात सुनत तव राउ । पलटी सस जीव भीतर अउ ।
वहुत वात मन भऐ अनद । पहील सव वीसर दुख दद ।
कहै 'डगी' सुन राजकुमारी । तै तो मोरी अव प्रन पी री ।
अवरो रइनी प्रस अहुहो जत मोहा । सभन उपर मै रखव तोही ।
प्रन रूप मै रखव तोही । वीसरी न जसी जीव सो मोही ।
भाग विलास करहु नित जो मन इछ होइ ।
सवग सुख वसहु भुगहुइहव सोइ ।

कहै डरंभी सुनहु भुग्रारा । बीधी चरीत्र को मेटनहारा ।
एक तौ सय रीखेश्वर दीन्ह । रतो वरी दीन घोरी कीन्ह ।
बुसरे सग तजी कै ग्रइ । तीसरे वन मो रही छपइ ।
ग्रब बरसन भो तोही सोरइ । कैसे रहो मे तुम्हरे ठइ ।
दुइ रूप कीन्हे परानरी । कैसे कै हो रहो तुमरी ।
गुपुत रूप जो रखै परहु । तो हम कै लै रउ सीधरहु ।
सती ग्रवन सुनु रज जौ रखहु तुम मोहि ।
जेहीं सो कोइ न जाने प्रगटव तनहीं होहि ।
ग्रत—भोमसेन ग्रन कहींकै चीरडगोइ दीन्ह ।
तुम नीहचित रहहु ग्रब सरन भर हम लीन्ह ।
:० ० .०.
सैन ठटी खेत परा सरब देवत भारी ।
धन्य धन्य तुम पुहुमी जहव देव मुरारी ।
तव सैन चलउ मुरारी । जो जग करें समभ्र बनवारी ।
पहीले ब्रह्मदेव सोधरा । हग चलै तव इद्र भुग्ररा ।
चद सुज नीजी चलं ग्रकस । महदेव तव चले कलसा ।
सवा लख सुमेरु पहरा । मएर सतो चले जुभ्ररा ।
सब दल मोर्ला कीन्ह प्रग्रेम । डगा चल डाव दसा ।
कवरो पडव चल जुभ्ररा । करी प्रनम हनोवत सीधरा ।
श्री गोपाल सवारी कहि ग्रऐ । मरव महीत बलाभद्र सीधरा ।

एती श्री पोडी डगो मरन समपत जो ५ब्र सो लीख . . . .समत १८३७ की सत ०: ०॰ ० ०

विषय—महाभारत जगन डरगा एव डगा की प्रेमकथा का वर्णन ।

संख्या २६३ नखशिख वर्णन, रचयिता—भीषम, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—१०।।। X ६।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—१०४, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० भगवान जी त्रिपाठी, ग्राम—राजा तारा डाक०—लालगंज, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ नख सिष ग्रंथ लिष्यते ॥
आगमन सुनि गिरिनाथ जदुनाथ को तुरत करि हाको सूत्र कीन्हो फनि राज को ।
भीषम भनत आगे लीवे को हरष हर कीन्हो है कुपीन छीनि छाला मृगराज को ।
आवत पुरारि को निहारि कै मुरारि नजि चाहत मिलत महाराज षगराज को ।
तौ लौं भय मगन पराने सेष भूतल मनहर हेरन सगन सुभ साज को ।१।

वार वर्ननम दडक

मुष अरविंद जानि घेरे हे अलिन्दु वृंद इन्दु अमी चूमत की पन्नग कुमार है ।
कचन सिषर के किवार पै सुधा सो सीचि मरकत तार उपजाये करतार है ।
निसि के कुमार मषतूलनि के तार कैधों 'भीषम' सरूप सरिता के ये सेवार है ।
मार के विपिन की सिगार के चवर चारु तरुनि तेरे वार हैं ।२।

पटिआ वर्ननस दडक

पक्षी रसनाथ के कीधौ तुग पक्ष . . . .तान तर राजत निशेष की ।
कचन के गिरि तें गिरी द्वै धार जमुना की 'भीषम' कसौटी जु . . ।
कैधो निशि साथ निशिनाथ विपरीति रमैं वामरेन सीश सनि राजत सुवेश की ।
. . . . . .घटा है चद मडल पै किधौ प्यारी पटिआ विराजै तेरे केश की ।३।

वेनी वर्ननम्

अंत— दोहा

प्यारी तेरे पाय को नूपुर वजत रसाल ।
श्रौण सुने सुष होत जनु कूजत मजु मराल ।४८

एडी वर्णनम् दोहा ।।

अरुन अरुन एडीन की लाली लषत सुहाइ ।
कौहर कुमकुम कौल की उपमा कही न जाइ ।४६

पग नष व०

तो पग नष की नषतपति समता लहै न मद ।
तो मुष आनन्द कन्दसम को वरनै कहि चन्द ।५०

सोरठ

नष सिष लो तिय गात निरषि निरषि सोभा वरनि ।
दिन त्यौ वरष विहात वहु विधि कहि अभिलाषहि ।५१

इति श्री भीषम कवि विरचिते नष सिष ग्रंथ समाप्तम ।

विषय—शिख नख वर्णन ।

संख्या २६४. सृष्टि सागर, रचयिता—भीषमदास बाबा, उजहेनी (राय बरेली निवासी), कागज—देशी, पत्र—८५७, आकार—१८½ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—१३७१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री महंत श्री मननदास बाबा, ग्राम—उजहेनी, डाक०—राज फतेपुर, जिला—रायबरेली ।

आदि—सत्यनाम करता पुरुश ।। अथ सिष्टि सागर ग्रंथ लिख्यते ।

।। दोहा ।।

सतगुर पद वदौ सोई नोमरण जास अधार ।
जेहि प्रताप लवलेसते उतपति जिव ससार ।।
सतगुर पद रज मुकुट मरण मञ्जे दीसे रूप ।
जासे जग भव भय मिटै परै न जिव भव कूप ।। २ ।।
सतगुर पदरज अञ्जि द्रिग दीसे चरित अनूप ।
त्रैपद भक्ति सज्ञाण जुत साधण सकल विरूप ।। ३ ।।
सतगुर सम्रथ सर्व पर दीनवधु हित जीव ।
सो पद वदौ विमल मन सव साधन की सीव ।। ४ ।।

।। सोरठ ।।

सतगुर सम्रथ छोह करहु सुचित हित जानि जन ।
मिटै महाभ्रम मोह साहब सम्रथ याँहि तव ।। ५ ।।

अंत— ।। छद ।।

सोइ भक्ति सत्य अनत की परसिद्धि जो नर पावही ।
द्वैता दुरासा आस ममता ताहि पर नहि धावहीं ।
अनन्य भक्ति सो कहिय तासु वि ाश सजुत जक्त रही ।
विज्ञान मत निर्वान धारन रहित कारन जो कहि ।
स्रो तर्राह विना प्रयाश भौजम त्राम कारन नाल है ।
कहि 'दास भीष' प्रकाश पावन परम पद यह दृढ गहै ।।

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

सागर शिष्टि विधान जो कह्यौ सकल समझाय ।
समुझि सकं तौ भव तरहि कवहू न भटका षाय ॥२३३२॥

इति श्री सत्य सहस्त्रे कलिकलुष विध्वसने परम वैराग्न भक्ति महोत्साहे भीषमदास विरच्चिते हरिवश वोधकं पंचमो प्रथाय शिष्ट सागर सम्पूर्णम् ॥ शुभ मस्तु शुभ भूयात् ॥ सवत १८९२ भाद्रमसि कृष्ण पक्षे अष्टम्या रवि वासरे ॥ जाद्रिस पुस्तक..... ..

विषय—निम्नलिखित विषयो का वर्णन है—

१ अक्षर निरूपन, २ गुनन्ह की उत्पत्ति, ३ माया की उत्पत्ति, ४ विराट की उत्पत्ति, ५ अक्षर ब्रह्म, ६ वेदोत्पत्ति, ७ सत्तरि जुग की उत्पत्ति, ८ षोडश लोक की उत्पत्ति, ९ अडतास लाक का उत्पत्ति, १० सप्त जुग की कथा, ११ गणेशोत्पत्ति, १२ जिव व्रतिमान, १३ कान की उत्पत्ति, १४ दैत्यवंश का वशावली सत्ययुग मे, १५ प्रह्लाद चरित्र, १६ शूकर अवतार, १७ त्रेता जुग की कथा १८ सूर्यवशी राज्य, १९ रघुवशी राज्य २० द्वापर की कथा, २१ कलिजुग की कथा, २२ ब्रह्मा का मोह, २३ इन्द्र की प्रलै, २४ राजा पृथु की उत्पत्ति, २५ वशिष्ठ की उत्पत्ति, २६ काशीराज की कथा, २७ नारद जन्म पृथु की सृष्टि, २८ विधि की प्रलय, २९ हनुमान बोध, ३० गरुडबोध, ३१ विधि की उत्पत्ति, ३२ विधि की सृष्टि, ३३ गधर्व विवाह, ३४ वेद उत्पत्ति, ३५ जुगन्ह की उत्पत्ति, ३६ ईश्वर धर्म शुभ निशुभ की मृत्यु, ३७, राजा धर्म धीर की कथा, ३८ हमावतार, ३९ राजा प्रियव्रत की कथा, ४० व्यास की उत्पत्ति, ४१ लक्ष्मण का प्रश्न, ४२ सती का प्रश्न, ४३ रामचद्र का सवाद, ४४ ब्रह्म की सृष्टि, द्वापर की कथा, ४५ मत्स्य कुल और पाडवों की कथा, ४६ अश्वमेध यज्ञ, ४७ परीक्षित जन्म, ४८ जदुवशी की प्रलय, ४९ ऊधा सवाद, ५० कलिजुग की कथा, ५१ महाप्रलै की कथा।

सख्या २६५ दोहावली, रचयिता—भवनदास, निवासस्थान—कानपुर ग्राम (रायबरेली), कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—६॥ × ५। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—१९६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—अठारहवी शती, लिपिकाल—स० १९३५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० दवता महाराज, ग्राम—कानपुर, डाक०—करतिया, जिला—रायबरेली ।

आदिः—श्री गणेशाय नम. ॥ अथ दोहावली लिख्यते ॥

शतगुर दीन दयाल सुनो तुम बीन्ती मोरी ।
जन्म जन्म के कर्म कठिन तुम काटहु वेरी ॥
मन भुलाय परपच गहे कम की डोरी ।
जह जह दीयट समाई वहुरि जन्मै वहि ठौरी ॥
भक्ति मता कछू अवर जक्त कछू अवरै गावै ।
वातन के विस्तार राम जु हाथ न आवै ॥

दोहा

वोली वानी राम की फैलि रही ससार ।
भवन दास करनी विना कथनी जानो ब्योर ।
कहते कहते थकि परे सुनते भये लवार ।
परम तत्व चीन्हे विना वातहि केर वुलार ।
वहु वूडे वहु उवरे वहुत पुकारहि तीर ।
जिनके सतगुर मिल गये तिन पायो घर तीर ।
थोर थोर ताइ ठहरि कै लहरि सिधु समान ।
हेल मेल रेला भयो अनहद के मैदान ।

अंत—जव से जन्म मै जक्त मे अवले कछू न कीन ।
'भवनदास' वथा करै नीर सुषाने मीन ।

'भवन दास' मन राम से जो अब होत नीचाट ।
तो भल होत भली वीधी राम नाम के बोट ।
वालापन गा षेल कै तरुनाई वाचाल ।
'भवन ' वुधाई पहुचो गै षड़ा सीम पर काल ।
श्रवन थके अरु नैन दुइ डगमग डोलै गात ।
'भवन दास' निज दाग भई सघी न छोडा साथ ।
तन की इद्री जीव सग सवही सव सुष कीन ।
'भवन' समै ।.........सवही पाक्षा दीन ।१२५

इति श्री भवनदास कृते दोहावली समाप्त सम्वत १६३५ ॥

विषय---भक्ति तथा ज्ञानोपदेश विषय वर्णन ।

संख्या २६६क. पार्श्वनाथ पुराण भाषा, रचयिता---भूधरदास, कागज---देशी, पत्र---७८, आकार---$१२\frac{१}{२} \times ५\frac{२}{६}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)---१२, परिमाण (अनुष्टुप)---२३४०, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, रचनाकाल---स० १७८६ वि०, लिपिकाल---स० १८१८ वि०, प्राप्तिस्थान---श्री दिगबर जैन मदिर (बडा मदिर), चूडीवाली गली, चौक, लखनऊ।

आदि---॥ अथ श्री पार्श्व पुराण भाषा लिष्यते ॥

॥ दोहरा ॥

मोह महातम दलन दिन तप लछमी भरतार ।
ते पारस पर में समुझ होऊ सुमति दातार ॥ १ ॥
वामा नंदन कलपतरु जपौ जगत हितकार ।
मुनि जन जाकी आस कर जाचै शिव फल सार ॥ २ ॥
·० .०: ·०·
चहुगत भ्रमत अनादि बाद वहु काल गमायौ ।
रही सदा सुख आश प्याम जल कहीय न पायौ ॥
सुख करता जिनराज अजिलौ हिए न आए ।
अब मुझ माथै भाग चरण चितामणि पाए ॥

अत---पूरब चरित बिलोक कै भूदर बद्ध समान ।
भाषाबध प्रबंध यह कियौ आगरे थान ॥१२०॥
:०: .०· :०
पाच वरस कछु सरस से लागे कर्त न वेर ।
बुध षेमी थिरता अलप ताते लगी अँवेर ॥१२४॥
०: .०: ·०:
सवत सत्रह सै समै और नवासी लीय ।
सुदि असाढ तिथ पचमी ग्रथ समापित कीय ॥१२८॥

इति श्री पार्श्व पुरान भाषा भगवत निर्वान नाम नवमो अधिकार समाप्त ॥ कवि भूधर कृतं ॥ सवत १८१८ वर्षे मिति असाढ सुदी १३ भोम वासरे पुस्तग अस्त विस्त असुद्ध आया था सो सुद्ध किया पूर्ण किया याहू मल्ल ने धनू साह पठनार्थ श्रोता बक्ता कल्याण मस्तु ॥ श्री . . .

विषय---श्री पार्श्वनाथ तीर्थकर का चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

सवत सत्रह सै समै और नवासी लीय ।
सुदि असाढ तिथ पचमी ग्रथ समापित कीय ॥१२८॥

संख्या २६६ख. पार्श्वपुरान भाषा, रचयिता—भूधरदास, निवासस्थान—आगरा, कागज—देशी, पत्र—६१, आकार—११$\frac{1}{10}$ × ६$\frac{6}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—३०७१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७८९, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर (बड़ा मंदिर), चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ।

आदि—अथ श्री पार्श्वपुरान भाषा लिष्यते ॥

॥ दोहरा ॥

मोह महातम दलन दिन तय लछमी भरतार।
ते पारस परमेसु मुझ होय सुमत दातार॥ १ ॥
वामा नदन कल्प तरु जयो जगत हितकार।
मुनि जन जाकी आस करि जाचित है सुषसार॥ २ ॥
:o: :o: :o:

॥ चौपई ॥

मगध देस देसन परधान। राजग्रही नगरी सुभ थान॥
राज करै श्रेनक भूपाल। नीतिवत नृप पुन्य विसाल॥२६॥
छायक सम्यक दर्शन धार। रूपसील सब गुन निरधार॥
तिनकें घर अतेवर घना। पटराणी रानी चेलना॥२७॥
जाके गुन वरनन बहु भाय। वरिया लगै कथा बढ जाय॥
एक दिना निज सभा नरेस। निवसै जैसै सुरग सुरेस॥२८॥
रोमांचित वन पालक ताम। आय राय प्रति कियौ प्रनाम॥
छहरित के फल फूल अनूप। आगै धरे अपूरब रूप॥२९॥
हाथ जोर विनवे वन पाल। विपुलाचल पर्वत के भाल॥
वर्धमान तीर्थंकर आप। आए राजन पुन्य प्रताप॥३०॥

अंत— ॥ दोहा ॥

पूरब चरित्र विलोकि कैं भूद्धर वुद्धि समान।
भाषाबध प्रबध एह कीयो आगरै थान॥४१॥
:o: ·o· :o
संवत सत्रह सै समै और निवासी लीए।
इदि असाढ तिथि पचमी ग्रथ समापति कीए॥४६॥
:o· ·o· ·o:
सार जनम जग मे एही भने जे जैन पुरान।
पूजा साधर्मी करै जए जए मगल गान॥५५॥

इति श्री पार्श्व पुराण भाषा ग्रथ नवम अधिकार समाप्त सुभ भवतु कल्याणमस्तु॥१॥

विषय—जैन तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ चरित्र वर्णन।

रचनाकाल

सवत सत्रह से समै और निवासी लीए।
सुदि असाढ तिथि पचमी ग्रथ समापति कीए॥४६॥

संख्या २६६ग पार्श्व पुरान भाषा, रचयिता—भूधरदास, निवासस्थान—आगरा, कागज—देशी पत्र—१२८, आकार—१३$\frac{1}{2}$ × ७$\frac{3}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—२३२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७८९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मंदिर (बड़ा मंदिर), चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ।

आदि—अथ श्री पार्श्व पुराण भाषा लिष्यते ॥

॥ दोहरा ॥

मोह महातम दलन दिन तप लछमी भरतार।
ते पारस परमेस मुझ होय सुमति दातार॥ १ ॥

वामा नंदन कल्पतरु जयौ जगत हितकार ।
मुनि जन जाकी आस करी जाचत है सुषकार ॥ २ ॥

॥ छप्पं ॥

भुवन तिलक भगवंत सत जनक वल दिवायर ।
जगत जंत वधव अनत अनुपम गुन सागर ।
राग नाग मय मत दत उथप्पन वली अति ।
रमाकात अरिहत अतुल जसवत जगति पति ।
महिमा महंत मुनि जन जयति अदि अत सबकौ सरन ।
सो परम देव मुझ मन वसौ पर्श्वनाथ मगल करन ॥ ३ ॥

:o: .o: :o:

आगे जैन ग्रथनि के कविता कविद्र भए करी देव भाषा जहा बुद्धि फल लीनो है ।
अछर मिताई तथा अर्थ की गभीरताई पद ललताई जहा आई रीत तीनो है ।
काल के प्रभाव तिन ग्रथन के पाठी अव दीसत अलप ऐसौ आयौ दिन हीनो है ।
तातै इस समय जोग पढं बाल वृद्ध लोग पार्स्व पुरान भाषा कवित्त वध कीनो है ॥

॥ दोहा ॥

सक्ति भक्ति वल कविन पै जिन गुन वरने जाहि ।
मे वरनौ अब भक्ति वस सक्ति मूल मुझ नाहि ॥२४॥
वरनौ पूरव कथित क्रम ग्रथ अरथ अवधारि ।
सुगम सक्षेप सूं सुनो सबै नरनारि ॥२५॥

अंत— दोहा

पार्श्व चरित्र विलोकि कै भूदर बुद्धि समान ।
भाषावध प्रबध यह कीयौ आगरै थान ॥३६॥

:o: .o. o:

पाच वरस वछु वरस से लागी करत निवेर ।
वुध थोरी थिरता अलप तातै लगी अवेर ॥४३॥

.o. o .o:

सवत सत्रह मे समै ऊर निवासी लीय ।
सुदि आषाढ तिथि पचमी ग्रथ समापति कीय ॥४८॥

.o. .o: :o.

सार जनम जग मै यही शुनै जे जैन पुरान ।
पूजा साधर्मी करै जय २ मगल गान ॥५३॥

इति श्री पार्श्व पुरान भाषाया भगवति निर्वान नाम नवमो अधिकारः समाप्तः

विषय—जैन तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ का चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

सवत सत्रह सै समै ऊर निवासी लीय ।
सुदि आषाढ तिथि पचमी ग्रथ समापति कीय ॥४८॥

सख्या २६६घ पार्श्वपुराण, रचयिता—भूधरदास, निवासस्थान—आगरा, कागज—देशी, पत्र—६४, आकार—१२¾ x ८¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—२२४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७८९ वि०, लिपिकाल—स० १८२२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर (बडा मदिर), चूडीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—॥ॐ नमः ॥ अथ श्री पार्श्व पुरान भाषा लिष्यते ॥
॥ दोहरा ॥
मोह महातम दलन दिन तप लछमी भरतार ।
ते पारस परमेस मुझ होहु सुमति दातार ॥ १ ॥
वामा नदन कल्पतरु जयौ जगत हितकार ।
मुनि जन जाकी आस करि जाचै सिव फल सार ॥ २ ॥
॥ छप्पै ॥
भुवन तिलक भगवंत सत जन कवल दिवागर ।
जगत जत वधव अनत अनुपम गुन सायर ।
राग नाग मय मत दत उथप्पन बली अति ।
रमाकत अरहत अतुल जगवत जगति पति ॥
महिमा महत गुन जन जयति आदि अत सबको सरन ।
सो परमदेव मुझ मन बसो पासनाह मगल करन ॥ ३ ॥

अंत—पूरब चरित विलोकि कै भूदर बुद्धि समान ।
भाषा बध प्रबध यह कियौ आगरे थान ॥४०॥
:o: :o: :o:
संवत सत्रह सै समै और निवासी लीय ।
सुदि आसाढ तिथि पंचमी ग्रथ समापत कीन ॥४८॥
:o: :o: :o:
सार जनम जग मै यही सुनै जै जैन पुरान ।
पूजा साधर्मी करै जय जय मगल गान ॥५३॥

इति श्री पारस पुराण भाषा भगवत निर्वाण नाम नवमोधिकार समाप्त । पारस पुराण कवि भूधर दास कृत सपूर्ण ॥ मिती पोष सुदी ॥५॥ सवत ॥१८८२॥ रोज सूकवार पोथी लिषी वेनी राम पठनार्थ जो कोई भव्य जीव पढे तिमको मगल की करता है । पोथी लिखी लखनऊ बीच लषनऊ मो राज नवाव गाजु दी हइदर अली षा का नायेब आगा मीर ॥ सुभमस्तु ॥

विषय—जैन तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

सवत सत्रह सै समै और निवासी लीय ।
सुदि असाढ तिथि पचमी ग्रथ समापत कीन ॥४८॥

सख्या २६६ड पार्श्वनाथ पुराण भाषा, रचयिता—भूधरदास, कागज—देशी, पत्र—१०५, आकार—१०½ × ७ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—२३८६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७८६ वि०, लिपिकाल—स० १६०० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर (बडा मदिर), चूडीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—नम सिद्धेभ्य ॥ श्री पार्श्व जिनेद्रभ्यो नम. ॥ अथ पार्श्वनाथ पुराण भा . . . लिष्यते ॥
॥ दोहा ॥
मोह महातम दलन दिन तप लक्षमी भरतार ।
सु न जाकी आस करि जाचै सिव फलसार ॥ १ ॥
:o: :o: :o:
वदौ तीर्थंकर चौवीस । वदौ सिद्ध सर्व जगदीस ॥
वदौ आचारज उवझाय । वदौ परम साध के पाय ॥ ७ ॥
एई पद पावो परमेष्टि । एही सार और सब हेठि ॥
एई मंगल पूज अतीव । एई उत्तिम सरण सदीव ॥ ८ ॥

अंत— ॥ दोहरा ॥

सवत सत्रह सै समै और नवासी लीय ।
सुदि अषाढ तिथि पचमी ग्रथ समापत कीय ॥

इति श्री भूदरदास 'खडेलवाल कृत श्री पार्श्व पुराण भाषा समाप्तम ॥

॥ सवैया ॥

पारस जिनंद देवता की करै नित सेव ताके परसाद नाम सेवक सु लीजियै ।
तानै चित मै सुधार लिख्यौ ग्रथ अनुसार भूल्यौ चुक्यौ अंक काऊ ताको सुद्ध कीजियै ।
कौसल सुदेस विषे लक्ष्मणपुर ठाम ताको वास आस एक जैन को धरी जियै ।
सेवक अरज सुनौ पढौ गुनौ अपामुणौ सुद्ध भाव भाय परभाव डारि दीजियै ॥ १ ॥

॥ दोहरा ॥

जब लग मेरु अडिग सदा जब लग ससि अरु सूर ।
तब लग यह पोथी सदा रहियौ गुण भरपूर ।

इति श्री पारस पुराण सपूर्ण ॥ सवत ॥ १९०० ॥ वर्षे माघ मासे नवमी सुकुल पक्षे ॥ सोम वासरे ॥ लषत जुगीमल श्रावग पल्लीवाल नवावगज लिषी राम सुखदास के हे मीना वाजार मे ॥

विषय—पार्श्वनाथ तीर्थंकर का चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

संवत सत्रह सै सनै और नवासी लीय ।
सुदि अषाढ तिथि पचमी ग्रथ समापत कीय ॥

सख्या २६७ चपुमाव्य रचयिता—भूप या भूपति, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—८ X ३।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—३२०, खंडित, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी–कैथी, रचनाकाल—सं० १६८५ वि०, लिपिकाल—सं० १७१० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री १० कृष्ण राम जी शुक्ल, ग्राम—मादी, डाक०—मकउआ मीर, जिला—बस्ती ।

आदि—

. . . . ।
वत्तिस लछन पुरुष के प्रथमहि कहो विचारि ।
वहुरि कहो सब अग को जो वर देहि मुरारि । ५
पच अग गुरु चारि लघु पतन पच छउ उच्च ।
सात अरुण त्रय विष्ण तीनि गभीर समुच्च । ६
नयन नासिका वाहु अरु उर ललाट गुरु पच ।
पीठि पिडुरी ग्रीव लघु त्वचा पिरि मुख सच । ७
इसत त्वचा नष अगुरी केश पातरे जासु ।
सत सवत जीवी पुरुष भूप जानिअहु तासु । ८
उदर कष उर नैन अरु भाल कध वड भूप ।
अधर तारु नष जीभ चष करपद लाल अनूप । ९
नाभि सत्व स्वर तीनिए भूपालहि गभीर ।
सीस भाल उर तीन ए विस्तर ते तन धीर ।१०
एक एक अग 'भूप' मनि कहे जे तीनि प्रकार ।
सनुख ऊचे चाकरे लावे इहे विचार ।११
वत्तिसो लछन प्रथम कहे समुद्र विचारि ।
जे कछु लछन वदन के तेऊ कहो सभारि ।१२

अंत—लिषे वहुत फल होत लघु लघु के दीरघ होत ।
ताते अनुभव के हितू कहिअहु हानि उदोत ।६७
हित कहिअहु सवके सुनत अनहित मते जनाइ ।
अएहित हितहू सी कहै भूया होति चालाई ।६८
गिरि तरु सरिता देव फल उत्कट नामा नारि ।
धरिअहि कवहु न नाम ए सामुद्रकहि विचारि ।६९
सुभ नछत्र दिन वारि तिथि विधि वल ताकहु जोइ ।
मनियहु आई आदि दे वुध गन मानेहि होई ।७०
अपामार्जि जर को मदा ईत धाव नहि लेइ ।
वाक सिद्धि तेहि होइ नितु जिनही उए करइ ।७१
गाना दिहि एकाषर जप जो वाछु लाष ।
वाक सिद्धि सुष 'भूप' मान पावे गत अभिलाष ।७२
परतिअ रहित होइ जो सो पटिए यह कछ ।
भूपा परतिय लपटहि सिद्धि न ह्वै है सछ ।७३

इति भूपा भाषित चपू साध्य तितीय सर्गा ।। शुभमस्तु ।।

शिव मुख अक रस वनी साहसक सक सोधि ।
लिखाइम यह भूप कृत जो कछु कहा पयोधि ।

सवत् १७११ समय ज्येष्ठ सुदी

विषय—सामुद्रिक विषय ।

सख्या २६८ रस रत्न, रचयिता—भूपति, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—१० × ४।। इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप)—१८८, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७८८, प्राप्तिस्थान—श्री प० शिवकुमार जी द्विवेदी, ग्राम व डाक०—अनापुर रियासत, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—

. . फूल की पर रत हरि ठहराय ।२४।
रत उदास डेरवावती प्रौढ़ा धीरा धीर ।
कहा दुषिन सी रहति है तुम्हे नये उर पीर ।२५

इति प्रौढा अथ ज्येष्ठा कनिष्ठा

वढे घटे पिय प्रीति ते ज्येष्ठ कनिष्ठा हेत ।
एकहि फूल तोराइ हरि एक अग अंर लत ।२६

इति श्री भूपति विरचिते रस रते स्वकीयाभिधानो नाम प्रथमो मयूष ।। १ ।।

।। अथ परकीया निरूपनम् ।।

परकीया तासो कहै जाके ध्याल ससक ।
छोडी व्रज की गैल हम लागत तऊ कलक । १
विन व्याहे मन केलि को करं एकठा वाम ।
सुनि चरचा निज व्याह की रार्षत मन मे स्याम । २
भयो तुरत रत मेटई सो रत गुप्ता होइ ।
गई वाटिका मे सषी कटक लगे समोड । ३
होनहार रत मेटई सोऊ गुप्त वनाइ ।
ह्वै है श्रम अधिकार सषि जैहे वाग वलाइ । ४
वर्तमान रत मेटई सोऊ गुप्त वनाइ ।
जल पैठ वूडत सषी धरयो सावरो ध्याइ । ५

:o: :o: :o:

इति श्री भूपति विरचिते वहुनायकाभिधानो नाम द्वितीयो मयूषः ।। २ ।।

अंत——   ॥ तात चरणानां यथा ॥

नीतिहि ते लक्षिमी मिलै लक्षिमी ते नित दान ।
दान सुजस को करत है जानत सकल जहान ।८२
सो व्याजोक्ति वर्षानिए छल ते वचन प्रचार ।
लगें अतर व्याकुल भई भोर भीर अधिकार ।८३
तह प्रतीप उपमान तें जह उपमेइ विसाल ।
तुश्र मुष नीको लगतु है फीको ससि दुति जाल ।८४
उत्तर प्रति उत्तर जहा तह प्रश्नोत्तर ऐन ।
को है अमृत प्रमान सषि तेरे मुष के बैन ।८५

॥ तात चरणाना यथा ॥

कहा करे हम जगत मैं हम से कहो अनिद ।
इहै वात करीवो करो भजिवो करो गोविद ।८६
सुभाउ उक्ति तह जानिए कहिए जहां सुभाउ ।
स्यामा कुटिल कटाक्ष गति अधिक करति चित चाउ ।८७

——अपूर्ण

विषय——रस और अलकार विषय वर्णन ।

संख्या २६९ भक्ति विनोद, रचयिता——भोजदास, कागज——देशी, पत्र——३९, आकार——१३३/८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)——११, परिमाण (अनुष्टुप)——६१२, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——महन्त श्री गतनदास जी, ग्राम–उजहेनी, डाक०–राजा फतेहपुर, जिला–रायबरेली ।

आदि——सत्तिनामकता पुरूम ॥

॥ सोरठ ॥

सत्येनाम करतार वुझहु सत विवेक करि ।
जाते उतरहु पार भवसागर वरधार जल ॥ १ ॥
प्रेमदास कर भेव सुनत मगन सब हम गन ।
सुषसागर सत सेव सतगुर पारस परम पद ॥
तामे 'भोजइ दास' उभै भाति विनती कियो ।
सहेब सत्य विलास तुम्ह कारन तारन तरन ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

तारन तरन चरन सतगुर के । दास विलास वास सतपुर के ॥
वदौ मनिगन मानिक जोती । सतगुर पद नष मुक्ति के मोती ॥
कमली कमल पाषुरी भीनी । वदौ सहि सुगध नवीनी ॥
सतगुर पदरज अजि अमी से । दिग भूषन तजि दुष नदी से ॥

अत——   ॥ सोरठ ॥

उतरे भव जल पार जगत मोह सतोष करि ।
सुमिरन नाम अधार भोजदास सह भगित मिलि ॥१५०॥

इति श्री सत्ये सहस्रे कलि कलुष विध्वसरणे परम वैराग्ये भक्ति मुक्ति महोत्साहे भोजदास वोध के भगित विनोद पचमो ग्रथाये समाप्त सुभमस्तु सभ भुयात् ॥

विषय——ईश्वर भक्ति वर्णन ।

संख्या २७०. कृष्ण जन्म, रचयिता——भापत, कागज——देशी, पत्र——३, आकार——६१/२ × ५३/८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)——१०, परिमाण (अनुष्टुप)——४५, खडित, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। अथ भोपत कृत कृष्ण जन्म लिष्यते ।।

सुमरू अद निरजन देवा । जाको देव न पावै भेवा ।
जोत रूप भगवान विधाता । पुरान पुरुष प्रानन के दाता ।। १ ।।
अलष इस जगदीस गोसाइ । जल थल मु व्यापक सब ठाइ ।
सनकादिक सुख नारद गाता । जाको ध्यान धरही मन राता ।। २ ।।
जाको सीव विरची नित ध्यावे । ध्याननहु ते दरसही पावे ।।
भेष अनेक धरत जगमाही । जुगजुग म दीनकर की छाइ ।। ३ ।।
हहै सब मु और वर सवते न्यारा । सकल जग का सीरजन हारा ।। ४ ।।

दोहा

नीरगुन रूप अविनाम हय धरत सगुन ही रूप ।
जलचर वनचर मनुष सरीर लेत सत के हेत ।। १ ।।
:o: o .o:
..रूप अवी नाम हये 'भोपत' प्रभु करार ।
होइ कलजुग अत म सो नीस्कलक अवतार ।। २ ।।

।। चवपा ।।

बहुरी गुरू गनेस को ध्याऊ । जीन प्रसाद से हरिगुन गाउ ।
श्री भागवत कथा मन भाइ । वेदव्यास नारद मुनि गाइ ।। ६ ।।
जीनसु सुनी हत वसुदेवा । जीन चीत लायो हारी सुषसेवा ।।
जब परीछत कीनी सेवा । तब प्रसन्न भये वसुदेवा ।।१०।।
कथा पवित्र पुनीत मुहाइ । पदवी वडी परीछत पाई ।
दसम स्कद की कथा मनभाई । जामु हारि चरित्र सुषदाइ ।।११।।
सो सब वृज भाका मु कही । जो नर नारी सुने चीत दई ।।
जो चीत दये सुने सुनावे । पुरन परमभक्त पद पावे ।।१२।।

अत—

दुरन पुत्र जद काल रीमान्यो । पाडव हातन जनडरु आन्यो ।।
मोह ग्यान मो सस्त्र चलायो । रोषी जनहार आन बचायो ।।२०।।

।। दोहा ।।

सुन के सुष बोले तब राजा तु बडे भाग ।
भोपत प्रभु वा समे बोधे अती अनुराग ।। ५ ।।

अध्या ।। २१ ।।

सुनो कथा अब तुमे सुनाऊ । नीरमल गुन गोवीद को गाऊ ।।
द्वापर सकल परवेसा । उग्रसेन ये कहतो नरेसा ।।
श्री मथुरा राज के धनी । सत्य .. .. ।।

—अपूर्ण

विषय—श्री कृष्ण जन्म वर्णन ।

सख्या २७१. बारहमासी, रचयिता—भोला, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६।। × ६।। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६३६, प्राप्तिस्थान—श्री प० उमाशकर जी शुक्ल, ग्राम—मुडेरा शुक्ल, डाक०—सिरसी, जिला—बस्ती ।

आदि—श्री गणेशाय नम ।। बारहमासी लिष्यते ।।

।। दोहो ।।

सुमिरि सारदा सरस्वती गनपति को शिरुनाइ ।
साध सत गुरु चरन गहि 'भोला' हरिगुन गाइ ।। १

चौपई

मास अषाढ पथिक घर आये । मन अनद सब करहि बधाये ।
धवल धाम रचि सुदर छावहि । हर नागर हित सहित चलावही ।

छद

चलहि नागर भवन सबके नारि मंगल गावहीं ।
हम स्याम के बिन दरस आली कैसे मन समुझावही ।
तन रोग जोग न होत अपने तासु मत कहि कीजिये ।
कहु कौन औसर जाहु आली मोहि सो सिष दीजिये । २।

दोहा

कह्यौ सदेसो सकल विधि जथा जोग अनुहारि ।
ऊधो सुष यहि जन्म को लैगे कृष्ण मुरारि । ३
सावन स्याम न मोरि सुधि लीन्ही । रहि परदेश विपति मोहि दीन्ही ।
पछी वचन कहै करि कट कोरी । हमहि सुनाइ निसाभरि टेरी ।

अंत— दोहा

मधुवन आई घूमि मैं ह्वीदौ श्री घनश्याम ।
ऊधौ भोला श्याम बिन रटै निरंतर नाम । २४
वेद भेद की उक्ति ते बुद्धि समान करि गाइ ।
बिगरी करी बनावही चतुर सुनै चितु लाइ ।२५

इती श्री बारहमासी भोला कृत समाप्त ॥ सवत् १९३६ ॥

विषय—भक्ति विषयक बारहमासी का वर्णन ।

संख्या २७२. रस रत्नाकर, रचयिता—भौन कवि, कागज—देशी, पत्र—२२, आकार—११ ७/१० × ७ ६/१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३३, परिमाण (अनुष्टुप)—९९८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १९४१ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्णविहारी जी मिश्र, ब्रजराज पुस्तकालय, गंधौली, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नम: (लिखा नही छूटा हुआ है) सामान्य नायका को उदाहरण
लाज भरी भाग भरी सुदर सोहाग भरी राग भरी रति मै पिया की सुषदाइका ।
राजै रति रूप षरी सील भरी सौगुने है गुनगन आगरी करत हाय भायका ।
भौन कवि कहत विलोकति ही जासु अग प्रगटै अनग रस रासि उपजायका ।
बैन मन भायका मनोरथ सहायका सुचित चोप चायका वषानै ताहि नायका ॥ ४ ॥

दोहा

सोई नायिका त्रिविध है कवि पडित अनुमीय ।
स्वीया परकीया बहुरि गनिका कही त्रितीय ॥ ५ ॥

अंत— सांत रस को उदाहरण

सिसुता विनीत भई नाहक सिसुन साथ माया के प्रपच मै वृथा ही दिन ध्वै गए ।
युवा पाइ योग के जतन की जिकिरि तजि भोग के बिलास मे बिलाइ पन ह्वै गए ।
भौन कवि कहै वत (तत?) काल आयो तीजो पन तऊ न विचार्यौ मूढ दत सब च्वै गए ।
कीन्ह्यौ ना भजन हरि उजरो भयो न मन ऊजरो चहत तन सेत केस ह्वै गए ॥४३०॥

इति श्री महापात्र षुसाल चद तदात्मज श्री भौन कविकृत श्री महाराज कुमार श्री ठाकुर रामबक्स हेत कृते रस रत्नाकरोयं ग्रंथ समाप्ति मगमत सुभमस्तु श्री सम्वत् १९४१ भाद्रमासे सुक्ल पक्षे तिथौ प्रतिपदायां गुरौ लिखित मिद पुस्तक बलदेव मिश्रेण सच सुभ श्री कृष्णाय नम:

विषय—नायिका भेद और नवरस वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचना सरस और सुदर है, इसमे सदेह नही। इसके साथ निम्नलिखित रचनाएँ और है—

१ शृगार सौरभ—रामजी भट्ट।

२ रसवल्ली—गनेश कवि।

संख्या २७३क. दोहावली या अलख प्रकास, रचयिता—बाबा मगलदास, निवासस्थान—हरिदासपुर (रायबरेली), कागज—आधुनिक पीला, पत्र—३१, आकार—१०$\frac{1}{8}$ × ८$\frac{4}{10}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—६८२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री ननकू मुराई, ग्राम व डाक०—हरिदासपुर, जिला—रायबरेली।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ दूहावली अलख प्रकास लिख्यते ॥

प्रथम सुमिरि ओकार को सोह सब्द मनाइ।
मगल तासो लखि परे जो घट रह्यो समाई ॥ १ ॥
नहद नाद निहोरि कै जो निसुदिन घहराइ।
मगल राराकार सुनु रही गगन धुनि छाइ ॥ २ ॥
सब्द सुनै अलखहि लखै सुरति चढाइ अकास।
ताको मगल विप्र यह बरनत अलख प्रकास ॥ ३ ॥
उमा पुत्र को सुमिरिये जेहि पूजत सब देव।
मगल याते सिद्धि सब करु गनपति की सेव ॥ ४ ॥
गुरू चरनन की धूरि को अजन नयन लगाइ।
मगल तासु प्रताप ते हरि मूरति दरसाइ ॥ ५ ॥
सारद मात को सुमिरि कै जन मगल वर मागु।
बुद्धि बढै बानी खुलै हरि चरचा मे लागु ॥ ६ ॥
जक्त जननि अघ दलनि तुम करनि सुबुद्धि प्रकाम।
जन मगल की जीभि पर करहु सरस्वती वास ॥ ७ ॥

अत—सब मे व्यापक राम है जल थल घट घर माहि।
ज्यो पथरी मे आगि है कोइ नहि देषत ताहि।
कोइ नहि देषत ताहि जबै सज्जन ढिग आवै।
चकमक देइ लगाइ ताहि मे अग्नि देषावै ॥
कहि 'मगल' मन मूढ भजन काहे नहि ताको।
भक्तन के रछपाल वेद गुन गावहि जाको ॥ ३ ॥
राम राम राम श्रीराम दरी के चाहत भोग बिलास।
सगुन भजौ मन श्री रघुवस कुमार।
बिसरि गइ वा दिन की बताया जा दीन कयो है कारर ॥

विषय—भक्ति विषयक दोहो का सग्रह।

संख्या २७३ख कवित्त रामायण, रचयिता—मगलदास, निवासस्थान—हरिदासपुर (रायबरेली), कागज—आधुनिक पीला, पत्र—१८०, आकार—८$\frac{6}{10}$ × ५$\frac{3}{10}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप)—२०८३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९६३ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—श्री गोपाल चद्र सिंह जी, सिविल जज, रायबरेली)।

आदि—

•o :o .o:

भूति मृगराज छाल लपटे भुजङ्ग गले मुन्डन को माल है।
जोगी कर भेष कीन्हे डमरू त्रिशूल लीन्हे नन्दी जाके वाहन सोहत चद्र भाल है।
कहै जन मङ्गल अर्द्धंग सग पारबती आदि सक्ति जगमग जोति जाकी ज्वाल है ॥ २ ॥

राम के भजन बिन कैसे सुष पैहो नर राम के भजन बिन यह तन पशु की समान है ।
लागी है जजाल फाँस चहु वोर राह नही भ्रमत फिरत मृग ब्रह्मा भुलान है ।
अंतकाल जमदूत भारी दुख देत काल कठिन कराल लीन्हे हाथ मे कमान है ।
कहै जन मङ्गल अजहू चेत बावरे तु गुरु सरणबिन कहु न ठेकान है ॥ ३ ॥
राम नाम प्रहलाद लिषत पढत नित हिरण्यकशिप सुनि बहुत रिसान है ।
षम्भ बाँधे प्रहलाद चहूँ वोर षल दल कठिन कृपान काढे ठाढ बलवान है ।
जन के कारण प्रभु नरसिंह रूप धारे षम्भ फारे चटपट प्रलै की समान है ।
कहै जन मङ्गल उबारे प्रहलाद प्रभु असुर सघारे तारे जानत जहान है ॥ ४ ॥

अंत—

रायपुर बरेली के निकट हरदास पुर उत्तर तरफ डेढ कोस को प्रमान है ।
तेहि पुर पछ पास सुभग तड़ाग यक तेहि तट सुभ महाबीर को अस्थान है ।
तहाँ 'द्विज मगल' सुमिर महाबीर जी को सियाराम जी को गुण करत बखान है ।
जो कोइ पढैगे सुनैगे मन चित्त धरि तेहि पर कृपा नित करिहै हनुमान है ॥४१॥

इति श्री स्वामी पूर्णानन्द सिष्य मङ्गल बिप्र ...क्य श्री कवितावली रामायण घनक्षरी उत्तर काण्ड समाप्तम् सम्पूर्णम् सुभमस्तु श्री सम्बत् ॥१९६३ शाके॥ १८२८॥ चैत्र मासे कृष्ण पक्षे तिथौ सप्तम्या ॥ ७ ॥ वृद्ध बासरे लिखनार्थ पन्डित वोङ्कार दत्त त्रिपाठी हरिदासपुर निवासी ॥

विषय—कवित्त छदो मे श्री रामचरित्र वर्णन ।

संख्या २७४. भारतवर्षीय वृत्तान्त प्रकाश, रचयिता—प० मगन लाल, संशोधक—प० कालीचरण, कागज—प्राचीन, पत्र—१२९, आकार—८ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२३, प्रकाशित (लखनऊ नवलकिशोर छापाखाना मे), पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सन् १ ... , मुद्रणकाल—सन् १८८९ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० विक्रमाजीत सिंह, ग्राम—भादर डाक—भादर, जिला—सुलतानपुर ।

आदि— भारतवर्षीय वृत्तान्त प्रकाश

एशिया खड मे दक्षिण की ओर हिदुस्तान देश एक बहुत चौडा प्रायद्वीप है वह इस प्रकार से स्थित है कि उत्तर मे हिमालय पर्वत और दक्षिण मे हिदुस्तान का महासागर और पूर्व मे ब्रह्मपुत्र नद बह्मा का देश और बगाले की खाडी है पश्चिम सिन्ध नदी जिसे अटक कहते है वह बडे प्रवाह मे बहती है ।

० ० ०

प्राचीन इतिहास वेत्ताओ का इस विषय मे कि हिदुस्तान के सबसे पहले निवासी कौन है मतान्तर है पर यह जान पडता है कि इस देश के प्राचीन निवासी हिदु लोग है क्योकि इसी कारण से इस देश का नाम हिद वा हिदुस्तान रक्खा गया और आगे समय मे इस देश के राजा भी हिदू लोग ही थे जिनके ठीक ठीक वृत्तान्त किसी के पास नही मिलते है, इसका कारण यह है कि नूह के समय मे जो प्रलय हुआ था उसके पीछे माजरन्नहर के निवासी लोग पजाब के मार्ग होकर हिदुस्तान मे आए थे और गगा के समीपवर्ती देशो मे बसे थे ।

० ० ०

जब बारह वर्ष व्यतीत हो गये तब युधिष्ठिर अपने भाई श्रीकृष्ण बलराम समेत अपना राज्य लेने की इच्छा करके दुर्योधन के पास आये परतु दुर्योधन ने उसे राज्य न दिया तब युधिष्ठिर ने युद्ध का सामान किया दोनो ओर के दल इकट्ठे हुए और यह ठहरा कि जो जीते सो गद्दी पर बैठे,

अंत—

२ अगस्त सन १८५८ ई० को एक आज्ञा पत्र के जारी होते ही हिदुस्तान का राज्य कम्पनी बहादुर के हाथ से जाता रहा और लदन देश की महारानी जो वास्तव मे हिदुस्तान देश पर आज्ञा का बल रखती है आपही हिदुस्तान का हाकिम और आज्ञा दायक हो गई और

उन्होंने एक आज्ञा इस प्रकार की प्रचलित की कि सब विरोधी चाहे सिपाही हो चाहे प्रजा हों अमुक अवधि तक अपने अपने घरो मे आ जावे उनका अपराध क्षमा किया जावेगा। इस प्रकार से वे लोग जंगलो पहाडो और वनो मे प्राण बचाते फिरते थे अपने २ घरो मे चले आये और खेती और जमीदारी के काम मे लगा गए अब इस देश की प्रजा अत्यत वृद्धि और बहुत प्रसन्न और सुख से रहती है प्रति दिन बस्ती बढती जाती है प्रत्येक पेशेवाले अपने अपने पेशे मे वृद्धि करने लगे उपद्रव सब प्रकार से शान्त हो गया और सब मनुष्य श्रीमती महारानी के विषय मे कि जिस का तेज सर्वदा वर्द्धमान रहै असीम देने और चैन से रहते हे ॥

भारतवर्षीय वृत्तान्त प्रकाश नाम ग्रन्थ समाप्त ॥

विषय—भारतवर्ष का इतिहास प्राचीनकाल से लेकर विक्टोरिया तक का वर्णन किया है।

सख्या २७५ पद, रचयिता—मगनानद, कागज—आधुनिक पीला, पत्र—४, आकार—६ × ५३ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—   राम

अपार ध्वनि ओकार सुन। नहि सभै ऐसा वनि।
सरस श्रवण अपार दरशै। मिलै अमृत ध्वनि॥ २॥
ध्वनि सुनि पिय खबर की। तब सुरति चेतन बनी॥ ३॥
भई विरहिनि सुरति निसि दिन। रटै स सत गुरू मनी॥ ४॥
सत्य पर से मद भई सत् सत्य सतहि सनी॥ ५॥
सत्य मे दमकी प्रभा आनद अम्बुधि जनि॥ ६॥
होइ मगन आनन्द मे यह कह्यौ सतगुरू धनी॥ ७॥
जबल राम चरण चित दीन्हा।
छूट यो आति जनित ससृति सब बन प्रमोद घर कीना॥
नित्यानद विहार एक रस वृद्धि होइ नहि छीन्हा॥ ३॥
सपत शिव सनकादिक नारद ब्रह्मादिक परबीना॥ ४॥
प्रगट एक रघुवीर राम मोइ ज्यो पट सूत्र नवीना॥ ५॥
स्व सवेद्य गुरुकृत नैन मेरे ऐसा देस हमारा है॥ १॥
बिना मत्र है यत्री बाजे बिना भान उजियारा है॥ २॥
बिन रसना यह शब्द उचारै गुरभी बीन सितारा है॥ ३॥
वहा जाय मन मगन भयो है नाम रूप की पटारा है॥ ४॥
सोइ तहा एक छितिया बिनु रकार विसतारा है॥ ५॥
काल कर्म गुण सर्स नहो मृत्यू यम ते न्यारा है॥ ६॥
'मगनानद' भेद सो पावै जो गुरु मग पग धारा है॥ ७॥

अत—भेद विन आदर नहि कोई॥ १॥
जो जानै पद सत् चिद आनद दूम हुआ न होई॥ २॥
आपहि आपु मे सब भास चिद विलास है सोई॥ ३॥
सर्व यह चेतन जोई आपुहि अन्य ब्रह्म नहि जानै आपुहि जानै सोई॥ ४॥
'मगनानद' कछु यतन नही है आप मिटै सुख होई॥ ५॥
द्वैत नही भासै कोई॥ ५॥

अस्ति भाति पिय पूरन सोई॥ १॥
अस्ति भाति पिय नाम रूप ये पच अस श्रुति गुरून ही गोई॥ २॥
तीन अश सत चिद आनद पल युगल अश भ्रम कल्पित होई॥ ३॥
ज्यो मारु थल भ्रम जल भासै ताते भूमि न गीली जोई॥ ४॥
नाम रूप किय त्यो व्यभिचारी ताते चेतन हानि न कोई॥ ५॥
मगनानद अलख अविनाशी आपै आप द्वितीय सब खोई॥ ६॥

विषय—ब्रह्म ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या २७६क रस राज, रचयिता—मतिराम, कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—९ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप)—६५२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७६० वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य पुस्तकालय, मौरावाँ, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशाये नम लिष्यते रसराज ॥

॥ दोहा ॥

होत नायका नायकहि अलंबित सिंगार ।
ताते बरनो निज मति के अनुसार ॥ १ ॥
उपजतु जाहि विलोकि के चित्त बीच रति भाव ।
ताहि बषानत नायका जे प्रवीन कविराव ॥

॥ उदाहरन ॥

कुंदन को रंग फीको लगै झलक ऐसी अंगनि चारु गाराई ।
आषिनि मैं अलसानि चितौनि मैं मंजु विलासन की सरसाई ।
को विन मोल विकात नही मतिराम लहे मुसुकानि मिठाई ।
ज्यौं ज्यौं निहारिए नेरे ह्वै नैननि त्यों त्यों खरी निकर सी निकाई ॥ २ ॥

अंत— व्याधि उदाहरन

बरषा सो जगो निसि वासर विजोवनीन वाढे प्रवाह नदी नाव न उतारिवो ।
सह्यौ जातु कौन पै सुकवि मतिराम अति विरह अनल जालनि सो जारिवो ।
जैयन समीप को उदैयतु समानि को हमको तो ही ता उ ता हेरत हरि हारिवो ।
कियौ कहा चाहतु है सो कह्यो न कुअर कान्ह नह्यो अब याके उपचारनि को करिवो ॥

दोहा

देषि परै नहि दूबरी सुनिए स्याम सुजान ।
जानै परै परजंक पर अंग आंच अनुमान ॥४१३॥

इति श्री रसराज ग्रंथ मतिराम विरचितया संपूर्न सुभ मस्तु ॥ जादिस पुस्तक द्रस्या तादिस लिषतं मया ॥

जदि सुधमसुधा ॥ मम दोषो न दियते ॥ संवत १७६० ॥ **फाल्गुन सुदी १३ बुधवार ॥ मु ॥ लिषा कवनरैन मुनशी का संवत नाम दुंदभी के अंत ॥**

विषय—नायिका भेद वर्णन ।

संख्या २७६ख रसराज, रचयिता—मतिराज, कागज—देशी, पत्र—८७, आकार—८॥। X ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—६०५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० शिवबालक राम जी, ग्राम—कपुरीपुर, डाक०—करहिया, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ रसराज काव्यग दोहा ॥

होतु नायका नायकहि आलंबित शृंगार ।
ताते बरनो नायका नायक मति अनुसार । १

नायका लक्षण ॥ दोहा ॥

उपजत जाहि विलोकि कै चित्त बीच रस भाउ ।
ताहि बषानत नायका जे प्रवीण कवि राउ । २

उदाहरन

कुंदन को रंग फीको लगै झलक ऐसी अंगनि चारु गोराई ।
आषिन्ह की अलसानि चितौनि मे मंजु विलासनि की सरसाई ।
को विनु मोल विकाय नही मतिराम लहे मुसक्यानि मिठाई ।
ज्यौं ज्यौं निहारिए नेरहू नैननि त्यों त्यो षरी निषरै सी निकाई । ३

उदाहरन दोहा

रध्रजाल मग ह्वै कढै तिय तन दीपति पुज ।
झिझियाके सो घट भयौ दिन ही मे वनकुज ॥
तरुन अरुन एडीन की किरिन समूह उदोत ।
वेनी मडल मुकुत के पुज गुज रुचि होत । ५

अथ नायक भेद

अत— अथ जडता लक्षनम् ॥
उत्कठा ते होत है अचल चित्त अरु अग ।
तासो जडता कहत है कवि कोविद रसरग ।४१५

उदाहरन

जाने ना सुवास रहे रग राग ते उदास भूलि गई सुरति सकल खान पान की ।
कवि 'मतिराम' एक अनमिख नयन ह्वै के देखि नहि जान और समुझन न आन की ।
थोरी सी हसन सो ठगोरी ऐसी डारि कै मारो कोऊ गोप न किसोरी वृषभान की ।
तवते विहारी वह भई है पषान कैसी अजने निवारी कैसी भार के पखान की ।४१६

दोहा

अनमिख लोचन वाल वह प्यारे नद कुमार ।
मीच गई अरि वीच ही विरह अनल की झार ।४१७
समुझि समुझि सब रीझिहै सज्जन सुकवि समाज ।
रसिकन के रस को कियो नयो सकल 'रसराज' ।४१८

इति श्री सुकवि मतिराम विरचिताया रसराज काव्य सपूर्ण शुभ भूयात् सवत्सरे १८५१ ॥

विषय—नायिका भेद वर्णन ।

सख्या २७७क नामग्रथ, रचयिता—मदन साहब, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६॥ × ३॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—८५ पुग, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६१५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री जगन्नाथदास जी मठाधीश, मठ—धनकसार, डाक०—वादीपुर, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—श्री सतगुराय नम वचन श्री मुख साहेब मदन नाम प्रकास
नाम निरतर जीउ सरद भूत परकास
छीर मध्ये जस घीउ ज्ञान सबन गुर भाषि निज
विन गुर कोइ न पाव कोटि जन्म जो धरि मर
काहु रक कह राव जिन गुर काहु न निस्तर ।
राम ते वडा न केउ तेनहू किय वसिष्ट गुर ।
राम मिलन को भेउ विन गुर ते दुजा नहीं
गुर है रछिक जीउ काटि फद पर्थाय कर
आनि मिलावै पीउ परमारथ वाते कवन
सिव विरचि वडा तवनि महिमा गुर नहि कहि सके
'मदन' वेचारा कवन चाहे गुर महिमा कहै
राधापति गुर धनि है धनि हमारो भाग
जेहि टुक नजर निहारित भजा नाम अनुराग
होत नाम अनुराग के चित चरन डीठ मोन
गुर पुरा पद पाइके ग्यान को दीछा लीन
ग्यान को दीछा लेत ही भजा ग्यान परकास
आदि अत उतपति प्रले वूझत भै अब नास
चारि भेद परकासिया तीनि ज्ञान को भेद

चौथा भेद विज्ञान को ताको किया निषेद
चारो भेद प्रकास ते मिटा जो मन का मूल
डार पात फल लखि परा 'मदन' गहा जब मूल
चार भेद सोइ परचै दीन्हा । गुर कवीर जो निरनय कीन्हा ।
ताको अब जो कहौ मै भेदा । कोइ सत जन करै निषेदा ।

अंत—चारि भेद की साषी गुर कवीर जो दीन ।
'मदना' बूझै मूढ जन बूझे सत प्रवीन ।
'मदन' परम गति जो मिलै है अजन गुर पद रयेन ।
जहवा के तहवा मिल न कछु लेन न देन ।
मदन जासु पद मे मिलै छूटे जम के त्रास ।
नाम अनुरागी कारने कहा नाम परकास ।

इति ग्रथ नाम प्रकास समाप्त सवत् १९१५

विषय—नाम महिमा तथा भक्ति एव ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या २७७ख नामप्रकाश, रचयिता—मदन, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—१० × ७॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—८ अप्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप)—१०५, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—चद्रभूषणदास जी उदासी, कुटी, ग्राम—जगनीपुर, डाक०—जमातली, जिला—प्रतापगढ ।

आदि—

. समरथ लो वहे ताको करो विचार ।

चौपाई

त्रिगुन षेल गुर दिया गवाही । समुझि लेहु तुम चित वढाही ।

साषी

समुझो चित्त चढाय के धरो नाम कड़हार ।
आड अटक फिर न रहे उतर जाव पार ॥

तीजा भेद

तीजा भेद मै कहो वाखिरा । जाहि भेद से मिले कवीरा ॥
गुर कवीर का सब घट वासा । गुप्त प्रगट कछु अजव तमासा ॥
जहाँ सत तहाँ प्रगट भेऊ । जहाँ असत गुप्त तहा रहेऊ ॥
गुप्त प्रगट कैसे क बूझ । विनु गुर ग्यान आँषि नहो सूझै ।
सवकी कहै कवीर कहावै । जेहि लषि परै सो मो मन भावै ॥
साषी आदि कहा अब कहत है अत कहेगा सोय ।
सो वक्ता जेहि लषि पर त .

—अपूर्ण (खडित)

अंत— साषी

कहै कवीर यक प्रेम विना सब दुनिया है अन्ध ।
अक्षर बूझै प्रेम तें तब छूटे जम फन्द ।
जाग्रित स्वप्न सुषोपति तुरिवो गई हेराय ।
यह मिलना विज्ञान को घट घट कहीं न जाय ।
चारि भेद की साषी गुर कवीर को दीन ।
मदन न बूझे मूढ जन बूझे सन्त प्रवीन ।
मदन प्रम गति जो मिले है अजन गुर पद रेनू ।
जहवाँ के तहँवा मिले न कछू लेन न देनू ।

मदन जासु पद मे मिलै छूटि गये जम त्रास ।
नाम अनुरागी कारने किया नाम प्रकास ।

इति ।

विषय—सत मतानुसार भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन । साषी के चार भेदो का सांगोपांग वर्णन ।

संख्या २७७ग साषी शब्द (?), रचयिता—मदन, कागज—देशी, पत्र—१०८, आकार—१० × ७।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, अप्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप)—६४८, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री चंद्रभूषण दास जी, कुटी, ग्राम—जामीपुर, डाक०—जामताली, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—

. . . . . . घोना ।
चारि वेद जाको बिम्बु पायौ नाहिं भेद रम्भु ।
अक्षर विवि जुगति साधि जुग जुग अरुझानों ।
लषि न परेउ आदि अन्त जहा अचल राजवन्त ।
मानो सरिता समुन्द्र बुन्द मे छिपानों ।
काल षड़ा कालि आजु जग मरन ले समाज
बिभर्मन मे परेउ गाज कोई न बचानों ।
जैसे चक्की दरेर कोई न बचा हेर फेर
बचैगा सोई जो मत कीलही लँपटाना ।
धंनि धनि सतगुर के सरँन परन तरन जरा मरन
तरँन तारँन सोक हरन दुख हरत नानों ।
दया रूप मिले राम सब विधि भये सुफल कांम
पाय अमर धाम 'मदन' नाम मोह समाना ।१।
पारायन पद पुरुग पुरातम प्रभातम गुर निकट षडो ।
जो छल छोडि गहेउ सरनागत ताको सर्वविधि काम सरो ।
पारग छुइ पारस भइ छिन मो जो जन सरनन आनि गिरो ।
ज्वे भृंगी गति और कीट मत आपुस मों करि तोइ उडो ।
हस उवारन वन्म के कारन ग्यान पगट जग चारि करो ।
सो नर मूढ कहा नहिं मान भौ जलते कहि विधि उबरो ।
मुष हृदया केहि अन्त्रावाद से आदि हियो सग भूलि गयौ ।
सो दयाल अब मिलेउ 'मदन' मोहिं रहेउ चारि जुग को बिछुऐ ।। २ ।।

अंत—

. . . . ।
रैन देवस रवि ससि गँमि नाहीं जहाँ गुर प्रताप ततु वित मे समाईला ।
काहू को सोक नहि मरिला सोक बसि काहू की हरष नाही हरष बढाईला ।
हरष सोक दोउ सायर लहरि मँन शब्द सुर्गन हिलिमिलि के थिराईला ।
कहो जो अगम गति कहत नहि बनत जम रे गूंगे कै गति सैने बुझाइला ।
'मदन' समुझि मत मत गति राधापति तजि के दुर्गति साँचे राम को रिझाइला ।।११६।।
मन न रहत बसि करिये कर्म कम धावत विषे रस बहु समुझाईला ।
कपटी कुटिल सठ निरदई वधिक जस मन को मता सोइ प्रगट देखाईला ।

—अपूर्ण

विषय—सत मतानुसार भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या २७८. अर्जुन विलास, रचयिता—मदनगोपाल कवि (स्थान—फतूहाबाद) कागज—देशी, पत्र—३५६, आकार—१० × ६॥ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, ५६०७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८७६ वि०, लिपिकाल—सन् १२७० फ०, प्राप्तिस्थान—राज पुस्तकालय, किला—प्रतापगढ़, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ अर्ज्जुन विलास ग्रंथ प्रकाम हेतु वर्नन ॥ वरवै छद ॥
वरनौ चरन सरोरुह गौरीनद ॥ ग्यान गिरा गतिदानी आनंद कद ॥ १

अथ उत्पत्ति यथा ॥

रस रिषि वसु इवु सवत मे ग्रथ मजु मदन गोपाल वुध कीन्हे जो प्रकास है।
भूप विरदावली सवृद्धवेस वसावलि मत्री मित्र सभा सैन धाम ग्राम वास है।
व्याकरन नीति न्याय जोतिसादि धर्म सास्त्र जत्र मत्र काव्य कोस वैदक विकास है।
गुन अभिराम जामै लालित ललाम छवि धरि अर्जुन महीप नाम अर्जुन विलास है।

:o: :o: .o.

दोहा

कोविद मदन गोपाल जब विरचि ग्रथ अभिराम।
अर्जुनसिह महीप सो कहि प्रकास हित काम। ७
:o. :o: :o:
ग्रथ कियो आरंभ जब कोविद मदन गोपाल।
भूप दिग्विजै सिह को जन्म भयो त्यहिसाल।१४
:o: :o: :o:

अथ अर्जुन विलास पडित मदन गोपाल कृत लिष्यते ॥

॥ कवित्त गणेशजी को सर्वकल्यान दडक ॥

मंगलमै तुड पुड सिदुर को विदुल सं सिधुर वदन सुभ सोहै चद्रषड है।
अग अरुनारे भारे भुजन सुधारे सस्त्र फरसादि फल भषन अषड है।
कबु गीव ऊँचो उर उदर उदार ऊलो मुक्तामनि माजन को जोति जालमड है।
जैसे तम चड को विहड कार मारतड तैसोई विघन भुड षडी वक्रतुड है। १

:o. o· .o·

मंद मदन कवि सुजस चहि ग्रथ रचत नृपहेत।
प्रथमहि षल उपहाससहि जिमि लघुकरि गुर चेत।
जद्यपि सुकवि प्रनीत सुभ ग्रथ भूमि मे भूरि।
नीति विषै तद्यपि करौ निज मति छमियो सूरि। ५
.o: :o .o
कान्यकुब्ज श्री नाभिभो शक्ल नाभि भव तुल्य।
विद्यापति धनपति विदित भे तिनके नर कुल्य॥
नाभि वस पुनि वसकर गगाराम प्रसिद्ध।
वसे 'फतूहावाद' मै विद्या धन जन रिद्ध।११
तिनके गृह सुर महस सुचि भये सकल सुज्ञान।
छहलौ सतए भे 'मदन' एक परम अज्ञान।१२
:o: :o· :o.
विदित जगत जनवार को वस वसत गुजरात।
तिनमै राजकुमार कौ सुनी अकोना वात।१४
'माधोसिह' महीप तव भए तेज जसधाम।
राज कियो कुछ वर्ष पुनि भाइहि लषि गुन धाम।१७
वुधिवल सहस गणेश के नाम 'गनेससराइ'।
जोगराज के काज को सेवक निज अरुभाई।१८

अयौ यकौना राजत्यहि राजनीत समुझाइ।
आइ आपु अनिरासपुर लीन्हो राज बसाइ।१६

:०· ·०· :०:

'माधोसिंह' महीप के सुत 'कल्यानजुत' साहि।
राज कियो जब सुर गभहि पितु ग दै पद ताहि।२३
हृदयज भूप कल्यान के प्रानचंद महिपाल।
अरिनकाल अथिन कलप वृक्ष प्रजन पितु आल।२४
तिनके जुगल कुमार भे जेठ नृपति हरिवंस।
छोटे सिंहे वसत मन मनु पुत्रन के अंस।२५
गेह पुर हरिवम जब 'छत्रसिंह' भे भूप।
कलि में द्वापर के सहस धर्मचलाय अनूप।
फतेसिंह के तीनि सुत जेठे सिंह अनूप।
पुनि पहार अरु रूपसिंह तीनि उवीर सरूप।
पंच भूत ते पाँच सुत जाए सिंह अनूप।
जिनकी करनी को करी कविन कंठ मनिरूप।
ककुलति सिंह दलेल जू रामसिंह जसवंत।
सिंहसरो साँवलहरी पाँचौ सुभ गुनवंत।
नवलसिंह महाराज भे ककुलित सिंह तनूज।
पृथीपाल पीछे पहुमि माधवराउ अम दूज।
तिनके सुत जाए जुगल बडे बहादुरसिंह।
पुनि अर्जुन अर्जुन दुवो को सरि अरि गर्जसिंह।

अंत—इमि लहि धन मान को अर्जुन सिंह समीप।
आसिष मदन गोपाल तव दिए सुखद अवनीप।२३

·० ० ०·

दोहा

है प्रसन्न यह आसिषै दियो ग्रंथ जसधाम।
ह्वैहै पुत्र अनूप तव तेजवंत गुन ग्राम।२६

इति श्री मन्महाराज राजा अर्जुनसिंह विरचिते सर्व सारो द्धारे अर्जुन विलासे सप्तम समाया मदन गोपाल सन्मान आसिषग्रंथ महाराजको प्रदान वर्णनाम सतावनो प्रस्ताव ..... सन् १२७० साल।

विषय—व्याकरण, नीति, न्याय, ज्योतिष, काव्य, वैद्यक आदि विषयों का वर्णन।

रचनाकाल

रस रिषि वसु इंदु संवत मै ग्रंथ रुजु मदन गोपाल बुध कीन्हे जो प्रकास है।

संख्या २७६ बानी, रचयिता—मनमोहन दास, कागज—देशी, पत्र—६५, आकार—५॥ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—६६५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१९०७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० धरणीधर जी दुबे, ग्राम—दुबौली, डाक०—कलवारी, जिला-बस्ती।

आदि—श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ श्री गुरुभ्योन्म

श्री गुरु चरन सरन हौ आयौ॥
लोक वेद कुल कान मुजारा सकल प्रपंच बहायौ॥
मगन भयो अवनी पर डोलत समय सोक नसायौ॥
आस त्रास सब मिटो जगत की भक्त भाव उर जायौ॥
रूप माधुरी दृगन परी प्रभु प्रेम नेम सरसायौ।
सरस रंग रस मातौ छाकौ लोग कहत बौरायौ।

करत कूहि किन करहु मगन मन काल व्याल कौ षायौ ।
'मोहनदास' निसक भयो जव घुमड निसान वजायौ । १
नमो नमो श्री गुरु चरना ।
जवते सरने लियौ नरहरि कौ त्रविधि ताप सब मिली हरना ।
जिनकी पदरज सिर परसत ही द्रग्र ग्रजन कीने करुना ।
'मोहन' मन ग्रानद भयो ग्रव श्री रघुवर के गुन गनना । २
भगवत रसक सरन हौं ग्रायौ ।
ग्रभय भयौ जव ही या दिन तें पद सरोज सिरनायौ ।
वदन चद तें षसौ सुधा कन सो उठाय कर षायौ ।
मगन भयो ग्रवनी पर डोलत श्री रघुवर जस गायौ ।
इहि विध प्रभु पुनीत जस गावत श्रवन सुनत सुष पायौ ।
मोहन दास करन सेवत नित सुष सतोष वढायौ । ३

ग्रत—करें मन श्री विद्रावन जव हेत ।
सर्व भात जव ही वन ग्रावें सुष सागर कौ सेत ।
हिय हुलसत विलसत पिय प्यारी हरष वढावत चेत ।
यह रस रीन निरतर सेवत 'मोहनि' कहि कहि देत ।

दोहा

बाचक सव साधक भऐ सगी भए सव कोय ।
श्री 'मोहन' भगवत भक्ति कौ सदा रहत गुण जोय ।

इति श्री मनमोहन दास जी कृत वानी सपूर्ण । सवत् १६०७ ॥

विषय—भक्ति विषय वर्णन ।

सख्या २८० धर्मसार, रचयिता—मनरगलाल, कागज—देशी, पत्र—२६२, ग्राकार—११$\frac{1}{10}$ × ६$\frac{5}{10}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (ग्रनुष्टुप)—३६३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८११ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर, ग्रहियागज, टाट पट्टी मोहल्ला, लखनऊ ।

ग्रादि—ॐ नम सिद्धेभ्य ॥ ग्रथ धर्मसार ग्रथ लिख्यते ॥
॥ स्तुति छद मालनी ॥ सवैया ॥ २३ ॥
श्री जिन देव सिद्धारथ नदन के जुग पाद सरोज निहारे ।
पोत भवोदधि के सुथरे जगजीव ग्रनेकन पार उतारे ।
ग्रतम तीरथ के करता मद मान महान विदारण वारे ।
सो प्रभु सनमति सनमति दायक दूरि करौ दुख दोष हमारे ॥ १ ॥

:o. o .o.

वहुरि ग्रपने शरीर मैं वात पित्त कफ जनित कोई रोग उदै भया ॥ तथा ग्रौरहू फोड़ा फुणगिनी ग्रादि रोग भया ॥ ताके दूरि करणे की चिता ॥ तथा पर केर के रोग देखि ऐसा विचारना ॥ जो ऐसा रोग मेरेहू कदाप्प होय जाय तौ बडा दुष होवैगा ॥ इत्यादि एकागृ ध्यान करना ॥ सो पीडा चितवन ग्रार्ति ध्यान है ॥ ३ ॥ वहुरि भोगन की वाछा करि ग्रातुर जो पुरुष ताके भोजन की इक्षा वास्ते वारवार सकल्प विकल्प परिनाम राखें ॥ सो निदानवध ग्रारति ध्यान है ॥ ४ ॥

ग्रंत—

कनवज नगर वसत सुभ थान । जयन धर्म धारक भविजान ॥
वसत सुसज्जन जन तिह ठौर । जिन मारग सरधानी जोर । ३ ॥
पल्लीवार कनौजी लाल । तासु पुत्र सोमन रग लाल ॥
मै मतिहीन गृथ यह कीन । जिन ग्रनुसार वचन परवीन ॥ ४ ॥

पंडित जन सूं अरज करेव । भूल चूक अक्षर जो रहेव ।।
ताहि सुधरि लेहु बुधिवत । मोधिक ना अति हीन लहत ।। ५ ।।
सवत उगनिस सतक वखांन । ता ऊपर ग्यारह धरि मान ।
फाल्गुण सुक्ल पक्ष सुभ जान । तेरसि दिन पूरण यह मान ।। ६ ।।

इति श्री धर्म्मसार गृथ भाषामय सपूर्ण ।। श्री

विषय—जैन धर्म का सार वर्णन किया गया है ।

रचनाकाल

१६ ११
सवत उगनिस सतक वखाँन । ता ऊपर ग्यारह धरि मान ।।
फाल्गुण सुक्ल पक्ष सुभजान । तेरसि दिन पूरण यह मान ।।

सख्या २१८क पद्मनाभि चरित्र, रचयिता—मन (? चित्त), शुद्ध सागर, कागज—देशी, पत्र—४२, आकार—१०$\frac{3}{8}$ × ४$\frac{3}{8}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—६१६, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६१३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर (बडा मदिर), चूडीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—श्री जिनाय नम ।। अथ श्री श्रेनिक भवानुवध पद्मनाभि चरित्र लिष्यते ।
।। सवैया ।। तेईसा ।। २३ ।।

श्री जिनराज महा सुष दायक कर्म महा रिपु जीति लियो है ।
सिद्ध समूह वसै सिव लोक जु होइ गुनज्ञ स्वु शुद्ध हियो है ।
पच अचार आचारज पालत पाठक जन पियूष पियो है ।
साध मुनी पद पच अनूपम मगल हेत प्रनाम कियो है ।। १ ।।

।। दोहरा ।।

वरतमान दस क्षेत्र मे भूत भविष्यत नाम ।
पूर्वापर सुविदेह जिन सबको करो प्रनाम ।। २ ।।
अष्ट कर्म रिपु जीत के अष्ट महागुन पाय ।
तीन काल गत सिद्ध सब होहु हमे सुषदाय ।। ३ ।।
पचाचार क्रिया धरन आचारज महाराज ।
रस गुन गुन युत नमत हम होइ आतमा काज ।। ४ ।।
द्वादशाग पाठी सवै सरभज गुन अवधार ।
उपाध्याय वदत लहो जिन वानी को पार ।। ५ ।।

अत—

पदमनद हरिचद सिष्य नै धता वध रची गँभीर ।
चित्त शुद्ध सागर नर भाषा करके वाँधी सिव सुष सीर ।।
सो जन मन वच काय लायकै पढै सुनै पावै भव तीर ।।७७।।
:o o .o:
इंद्रप्रस्थ गुर थान कहे हम है गुलाल कीरत अभिधाम ।
दिसा सघ दिग्वम्त्र धार गण पुष्कर माथुर गछ वषान ।
सिष्य भए सतोष जलधि गुर तिनके चरकज को ध्यान ।
चित्त शुद्ध सागर जिन वानी स्व परप्रकास न उपजै ज्ञान ।।७६।।
:o: o: ·o·
यावत वात वलै जगधारत यावत सिद्धि जो छाजत ।
तावत ग्रथ रहो जग मे थिर जाके सुने सब पातक भाजत ।।८१।।

इति श्री श्रेनिक भवानुवद्ध भविष्यते महापद्मनाभि चरित्रे भट्टारक श्री गुलाल कीर्त्ति जी शिष्य ब्रह्म सतोष सागरस्य शिष्य मन शुद्ध सागरे विरचिते पच कल्यान प्राप्त षष्टम प्रछेद ।।६।।

इति श्री श्रेनिक चारित्र समाप्तम् ।। मिती पौष मासे शुक्ल पक्षे द्वितीयां चंद्रवासरे लखनऊ मध्य पसारी टोले मे श्री पार्श्वनाथ के मंदिर मे लिखायत लाला मिठू लाल श्रावक तत् पुत्र बनारसीदास की वहू पठनार्थ ।। श्री पार्श्वनाथ के पंचायती मंदिर के सकल जैनी सुध्यथर्थ वा सकल भवि उपकारतार्थ सुभंभूयात् ।। समत १६१३ ।। श्रीः प० पच्चीस से जैन तीर्थकर महा पद्म नाभि चरित्र वर्णन ।

संख्या २८१ख सिखर माहात्म्य (जैन रचना), रचयिता---मनशुद्ध सागर, कागज---देशी, पत्र---६१, आकार---११३/८ × ७३/८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)---१५, परिमाण (अनुष्टुप)---३४१२, पूर्ण रूप---प्राचीन पद्य लिपि---नागरी, रचनाकाल---सं० १८४५ वि० (?) अस्पष्ट है, लिपिकाल---सं० १८८८ वि०, प्राप्तिस्थान---श्री दिगंबर जैन मंदिर (बड़ा मंदिर), चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ।

आदि---ॐ नम ।। सिद्धेभ्य । अथ सिखर माहातम ।।

।। छप्प ।।

श्री समेदवत चरण कमल जुग सब सुष लाइक ।
श्री शिवलोक विलोक ग्यान मग होत सुनाय ।
अनमित सुष उद्योत कर्म्म वरी घन घाइक ।
ज्ञान भान परगास पद सब तुष दाइक ।
ऐसे महत अरिहत जिन सेवहु निस दिन भाव सो ।
पावो प्रमान अविचल सदन वीतराग गुन चाव सो ।। १ ।।

।। दोहा ।।

अर्हत प्रभु को सुमिरि के सिद्ध चरन चित लाइ ।
अष्ट करम मल त्यागि के अष्ट महागुन पाइ ।। २ ।।

अंत---

काष्ट संघजन आम्नाय । माथुर गछ मध्य सुखदाइ ।।
पुष्कर गण गुरु भूल वखान । लोहा चारिज कृपा निधान ।।६०।।

o. o .o

इंद्रप्रस्थ पट्ट पदवी धार । नाम गुलाल कीर्ति सुषकार ।
तिनके शिष्य ब्रह्म व्रतवान । ह सनाप जलधि अभिधान ।।

:o. .o. .o.

तिनको शिष्य अलपधी धार । मन सुधाब्धि सज्ञा विस्तार ।। ६ ।।
तिन इह सिखर महातम ग्रंथ । भाषा किया जानि शिव पथ ।।

o o o

वान वेद .. शशि गए विक्रमार्क तुम जानि ।
अस्वनि सित दशमी सुगुरु ग्रंथ समापत ठान ।।६८।।
भूरवि शशि सुर मेर शम प्रापु ग्रंथ की होइ ।
पढ़ै पढावै सुनै जे शिवपद पावै सोइ ।।६६।।

इति श्री काष्टासंघे लोहाचार्य विरचिते तीर्थ महात्म्येषु समेदाचल महात्म्य भाषायां मन सुद्ध सागरे वर्णन महावीर चरित्र संपूर्णम् संवत् १८८१ पौष शुदी ।।१०।।

विषय---जैन धर्म संबंधी । इसमें शिखर माहात्म्य का वर्णन है ।

रचनाकाल

वान वेद .....शशि गए विक्रमार्क तुम जानि ।
अस्वनि सित दशमी सुगुरु ग्रंथ समापत ठान ।।

संख्या २८१ग. शिखर माहात्म्य, रचयिता—मनशुद्ध सागर, कागज—देशी, पत्र—१८६, आकार—८३/४ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—३५४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६०२ के पूर्व, प्राप्ति-स्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर, (बड़ा मंदिर), चूड़ीवाली गली, चौक लखनऊ।

आदि—श्री वीतरागाय नमः ।। अथ शिषिरि महातम ग्रंथ भा लिष्यते ।।

।। छप्पै छंद ।।

श्री ससेवित चरण कमल जुग सब सुषलायक ।
श्री सिद्ध लोक त्रिलोक ज्ञानमय होत सुनाइक ।
अनमित सुष उद्योत कर्म्म वैरी घन घाइक ।
ज्ञान ध्यान परगास पद सब सुखदाइक ।
ऐसे महत अरिहत जिन सेवहु निसि दिन भाव सो ।
पावौ प्रमान अविचल मदन वीतराग गुन चाव सो ।। १ ।।

।। दोहरा ।।

अर्हत प्रभु को सुमिरि कैं सिद्ध चरण चुतुलाइ ।
अष्ट कर्म मल लागि कैं अष्ट महा गुण पाइ ।।
:०. '०. .०:
लोहाचारज मुनि कहो प्राकृत सस्कृत रूप ।
काल दोष बुधि हीन अति भाषा रची अनूप ।।१०।।

अंत—लोहाचारज कृत निरषि मन मर्कट वस हेत ।
नर भाषा मैंने रची जान्यो पुन्य निकेत ।।६४।।
मनधर ग्रंथ सुनै भविक मन सुषसागर जोइ ।
क्षेत्र वध अनुबध कर इह फल निहचै होइ ।।६५।।

इति श्री काष्टासंघे लोहाचार्य विरचिते तीर्थ माहात्म्येषु समेदाचल माहात्म्य भाषायो मन शुद्ध शागरेण वर्णन सिद्ध कूट सुकातोपरि महावीर जिन सुमोक्ष गयन नाम पचविंसतिमोध्यायः ।।२५।। पुस्तक लिषी नवावगंज मध्ये सुवस्थान षेमकरन श्रावग पल्लीवाल गुजर गोठी इष्वाकवंसी कास्यप गोत्री तस्य पुत्र भ्राता लाल तस्यात्मज पुत्र जुगलदास ने लीषी आपने पठनार्थं हेत मि० ज्येष्ठ वदी दसमी वार गुरुवार का पूरी करी ।।

जलते रक्षा... ....यह धरि चेत ।। ३ ।। श्री ।।

पुस्तक सिनुलाल मगनीराम के पाथे की समत १६०२

विषय—शिखर माहात्म्य वर्णन (जैन धार्मिक ग्रंथ)।

संख्या २८२. बारामासा, रचयिता—मनगुप्त, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६१/२ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—१६ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—लीषत बारामासा

चेति हू नर चेति मुग्ष क्या पड़ा है चेतना ।
नह चही तूं है चला चल क्यो मा हरि सैं हेतना ।। १ ।।
बस करौ बैसाष मनमावेदी के मारग तजो ।
बार बार नहिं जन्म पावो चरन रघपति के गहा ।। २ ।।
जेठ जीवन जात छिन पल जमा मैं दिन घटत है ।
छोडि कैं छल छिद्र प्यारे क्यो ना जादौपति रटत है ।। ३ ।।
आया जो अगम असाढ आधो हो रहो हुसियार ही ।
आडना कोई होये तेरा आनि जम जब मारही ।। ४ ।।

सूंपन सा ससार सावन सोवत का सुष देषय ।
जात ना छिन बार लागें जगत नासाव देषया ॥ ५ ॥

अंत—जिनि इह बारामास गायो सो वा नर तौ है सही ।
चेतना तौ चेत मुरष टेरि मन सुष नैं कही ॥१३॥

विषय—हरि भक्ति का उपदेश किया गया है ।

सख्या २८३ हनुमान छवीसी, रचयिता—मनियार कवि, निवासस्थान—काशी, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—८॥ × ५॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, प्रकाशित, मतवै हसनी (फतेहगढ) द्वारा, परिमाण (अनुष्टुप)—६८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० विश्वनाथप्रसाद जी मिश्र, ग्राम—भसाला माफी डाक०—लोटन, जिला—बस्ती ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ हनुमान छवीसी लिष्यते ॥ सोरठा ॥
गणपति चरन मनाय नाय सीस गिरिजेस पद ।
वरणो कथा सोहाय महिरावण भज्जन करणि ।
क्षत्रीवर मनियार काशीवासी जानिये ।
जापैं पवन कुमार दयावन्त निसु दिन रहत ।

कवित्त

पव्य पर पविज्यौ तमिश्वर पर रवि ज्यो है अनल की धार पर ज्यो जल की तरग है ।
राम दस माल पै ज्यौं स्याम सिसुपाल पैं ज्यो वारिद विसाल पै ज्यौं कुम्भज उत्तग है ।
केकी व्याल वृद पैं तुषार अरविन्द प ज्यो 'यार' ज्यो गजेद्र पैं मृगेद्र की उमग है ।
अग्नी तूल ढेर पैं ज्यौ वायु घन घेर पै ज्यो निश्चर वटेर प त्यौं वाज वजरग है । १
दीन दुष मेटन चपेटन दनुज वन तरु के उषेटन उलेटन पहार के ।
अवतार रुद्र के उलघन समुद्र के विदारन है उद्र के विदित छुद्र झार के ।
पर काज धावन है यार मन भावन है पावन है वेरी महिरावन सुरारि के ।
दसमुष भजन है साधु मुष रजन है वदौ पदकुज जुग अजनी कुमार के । २

अत—

दूरि ही ते देषि कपि भालु जे जे काल करि
कूदन कटक लागी करुणा निधान की ।
'यार' कवि राए धाय पाय अकुलाय परे
कहे दीनवधु भले लीनी सुधि प्रान की ।
उठे न उठाये छाये प्रेम उर जलद सीस
लागो प्रभु चरण पे झरि असुआन की ।
वारिज ते वारिज मिलत अति आनद सो
भेंट देत मानो ल लै मुकुतान की ।२६

दोहा

यह हनुमान छवीसिया कृत कविवर मनियार ।
सकठ गत नर पढत ही तुरितैं होत उवार ।

इति हनुमान छवी कवि मनयार कृत समाप्त ।

विषय—श्री हनुमान जी की शक्ति तथा भक्ति वर्णन ।

सख्या २८४क धम परीक्षा भाषा, रचयिता—मनोहरदास, निवासस्थान—धामपुर, कागज—देशी, पत्र—८८, आकार—१०$\frac{3}{8}$ × ६$\frac{3}{10}$ इच, पक्ति (प्रति पृठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—२४२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७७५ वि०, लिपिकाल—स० १८५६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर (बडा मदिर), चूडीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—॥ ॐ ॥ ॐ नमो धर्माय ॥ अथ धर्म परीक्षा भाषा लिष्यते ॥

॥ सोरठ ॥

प्रणमूं अरिहन देव गुरनि ग्रथ दया धरम ।
भव इधि तारन एह अवर सकल मिथ्यात मणि ॥ १ ॥
:० ०: :०.
होणहार कारण मिल्यो हीरामणि उपदेश ।
कारण विना न भव्य जन काज होइ लवलेस ॥ ६ ॥
.० ·० .०
सत्रह सेह पिचोत्तरे पोष दसो गुरु वार ।
सुभ वेला ग्रह सुभ लगन कीयो मुहूरति सार ॥ ८ ॥

॥ सवइया ३१ ॥

कविता मनोहर षडेलवाल सोनि जाति मूल सगा मूल जाको सागानेर वास है ।
कर्म्म के उदैतें धामपुर मैं वसन भयौ सबसौ मिलाप फुनि सज्जन कौ दास है ।
व्याकरण छद अलकार कछु पढ्यो नाही भाषा मे निपुण कछु बुद्धि कौ प्रकास है ।
वाई दाहिनी न कछु समझ सतोष फुनि नित जिन दोहो जाके एक जिन ही कौ आस है ॥ ६ ॥

अत—

देस दाडूरो परवत तलो । तहा धामपुर सोभा भली ।
चहूदिसि सोभित वाडी बाग । करे कोकला पचम राग ॥
० ० ०:
जेठमल सुत विवीचद दाता दीन दयाल ।
सज्जन भक्ता गुण उदधि दुरजन छाती साल ॥२२३॥

॥ सवया इकतीस ॥

रावत साल वाहन आगरे को वुधरत हिरद मरन निन जान रस पीयौ है ।
जगदत्त मिश्र गौड हिसार को वासी सुभ विद्या ने जगत मै सार जस लीयौ है ।
वेग राज पडित ब्राह्मण नगर माहि ज्योतिस का पाठी सरस्वती वर दीयो है ।
ईतने सहाई भए दोही जिन राज जू की तव मे विचार कर भाषा वुधि कीयो है ॥२१६॥

॥ षटपद छद ॥

नगर धामपुर माहि करी भाषा बुध सारू ।
धर्म परिषा मित्र ग्रथ विजन धरवारू ।
ना कछु कीरत हेत ना कछु आरत धन पछन ।
जथा सकति मतिमद रच पद पद रस सचन ।
पढ़ै सुनै उपजै सुबुधि हृद कल्याण सुभ सुष धरण ।
मन रहिस मनोहर इम कही सकल सघ मगल करण ॥२३२॥

इति श्री धर्म परीछ्या भाषा मनोहर दास कृत सपूर्ण ॥ श्री सवत १८५६ वर्षे मिती भाद्र कृष्ण त्रियोदशी ॥१३॥ गुरुवारार ॥ समाप्त ॥ शुभ भवतु ॥

विषय—जैन धर्म विषयक रचना । मनोवेग और पवन वेग नामक दो मित्रो के कथनोपकथन के रूप मे एक रूपक कथा का वर्णन है जिसमे विविध मत मतातरो के गुण दोष वर्णन किए गए है ।

रचनाकाल

सत्रह सैह पिचोत्तरे पोष दसो गुरुवार ।
सुभ वेला ग्रह सुभ लगन कीयौ मुहूरति सार ॥

संख्या २८४ख. धर्म परीक्षा, रचयिता—मनोहरदास, निवासस्थान—धामपुर, कागज—देशी, पत्र—१८५, आकार—१०३/८ × ६५/८ इन्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—३२६८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १७७५ वि०, लिपिकाल—सं० १८८७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर (बड़ा मंदिर), चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ।

आदि—श्री चितामणि पार्श्वनाथाय नमः ॥ अथ धर्म परीक्षा लिष्यते ॥

॥ सोरठा ॥

प्रणमूं अरिहंत देव गुर निरगंथ दया धरम।
भव दधि तारण एव अवर सकल मिथ्यात मणि॥ १ ॥

:o: o :o:

होनहार कारण मिल्यौ हीरामणि उपदेश।
कारण विना न भव्य जन काज न होइ लवलेश॥ ६ ॥
पंच सकल प्रेरक भए जानहु मन वच काय।
सत्य पुरुष आग्या भई श्री जिनराज सहाय॥ ७ ॥
संवत सई पचोत्तरइ पौस दसमि गुरुवार।
शुभ वेला शुभ ग्रह लगन कियौ महूरत सार॥ ८ ॥

॥ सवइया ॥

कविता मनोहर षंडेलवाल सोनी जात मूलसंगि मूल जाकौ मागानेर वास है।
करम के उदै तै धरमपुर मैं वसन भयो सब स्यो मिलाप फुनि सज्जन को दास है।
व्याकरण छंद अलंकार कछु पढ्यौ नाहि भाषा मैं निपुन तुछ बुद्धि को प्रकास है।
वाइं दाहिनी कछु समुझै न संतोष लिए जिवकी दोहाई जाके जिनही की आस है।

.o. .o. o

॥ चौपाई ॥

दिन मनि ताप जगत को करे। निशपति शीतलताई धरै।
ज्यौ दुर्जन सबको दुष देइ। सज्जन सुजस जगत मैं लेइ॥२५॥

॥ सोरठा ॥

सज्जन जन की रीति जैसे चंदन बावनो।
दुष दै घसै सुप्रीति वासै तो भी यह गुणो॥२६॥
देश दादुरो परवत तनी। तहा धामपुर सोभा भली॥
चहु दिशि शोभित वाडी बाग। करै कोकिल पंचम राग॥७१॥

o o .o.

जेठमल्ल सुत विधिचंद दाता दीनदयाल।
सज्जन भगता गुण उदधि दुर्जन छाती साल॥७६॥

.o. o :o.

रावत सालिवाहन आगरे को वुद्धिवंत हिरदै सरल तिन ज्ञान रस पीयो है।
जगदत्त मिश्र गौड हिसार को वासी शुभ विद्या वलि जगत मैं सार जस लीयो है।
वेगराज पंडित ब्राह्मण नगर माहि ज्योतिग को पाठी सरस्वती वर दीयो है।
इतने सहाइ भए दोही जिनराज जू की तब मै विचार करि भाषा बुद्धि कीयो है॥८१॥

॥ षटपद कवित्त ॥

नगर धामपुर माहि करी भाषा वुधि सारु।
धर्म परीक्षा मित्र अर्थ विजन धरि वारु।
ना कछु कीरति ना कछु आरति धन वछन।
यथा सकति पंडित रची पद पद रस सचन।

पढ़ै सुनै उपजै सुबुधि ह्वै कल्याण शुभ सुख धरण ।
मन रसि मनोहर इम कहै सकल सघ मगल करण ॥८५॥

इति श्री धर्म परीक्षा भाषा मनोहरदास सागानेरी षडेवाल कृत सपूर्ण ॥ मुनि वसु वसु शशि विक्रमहि सरद रितु भवि जान । सित दुतिया ऊर्जयत जत की पार्श्वनाथ जिन धाम ॥ २ ॥

विषय—जैन धर्म सबधी रचना । इसमे मनोवेग तथा पवनवेग नामक दो मित्रो के कथनोपकथन के रूप मे एक रूपक कथा का वर्णन किया गया है जिसमे विविध मत मतातरो का गुण दोष दिखाया गया है ।

रचनाकाल

सत्रह सई पचोत्तइ पौस दसमी गुरुवार ।
शुभ वेला शुभ ग्रह लगन कियौ महूरत सार ॥

संख्या २८४ग धर्म परीक्षा, रचयिता—मनोहरदास, निवासस्थान—धामपुर, कागज—देशी, पत्र—१२४, आकार—१० ३/८ × ६ ४/८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—३२२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७७५ वि०, लिपिकाल—स० १९०९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर (बडा मदिर) चूडीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—श्री जिनाय नम. ॥ अथ धरम परिक्ष भाषा मनोहरदास कृत लिष्यते ॥

॥ सोरठ ॥

प्रणमो अरिहत देव गुरु निरग्रंथ दया धरम ।
भवदधि तारन एव अवर सकल मिथ्यात भणि ॥ १ ॥

:०· ·० ०·

होनहार कारण मिल्यो हीरामन उपदेस ।
कारन विना न भव्य जन काज न होइ लवलेस ॥ ६ ॥

:०. .० :०:

सत्रह सै पचोतरं पोस दसं गुरुवार ।
शुभ वेला ग्रह सुभ लगन कियो महूरत सार ॥ ८ ॥

॥ सवैया इकतीसा ॥

कविता मनोहर षडेलवाल सोनी जात मूल सगी मूलि जाको सागानेर वास है ।
कर्म के उदते धामपुर मे वसन भयौ सब स्यूं मिलाय फुनि सज्जन को दास है ।
व्याकरण छंद अलकार कछु जानै नही भाषा मै निपुन तुछ वुद्धि को प्रकास है ।
वाई दाहनि न कछू समुझै सतोष लिए जिन दोही जाके एक जिनजी की आस है ॥ ६ ॥

अत— ॥ दोहरा ॥

विक्रम राजा को भये सात अधिक सो हजार ।
वरष तबै यह सस्कृत भई कथा सुभ सार ॥७०॥

॥ चौपाई ॥

देस वादुरो परवत तली । तहा धामपुर सोभा भली ॥
चहुं दिसि सोभित वाडी बाग । करै कोकिला पचम राग ॥७१॥

:० ० ०:

जेठ मल्ल सुत विधिचद ते दाता दीनदयाल ।
सज्जन भक्ता गुण उदधि दुर्जन छाती साल ॥७६॥

:०· :० :०:

सो तो पहुचै सुभग गती वाजै सुभग वजाय ।
विधिचद सुभग भोगवै धर्म ध्यान चित लाइ ॥७६॥

हीरामणि उपदेस तै भयो सास्त्र सुभ सार ।
दुष्ट लोक को मति हसो हिरदै धरि जो विकार ।।

।। सवैया ।। ३१ ।।

रावत सालवाहन आगरे को वुद्धिवत हिरदै सरल तैन ग्यान रस पीयो है ।
जगदत्त मिश्र गौड हिसार को वासी सुभ विद्या वल जगत मैं सार जस लीयो है ।
वेग राज पंडित ब्राह्मण नगर माहि ज्योतिक को पाठी सरस्वती वर दियो है ।
इतने सहाई भये दोही जिन राजजू की तब मैं विचार करि भाषा वुद्धि कियो है ।।८१।।

।। षटपद छद ।।

नगर धामपुर माहि करी भाषा वुध सारू ।
धर्म परीषा मित्र अर्थ विजन धरि वारू ।
ना कछु कीरति ना कछु आरत धन वछन ।
यथा सकति पडित रची पद पद रस सचन ।
पढै सुनै उपजै सुवुधिह्वै कल्याण सुभ सुष धरण ।
मन रहसि मनोहर इम कहै सकल सघ मंगल करण ।।८२।।

इति श्री धरम परीक्षा भाषा मनोहरदास कृत सपूर्ण ।। मती भादो सुदी ६ ।। सनिश्चर वार संमत् १९०९ ।।

विषय—जैन धर्म सवधी रचना ।

मनोवेग तथा पवन वेग नामक दो मित्रो के कथनोपकथन के रूप मे एक रूपक कथा का वर्णन है जिसमे विविध मत मतान्तरो का गुणदोष वर्णन किया गया है ।

रचनाकाल

सत्रह सै पचोतरै पोस दसै गुरुवार ।
शुभ वेला ग्रह शुभ लगन कियो महूरत सार ।। ८ ।।

सख्या २८५ फूलचरित्र, रचयिता—मनोहरदास, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६ × ४।। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८ परिमाण (अनुष्टुप)—४५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १८५९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० आद्याप्रसाद जी मिश्र, ग्राम—अचकारी, डाक०—बेलवार जिला—जौनपुर ।

आदि—

दोहरा फूल चरीत्र

१

पुरवीता प्रीतम जानी कै तन मन जोवन दीन्ह
धन श्रम सोभा केवला कीस मे नेछावर कीन्ह

२

वीरह दगधी तन देत है सही न सकै सरीर
सही न सकत उठी उठी तकत कवल ढरे ससनीर

३

वान वीरह को हे सखी जेही लागे सो जान
केतीक धीरजहौ धरौ की छीन छीन नीसरै प्रान

४

आपु भला तो जग भला चीत मती करहु उदास
फुल परास कह नसो सुनु राखु पीआ प्र आस

५

राती पीया हो रोऐ के देवस गवायो सोए
पीआ विनु तदा उर मौ गीव व्याकुर भ्रम मती होए

अंत— २८

कनक कछौटी बाधि कै कसीऐं प्रीतम आऐ
रस हो का पति आइहै मधु चाखो चीत लाए
२९
प्रेम पथ पगु राखिए जौ मन सचा होए
पीआ के प्रीती गुलाब है जौ पै जाने कोए
३०
बालापन बीतत भौ काम केतकी आए ।
रूप मजर की हो नही पीआ फूल तुरो मनलाए
३१
फुल चरित्र के भेव सुनी कहे मनोहर दास ।
मम मीली के हथी कदर राख् पीआ पर आस

समत १८५९ साल मीती चइत सुदी ९ ..

विषय—फूल चरित्र वर्णन ।

प्रत्येक फूल के नाम पर एक एक दोहे की रचना की गई है । इस प्रकार छदो की सख्या इकतीस है ।

संख्या २८६. शत प्रश्नोत्तरी, रचयिता—मनोहरदास निरजनी, कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—८$\frac{3}{10}$ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—५४६, खडित, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० महादेव सिह जी, ग्राम—रजनपुर (गगासिह का पुरवा), पो०—तिलोई, जिला—रायबरेली ।

आदि—

.०. ०. ०

......जडता दिषाई है । प्रथम चैतन्य पव कहिये है । एक चैतन्य शुद्ध ॥ १ ॥ दूसरो चैतन्य साक्षी ॥ २ ॥ तीजो चैतन्य प्रमाता ॥ ३ ॥ चौथो चैतन्य प्रमाण ॥ ४ ॥ पचमो चैतन्य प्रमिति ॥ ५ ॥ दृष्टात ॥ जैसे एक सरोवर ता महि अनेक कूल करे ॥ कूल कूल प्रति अनेक धोरे ॥ धोरे धोरे प्रति अनेक षेत क्यारी ॥ सु सरोवर को पानी कूल मे आयो ॥ कूल को पानी धोरे मे आयो ॥ धोरे वरहे की पानी षेत मे आयो ॥ पानी क्यारी मे क्यारी के आकार भयो ॥

अत—

फल सो विराभाव परमाता । अह ब्रह्म फल कह्यो विष्याता ॥
स्वरूप माझ दुै फल ए नाही । विकल रहित रहै सो ताही ॥ ७ ॥

इति शत प्रश्णोत्तरी भाषाया मनोहरदास निरजनी कथ्यते नवम खड ॥ सोरटा ॥ हौ मे हौ तू नाहि । हौ तू हौ मै हौ कही । सब हौ हौ तू माहि । हौं तू हौ तू एक है ॥ १ ॥ राम

विषय—सुप्रसिद्ध अद्वैतवादी स्वामी शकराचार्य कृत प्रश्नोत्तरी की हिंदी मे गद्य पद्य टीका ।

संख्या २८७क. अखरावट, रचयिता—मलिक मुहम्मद जायसी, कागज—देशी, पत्र—१७, आकार—९$\frac{1}{10}$ × ६$\frac{3}{10}$ इन्च, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—२३८, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—

....
... . ठाउ न सुर सबद ।
तहां न पाप न पुन्य महमद आपुहि आप यह ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

आ अलखहि लेहुत जहाँ । नाउ न ठाउ न मूरति तहाँ ॥
पूर अपूर न पाप न पुनू । गुप्त स. त सुन्न अन सुनु ॥
अलख अरूप असब्द अभाँतो । सूर न चंद न दिवस न राती ॥
आखर सुरन बोल अहकार । अकथ कथा का करै विचार ॥
कुछौ कही तो कछु नही अहाँ । पुनि कुनाह कुछुक होइ रहाँ ॥
पुनि उरेह आरभ बषाना । हुतो आप मह आपु समाना ॥
असन बसन मासन प्रडा । निकलक सो आषु अषंडा ॥
मेटि न जाइ पुन्य अरु पापु । दुष सुष अनेद सतापु ॥
तबते भएउ नरक वैकुंठा । भल औ पोच साच औ झूठा ॥

॥ दो० ॥

नूर महमद देषा भा निर्हाचत जिवह ।
पुनि इबलीस सचारा डारत रहै तेहि कोह ॥

अत—
॥ चौ ॥

वड करतार जिन्है करि राजा । पवन वयन करि किरपन छाजा ॥
ता कह नहि जिन पहि साजा । रह मेघ वन हित उपराजा ॥
वही मेघ होई विगसै धाई । वही माह कि जाई विलाई ॥
पवन मेघ होइ जो जग छाई । वहै चर्माक घन मह घहराई ॥
लिहे चलावै जेहि दिसि लोई । जस जस नाव तस तस नोई ॥
भिआरी अस जितवन वाज । तेहि मह घन घन सो दर गाजै ॥
तरपि उठै सो ओकी फूटी । परै कगाज वहुत कै टूटी ॥

॥ दो० ॥

आगि पानि औ माटी पवन तिहूँ कर मूल ।
किरिनि केर सहज गुण वोगै के अस्थूल ॥५१॥

॥ सो० ॥

लिषा हे सीतलदास महमद कृत अषरावती ।
ग्रथ केर एह नाम औ ममला आगे लिषव ॥
राम राम . . . .

विषय—'अ' से लेकर 'ह' तक प्रत्येक अक्षर पर कविता कर ब्रह्म ज्ञानोपदेश किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—रचना खडित है। सख्या १ तथा १८ से २० तक के पत्रे नही है।

रचयिता मलिक मुहम्मद जायसी है, जो अपने प्रसिद्ध ग्रथ पद्मावत के कारण **प्रसिद्ध** है। इन्होने अपने गुरु के सबध मे निम्नलिखित वर्णन किया है—

पा पायो मोहदी गुर मीठा । मौला पथ जो दरसन दीठा ॥
नाउ पियार सेष बुरहानू । कालपी नगर कहै अस्थानू ॥
औ उन दरस गोसैया क पावा । अलहदाद गुर तिन्है लषावा ॥
अलहदाद गुरु गुर सिद्धि नवेला । सयद महमद के वे चेला ॥
सयद महमद मँहदी साँचा । दानि भाल सिधि दीन्ही वाचा ॥
जुग जुग अमर हजरति ख्वाजे । हजरति नवी रसूल नेवाजे ॥
दानिआल तौ परगट कीन्ह । हजरति ख्वाज वि . . . . ।

यह वर्णन १३वे पत्रे मे है। आगे के पत्र लुप्त हो गए है। इसी रचना के साथ आगे इसी रचयिता की रचना 'ममला' भी है जिसका केवल एक ही पत्र उपलब्ध है।

संख्या २८७ख. पद्मावत, अखरावती, कहरानामा और मसला रचयिता—जायसी (मलिक मुहम्मद), (स्थान—जायस, रायबरेली), कागज—आधुनिक, पत्र—१२५, आकार—१३$\frac{4}{10}$ × ८$\frac{1}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३१, परिमाण (अनुष्टुप)—४६०२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० ९४७ हिजरी, प्राप्तिस्थान—श्री महंत गुरु प्रसाददास जी, स्थान व पोस्ट—बछरावाँ, जिला—रायबरेली।

आदि—श्री गणेशाय नम. लिष्यते पोथी पदुमावती काव्य मलिक मोहमद की मता निर्गुन भक्ति का राम श्री जगजीवन साहेब ॥

॥ चौपाई ॥

बरनौ आदि एक करतारू । जिन जिउ दीन कीन्ह ससारू ।
कीन्हिसि प्रथम जोति परगासू । कीन्हिसी परवत और कविलासू ॥
:o: .o o
सन नौ से संतालिस अहे । कथा अरभ बैन कवि कहे ॥
सिंघलदीप पदुमिनि रानी । रतन सेनि चित उर गढ आनी ॥
o .o' o

श्री गणेशाय नम. लिष्यते अखरावत मलिक मुहमद की वानी

॥ सोरठ ॥

साई के रानो वहो आघुरीकाया भरी ।
महमद रहा न ठाउ दूसर कहा समाइ अब ॥
आदिहि अंत सो एक गोशाई । जेइ सब षेल कीन दुनिआई ॥
तस कीन्हिसि जस जाइ न कहा । चोदा भुवन पूरि भरि रहा ॥
.o. o o.
तुम वह कहान मे वह कोई । जत कुछु है सब ठावहि सोई ॥
o. o' o.
सुनु चेला जस सब ससारू । वोहो भांति तू ज्ञान विचारू ॥
.o. o o

॥ अथ लिष्यते कहरानामा मलिक मुहमद जी का ॥

सुनहु मीत हौ कीरति बषानौ महाराज समहराई रे ।
कोई केवट होइ नाव चलावत कोऊ लाग कहराई रे ॥ १ ॥
कोऊ गुन धारि सीष पथ ढेले चने डोरि गहि षाचे रे ।
तीर तीर उथले सो पथा गहि रेते भल वाचे रे ॥ २ ॥

अंत—श्री गणेशाय नमः अथ लिख्यते मसलानामा मलिक मुहमद क

यह मन अलह त्रियाते लाई । जेहि का षाई तेहि का गाई ॥
बात बहुत जौ कहै बनाई । छूछ पछोरे उडि उडि जाई ॥
जीवन थोर बहुत उपहास । अधुरी ठकुरी पीढ वतास ॥
'o: o 'o.
होनहार सो होइ है बहुत किहे अभ्यास ।
जो राचा है ताग दम टूटहि ताग पचास ॥

इति श्री ममलानामा मलिक मुहमदक समाप्त ॥

विषय—पद्मावती । चित्तौर की रानी पद्मावती की कथा का वर्णन ।

रचनाकाल

९ ४७
सन नौ से संतालीस अहे । कथा अरभ बैन कवि कहे ॥

अखरावत—गुरु चेला के सवाद से ब्रह्म ज्ञानोपदेश ।

कहरानामा—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

मसलानामा—कहावतों का प्रयोग कर ज्ञानोपदेश किया गया है ।

संख्या २८७ग. मसला रचयिता—मलिक मुहम्मद जायसी (स्थान—जायस, रायबरेली), कागज—देशी, पत्र—१, आकार—८ ५/१० × ६ २/१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—१८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—

यह मन अराह मिया सो राई ।
जिह की षाई तिहि की गाई ॥
बात बहुतक हे बनाई ।
छूछ पछार उडि उडि जाई ॥
जीजन थोर बहुत उपहाँस ।
अधरी ठकुरी पीठ वतांस ॥
तोरा अन्धाउ होसि का कोधी ।
बेलन कूदा गोने कादी ॥
पुन्य पाप ते कोउ न तरा ।
भूपी डाइनि तामस भरा ॥

॥ दोहा ॥

अब साँई सो नेह करु फेरि न यह सजोग ।
कोल्हू ते षरी उतरी भई बैल ही जोग ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

निश्चै तोर रूप मे हेरा । आवे अब कि जाइ पवेरा ॥
विनसाई नहो और सोहाई । घर घिउ होतौ रूषा षाई ॥
सकहू कछु नेकी ले साथा । षाजा भात अडावा पाता ॥
आपु देष औरे सो सिषा । दे चारी परदेसहि भीष ॥
करिलै आजु अहे जो करना । धधा छाडि आषिर है मरना ॥
रूप निरंजन छाडि के माया देषि लोभान ।
कुत्ता चौक चटाइक चाकी चाटन जाइ ॥

अंत—

॥ चौ० ॥

जासो प्रेम सो धै धे परे । राज छाडि धुर विनिया करे ।
पढै वह परनेम न जाना । सौ गुलाम सूना षरिहाना ॥
विना प्रेम जो जीव निवाहा । सूने गाउ मश्रौव काहा ॥
प्रीतम प्रेम कोई कहै आना । धान का षेत पयारहि जाना ॥
पाँच भूत कोई सुमति न करै । सहजै राज जरो वै षरै ॥

॥ दो० ॥

बुधि विद्या के कटक मो हौ मै का विस्तार ।
जेहि घर सासु तरुणि है वहुवर कौन सिगार ॥

॥ चौ० ॥

अतर समुझु करसि का वठ । कालिहणी वणिया आजुहि सेठ ॥
करनी करहु रहह का वैसा । जिसकी लाठी तिसका भैंसा ॥
पुन्य पाप एक रूप न जानी । दूध क दूध पानी क पानी ॥
मागि लेहु चहहु कुछु मागा । रा .... ॥

:o: :o: :o:

विषय—मसलो अर्थात् कहावतो का वर्णन ।

संख्या २८८क. करखा, रचयिता—मलूकदास, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—$६\frac{२}{१०}$ × $६\frac{७}{१०}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप)—३२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—डा० त्रिलोकीनारायण जी दीक्षित, प्राध्यापक (हिंदी विभाग), लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—करषा
सरनि हो सरनि प्रभु सरनिदाता ।
भजन सुमिरन ग्यान ध्यान विग्यान जप जोग बैराग मन नहि समाता ।
नेम जम दया व्रत दान तीरथ क्रिया जनम गुन कर्म नहि नाम गैए ।
प्रेम परतीत विस्वास उ(?र) प्रीति नहि स्वय आनंद तुम्है केऊ रिझेए ।
प्रानमन वुधिचित अह जेउ आनमा तुम्हार प्रकास यतंनि होई ।
आपुही गहो परमान जब आपनो तुम्हरी क्रिपा तुम्है लहै सोई ।
मधं वाहर सकल राम रमिता अकल नेत कहि नेत जेहि वेद गावै ।
चलो आयो जुगै जुग वात निमान मी भगतनु को "मलूक" गायो ।।

अत—
आदमी का पित्त क्या है जिसका मैं कवित्तकरौ यदि करों उसको जिन्ह पैदा मुझे कीया है ।
गर्भवास पाला आतसमेन जार मुझे तिसको जो विसारो किस काम ऐसा जिया है ।
जानति इस दुने को जो दीनते वेदीन ते वदीन करै धाक ऐसे षाने जो ईमान वेचि लिया है ।
कहता "मलूक" मै विकाना हरि मूरति पर जेसके दीदार सो जुडाइ जाति हिया है ।।

विषय—ज्ञानोपदेश ।

सख्या २८८ख. ज्ञानपरोछि (? ज्ञानपरीक्षा), रचयिता—बाबा मलूकदास, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—$१०\frac{१}{४}$ × $६\frac{९}{१०}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७८४ के लगभग, प्राप्तिस्थान—डा० त्रिलोकीनारायण जी दीक्षित, प्राध्यापक (हिंदी विभाग), लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—राम मलूक सहाइ ।। लि. ग्यान परोछि ग्रथ सुभवकि

अथ दोहा

उपदेष्टा ईस्वर प्रभु श्री हरि परमानद ।
व्याप करन सब जगत के त नमामि पद वद ।।
सुनिए ग्रथ ग्यान कहि भषौ । सोई नाम ग्रथ को राषौ ।।
तामे मोछ तन सिर सार । साधु विचारै वारवार ।
वर्नाश्रम के धर्म जेते हित पहरि सतुष्ट ।
वैराग आदि सहजे भए साधन कहे चतुष्ट ।।

चतुर्थसाधन

ब्रह्मादि विभौ सब जेतो । और सकल लोकन में तेतो ।।
काक विस्टा सम लषि करै त्याग । सो कहिए निर्मल वैराग ।।
प्रभु को रूप सति कै जानै । जग परपच नास सो मानै ।।
एहि प्रकार की जाके टेक । ताको नाम जो कहियत विवेक ।।
त्याग वासनन को कर सोई सम परवान ।
इद्री को निग्रह करै सो दम निस्चै जान ।।
अत—जाका मन परपकु हे ग्यान जोग के माह ।
सो दाता है सिध को यामे भ्रम कछु नाह ।।
गुरदेवन के भगत जे सुलभ ताहि को होइ ।
कहे मलूका याको लहै ससै रहे न कोइ ।।
इति श्री ग्यान परोछि सपूर सुभमस्तु ।।

विषय—ज्ञानोपदेश ।

संख्या २८८ग. ज्ञानबोध, रचयिता—मलूकदास, कागज—देशी, पत्र—६०, आकार—६$\frac{९}{१०}$ × ६$\frac{७}{१०}$ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—१५३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी और कैथी मिश्रित, प्राप्तिस्थान—डा० त्रिलोकीनारायण दीक्षित, प्राध्यापक (हिंदी विभाग) लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—श्री रामजी सहाई ॥

धन धन पुरुष अलेष । जीन धरो नाना वेष ॥
जाकी माआ अगम अपार । शाहेब बडा सिरजन हार ॥
जाका वोर नही अत । गहीर गभीर है भवत ॥
पुरवै भगत जनके काम । दीन देआल राजाराम ॥
परमादीक (?ब्रह्मादीक) नया वही भेव । अगर अमर हही सुषदेव ॥
मोही शकल वीरज की नारी । अतो अनुप है कृस्न मुरारी ॥
जेलही बालको के साथ । आदी अनादी दीनानाथ ॥

अंत— **॥ दोहा ॥**

श्री गुर अंब्रित वचन सुनि भयो मिषि सुनि चैन ।
ह्रिदै ग्रंथि गई छूटि कै बोलेउ गदगद बैन ॥
महाराज तुव कृपाते विगत भयो संदेह ।
निजपन भै उदभै भयो जानो देह अदेह ॥
यह कही पुनि तुस्नी भयो मिषि संदेह नेवारि ।
स्री गुर हतुस्री भएछ सेषि तत्त विचार ॥
कहै मलूक को थाल लहै हरिगुन जलधि अगाध ।
कहो जथामति ग्यानबोध गुर गोविंद परसाद ॥

इति स्री ग्यानबोध वैराट वरन पनपचम वेस्राम लेषत दयालदास सेषे ५ मलूक ॥

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य—इसके साथ निम्नलिखित रचनाएँ और है—

१ करखा—मलूकदास ।

२ प्रभुतारैदास गोष्टि—भैनदास ।

संख्या २८८घ. ज्ञानबोध, रचयिता—मलूकदास, कागज—देशी, पत्र—६०, आकार—७$\frac{३}{४}$ × ८$\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—१२१५, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—डा० त्रिलोकीनारायण दीक्षित, प्राध्यापक (हिंदी विभाग), लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—श्री सतगुर सहाए ॥ पोथी ग्यान बोध कीत वावाजी बाबा मलुकदास जीव ॥

॥ दोहा ॥

हरी भगतन्ह के काज होत जुग जुग करी सहाए ।
सो सभ सेसन कही एकही कहो कछुक अब गाए ॥

रमेनी

भगत वछल सतन्ह सुषदाई । जन के दुष ने वारहु भाई ॥
जन के दुष आप दुह्य पावै । वाधा होइ तौ जाही छडावै ॥
वदी छोडी कौशन के वाना । शो तौ तीनलोक मो जाना ॥
जौ बालक पालै महतारी । तैशी रछा करही मुरारी ॥
हरके परान वशही जनमाही । गरुड वीशारी छडावही जाही ॥
जहां जहं परै शतन्ह के गाढा । जानौ राम काल के ठाढा ॥
राम राम परहलाद पुकारा । पीतही वाधी परवत शोडारा ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

श्रीगुर अम्रित बचन मुनि भयो सिष सुन चैन ।
ह्रिदै गिथ गइ छूटकै बोल्यो गद गद बैन ।
महाराज तुम्र क्रिपाते विगत भयो सदेह ।
निज पन भयो उदै जानेव देह ग्रदेह ॥
यह कहि पुनि तुसन भए ग्रटके उपकम विचार ।
श्री गुर तुस्न भए सिष सदेह निवार ॥
कहि मलूक को थाह लहै हरागुन जलध ग्रगाध ।
कह्यो जथामत ज्ञान बोध गुन गोविंद परसाद ॥

इति श्री ज्ञानबोध बैराट स्वरूप वर्तन पचम विश्राम सपूरन परा मलू जी कीत

विषय—ज्ञानोपदेश और भक्ति ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ मे रचयिता की साखियो, पदो और रमैनियो का सग्रह है ।

संख्या २८८ड ज्ञानबोध, रचयिता—मलूकदास, (स्थान—कडा मानिकपुर), कागज—देशी, पत्र—१०२, आकार—१०¾ × ६½० इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—२१६३, अपूर्ण (केवल प्रथम पत्र नही), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी और नागरी, लिपिकाल—स० १७८४ वि०, प्राप्तिस्थान—डा० त्रिलोकी नारायण दीक्षित, प्राध्यापक (हिंदी विभाग), लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—. . . . .

हरि भक्तन के काज हित जुग जुग करी सहाई ।
सो सिव सेसन कहि सकै कहौ कछुक अगाई ॥

॥ चौपाई ॥

भक्त वछल सतन सुदाई । जनका दुष नेवारहि भाई ॥
जनके दुष आपु दुष पाव । बाधाहोइ तौ जाइ छोडावै ॥
वदीछोड कृष्ण का बाना । सोतौ तीन लोक से जाना ॥
जेउ बालक पालै महतारी । तेसे रछ्या करहि मुरारी ॥
हरि. . न वसहि जनमाही । गरुर त्रिमारि छोडावन जाही ॥
जह जह परै भक्त को गाढा । जानहु राम कालिका ठाढा ॥
राम राम प्रहलाद पुकारा । पितै बाधि परवत तें डारा ॥
तातो वाउ न लागन पाई । उपरहि राषि लीन्ह रघुराई ॥
तव लै असुर षमते बाधा । काढे षरग फुलावै काधा ॥

अत—नारायन भगि आदिहो नारायन मधि प्राहि ।
नारायन रहिहै सदा नमो मलूका ताहि ॥
श्री गुन अबित वचन सुनि भयो सिष मन चैन ।
हिदै गथि गई छूटिकै वोलेउ गदगद बैन ॥
महाराज तुव कृपाते विगत भयो सदेह ।
निजपन भै उदमै भयो जानो देह अदेह ॥
यह कहि पुनि तुस्टी भयो अटको पम विचार ।
श्री गुरहु तुस्टी भए सिष सदेह निवारण ॥
कहै मलूक को थाह लहै हरिगुन जलधि अगाधि ।
कहो कथामति "ग्यान बोध' गुर गोबिद प्रसाद ॥

इति श्री ग्यान बोध बैराट वरनन पचम विश्राम ५ सपूरन सुभ मस्तु सवत १७८४ सतरहसै चौरासी वृति का आरभ करिया वार मगल वरि वदिमास असुनि ॥ सुदी नौमी वार मगल क लिषि सिधिभई जे मलूक ॥

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ के साथ निम्नलिखित रचनाएँ और है—

१ ज्ञान परोछि—मलूकदास ।
२ विभै विभूति—मलूकदास ।
३ सुखसागर—मलूकदास ।
४ ध्रुव चरित्र—मलूकदास ।
५ मयूरध्वज चरित—मलूकदास ।
६ परिचयि बाबा मलूकदास—मुथरादासकृत ।

संख्या २८८च. ध्रुवचरित्र, रचयिता—बाबा मलूकदास, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—१०३/४ × ६७/८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—१०५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी और कैथी मिश्रित, लिपिकाल—सं० १७८४ वि०, प्राप्तिस्थान—डा० त्रिलोकीनारायण दीक्षित, प्राध्यापक (हिंदी विभाग), लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

आदि—राम मलूक सहाव। लिखित ध्रुवचरित्र सुभमस्तु।।

हरि समान नहि कोइ सोइ सुत जाणिए।
सतगुर रूप दयाल रूप सर्वग्य सवनि पर।
ईस गनेस महेस आदि पावत सवई वर।।
अंतरजामी सबन के करन करावन हार।
आदि भक्त ध्रुव को चरित कछु गाऊ सुमति विचार।। १।।
श्री नग्र उथान पाव राजा वडभागी।
जग्यदान व्रतनेम सदा हरिसो अनुरागी।।
द्वै रानी प्रिय तासु के सुरुचि सुनीता नाम।
उत्तिम कुंवर जायो सुरुचि ध्रुव सुनीत के धाम।।

अंत—ध्रुव चरित्र जो पढ़ सुने अरु हितसो गावै।
साधु संत भक्ति रस लवै कामना पुरावै।।
जोग साधि वैराग जप करि सब होइ निराम।
तीहु लोक ते जन चलै कहत मलूकादास।।

इति श्री ध्रुव चरित्र संपूरन सुभमस्तु।।

विषय—ध्रुव की कथा का वर्णन।

संख्या २८८छ भक्त बछावली, रचयिता—मलूकदास, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—६ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—४६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० रामलाल जी दुबे, ग्राम व पोस्ट०—दुबौली बाजार, जिला—बस्ती।

आदि—

. . . . सुखदाई। जनक दुष नेवारहु भाई।
जनक दुष आप दुष पावहि। बाधा होइ तौ जाइ छडावहि।
वंछीछोर कृष्ण को वाना। सो तो तीनि लोक मंह जाना।
जैसे वालक पालहि महतारी। तसो रक्षा करहि मुरारी।
हरि के प्राण वसै जन माही। गुरुउ विशाल छडावन जाही।
जह जह परे भक्त के गाढा। मानहु राम कानि के ठाढा।
राम नाम प्रहलाद पुकारा। गिना बाधि पर्वत ते डारा।
ताते घाव न लागे पाई। उपरहि राषि लीन जदुराई।
पुनि लै असुर खंभ लै बाधा। काटहि षर्ग फुलावहि काधा।

नरसिंह रूप तव धरा मुरारी । मारा असुर मिटा दुष भारी ।
पिता शे रूठि तपेश्या कीन्हा । अचल पद तव ध्रुव के दीन्हा ।
पांचो पडव जरन उवारे । वार न वार्काह हरि रषवारे ।।

अंत— दोहा

साधो तीनि लोक सव वंठ वाधे भला सलूक ।
गुरु गोविंद की कृपा ते भये मलूक मलूक ।
मलूका पापी पेड को सपनेहु जप तप होहि ।
भक्ति जो लिषा और को धोषे दीन्हो मोहि । २

इति श्री भक्त वछावली सपूरण । सवत् १८६६ ।

विषय—भक्त-भक्ति का वर्णन ।

संख्या २८८ज. मयूरध्वज चरित्र (मोरध्वज चरित्र), रचयिता—बाबा मलूकदास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—१०$\frac{1}{4}$ × ६$\frac{3}{8}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप)—७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी नागरी मिश्रित, लिपिकाल—सं० १७८४ वि०, प्राप्तिस्थान—डा० त्रिलोकीनारायण दीक्षित, प्राध्यापक (हिंदी विभाग), लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—राम मलूक सहाय लिषित मयरधुज चरित्र ।।

सब परि पूरन काम राम दयाल हरि ।
सनकजन कहौ तुम्है तुम्है हौ विस्न महेसा ।
नारद सारद सेस विरचि सुक व्यास गनेसा ।
श्री गुर जी तुम ही सकल वदत हौ तुव पाए ।
भगत वछल रीति प्रीति कछु कहत है जन जस गाए ।। १ ।।
नौधा भगति प्रवीन मयरधुज है जो नरेसा ।
तासु पुत्र वड साधु तमरधुज अति वलवमा ।
सगर नगर नर नारि जे राम भक्ति लैलीन ।
सत टहल मरधा सुधा तन मन सो अधीन ।। २ ।।

अंत—कहत सुनत सुष होइ तुरित दुष दारिद नासै ।
अनिस्ट सकल छै जाइ हृदै हरि भगति प्रगासै ।
साधु सग तेहि होइ नित गुर चरनन करि ध्यान ।
दीनदयाल मलूक कहत है भगति वसि भगवान ।।

इति श्री मयरधुज चरित्र सपूरन सुभमस्तु ।।

विषय—राजा मोरध्वज की कथा का वर्णन ।

सख्या २८८झ. विभैविभूति, रचयिता—बाबा मलूकदास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—१०$\frac{1}{4}$ × ६$\frac{5}{8}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—८७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७८४ वि०, प्राप्तिस्थान—डा० त्रिलोकीनारायण दीक्षित, प्राध्यापक (हिंदी विभाग), लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—राम मलूक सहाय । लिषत विभै विभूति ।।

दोहा

निरकार अविनासी प्रनउ दुइ कर जोरि ।
जाकी सरनि सदा सुष भ्रमै नही मात मरि ।।
पार ब्रह्म की अकथ कहानी । समुझ सकहि नहि पडित ग्यानी ।।
भजै अननि जो त्यागे आसा । भाउ समान लहै विस्वासा ।।
सहित कामना सुमिरे कोई । सोईछा ताको प्रभु होई ।।

सोई जैसे पगति रिषि मुनी जनको । बूझि लेइ तिन तैन कमन की ।।
विस्न सतोगुन राजस ब्रह्मा । सिव तामस गुनबौ मनि कर्मा ।।
सनक सनबन, आदिक साधू । हरि को मारग कहत अगाधू ।।
वेषन कहन सुनन ते न्यारा । अंतर वाहेर पोषनिहारा ।।
सकल त्यागि ऐसो प्रभु ध्यावै । हरि समान महिमा सो पावै ।।

अंत--
ऐसे हरि को जोजन वांदत । ताजन को मन सदा अनंदिता ।।
विजन होइन हो सकामा । हरि को सइ जाइ हरि धामा ।।
पावै पद निर्वान सो जीवन मुक्ति रिसाल ।
हरि सग हरि उरमे रहै हरि तेहि सदा दयाल ।।
विभौ विभूति समाजय सकलतत्व को सार ।
कहै मलूक हरिचरन भजि लहै सो अपरपार ।।

इति श्री विभं विभूति सपूरन सुभ मस्तु ।। राम मलूक सहाय

विषय--भगवत् विभव का वर्णन ।

संख्या २८८ञ् सुखसागर, रचयिता--बाबा मलूकदास, कागज--देशी, पत्र--८८, आकार--१०$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{3}{4}$ इन्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--१५, परिमाण (अनुष्टुप)--१६५०, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १७८४ वि०, प्राप्तिस्थान--डा० त्रिलोकीनारायण जी दीक्षित, प्राध्यापक (हिंदी विभाग), लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

आदि--राम मलूक सहाइ लिषत सुष सागर
आदि परम गुर सति सरूप । सेवा भगति दीप नहि धूप ।।
विधि निषेद को नाहो मान । अपना आपुहि करे वषान ।।
निरगुन गुन नह तीन भा उपरम गुर गन कहै ।
महा विस्न जह लीन महा ब्रह्म अरु महासिव ।।
कारन परम कहे गुर भले । परम तत परम गुन मिले ।।
परम तत निबेद न कीजे ? कारन परम गहे विधि लीजे ।।
परम अस्टाग गुन भेद वने जेऊ । अनादि भेद वेदात केहतेऊ ।।
परम तत परम गुन मेल । परम गुरु अपरपर षेल ।।
परम तत के नाम कहे गुन । कारन परम जानि राष उर ।।
अपरम पर कछु जानि न जाई । गति अविगति कहा समाई ।।

अंत---
सुनि सरूप अकास कहाही । काल चक्र गति तह कछु नाही ।।
सुछिम काल वरनि नहि जाई । सुनि असुनि सब तहा समाई ।।
सबद सरूपी एकम एक । अकल कलागति अलष अलेष ।।
हरि अनादि गति अविगति निर्गुन सगुन प्रमान ।
भगत के हितकारी प्रगटत प्रीति समान ।।
अनत कोटि ब्रह्मड धरि सब विधि प्रत आस ।
जानै अपनी आपु गति कहत मलूकादास ।।

इति श्री सुष सागर सपुरण सुभमस्तु ।।

विषय--भगवत की लीलाओं का वर्णन ।

संख्या २८६ नवरत्नमाला, रचयिता--मणिकानाथ, कागज--देशी, पत्र--४१, आकार--१० × ६$\frac{3}{4}$ इन्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--१२, परिमाण--(अनुष्टुप) ११०७, खडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--पं० दयाराम जी दुबे, ग्राम--माहपुर, पोस्ट--पर्वतपुर, जिला--सुलतानपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥

नमामि गज वत्क च सर्व विघ्नो प्रशायते ।
ससार दु:ख नाशाय शरीर हितकारिण ॥ १ ॥
अनेक शास्त्र संबध क्रियते देश भाषया ।
गोविदस्यात्मजे नारमल्लिनाथेन मत्तश. ॥ २ ॥

टीका

पथम गणेश ननस्का॰ क्रियते चि॰॰॰ ॥ सर्व विघ्नेनाशती ॥ जे शरीराशि आरोग्य लागो ॥ अनेक शास्त्रे देखो वि प्राकृत भाषा जे बोलऊ ॥ जे बालका मुर्खासि बुद्धि होय ॥ वात स्वरू पित्त स्वरूपी कफ स्वरू उपदेश होय ॥

चिकित्सा रस तैलाढ्य चूर्ण वाजि कुतूहले ।
गधवाद्वय सत्र वात प्रमिहत वैद्यक ॥ ३ ॥
एव नवरत्नमाला बालोपदेश कारण ।
हृदरत बरान्येषा नाना प्रथार्थ भाषण ॥ ४ ॥

टीका

प्रथम चिकित्सा १ तैल २ आढ्ये ३ चूर्ण ४ वाजीकरण ५ कुतूहल ६ गधवाह ७ मत्रवाद ८ धातुर्वाद ६ ॥ हे नवरत्नाजि जावे ॥

अत—

टीका

भारवाहीत्याचीनाड मूर्छा न होय ।
भयागासावशाका पामा व मूर्छा गत होय ॥ ६ ॥
.०॰ ॰ .०

इति श्री गोविदात्मज मल्लिनाथ विरचिते सर्व शास्त्र सग्रह नवरत्न मालाख्ये चिकित्सा प्रकरण नाडि परोक्षा समाप्त ॥

प्रथमरत्न समाप्त. ॥६॥ श्री गणेशायनम ॥ ॥ श्री सिद्धेश्वर प्रसन ॥ श्रीनारायण

विषय—आयुर्वेद विषय का वर्णन किया गया है । इसमें चिकित्सा, तैल, आढ्ये, चूर्ण, वाजीकरण, कुतूहल, गधवाद, धातुर्वाद और मत्रवाद नाम से नौ विषयों का बृहद् वर्णन है ।

संख्या २६०क अरस आशिक विनय, रचयिता—महा आनद साह, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—१७, आकार—८$\frac{1}{10}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—२५५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मु० देवनारायण जी श्रीवास्तव, ग्राम—रामपुर टढेई, डाक०—शिवरतनगज, जिला—रायबरेली ।

आदि—सति साई की दया ॥ सत्य सतगुर की दया ॥ सतगुर समरथ साई मोहन महबूब आदि पुरुष की चरन बदगी बार बार ॥ अरस आशिक विनय ॥ भाषते सतगुर समरथ महा आनन्द साह लिखते आशिक अन्नन माह ॥

बानी

सोक सदेह मिटि जाय आनीम की सरन जो शीश नवावै ।
सदा सतमग के रग मे जो रहे नाम की आस करि जो जुडावै ।
नितै गुर गुफा जो सुरति गुजा कर नाद अनहद तो सभुहि पावै ।
भँवर ज्यो पुहुप तजि जात अन्तै नही काम की आस तेही पास भावै ।
महा आनद लघु मुरक मोहन ईश जो सकल आनीश के शीश छावै ॥

अत—

अजरील जबलील बतावै ।
बेचून की राह भुलावै ॥
पीर मोहम्मद को गोहरावै ।
असी लाख पगमबर गावै ॥

ईद बकरीद का पढ़ै दुगाना ।
मरे बुत का पूजा ठाना ।।
जुमेराति का नेनिकर

·o· ·o :o·

—अपूर्ण

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या २९०ख अरन आशिक विनय, रचयिता—महा आनंदशाह, कागज—आधुनिक, पत्र—१६, आकार—८ $\frac{3}{8}$ × ५ $\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मुंशी देवनारायण श्रीवास्तव, ग्राम—रामपुर टढ़ई, डाक०—शिवरतनगंज, जिला—रायबरेली ।

आदि—सति साई की दाया ।। सत्य सतगुरु की दाया सतगुर समरथ साई मोहनदास महबूब आदि पुरुष की चरन वंदगी वार वार ।। अरम आशिक विनी (?) ।। भाषते सतगुर समरथ महा आनंदसाह ।। दसषत लिख्यते आशिक भगीरथ साह ।। सत्य साई की चरन वंदगी ।। दसषत लिखा ।।

शोक सन्देह मिटिजाय आनीश को ईश की शरन जो शीश नावैं ।
सदा सतसंग के रंग मे जो रहै नाम की ग्राम सों जुडावैं ।
नितै गुर गुफा जो सुरति गुंजा करे नाद औ अनहद तो समझि पावैं ।
भँवर ज्यो पुहुप तजि जात अंत नहीं आस की आस तेहि पास आवैं ।
महा आनंद नख मुश्क मोहन ईश जा सकल आनीश के शीश छावैं ।। १ ।।
तनु के माजि निह तत्त् वासा करै मिलै गुरुदेव तो भेव भावैं ।
नाम आराधना सुरति सुर साधना मिटै अंधकार उजियार आवैं ।
आपसे आपना देखु दीदारि भरि अगम औ निगम जेहि भेद गावैं ।
महा अनंद सुख सिंधु मोहन मनि वा दीप नेनन देखावैं ।। २ ।।

अंत—सुरति चढाये शीश सच्चिदानंद निहार ।
धरि गुर मारग ध्यान गगन पर आसन मारे ।
करि तुरिया भवन निवास दास जहाँ सन्त विचारे ।
महा आनंद मोहन सिन्धु वुन्द जिय तहाँ सिधारे ।। ५४ ।।
सतगुर दीनानाथ दयाजेन पर करौ ।
हरौ विषय तन सूल कम कर सिर धरो ।।
अधमोचन प्रभु का नाम धाम तुम्हरो बडो ।
महा आनन्द करत पुकार मुश्क मोहन द्वारा परो ।।५५।।

विषय—भक्ति और ज्ञान वर्णन ।

संख्या २९१ नीति सदोह, रचयिता—महादेव (स्थान—सहिजादपुर), कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—६ × ८।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—५७६, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२४ वि०, लिपिकाल—सं० १९३७ वि० ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। अथ नीति सदोह लिख्यते ।।

दोहा

लंवोदर दामोदर गिह वंदो सूर सदोह ।
वंदि असुर गुरु गुर विदुर रचौ नीति सदोह । १
हैकत करम अधीन और वुद्धि करम अनुसारि ।
तौभि सुजन जो कछु करे काज अकाज विचारि । २

जतन करै तो धन मिलै दैव अधीन न होइ ।
कारज सिद्ध न जतन करि तौ तेहि दोष न कोइ । ३
जतन करै कारज सरै किये मनोरथ नाहि ।
कबहु न सोवत सिंह के मुख मे मृगा समाहि । ४
करम पराक्रम सम होऊ घट बढ क्यो कहिजाइ ।
तौभि पौरुषी जस लहे अजस लहै अलसाइ । ५
आलसवस सरवस नसै हँसै उसै पुनि लोग ।
आलस तजि धरि धीर करु निज भरसक उद्योग । ६
मनुषन तनमे बसे आलस शत्रु महान ।
उद्यम सम भाई नही करत अमित दुख हान । ७

अंत—'महादेव' मतिमद ह्वै रच्यौ नीति सदोह ।
नहि अचरज जो पै कियो कृष्ण कृपा सदोह ।।४६६
.o. .o. .o
महादेव वह ग्रथ कै बीन बीन के भाव ।
दोहा छदहि मे धरयौ कछु निज युक्ति प्रभाव ।४६८
.o o .o
उनइस से चौबीस के मान मास भादोह ।
बदी द्वादशी मे भयो पूरण 'नीति सदोह' ।४७०
सोरह कोश प्रयाग से पश्चिम गगा तीर ।
वसत ग्राम सहिजादपुर महादेव धरि धीर ।४७१
.o .o o
अनुमति लै श्री कृष्ण की छपवायो प्रिय ग्रथ ।
लिख्यो ये राधाकृष्ण ने राजधर्म को पथ ।४७३

इति श्री मत्कृष्ण कृपा पात्र क्षत्री वशोदभव मदनगोपालात्मज महादेव कृत नीति सदोह सपूर्णम । सवत् १६३७ ।।

विषय—नीति सबधी उपदेशो का वर्णन ।

सख्या २६२. शृगार शतक (?), रचयिता—महेश, कागज—देशी, पत्र—११, आकार—६।। × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—२६४, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० जगप्रसाद जी पाडेय, ग्राम—कुरेडीह, डाक०—रानीगज, जिला—प्रतापगढ ।

आदि— .मदधुनि किकिनी की औरे सरसाई है ।
गोरे गोल कोमल कपोल पै प्रस्वेद कन बुद से सुधा के ठरै कैसी छवि छाई है ।
छूटी लट कुच पै सुदेति शोभा असी मानो शशि पै गिरीश ही के नागिनि चढाई है ।।१४।।
पुन. । आयो ऋतुराज सग साजिकै समाज ऐसो कैमे कै बटोही बाट बाट भटकत है ।
भौंरनि की गुजनि सुकोकिल की कलख सुनिकै 'महेश' हिय बीच खटकत है ।
कौन ऐसो हितू कहै ब्रज को हवाल जाय आय आय जिय अधरात खटकत है ।
सुमन अनार कचनार झूमि झूमि झूमि डारन ते मानो ह्वै अगारे लटकत हैं ।१५।।
कूलन मै कुज मै कछारन मै जहा देखो फूले है पलास मजु सुमन सोसायो है ।
भौरन की भीर ठौर ठौर गूजि गूजि उठै कूकि उठै कोकिल करेज वरसायो है ।
ऐसी समय सोष या सयानी लीजै सबै अग अग योवन 'महेश' सरसायो है ।
मदन दोहाई कोई मान मति कीजो भाई कुँवर कन्हाई सो वसत ऋतु आयो है ।।१६।।
पुन: । वनन मे बेलिन मै कुजन लतानन मै कहत वनै न छवि छाई है उछाह की ।
पिक मै पलास मै अनार कचनारन मै बगरै विलोकिये निकाई राह राह की ।

ऐसी समय आवना 'महेश जू' विदेशै कहूं जाव तो बतावो भला मेरेहू पनाह की ।
गुजनन भौंर अरु कोकिल न कूकत पे वजत बधाई है बसत पातशाह की ।१७।।

अंत—

वह मद गयद की चाल चलै सु महाउत मैन की हूलन मे ।
सड़कै जनु साकडे की पग मे छवि यो दहरात दुकूलन मे ।
तन तो नथुनी मे लोभाय रह्यो मन झूलै बुलाक की झूलन मै ।
अति लोचन लालची मेरे 'महेश जू' डूबि गयो रस कूलन मै।।१००।।

पुनः

चुप ह्वैहै चुरी तो 'महेश' भले भुज राखिहो डारि गरे कसिकै ।
सब भूषण आज मनाय लेहों हिय हार हमेल हिये लसिकै ।
करिहै कहा लाज कहा करिये सब काज विगारत है वसिकै ।
गहियो छिन मौन यो जागती है विनती करै पायल सो हसिकै।।१०१।।

कवित्त

सोहत सुरग सारी मोतिन किनारी जडी सौरभ तरग उठै अगन तेवारीहै ।
कहत 'महेश' बार बार बलिहारी तेरी चद पै अनद है

—अपूर्ण

विषय—शृगार काव्य ।

संख्या २६३क जीवगति, रचयिता—मातादीन शुक्ल, निवासस्थान—अजगरा ग्राम (प्रतापगढ), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—१० × ४। इच, पक्ति (प्रति पष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—५८, पूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६१० वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ जीवगति

दोहा

राम सकल गुन धाम के करि कर जोरि प्रनाम ।
जीवन्ह की कछु . लिषे पुरान गुन ग्राम । १
अहकार मति ते भयो पुरुष देह मो कर्म ।
सोहकार अनादि है माया भव जय भर्म । २
सदा ब्रह्म छाया जुत सोय । तपत लोह गोलक सम होय ।
सो मिलि देह चेतना पावै । अह जीव ए.. . ।
ताहि हेतु एह भव ससार । अहकार वस दुष सुष भार ।
निर्विकार आतमा ध्रुव आहि । मिथ्या . . . . . ।
. . . .

—खडित

अंत—

काल पास सव भय छन माहीं । वूझेह वात कहत कछु नाही ।
पास हाथ जम दूतन देषी । अतुल भीत तव लहत विसेषी ।
दसन नयन नष केस विसाला । महिष रूढ वहु भाति कराला ।
कोटिन्ह जतन करत सव कोई । छन मह जीव हरत जन सोई ।
भौतिक देह छाडि वहु पीरा । करि प्रवेश जातना सरीरा ।
व्याकुल चलत अन्त जल छोडे । तदपि दूत मारत तन कोडे ।
जात जीव सव छाडि अनाथा । पाप पुन्य दुष सुष प्रद साथा ।।

दोहा

सहस उन लछि जोजनौ पथ जात जम पाहि ।
दूत वाधि लेइ जात है तीनि मुहूरत माहि ।

इति जीव गति ।

माधो तारो दीन नर सुनो कुसल का देर ।
सब प्रभुता को पद गन्यो ढरयो अरज पगनेर । १
एक एक अछर पढ़ै एक एक तजि देइ ।
या दोहा मो नाम कुल देस ग्राम लषि लेइ । २

संवत १६१०

विषय—जीवगति वर्णन ।

संख्या २६३ख ज्ञान दोहावली, रचयिता—मातादीन शुक्ल, निवासस्थान—अजगरा (प्रतापगढ़), कागज—देशी, पत्र—८, आकार—८॥ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, प्रकाशित हो चुका है, जग बहादुरीय यंत्रालय बलरामपुर द्वारा, परिमाण (अनुष्टुप)—१०४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६०३ वि०, मुद्रणकाल—सं० १६२२ वि०, प्राप्तिस्थान—राज पुस्तकालय, जिला प्रतापगढ़, प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ ज्ञान दोहावली लिख्यते ॥

दोहा

माधो तारो दीन नर सुनो कुशल का देर ।
सब प्रभुता को पद गन्यो ढरयो अरज पगनेर ।

अथ ईश्वर गति ॥

रन वन व्याधि विपत्ति मो वृथा डरै जनि कोय ।
जो रक्षक जननी जठर सो हरि गयो न सोय । १
मनुज विविधि भेषज करत व्याधि न छाडत साथ ।
खग मृग बसत अरोग्य जन हरि अनाथ के नाथ । २
जो जाके बस मो परै तासो कहा बसाय ।
ताको सुख दुख देन मो ईश्वर एक सहाय । ३
बात बहत रवि तपत घन बरषत तरु फल देतु ।
इच्छा ते जेहि ईश की करहू नाहि ते हेतु । ४
जाकी रक्षा जाहि विधि हरि तसी मति देत ।
दै चपेट बडवाल करहि लरकहि गोद सब लेत । ५
हरि इच्छा कहु दोष गुन गुनै दोष कहु होय ।
अगिनि दाह जिमि शरदहि जिमि जवास घन जोय । ६

अंत—एक एक अक्षर पढ़ै एक एक तजि देय ।
आदिहि दोहा नाम कुल देश ग्राम लषि लेय ।१६
सम्वत एक सहस सहित नव सै तीनि समेत ।
रची ज्ञान दोहावली चैत पचमी श्वेत ।१७

इति ज्ञान दोहावली समाप्ता सम्वत १६२२

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन ।

रचनाकाल

सम्वत एक सहस सहित नव सै तीनि समेत ।
रची ज्ञान दोहावली चैत पचमी श्वेत ।१७

संख्या २६३ग ज्ञान दोहावली, रचयिता—मातादीन शुक्ल, निवासस्थान—अजगरा ग्राम (प्रतापगढ़), कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—९ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप)—६८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६०३ वि०, मुद्रणकाल—सं० १६३१ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवमूर्ति दुबे ग्राम—सोनारी, डा०—बरसठी, जिला—जौनपुर ।

आदि—ज्ञान दोहावली श्री महाव् अजीत सिंह साहेब ने श्रीमत्सुकुल मातादीन से बनवा कर स्थानग लखनऊ मतवग्र नवलकिशोर में छपवाया संवत् १९३१ श्री गणेशाय नमः अथ ज्ञान दोहावली लिख्यते ।

दोहा

माधो तारो दीन नर सुनो कुशल का देर ।
सब प्रभुता को पद गन्यो ढग्यो अरज पगनेर ॥

अथ ईश्वर गति

रन बन व्याधि विपत्ति मो वृथा डरै जनि कोय ।
जो रक्षक जननी जठर सो हरि गयो न खोय १
मनुज विविधि भेषज करत व्याधि न छाडत साथ
खग मृग बसत अरोग्य बन हरि अनाथ के नाथ २
जो जाके वश मो परै तासो कहा वशाय
ताको सुख दुख देत मो ईश्वर एक सहाय ३
बात बहत रवि तपन घन बरषत तरु फल देतु
इच्छा ते जेहि ईश को करहु ताहि तं हेतु ४
जाकी रक्षा जाहि विधि हरि तैसी मति देत
दै चपेट वह बालकहिं लघुहि गोद सब लेत ५
हरि इच्छा वह दोष गुन गुनै दोष कहु होय
अगिन दाह जिमि शरप तहि जिमि जवास घन तोय ६

अंत—गुन अवगुन तस लखि परै जस जासों मन लीन
कमल मुदित रवि तापहूँ निरखि सुधाकर दीन १४
पुत्र चीन्हिये वट्ठई दुर्दिन परे कलत्र
काज परे सबको लखिय विपति चीन्हिये मित्र १५
एक एक अक्षर पडे एक एक तजि देय
आदिहि दोहा नाम कुल देश ग्राम लखि लेय १६
संवत् एक सहस सहित नव सै तीनि समेत
रचो ज्ञान दोहावली चैत पंचमी श्वेत १७

इति ज्ञान दोहावली समाप्ता प्र० आषाढ वदी ५

गति	ईश्वग	कालग	दानग	कर्मग	स्वभावग	नीग	६
दो०	१२	८	१०	६	१९	१७	७२

विरहानल ज्वाल तें बाल बेहाल सुनो तेहि काल जो हाल करी
लिखि शेश महेश हुताशन श्वेन निशाचर पूजन ध्यान धरी
सुनिकै कछु और धपी गरुड भस्मासुर वारिध व्याधि हरी
कहि दीन प्रवीन मो अर्थ कर जिनकी जग मो अतिवृद्धि खरी

इति संवत १९३१ लिखितये नागर ब्राह्मण मुरलीधर शुभ भूयात्

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

रचनाकाल

संवत एक सहस सहित नव सै तीनि समेत ।
रचो ज्ञान दोहावली चैत पंचमी श्वेत ॥१७॥

संख्या २६३ख. नानार्थ नव सग्रहावली, रचयिता—मातादीन शुक्ल, निवासस्थान—ग्राम–अजमरा (प्रतापगढ), कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप)—३८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, मुद्रणकाल—सं० १६३१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० शिवमूरति जी दुबे, ग्राम–सोनाई, डाक०–बरमेठी, जिला–जौनपुर ।

आदि—

....................नूर ६ रन १० ॥

१ २ ३
दानि बरको अन्न घर को पूर चद को शरन
४ ५ ७
बांक नाम को देवधाम को शब्द गध को हरन
८ ६ १०
पापि जन कह जात तन बर कौन है कह मरन
तीनि अच्छर को कह्यौ कवि सकल उत्तर करन ८४
२० २
करन काह नष्ट को कहत वरन शिव वाचक को है
३
आखर कवन प्रसिद्ध बचन निषेध कर जो है
४ ५
नाथ साथ को रहत कवन इन्द्रिन को नायक
६ ७
को जात्रा को नाम कवन थल हर सुखदायक
८
करि बिचार चित मो धरहु काह सकल बल को शामन
उत्तर करण कहि दीन यह कसन सर तन भग मन ८५
गम नाग १ म २ न ३ गन ४ मन ५ गमन ६ नग ७ गमन ८ मग न ६

अथ पहेली

देह रहित मनसिज नही कन्या सुत नहि व्यास ।
भूत नही लागै सबहि बुड़ते होइ निरास ८६ जाड़ा
यह अचरज कहि दीन लखि द्वोय स्वभाय द्वोय भाय ।
बोलय एक नहाय कै एक ताप बतलाय ८७ नगारा

अंत— कसेरी

माधो तारो दीन नर सुनो कुशल का देर
सब प्रभुता को पद गन्यो ठरयो अरज पग नेर १००
एक एक अच्छर पढे एक एक तजि देय
यह दोहा ये नाम कुल देश ग्राम लखि लेय १०१
सेवर साज बराबक चावरी मूगवरी रिकवों छवि सारैं
काँद परो रघुई तोरई कद्दू साग भया कटहार को टारैं
खोआ औ खाँड खराब करैं दधि दूध महो लहि कौन विचारैं
दीन सुधारि अरारि को दारि द्वै चारि जौ आमि टिकोरहि डारैं १०२

इति नानार्थ नव सग्रहावली सपूर्णम सवत १६३१ मिती वैशाख शुक्ला ५ लिखतं नागर ब्राह्मण मुरलीधर शुभम्

विषय—दृष्टिकूट, पहेली तथा अन्य अनेक अर्थयुक्त पदो का सग्रह ।

संख्या २६३ड. रस सारिणी, रचयिता—मातादीन शुक्ल, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६३/४ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—१३६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ रस सारिणी लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

मदन कदन सुत गज वदन विघ्न हरन जन पाल।
एक रदन गुनगन सदन पाहि बाल ससि भाल ॥ १ ॥
उदाहरन संक्षेप तें जासों बढ़ै न ग्रंथ।
बाल हेत रस सारिणी भाषा करी सुग्रंथ ॥ २ ॥

॥ अथ नवरस ॥

रस शृंगार अरु हास्य कहि करुणा रौद्र अरु वीर।
भयानक बीभत्स पुनि अद्‌भुत शांतहि धीर ॥ ३ ॥

॥ उदाहरन ॥

लक्ष्मी लषि लोभी जोई हसत निगम को पेष।
शोक करत मष पशुन्हसो क्रोधो क्षत्रिन्ह देषि ॥ ४ ॥
पुलकित लषि रावनँहि रथ बधि चोराय अति भीत।
म्लेच्छ रुधिर जुत छिति वसन सो सहाय पट पीत ॥ ५ ॥
रस प्रधान शृंगार है कहौं भेद कछु तासु।
आलंबन उद्दीपनो द्वय विभाव है जासु ॥ ६ ॥
रस उपजै आलंब जेहि आलंबन सौ विभाव।
उद्दीपन सौ विभाव है जो रस रुचिहि बढाव ॥ ७ ॥

अंत— शठ लछन

कोटिन कपट उपाय करि रमैका नायिका साथ।
चतुर व्याज विधि सो तिन्है शठ भाषत कविनाथ ॥८६॥
सकल अचार रहित अभय उपपति नायक होय।
वेश्याभोग रसिक सदा वैसिक जानहु सोय ॥ ६ ॥
उत्तम मध्यम अधम ए वशिक तीनि प्रकार।
उतम जानहु करहि जो कुपित नारि उपचार ॥१०॥

॥ अथ विरह की दस अवस्था ॥

अभिलाषा चिंता स्मरन गुन कीर्तन उदवेग।
कहि प्रलाप उन्माद रुज जडता निधन अनेग ॥१०॥

॥ अथ आठौ सात्विक भाव ॥

स्तंभ स्वेद रोमांच स्वरभंग कंप जो जानि।
विवरन आसू प्रलय वसु ८ सात्विक भाव बषानि ॥१०१॥
निंदक दुर्जनजद.... . ...

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—नवरस और नायिकाभेद का संक्षेप में वर्णन।

संख्या २६३च. रस सारिणी, रचयिता—मातादीन शुक्ल, निवास स्थान—अजगरा (प्रतापगढ), कागज—देशी, पत्र—११, आकार—६॥ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, जंग बहादुरसिंह यंत्रालय, बलरामपुर से प्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप)—१४३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०३ वि०, मुद्रणकाल—सं० १९२२ वि०, प्राप्तिस्थान—राज पुस्तकालय, किला प्रतापगढ, जिला-प्रतापगढ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ दोहा ॥

मदन कदन सुत गजवदन बिघ्न हरन जन पाल ।
एक रदन गुन गन सदन पाहि बाल शशि भाल । १
उदाहरन सक्षेप अति बढै न जाते ग्रथ ।
बाल हेतु रस सारिणी भाषा रची सुपथ । २

अथ नवरसा ॥

रस शृंगार अरु हास्य कहि करुणा रौद्र पुनि वीर ।
भयानको वीभत्स पुनि अद्भुत शातहि धीर । ३

॥ उदाहरन ॥

लक्ष्मी लखि लोभा जोई हसत निगम को पेखि ।

मध्य—शोक भरत भख पशुन्ह को क्रोधित क्षत्रिय देखि । ४
पुलकित रत लखि रावनहि दधि चोराय अति भीत ।
म्लेच्छ रुधिर जुत क्षिति दशन सो सहाय पटपीत । ५
रस प्रधान शृंगार है कहौं भेद कछु तासु ।
आलबन उद्दीपनो है विभाव द्वै जासु । ६
रस उपजै आलबन जेहि आलबन सु विभाव ।
सो विभाव उद्दीपनो जो रस रुचिहि बढाव । ७
नायिकादि आलवनो उद्दीपन रितु माल ।
प्रियजन भूषन काव्य वन विधु चदन स्वर ताल । ८

अंत—

अथ विरह की दश अवस्था

अभिलाषा चिन्ता स्मरन गुन कीर्तन उद्वेग ।
अरु प्रलाप उन्माद रुज जडता निधन अनेग ।९९
निदक दरजन जदपि है तदपि दशा नहि योग ।
पशु खर शूकर हरन भय कृष्ण तजत नहि कोय ।१००
एक सहस नव से त्रिजुत सवत मिति वदि ज्येठ ।
तेरसि तिथि शनि दिन रचो रस सारिणी सुश्रेष्ठ ।१०१
माधो तारो दीन नर सुनो कुशल का देर ।
सब प्रभुता को पद गन्यो हरयो अरज पगनेर ।१०२
एक एक अक्षर पढै एक एक तजि देय ।
या दोहा मो नाम कुल देश ग्राम लखि लेय ।१०३

इति रस सारिणी पूर्तिमगात्. . . . सम्वत् १९२२ ॥

विषय—नवरस विशेषकर शृंगाररस का वर्णन ।

रचनाकाल

एक सहस नव सै त्रिजुत सवत मिति वदि ज्येष्ठ ।
तेरसि तिथि शनि दिन रची रस सारिणी सुश्रेष्ठ ।१०१

सख्या २६३छ रस सारिणी, रचयिता—मातादीन शुक्ल, निवासस्थान—अजगरा (प्रतापगढ), कागज—देशी, पत्र—१९, आकार—८ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप)—१६८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९०३ वि०, लिपिकाल—स० १९३१ वि०, प्राप्तिस्थान—प० शिवमूरति दुबे, ग्राम—मोनाटे, डाक०—बरसठी, जिला—जौनपुर ।

आदि— रस सारिणी

श्री मद्बाबू अजीत सिह साहेब ने श्रीमत्सुकुल मातादीन से बनवाकर स्थान लखनऊ मुंशी नवलकिशोर के यत्रालय में छपवाया सवत् १९३१

श्री गणेशाय नमः दोहा

मदन कदन सुत गज बदन विघ्न हरन जन पाल
एक रदन गुन गन सदन पाहि बाल शशि भाल १
उदाहरन सक्षेप अति जाते बढ़ै न ग्रथ
बाल हेतु रस सारिणी भाषा रची सुपथ २

अथ नवरसा

रस शृगार अरु हास्य कहि करुण रौद्र पुनि वीर
भयानको वीभत्स लहि अदभुत शातहि धीर ३

उदाहरन

लक्ष्मी लखि लोभी जोई हसत निगम का पेखि
शोक करत मख पशुन्ह का क्रोधित क्षत्रि न देखि ४
पुलकित रन लखि रावनहि रुधि चोराय अति भीत
म्लेच्छ रुधिर जुत क्षिति दशन सो सहाय पटपीत ५
रस प्रधान शृगार हे कहो भेद कछु तासु
आलवन उद्दीपनो हे विभाव द्वै जासु ६
रस उपजै आलब जेहि आलवन सुविभाव
सो विभाव उद्दीपनो जो रस रुचिहि बढाव ७
नायकादि आलबनो उद्दीपन ऋतु माल
प्रिय जन भूषन काव्य बन विधु चन्दन स्वरताल ८

अथ विरह की दश अवस्था ।।

अभिलाषा चिन्ता मरन गुन कीतन उद्वेग
अरु प्रलाप उन्माद रुज जड़ता मिलन अनग ९९
निदक दुरजन जदपि है तदपि कहा नहि गाय
पशु खर शूकर चरनभय वृथा तजन नहिं दोय १००
एक सहस्र नव से त्रिजुत सवत मिति वदि ज्येष्ठ
तेरसि तिथि शनि दिन रची रस सारिणी सुश्रेष्ठ १०१
माधो तारो दीन नर सुनो कुशल का देर
सब प्रभुता को पद गयो ढरयो अरज पगफेर १०२
एक एक अक्षर पढ एक एक तजि देय
या दोहा मो नाम कुल देश ग्राम लखि लेय १०३

इति रस सारिणी पूर्तिमगात् आषाढ वदी १३ सवत् १९३१
विषय—नवरसो एव उनके भेदाभेद का वर्णन ।

रचनाकाल

एक सहस नव से त्रिजुत सवत मिति वदि जेठ
तेरसि तिथि शनि दिन रची रस सारिणी सुश्रेष्ठ १०१

सख्या २९३ज. राम गीताष्टक, रचयिता—मातादीन शुक्ल, निवासस्थान—अजगरा (प्रतापगढ), कागज—देशी, पत्र—७, आकार—८॥ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, जग बहादुरीय यत्रालय, बलरामपुर से प्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप)—९१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, मुद्रणकाल—१९०२ वि०, प्राप्तिस्थान—राज पुस्तकालय, किला प्रतापगढ, प्रतापगढ़ ।

आदि—ईश्वर की दया सें यह अपूर्व ग्रथ राम गीताष्टक नामक श्री ५ महाराज अजीत सिह साहेब ने श्री मत्सुकुल मातादीन से बनवा कर नगर बलरामपुर मे जगबहादुरीय यत्रालय मे. . .छपवाया सम्वत् १९२२ श्री गणेशाय नमः अथ राम गीताष्टक लिप्यते ।। ।। सोरठी रागे ।।

रघुवर प्रेम कसे बनि आवै ।
जब निज तन सुधरन नर तन धरि सो सपनेहु नहि भावै । १
सहन शील सतोष दया हरि भजन भलो श्रुति गावै ।
कोह क्रूरता द्रोह मोह तन पोह नही मन धावै । २
ठवर अवर दिशि गमन अवर दिशि कवन भवन पहुँचावै ।
निज अचरज विपरीत देखि एह रीति भीति सतावै । ३
नयन कोन मम आर निरखि सुनिके निहोर अपनावै ।
कौतुक तोर मोर न थोर हित अब प्रभु ओर न लावै । ४
अममजस सब भाँति पाप करि दाप ताप तिहुँ तावै ।
श्री रघुनाथ अनाथ नाथ बिनु को हिय तपनि बुझावै । ५
विषय लीन मति हीन दीन की बिगरी कवन बनावै ।
अगुन गीध गृह गज गनिका गति सुनि भरोस दृढ आवै । ६

अत—

हे मन मरत नाहक धाय ।
दुख हरन सुख करन रघुवर चरन सरन विहाय
विषय आशा फाग फसि इत उतहि जनम गवाय
रोग शोग वियोग व्याकुल भोग योग न आय । २
काज कछुक न सरत शठ हठ करत पुनि बिललाय ।
निलज लजत न नेकु फिरि फिरि गाइ गीतहि गाय । ३
पाप करत न डरत हरिहर पट तरत बवराय ।
कहाँ सनि कहँ आस कन कर धरत जो वहि जाय । ४
करव कछुकन तरव जातन सरव सुख अधिकाय ।
हाल धलआ देह माँह कहै नाजि तोरि विकाय । ५
अबहि ते अकुलान ग जम जातना नियराय ।
फस्यो वृक बिनु मेढ पाये पाल पहुको आय । ६
उचित शम दाम दान जप तप निगम आगम गाय ।
आपु सम सब लोक जानहु सहज शोक नसाय । ७
अजहु भल है भजहु चित दै तजहुँ जग की वाय ।
दीन जानि स्वतीन करिहै कहुँ कोशल राय । ८

इति सम्वत १९२२ आषाढ लिखितय राम गीता ॥

विषय—भक्ति तथा आत्मप्रबोध वर्णन ।

संख्या २६३क राम गीताष्टक, रचयिता—मातादीन शुक्ल, स्थान—अजगरा (प्रतापगढ), कागज—देशी, पत्र—११, आकार—६ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—८८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० शिवमूर्ति दुबे, ग्राम—मोनाई, डाक०—बरसेठी, जिला—जौनपुर ।

आदि—रामगीताष्टक श्री महाराज आजीत सिंह साहेब ने श्रीमसुकुल मातादीन से बनवा-कर मुंशी नवलकिशोर प्रेस के यन्त्रालय में छपवाया ।

संवत् १९२१

श्री गणेशाय नम ॥ अथ रामगीताष्टक लिख्यते ॥
रघुवर प्रेम कैसे बनिआवे
जब निज तन सुधरत जन तनधरि सो सपनेहुँ नहि भाव १
सहनशील संतोष दया हरिभजन भलो श्रुति गावै
कोह क्रूरता द्रोह मोहतन पोह नहीं मनधावै २
ठवर अवर दिशि गमन अवर दिशि कवन भवन पहुँचावै
निज अचरज बिपरीत देखि एह रीति सतावै ३

नयन कोन मम ओर निरखि सुनिकै निहोर अपनावै
कौतुक तोर मोर न थोर हित अब प्रभु भोर न लखै ४
असमजस सब भाँति पापकरि दाप ताप तिहुँ तावै
श्री रघुनाथ अनाथ नाथ विनु को हिय तपनि बुझावै ५

अंत—हे मन मरत नाहक धाय
दुखहरन सुख करन रघुवर चरन सरन विहाय
विषय आसा फास फँसि इत उतहि जनम गँवाय
रोग शोग वियोग व्याकुल भोग योग न आय २
काज कछुक न सरत शठहठ करत पुनि चित लाय
निलज लजत न नेकु फिरि फिरि गाइ गोर्ताह गाय ३
पाप करत न डरत हरिहर पट तर ववराय
कहाँ मनिकन ओस क न कर धरत जो बहिजाय ४
करव कछुकन तरव जाचत सरव सुख अधिकाय
हाल घलुआ देंह मोहि कहै नौजि तोर विकाय ५
अर्बाह ते अकुलात गैजम जात नौ नियराय
फरयो वृक विनु मेढ खाये पाल पहुँचो आय ६
उचित शम दम दान जप तप निगम आगम गाय
आप सम सव लोक जानहु सहज शोक नशाय ७
अजहुं भलहै भजहु चितहै तजहु जग की वाय
दीन जान खलीन करिहै कवहुँ कोशल राय ८

इति संवत् १९३१ लि० ना० मुरलीधर

विषय—भक्ति एव ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या २९३ञ रामायण माला, रचयिता—मातादीन शुक्ल, निवासस्थान—अजगरा (प्रतापगढ), कागज—देशी, पत्र—२३, आकार—९×५॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप)—१७४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९९६ वि०, मुद्रणकाल—स० १९३१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० शिवमूरति जी दुबे, ग्राम—मोनाई, डाक०—अमेठी, जिला—जौनपुर ।

आदि—यह अपूर्व ग्रथ रामायण माला नामक श्री ५ मद्दाव् अजीत सिह साहेव ने श्री मत्सुकुल मातादीन से बनवाकर स्थान लखनऊ मतवअ मुशी नवलकिशोर मे छपवाया संवत १९३१

श्री गोपाल चरन सरन विघ्न हरन हिय आनि
हरिगुन गन वरनन करो होय सकल अघहानि

चौपाई

मधु शुचि ग्रह तिथि अदिति वलीना दशरथ गृह नर तन हरि लीना
घर घर बाजे अनद वधाये अमित दान महि देवन्ह पाये

दोहा

कौशल्या के राम सुत भरत केकई जात
लछुमन अरु शत्रुघ्न द्वौ लहो सुमित्रा मात
रामचंद्र अरु लखन तें वाढी प्रीति अपार
भरत अवर शत्रुघ्न तें पिड भाग अनुसार

चौपाई

कछु दिन मह मुनि साथ सिधारे मारग मध्य ताडुका मारे
कौशिक मख रक्षा करि हेतू असुरन वध्यो भानकुलकेतू
गौतम नारि तारि रघुनाथा मिथिलापुर पहुँचे मुनि साथा
भव धनु भंजि विवाह्यो सीता परशुराम कर मद अपनीता

दोहा

जनक सुता पट वरष को पंचदश राम
करि विवाह आए अवध चतुर वध संग वाम

चौपाई

बारह वरस बसत पुरवासा राजदेव की परी प्रतीता
भरत मात [illegible] वर नृप ते लीना
चौदह वरस राम बन रहही भरत नरेश सिंहासन लहही
सुनि पितु वचन चले बन रामा संग भये लछिमन अरु वामा

अंत——राम राज करि दश सहस वरिस सिया छिति लीन
उदासीन ह्वै समय लखि राज तनय कह दीन
चतुर सुतन्ह आठौ दिशन्ह जथा उचित दै राज
निज पद गये विमान चढ़ि रघुपति सहित समाज
उत्पति विस्तर कथा जत रामायन वहु ग्रंथ
वरिस मास तिथि उक्ति है या सो अधिक सुपंथ
अवतारन के भेद ते कथा भेद वहु होय
सकल सत्य निज निज [illegible] शंका करे न कोय
लघु विशाल सो भेद नहि वस्तु भली जौ होय
यद्यपि पत्तण बडे [illegible] आम्र तजत नही कोय
जोजन चारि प्रयाग ते उत्तर अजगर ग्राम
ता सुइनहु अवधते दक्षिन जह मम धाम
माधो [illegible] दीन [illegible] कुशल [illegible] देर
[illegible] नेर
[illegible] देय
या दोहा सो नाम [illegible] लखि लेय
अट्ठारह [illegible] मिति वैशाख
रामायन माला [illegible] सित पाष

इति श्री रामायन माला संपूर्णम ।।

विषय——[illegible] ।

[illegible]

अट्ठारह स [illegible] संवत मिति वशाख
रामायन माला रची [illegible] सित पाष

विशेष ज्ञातव्य——[illegible] तथा अयोध्या से आठ योजन दक्षिण स्थित है । [illegible] की रचना [illegible] थी ।

प्रस्तुत ग्रंथ [illegible] लिखा गया है ।

प्रस्तुत ग्रं[illegible] तथा [illegible] नव संग्रहावली [illegible] है ।

संख्या २६३ट [illegible] माला, [illegible]——[illegible], निवासस्थान——अजग[illegible] (प्रतापगढ़), कागज——देशी, [illegible] पंक्ति (प्रति पृष्ठ)——१३, [illegible] परिमाण (अनुष्टुप्)——७०८, पूर्ण, रूप——प्राचीन [illegible], लिपि——नागरी, [illegible] लिपिकाल——सं० १९२० वि०, प्राप्तिस्थान——[illegible] ।

आदि——।। श्री गणेशाय नमः ।। अथ रामायण माला ।।

:

॥ दोहा ॥

श्री गोपाल चरन सरन विघ्न हरन हिय आनि ।
हरि गुन गन वरनन करो होय सकल अघ हानि ॥

चौपाई

मघ शुचि ग्रह तिथि अदिति वलीना   दशरथ गृह नर तन हरि लीना ।
घर घर बाजे अनद बधाए   अमित धन महि देवन पाए ।

दोहा

कौशल्या के रामसुत भरत केकई जात ।
लछुमन अरु शत्रुघ्न द्वौ लहो सुमित्रा मात ।
रामचद्र अरु लखन ते बाढी प्रीति अपार ।
भरत अवर शत्रुघ्न तें पिड भाग अनुसार ।

चौपाई

कछु दिन मह मुनि साथ सिधारे   मारग मध्य ताड़ुकहि मारे ।
कौशिक मख रक्षा करि हेतू   असुरन्ह वध्यौ भानु कुल केतू ।
गौतम नारि तारि रघुनाथा   मिथिलापुर पहुँचे मुनि साथा ।
भव सुनु भजि विवाह्यो सीता   परशुराम कर मद अपनीता ।

दोहा

जनक सुना षट वरिष की वरष पचदश राम
करि विवाह आए अवध चतुरवधु सग वाम ।
अत——नव सै छासठि वरस करि जनक सुता वनवास ।
पुत्र जुगल दै राम कह महि मिलि कीन निवास ।
राम राज करि दश सहस वरिस सिया छिति लीन ।
उदासीन ह्वै सकल लखि राज तनय कह दीन ।
चतुर सुतन्ह आठौ दिशन्ह जथा उचित दै राज ।
निज पद गयो विमान चढि रघुपति सहित समाज ।
जद्यपि विस्तर कथा जुत रामायण बहु ग्रथ ।
वरिन साम्य [illegible] उचित है या मो अधिक सुपंथ ॥
अवतारन्ह के भेद ते कथा भेद वहु होय ।
सकल सत्य निज निज विषय शका करै न कोय ।
लघु विशाल मो भेद नहि बस्तु भली जौ होय ।
जद्यपि पनस वडे वडे आम्र तजत नहि कोय ।
जोजन चारि प्रयाग ते उत्तर अजगरा ग्राम ।
तासु दून है अवध त दछिन जह मम धाम ।
माधो तारो दीन नर सुनी कुशल का देर ।
सव प्रभुता को [illegible] गन्यो ढरचो अरज पग नेर ।
एक एक अछर पढै एक एक तजि देय ।
या दोहा मो नाम कुल देश ग्राम लषि लेय ।
अट्ठारह सै छानवे सवत मिति वैशाख ।
रामायन माला रची एकादशि सिति पाख ।

इति श्री रामायन माला शपूर्णम ॥
विषय——रामचरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

अट्ठारह सै छानवे सवत मिति वैशाख ।
रामायन माला रची एकादशि सिति पाख ॥

संख्या २६३८. रामायण भाषा, रचयिता—माधोदीन शुक्ल, निवासस्थान—अजगरा (प्रतापगढ़), कागज—देशी, पत्र—११, आकार—१०×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५४, अपूर्ण (खंडित) रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—उन्नीसवीं शती, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—श्री पं० शीतलाराम त्रिपाठी, ग्राम व डाक—अजगरा, रानीगंज, जिला-प्रतापगढ़) ।

आदि—

पुर पहुचे मुनि साथा ।
सब धनु भंज किन्हेउ सीता । परसुराम का मद अपनीता ।

दोहा

जनक सुता षट बरिस की बरिस पंच दश राम ।
करि बिवाह आयो अवध चतुर बधु संग बाम ।

चौपाई

बारह बरिस बसत पुर बीता । राज देन की परी प्रतीता ।
भरत मात विधि बस बुधि हरना । कठिन जुगल बर नृप ते लीना ।
चौदह बरिस राम बन रहही । भरत नरेश सिंहासन लहही ।
सुनि पितु वचन चले बन रामा । संग भये लछमन अरु बामा ।
बरिश अठारह की रहि सीता । सत्ताइस के राम पुनीता ।

दोहा

तीनि दिवस जलपान करि चउथ दिवस फल खाय ।
शृंगबेर गंगा उतरि भारद्वाज पहँ जाय ।
चित्रकूट पचये दिन गयेऊ । नहि गिरि दशन बहुत दिन भयेऊ ।

दोहा

फिरि सुमंत पुर गति ते पहुंचे अवध मलीन ।
अति बेहाल सुत बिरह बस दशरथ तन तजि दीन ॥

अंत—जब से चौपाई ... लगि जनक सुता बरवास ।
पुत्र जन्म द्वै राम कहं गहि मिलि कीनि निवास ।
राम राज करि दश सहस बरिस सिद्ध किनि तीन ।
उदासीन होय समय लखि राजतनय कहं दीन ।
चतुर सुतन्ह आठो दिशन जथा उचित है राज ।
निज पद गयो विमान चढ़ि रघुपति सहित समाज ।
जद्यपि विस्तर कथाजुत रामायन बहु ग्रंथ ।
बरिस मास तिथि उक्ति है यासो अधिक सुपंथ ।
अवतारन्ह के भेद ते कथा भेद बहु होय ।
सकल सत्य निज निज विषय शंका करहु न कोय ।
जोजन चारि प्रयाग ते उत्तर अजगरा ग्राम ।
तासु दून है अवध ते दक्षिन जहं मम धाम ।
माधो तारो दीन नर सुनो कृपाल का देर ।
सब प्रभुता को पद मत्यो हरचो अरज पगनेर ।
एक एक अक्षर पढ़ एक एक तजि देय ।
या दोहा सो नाम कुल देस ग्राम लखि लेय ।
अठारह

. ।

—अपूर्ण

विषय—रामकथा वर्णन ।

संख्या २६४ भगवत गीता (भाषा), रचयिता—माधव, कागज—देशी, पत्र—६८, आकार—९ X ४॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—७१४, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० गुरु प्रसाद जी, ग्राम—धरमपुर, डाक०—परशुरामपुर, जिला—बस्ती ।

आदि—

.... ..भगवत गीता भव डारिनि धोई ।

दोहा

बंदौ व्यास बिसाल बुधि फुलित कमल अधियान ।
भारत रूपी तैल महू धारयौ दीपक ग्यान । २
तोत्र बेद कर कल्पतरु दास ते मुद्रा ज्ञान ।
दुहनहार गीता अमृत तव नमामि भगवान । ३
सर्व उपनिषध गाइ अरु दुहनहार जदुबीर ।
अर्जुन बच्छ सुभोगता ज्ञानी गीता छीर । ४

सोरठा

सुत बसुदेव मुरारि कंस और चडूर रिपु ।
देवकि आनद कारि नमो जगत गुरु कृष्न जू । ५

सवैया

भीषम द्रोण तटाजल जयद्रथ कोरु जहा नरसीरुह जानो ।
रवल्प सुग्राह कृपा बरधार तहा करन मरजाद प्रमानो ।
अस्वस्थाम बिकमकर दुर्जोधन व्यागर्नियो जिय जानो ।
सो उतरे निश्चै करि पाडव असे नदी हरि केवट जानो । ६

० ०. ०:

दोहा

गंगा बोल बचन वर पग चढ गिरिवृद ।
जास कृपा तेहि बदिए 'माधव' परमानद ।

० ०. ०

श्री कृष्णार्जुन सवादे अर्जुन विषादो नाम प्रथमोध्याय ।

अंत—दोष सहित निज धर्म लषि रहे न क्योहु त्यागि ।
दोष भरे आरभ सब धूम सहित ज्यो आगि ।४८
बुद्धि लगावै कहु नही जीते मन तजि आस ।
परम सिद्धि निःकर्म की पावै करि सन्यास ।४९
सिद्धि पाइ परब्रह्म को जैसे पावे सार ।
कहौ सुनौ सक्षेप सो नेष्टा ज्ञान विचार ।५०
जक्त रहे बधि सुद्ध सो धीरज सो मन धारि ।
सब्द आदि विषया तजै राग द्वेष को मारि ।५१
एकातहि लघु असन करि वाक काय मन जीति ।
ध्यान जोग ततपर सदा यह विराग की नीति ।५२
क्रोध काम वल दर्प अरु त्यागि देइ अतमेइ ।
ममता तजि निरमल रहै सांति ब्रह्म मे तेई ।५३
ब्रह्म पाइ परसन्न मन सोच करै नहि चाह ।
सब जीवन को सम लषै पावै भक्ति प्रवाह ।५४

विषय—गीता का भाषानुवाद ।

संख्या २६५. मदालसा, रचयिता—माधवदास कायस्थ—देशी, पत्र—८०, आकार—६॥ × ४॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—११०५, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७५८ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—श्री पं० रघुनंदन पांडेय, ग्राम—चांदि, डाक—अमेठी, जिला—मुलतानपुर)।

आदि—श्री गणेशाय नम श्री सरस्वत्याय नम श्री रामाय नम ॥ अथ मदालसा लिख्यते ॥

> इह इतिहास को मन म भाया ॥ जसो जो कछु कहिवो आयो ॥
> अब गाऊ मदालसा कहानी । सारा अवतरन तास समाना । १
> सो मारकंडेय पुरान म गायो । जउन पिता अपना समझायो ।
> येक भयो नर है ह वंश माही । सज्जन सा छाना नाही । २
> ताके जुरिविधुज भयो कुवारा । सर्व अति प्रवीण शस्त्र कु सभारा ।
> सो क्रीड़न फिर अहन प्रकारा । जसा बाबा हाड़ राय हारा । ३
> अनेक राजपुत्रन के माही । खेलत रितिधुज चिता नाही । २
> देखि तिनकी क्रीडा निवारा । आय दोउ नाग नाग कुवारा । ४
> होइ ब्राह्मण रूप सुजाना । सजि सिगार तरुण वय बाना ।
> बैठे रिपिवृज निकट ज आई । तिनका मान दिया अधिकाई । ५
> जानि विप्र सुर पूजा ठानी । सरधा अति प्रीति प्रवानी ।
> यो प्रातकाल उठि खबर आवहि । स रा समय निज धाम सिधावहि । ६

अंत—

> इह जु मारकंडे पुराना । ताके तीन छंद परिमाना ।
> ताके तीन खंड मझारा । कह्यो मदालसा चरित्र उदारा । ४
> सो इह प्राकृत करि गायो । जब दूजन मरा चित भ्रमायो ।
> जे चित कु स्वभाव सिरजनहारा । ता पावै कम जात पसारा ।
> जो पुतरी कु बाजीगर नमावै । ता मटको कसे बेनहि पावै ।
> नही तरधोवा कहा बखाना । कैसे जाग्र अधिरल लाला । ६
> भोगीन में भोगी सिरदारा । सो कहा जोग को नहि विचारा ।
> जानि अजानि कछु कह्यो विचारी । अब हरि भरि चूक निवारी । ७
> ज्यो २ नचावे रामजी त्यो नाच माधौ दासा ।
> श्री दामोदर के सिष को राम तुमारा आस । ८ ।

इति श्री मदालसा कथा संपूर्न समाप्ता   सं० १७५८ ॥

विषय—रानी मदालसा की कथा का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ मारकंडेय पुराण के तीन खंडों में मदालसा चरित्र का पद्यानुवाद है जिसे रचयिता ने "सो इह प्राकृत करि गायो" में गाया हुआ बताया है।

संख्या २६६. शृंगार लतिका (सटीक), रचयिता—मानसिंह द्विज देव (राजा मान सिंह, अयोध्या नरेश), निवासस्थान—अयोध्या, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—८॥ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—२००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीमान महाराज कुमार सदन, अयोध्या।

आदि—श्री शृंगार लतिका अवतरण ॥ बागजेबे को कारण ॥

दोहा

> सुनत सलोनी बात यह तन मन सबै भुलाय ।
> रितुपति के दरसन हित बाढ़ो उर में चाय । ८

टीका

अब सत की अवाई जानिके देखिबे की अभिलाषा जनावै है। यह सलोनी बात के सुनते ही तन मन भुलाय कै रितुपति के दरसन के हेतु उर में चाय कहे आनंद बाढ्यो।

लटपटी पाग सिर सोहत उनीद नैन 'द्विज देव' ज्यों त्यों कै संभारत सवै वदन ।
षुलि षुलि जाते पट वायु के झकोर भुजा डुलि डुलि जाती अति आतुरी सो छनछना ।
ह्वै कै अवतार मनोरथ ही के रथ पर 'द्विजदेव' होत अति आनद मगन मन ।
सूने भए तन कछु सुनेई सुमन लषि सूनी सी दिसान लख्यौ सूनेई गवनन ।
चहकि चकोर उठे सोर करि भोर उठ बोलि ठोर ठोर उठे कोकिल सुहावने ।
षिलि उठी एकै वार कलिका अपार हिलि हिलि उठे मारुत सुगध सरसावने ।
पलक न लागी अनुरागी इन नैनन पै पलटि गये धौं के तरु मन भावने ।

टीका

ता समै लटपटी पाग को सिर मे साजत कहे वाधत उनीदे अगन सो ज्यौं त्यौं . तदपि वधु आसाने अरु कछु सिथिल अग आपने वस नाहि हे पै उर रस की लालसा सौं ज्यौं त्यौं करि चलाई ।

अत—
नित नाहक मोहि षिझायो करै वह पानि अजौं न मिटी उर तें ।
वसि आपु विदेस रहे सजनी हरि वीस विसे यह दीन्ही सिषै ।
'द्विज देव जू' कीजे कहा उपचार विचारत ही दिन वीतें सवै ।
नित मो मुषचद मलीन करै यह कारि कारी कुहू कुहू कै ।
प्रति पद जामे होत ध्यान राधा माधव को ।
पढत सुनत चित गलत जाहि उर रहै न भव को ।
रसमय अति सुषदानि रसिक जन सो सुषमा मानी ।
निज मति को अनुमानि जानि रचि दीन्हो वानी ।
'द्विज देव' सींचि मधु वैन सों कियो जासु परकास भुअ ।
सुभ ता सिगार लतिका विषे द्वितिय सुमन अवतार हुअ ।

शुभम् भूयात ॥

विषय—कृष्ण भक्ति विषय वर्णन ।

संख्या २६७ फलित भाषा, रचयिता—माया विप्र (स्थान—गगटा ग्राम), कागज—देशी पत्र—११, आकार—१३॥। × ७॥। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—१५४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८६२ वि० (?), लिपिकाल—१६१५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० महादेव प्रसाद जी मिश्र, ग्राम—मिसरवलिया, डाक०—रुद्रनगर, जिला—बस्ती ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ फलति भाषा लिष्यते ॥

दोहा

राम सिया सकर उमा विनय धरा कर जोरि ।
वालक हित भाषा कथौ वुद्धि देहु अति थोरि । १
ससकृत छहलै कहौ फलित ग्रथ से आनि ।
छमिहै वुध परहि समुझि स्वारथ पर जिय जानि । २
लघु सग्रह विस्तार नहि कार्जेन्ह के असलोक ।
'माया विप्र' भाषाकरत सकल हितारथ लोक । ३

अथ राशि विचार

चौपाई

आला मेष ओवा वृष माना । काहा मिथुन भने वुध जाना ।
जाहा कर्कतिह भाटा पुनि । पाटा कन्या तुला राजा सुनि ।
नौजा वृश्चिक भाद्याधन । षाधा मकर गोशा कुम्भ सुन ।
रावा मीन राशि वर हौहे । 'माया विप्र' वुध पूछि कहौहै ।

अथ चद्रमा विचार

चौपाई

आदि चद्र [illegible] अति [illegible] । [illegible] चद्र बहुत मन भरता ।
[illegible] [illegible] कर [illegible] । पचए ज्ञान छठयें सपति लहै ।
[illegible] राज [illegible] [illegible] । अठए [illegible] काल लै आवे ।
नवए दश धर्म [illegible] मन कारज । [illegible] [illegible] [illegible] हारज ।

[illegible]

अपने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मे लीन ।
[illegible] [illegible] ने [illegible] [illegible] मान जन [illegible] प्रवीन ।

अंत—

अथ [illegible] [illegible] विचार

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] चामुन अक करीहै ।
[illegible] [illegible] [illegible] एक [illegible] [illegible] [illegible] दिसि जानु परीहै ।
[illegible] जो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है अति [illegible] [illegible] रिहै ।
'[illegible]' [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कर प्रगट [illegible] [illegible] ।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रहा प्रभानु ।
पोष [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लोग ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ग्रह जोग ।
'[illegible]' [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible] ।
'[illegible]' [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।

इति श्री [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥

विषय—[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रहा प्रभान ।

संख्या [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]—देशी, पत्र—१५, आकार—[illegible] × [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], परिमाण (अनुष्टुप)—[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—

बल कृष्ण [illegible] तु [illegible] बढाती
सालम [illegible] [illegible] [illegible] के बढा काम बनाता :
बदाम [illegible] हरदम [illegible] मुख बदन [illegible] ज्याता ५
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दीया [illegible] आव ·
माजू [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लगाव ६
पाव [illegible] के [illegible] [illegible] ने [illegible] [illegible] [illegible]
आठ आना के [illegible] [illegible] है [illegible] दाम ये [illegible]

अंत—मीत [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नहीं [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सुगीत
मत [illegible] पत [illegible] पीया जो याही जगत की रीति
याही जगत की [illegible] [illegible] लीजिये
मेर [illegible] [illegible] पर [illegible] अध [illegible] दीजिये
मालीराम न [illegible] बनाया मनस्यु बात उपाइ

सुणी न आप्या देषी जोसकु साची कर दरसाई
म्हर हुइ सुरसत माता की रगत नइ बणाइ ६

इति ख्याल वीणजार को सपूरणम ।।

विषय—पश्चिम देश के एक व्यापारी का वर्णन है जो व्यापार करने चला था पर एक सुंदरी ने उसे अपने रूप जाल में फंसाकर अपना दास बना लिया।

बंजारे का ख्याल वर्णन।

संख्या २९८ख ख्याल जोरी का, रचयिता—मालीराम, कागज—देशी, पत्र—९, आकार—७॥ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—१४४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री गणेशाय नम ।। अथ जोगी को ख्याल लीषते टेर :
आये म्हे मो त्यारा व्योपारी जी मो त्यारो करा वीहार :

दोहा

सुरसत सुमरु गजानदम गणपत लगु पाय
लीक्ष्मीनाथ बाव मेरी सुण हरदम कर सहाय
उसतादा की करा बदगी वीद्या दई सिषाय १
मोती पाच चरका ....

।। रेषता ।।

तुह वावला नाहक सोगन षाव मेर रूप को देष के तेरी भुप रीज :
मेरा नाव सरना आव इत सहम हनइ रूठ बेल षवर पाउ लाज :
जोरी मान कना कहु फायद की मुषडा टषु नर्का नही आर कीजे
कीती वार हुई निहोरा काम लीहरु पीया रोक लेवो मोती आप दीजे

।। मदान जुरी को ।।

मोती नथ क वीच पुराय दुआ मुरका माल पडा लगनाय देरी
रुपीया दील चयेजद भेजर फेर काम पड तो दुकान तेरी
कीती नार आव मेरा नाव सुन के मन मोदा दील चाये जसा देष तेरी
मालीराम कहता येता नाम कहना घुघट दुर कर देया अरज हमारी

अंत—रागी रह राग वीन की सो जु वरषा वीन मोर
रग सु मोक देना वो वीन साजी क जोर
दारु वीना सेज फीकी ज वीना अधेर चोर
वीना अधेर चोर जोर चलता नही
तु जलदी आ सो ल्याव तुम नाद कही १०
. आसोम ल्यावो दोसत पेआवा चल नारी
कर करन मा सेज हो गइ कही न्होरी . माली राम
.... ।

—अपूर्ण

विषय—जोडी को ख्याल। पुरुष स्त्री का वाद विवाद।

संख्या २९९क. समरसार रचयिता—मिहिर, कागज—देशी, पत्र—११, आकार—६१⁄१० × ४६⁄१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—८८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० दयाराम जी दुबे, ग्राम—साहपुर, डाक—पर्वतपुर, जिला—सुलतानपुर।

आदि——श्री गणेशाय नम ॥ अथ समरसार भाषाया लिख्यते ॥
उर्धगनिअंग अन्तर राशि लिए कवित नियति निश रेषा ।
चारि वृशूल न पूरब क विधि रेप लिष रवि रिछ विशेषा ।
चन्द्र वृशूल न मध्य मिल पुर सर्वश ले हरि एक निमेषा ।
आठ विंब कवि जाट का मग ह शार हमे पुर हारत देषा ॥
प्राम नछत्रहि आदि गन गनि तारतेइ नहि तिनिनै भाजै ।
जागत गाउ रहै यक तीन का शेष विचक्षण डाक मा शाजै ।
शोवत जम्म रह पुर नायक नारि शभागन अगना लाजै ।
शर्बम लेय भली विधि शो रिपु के शिर उपर गाज अश गाजै ॥
अन——दिनश शिक्ष आदि दैक शाक रिक्ष लै नमै ।
नगादि शेष मर तौ विपक्ष होय पलायनो ।
दि शुन्य शेष जानो चतुर्गुण चोवाशिते ।
मगशेष साखिवो सो छोडि आवना अनी ॥२१॥
इति श्री समरसार भाषाया [illegible] लिख्यते छन्द शवैया ॥ २५ ॥ इति जाग्र चक्रम ॥१५१॥

विषय——समर [illegible] वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य——यह नाम [illegible] में प्रयुक्त हुआ है——

'चतुर्घार' चतुरस्त्र लिख पूर्वादि तिथि नछत्र पुनि सात ।
शान दक्षादि मास मान [illegible] मध्य वेदा गुणवर ।
हर शनि शशि गुरु नग शर [illegible] कुज बुध करि जाहर ।
'मिहिर' कहहि तिथि वार दिशि रिक्ष मिलै एक ठाव तुर ।
ताहि धार [illegible] करि प्रवेश धावे चतुर ॥ १ ॥
[illegible]

संख्या २८८ग्र [illegible], कागज——देशी, पत्र——४, आकार [illegible] × [illegible] भाषा (गद्यपद्य)——३२, अपूर्ण, रूप——प्राचीन [illegible] स्थान——प० प्राणदत्त ओझा, ग्राम [illegible] ।

आदि——श्री गणेशाय नम ॥
उक्ष तिर्यग अन्तर [illegible] रवि [illegible] तीन सुरेषा ।
चारि त्रिशूलनि [illegible] के [illegible] लिखो [illegible] विशेषा ।
चद्र त्रिशूलनि मध्य [illegible] सबल ले हरि एक न मेषा ।
आठ त्रिवे कवि जाट को [illegible] सो रमापुर हारत देषा ।
ग्राम को राशि [illegible] तिथि आनि मिलाव ।
[illegible] विचारि के धावे ।
एक रहै [illegible] नृप सोवन पावे ।
तीनि रहै [illegible] चारि [illegible] सुप्त बतावै ॥ २ ॥
अन——चद्र आदि [illegible] मर पाव ।
'मिहिर' [illegible] बिन प्रयाम धरि लाऊ ॥ १० ॥

बाद्दश ने गन चारि पच्चीस [illegible] नमते सुनु पडित ।
राज मिल [illegible] वह मडित ।
गज बाजि मिलै [illegible] मे [illegible] ते गनने कर खडित ।
वर्ष पचास रहै एक [illegible] धन पुत्र उदडित ॥२४॥
इति श्री युद्ध सारक चिन्तावली लिख्यते ॥ सम्वत १९१५ ॥ शाके १७८० ॥
.o: o :o:

मधु मास ते पूरव होत उदै दिसि चारि के वाम गर्क क्रम सोहै ।
तेहि ते श्रव्य मारग फेरि चलै एक जाम टिको पुनि जात चलो है ।
एहि भातिन ते सिव प्रसाद भनै तेहि केर प्रभाव कहै कवि को है ।
सन्मुष बीर क प्रमाण हरै जेहि वाम परै तेहि को जम जो है ।।

.o: .o: :o:

—अपूर्ण

विषय—युद्ध ज्योतिष वर्णन ।

सख्या ३००. साषी, रचयिता—मुकुददास, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—८।। × ६।। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री मठाधीश राजनौनी मठ (प्रनामी धर्म), ग्राम—राजनौनी, डाक०—मिरसी, जिला—बस्ती ।

आदि—

साषी

अकथ कहानी कहत हौ सुनो सत दै कान ।
सत गुरु चरन प्रताप ते प्रगट दीन कर ग्यान ।

चौपाई

सतगुर ब्रह्मानद हमारे । भव समुद्र के पारन वारे ।
प्रम पार सुष बहुविध दीन्हा । तिन्हके चरन छत्र हम कीन्हा ।
प्रगटी निजानद दुइ साषा । नाद विदु एक अतर भाषा ।
साषा नाद कहिहे जो कोई । प्राननाथ सतगुरु है सोई । ३
साषा विदु कही जो दूजी । नाद ग्यान को सो नहि पुजी ।
नाद ग्यान विषै हम सवझा । विद विषै हम जाहि न कवझा ।

.o. .o. :o:

कुल मुल आनद है मेरो । फल है नित विहार धर्म केरो ।
प्रेम लछ को मनन वतावा । पदमावती निज पुरी सोहावा ।
थारो प्रान नाथ निज ऊधो । अछर अतीत पुरष जग नीधो ।
निजानद सप्रदा मारी । माहा बीस्न जीए उर धारी ।११

दोहा

प्रगटे पुरन परम श्री देव चद निज नाम ।
तीनते पघटी सप्रदा परमहस निजकाम ।

o. :o: .o.

ताते भव नीधी छार को कीन्हो अतीत पयोधि ।
श्री प्राननाथ तिनते भये वेद भेद रोज सोधि ।१४
तिन दीनो छत्र साल को अदनी सेवक समाज ।
परषि वासना वोध करि दीने दो पव राज ।१५

अत—वारे हजार सषी रग राजै सचितानद प्रवान ।
तिनकी सोभा कहत न आवै कोटि सुरुज लजीग्रान ।२१
विनु सतगुर वोहोषे नहि कोई अनेक कथै जो ग्यान ।
श्री प्राननाथ सतगुर की दाया 'दास मकुन्द' उर आन ।२२

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश ।

सख्या ३०१ काकशास्त्र, रचयिता—मुकुददास, कागज—देशी, पत्र—१३८, आकार—६ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप)—२०५३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि—कैथी, रचनाकाल—स० १६७५ वि०, लिपिकाल—स० १८७६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० रामकरन शर्मा (डाक्टर), ग्राम—गभिरन बाजार, डाक०—रानीपुर, जिला—जौनपुर ।

आदि—श्री गनेसाए नम श्री जमुना

चौपाई

बरनौ गनपति मन चीत लाई । जेही सुमीरत म न्दी मती पाई ।
सब दीन बदो सारदे माता । बदो सकर सब सुख दाता ।
बदो हरी ब्रम्न के पाए । सकल व्यापी रही जाके माए ।
मरग प्रीतु पातल क देवा । दस दीगपाल करो तो सेवा ।
बदो चाद सुज सुजगन तारा । बदो त्रीगुन जोती अपारा ।

दोहा

सरब देवता बदी कै बहु बीधी चरन मनाई ।
कोकसास्त्र कछु बरनौ अछर देहु मेराई ।
बदौ कृस्न पद रवीतारा । ता दीन बीप्र कथा अनुसारा ।
तीथी बेरम सोम दीन बासर । हरनी नछत्र हम ही मन त्रासा ।
सीध जोग कर उपना पाई । रही बाधी कथा सीध भै आई ।
साह सलम जगत सुलताना । तीनके नीवासु आगर असथाना ।
सोरह सै पचहत्तर सबत सुनौ दह दीस ।
सोनदत फतर मह देखा एक हजार पचीस ॥

॥ चौपाई ॥

नदी कोस्ट पडित एक भैऊ । पहिले ग्रथ कोक उन कहेऊ ।
गीन पुत्र कवी अति मनभाना । काम कलाह रस उन्ह भल जाना ।
उनके मत ग्रथ हम देखा । कछु सछेप बीचारी बीसेखा ।
कामत तुमे बरनो सोई । सुनत रसाल रसिक सब होई ।
रसीकर तोक तीती बरनो तारा । कामकला रती रस श्रौगाहा ।
बहुत ग्रथ बीचारने होए बहुत दीन खेप ।
बालबोध के कारने कीएउ कथा सछेप ।

अंत—

तेजरी का दवा

तीलोए थोपे २५ मनमत पसा भरी २५ पुगो प २५ साजी पसा भरी गवार का पडा-मफुक

इती श्री कोक सपूरने सवत १८७६ श्री मथुरा जीम लीखी बगाली घाट प ब्राह्मन जयदेव न लीखो राम

विषय—श्री पुष्प ... का वर्णन ।

संख्या ३०२ ... कागज—आधुनिक नीला, पत्र—१०, आकार— ... × ... पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—... सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाया नम ॥ अथ सारगीता लीषते ॥

उर्जुन उवाच

श्रीकृष्ण भगवान प्रत आर्जुन प्रश्न करता हे ॥ यह संजीऊ कर को स्वारुप ॥ स्थन महतमा सुनने को इछ है ॥ सो तुम कृपा करी नीरुपन करो ॥

॥ श्री भगवन उवाच ॥

हे अर्जुन तुम भलो प्रश्न कियो है ऊकार को बीसतार कहीत हो तुम सुनो ॥ एह सार गीता कैसे हैं की ब्रह्म बीसुनो महेस्वार ए को अर्थ करने है ॥ अग्नी बयु सुर्य ये तीनो ये के छद देवत है ॥ गायेत्री बोगातारूप य तीनो छद है ॥ अग्नी स्थान जो है ॥ तहा तीनोउ बेद है ॥ रगबेद जर्जुबेद ॥ स्यमबेद ये तीनो के बरन और उतपती करन है ॥ और ऊकर ते इनकी उतपती है ॥ और रगबेद को पीत बरन हे ॥ जर्जुबेद को सेत बरन हे ॥ स्याम बेद को नील बरन है ॥ और ऊकार अछर सत्य हे ?॥ प्रकासक लोक हे ॥

अंत—श्रीकृष्ण के मुष की वक्य है गग गीत गायत्री गोबीद ये चारी उक अनुराग है ॥ करी करी करे है ॥ सो मुक्ता होई ॥ आवर पूर्ब जन्म को नही आवे ॥ जो यह सार गीता को जथ सक्ती आभ्यास करे ॥ जने सो और जो पाट करे मत्र करे सो नरयन के सरुप मे मीलै ऐसे बहुत करी कै कहै है ॥

इती श्री परमहस सहीता श्रीकृष्ण आर्ज्जन सवाद सार गीता सपूर्ण ॥ श्रीकृष्ण प्रनममस्तु ॥

विषय—गीता का सार वर्णन ।

सख्या ३०३क नखशिख, रचयिता—मुरलीधर मिश्र, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—७६° × ५३ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—२३४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६०२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० भवानीशंकर जी याज्ञिक, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ अथ नष शिष लिष्यते ॥

कोटि कोटि दामिनि की दुति देषि वारियति सँवराई वारयति कोटि घनघोर की ।
जटित जराइ टीकौ सोहतु ललाट ताकौ तैस चारु चंद्रिका विराजे माथे मोर की ।
तिहू लोकि आभा अग अगनि जगमगाति मुरलीधर तेमिये चितौनि चितचोर की ।
कुज के मदन सुष सरस बरसावत हे बलि बलि जेयै जुगल किसोर की ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

तीन लोक ठाकुर सदा दूलह नद कुमार ।
दुलहिनि रानी राधिका नष सिष अंग अपार ॥ २ ॥
व्याप रह्यौ सब जगत मै जिनिका जुगल स्वरूप ।
वृदावन क्रीडा करत सदा सनातन रूप ॥ ३ ॥
श्री राधा के रूप सम तीनि लोक नहि कोइ ।
जाकी सोभा अग लषि सदा स्याम वस होइ ॥ ४ ॥
तिनकौ सुमिरन लाइ मन हिय मं हरष बढाइ ।
बरनत हो नष सिष प्रभा मत ग्रथनि को पाइ ॥ ४ ॥

तत्रादौ चरन बर्ननमाह

अरुनता ऐडिनु की रबि छबि छाजति हे कोरि चारु चद मिस नषनि अरे रहै ।
मगल महावर गुराई वहै बुध जानौ कनक वरन गुरु वनक षरे रहै ।
दमकनि शुक्र शनि राहु केतु गोदना हे मुरलीधर सुभ सोभा सौरभ भरे रहै ।
नौहू ग्रह भाइनि सौ सव की सुभाइन सौ साधा ठकुराइन के पाइनि परे रहै ॥ ६ ॥

अत—

एक ही गाउ मे दोउ बसै विलसै लषि दोऊ निकुज निकेत है ।
दोउ चलै डग द्वैक दोऊ थकि जात दोऊ भरि सामनि लेत है ।
बानि दुहू की न जान परै मुरलीधर दोउ ए मानस हेत है ।
द्वै ही घरी मे न जानिये मानु दोउ हिय लागि दोऊ हसि देत है ॥५६॥

॥ दोहा ॥

धन्नि भाग व्रज के जहा लीयौ दुहुनि अवतार ।
जगत कृतारथ कौ कियौ जिनि के प्रेम प्रकार ॥६०॥
यह नष मिष पोथी रची मुरलीधर सुषकारि ।
भूल्यौ हौहु जहा कछू लीजो सुकवि सुधारि ॥६१॥

इति श्री मिश्र मुरलीधर विरचिते नष सिष सपूर्णम् ॥ सवत् १६०२ ॥ कातिक कृष्ण ॥१३॥ भौमवार शुभ भवतु ॥ लिषत गोविंदराम पठनार्थम् ॥ शुभ ॥

विषय—श्री राधा जी का नखशिख वर्णन ।

संख्या ३०३ख. पिंगल पीयूष, रचयिता—मुरलीधर मिश्र, निवासस्थान—आगरा, **कागज—देशी**, पत्र—८०, आकार—८½ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण **(अनुष्टुप)**—७८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८११ वि०, **लिपिकाल**—सं० १९०३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री डा० भवानीशंकर जी याज्ञिक, लखनऊ **विश्वविद्यालय**, लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥

॥ दोहा ॥

रघुबर पद पंकज सुमिरि गनपति के गुन गाइ ।
कह्यो चहतु पिंगल कछू सेसी को मत पाइ ॥ १ ॥
मत बरन के छंद को सोहतु सिंधु अपार ।
धन्नि रेम जिनि परिके पायो याको पार ॥ २ ॥
बड़े बड़े महाकवि के मुनि मुनि विविध विचार ।
मुरलीधर छंदनि रचतु अपनो मति अनुसार ॥ ३ ॥
विविध भांति के छंद ते गुरु लघु ही ते होत ।
याते लक्षन दुहुनि के पहिले करतु उदोत ॥ ४ ॥
वक्र रूप ते गरु लखो सूधौ न लघु जानि ।
इनि के कहतु स्वरूप अब पिंगल को मत मानि ॥ ५ ॥
संजोगी को आदि को चरन अंत जो होइ ।
दूं मता को बिंदु जुत गरु जानो सब कोइ ॥ ६ ॥

अंत—

अथ कवि वंश वर्णन

भरद्वाज के वंश में भारद्वाजी गोत ।
विरद त्रिपाठी द्विजन में माथुर जानि उदोति ॥८०॥
बसत सदा ते आगरे तरनिजा तनूजा तीर ।
टोला माथुर द्विजनि को पावन परम गंभीर ॥८१॥
सुकवि सिरोमनि वंश में पहले प्रथ्वीराज ।
दिन मनि सुत तिनके भए अति सुमील सिरताज ॥८२॥
जिनने ज्योतिष ग्रंथ में कीनो बहुत प्रकास ।
करत बड़ाई आज लगि भूपति सहित हुलास ॥८३॥
तिनके पुन्य प्रभाव ते प्रगट भयो मो नाम ।
मुरलीधर कवि कवित कछु सुजन सकल मति धाम ॥८४॥
बहुत करो मे चाकरी अब सेवतु रघुनाथ ।
वेई सुधि सब लेत हे पालत सब के साथ ॥८५॥
विधि ससि वसु ससि मे लयो संवत पोष सुमास ।
सुक्ल पक्ष नवमी गुरो कीनो ग्रंथ प्रकास ॥८६॥
यह 'पीयूष पिंगल' रच्यौ कृपा पाई रघुनाथ ।
लीजौ सुकवि सुधारि के कहतु जोरि के हाथ ॥८७॥

इति श्री मिश्र मुरलीधर विरचित पिंगल पीयूष ग्रंथ समाप्त ॥ संवत १९०३ ॥ कार्तिक कृष्ण नवमी ९ ॥ शुभवासरे वासरे लिखी गोविंद राम शुभमस्तु ॥

विषय—पिंगल विषय का वर्णन ।

रचनाकाल

विधि ससि वसु ससि मे लयो संवत पोष सुमास ।
सुक्ल पक्ष नवमी गुरो कीनो ग्रंथ प्रकास ॥८६॥

संख्या ३०४. फतेग्रली प्रकाश, रचयिता—मुरलीधर 'कविराज', कागज—देशी, पत्र—६, ग्राकार—७ × ८।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (ग्रनुष्टुप)—६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० दूधनाथ गमाई, ग्राम—एईबीगों, गुमाई का पुरा, डाक०—कदीपुर जिला-सुलतानपुर।

ग्रादि—श्री गणेशाय नमः दो ॥

ग्रावि सिंह दै मकर लो जानु भानु की षेत।
कुंभ कर्क लो कवि सुघर चन्द्र षेत कहि देत।

॥ कवित्व ॥

भानु करै निजषेत उद तह जाइ करे जव चन्द्र बसेरो।
जाइ विजय पद पाइ ग्रघाइ प्रचारि करे ग्ररिके घर डेरो।
'कविराज' कहे जव चन्द के षेत उदै कवि भानु करै भट भेरो।
चन्द रहे निज षेतहि थाइ तवे जय पाइ यथारुचि केरो।

ग्रथ नगनकाल

मो तिथि पोरिके ग्राठको भाग करेहु।
वचै सो पूरव ग्रादि दे नगन काल की देह।
फेरि चारि मो तिथि मिले भाग ग्राठ के जानु।
बाँए हाथे मो सुघरतहाँ ढाल के थानु।
छविस मो फिरि तिथि मिलै भाग ग्राठ की थात।
वही भाँति एह जानिए षड्ग दाहिने हाथ।

सोरठ

पीठि दाहिने होई नगनकाल जो नर चढे।
वेरि जीतिहे सोइ सिद्धियोग 'कविवर' कहे।
o o o
रवि चदा शनिवार गुरु कहे 'ग्रकल' कविराज।
युद्ध ग्रथ समत मफल बूझि करो नृप राज।
o: o o

इति मुरलीधर विरचिते फत्तेग्रली प्रकाशे पापी छवपी विचार प्रथमः प्रबधः ॥

ग्रत—.

इति मुरलीधर विरचिते फत्तेग्रली प्रकाशे भूबल विचार द्वितीय प्रबधः ॥

ग्रद्र ग्रादि मृग ग्रत लो गणो नायिका तीन।
ग्रादि मध्य ग्ररु ग्रत कवि रचो चक्र परवीन।

॥ कवित्व ॥

सूरज वो विधुको निज नामको होहि नषत्त जो एकहि नायिका।
तादिन युद्ध न कीजिए वूझिकै कीजिए तो गिन्जिाहिगे ताडिका।
कविराज कहै यह वेध विचारि करो नृप रारि सभारि सहीनिका।
जीतिवो ग्रवशि ग्ररिदल को निर्वेध शरीर जिन्हे तिन्हें हानिका।

॥ ग्रथ भेद काल वध ॥

चंद नषत ते नामको नषत लीजिए हेरि।
मध्य त्रिशूलहिते ते धरा वाहर गरभ गरेरि।

—ग्रपूर्ण

विषय—ज्योतिष विषय (युद्ध ज्योतिष) वर्णन।

संख्या. ३०५ इश्क पेचा, रचयिता—मनसाराम (?), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८॥ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—१८, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री विदेश्वरीप्रसाद जायसवाल, ग्राम व डाकघर—...., जिला—जौनपुर।

आदि—

का वासा है।
पलकें मूदी जग आंखिआग आखें खोल तमासा है।

इसीक पेचा ३

निहचै को बैकुंठ का वासा निहचे सत को कहिए।
नरक कुंड अगिन पुथ्वी मे निहचे आपै जरिए।
हम पुछ उर ऐन मन कम सो फिर आगु का चहिए।
बीना बुझ की लम्ब बात है बूझ चुपके रहिए।

इसीक पेचा ४

जाग नींन का चार न कुछ सोता सो पछताता है।
गठरी खबरदार मुसाफिर कैच गया है अउ घाता है।
पलक के मुदत बैकुंठा आगेव हाथ कछु नहि अवता है।
इस दुनिए का बीच मुसाफिर पल मे लुटा जाता है।

इसीक पेचा ५

तन पिंजरा प्रान पखेरु बरागो की मैना।
इस मैना का बमन चहिए किधु विकाएं चबेना।
राम नाम सब मिथ्र लीन्हा भजती दीन औ रैना।
ऐक दीन बीली आनी छपाट नाच पर अा डैना।

इसीक पेचा ६

क्यो कप पिंजड मा पछो बीली का उर काप।
जो दीन बना सा बचतो बाचा सा गीताप सो टाकें।
बारे ओरे का मिथ्र नाम्रा मानता जार न तापे।
तुहा तुहा कर बात पढ्उ तुही भी तो आप।

इसीक पेचा २३

टोना टामन रात सोहरी तीहार पहीले जुआ।
जब गगा मे गोता मारे जब पानी का चुआ।
हा ले नरक घो कबूतर बाज उडावे भूआ।
बद हुए अंधि कुत्ता स्था हक हुए तब मूआ।

इसीक पेचा २४

पीतर मान न मुरख बामन पीतर आप पवीतर है।
का ऊपर के मांजे धोते मइल भरी घट भीतर है।
जो तन पाक सोई पवीतर माया रूप चरीतर है।
नदीया नाव जग जोग है यागे जो जेतर सो तेतर है।

इसीक पेचा २५

काली आए काल ..... सेवी पवम मत हाको।
रोटी कपडे के न चाकर पेट भरो तन ढाको।
मनो अनाज कोठो आर .... मन न जागे छटाको।
इह सब है सरकार की जरती काम कुदरती ताको।

इसीक पेंचा २६

गोरइ संता मो जाऐ जो देखा ममुझ समुझ हम रो ऐहै ।
गोरे उपर गोरु चरतं मौत धर्म घर खोऐ है ।
खोश्रा खाऐ काया जिन पोरवा वो भी मठी मे गोऐ है ।
उचे उचे महले वाले नीचे घर मे सोऐ है ।

—श्राद्योपात उद्धृत

विषय—सत मतानुसार भक्ति एव ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या ३०६. मेघविलास, रचयिता—(मुनि) मेघराज, कागज—देशी, पत्र—१३०, आकार—८ $\frac{8}{10}$ × ७ $\frac{2}{10}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप)—२४३७, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८०८ वि०, लिपिकाल—स० १८७७ वि०, प्राप्तिस्थान—प० शिवबालकराम पाठक, ग्राम—देउरी, डाक०—अठेहा, जिला—प्रतापगढ ।

आदि—श्री गणेशाय नम: ॥

श्री जस वद्यात भवितां पुरारि ज दग तेज प्रसेर भवानि ।
विराजिते निर्मल चद्रिकाय महौषध ज्वलि ताहिमाद्रा ॥
तिन जगत तारुण तरणी परम जोति परकाश ।
नामत मेघ विलास मुनि जोर कर दिन दिन होहि विलास ॥

॥ सवइया ॥

शेव करं जग कोइ सदा हरि एद्र नारि एद्र फणि कर जोरि ।
देव मुनिद जोगिद तया प्रभू सेव करं सभ ही फल हारी ।
पाप अनेक कियो जिन कोटिक शो जग पार उतारीये धारी ।
मेघ कहै कर जोरी याही मुष दिये न ज्ञान सदा उपकारी ॥

० . . ०

सारद माता तु बडि तुउ समान अरू न कोइ ।
करो मुझ ऊपरं ज्यौइ वद्धि मम मा होइ ॥ ४ ॥
गुरू प्रसाद भाषा करौ वैद्यक ग्रथ प्रगाम ।
रोग हरति स्ब जगत को नाम जो मेघ विलास ॥ ५ ॥

अत—आचार्य्य जटमल जी सोष जो प्रमानद ।
तास सिष मदानद जी काटेउ अघन के फद ॥२८६॥
पनारायण नाम नरोतम ताम सिष हे सदा सुकुल प्रमान ॥२६०॥
मयाराम तोस सास हे ताको सिष सुभ नान ॥२६१॥
नगा फगवारे मं वसत थति मेघ रिषिराज ।
तिन यो ग्रथ कियो प्रगट मकल लोक हितकाज ॥२६२॥
सवतसर ससि वसु ईला ज्येष्ट माम सुभ जान ।
कृष्ण पछ तिथ कादस सुकरवार जग मान ॥२६४॥
अति आनद सुनै . . . मेघ विलास ।
मेघनाम अनुसार करि दिन दिन होति विलास ॥२६५॥

इति श्री मेघ विलास मुनि मेघराज विरचिते मिश्रध्याय नाम द्वादशोध्याय नाम. . . . सुभम् सवतसर १८७७. . . . . राय राज्यो वे माहर सहर कोट. . . . . .

विषय—आयुर्वेद विषय वर्णन ।

रचनाकाल

सवतसर ससि वसु ईला ज्येष्ट मास सुभ जान ।
कृष्ण पछ तिथ कादस सुकरवार जग मान ॥२४४॥

संख्या ३०७ व्याधिनाम रचयिता—महरवान (?), कागज—देशी, पत्र—७०, आकार—६ × ४, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—२३८२, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत बदरी नाथ जी वैद्य, स्टेशन मास्टर स्थान व पो०—मलिहाबाद, जिला—लखनऊ।

आदि—

यहै प्रमानु ॥४५॥

इति श्री व्याधिनाम ग्रंथे सारंगधर मत विरचितं मान परिभाषा वर्णन नाम प्रथमोपदेस ॥१॥

॥ अथ क्वाथ कल्पना विधि रच्यते ॥

॥ दो० ॥

टका एक भरि औषधी सोरह टका सुनीर।
सद आंच करि पव सद गारि लीजिए हीर ॥ १ ॥
वाकी गाथा टका जग मीत उष्ण नहिं होय।
गुन गन ताको पान करि सुरस साधिए सोय ॥ २ ॥
रस प्रहार परिपाक्व जेहि तेहि दे द्विपल विचारि।
वृद्ध वैद्य उपदेस ते सुपक क्वाथ लहि वारि ॥ ३ ॥
सीत मिलाव जोग जो चारि अष्ट दस षष्ट।
वात पित्त कफ कोप सम यहि विधि रहै न कष्ट ॥ ४ ॥
मधु विपरीति बखानिए वात पित्त कफ पाय।
गुग्गुल जीरा क्षार अरु लवन हींग सुख पाय ॥ ५ ॥
त्रिकुट सिलाजीत और उमिरयो चाहै कोय।
सज्ञा मान प्रमान है यथा साज पुनि जोय ॥ ६ ॥

अंत—उदवर गूलरि उशीर गंधाल उरवक रेंड उन्मत्त धतूर उपचिता मूसी कर्णी उपकुल्या पीपरि उषण पीपरि उशीरया अतीस उदीच्य बलाला नाम उत्पल कूट नाम उदुंबर पर्णिका दंतिया नाम उग्रगंधा अजमोदा नाम उरुगात्र पवार नाम उपोदक गाडर बूधी नाम उच्चाट मुस्ता भेद ॥ २८॥

॥ अथ एकारादि ॥

एरंड रेड नाम एकाष्ठील अगस्त्य च गणा एकाष्ठील पाढा ऐलेय सुगंधवाला. ऐला बडी इलाची एड्डास ककरौ

॥ अथ ऋकारादि ॥

ऋक्षगंधा विधिका काली विनासी कहि नहि नाम ऋक्षगंध विधार नाम ॥३०॥

इति श्री व्याधि नाम ग्रंथे अमरमत उकोष ते वग प्रति अक्षर कथन नाम ॥१॥ संपूरन प्रभु रूप है ताको नाही थाह ॥ मेहवान सोई सुगम जह लागि जाकी आह ॥१॥ नासक तीनो ताप को मेहरवान प्रभ नाम ॥ मतगर बड़े रमाइली निवसत लहत विश्राम ॥ २ ॥ सवत सुनौ पुरान मत एकहत्तरि माल प्रमान ॥ हरि भादो सुदि तीज है सुकवार दिन जान ॥ ३ ॥ स० १८७१ भा० सु० ३ सु०

विषय—आयुर्वेद विषयक ग्रंथ।

संख्या ३०८ ग्रंथ रचयिता—मनीराम, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—६ × ३, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१, परिमाण (अनुष्टुप)—८७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १—— वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि--

अंसे सतगुर की वलीहारी षेलावत सैनन मे मोही होरी ।
सुमति सयानी सषी सघ दीनो कुमती को करी दीयो चेरी ।
सील सानेह नेह संग दीनो कापट को पाट लीयो छोरी ।
ज्ञान को लहगा सील को अगीया प्रेम प्रीति की सारी ।
सुरती सांभारी वायो सतगुर ने साव्द की रग भार मारी ।
मौजीदास अंसो होरी रच्यौ है मोती सषी वलिहारी ।
गुर सो यासो मै हारी ।
चलावत नैनान की पीचकारी ।
माम वसत लाग सात संगती नाम दीयो मोहि गारी ।
सेंदुर सुमति चढाय माग भरी सुरिति की वेदी सुधारी ।
दाया की हामेल हाल हिरदौ भरी नेह को अजन भारी ।
चोप की चुदरी ज्ञान को लहंगा प्रीति की अगी असवारी ।
वं सारी समुझी लगन की वाजु सीन की सुता डारी ।
.....कोछी सानेह जुक्ती कीजे हारी अनहद की रव कारी ।
चौता गुलाल उडायै लाल भायो सतगुरु सव्द की रग भरमारी ।
मौजीदास स्वामी रग रच्यौ है मोती सषी वलीहारी । २
षेलो सुरति सभा होरी ।

अंत--आप से जगहि जिताय कै जहलग ससारी हो ।
आपन काम सभारीकै मन से रहो हारी हो ।
घर चौरसी समुझि कै तन की करो सारी हो ।
गोटै दस इद्री करौ षट तजो वेकारी हो ।
पसा लं निज नाम को मन समुझि विचारी हो ।
वाजो षेलहु पीव सगुर सव्द वीचारी हो ।
सहेवे मवाजीदास जो दीयो पस सारी हो ।
मोती यहि विधि षेलि कै सति साव्द दीह गारी हो ।

विषय--भक्ति एवं ज्ञानोपदेश विषयक काव्य ।

संख्या ३०६क अरस अहनिवानी, रचयिता--साईं मोहन, कागज--आधुनिक सफेद, पत्र--५६, आकार--८½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--६, परिमाण (अनुष्टुप)--७६६, पूर्ण रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--मुंशी देवनारायण श्रीवास्तव, ग्राम--रामपुर ढहेंई, डाक०--शिवरतनगंज, जिला--रायबरेली ।

आदि--सति साई की दाया ॥ अरस अहनि वानी ॥ . . .सांई मोहन ॥ दसषत लिषा आशिक रामनरेश .॥ की चरन वदगी ॥ वार वार जै ३ ॥

वह साई दुर्वेश दयाक . . .कही ग्मय ।
आखिर अलख अलग एक ही सम ॥
तुही मेहरबान सब कर करत है कर्म ।
वदा हराम गुनहगार पर राखु कदम तर ।
मोहन हरदम इन्तजार कलि ये के तू करु ।
महबूब करम बदे पर ॥ १ ॥
उस साहब का नाम सांचा है ।
आखिर अव्वल उसी का इलाका है ।
उसकी कदरदानी । किसी की ना जानी ॥
अजव उ..... . .. .
:०. .०: :०:

'मोहन [illegible] फिरता था । कही न यह हाल पावता था ॥
मुरशिद सतगुर [illegible] था । उनही का भरम जाना था ॥ २ ॥
खाय खिलाय के बैठ रहे उडाय । सबर संतोष से रोज देता ।
दुख न सुख है साग की [illegible] । [illegible] मिलता [illegible] ।
सुरति [illegible] ॥
कहे [illegible] ॥
मोति [illegible] दाया [illegible] ॥
[illegible] बदगी [illegible] ॥ १०५ ॥
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible] ॥

विषय—[illegible] ।

सख्या ३०४ग [illegible] आधुनिक सफेद, पत्र—[illegible] (प्रति पृष्ठ)—[illegible] परिमाण (अनुष्टुप)—६८, पूर्ण, रूप—[illegible] श्री वास्तव, ग्राम—रामपुर [illegible], जिला रायबरेली ।

आदि—सति [illegible] ॥ [illegible] ॥ भाखते सतगुर साईं **मोहन सतगुर** [illegible] ॥ [illegible] ॥ **चरन बदगी बारम्बार** ॥

'क' कलिजुग भगित [illegible] करम भरम की रेष मिटावै ।
गे रहे [illegible] तहा पर आम(न) लावै ॥
बैठ रहे निरवान [illegible] यक नाम की साखी ।
अरे हा हा मोहन जियत मुक्ति होइ जाइ ।
[illegible] ॥ १ ॥

'ख' [illegible] ज्ञान [illegible] । [illegible] बीज बोय [illegible] ॥
[illegible] सेवा न [illegible] जाता । [illegible] रस पानी ॥
करम [illegible] दरसन [illegible] परवाना ।
अरे हा हा [illegible] भाग [illegible] ॥ २ ॥

अत—[illegible] जो [illegible] नित उठि [illegible] विचार ।
ताको [illegible] दरबार ।
[illegible] निरख आसा [illegible] ।
अरे हा हा [illegible] फल से क्या वरना ब्रह्म कहाव सोई ॥ ३ ३ ॥

सति साई की [illegible] ॥ [illegible] कवहरा सम्पूर्ण ॥ सत गुर साई को **चरन वन्दगी बारम्बार** ॥ सति सत [illegible] ब्रह्म कोज ॥

विषय—[illegible] ।

सख्या ३०४घ [illegible] रचयिता—साईं मोहन, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—[illegible], आकार—[illegible] × [illegible] (प्रति पृष्ठ)—[illegible] परिमाण (अनुष्टुप)—२२५, पूर्ण, रूप—[illegible] श्रीवास्तव, ग्राम—रामपुर [illegible], जिला [illegible] ।

आदि—सत सई दई ॥ सात सतगुर दई ॥ [illegible] ॥ भाषते सई मोहन **बुध पुरुस की दाया** ॥ [illegible] सतगुर सह आनदें सई की दई सई मोहन की **चरन बदगी** ॥ **बारवार** ॥

जगत [illegible] दरियाव माया को जाल है ।
[illegible] लाया मारता [illegible] है ।

बँचे संत विग्यान माया को छोडिकं ।
अरे हँ हो मोहन मारी लिया मैदान छिन को दउकं ॥ २ ॥
याहि जिय को धिकार माया मै धाय कं ।
नरकं चलै वजाए दरव को पाय कं ॥
करै न सघती साध की सो इक राम के हीना ।
अरे हँ हो मोहन विन पाये सत ग्यान जीउ भमहु के पीना ॥

अंत--साल दुसाला महल अटारी का सो अमीरी हाथ है ।
जिउ वरषास छुटि सब दुनिया नही कोई सघ साथी है ।
दिना चारिहि गै मारी [illegible] [illegible] [illegible] है ।
अरे हाँ हो मोँहन तै न हाटक यह जान जेउ [illegible] मोती है ॥२०८॥
[illegible] [illegible] [illegible] का डेरा [illegible] [illegible] ।
[illegible] विस्न महेसो गए [illegible] [illegible] [illegible] ।
घोरा कसन यारा है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।

विषय--ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का वर्णन ।

संख्या ३०९घ [illegible] नाम [illegible], रचयिता [illegible], कागज--आधुनिक सफेद, पत्र--[illegible] आकार--[illegible] × [illegible] इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--[illegible], परिमाण (अनुष्टुप)--[illegible], रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--[illegible] श्रीवास्तव, ग्राम-[illegible], डाक०-[illegible] जिला-रायबरेली ।

आदि--

.. [illegible] सतगुर का सरन समझाये जलम [illegible] पछितान हो ।
[illegible] जाको जैसी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] फल पाव हो ।
[illegible] [illegible] मूढ जो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हो ॥ ९ ॥
[illegible] [illegible] [illegible] मोह यह [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हो ।
[illegible] [illegible] कुवा [illegible] बूडे [illegible] मुह माटी खाई हो ॥१०॥
[illegible] [illegible] रहे [illegible] तन मे [illegible] सुमिरन मत लावे हो ।
'मोहन [illegible]' नाम की चिनगा [illegible] अन्तर सुलगाव हो ॥११॥

अंत--

'उ' [illegible] [illegible] [illegible] सब फल [illegible] [illegible] [illegible] हो ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जावे [illegible] [illegible] [illegible] हो ॥३९॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हो ।
'[illegible] [illegible]' [illegible] [illegible] '[illegible] [illegible]' गावे हो ॥४०॥

[illegible] [illegible] [illegible] विचार [illegible] [illegible] [illegible] ॥ सत्य साई की दया ॥ [illegible] [illegible] [illegible] ॥ म

विषय--भक्ति और ज्ञानोपदेश ।

संख्या [illegible] [illegible] पियापाती, रचयिता--[illegible] [illegible], कागज--आधुनिक सफेद, पत्र--[illegible], आकार--[illegible] × [illegible] इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--[illegible] परिमाण (अनुष्टुप)--[illegible], पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १९९३ वि०, प्राप्तिस्थान--[illegible] कवल बहादुर जी श्रीवास्तव, उप० 'मलक', ग्राम-पुरे विधा प्रसाद,दीवान, डाक०--निलोई, जिला-रायबरेली ।

आदि--अथ अरस पिया पाती ॥ भेवले (भाषते) सतगुर मोहन सतगुर समरथ साई मोहन महबूब की दया ॥ दसषत लिषते आशिक कोरम साह सती पुरुष की पाती ॥ सुनत होई अहिवाती ॥

॥ गवाही ॥

पिया पाती प्यारी सुनै कि जेहि पीया प्यारा होय ।
निह कपटी निर्मल दमा हम कहावै सोय ॥ १ ॥

॥ बयन ॥

सुनि पाती हरषत भई गोरी । भूषन बसन सकल बिसरोरी ॥
दिन दिन नेह नाहत नित बाढ़ी । दुतीये दाग हृदय को काढ़ौ ॥
ना तन चैना नैना नीदा । भ कुरबान चरन परि सरिदा ॥
भागे दुष सुष जिय मतारा । झोंका आर पुण्य औ पापा ॥

॥ गवाही ॥

जानि मानि पहिचानि ले लाग छोडि बे लाग ।
जाहिर सतगुर अकबाल है भटे भागि अभागि ॥ २ ॥

अंत—

॥ गवाही ॥

आपुई मरि जरि परन है भौ सागर की धार ।
अमृत रूपी बचन यह अवधू करो विचार ॥ ७ ॥
धनि २ हँसो भागि तुम्हारी तुमको भया तख्त को काम ।
तुम्हरे पिया की पाती लाय 'मोहन' का कछु मिल इनाम ॥ ८ ॥

॥ वार्ता ॥

सत्य साई की दया अरस पिया पाती समपरण सतगुर साई के चरन बदगी ॥ करो हँसो बारम्बार ॥ अनि को अहिवात रहो सती साइ की सरन ॥ सती साई दया सत्य सतगुर दीन दयाल ॥

विषय—ज्ञानोपदेश ।

संख्या ३०६च ग्रन्थ भक्तिबोध, रचयिता—साह मोहनदास, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—१५, आकार—७३/४ × ५, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)— , परिमाण (अनुष्टुप)—१२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—म० प्रेमनारायण श्रीवास्तव, ग्राम—रामपुर टकैट, डाक०—शिवरतनगंज, जिला—रायबरेली ।

आदि—सत साई की जै जै ॥ सत साई की दाया ॥ सति सतगुर दीन दयाल ॥ अरस भक्ति बोध ॥ भाषते सतगुर मोहन ॥ सतगुर समरथ ॥ साई मोहन महबूब की दया ॥ लिषते दसषत दुलारे साह सति साई दया ॥ चरन बदगी बार बार गवाही ॥ सतसई की दया ॥ चरम बदगी बार बार ॥

॥ गवाही ॥

सकल गयान बिगयान मत सकल सुनि अमथान ।
भक्तिबोध सोगर करु सुनि चेला बिद्वान ॥

॥ बयान ॥

चेत करै चरनन चित लावै । सतगुर मता जानि जे पावै ॥
गयान ध्यान के पार ठेकाना । बिरला सत भेद कोइ जाना ॥
निस दिन करै सत समाजा । पूरन होहि सिधि तोही काजा ॥
सुति बेद सत जस गावै । उन रीत भक्ति जेहि पावै ॥
बरन बिवेक भेष नहि दुजा । साई नाम सरिस है पूजा ॥

होये अधीन दीन तजि जग मे रहे निरास ।
'साह मोहन' दरपन मे देषे साई अपने पास ॥

अंत— ।। बयान ।।

कादो कीच सकल जग मेला । सतगुर घाट धोई ले फेला ।।
जबतक सतगुर घाट न पावैं । अध पाप कैसे के जावैं ।।
हिरदयेआमा , सुझत नाही । जब तक वरहम दिरिष्ट है नाही ।।
चमर दिरिष्ट घेरे ससारा । सार सबद विन किहे विचारा ।।

सति साई की दाया ।। अरस भक्ति बोध सम्पूरा ।। सति सतगुर साई मो(ह)न महबूब की चरन बंदगी ।। वार वार ।।

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश ।

सख्या ३०९छ. भक्तिबोध, रचयिता—मोहन साई, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—७, आकार—६$\frac{९}{१०}$ × ६$\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—१०५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—५० १९९३ वि०, प्राप्तिस्थान—मु० केवल बहादुर जी श्रीवास्तव उपनाम 'मलक', ग्राम—पूरे विद्याप्रसाद दीवान, डाक०—निलोई, जिला—रायबरेली ।

आदि—मोहन साह की वानी ।। अथ भक्तिबोध ।।

।। गवाही ।।

सकल ज्ञान विज्ञान मत शब्द शून्य स्थान ।
भक्तिबोध सतगुर करें सुनु चेला विद्वान ।।

।। वयन ।।

चेत करें चरनन चित लावे । सतगरु मता आनि जे पावै ।।
ज्ञान ध्यान के परे ठिकाना । विरला सत भेद कोऊ जाना ।।
निश दिन करें जो सत समाजा । पूरन होंहि सिद्धि तेहि काजा ।।
श्रुति वेद सत यश गावैं । ऊंच नीचा भक्ति जेहि पावै ।।
वरन विवेक भेष नहि दूजा । साई नाम सरिस है पूजा ।।
तीरथ वरत न धावैं धामा । सतगुर चरन सिद्धि सब कामा ।।

ः० ० ०

होय अधीन दीन तजि जग ते रहै निरास ।
शाह मोहन दरपन मे देखें साई अपने पास ।।

अंत— ।। बयान ।।

कादौ कीच सकल जग मैला । सतगुर घाट धोई लै फेला ।।
तव तक सतगुर घाट न पावैं । अधा पाप कैसे कै जावे ।।
हृदय आतम सूझत नाही । जब तक ब्रह्म दीठि हे नाही ।।
चर्म दृष्टि घेरे ससारा । सार शब्द विन किहे विचारा ।।

।। वारता ।।

सती साहु की दया अरस भक्तिबोध समपूरण सती सतगुर साई मोहन महबूब की चर वदगी वारमवार मती सतगुर दीन दयाल ।।

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश ।

सख्या ३०९ज मल्हा, रचयिता—मोहन साई, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—३, आकार—६$\frac{९}{१०}$ × ६$\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—३७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९९३ वि०, प्राप्तिस्थान—म० केवल बहादुर श्रीवास्तव, उप० 'मलूक', ग्राम-पूरे विद्याप्रसाद दीवान, डाक०—निलोई, जिला—रायबरेली ।

आदि——अरस सतगुर भेरा ॥ भाषते सतगुर साई मोहन ॥ सतगुर समरथ सांई ॥ मोहन महबूब की दया ॥ वमरान लिषते ॥ आशिक मिलन शाह ॥ अथ सतगुर सेल्हा ॥

॥ गवाही ॥

सतगुर खड़ा वे आड में हाक हम को देय ।
सूर होय सो आगे आव घाव शब्द को लेय ॥

॥ वमन ॥

सोवत हम सुनत उठि [illegible] । [illegible] पर जब शब्द विरागा ॥
सन्मुष चले शरन [illegible] । [illegible] कोला लाई ॥
[illegible] हरर्ष सतगुर [illegible] । [illegible] छाडि [illegible] चेला ॥
[illegible] जहान [illegible] । [illegible] जिनको ॥
होड नाम [illegible] वारे ग्राही ॥

॥ [illegible] ॥

आदि अंत [illegible] होय ।
मोहन सूर के मदान मे कायर [illegible] न होय ॥ २ ॥

अंत——

॥ गवाही ॥

हम सूर [illegible] नाम ।
मोहन बंदा सतगुर [illegible] इनाम ॥१०॥

॥ [illegible] ॥

सत्य साई की दया अरस सतगुर [illegible] सम्पूरन समरथ सतगुर साई के चरन वदगी करो हम वारवार वोला हम सत्य सतगुर [illegible] सतगुर साई के चरन मे वारम्वार जै जै जै ॥

विषय——[illegible] ।

संख्या [illegible] पत्र——[illegible], आकार [illegible] × [illegible] [illegible] [illegible] पूर्ण, रूप——[illegible] [illegible], प्राप्तिस्थान——श्री हिंदी साहित्य [illegible], [illegible] ।

आदि——श्री व्यासनंदन [illegible] मोहन मस्त [illegible] लिष्यते ॥

मन मतवारा [illegible] जान ।
कथा [illegible] जान ।
[illegible] आन ।
मोहन [illegible] छान ॥ १ ॥
[illegible] सरताना ।
[illegible] साना ॥
[illegible] कथा आना ।
[illegible] मदाना ॥ २ ॥
[illegible] उठाई ।
[illegible] धूल उड़ाई ॥
इस [illegible] पाक कदम हराई ।
मोहन मस्त [illegible] पषनो प्रगट इहाई ॥ ३ ॥

अंत——नारि एक वड़ नरन प्रीति करि वेद विधी सो व्याई ।
कहो सजन का मन किसि तोरे [illegible] तोष षिसिआई ॥
क्रोध होइ फल दिया सजन मिलि तडपड जूते षाई ।
मोहन मस्त कर फज सज्जन वेहया पद्धति गाई ॥ ४ ॥

इति मोहन मस्त जो को साभ सपूरणम् १९४९ ॥

विषय---चेतावनी और ज्ञानोपदेश ।

संख्या ३११ गुरुप्रनाली, रचयिता---मोहनलाल, कागज---देशी, पत्र---८, आकार---१० × ६ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)---२०, प्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप)---२८०, अपूर्ण (खंडित), रूप---प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---श्री पं० केदारनाथ जी, ग्राम--नरहता, डाक०--पट्टी, जिला--प्रतापगढ़ ।

आदि---(प्रथम एक चित्र अंकित है जिसमें निम्नांकित प्रकार लिखा है---) **दीवान जवाहिरपति साहेव मोहनलाल ग्रथ वार**

:o: :o: :o:

गुरु प्रनाली

जनाव सतगुरु मदन साहेव वहुत वडे रईस आली खानदान खरौना जिले जौनपुर के थे जव सतगुरु साहेव कवीर आपको उपदेश करिके गुप्त हो गए तव उसी वक्त आप दुनिया दौलत छोडकर त्यागी हो गये और अपनी कुटी उसी गाव खरौना मे बना कर रहने लगे

:o: :o: :o.

जैसा कि धर्मदास हुए वैसे ही सतगुरु मदन साहेव हुए और सार शब्द का उपदेश जैसा कि हुकुम साहव कवीर का था जिसको कि निरजनी लोगो ने छिपा दिया सार शब्द की परचय न हुई निरजनी ज्ञान मे फँसकर चौरासी की राह ली । कवीर साहव सत्य लोक से आय कर सतगुरु मदन साहेव को चिताये और सतगुरु मदन साहेव उसी हुकुम के मुताबिक सार शब्द सतपुरुष की चिताव मे वो समझाने में वडा परिश्रम किया ।

:o: :o: :o:

मदन साहेव सतपुरुष अमर लोग को सिधार गए अपनी जगह पर दुलमपति साहेव को कायम किया दुलमपति साहेव ने अपनी कुटी जौनपुर जिले वडैया गाँऊ. . .कयाम किया ।

दुलमपति साहेव जव अपना प्रकाश करके सत्यलोक को सिधारने लगे तव सतगुरु महंत विवेकपति साहेव को अपनी जगह पर गद्दीनशीन किया । :o: :o: :o: :o: :o: अमर लोक को चले गए गुरु दीवान जवाहिर पति साहेव :o. :o. :o:

---खंडित

अंत--- शब्द

सतो षट प्रकार की देहीं ।
स्थूल सूक्षम कारन महाकारन केवल हंस कि लेही ।
साढे तीन हाथ परमाना स्थूल शरीर वखानी ।
राता वरन वैषारी वाचा जाग्रित अवस्था जानी ।
रजोगुनी ओंकार मात्रा का त्रिकुटी है अस्थाना ।
मुक्त स्लोक प्रथम पद गायत्री ब्रह्मादेव वखाना ।
पृथ्वी तत्व षेचरी मुद्रा मगय पील घट कासा ।
शर निर्णय वडवगनि दस इन्द्री देस चतुर्दस वासा ।
और अहै ऋगवेद वतावै अर्ध शून्य सधारा ।
सत्यलोक विष का अभिमानी विषयानद हकारा ।

---अपूर्ण

विषय---मत मतानुसार भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या ३१२क. ब्रह्मवाद ग्रथ, रचयिता---जज्ञप्रसाद (यज्ञप्रसाद) निवासस्थान---जैनगरा, कागज---आधुनिक नीला, पत्र---५१, आकार---१३ ३/४ × ७ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)---१६, परिमाण (अनुष्टुप)---१३६३, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, लिपिकाल---सं० १९३८ वि०, प्राप्तिस्थान---पं० श्री बालाप्रसाद जी, ग्राम--जैनगरा, डाक०--राजा फतेहपुर, जिला--रायवरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नम ।। अथ ब्रह्मवाद ग्रथ लिख्यते ।।

।। चौपाई ।।

बदौ गणपद राजिव रेनू । सकल सिद्धि की काम कै धेनू ।।
जैसा सकल सिद्धि श्री दायक । जै मा मगल मोद सहायक ।।
:o o .o:
बालदास पद पकज ध्याऊ । पद पदार्थ जेहि सुमिरे पाऊँ ।।
घरी घरी पल सोसा सोसा । बालदास को मोहि भरोसा ।।
:o .o .o:
गुरु सिष्य सम्वाद वर विरचेउ जज्ञ प्रसाद ।
सो कृत आरती पावही ब्रह्मवाद को स्वाद ।।
कहत सकल जग ब्रह्म दाता को करो निषेद ।
ब्रह्म अदड है दड जिव याते आवत भेद ।।

।। चौपाई ।।

आप आपनो रूप भुलाना । आतम देह आपु करि माना ।।

अत—सुवस सुबोधन सरूप रत निराकार निर्मान ।
अनपेछा अनपस अगुन अल अकथ विध्यान ।।
का कहिए गति अकथ की कहे न जो कहि जात ।
अक कहे आवे कहनि ताते वनत चू पात ।।

।। सोरठा ।।

श्री गरु सिष सवाद निर्मित ब्रह्म निरूप रस ।
विरचित जज्ञ प्रसाद ब्रह्म वाद सपूर्ण शुभ ।।

इति श्री ब्रह्म निरूपणे गरु सिष्य सवाद कथा प्रसगे जज्ञ प्रसाद कृते ब्रह्मवाद विलासने ज्ञान प्रसग वरननो नाम नवमोध्याय ।। ९ ।। जो प्रति देषा . . .मिति अगहन कृस्न पछे तिथौ अष्टम्यां सुक्रवारे सम्वत १९३८ सन् १२८५ ५२ ६ वैजनाथ लाला सिहपुर के वल्द रामदीन लाल प

विषय—वेदान्त विषय वर्णन ।

सख्या ३१२ख ब्रह्मवादि, रचयिता—जनप्रसाद (रजप्रसाद), कागज—देशी, पत्र—८०, आकार—५.१ × [illegible], पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप)—१३६५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—महत श्री गुरुप्रसाददास जी, स्थान व पोस्ट—बल्दगावा, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नम ।। अथ ब्रह्मवादि लिख्यते ।।

।। चौपाई ।।

बदौ गुरुबराजिव रेणू । सकल सिद्धि की कामद धेनू ।।
जैसा सकल सिद्धि की दायक । जै मा मगल मोद सहायक ।।
जै धा धीरज धर्म की पालनि । जै ना नरषि धकि धालनि ।।
यई चतुअच्छर होई यई चतुरच्छर अस्मरत ।
प्रगट होई मत गोई उरग उए जिमि विन तकत ।। १ ।।

।। चौपाई ।।

'बाल दास' पद पकज ध्याऊँ । पद पदार्थ जेहि सुमिरे पाऊँ ।।
घरी घरी पल सोसा सोसा । बालदास कर मोहि भरोसा ।।

।। दोहा ।।

सत चित अनद मैं अलष पूरण अकह अनूप ।
निरविकार निर्गुण निश्रप अनभौबोध अरूप ।।
अहं अनपेक्ष्या अकृय स्ववस अनादि अरणत ।
बंदै मैं तेहि ब्रह्म कौ ब्रह्मवादि की तत ।।

गुरू सिषि संवाद वर विरचेउ जज्ञ प्रशाद ।
मुक्त्यार्थी पढि पाइहै ब्रह्मवाद को स्वाद ।।
अंत—स्ववस् स्वबोध स्वरूप रत निराकार निर्वान ।
अनपेक्ष्या अनुपम अगुन अलष अकथ विष्यान ।।
का कहिए गति अकथ की कहे न जो कहि जात ।
अकह कहे आवं कहनि ताते बनत चुपात ।।

।। सोरठ ।।

श्री गुर सिषि सवाद निर्मित ब्रह्म विरूप रस ।
विरचित जज्ञ प्रसाद ब्रह्मवाद सपुरन सुभ ।।

जं श्री सतगुर नमः ।। इति श्री ब्रह्म विद्या गुर सिषि संवादे कथा प्रसंगे जज्ञ प्रसाद कृते ब्रह्मवादि विलास......न प्रसंग वरननो नौमो अध्याय ।। ६ ।। ब्रह्मवाद सपूर्ण सुभमस्तु ।।

विषय—गुरु शिष्य सवाद के रूप मे ब्रह्म ज्ञान निरूपण ।

संख्या ३१२ग. समंहेत ग्रथ, रचयिता—जज्ञप्रसाद, निवासस्थान—जैनगरा (रायबरेली), पत्र—३७, आकार—८६/१० × १०५/१० इच, परिमाण (अनुष्टुप)—४८१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८७७ वि० (सभवत), लिपिकाल—स० १६५५ वि०, प्राप्तिस्थान—प० बालाप्रसाद जी, ग्राम–जैनगरा, डाक०–राजा फतेहपुर, जिला–रायबरेली ।

आदि—श्री गणेसाइ नम श्री गुर गायत्री सहाँइ ग्रथ समंहेत ग्रंथ जज्ञप्रसाद कृत लिषते ।।

।। दोहा ।।

वदौ श्रीगुर चरन रज समे हेत के अर्थ ।
सिथिल वुद्धि मम जानि कै कीजै ग्रथ समर्थ ।। १ ।।
वदौ गणपति के चरन नाम लिहे जेहि सिद्धि ।
तेहि प्रताप ते मिलत है आठ सिद्धि नव निद्धि ।। २ ।।
जक्त मातु सकर धरनि पूरि करं यह आस ।
विरचि ग्रंथ मम सुजस हित जानि आपनो दास ।। ३ ।।

कवित्त

तुम्हार ही भरोस है सकल परिवार को तुम्हार ही भरोसे ते सिरजि विधि श्रिटि है ।
तुम्हार ही भरोसे ते अचल वलवान होत रक होत इद्र जो विलोकहु सुद्रिष्टि है ।
ताते मागत है अनुचर बार बार बार धरिकै सुदृष्टि दृष्टि धरौ कर वृष्टि है ।
जगिप्रसाद के रे है न दूसरि आस मेरे सदा सर्वदा ही तुम्हार ही बाल इष्टि है ।। ६ ।।

।। दोहा ।।

बालदास महराज प्रभु धरौ चरन तव माथ ।
अनुचर 'जज्ञिप्रसाद' की सर्म तुम्हारे हाथ ।। ४ ।।
जौं न करनो करने परिहि पार तुम्है महाराज ।
किकर जज्ञिप्रसाद की हाथ तुम्हारे लाज ।। ५ ।।
बिरचि ग्रथ सुदर सरल सरवौ समौ निषेव ।
बालदास के पुत्र लघु भाषेउ 'जगिप्रसाद' ।। ६ ।।

।। अथ राज लछन ।।

कछा विढ रन सूरवाँ ब्रह्मन भक्त प्रवीन ।
सघर सील गुनवान अति साधु संत ते दीन ।। ७ ।।
अत—सर्म सकल ससार की जज्ञप्रसाद बनाइ ।
समंहेत भाषेउ कथा गुर चरननि चितलाइ ।।३६५।।

कुडलिया जग सोरठ कवित्त दोहा

इती श्री समंहेत जन्नप्रसाद कृते सबौ मर्म निषादे समं समं की बात वरननम् ॥ संपूरणम् शुभमस्तु ॥

१० ८ ७७

संम्बत बिग गिरि मं सतहत्तरि । भाषेउ कथा साल में यतरि ॥

कवित्त ६ दोहा ३६५ सोरठ ४ कुडलिया ४ सम्व धारन सवत मे ग्रथ लिखा गया संवत १६५५ फागुन महीना मे ॥ सुकल पछं ॥ सपूरण भय दिन अतवार ॥ तिथि ॥ १० ॥ संवत १६५५ ॥ तम ॥

विषय—नीति और राजनीति वर्णन ।

रचनाकाल

सम्वत विग गिरि सं सतहत्तरि ।
भाषेउ कथा माल मे यत्तरि ॥

संख्या ३१३ कविन (?), रचयिता—रगपाल, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—८ X ५॥ इञ्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—२३८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६४६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री ठाकुर कामदेव सिंह जी, ग्राम—भिटारी, डाक०—लाला बाजार, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नम

दोहा

अभिमत फल दायक परम मगल वरन स्वछन्द ।
बन्दौ जुगलकिशोर पद अनुपम आनंद कन्द । १

कवित्त

किशलय वारिजात बारि जात हारिजात सुमन शिरीष कोमलाई के हरण है ।
'रगपाल' अमल अनूपम अरुण आधे प्रात अर्क जपा जो तेई गुर वरण है ।
राजं शुभ रेख कज अकुश पताका आदि साका तिहु लोक प्रसरण के मरण है ।
विघ्न के वरण वारि फल के करण मुद मगल करण राधे रावरे चरण है । २
सुर तरु नव दलहू ते मजु राते शुभ अकुशादि चिन्ह हिय आनद भरण हैं ।
वेद वो पुराण जासु गावें नेति नेति जश वन्दित सुरन चित चिन्ता के हरण है ।
सुरसरिहूते अघ ओघ के दरण हारे कामधेनुहूते काम पूरण करण है ।
'रगपाल' अनुपम औढर ढरनि वाले असरण सरण गोविन्द के चरण हैं । ३
आनंद अगार सुकुमार नन्द के कुमार मार बलिहार जिन पर बेशुमार हैं ।
'रगपाल' जानें जिन देखी आगु यह छवि वर्नि सकें न अपि आनन हजार है ।
अग सावरे यो लसें रेशमी दुकूल पीत मुक्तनिवलित छोर बूटे जरीदार है ।
सार दामिनि को खंचि सुन्दर सिगार परतार के कतार जुत राखो करतार है ।

अत—

वाहन बिसारि धाय पावरि रहित पाय दुर ववराये सो सुरति उर धारि लैं ।
'रगपाल' भनें हौं तो औगुणहि भरहि याते कहत मकात दिसि आपनी निहारि लैं ।
कारण रहित कौन पाल्यो काहि छमा धाम करुणानिधान कान्ह विरद सम्भारि लैं ॥
भारी भव सागर ते हा हा यहिवार मोहि पीत पटवारे अरे बूडत उबारि लैं । ६२
धाई देखि ग्वैयां आजु तरणि तनैया तीर बासुरी वजावत वा नागर सुनट की ।
ग्रीवा की झुकनि त्यो कपोलनि पै रगपाल चटकीलो अलग मरोर वारी लटकी ।
आंगुरी की फेरनि व हेरनिक नाखिन की चुभि रही चित भौंह कोरन की मटकी ।
पट फहरान कान कुडल को थहरान छहरान छवि मजु मोर के मुकुट की ॥ ६३
गिरधर को भक्ती विना सुर को सरको नाहि ।
तहं नर की वा अपरकी कहु गिनती का आहि । ६४

शुभ संवत् १६४६ ।

विषय---भक्ति विषयक काव्य ।

संख्या ३१४. चिकित्सासिंधु, रचयिता---रंगीलाल पंडित, निवासस्थान---मथुरा, कागज---देशी, पत्र---१५७, आकार---९॥ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)---१८, आगरा मतबै बलदेव प्रकाश से प्रकाशित, पूर्ण, रूप---प्राचीन, गद्य, लिपि---नागरी, मुद्रणकाल---सन् १८९६ ई०, प्राप्तिस्थान---श्री प० भोलानाथ जी त्रिपाठी, ग्राम--मलकिया, डाक०--ढिंगवस, जिला--प्रतापगढ़ ।

आदि---श्री गणेशाय नमः अथ चिकित्सासिंधु प्रथम भाग मंगलाचरणं

दोहा

प्रथम सुमर गणराज को गुरु पद सीस नवाय ।
पुनि सुमिरौ धन्वंतरी ग्रंथ पूर्ण ह्वै जाय । १

हम इस ग्रंथ के पूर्ण होने के हेतु परमात्मा की स्तुति करते है

:o: .o: :o:

शिष्य

हे गुरो आपने वैद्यक शास्त्र के ग्रथ बहुत बनाए और वे समस्त ग्रथ आपकी कृपा से मैंनें पढ़े परतु अब आप कृपा करके ऐसा ग्रथ कहो जिस्से इस शरीर के बाहर के रोग अर्थात् फोड़ा फुंसी सूजन घाव चोट आदि के यत्न सहज ही मे जान सकूं ।

गुरू

हे शिष्य तेरी बुद्धि को धन्य है जो तू ऐसे परोपकारी प्रश्न करता है तेरी अभिलाषा से मैं समस्त चिकित्साओ के तत्व तेरे आगे कहूँगा ।

:o· ·o: .o·

यह चिकित्सासिंधु तीन भाग मे प० रंगीलाल मथुरा निवासी ने अति परिश्रम से वैद्यक वा डाक्टरी प्राचीन ग्रथो से सग्रह कर बनाया । सन् १८९६ ई० ।

अंत---माखी के विष जाने का लेप ।। केसर, तगर, सोंठ इन्है जल से महीन पीसकर लेप करै तो माखी को विष जाय

अथवा

:o: :o: :o:

दीपक के तेल को लेप करै तौ कान सलाई को विष तत्काल दूर होय ।

सर्प के विष जाने का अंजन

जमालगोटा के मींगी मे नीबू के रस की पुट ७ दे धूप मे सुखावै इसी प्रकार पीछे इसको अंजन करै तो सांप को काटो तत्काल अच्छो होय ।

इति श्री चिकित्सासिधु के सातो भाग सपूर्ण शुभम् सन् १८९६ ई०

विषय---वैद्यक विषय वर्णन ।

प्रथम भाग---कंठमाला, गलगंड, कखवारी और वद आदि की चिकित्सा का वर्णन ।

द्वितीय भाग---शरीर के सब अंगो के फोड़े, फुंसी, सब प्रकार के शस्त्रादि व गोली लगने तथा हड्डी टूटने आदि की चिकित्सा ।

तृतीय भाग---आतशक, सूजाक तथा नपुंसक आदि की चिकित्सा ।

चतुर्थ भाग---वात, पित्त, कफादि ज्वर का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य---मुद्रणकाल सन् १८९६ ई० है ।

प्रस्तुत ग्रथ मे वैद्यक विषय का वर्णन है । ग्रथ विषय की दृष्टि से उपादेय है ।

संख्या ३१५. अग्यारी विलास, रचयिता---रखन राम, कागज---आधुनिक श्वेत, पत्र---२, आकार---६¾ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)---१६, परिमाण (अनुष्टुप)---२५, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---कैथी, प्राप्तिस्थान---प० हजारीलाल जी द्विवेदी वैद्य, ग्राम--कुकहा रामपुर, पो०--शिवरतनगंज, जिला--रायबरेली ।

आदि—संत सरन १ सवद अगीआरी के वेलास लीख्यते सत १
ए मन समुझी देषु वीचारी । सभ सकल सोच वीचारी ॥
फेरी ऐसो अवसर नाही पाए । काहे करत पछताए ।
देषो जगत के रीती । केहु ना जाने प्रीती ॥
जीन्ह पाए पद नीरवान । से होए सत आमान ॥
तब छुटी गए भवसार ते । उतरी गए भयो पार ॥
जहा करत सषो आनतोवास । तहा करत सत वेलास ॥
सो सभ सषीअन के कत । 'सीव नराएन' संत ॥
जो जन आठुन जाnइ सुरती नीरतर नाम ।
से ओ सत सरन गहे तव पाए नीजु धाम ॥
धामु पाए वीसराम करे सदा रहे भरी पुर ।
फेरो नाही एही भव आइहो काल करम करो दुरो ॥
बोलो आपनो नाम जो चाहो नीज धाम ।
सीव नराएन समुझो मन मे होत पुरनो काम ॥
ए मन पुरनो साहेव जानो के सेइए ।
रहोए हाल हजुर 'रघन राम' विचारी कहे ।
हक देत भरो पूर ॥

सवद अग्यारी वेलास सपुरन

—पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—ब्रह्म ज्ञान।

संख्या ३१६. चिकित्सासार संग्रह, रचयिता—रघुनाथ, कागज—देशी, पत्र—१३४, आकार—१२½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, खंडित, रूप—प्राचीन (जीर्ण-शीर्ण), गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—डा० महादेव सिंह जी वैद्य, ग्राम व डाक०—मानिक मऊ चौवारा, जिला—रायबरेली।

आदि—

. . . .

. . . . समूह करि व्याप्त है दिशाओ विदिशा औरो का है आकास पाला ते पीडित अस सूर्य जो है सो अग्नि को आसा का प्राप्त होत है सो यह शिशिर काल है आई औ जो हेमत मा चर्या कही है सो शिशिरो म करै और पीपरि के साथ समान हरं वडीका सेवन करै ॥ औ पीठी हूरण आद औधरा इत्यादिक भोजन करै ॥ इति शिशिर ॥

॥ अथ वसत ॥

येहि वसंत मा हरि अरं जे वृक्ष समूह तिनमा प्रवृत जो वायु तेहि करि कपाए जे उदार फुलवाइ ॥ तिन मा जो पराग समूह तेहि सो युक्त आकाश सोभित होत हे औ फेरि उद्धृत रेणु समूह सो आछादित है और कस है वसत सपूर्ण ससार जीतै कै है इछा जेहि के असजो है काम तेहि की है यात्रा जेहि मा औ काम का मित्र आइ ॥ औ तेहि वसत मा कफ वलवान है जठराग्नि रोकि कं बहुत रोग करत हैं

अंत—दान जो जप जो होम कहा सो करं औ प्रायश्चित कै कै वैद्य चिकित्सा करै ॥

इति श्री रघुनाथ विरचिते चिकित्सासार सग्रहे रस निरूपन रस कथन रस विपाक शक्ति कथन दूतस्य शकुन कथन वैद्यस्य शकुन कथन दूत लक्षण काल ज्ञान नाडी परीक्षा मुख परीक्षा जिह्वा परीक्षा नेत्र परीक्षा मूत्र परीक्षा कर्म विपाक विधि नीय त्रितीयोपदेशः ॥ इति पूर्व खंड समाप्त ॥ अथ मध्यम खड पारभ्यते ॥ अथ धातूपधा तुना शोधन मारनमाह ॥ तत्रादौ धतूरा शोधन मारन ॥ टीका

—अपूर्ण

विषय—चिकित्सा विषय का वर्णन ।

संख्या ३१७. कवित, रचयिता—रघुनाथ कवि, कागज—देशी, पत्र—दो छर्रे, आकार—१२३/४ × ४१/२ इन्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप)—४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन (खंडित), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—

कोई सखी आगे कोऊ पाछे है बगल कोऊ कोऊ सखी नदी कुल देवता मनावती ।
रंगवास महल कोलाहल बहुत भएऊ सखिया सहेली इत उत जात आवती ।
भए भूमि लोटत कहे कहे कहन लागि ठनन ठनन सखि टठिया बजावती ।
भनै रघुनाथ कवि डोमनि छिनत नार सूपै भरि मोतिया परमपद पावती ।। १ ।।
गावै लागी सोहर सकल सुर नर नारि मगल परम देखि लोग तब हरखा ।
पाम फूल फल दूब दही रोचना बनाय सोनन के थारन मे भरि भरि धरखा ।
बाजै लागी नउबति नगारे धुधुकारे सब बाजत अनेक भांति कोउ नाहि परखा ।
भनै रघुनाथ कवि देवता प्रसन्न भए हरषि हरषि करै फल के बरखा ।। २ ।।
बांचै वेद पडित बतावै भल अक भाव वदी बीरवावली पढत चलि आवही ।
नाचै नट नाटिनी कथिक नाइका अनेक गुनी बहुभांति के बहुत सुन धावही ।
डेउढा तोप तुपक वगत सांम सुबू रोज मानो इन्द्रपुर मेघ घटा घहरावही ।
भनै रघुनाथ कवि राजा दसरथ द्वार नई नई बेल नई कीरति बनावही ।। ३ ।।
गऊ गज तुरग दुसाले साल मोती माल मूगा मणि हिरा हीया हरषि लुटावते ।
चांदी सोन रुपया असरफी षजाने षोलि देत निज लोगन को भारन भरावते ।
बढ़ई लोहार नाऊ धोबी औ कहार माली परजा सकल मन मागे सोई पावते ।

:o. :o. :o:

राम परसाद वर सिह ऐसी बरात साज्यौ जैसी मग आई तैसी देषन सब धाई है ।
हाथिन के हलका तापर सोनन के हौदा कसे झूलं सुलतानी तापर घटा घहरानी है ।
सुतर सवार असवार है रसाले सघ षास बरदार चोपदार छवि छाई है ।
भनै रघुनाथ आगे डका धुधुआत आवै झडी बरदार सौ पचास पहरात है ।। १ ।।
वाजत नगारे घुधुकारे नृप द्वारे आजु सारंगी मृदग धुनि नाचती स(हेल)री ।
गावती सुराग है बतावती प्रभाव भाव सभा बीच सुंदरी करत केलि भारी है ।
रंग के उमग मानो वरषा प्रविष्ट भई मीने झीने पट सोभा किंकिणी झमेलरी ।
भनै रघुनाथ कवि जै रहै बिबाह छवि बषतावर सिह की वढ़ बाल बेलरी ।। २ ।।

मौर महा रमणीय वनो मणि मोतिन को झलरी झलकै ।
पाग रुमाल दुपट्टा पितम्बर जाम विलोकत जी ललकै ।
चमकै दुति कुडल कानन मे उर माल प्रवाल सजै भलकै ।
रघुनाथ भनै छवि दुल्लह की बषतावर सिंह सुमगल कै ।। ३ ।।

एक वोर दही की वहेली लिहे ग्वारिनी है एक वोर माली फूल डाली लिहे हाथ है ।
एक वोर जुवती कहान छवि नारि गंगा वारि घड़ा भरि लाई धरि माथे है ।
एक वोर नौवति नगारे बाजे वाजि रहे एक वोर नायका करत गान अछे है ।
मंगल परम सोउ मंगल है अनद महा अमुक महीप को असीसत रघुनाथ है ।। ४ ।।
विमल सुजस तव प्रबल प्रचड भल तेगन के तेज मानो झरत अंगारे हैं ।
वैरी की वधूटी अवलोकि के प्रताप अति रोदन करत नित निज घर द्वारे है ।
कज्जल नय(न) मे दिवाए मृग नयन सब धारा जल श्रवत बहत नवनारे है ।
भनै रघुनाथ कवि याही से तडाग भयौ पछी जौ नहायो जाय भयो सोई कारे है ।
कमर कसत जब मोछ पर हाथ फेरि शत्रुन के धक धक होत धुक धुकी है ।
कांपत करेज थर थर दांत षट षट मानहु जडान सिसु सांस हुकहुकी है ।

बारही बहादुर ग्रमक तेरी धान सुने भागि बिलगाने जहाँ तहाँ लुक लुकी है ।
भनें रघुनाथ कवि वीर तब सन्मुख मुड को उठावें ग्ररि घी च भुक भुकी है ।
बीरवर बलवांके ग्रमक महां के पाल नव भुजदड को प्रताप जग जानियाँ ।
बैरी जन विकल विहाल डोले डोले फिरें लिन्हें सग बाल बन बन बिललानियाँ ।
ससत विरिछ तर बसतन एक दर पात के धरकत भरकत पलानियाँ ।
भनें रघुनाथ कवि सारदा प्रताप जानि सुजस विमल रुचि प्रगट वषानियाँ ।।
बन बन लुनत (?) फिरत तब डेरि मानि ग्राउन पहारन के थाडन बहारही ।
ग्रासन कुसन पर सुतल बिछाय . . . . . ।
छोड़े ग्राम महल यहल कहु थिर नाहीं भागे भागे फिरत न वसन सम्भारही ।
भनें रघुनाथ कवि सारदा प्रताप जानि ग्रापु के समय मे न कोई पार पावही ।।

--पूर्ण प्रतिलिपि

विषय--रामजन्म, किसी अवधाधर सिंह की वंशावली और शारदाप्रताप राजा के यश का वर्णन किया गया है।

संख्या ३१८ विक्रम नाटक, रचयिता--रणविजै बहादुर सिंह, कागज--देशी, पत्र--२८, ग्राकार--११ X ७ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--२२, ग्रपूर्ण, (खंडित), रूप--प्राचीन, गद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--नागरीप्रचारिणी सभा (दाता--श्री पं० लालताप्रसाद जी पाडेय, ग्राम--मदहा, डाक०--रानी गजपुर, जिला--प्रतापगढ) ।

ग्रादि-- . . .

व्यवहार मान्य विरुद्ध शोक चिन्ता सकल्प धर्मज्ञता रीति इत्यादि द्रव्य विद्या ग्रनुकूल ग्रात्मा सयोगी होते हे यथार्थावधि यथा क्रम बहु कालानुमानतें ससार के गोप्य पदार्थ इस द्वारा प्रगट होना ग्रौर प्रत्येक विषयो का ग्रनेक गुण ग्राराधन करना कुछ कठिन नही विदित है कि एक जीव की दशा ते दूसरे को उपपत्तिक ज्ञान होता है जो कि यही निर्याभिक भूमिका इस रचना की है हरि एक पाठक से प्रार्थना है कि लिखित चरित्र को रहस्यो को विवेक दृष्ट ते निरीक्षण करें ग्रौर यथार्थ नीति कुल धर्म्म व्यवहार मर्य्यादा तथा कठिन शोक रहित शूरता को समझि भविष्यकाल मे यथार्थ फल उठावें प्राचीन महाशयो का यथार्थ वाद समसुद्ररूपी के सामने ग्रसमदायिक का उद्योग रूपी रूपी ग्राचरण पृथ्वातल के विषे सुजान जीवो को प्रति दिन उपकारक है यद्यपि लघुमति ग्रल्प पराक्रमी चतुरवश विद्या विहीन हो तथापि तदपि कहे विन रहा न कोई । इत्यादि ग्रपर वाक्यो के प्रमाण से गुरु चरण रज ग्रजुन ग्राज्जत होके ईश्वर के विषे ध्यानादिक पराक्रम तें किंचित साहस पाय नाटक निर्माण करवे मे इक्षा करता हूँ

·o· o .o

सूर्योदय होत ही श्री नगरी उज्जन निवासी जीव रात्रि का सुख छोड ग्रपने २ कर्म के प्रारम्भ को परिबद्ध होते भए स्त्री कोटि ने पर्म्म सुखदाई परजक कोमल रहस्य को त्यागि गृह कर्म्म कौतुक को व्यसन माना ग्रभी कोई ग्रपने कर्म मे यथार्थ रीति से उद्यत नही हो चुका था कि राजमहल की दिशा ते मन्द मन्द शब्द दुन्दभी की समस्त नगर मे पूरित भई ।। सिद्धि श्री मन्महा राज कुमार श्री मद्विवान रणविजै बहादुर सिंह विरचिते विक्रम नाटके प्रथम. परिच्छेदः ।।

ग्रत--यह प्रकार से वीर विक्रमादित्य राजा नैताल सहित चम्मल एर्वती नर्वदा ग्रनसोइया वालमीक गगा जमुना जान्हवी सती गोमती तमसा सरजू घाघरा मनोरामा कुवानो रापती बूढ़ा रापती नारायणी गडक सोन कोसी यह प्रकार से बहुत सी छोटी बडी नदी कि जिनके बहुत से नाम शास्त्रो मे प्रमाण नही हे ग्रौर जेन की एकान्त सान्ति गति कमल नीलोत्पल रक्तोत्पल कुशेशो श्वेत कमल सहस्रदल ग्रौर ग्रनेक भांत के कउमोद की जलज दवना पुपुर सतावर ककरौना करेमू सेवार इत्यादि जल की विविध लहरी के साथ तरग करत लहरें लेत ग्रौर फूलो के प्रकाश से ग्रनेक तरह के सुगधता से पूरित उल्ली कोट के पुष्प जलजि वृक्ष के उपर ग्रालिगन करती है मानो रस पूरित मुगधा वधू के समान निज पति के प्रेम सहित काम क्रीड़ा के ग्रनुकरण ते वर ज्योत के साथ मिलित दश गुण सोभा विराजमान भयी व ग्रानन्द पूर्वक निरीक्षण करत पारंगत

भए :o: :o :o: पक्षी......अस्नेह को बढ़ावत भाँति भाँति की बोली बोलि कर प्रतिक्षण पर पखने को छिरकाय द्रुम्म को बुमाय गटई फलाय ठोर बगराय बड़े भारी आनन्द मे मगन ह्वै रहे है

विषय—राजा विक्रमादित्य के चरित्र का चित्रण किया गया है।

संख्या ३१९. स्वरोदय, रचयिता—रतनदास, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—७॥ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—७८ अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० राधारमण जी, ग्राम—पडित का पुरा, डाक०—बेलारामपुर, जिला—प्रतापगढ।

आदि—श्री गणेशाय नम.॥ अथ रतनदास कृत स्वरोदय लिख्यते॥

दोहा

पुर पुरुषोत्तम जे भजे सुमति परम गति होहि।
विघुन विनासं दुख नसं सिद्धि सकल सब देहि। १
सत गुरु द्रम्वा नन्द है प्राननाथ पतिधाम।
तिन पद पंकज प्रेम सौ सेवहु करहु प्रणाम। २
जिन्है समुझि नहि ससकृत तिन हित अति अभिराम।
रतनदास भाषा कहत ग्रथ स्वरोदय नाम। ३
शैल सिखर कैलाश पर बैठो गौरीनाथ।
निकट उमा अति विनय करि कही जोरि जुग हाथ। ४
महादेव मोसो कहो करुणानिधि का हेत।
महामंत्र स्वर ज्ञान जो सर्व उपर सिन्नेति। ५
जग शिव हित शिव जू कही शुनी शिवा निज सोइ।
सवनि सरं सुर ग्यान है सो नहि जानत कोइ। ६
साति होइ हिय विमल मति गुरु मति दीछावत।
तोहि स्वरोदय ज्ञानमय कहियै अति सुभसंत। ७

अंत— **अथ पचतत्व**

चौपाई

...पंचतत्व को भेद जु कहो। उमा जौन सुर जैसे लहो।
भूमि तत्व है अगुल द्वादश। वहै तत्व जल अगुल षोडश।५४
अगुल चारि तेजगति जान। अष्ट सुअंगुल वाइ वषानि।
सुधो चलै सुभट सुर तौन। पृथीवी तत्व जानिये जौन।५५
नीर तत्व सुर नीचो होइ। लगं आइ ओठन सो जोइ।
उरध गमन करै सुर तवै। तेज तत्व लषि लीजै जवै।५६
वायु तत्व तिरछी गति तौन। तत्व अकास चलै सऊोन।
संत वरन जल पृथीवी पीत। . . . .

—अपूर्ण

विषय—स्वरोदय विषय वर्णन।

संख्या ३२०. ब्रह्म रहस्य, रचयिता—रतनहरि, कागज—आधुनिक पीला, पत्र—८, आकार—९ × ५१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—१०५, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—

. . . . सतयुतं। मुनि शक्ति सपूत सुत सुनतं॥
प्रमेश्वर समत्रय लोक परं। शुभ श्याम तनुतन तीव्र धरं॥ ७॥
सर्व विश्व विनाश विलोक हिये। मत मन्त कोउ निर्वेद लिये॥
करि कर्म अकर्म नही लहिये। तिहँते पग श्री गुरु के गहिये॥ ८॥

एहि भाँति विचार विरक्त जती । कर पावन चाहै अनंत गती ॥
गुन ग्यान विधान गुरू लहिके । बिनवै विध सो सरना गहिके ॥ ६ ॥
भगवन भव वारि अपार परचौ । भव रोग वियोग विहाल करचौ ॥
सरनाथ गह्यौ तेहिते डर के । प्रभु पार करो करुणा करके ॥१०॥
सरनागति पाल कृपाल प्रभो । उधरौं गज ज्यो गहि बाहि विभो ॥
सुन शष्य विनय एहि भाँति गुरु । करनो जो कियो उपदेश शुरु ॥११॥
शब्दादि एतो तन मान मतो । तज दायक दुष्ट अनेक गती ॥
नित्य आतम तत्व विचार करौ । गहि ज्ञान महा भ्रम मोह हरौ ॥१२॥
:o. .o. :o.
अविकार उमेय अवभासक जो । पारब्रह्म प्रपच प्रकासक सो ॥४१॥
इति श्री ब्रह्म रहस्य रतनहरि विरचिते टोटक प्रबधे नाम प्रथमो विश्राम:
अंत--

तिनम कर भावन ब्रह्म मई । कहि ब्रह्म उपासन रीत नई ॥.
नहि तत्व अखडि अर्थ अहे । न उपाशन तत्वमसी सो कहे ॥२६॥
इम अर्थ विभेद तें भेद लहेव । पुन पूरव शब्द न भेद कहेव ॥
ननु ज्यो परजीव अभिन्न अहे । मन आदिक हूँ तिम भिन्न नहै ॥२७॥
मृद तें नहि भिन्न घटादि यथा । मन आदि न ब्रह्म विभिन्न तथा ॥
वच तत्वमसी इव तेंपि अहो । सत विधायक क्यो न कहो ॥२८॥
नहि यो तिन वाक्यन मे जेहितें । इति अवविध शब्द नही तेहितें ॥
तेहि हेतु उपासन होनिन मे । नहि तत्त्वमसी समता विन मे ॥२६॥
सत वस्तु विधायक ते नवने । .

—अपूर्ण

विषय—ब्रह्म ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या ३२१ रमल प्रश्न, रचयिता—राघवदास कागज—देशी पत्र—१, आकार—८॥। × ६। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप)—३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८१७ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—
श्रीराम
निकट अमल हित के 'राघव' कहि समुझाई ।
रमलादि सभ छानि क आन्यौ प्रश्न बनाई । १
उदधि मथात्तिमि प्रश्न हित सकल देव गत कीन्ह ।
वेद मथा तिमि प्रश्न हित, नर दछिन वर दीन्ह । २
लं कौडी पावित्र कर वार तीनि करि डारु ।
परं सु अंकहि देखि ताको करें विचारु । ३
जनि अकुताहु जीव मह अव पैहहु फल नीक ।
निश्चं कारज सिद्धि है 'राघव' होत सरीक । ४
अव देषहु प्रभु के चरित करय सो आगे काह ।
कर्म लागि चिंता हरं लिषा जगत के नाह । ५
अव मेहनत जनि कीजिए काजन होइहि तेरु ।
सत्य गनहु 'राघव' वचन कस न टरं गिरि मेरु । ६
अंत—अव आगहि देषहि यही कर्म रेख की बात ।
बहु का पुरबं विधि लिषा पुर धरु मजुल गात ।२७
आस न छाडहु राम ते रहो ताहि कर जोरि ।
कृपा सिंधु अज गंव ते देहे रोजी तोरि ।२८

कछुक दिवस लहि ढील है फिरि होइहि तुव काज ।
आसन छाडहु जीत मे करिहै रघुकुल राज ।२६

इति श्री राघवद्वास कृत रमल प्रश्न संपूर्न । संवत् १८१७ वि० ॥

विषय—रमल विषय वर्णन ।

संख्या ३२२. कार्तिक माहात्म्य, रचयिता—राघोदास, कागज—देशी, पत्र—३३, आकार—११$\frac{६}{१०}$ × ४$\frac{९}{१०}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप)—७८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८४८ वि०, प्राप्तिस्थान—प० शिव बालक राम जी मिश्र, ग्राम—कपूरीपुर, डाक०—करहिया बाजार, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ शतगुर शरण परमात्मणे नमः अथ कार्तिक माहाम्य लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

वंदौ अलष अनादि अज अविगति विगत विकार ।
भक्त हेतु धरि विविध तन करत सुचरित अपार ॥ १ ॥
नारायण मम प्राणपति श्रीपति उत्तम नाम ।
मम हिय कज भृग इव बसहु सदा घनस्याम ॥ २ ॥
:o: :o: :o:
वर्ष सहस्र आठ शय अठचालीस व्रतमान ।
कीन्ह कथा आरभ को राघोदाश प्रमान ॥१२॥

॥ चौपाई ॥

हिम ऋतु अगहन मास पुनीता । सुक्ल पछ तिथि गौरि अभीता ॥
सोमवार शुभ युत अनुधा । कथा अरभ सोई दिन शाधा ॥
मिश्रित पद्म पुराण पुनीता । महिमा कार्तिक वेद विनीता ॥

अंत—

राहु वचन सुनि सहित समाजा । बोलेउ वचन कोप करि राजा ॥
सुनहु भारगव वचन हमारी । सोधहु समय सुदिन शुभकारी ॥
शुभादिक सब मतहि बोलाये । आयसु पाइ सपदि चलि आये ॥
बाँधुहु अस्त्र शस्त्र कह राजा । करहु शकल लरवै के शाजा ॥

॥ दोहा ॥

साजहु वाहन तुरग गज सुरथ होहु असवार ।
वाजन समर शुहावनो सपदि शकल परिवार ॥८०॥

इति श्री पद्म पुराणे उत्तर षडे कार्तिक माहात्म्ये पृथु नारद सवादे भाषा प्रबंधे राघोदाश कृत ज्वलधरीयाख्यानी दूत वाक्य नाम द्वादशो अध्यायः ॥१२॥

—अपूर्ण

विषय—कार्तिक माहात्म्य का हिंदी मे पद्यानुवाद ।

रचनाकाल

१ ८ ४८
वर्ष सहस्र आठशय अठचालीस व्रतमान ।
कीन्ह कथा आरभ को राघोदाश प्रमान ॥१२॥

सख्या ३२३ सामुद्रिक, रचयिता—राम, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—११॥ × ६। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—३४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९०४ वि० प्राप्तिस्थान—श्री प० रामकुमार जी, ग्राम—वलुवन का शिवपुर, डाक०—कोहडौर, जिला—प्रतापगढ ।

आदि—श्री गणेशाय नम

बाजन साजत करत जुरि आनि किये एक ठौर ।
पहिले दुलहा चाहिए जो बाधे सिर मौर ।

अथ आयु प्रमाण दोहा

बावन आगुर जो पुरुष तन नृपति पुत्र जौ होइ ।
आवर मव दिन प्रति करं भिच्छा तज न ग्रेह । ६
आठ वहाई आगुरी नापि लेहु नर देहि ।
कूर कुटिल कपटी महा भूलि न कीजे नेह । ७
नवै आगुरी अधमनर मधिम सो लघु लेषि ।
होइ एक सौ आठ लौ उत्तमनुज विशेषि । ८
नवं आगुरी जो पुरुष तीस वर्ष की आयु ।
पाच वर्ष प्रति आगुरी वीसा सो लो पायु । ९
असी वरस की आरवल सौ आगु जो अग ।
सात वर्ष सौ ते अधिक अहि अगुरी को सग ।
सौ आगुर दस आगुर पुरुष डेढ से आयु ।
अगुरी पीछे वर्ष दस वीसा सौ लै पायु ।
होइ एक सं बीस तं उपर मनुज पतग ।
चिरजीव सो जानिए होई न कवहु भग ।

चरणलक्षणम

अंत—

दोहा

कुचिल कच मेचक वरन सुछिव वचन जो आई ।
पतिव्रता सो नायका उत्तम कहौ शुभाई ।
मोटे छोटे नारि के भवरे होइ जो केश ।
वम्वा रहै जो फलकं दुख धर घर द्वार ।

नाम लक्षण

केसर रित्ता के पान फल जे देवीन के नाम ।
ऐन के आगे पिय मरे वेद वतावत 'राम' ।
नयननि झपकी नीद को अलसाने सब अग ।
रोस भरी तरुणी रहै सकल अलक्षण सग ।
नख सिख लौ लक्षण कहै अग अग विस्तार ।
तिनके गुण औगुण सकल देषहु चित्त विचारि ।

इति श्री महारुद्र गौरी सवादे समुद्रक भाषा सपूर्णम । सवत् १६०४ ।

विषय—पुरुष तथा स्त्रियो के लक्षण तथ उनके अग प्रत्यग के गुण दोष का वर्णन ।

संख्या ३२४ वैद्य शिरामणि, रचयिता—राम कवि, कागज—देशी, पत्र—८ खर्राकार, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—११०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६०० वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥

॥ सोरठा ॥

गणपति गौरि गिरीश गगा गिरधर औ गिरा ।
इनके चरगन शीश नाय भनत औषध शिरा ॥ १ ॥
जुल्करण शिकदर साह पातसाह है रूम को ।
सातौ तषनन माह हुकुम हजूरी घूमिगो ॥ २ ॥

जेते चतुर सुजान है हकीम हूँ दीन के ।
निज निज किहे समान हाजिर होवें रूम में ।। ३ ।।

।। दोहा ।।

लिखा लषत सब तषत पति तेही वषत के माह ।
नषत विचारयो ना वषत विदा करयो छिन माह ।। ४ ।।
गये सबै मिलिरूम में जहा सिकदर साह ।
अरजी गुजरी सभन की सुनिगो दुनी पनाह ।। ५ ।।
हुकुम हजूरी फिरि कढो हाजिर होय हजूर ।
सुनत सबै चलि गये जहँ दाता ज्ञाता सूर ।। ६ ।।
कै अदाव औ अरज को कीन्ह्यो दुवा सलाम ।
दोऊ दीन के गुणी जे कै कै कोटि कलाम ।। ७ ।।
सोहवति तिन की असल कै नसल औसधी केरि ।
जहिर रोग जहान जे पूछिउ तिन की फेरि ।। ८ ।।
जाँचि जाँचि निज शास्त्र सो साँचि साँचि अलगाय ।
कह्यो सिकदर साह सो लयो किताब बढाय ।। ६ ।।

।। शोरठ ।।

सदा आपने पास राषत भाषा नेह सो ।
करिकै जतन प्रकास रतै और तै नेम सो ।।१०।।
भाषा भाषै राम कवि सो किताब की रीति ।
लहे जीविका नृपति सो जो है जगत 'अजीत' ।।११।।
करौ प्रसंसा वस की तौ न ताहो विश्राम ।
ताते सक्षेप कहौ तासु गोत गुन ग्राम ।।१२।।

।। हरिगीतिका ।।

सालिवाहन वस मे अवतस नरपति भूप है ।
प्रजा पालन करत बहु विधि नीति जासु नृप है ।।
सदा दान कृपान सो जग जीति लीन्ह्यो हाथ है ।
करौ कौन वषान ताको जगतपुर को नाथ है ।।१३।।
सो नरेश 'कवि राम' सो कीन्ह्यो धर्म सनेहु ।
"वैद्य सिरोमणि" नाम कै सो भाषा रचिदेहु ।।१४।।
सवत वनइस सै गये आठ अधिक तिथि पाँच ।
माघ सुदी दिन शोम को रच्यो ग्रथ यह शाँच ।।१५।।

अंत—

।। चौपाई ।।

ल्याउ चिर चिरे की जर छालो । वरिआरी के बीजा घाली ।।
भंगरा के वीजा लै आवै । स्वैत कदैल की छाल बतावै ।।
समुद शोक अजवइनि जानौ । कनक बीज जावत्री आनौ ।।
ल्याइ अफीम मिलावै तामे । ऊट कटार के वीजा वामे ।।
आनि वरोबरि सवै पिसावै । वकरी दूध मिलाइ सनावै ।।
वेर जगली के परिमाना । वाँधै गोली चतुर सुजाना ।।
गोली सुबू साम को षावै । थमै काम कोति अति पावै ।।५६।।

।। अन्य च ।।

।। चौ० ।।

विन पाछा पोसता को दाना । शोठि औ गोहू लेव समाना ।।
यक यक तोला तीनिउ लै कै । आधो सेर सराब मिलै कै ।।

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—ग्रायुर्वेद विषय वर्णन ।

रचनाकाल

संवत वनइस सं गये ग्राठ ग्रधिक तिथि पांच ।
माघ सुदी दिन शोम को रच्यो ग्रंथ यह शांच ॥१५॥

संख्या ३२५. ग्रंथ कुंडली चक्र, रचयिता—राम किंकर, कागज—देशी, पत्र—५, **ग्राकार**—७॥ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (ग्रनुष्टुप)—११४, खंडित, **रूप**—प्राचीन पद्य, लिपि—नागर, लिपिकाल—सं० १९२२ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—पं० काशीनाथ पाठ्य, ग्राम—खर्तीरपुर, डाक०—कादीपुर, जिला—सुलतानपुर) ।

ग्रादि—

. . . .
मरते नाही कभी मरै शकल ससार ॥
मरैगा धरती पावक पानी ग्रवर ग्राकाश मरै देवन्ह की रानी ॥
कोटिन ब्रह्मा मरै बिष्णु कोटिन मरिजाही ॥
कोटिन रुद्र गणेश सूर्य चन्या होय जाही ॥
ग्रादि जोति भी मर मरै पुरष ग्रौ नारी ॥
मरता है सब लोग मौत नहि होय हमारी ॥
कहा 'राम किंकर' सही ज्ञानिउ करो विचार ॥२८॥
देश हमारा लखा है जहा बस भगवान ताही की बात ग्रमानी ॥
लखै न मरष कभी लखगे सोह ज्ञानी ।
देखा मातौ लोक कही नही ईस्वर देखा ॥
बैकुठो मे गए शून्य कै शून्यें लेषा ॥
लोक वेद मे लषा राम मानै नहि कोई ॥
ग्रापुइ मे है ग्रापु ग्रापु ग्रापुइ है सोई ॥
कहा राम किंकर सही मतन बीच ठकान ॥२९॥
हम गुरु ज्ञानी पूर है हमको क्या है तंक ॥ हमन है सोह ज्ञानी ॥
ग्रमर ग्रजर जो शब्द ताहि सुरति समानो ॥
हम पाया गुरु तत्व हमको क्या शिखलाग्रो ।
परा भक्ति की बात हमारे ग्रागे गावो ॥
कान जहा लग सुनै जहा लग देख नयना ॥
बुद्धि जहा लगि सुनै तहा लगि नाही मयना ।
ग्रावै एकै भाव द्वैत कबही नही वर्शे ॥
सोई ज्ञानी पूर तत्वमसि ग्रापुइ पर्शे ॥
कहा राम किंकर सही खुल्या म्यान मे सैफ ॥३०॥

ग्रंत—

॥ कुंडलिया ॥

नाम कुंडली जान जह सोई कुंडली चक्र ॥
पढ़ैगा जो मन लाई। नितही कर्ना पाठ ग्रवर को देय बताई ।
ग्राठ पहर हर्गिज न चित विलगाय न पावै ॥
छूटै शकल कलेम ज्ञान विज्ञानौ ग्रावै ॥
चारि पदारथ मिले भूठ कबही नहि जाना ॥
गावै सकल पुरान सत वानी महि माना ॥
कहा 'राम किंकर' सही रविवासरे कातिक मासे सम्वत् १९२२ ग्रंथे कुंडली चक्र समाप्तम् ॥

विषय—संत मतानुसार ज्ञानोपदेश तथा भक्ति वर्णन ।

संख्या ३२६क. सीता चरित्र, रचयिता—राइचद 'चद', कागज—देशी, पत्र—१८२, आकार—६$\frac{6}{10}$ × ६$\frac{5}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—३५१३, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७१३, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर (बडा मदिर), चूडीवाली गली, चौक, लखनऊ।

आदि—श्री जिनाम: ।। सीता चरित्र भाषा लिष्यते ।।

।। दोहरा ।।

पनमौ परम पुनीत नर वरधमान जिन देव ।
लोकालोक प्रकास तसु करं समकिती सेव ।। १ ।।
:o: :o: :o:

कवि वालक यह कीनो है ष्याल । हसो मती बुधिवत विसाल ।।
राम जानकी गुन विस्तार । कहे कौन कवि चरन विचार ।। ३ ।।
देव धर्म गुरु कु सिर नाइ । कहै 'चद' उत्तम जगमाइ ।।
पर उपगारी परम पवित्त । सज्जन भाव भगत कै चित्त ।। ४ ।।

अंत— **।। दोहरा ।।**

कियौ ग्रथ रविषेण ने रघु पुराण जिम्र जाण ।
वहै अरथ इण मे कह्यो 'राइ चद' उर आण ।। ३० ।।

।। अडिल्ल ।।

कहै 'चद' कर जोर सीस नय वदीये ।
तजं सकल परभाव सदा चिर नदीयं ।
रह सीता की कथा सनं जो कान दे ।
गहै आप निजभाव सकल परदान दे ।।३१।।
:o: o. ·o.

।। चोपाई ।।

सवत सतरं तेरौ तरं......... .. ..

—अपूर्ण

विषय—सीता चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

सवत सतरं तेरौ तरं . . . . ।

सख्या ३२६ख. सीता चरित्र, रचयिता—राइचद 'चद', कागज—देशी, पत्र—१३६, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—२६५२, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर (बडा मदिर), चूडीवाली गली, चौक, लखनऊ।

आदि—ॐ नम: सिद्ध ।। अथ सीता चरित्र लिष्यते ।।

।। दोहरा ।।

पनमौ परम पुनीत नर वरधमान जिन देव ।
लोकालोक प्रकासत. करं समकिती सेव ।। १ ।।
:o: :o: :o:

देवधर्म गुरु की सिरनाई । कहै 'चद' उत्तम जगमाई ।।
परम उपगारी परम पवित्त । सज्जन भाव भगति कै चित्त ।। ४ ।।

अंत—

रत्न विव सोभा अधिकाय । सुरु गुरु वरन थकित ह्वै जाय ।।
वरण कमल जिनके कर जोर । नमो सीस द्युति करी बहोर ।।४७।।
बैठो तहां दसानन आप । ध्यान मत्र मृष विद्या जाप ।।
अंगद अरु बोल्यो हनुमान । धिग धिग तोहि कपट की षान ।।
सुन रे मूढ पा...............................

—अपूर्ण

विषय—सीताचरित्र वर्णन ।

संख्या ३२६ग सीता चरित्र भाषा, रचयिता—रामचंद 'चंद' या 'राइचंद', कागज—देशी, पत्र—१६३, आकार—६३⁄८ × ५५⁄८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—२६४६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, रचनाकाल—सं० १७७७ वि०, लिपिकाल—सं० १८०१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर (बड़ा मंदिर), चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—ॐ नमः सिद्ध ।। श्री वीतराग गुरुभ्यो नम ।। अथ सीता चरित्र लिष्यते ।।

।। दोहरा ।।

प्रनमो परम पुनीत वर वरधमान जिन देव ।
लोकालोक प्रकास तस करं सम कितीसेव ।। १ ।।

:o: o :o:

देव धरम गुरु को सिर नाइ । कहै चंद उत्तम जसभाइ ।।
पर उपगारी परम पवित्त । सज्जन भाव भगति कै चित्त ।। ४ ।।

अंत—

।। दोहा ।।

कियो ग्रंथ रविसेन नें रघु पूरण जिय जान ।
वहै अरथ इनमें कह्यौ 'रामचंद' उर आनि ।।

।। अरिल्ल ।।

कहै चंद कर जोरि सीस नाय वंदियै ।
तजै सकल परभाव सदा चिर नंदियै ।।
यह सीता की कथा सुनौ जौ कान ।
गहै आप निज भाव सकल पर दान है ।।३१।।

o. o o

संवत सतरह सै सतोत्तर । मगसिर ग्रंथ समापत करै ।।
सुकुल पाष तिथि है पंचमी । आयो जानि कुमति जिन वमी ।।४३।।

o o .o.

सुनै गुनै जो चित समभाव । टरै नाहि करि कोटि उपाव ।।
न पाचो सवाइ सटीक । कारिज होइ लोहड़े लीक ।।

इति श्री सीताचरित्र भाषा सम्पत ।। शुभ मस्तु ।। संवत १८०१ समये माघे मासि सुक्ल पक्षे पंचम्या तिथौ शनि वासरे लेषित मिद पुस्तक मकरंद दीछितेन शुभ ।। यादृस पुस्तक दृष्ट्वा तादृश लिष्यते मया ।। यदि सुद्धमसुद्ध वा मम दोषो न दीयते ।। १ ।।

विषय—सीता का चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

संवत सतरह सै सतोत्तरै । मगसिर ग्रंथ समापत करै ।।
सुकुल पाष तिथि पंचमी । आयौ जानि कुमति जिन वमी ।।

संख्या ३२६घ सीता चरित्र, रचयिता—रामचंद 'चंद' कागज—देशी, पत्र—१००, आकार—६१⁄४ × ७१⁄४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप)—३०२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७७७ वि०, लिपिकाल—सं० १८०८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर (बड़ा मंदिर), चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—ॐ नमः सिद्ध ।। श्री वीतराग गुरुभ्यो नम ।। अथ श्री सीता चरित्र लिष्यते ।।

।। दोहरा ।।

प्रनमो पर्म पुनीत नर वर्धमान जिन देव ।
लोकालोक प्रकासत करै समकिती सेव ।। १ ।।

:o: :o: :o:

॥ चौपाई ॥

कवि बिलास यह कीनो ष्याल । हँसो मति बुधिबंत बिलास ॥
राम जानकी गुरण बिस्तार । कहै कौन कवि बचन विचार ॥ ३ ॥
देव धर्म गुरु कौ सिर नाई । कहै 'चद' उत्तम जगमाई ॥
:o: :o: :o:

॥ सवैया ॥

रावनि को जीति राम सीता लै विनीता ग्राए वरतै सुनीति राज वलक सुहावनौ ।
सुष मै वितीत काल दुष कौ वियोग हाल सवही निसाल पाप पंथ मै न ग्रावनौ ।
वाही वर्तमान दीसै सबही सुवुध लोक सुरग समान सुष भोग मन भावनौ ।
कोउ दुषदाई नहि सज्जन मिलाय माहि सबही सुधन लोक रामगुन गावनौ ॥१२॥

ग्रंत---कियौ ग्रथ रविसेन नै रघु पूरन जीय जान ।
गहै ग्ररथ इनमें कह्यौ रामचद उर ग्रान ॥३०॥

॥ ग्ररल ॥

कहै चद कर जोड सीस नय वदियै ।
तजै सकल परुभाव सदा चिर नदियै ।
यह सीता की कथा सुनौ जौ कान दै ।
गहै ग्राप निज भाव सकल परनाम है ॥३१॥
:o. :o: :o:

॥ चौपाई ॥

संवत सत्रै सहसै सतौतरै । मंगसिर ग्रंथ ममापत करै ॥
सुकुल पछ तिथि पचमी । ग्रायो. . . . . . . जनवमी ॥
:o: :o: :o:
ए पाचौ सवाई सटीक । कारिज हौइ लौहडै लीक ॥२५४८॥

इति श्री सीता चरित्र भाषा संपूर्ण ॥ सुभ मस्तु सवत १८०८ मीति माह वदी पंचमी वुध वासरं ॥ षैरवाद मध्ये लीषी ॥ जौहरी मल पठनार्थ ॥ १ ॥

विषय---राम जानकी का चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

संवत सत्रै सहस सतौतरै । मंगसिर ग्रथ समापत करै ।
सुकुल पछ तिथि पंचमी । ग्रायो . . . . . . जनवमी ॥

सख्या ३२७क. दृष्टात बोधिका, विवेक सतक, रचयिता---रामचरणदास, कागज---देशी, पत्र---६, ग्राकार---६½ × ४⅞ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)---६, परिमाण (ग्रनुष्टुप)---६६, खडित, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---श्री साहित्य सदन सार्वजनिक पुस्तकालय-गूढा, डाक०-खजुरै (बछरॉवा), जिला-रायबरेली ।

ग्रादि---श्री रामानुजाय नमः ग्रथ विवेक सतक प्रारभ ॥

॥ दोहा ॥

राम चरन दृष्टांत विनु मन न लहै श्रुति बोध ।
सहस बात की वात यक कही ग्रथ सत सोध ॥ १ ॥
रामचरन श्रीरामको वंदत सब सुष पाय ।
जैसे सींचे मूल के डारपात हरिग्राय ॥ २ ॥
रामचरन प्रभु रूप वहु राम भजे सतुष्ट ।
जथा ग्रासन मुष मे लिए हाथ पाउ सब पुष्ट ॥ ३ ॥
राम नाम सुमिरत सकल नाम मत्र फल सोध ।
रामरतन जिमि रतन मे सकल द्रव्य को बोध ॥ ४ ॥

रामरूप थिर होय लषन ब्रह्म जीव लषि आय ।
रामचरन विलष तेही मंडल धाम सुषाय ॥ ५ ॥
रामचरन रवि प्रभाते रवि मूरति लषि जाय ।
तिमि निज रूप प्रकास ते राम रूप दरसाय ॥ ६ ॥

अंत—रामचरन सब तजे बिनु भजो राम पद मूल ।
ज्ञान कर्म अरु धर्म सब ज्यों स्यामर के फूल ॥९९॥
रामचरन वैराग्य विनु सकल साधना झूठ ।
भस्म होम चाउर लिये जिमि कोउ भूसी कूट ॥१००॥
अस्फुट सम दृष्टात सत रामचरन रस देत ।
जिमि वहु वस्तु सुश्रानि करि विजन भोजन हेतु ॥१०१॥

इति श्री दृष्टांत बोधिका विवेक लक्षन वरनन नाम प्रथम सतक सपूर्ण ॥ श्री रामचद्र . .

विषय—राम माहात्म्य वर्णन ।

सख्या ३२७ख दृष्टान्त बोधिका, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—८६/८ × ४६", इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—११२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री महत जगदेव दास जी, ग्राम—पर्दी सलेमपुर, डाक०—रायबरेली, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री सीतारामाभ्या नम ॥

॥ दोहा ॥

राम चरण दृष्टात विनु मन न लहे श्रुति बोध ।
सहस बात की बात एक कहौं ग्रथ सत सोध ॥ १ ॥
रामचरण श्री राम को बदत सब सुष पाइ ।
जैसे सीचे मूल के डारपात हरिआइ ॥ २ ॥
रामचरण प्रभु रूप वह रामभजे सब तुष्ट ।
जथा असन मुषमे लिये हाथ पाव सब पुष्ट ॥ ३ ॥

अंत—रामचरण सब तजे बिनु भजे राम पद मूल ।
ज्ञान कर्म अरु धर्म सब ज्यों सेमर को फूल ॥९९॥
रामचरण वैराग बिनु सकल साधना झूठ ।
भस्म होम चाउर लिये जिमि कोउ भूसी कूट ॥१००॥
स्फुट सम दृष्टात सत राम चरण रस देतु ।
जिमि वहु वस्तु सु आनि करि विजन भोजन हेतु ॥१०१॥

इति श्री दृष्टांत बोधिका विवेक लक्षरगन नाम प्रथम रत्न सवत् १८६६ ॥

विषय—इसमें दोहा मे राम की महिमा का वर्णन करके प्रत्येक दोहा मे एक दृष्टांत कहा है।

सख्या ३२७ग. दृष्टान्त बोधिका वैराग्य सार, रचयिता—रामचरणदास, कागज—देशी, पत्र—११, आकार—८॥ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—११६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० रामलाल जी दुबे, ग्राम व डाक—दुबौली बाजार, जिला—बस्ती ।

आदि—श्री जानकी वल्लभो जयति ॥

दोहा

बंदि लखण पद सर्व गुर कहो बिमल वैराग ।
तजि तरुण धर धन मातु पितु रामचरण अनुराग । १
गुरु वैद्य भेषज वजन सजम विषय विराग ।
नाम सुधासन पुष्ट जिय रामचरण तवलाग ।

विरत शतक दृष्टांत लषि रामचरण धरि धीर ।
जगत तुन बिद्या धनुष तजं लगं मन तीर । ३
रवि विज्ञान अज्ञान तम विरति अमी वनराग ।
रामचरेण जगते विनु रामचरण किमि लाव । ४
हम रविकर जल जलधि तृष्णा उठहि तरग ।
रामचरण तजि मग जिय भ्रमि मन मरत कुरग । ५

अंत—वदन तून मन जीभ धनु सतक वान गहि ज्ञान ।
रामचरण पढ़ि समुझि दल जीति मोह अज्ञान ।१००
सर्पन सवन वताइ सिघत गाढ़ी वाधु ।
मधुप सुमत सतसग रस रामचरण तिमिसाधु ।१०१
जगते पर्म विराग कछु दुसरे तन सुष त्यागु ।
तीसर अंतर त्याग करु रामचरण तव लागु ।१०२

इति श्री दृष्टात बोधिका वैराग सतक वरनन नाम द्वितीय सतक समाप्त ।।

विषय—ज्ञान वैराग्य विषयक उपदेश वर्णन ।

संख्या ३२७घ. रसमालिका, रचयिता—रामचरणदास (अयोध्या के महत), **कागज**—देशी, पत्र—१०, आकार—११$\frac{९}{१०}$ × ४$\frac{१}{२}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—१४०, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—. . . . .
. . . . . मोक्ष विद्या मई नहीं अविद्या लेस ।
रामचरणपुर केरि श्री कहेउ वेद प्रति सेस ।।२६।।
सुनिकै निगम अनद घर गहि पद आरत भाषि ।
दीन काल लषि साधुजन निजधन एकहि न राषि ।।२७।।

इति श्री रसमालिका वोधसास्त्रे सप्तावरणाग्रमहाविष्णुधाम संज्ञा वर्णनाम प्रथमो अवकासः

रोला छद

श्रोता मिलि भयो प्रेम वचन प्रतिभान सहस छवि ।
सहमभाव प्रति अर्थ प्रगट भय मनहु लक्ष रवि ।
लगे कहन सुष सहित गिरा मत सहस वाँक जने ।
कहनि मनहु पट षोलि वदन पर लसत सेतु कन ।। १ ।।
अमित तासु के उपर लोक जोगेस्वर सोहै ।
सदस्थान प्रभु केर कहै उपमा कवि को कहै ।
अगिनि ज्वाल कि माल तेज मे धाम अचर है ।
नौवति यक रस वजै रूप मगल घर पर है ।। २ ।।
जोग महा शिव रूप धरे प्रभु आपु वसे है ।
जहाँ तलक सव वस्तु योग वल सकल कसे है ।
पुरुष तेज को रूप अमित छवि है अपने वस ।
अमितदारा निज रूप विहै जस आपु एक रस ।। ३ ।।

अंत—षुलिहि ज्ञान वैराग नयन तब कुशल न गोई ।
द्वौ तुम हम सब नास शभु मनसिज जिमि षोई ।
जागिहि परमानद तुरीरथ रूठ रूप लहि ।
नास लषन ब्रह्माड यथा रवि उदै रैणि दहि ।। १२ ।।
रहि जाइहि लषि एक द्वैत हति जह हस दिन ।
पुनि कवन लषु एक आभरण नाम मात्र भिन ।

पेखत बहु एक वाह तनु पद आयुध लोहे ।
जिमि कुम्हार मृतिका पिम्रादि म्रतहुँ यक जोहे ॥१३॥
इक्ष्य एक बहु स्वाद अन्न विजान बहु जैसे ।
विनु जाने है वीन चारि वरणाश्रम तैसे ।
जागि लखिहि गति आदि प्रगटि जिमि अग्नि वेनु करि ।
गुष्टि वृष्टि करि उठत भस्म ह्वौ होव सकुल भरि ॥१४॥

:०: ०. :०

—अपूर्ण

विषय—ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का वर्णन ।

संख्या ३२७ड रसमालिका, रचयिता—रामचरणदास, पत्र—१८ आकार—१०४/८ × ८५/८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—३८२, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० शिवबहादुर सिंह ग्राम-सेंबसी, पोस्ट-शाहमऊ, जिला-रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नम

भाले हरेस्यवमस्तुल शी च कठे वाहूँ धनुस्सर रघूत्तम नामयुक्ता ।
विमान भक्तिमभि भूषण भूषितागस्तेभ्यौपि रामचरण: शततप्रमामि ॥ १ ॥

:०: ·०: :०:

॥ दोहा ॥

बंदौ सत समाज शिव वरणत परै न पार ।
टूक टूक हों पाइकै जियो तासु के द्वार ॥ ५ ॥
जनक नदनी चरण रज प्रति अनंद सिर राषि ।
भरत प्रेम अवतार भय जासु चरण रस साषि ॥ ६ ॥
राम नाम बदो जदपि मखु ते कहा न जाइ ।
ज्यौ तिय निज पति नाम को कहत वहुत सकुचाई ॥ ७ ॥
विधि हरिहर मम अगिनि रवि ससि रस पूरण सब्द ।
रामचरण सोइ नाम गति अकह कहन को जब्द ॥ ८ ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

सब्ब रूप अरु इष्ट थल अपर लखै पर केर ।
राम चरण सब सत गुरु वै सतगुर मनमेर ॥ ४ ॥
सब्ब परषि विनु जक्त निसि दीप मधिहु नहि भोर ।
मैं षद्योत उलूक षल मोर चहै कब चोर ॥ ५ ॥

इति श्री रसमालिका बोध साम्त्रे चतुर्थ सब्दोतीत गोष लक्षण वर्णन नाम द्वादशौ प्रकास: ॥१२॥

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या ३२७ढ रामरत्नसार सग्रह, रचयिता—रामचरण, निवासस्थान—अयोध्या ?, कागज—देशी, पत्र—४५, आकार—१३॥ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—८१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९५० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री कृष्णलाल मिश्र पुस्तकालय, चौक, प्रतापगढ ।

आदि—श्रीमभृत्य राघवाय नम ॥

. . . . श्लोक . . . . ।

दोहा

रा कारज नो भक्ति तव राम नाम सोइ सोम ।
अपर नाम उडगन विमल वसौ सत उर व्यौम ।४०

अतिगीतिका छंद

करु मन राम नाम विचार
नहि आन औषध जीव कह तन दुर्लभो सो असार
धर्म मूल स्वभक्त कामद भक्ति को शृंगार।
कल्यान घन कलिमल दहन धन संत सर्व उदार
हा राम कहि सुकरहि जमन सो भयो भवनिधि पार
श्रुति मंत्र तंत्रहि साधि सो फल राम नाम उचार
राम कहत पिसाच सब भगि जात करत पुकार।
अघ रूप जो कहि नाम विवसहु अत तरत न बार
राम कहत न भय अनिल नभ अगिनि थल जलधार
राम नाम अनद पर श्रुति तंत्र सास्त्रन्ह सार
मंत्र पर धुनि बीज के पर राम नाम प्रचार
प्रभु हेतु साधन विविधि सबको राम नाम अधार
जोग ज्ञान समाधि जप पर नाम तार करतार
अलसाइ अनखहु राम कहि जरि जात पाप पहार
राम कहतहि ब्रह्म भासित मिटत त्रिगुण विकार
राम नाम जीव ब्रह्म सो रमेउ सब संसार
जोगीस मुनि जह रमहि जियले राम नाम सभार
राम नामैं हेतु ह्रींकर बीज अरु ओंकार
राम नाम प्रभाव नहि कहि सकत निगमागार
राम नामहि छोडि अपर भरोस सब जग जार
'राम चरण' जो राम नहि कहु तासु मुख भरि छार ४१

इति श्री रामरत्न सार संग्रहे राम नाम सूक्ष्म वर्णन नाम प्रथम रत्न ॥

सोरठा

मव अवतार उदार अस कला सब राम के
जीव ब्रह्म मे पार अवतारी अवतार मनि। १

अत—

पद

जो मन राम सुधा रस पावैं
तौ कत सकल विषै मृग जल लखि त्रिषित कथा उठी धावैं
अभय करौ सब विधि श्रीमुख कहि सकृत सरण जो आवैं
तौ कत विषय विवस सुर नर मुनि तिन कह वारि मनावैं
जो रघुवीर भक्ति चितामनि संशृति वेगि मिटावैं
तेहि तजि ज्ञान जोग जप साधैं श्रम फल सब श्रुति गावैं
अमित वदन छवि राम रूप रवि हृदय नयन लखि आवैं
तौ कत त्रिभुवन रूप जहाँ लौ जषि सठ जन्म नसावैं
जौ श्रीराम कृपा प्रताप गुन श्री गुर सरण लखावैं
तौ कत डरैं लोक जम कालहि सकल राम दरसावैं
यह सीय वरन वर रत्न मनोहर द्वादस रसहि जनावैं
'रामचरण' नित सुनत पढत जो सो रघुवर मन भावैं ॥

इति श्री रामरत्न सार संग्रहे श्री राम रूप गुण प्रताप सरणागत द्वैताद्वैत भेद वर्णन नाम नवमे रत्नं ॥ ९ ॥ सवत् १९५० ॥

विषय—रामचरित्र वर्णन एव द्वैताद्वैत भेद वर्णन।

संख्या ३२७छ. रामानद लहरी (बालकाड की टीका), रचयिता—रामचरणदास बाबा, निवासस्थान—अयोध्या, कागज—देशी, पत्र—८३४, आकार—१४½ × ६⅞ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—१३५६२, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७७, लिपिकाल—सं० १९२४ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवनारायण जी शुक्ल, ग्राम व डाक—सुलतानपुर खेड़ा, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नम श्रीगुरु चरण कमलेभ्यो नम ॥

विध्ने शाखराद पूर्ण नियत रसमय सच्चिदानद सत्य ।
ता . गण क्लिससमर्वतो भिन्न रूप ।

.० ० ०

॥ दोहा ॥

बदौ श्री कर जानकी रघुनदन सुख दानि ।
राम चरण ससमाज युग सर्व सुमगल खानि ॥ ३ ॥

जो कोई कहै की भाषा को पुनि भाषा तिलक करना का है पीसने को पीसना का है । ताहां दृष्टातालकार करिके समाधान करते है सतयुग मे सुवर्ण के पात्र मे सब को जल भरै त्रेता मे रूपे के पात्र मे द्वापर मे ताम्र के पात्र मे कलियुग मे मृत्तिका के पात्र मे जल शीतलता स्वाद मधुरता ल्यावत है ऐसो और पात्र मे नहीं होत है पारि तात्पर्य जल ही को है जो कोई कहै की मृत्तिका के पात्र को जो कोई नीच छुवै तो अशुद्ध ह्वै जात है तहां वेद वाक्य है की जेहि मृत्तिका के पात्र मे श्री सरजू को जल गगाजल घृतादिक गोरस उत्तम पदार्थ भरो जात है जो सर्व काल मे पवित्र है

:० ० ०

अरु वेद स्मृति सहिता पुराण चारिहू युग मे है पारि जाने युग मे जाको अधिकार है सो प्रसिद्ध है रामचरितमानस मे टीका तरग जानव टीका को नाम श्री रामानद लहरी है १३

इति श्री रामचरितमानसे सकल कलिकलुष विध्वसने बालकाण्डे मगलाचरण कृते प्रथमो तरग. १

अत— ॥ दोहा ॥

अवध पुरी पूरण भयो शुभ जानकी घाट ।
रामचरण शुभ तिलक कृत सत समाज की ठाट ॥ ६ ॥
सवत अष्टादश सुभग सत्तरि अर्द्ध सपाद ॥१८७७॥
रामचरण रितुराज तिथि पच शुक्ल वैशाख ॥ ७ ॥

इति श्रीराम चरितमानसे सकल कलि कलुष विध्वसने बालकाडे श्री सीताराम विवाह श्री अयोध्या विश्राम परम उत्साहो परमानद त्रैलोक्य मगल वर्णन नाम सप्त पचाशत तरग: ५७ ॥ बालकांड समाप्त श्री रामचरण तिलक कृत मूल तिलक की सख्या १६२०० सोरह हजार दुइ सै श्री मन्नृपति विक्रमादित्य राज्य गताब्द सवत् १९२४ शाके १७८९ श्रावण मासे शुक्ल पक्षे तिथौ एकादश्यां शनिवासरे शुभ भूयात् शुभ मस्तु ॥ घनाक्षरी ॥ वर्ष एक अरु षटमास तौ लिखत लाग्यो प्रेम मम तोहि पर हेतु जानियतु है । श्रावण शुकल पक्ष एकादशी शनिवार भई ह्य समाप्त यह बात कहियतु है । हे गोसाई कृत मोको पै श्रम परी है अति कृपा करौ तुम एतौ बात कहियतु है । कहै सुनै लिखै प्रेमसजुत जे नर नारि देश औ विदेश ते तौ सुखी रहियतु है ॥ १ ॥ श्री राम

विषय—तुलसी कृत रामायण पर टीका ।

रचनाकाल

संवत अष्टादश सुभग सत्तरि अर्द्ध सपाद ॥१८७७॥
रामचरण रितुराज तिथि पच शुक्ल वैशाख ॥ ७ ॥

संख्या ३२७ज. सेवाविधि, रचयिता—रामचरणदास, निवासस्थान—अयोध्या, कागज—देशी, पत्र—२१, आकार—६॥ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—४२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९६० वि०, प्राप्तिस्थान—पं० बब्बन प्रसाद दुबे, ग्राम—देलवना, डाक०—बडेरी, जिला—जौनपुर।

आदि—श्री रामाभ्या नमः . . . श्लोक . . . .

चचरीक छद

वरनो वास्वांतर सिय रघुवर सेवकाई
सीय राम पल पल कृत कोटिन मुख वरनत नित कहि न सकहि सारद विधि शिव श्रुति अहिराई ॥
मै निज मति हित विलास पिप्रत हरो जिम्र पियास चातक ज्यों आनद यक स्वाति बुंद पाई ॥
जाम एक उठि सवार सुद्ध करें भन द्वार बैठि के यकात राम मत्र पढ़ै भाई
भावनाति निज सिगार करइ अवध मध्य सार सीय राम से धातन वचन मन लगाई
लखि दल सुरग कज मनिमय मन लषत रज तापर ब्रैमडल बीच पलग सुख सदाई
सोवत तह सीय राम सोय महल परम धाम 'रामचरण' सूरति सखि ठाढि होइ जगाई ॥६६॥

॥ चचरीक छद ॥

जागु जागु जागु स्याम जानकी बिहारी
कुद मालती तमाल कमल केतकी गुलाब विगसे शृंगार वन विचित्र वन निहोरी
वोलहि सा रोम पूर कोकिलो मराल कीर गुजहि अलि रटति रागादि सखी गावहि चित हारी
सारदा सुभद्रा भद्रावती सुधामुखी प्रभाव निमज्जन मुख हेतु लिहे दिव्य पात्र वारी
. . . .

—खंडित

अंत—

सैन कियो पिय प्यारी सेज सुख मदन मजरी की आयसु सखि प्रथमहि सेज सवारी
दिव्य सुगध सुमन चहु ढिग रचि बिविधि रग फुलवारी
सीताराम अराम कीन्ह सषि ठाढि नीर भरे झारी
चतुर सखी पद पदुम पलोटहि राहस बात उचारी
बीरा पीकदान सषि लीन्हे सैन भोग भरे थारी
वाजन पंच वजावें पच सखि सप्त स्वरन्ह रसकारी
आई नीद सुख सोइ रहे रघुनदन जनक दुलारी
रामचरण सखि वहु चौकी रहि वहु निज महल पधारी

दोहा

यह सेवा श्री जानकी रामप्रसादहि दीन
महाराज प्रिय पौत्र लखि मोहि क्रिपा कछु कीन ११७
जेहि आश्रय तेनि दलेउ मोहि तेहि आयसु ते कीन
वोध ताते भयो राम जातका दीन ११८
मन क्रम वचन लगाइ जिय अस सेवा करु जोइ
सीता राम प्रसन्न तेहि लहै परम सुष सोइ ११९
सुरति प्रेम लगाइ करि लोक रीति सव षोइ
रामचरण सोइ रस लहै सतगुर विना न कोइ १२०
अषी सषा अरु दास जो भाव विना नहि होइ
तीनो को अधिकार यह भाव भाव सव सोइ १२१
हनुमान शिव शेष द तीन धर्म कराहि
चाहि जेहि अस्थान जस तह तैसे होइ जाइ १२२
ग्रंथ भाव राजा परम रामचरण भरि दीन
राम उपासक जे रसिक समुझि होहि ते लीन १२३

इति श्री सेवाविधि सपूर्ण श्री रामाय नम· सबत १८६० मिती कार्तिक बदी ७

विषय—सीताराम सवा विधि वर्णन ।

संख्या ३२८. शृगार सौरभ, रचयिता—राम जी भट्ट, कागज—आधुनिक, पत्र—१०, आकार—११$\frac{3}{8}$ × ७$\frac{5}{8}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३३, परिमाण (अनुष्टुप)—४६५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९८२ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्णविहारी जी मिश्र, "ब्रजराज पुस्तकालय", गधौली, जिला—सीतापुर ।

आदि—**अथ शृगार सौरभ ग्रथ लिख्यते ।**

मगलाचरण कवित्त

ब्रजराजरानी आदि शक्ति जगजानी जहा अवध सोदवो सिद्धि **सघति हदीस को ।**
दासी है रमासी औ उमासी है खवासी खासी पावत न जानि जहा **मन हस चीस को ।**
बाये कर बीर और दाहिने नवाज वर कोटि **मारतड को प्रकाश नख बीश को ।**
बातबारि जात नव पात पारिजात पद जात तित ईश को किसीस जगदीस को ॥१॥

॥ दोहा ॥

कहो नायिका नारिसो सुदर सुषद वदार ।
पियहित रचति प्रवीनता रिझवावत रिझवार ॥ २ ॥

उदाहरण

लागत समीर लक लचकि लचकि जात लचकि लचकि जात **नजरि निपाती है ।**
विपुल नितबन को उरज उतगन को मिरज कदबन को **छवि छहरति है ।**
"रामजी" मुकवि अरविद म अर्रावद मम लोयन को बदि बदि मीन मुरझाती है ।
वनी वनितान मे मशाल सी विशालवाल और सकुचाती परी **वातीसो दीखाती है ॥ ३ ॥**

अत—अथ सामान्या आगमपतिका को उदाहरण

अगिया दरको हरषी मनम लरकी लर मोतिन जालन की ।
. . . हको सहको कुवह बहको गति जासु मरालनकी ।
. . मोतिन के जालन गुफित भालन दोहै लालन की ।
उमगी उमग भरिहै मन की गति . ॥ ६४ ॥

इति श्री रामजा भट्ट विरचिते शृगार सोरभेदहश अवस्था भेद वर्णन **पचम सरगः ॥५॥ समाप्त ॥ शुभमस्तु श्री सवत् १९८२** आषाढ मास कृष्ण पछे तिथौ **चतुर्दश्या शनिवासरे लिखित मिद पुस्तक बलदेव मिश्रेण** श्रीमन् मिश्र युगुल किशोर स्वार्थे **गधावली स्थानेषु श्रीकृष्णायनमः**

विषय—नायिका भेद वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रचना निम्नांकित ग्रंथो के साथ एक हस्तलेख मे है—

१ रसवल्ली—गनश कवि और २ रसरत्नाकर भौन कवि।

संख्या ३२९ वैद्यक भवन, रचयिता—रामजीवन, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—१२$\frac{3}{8}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—३५८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० रामलाल जी दुबे, ग्राम व डाक०—दुबौली बाजार, जिला—बस्ती ।

आदि—**श्री गणेशाय नम. ॥**

दोहा

प्रणवौ शेष महेश गिरि हनोमान गणपति रवि ।
ज्यहि सुमिरत मुनि सिद्धि कुमति दूरि करि सुमति कवि ॥ १
बन्दो रघुपतिराज जासु सरग सुरसरि ललित ।
निरखे ते अघ जाहि करि अस्नान कलिमल गलित । २

शोरठा

बन्दौ वहुरि दिनेश वरुण सहित प्रभु कह निरखि ।
सिषु लोकहि तम जाहि भवरुज नासहि सुमिर जेहि । ३

प्रणवौं पवन कुमार जासु चरण कलिमल हरण ।
करत सुमंगल पुज सुमिरि सिद्ध सुरनर चरण । ४

दोहा

वैद्यक भवन नाम धरि किए जक्त हित काम ।
शुषराम द्विवेदी के तनय स्वइ रामजीवन असनाम । ५
प्रथम नशा कों देषिए आनें वुष शुष सोइ ।
पित्त आदि दें स्वइ मध्य कफ पवन अन्त्य पुनि होइ । ६
तीनि प्रकार के फल कहै जानहि विबुष विचारि ।
काग कुलिग हस जू तीतिर लक मयूर प्रसार । ७
याही को सन्निपात महि सीत होइ वलु क्षीण ।
कफ वाइ अरु पवन जर जानहि वैद्य प्रवीण । ८
:o: :o: :o:

इति श्री सुषराम पंडित तनय रामजीवन विरचिते वैद्यक भवने पुष्टक पित्तादिक नाड़ी प्रति का नाम प्रथमो सोपान. ।।

अत—

दोहा

वारा गंधक माहरि जैं पाल धतूरे आनि ।
शोठि वेंतरा लीजिए पीपरि मर्च को ठानि । ७
ताम्र चूर्ण करिषल करैं रस धतूर को नाइ ।
यह सब औषध वसन मह पुनि पावक महंलाइ । ८
रत्ती एक प्रमाण करि प्रात सांझ जू षाइ ।
तप नासहि अरु सीत कर जूडी तुरित नशाइ । ९
:o: :o: :o.

अथ काम का प्रतिकार लिष्यते ।

दोहा

चरण वाम अंगुष्ठ से चढै काम त्रिय माथ ।
पक्ष कृष्ण से उतरहि दक्षिण होईहि रतिनाथ ।।३७
:o: :o: :o:
ओष्ठ त्रयोदश सोभिए चछु चतुर्दश पाइ ।
शीश चढै पुनि पंद्रहे उतरहि कृष्ण प्रतिपदा जाई ।४१

इति काम प्रतिकार समाप्तम्

विषय—वैद्यक तथा काम विषय वर्णन ।

विशेष-ज्ञातव्य—वश परिचय इस प्रकार है—

प० सुखराम द्विवेदी (रचयिता के पिता)
|
रामजियावन (रचयिता)
|
शेषदत्त
|
सर्वज्ञनारायण
|
रामलाल (ग्रथ स्वामी)

संख्या ३३० सालिहोत्र, रचयिता---रामदया, कागज---देशी, पत्र---२६, आकार---६३/८ × ४६/८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) ---१०, परिमाण (अनुष्टुप)---५०७, खंडित, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---डा० महादेव सिंह जी वैद्य, ग्राम व डाक–मलिक मऊ चौबारा, जिला–रायबरेली।

आदि---

. . . . देखियो।
यह सालिहोत्र विचारि भाखत सूत्र है सो विशेषियो ॥३१॥
॥ अथ उत्तम अश्व कवित्त ॥
तालू रसना अधर अरुन विराजत उज्जल अरुन स्याम एक रंग अंग है।
अवक विसाल लाँबी ग्रीव मुष मंजुल है कच घुघुआरे वडे श्रोन सुठि तग है॥
सुष्मतु . . . च्च उरोज पातर चरन पूछि लघु गति लागि बासु संग है।
विर . न वत सिरवक उवे 'रामदया' लक्षन ए जामे मोइ उत्तम तुरग है ॥३२॥
:o: .o. .o.

॥ अथ भवरी सुभ असुभ बरनन ॥
॥ दोहा ॥
द्वादस अंग तुरंग के भौर प्रगट तब होत।
सालिहोत्र सो लखें वे जिनके सुमति उद्योत ॥६४॥
॥ सोरठा ॥
मुख माथो कटि माल ग्रीव हियो पद नासिका।
नाभि कांध श्रुति गाल ए द्वादस स्थान लहि ॥६५॥

अंत--- ॥ अथ कर्न रोग ॥
जौने घोरे के कान पाकें पाव बहे कध करे ताको उपचार॥
सेधउ सोचर बच माजी जवाषार चाम के पात माता सम करिके चुरवें पुनि सेकु कान वेइथ नेप करें
. o o o:

---अपूर्ण

विषय---शालिहोत्र विषय का वर्णन।

संख्या ३३१क भागवत दशम स्कंध (ऊषा अनिरुद्ध कथा), रचयिता---रामदास, निवासस्थान---डमराना (?), कागज---देशी, पत्र---११०, आकार---८३/४ × ५५/६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---१०, परिमाण (अनुष्टुप)---८२५, अपूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि---

. . . .
. . जनम भूम डमराने नाऊ ॥११॥
पिता मनोहर दास पिआरा। बिरमति जनम दियो जिहि माता॥
रामदास ताको सुत आई। भाषा करि प्रभु कीरत गाई ॥१२॥
॥ दोहा ॥
लालदास लालच कर्यो मोहि भगवन सारु।
रामदास की बुधि लघु रचित कठिन अपारु ॥१३॥
नृप पूछत सुष देव सौ मुनि सनाथ करि मोहि।
ऊषा अनरुध की कथा बरन सुनाओ मोहि ॥१४॥
कैसो चित्रा हरि लै गई। कैसें भेटि कुवर सौ भई॥
कौन पुन्य बाना सुर कीन्हों। घर जेहे प्रभु दरसन दीन्हों॥
सिव ब्रह्मा इन ध्यान लगायो। आदु पुरस को अंत ना पायो॥
किहि प्रताप दूजे हरि पाई। सो मो सौ कहियो निजु सोई ॥१६॥

अंत—

बजे कुंडली बीन उपगा । सबद तान के उठत तरंगा ।।
ठाढ़े एक पांतहि कन्सारा । गावत गंध्रपु गुनी अपारा ।।६४।।
निरतत नार महारस रंगा । भावर भरत तासु प्रत अंगा ।।
रीझत भूत देत बहु दाना । इहि विधि सोभित श्री भगवाना ।।६५।।

इति श्री हर चरित्रे दसम सकंधे श्री भागवते महापुराने चित्रा द्वारका सोभा बरनन या दसमो अध्याउ ।।१०।।

विषय—ऊषा अनिरुद्ध कथा ।

संख्या ३३१ख. भागवत (दशम स्कध), रचयिता—रामदास, कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—८ ६/१० × ४ ८/१० इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—३६४, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० जगन्नाथप्रसाद दुबे, ग्राम—उसरहा, डाक०—शिवरतनगज, जिला—रायबरेली ।

आदि—

:o: :o: :o:

......पाडे को दीन्ही । बाचत विप्र महा रिस कीन्ही ।।
यें सौ तुम जिनि पढौ कुमारा । राम कृष्ण सौ बैरु हमारा ।।
हिरनाकुसु नृप सुनिहै सोई । तुमकौ त्रासु महादुख होई ।।
कहै विप्र सौ राज कुमारा । कृष्ण बिना मिथ्या संसारा ।।
कृष्ण बिना देही बेकामा । कृष्ण बिना बूथं धन धामा ।।
संत सहाइ असुर सब ठाढे । झूठौ कहा पढावत पांडे ।।
तब प्रहलाद सब सषा बुलाए । कृष्ण मंत्र कहि कहि समुझाए ।।
जो मैं पढौ सो पढौ कुमारा । कृष्ण कृपा तें उतरौ पारा ।।

:o: :o: :o:

।। दोहा ।।

सुनत कथा नृप सुष भयौ धन्न धन्न रिषि व्यास ।
'रामदास' महिमा कथौ रानी हरषत पास ।।

इति श्री हरि चरित्रे दशम सकधे श्री भागवते महापुराने वलि बधु बंधुन नाम तृतीयो अध्याय ।। ३ ।।

अत—

यह सुनि ऊर्ष भयौ हुलासा । नारद गए कृष्ण के पासा ।।
सोचत ऊषा मन पछिताई । किहि विधि कंथ छुटावहु जाई ।।
तब ऊषा यह मत्र विचारा । जननी सो मैं करौ पुकारा ।।
तब ऊषा रानी ढिग... ....

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—भागवत दशम स्कध का अनुवाद ।

संख्या ३३२. कातिक तरग, रचयिता—रामदास, कागज—देशी, पत्र—१३ आकार—९ ७/८ × ६ ५/८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—२९२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० द्वारिकाप्रसाद जी शुक्ल 'शकर' (रिटा० जज), कार्यवाहक सभापति—द्विवेदी साहित्य सघ, प्रभु टाऊन, रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नमाः ।। अथा कातिक तरग प्रारंभ ।।

।। चौपही ।।

लागौं अति सुंदर फलदाइक कर्मतक मास सुहायौ ।
व्रज वन तनके हीयें आइकें अति आनद उरछायौ ।

लागी करन विचार सबै तह हिल मिल गोप कुमारी ।
गई सबै तह झमक झमक सौ जह व्रषभान दुलारी ॥१०॥

अंत—— ॥ दोहा ॥

कातिक लीला प्रेम की बाचे सुनै जो कोइ ।
मास दिवस अस्नान कर घुटकी को फल होई ॥१२१॥
प्रेम सुनै प्रेमहि कहै प्रेमे डोर लिपटाई ।
कोट जतन तुम कर सको नेम हिरदौ नै आई ॥१२२॥
"रामदास" लीला कही अपनै प्रेम हुलास ।
नंद नदन व्रज सावरे करौ हीए मै वास ॥१२३॥
.o: o· ·o:

॥ दोहा ॥

हर रस प्रेम अपार हे काकै कही बषान ।
लघुतम मै वरनन कीयौ समझै चतुर सुजान ॥१२५॥

संपूर्न समाप्तता ॥ व पुनी

विषय——श्रीकृष्ण की कातिक लीला वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य——प्रस्तुत ग्रंथ के साथ निम्नलिखित ग्रंथ एक हस्तलेख में है——

१ सनेहसागर——हमराज बखशी ।
२ मालिन नग्र (नगर भेष मालिन)——प्रानसुखकृत ।

संख्या ३३३ कालीदमन, रचयिता——रामनाथ, कागज——देशी, पत्र——२, आकार——७॥ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)——१८, अप्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप)——५६, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——श्री प० अमरनाथ जी शुक्ल, ग्राम——नउआडाडी, डाक०——बादशाहपुर, जिला——जौनपुर ।

आदि——काली दमन श्रीमान् पंडित रामनाथ कृत

छपै

तिलक रसाल विसाल भाल वनमाल विलवित ।
टट कटि तट पट पीत लटक लट मुकुट करम्बित ।
जडित नीलमणि जडित कमल दुति दमन सुहावन ।
पीत वसन फहरानि मधुर मुरली सुर गावन ।
सुख वरखावत मृदु वचन घन हरखावत मोहि भक्त जन ।
मन 'रामनाथ' यह कालिय दमन चरित्र मन । १

कवित्तम

कन्दुक की केलि कान्ह करत कालिन्दी कूल कूदि चढ्यो कलित कदम कल डारे पै ।
हरषि हुलास भरयो कालकिनि कालिये को तालो द तडाक तड परयो वारिधार पै ।
'रामनाथ' छलकि जलाहल कहै सेकूल भवन परे से तूल हूल विष वारे पै ।
कीरति वगारन विदारन सलिल जल जन्तुन विडारन विराजत व्याल द्वारे पै ॥ २
सेयो सेज पन्नग सुपन्नग वधूटिन के लोचन ललकि लगि ललित लोनाई पै ।
बोली घहोवाल.. भाजे हाल नातो काल व्याल के जते जगेते काल रसनाई पै ।
बावरी भरी तू कहा मोहि डरवावै जैसो वालक वनावै तासु पावै फल याही पै ।
'रामनाथ' याको माथ कटि दे जू मेरे हाथ तवतो भलेई परै पाव पलटाई पै । ३

अंत——

बानी सुनि दीन पन्नगीन की मलीन व्याल देखि दीनबधु दीन वधुता सभारि तव ।
निरत निवारि कै निहारि कै कृपा की दीठि श्रम दुख टारि वोले रमणक जाहि अब ।
खगपति आयो तो डिखायो चरण चिन्ह 'रामनाथ' अभै करेगो त्यागि दाह दव ।
शीश धरि आयसु सिधायो तीस नाय सुखी रमणक छायो सग लीन्हे परिवार सब ।११

ठाढो भयो कटि के कलिन्दी तें कलिन्दो...करिकै कलिन्दी नीर सुधा सी निकाई है।
धरि के अधर बेनु कामना की कामधेनु रामनाथ स्याम सुधाधाम सुरगाई है।
सुनत जीये से सखा धाय मिले ..गायन प्रमोद कै चरायन चलाई है।
संत जन रंजन फनिंद मद गंजन हमारे.. भंजन निरंजन कन्हाई है॥१२

इति श्री रामनाथ कृते काली दमन चरित्र......

संख्या ३३४क. रचयिता--रामनाथ प्रधान (स्थान--अयोध्या), कागज--देशी, पत्र--३६, आकार--८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--६, परिमाण (अनुष्टुप)--२७०, अपूर्ण (खंडित), रूप--प्राचीन, (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १६०२ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री नन्हकूप्रसाद जी, ग्राम--चंदजीतपुर, डाक०--सुजानगंज (जौनपुर)।

आदि--श्री गनेशाय नमः अथ रामकलेवा रहस्य ग्रंथ लिख्यते छंद
जं गनपति गिरिजा गिरिजापति जं सरस्वती माता
जं गुरदेव केसरीनंदन चरन कमल सुष दाता १
उनइस सं दुइ के समत मे जेठ दसहरा काही
ग्रंथ कियो आरंभ अनूपं वैठि अयोध्या माही २
अहै प्रीति की रीति अटपटी मैं केहि भांति बताऊ
ताते सानुजराम कुंवर को रहस्य कलेवा गाऊ ३
जं .. ..(खंडित)
:o: :o: :o:

अंत--राम जाय पाय रघुनंदन अति आनंद उरछाए
सब कहिगए महल का वातें रघुवर सरल सुभाए ३२
सुनि विहसे महाराज सभाजुत वरनि न जाइ हुलासू
पुनि नृप हिए रजाय सुतन कह गे सब निज निज वासू ३३
इमि आनंद जनकपुर वासिन नित प्रति पावत लोगू
कोटि नरद्रन जरि नहि आवै निरषन वह सुष भोगू ३४
रामकलेवा रहस चरित एह लघुमति कवि किमि गावै
सेस गनेस महेस सारदा तेऊ पार न पावै ३५
जो कोउ प्रीति रीति उर चाहै सो ग्रंथहि एहि वाचै
पूरन पावै प्रेम रामको पुनि जग नाचन नाचै ३६
--अपूर्ण

विषय--रामकलेवा रहस्य तथा जनकपुर शाभा वर्णन।

संख्या ३३४ख. रामकलेवा रहस्य, रचयिता--रामनाथ प्रधान, कागज--देशी, पत्र--१२, आकार--६॥ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--२४, परिमाण (अनुष्टुप)--४३६, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १६०२ वि०, मुद्रणकाल--१६३८ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री पं० रामफेर जी, ग्राम--मटा, डाक०--हैसरबाजार, जिला--बस्ती।

आदि--श्री तत्सत अथ रामकलेवा रहस्य लिख्यते
छन्दो देवौ
जय गनपति गिरिजापती जयति सरस्वती माता।
जय गुरुदेव केसरी नंदन चरन कमल सुखदाता। १
उनइससेय दुके सम्वत मै ज्येठ दशहरा काहीं।
ग्रंथ कियो आरंभ अनूपम वैठ अजुध्या माही। २
अहै प्रीति की रीति अटपटी मै केहि भांति वताऊ।
ताते सानुज रामकुअर को रहस कलेवा गाऊ॥ ३

जेहि विधि जनक सदन रघनदन कीन्हे रुचिर कलेऊ ।
सुख दीन्हे सारिन्ह मरजह को सो सब कहियो भेऊ । ४
वियाह उछाह सिया रघवर को मैं वरनो केहि भाति ।
छिन में बीति गई सब रजनी रागे रग वराती । ५

अंत—राम कलेवा रहस चरित मह लघुमति कवि किमि गावै ।
शेष गनेश महेश सारदा सेउ पार न पावै ।३५
जो कोऊ पीति रीति उरछाहै सो ग्रथ यह बाचै ।
पूरनपावै प्रेमको पुनि जगनाथ नचावै ।३६
रामकलेवा रहस्य ग्रथ यह रसिक जनन अधिकारा ।
जाके श्रवण प्ररत ये बातें हिय न उठत विकारा ।३७
जेठ दशहरा ते प्ररभ करि क्वार दशहरा काहीं ।
रामकलेवा रहस ग्रथ यह पूरन भो मद माही ।३८
निज पैतालिस बरस की उमर जान प्रमान ।
कियो कलेवा ग्रथ यह रामनाथ प्रधान ।

इति श्री रामकलेवा रहस्य सम्पूर्णम् सम्वत् १६३८ ।

विषय—जनकपुर मे रामचद्र जी के कलेवा करने का वर्णन ।

सख्या ३३५ द्वारिका विलास, रचयिता—राम नरायण, निवासस्थान—हिसामपुर (अवध), कागज—देशी, पत्र—४२, आकार—१०-३/४ × ६-३/४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—८६८, खडित रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८८० वि०, लिपिकाल—स० १८६२ वि०, प्राप्तिस्थान—प० बालाप्रसाद जी तिवारी, ग्राम—जैनगरा, डाक०—राजा फतेहपुर, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ।। श्री राधा कृष्णाय नम ।। अथ द्वारिका विलास लिष्यते ।।

।। दोहा ।।

श्री राधावर सुमिरिके माधवद सिर नाई ।
निज गुर पद बदि कै बरनौ हरि जस गाई ।। १ ।।

।। चौपाई ।।

राधाकृष्ण चरित कछु पावन । राम नरायन करत सोहावन ।।
कुरुक्षेत्र राधा हरि मिलना । बदौ सुनि नर रति हरि चरना ।।
पहिले बरनौ निज कुलग्रामा । पुनि कहिहौ हरिजस सुष धामा ।।
अगरवाल कुल जन्म हमारा । सुषहि साम पुर वास विहारा ।।
जोजन सप्त अवध ते पश्चिम । चारिऊ वरन वसं सुभ आश्रम ।।
सरजू निकट सोति तट वसई । वुध सज्जन समाज तह रहई ।।
वरस परस सरजू जल पाना । पावहि नर विन श्रम निरवाना ।।
कान कुबज वुज वसत घनेरे । पडित भक्तिवान हरि केरे ।।
प्रगटे जह रिषि गर्ग समाना । वुधजन कीन्ह प्रसाद सुजाना ।।

।। दोहा ।।

विधा तव प्रत दयानिधि तिन समान कोउ नाहि ।
तासु कृपा हरिजस कहे सुनि सब कलुष नसाहि ।

।। चौपाई ।।

श्री स्यामानंद पदरि को दासा । जिनको जस जिमि भान प्रकासा ।।
पापी जन सरनागति आए । तजि ससार परमगति पाए ।।
श्री गुरचरन सरोज मनावो । जासु कृपा निर्मल मति पावौ ।।
बंदौ राधा माधव चरना । भक्ति मुक्ति प्रद जन दुष हरना ।।
करहु कृपा बुधि जन मोहि देहू । वरनौ तुव जस सहित सनेहू ।।

०   ८   ८   १

पौष सुक्ल तिथि मुनि बिन गरु सुर । नभ बसु नाग इंदु संवतसर ॥
तेहि बिन कियो कथा आरंभा । सुनत नसाहि काम मद दंभा ॥

मध्य--

॥ चौपाई ॥

राधा हृदय भयो सुष भारी । मोहि मिलैंगे श्री गिरधारी ॥
कोटिन गोपी संग बिराजही । उडगन मध्य मनहु ससि भ्राजही ॥
सकल देव तिय सेवा करही । बिपुल ब्यजन चामर सिर ढरहीं ॥
हरिमारग जोवहि सब नारी । कब आवहिगे कुंजबिहारी ॥
राधा तेज बढो अधिकाई । कोटि इंदु सम बरनि न जाई ॥
गोरोचन सम दिति समदाई । रही सकल भूमंडल छाई ॥
लषि सुर नर मुनि जदुपति रानी । अनि आश्चर्ज मनहि निज आनी ॥
सुर मुनि हरि सो पूछो जाई । महि छाई तुम्हरी प्रभुताई ॥
सकल कथा हरि बरनन कीन्हा । राधहि श्राप सुदामा दीन्हा ॥
गत सत बरष रूप निज पावा । प्रगट सो राजा तेज सोहावा ॥

अंत--

माघ कृष्ण तेरसि बुधवासर । असी अठारह सै संवतसर ॥
राधा चरित कीन्ह सपूरण । पढत सुनत गावत अघ तूरण ॥
राधा माधव जस सुभ पावन । राम नरायण कीन्ह सोहावन ॥
राधेकृष्ण तनय पठनार्थं । भक्ति मुक्ति सब सुष करनार्थं ॥
कुहू भानु दिन फागुन पावन । राम नरायन कथा सोहावन ॥
इति श्री द्वारिका विलास सपूर्णम् ॥ श्री राधाकृष्ण जी सहाइ ॥ मिति श्रावन वदि ४ संवत् १८६२ ॥

विषय--ब्रज से विदा होने के पश्चात् कुरुक्षेत्र के पर्व पर श्रीकृष्ण से राधा का मिलन वर्णित है।

रचना का आरंभ काल

पौष सुक्ल तिथि मुनि बिन गुरु सुर । नभ बसु नाग इंदु संवतसर ॥

रचना का समाप्ति काल

माघ कृष्ण तेरसि बुधवासर । असी अठारह सै संवतसर ॥
राधा चरित कीन्ह सपूरण । राधा माधव जस सुभ पावन ॥

संख्या ३३६. राम शब्दावली, रचयिता--बाबा रामप्रसाद (स्थान--झामदास की कुटी, सुलतानपुर), कागज--देशी, पत्र--२०, आकार--८६/१० × ५६/१० इंच, परिमाण (अनुष्टुप)--४४०, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--महंत श्री महाबीरदास जी, स्थान--झामदास की कुटी पोस्ट--जगेसरगंज जिला--सुलतानपुर।

आदि--श्री गनेसाय नमः ॥ श्री गुरु चरन कमलेभ्यो नमः ॥ अथ बब रामप्रसाद जिउ कृत भजन राम शब्दावली लिषते ॥

साषी

सतगुर सरनहि आयकै लखा धुनि रकार ।
गुरु उपदेस हस जब पायो सूरति सब्द सभार ॥ १ ॥
मनुवा मगन भएव बसि अपने सुनि अनहद झनकार ।
पाच पचीस भरमी के भागे षुलिगे गएव केवार ॥ २ ॥
बिल अंदर महबूब चउक एक बाढी प्रेम अगार ।
संत महरमी भरि भरि पीवैं भला मिला कलवार ॥ ३ ॥
बकागढ़ माँ संका छूटी नौबती नाम अधार ।
त्रिकुटी महल मुसल्ला बछिन बोलि 'बिस्म करतार ॥ ४ ॥

निरकार को महल अनूपम आगे पवरि दुआर ।
देषा सक्ति तह दरवानी अमर अमी कि धार ॥ ५ ॥

अत— होरी

सब्द को रग बनए पिया सग खेलो मे होरी ।
बीना किंगिरी सब सारगी ताल मृदग बजाए ॥ १ ॥
ग्यान विराग भरी पिचकारी दीन्ह गुरु मोहि आए ॥ २ ॥
साहेब श्याम दया सुष सागर दीन्हेउ अलष लषाए ॥ ३ ॥
"रामप्रसाद" रामरस चाषेऊ आवगमन मिटाए ॥ ४ ॥६६॥

विषय—भक्ति तथा उपदेश ।

सख्या २३७ योग वाशिष्ट, रचयिता—साधु रामप्रसाद जी 'निरजनी', कागज—आधुनिक, पत्र—१२००, आकार—१५१/८ × ११/८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, मुद्रणकाल—स० १९६० वि० (सन् १९०३ ई०), प्राप्तिस्थान—श्रीयुत लाल रमायदुलाल सिंह, कान्ह वशीय, बी० ए०, साहित्य-शास्त्री, साहित्यरत्न (स्वर्ण पदक) यदुराज, तालुका—नरहीनपुर, डाक०—करहया बाजार, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री परमात्मने नम ॥ अथ श्री योग वाशिष्ट ॥
प्रथम वैराग्य प्रकरण प्रारम्भ ॥

उस सतचित आनन्दरूप आत्मा को नमस्कार है जिससे सब भासते है और जिसमे सब लीन और स्थित होते है एवम् जिसमे ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय, द्रष्टा, दर्शन, दृश्य और कर्त्ता, करण, क्रिया, सिद्ध होते है, जिस आनन्द के समुद्र के कण से सम्पूर्ण विश्व आनन्दवान है और जिस आनन्द से सब जीव जीते है। अगस्त्य जी के शिष्य सुतीक्ष्ण के मन मे एक सशय उत्पन्न हुआ तब वह उसके निवृत्ति करने के अर्थ अगस्त्य मुनि के आश्रम को जा विधि सयुक्त प्रणाम करके स्थित हुआ और नम्रता पूर्वक प्रश्न किया कि हे भगवन् ! आप सर्व तत्वज्ञ और सर्व शास्त्रो के ज्ञाता हो एक सशय मुझको है सो कृपा करके निवृत्त करो। मोक्ष का कारण कर्म है या ज्ञान ? वा दोनो ? इतना सुन अगस्त्य जी बोले कि हे ब्राह्मण ! केवल कर्म मोक्ष का कारण नहीं और केवल ज्ञान से भी मोक्ष प्राप्त नही होता, मोक्ष की प्राप्ति दोनो से होती है ।

अत—निर्वाण प्रकरण मे सप्त विशति आख्यान कहे है, भुशुडि और वशिष्ठ का; महेश और वशिष्ट का, शिलाकोश का, उपदेश अर्जुन, स्वप्न सत्यरुद्र, बैताल का; भगीरथ का, गगा अवतार, शिखरध्वज का, बृहस्पति कचप्रबोध; मिथ्यापुरुष का; भृंगीगणका; इक्ष्वाकु, निर्वाण, मृगव्याधि दृष्टात, वल बृहस्पति, सबो निर्वाण; विद्याधर का; हरिणोपाख्यान, आख्यानोपाख्यान, विपश्चित् की कथा, शिविका; शिलाक, इन्द्र, ब्राह्मण के पुत्रो का, कुन्दनदत्त का, महाप्रश्न, उत्तर वाक्य, शिष्य गुरु, महोत्सव और ग्रथ प्रशसाफल चतुष्टय प्रकरणो मे सब पचास आख्यान वर्णन किये गए है ।

इति श्री योग वाशिष्टे महारामायणे वाशिष्ट रामचन्द्र सवादे निर्वाण प्रकरणे मोक्षोपाय वर्णन नाम द्विशताधिक एकोनवतितमस्सर्ग ॥२८९॥

समाप्तोय श्रीयोग वाशिष्टे निर्वाण प्रकरणे
उत्तरार्द्धः ॥
इति

मुशी नवलकिशोर (सी० आई० ई०) के छापेखाने लखनऊ मे छापा गया मार्च सन् १८९५ इसवी ॥ कापीराइट महफूज है वहक इस छापेखाने के ॥

विषय—योग वाशिष्ट का हिंदी अनुवाद ।

संख्या ३३८. रमल प्रश्न, रचयिता—रामभजन त्रिपाठी (?), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—११॥। × ४॥। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६८४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० गौरीशंकर त्रिपाठी, ग्राम—कोथरा खुर्द, डाक०—चाँदा, जिला—सुलतानपुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः

अ अ आ० हे पृच्छक तैं जो कार्य चितवो है तेहि के एक शत्रु है शत्रु की खंडी होइगो मन महं धरे तव तेरो कार्य होइगो संदेह नाहीं ॥ १ ॥

अ अ द ॥ तेरो कार्य सिद्ध रस मो है मन महं य वार कार्य है सो वहुत दिन महं होइगो। सदेह नाहीं ॥ २ ॥

अ ज द। हो पृक्षक तू जो कार्य चितवो है तेहि महं परिश्रम है न होइगो जो तेरो मन भलो चाहत है सो न चाहैगो ॥ ३ ॥

अ व द ॥ हो पृक सो तेरो कार्य वहुत दिन मे होइगो देवानि सम सें किछु क होइगो। जो तुम चितवो है सो न चित न होइगो सो तोसो वुराइ है तहा पुनि अर्थ लाभ होइगो सदेह नाहीं ॥ ४ ॥

अ द व० तेरो शत्रु छ्इ जाइगो सर्व कार्य सिद्ध होइगो लक्ष्मी होइगो प्रचार लोग संतोष करहिगो शत्रु को क्षय मित्र की जय होइगो ॥ ५ ॥

अंत—ज अ द० हौते वातं छाड़ि देइ गुरु की सेवा नीके करु एक वाद आकस्माद आवैगो तेसे तैं वहुत आनद होइगो ॥ ४ ॥

ज व अ होइ उस कार्य चिंता विग्रह होइगो तिसते सिद्ध न होइगो ॥४१॥

:o: :o: :o:

द व अ० हो कर्म होइगा ॥६३॥ छ द अ० हो देवता पूजे ते कार्य होइगो ॥६५॥

इति श्री रमल प्रश्न समाप्त सम्वत् १६४८ ॥ कृति राम भजन त्रिपाठिना ॥

विषय—रमल प्रश्न विचार वर्णन।

संख्या ३३९क. गणेश जयति, रचयिता—रामरतन लघुदास, निवासस्थान—हरियागा क्षेत्र, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—६३/४ × ५ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—२७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६५ वि० के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री गदगुरुप्रसाद श्रीवास्तव, स्थान—किला रायबरेली, जिला—रायबरेली।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ अथ गणेश जयति लिष्यते ॥

जयति महासुष कारिणी सोक सिंधु की पोत।
पठिक जीव चढि जासु पर पार विना श्रम होत ॥ १ ॥
करुणानिधि आनदघन दीनदयाल गणेश।
आरत हरण उदार कौ सुमरत जात कलेश ॥ २ ॥
जै गणेश वारण वदन सिधि सदन सुषधाम।
जयति सुमगल की ध्वजा विघ्न विनासन नाम ॥ ३ ॥
जै गणपति जै ज्ञान घन जै गवरी सुत वीर।
जै गजमुष जै गर्भ हर जै गुणनिधि गभीर ॥ ४ ॥

छंद त्रिभगी

जै जैयति गणेशा हरण कलेशा सुदर भेसा सुख कदा।
जै वारण सीसा वुद्धि वरीसा मगज इसा सर चंदा।
जै भाल विसाला वदन रसाला दीन दयाला हर फदा।
जै सुडि सुहाई अति छवि छाई देत वडाई आनदा ॥ ५ ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

जै श्रुति वदत जै प्रभो जै गुण गायक ग्रथ।
जै भ्रत रक्षक जै निकर जै जै सुधि वुधि कंथ ॥११॥

जयति सुधाघट जन्म धर जयति अनादि अनंत ।
जयति ऊमा आनद कर जयति रटत सुर कंत ॥१२॥
दुख दरिद्र तम नास हित गणपति भान प्रकास ।
तासु भजन करि प्रेम सौं राम रतन लघुदास ॥१३॥
करि भजन गणनाथ को जयति पढै नर जोय ।
राम रतन लघुदास कहि सर्व सिद्धि फल होय ॥१४॥

इति श्री गणेश जयति सपूर्णः ।

विषय—श्री गणेशजी की स्तुति वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रचना निम्नलिखित रचनाओं के साथ एक ही हस्तलेख में है—

१. सूर्य पुराण ।

२ कर्मविपाक ।

३ हनुमान जयंति ।

अत वृत्त के लिये देखिए 'हनुमान जयति' का विवरण पत्र ।

संख्या ३३६ख हनुमान जयति, रचयिता—रामरतन लघुदास, (स्थान—हरियाना क्षेत्र), कागज— देशी, पत्र—८, आकार—६ १/१० × ५ २/१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—४१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत सद्गुरुप्रसाद जी श्रीवास्तव, स्थान–किला रायबरेली, जिला-रायबरेली ।

आदि—श्री हनमतये नमः ।

जयति अमगल नासिनी मगल दायक सोय ।
भजन करि याकौ पढै कष्ट कदै ना होय ॥ १ ॥
सेवक रक्षा करन को लिये गदा निज हाथ ।
सकट सोक निवारिकै देत अभै कपिनाथ ॥ २ ॥
मारुत नदन वीर कू श्री रघुवीर उपास ।
या विचारि सरन भयौ रामरतन लघुदास ॥ ३ ॥
भक्ति ज्ञान वैराग्र वल धीर दया निधि सोय ।
जासु कृपातै जाव को राम चरण रत होय ॥ ४ ॥
तुम विन मेरो कौन हे स्वामी पवन कुमार ।
नाथ कृपा करि पालीयौ मै लघुदास तुम्हार ॥ ५ ॥
वित चिंता वसमं भयौ वार वार अकुलाय ।
दास तुम्हार कहाय कै सरन कौन कै जाय ॥ ६ ॥
जै मारुत नदन वली जैत अजनी पूत ।
जै सुकठ सेवक सखा जै भरता डाज दूत ॥ ७ ॥
जै सुरसजित ज्ञान घन जै खल मर्दन बीर ।
जय मयनाक सपर्स कर जै निधि लघण धीर ॥ ८ ॥

अंत—सब देवन के मध्यमै दीरघ पवन किसोर ।
ताहि भजो चिंता तजो सदा सहायक तोर ॥२९॥
रहत सदा निजदास पर पवन पुत्र अनुकूल ।
प्रणतमाल खलदल दलन जै जै मंगल मूल ॥३०॥
हरियाणौ एक देस है गाव विघाणौ नाम ।
गौड विप्र राजत जहा अति पावन सो ठाम ॥३१॥
भरद्वाज कुल गोड द्वज मनोराम बुध तात ।
श्री ध्यानावत गुर मिले मयाराम विख्यात ॥३२॥
मयाराम महाराज कौ "रामरतन लघुदास" ।
जस गावत हूनमत कौ मगल करन प्रकास ॥३३॥

इति श्री रामरतन कृत हनुमान जयति समाप्त ॥ संपूर्ण ॥ मीति कार्तिक बदि ८ गुरवासरे संवत् १८६५ साके १७३० ॥ राम ॥ राम ॥ श्री

विषय—हनुमान की स्तुति वर्णन ।

संख्या ३४०. हृदयप्रकाश, रचयिता—रामसनेहीदास, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—६$\frac{8}{10}$ × ७$\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—२२७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६३८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री सद्गुरुप्रसाद जी श्रीवास्तव, स्थान–किला रायबरेली, जिला–रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ हृदयप्रकास लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

गणपति गिरिजा शंभु रवि बिश्नु शक्ति जुत बाश ।
सिया मातु अज्ञा दई बरणो 'हृदयप्रकाश' ॥ १ ॥
विप्र मुनिन दै आदि सब ब्रह्मादिक जे देव ।
पवन तनय बल पाइकै बरणो हिय को भेव ॥ २ ॥
सियाराम गुरु की कृपा सत सहायक पाय ।
तत्वबोध बरणन करों लषत भ्रम मिटि जाय ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

अचित भक्त जो रूप कहावै । नेति नेति जेहि श्रुति गुहरावै ॥
अहं तत्व तेहि इच्छया जानी । ताते प्रणव सो त्रिगुण बखानी ॥
सत रजमय गुण उपजाये । ब्रह्मा विश्नु महेश कहाये ॥
सतगुण सहित शंभु संहारा । तीनौ गुण सब जग बिस्तारा ॥
स्वेत रंग सतगुण को जानी । रजो रक्त तम स्याम बखानी ॥

अत— **॥ दोहा ॥**

नवधा प्रेमा पुनि परा त्रिविध भक्ति के भेद ।
नर नारी जोई करै सब कर मिटिहै खेद ॥२७॥
जज्ञासा जाके हृदय भक्ति ज्ञान की चाह ।
कहै सुनै अरु मनन कै होइ वृद्धि अवगाह ॥२८॥

इति हृदयप्रकाश सर्वांग ग्रंथ राम सनेही कृत सपूरणम् शुभ मस्तु श्रीरस्तु मिती माघ वदी पंचम्यां गुरुवासरे लिखतम पुस्तकम सम्वत १६३८

दोहा

जोहवै जन्म भूमि मे रामसनेही दास ।
ग्रंथ कीन सतन कृपा रामायण की आस ॥

विषय—रामभक्ति वर्णन ।

संख्या ३४१. अलिफनामा, रचयिता—रामसहाइ, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—८$\frac{1}{4}$ × ६$\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—६५, रूप,—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६५० वि०, प्राप्तिस्थान—महत श्री गुरुप्रसाददास जी, स्थान व पोस्ट–बछरॉवा, जिला–रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नम: अथ अलिफनामा लिख्यते

बोहु अलिफ इलाही एक है जो वहु भेष म आपु समाइ रहा ।
वहा डोलता है वही बोलता है वहि सुनता है वहि गाइ रहा ।
नहीं और और किसी से कहता हो मे आपन दिल समुझाइ रहा ॥ १ ॥
गुरु इस्क इसारे साहि दये वाहि बये "रामसहाइ" रहा ॥ १ ॥
वाहु अलिफ लाही एक है जो जिन टेक धरा सोइ पारपरा ।
कसि कमर कलेजा हाथ लिया मैदान इस्क मे आनि अड़ा ।

यह भेद समुझि कै सूलि परमेसूर भितर बजाइ चढा ।
हद बेहद "रामसहाइ" नहीं मरहद मे नेह निसान गढा ॥ २ ॥

अंत—

धनि धनि पीर रोमन अमीर जिन साचा सबक पढाया है ।
मोहि जानि मुफ्त दी बाल वधी सब हरफो मे समझाया है ।
मैं कई वेर भौसागर के पूंदे में गोता खाया है ।
तब जाइ कै "रामसहाइ" राम को ध्यान ज्ञान मे पाया है ॥३५॥

इति अलिफनामा समाप्त ॥

विषय—ज्ञानोपदेश और चेतावनी वर्णन । फारसी वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर पर रचना की गई है ।

संख्या ३४२ रामशब्दावली, रचयिता—बाबा रामसुधिकरन (स्थान—झामदास बाबा की कुटी, सुलतानपुर), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८$\frac{१}{१०}$ × ५$\frac{३}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप)—४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—महन्त श्री महावीरदास जी, स्थान—झामदास की कुटी, पोस्ट—जगेसरगंज, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमह. श्री बाबा राम सुधिकरन जीवऊ रामसब्दावली लीषीते ॥ श्री रामजी साहाय ॥

साषी

सुमिरत रामप्रसाद का केसौ दीन्ह बताय ।
झाम यक मत पाईकै रहा जक्त मुह बाय ॥

॥ सब्द ॥

साधो भाई झाम साधु का बाना । रहो असाधि साधि नहि जाना ॥
छूटे वधु राम का जाना ॥ १ ॥
गुप्त कीन्ह मनहिमा जाना । अब तो गुरु राम का जाना ॥ २ ॥
"रामप्रसाद" गुरु का जाना । सतगुरु केसौ का मत माना ॥ ३ ॥
"रामसुधिकरन" चरन का जाना । मन मा अवरन माना ॥ ४ ॥

॥ साषा ॥

"रामसुधिकरन" चरनमा भाम येक मत मानि ।
केसौ रामप्रताप ते रामप्रसाद मत मानि ॥

अंत—

॥ सब्द ॥

भजन किहेकै भागि साधो भाई ।
बैठे यकन्त सत गोहरावै प्रगट भये भगवान ॥ १ ॥
आय परिन मै तुम्हरो शरणमा मनसे कीन मुकाम ॥ २ ॥
जब से लागिन तुम्हरे मतमा तब तुम दिहौ छोडाय ॥ ३ ॥
जब हम लागिन तुम्हरे पदमा तब तुम दिहौ बताय ॥ ४ ॥
सतगुर झाम गुरु केशव मत रामप्रसाद राम आधार ॥ ५ ॥
रामसुधिकरन अचल पद पायो मनसे भजो छोडि सब काम ॥ ६ ॥

इति श्री साहेव रामसुधिकरनदास जी कृत शब्दावली सम्पूर्ण ॥

विषय—भक्ति तथा उपदेश ।

संख्या ३४३. अखरावली, रचयिता—साहेब रामसेवक, कागज—आधुनिक सफेद पत्र—७, आकार—१२$\frac{५}{१०}$ × ८$\frac{६}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप)—२१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९८७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री रामनाथ हलवाई, स्थान व डाक०—रुन्होना, जिला—रायबरेली ।

आदि—अथ अक्षरावली साहेब रामसेवक जीव की ।।

करनधार कमाल करता करत सरवस को अहै ।
श्रुति शेष शास्त्र पुरान वांणी काव्य तेहि सीफति कहै ।
ब्रह्म संकर नारद सुक व्यास सौनक तन चहै ।
सनकादि देव सुरादि सूतो अंगिरा अंतर गहै ।
आनंत संत सो गावते सत नाम पारस पर अहै ।
आरूप अवरन अकह अविगति कवन ते गति का लहै ।
अस सम्रथ जगजीवन जग मत जगतपति जन क्रम दहै ।।
प्रभु देबीदास लखाइ दीन्हेउ रामसेवक मिलि रहै ।। १ ।।

अंत—

एक करता पुरुष औ गति अलख अगुन निअक्षर ।
जेन्ह कीन्ह त्रिभुवन तनक मानहि जानि गति काहू पर ।
सोइ सुन्यकार अपार अवरन बुद्धि संचर ।
अद्वैत अकथ अनादि अज अलभेस देस नेवासर ।
सो सत्यगुर सत सिद्धिदायक जगत गुन धरि औतर ।
'जगजीवन' नाम कहाइ जनहि भक्ति को विस्तार कर ।
प्रभु देबीदास दयाल तेन्ह कहि दीन्ह मति प्रगट बर ।
जन सेवक मंगन ह्वै करजोरि कै पायन्ह पर ।।४०।।

इति श्री सब्द अखरावली कृत साहेब रामसेवक जीव की समाप्त ।।

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या ३४४. दिग्विजय भूषण तिलक, रचयिता—मू० र० गोकुल कवि, तिलककार—रामस्वरूप (?), कागज—देशी, पत्र—३३६, आकार—१०३⁄४ × ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—७६८०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, मूल ग्रंथ—पद्य, तिलक—गद्य, रचनाकाल—सं० १६१६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत उर्वीधर जी त्रिवेदी, ग्राम—पुरहिया, डाक०—निगोहाँ, जिला—लखनऊ ।

आदि—।। भूमिका ।।

बरवै छंद

गौरि नंद पद सुमिरों हिय धरि ध्यान ।
जाकी कृपा विलोकनि पूरित ज्ञान ।। १ ।।

।। दोहा ।।

ऐरावति के दक्ष तट महाविमल अस्थान ।
वसै नगर वलिरामपुर कोविद सुकवि महान ।। २ ।।
चौहट हाट वजार वर वरन चारि जहँ स्वच्छ ।
निज निज विद्या सब धर्म कर्म मे दच्छ ।। ३ ।।
नित्य जहाँ कोविद सभा सुकवि विलास उदार ।
वितपति प्रतिभा मञ्जु मय नव नव युक्ति अपार ।। ४ ।।
महाराज दिग्विजयसिंह सबको करि सन्मान ।
दियो जीविका हेतु वहु रतन ग्राम गजदान ।। ५ ।।
सुबुध गदाधर शर्म्म को विद्या गदा प्रहार ।
नहि कवउ कवि कोविद भयो सहनशील संभार ।। ६ ।।
तासु निकट विद्या पढे भूरि शिष्य मति मन्न ।
तिन्ह मे यक गोकुल भयो रचना में वलवन्त ।। ७ ।।
सुगुरु कृपा पीयूष पिय प्रतिदिन करि अभ्यास ।
साहित्यागम सिन्धु मथि रतन लहे अन्यास ।। ८ ।।

मम पितृव्य के निकट जब पढिबे विद्या रीति ।
काव्य कोश उत्कर्ष लखि भई सुपावन प्रीति ॥ ६ ॥
राजसभा नित काव्य की चर्चा होवै बेश ।
तहँ मम युक्ति नवीन लखी कवि यो कियो निदेश ॥१०॥
भाषा ग्रथन को तिलक कीन्हे भाषा माहि ।
तुम प्रम विशद प्रवन्ध को अधिक नृपति प्रिय चाहि ॥११॥
सस्कृत सम्मत जाहि लखि कवि कोविद मुद होय ।
काव्य कोश वहु ग्रथ कोर्ज रचना सोय ॥१२॥
कवि दिनेश अरु भूप रुचि समुझि महोदय बात ।
ताके विशद प्रबधको करो तिलक विख्यात ॥१३॥
शब्द अर्थ ध्वनि व्यग रस अलङ्कार सु अनूप ।
गुन अरु रीति विलास मय कीन्हे 'राम स्वरूप' ॥१४॥

श्री गणेशाय नमः ॥ अथ दिग्विजय भूषण लिख्यते ॥

॥ छप्पै ॥

गनपति गौरि गिरीश गिरा विधि रमा रमापति ।
गाज राजपुर राज सप्त ऋषि पावन जलपति ।
राहु केतु शनि भौम शुक्र बुध गुर रवि निशिपति ।
मच्छ कोल कहि कच्छ सिह नर बामन भृगुपति ।
सियराम चद वृजचद प्रिय बौध कलकी अघ हरैं ।
कहि गोकुल शुभ सब दिन मदे ए छतीस रच्छा करैं ॥ १ ॥
.०. ०. ०

चौपाई

६ १ ६ १
छड इदु नव चद्र प्रकास । विक्रम सम्वत सित मधुमास ।
ग्रथ दिग्विजं भूषन नाम । अलकार वृज विरचि ललाम ॥२७५॥
:०. .०. ०

अंत— ॥ कविन ते विनय दडक ॥

सिंह के समान ठान कैसे करि सकै श्वान कलानिधि आगे काह जुगनू कलाधरै ।
गोकुल बिलोकि त्यौंही मेरीहै ढिठाई यह कीन्ही कविताई वुध आदरै तौ आदरै ।
कवि लोग जोहरी है जाहिर जगत जाके रतन पदारथ कवित्त मुकुता लरैं ।
तहाँ मम पोत कौन होत सनोमान बान जैसे कोऊ दीपक देखावत दिवाकरै ॥५०॥

॥ दोहा ॥

रज कनिका लघु लोगयै करिवो निज प्रकाश ।
बडी नही कछु बात है भानु गुनी के पास ॥५१॥
कवि कोविद गुनवत सो विनै करो कर जोरि ।
बिगरो बरन सुधारिए ॥
:०: :० :०.

नर की कहै नल की बारि उँचे उठत है ॥४६॥ कविन सो विनय करत है की मेरी कविताई पोत के सम आप लोग मुकुता वरण वरने हैं ॥५०॥ रजकनिका कहै वालू मे जो चमकत भानु को प्रकाश करिवो कछु बडी बात नाही तैसे लघु गुनी प . . . . . .
:०: :०. .०:

विषय—साहित्य के अग शब्द, अर्थ, ध्वनि, रस, अलकार, गुन और रीति आदि का वर्णन ।

रचनाकाल

६ १ ६ १
खंड इंदु नव खंड प्रकास । विक्रम सम्वत सित मधु मास ॥

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत ग्रथ पहले भी विवृत हुआ है। तब भी रचयिता का कोई विशेष पता न लग सका था। इसमे सदेह नही कि ग्रथ साहित्यिक और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसमे इतिहास का जो उल्लेख मिलता है वह सवत् १३२५ वि० से है। इन कालो का सबध दिल्ली के यवन बादशाहो से भी है। उदाहरणार्थ सवत् १३२५ मे गुजरात देश के अतर्गत नमच छावनी के पास पावागढ स्थान से, जिसको जनवार भी कहते है, राजा नयसुखदेव के पुत्र वरियारसाह दिल्ली के बादशाह ताजुद्दीनशाह गोरी के पास आए। बादशाह ने इन्हे उत्तर के देशो को, जिसमे चोर डाकू भरे पडे थे, जीतने के लिये कहा। साथ ही साथ उन देशो का सारा राज्य उन्हे ही दे दिया। राजा ने शीघ्र ही समस्त प्रदेश को अपने शासन मे कर लिया और अकौना को राजधानी बनाया। यह राजकुल जनवार वश कहलाया। बलरामपुर (गोडा) के राजा इसी वश के है। यह ऐतिहासिक वृत्त पहले भी उद्धृत कर दिया गया है। अत इस बार फिर लिखना, अनावश्यक सा जँचता है।

इसमे एक महत्व की बात यह है कि इसमे १६२ कवियो की रचनाएँ भी उदाहरण के रूप मे दी गई है। इनके नाम इस प्रकार है--

१ गो० तुलसीदास, २ सूरदास, ३ चद कवि, ४ गग, ५ अमरकवि, ६ नरोत्तम, ७ केहरी, ८ काशीराम, ९ मुकुद, १० सिरोमनि, ११ ब्रह्मवीरवल, १२ प्रतापकवि, १३ प्रसाद कवि, १४ जसवतसिंह, १५ श्रीपति, १६ ठाकुर कवि, १७ मध्य कवि, १८ महाकवि, १९ रसखानकवि, २० वशीधर, २१ नदनकवि, २२ तोषकवि, २३ दास कवि २४ मडनकवि, २५ शभुकवि, २६ कविंद कवि, २७ पूर्षी कवि, २८ नेवाज, २९ मनसा, ३० चतुरकवि, ३१ उदयनाथ, ३२ उमरेश, ३३ जैनमहमद, ३४ दूलह, ३५ घनस्याम, ३६ सुदर, ३७ सिवलाल, ३८ बोधा कवि, ३९ मतिराम, ४० चिंतामणि, ४१ किशोर कवि, ४२ नीलकठ, ४३ गगापति, ४४ चदनकवि, ४५ हित हरिवश, ४६ पदमाकर, ४७ देव कवि, ४८ जगतसिंह, ४९ सिव कवि, ५० भगवत सिंह, ५१ मीरन कवि, ५२ सूरति, ५३ रामकृष्ण, ५४ कविराज, ५५ सेनापति, ५६ सुमेर कवि ५७ देवीदास ५८ कालिदास, ५९ महाराज, ६० हेम कवि, ६१ अन्य कवि, ६२ सगम, ६३ रघुनाथ, ६४ केशौदास, ६५ गुरुदत्त, ६६ नरायन, ६७ रघुराय, ६८ शोभ कवि, ६९ मोतीराम, ७० कान्ह कवि, ७१ प्रह्लाद, ७२, रामकवि, ७३ दयानिधि, ७४ प्रवीन राय, ७५ कुलपति, ७६ अन्य कवि, ७७ नाथ कवि, ७८ लाल कवि, ७९ गोविद, ८० पुरानकवि, ८१ माखन, ८२ नागर कवि, ८३ निपट कवि, ८४ जगजीवन, ८५ बेनी कवि, ८६ रतन कवि, ८७ धुरधर, ८८ आनदघन, ८९ प्रेमसखि, ९० रामसखी, ९१ तोषनिधि, ९२ सुखदेव, ९३ कृष्ण सिंह, ९४ हरि कवि, ९५ आलम कवि, ९६ घासीराम, ९७ दयाराम, ९८ . गोकुल नाथ, ९९ तारापति, १०० मननिधि कवि, १०१ भूपति नाम गुरुदत्त, १०२. अनीस कवि, १०३ सबल कवि, १०४ दीनदयाल गिरि परमहस कवि, १०५ देवकीनदन, १०६ नायक कवि, १०७ खान कवि, १०८ पजनेस, १०९ गिरधारी कवि, ११० पुन सुखदेव, १११ लीलाधर, ११२ कवि दत्त, ११३ हरजीवन, ११४ सदानद, ११५ भूधर कवि, ११६ कृष्ण कवि, ११७ नृपशभु, ११८ ममारख, ११९ हरदेव, १२०. मल्ल कवि, १२१ नवी कवि १२२. भूषन, १२३ पुहुकर कवि, १२४ सोमनाथ, १२५ अनुनैन, १२६ वलिभद्र, १२७ अन्यतीसर कवि, १२८ द्विजदेव, १२९ ग्वाल कवि, १३० अवध, १३१. सरदार १३२ अन्य कवि चतुर्थ, १३३ रसलीन, १३४ रामसहाय, १३५ रहिमन नवाब खानखाना, १३६ विहारीलाल, १३७ परवाने कवि, १३८ चतुर विहारी , १३९ नरहरि, १४० कोविद कविन्द, १४१ अन्य कवि पचम, १४२ धनसिंह, १४३, इदु कवि, १४४. अन्य कवि छठवाँ, १४५. मुरली कवि, १४६ भरमी कवि, १४७.

मनीराम, १४८ दिनेश, १४६ मदनगोपाल, १५० हरिकेश, १५१ मनिकठ, १५२. ताराकवि, १५३ जीवन कवि, १५४ भजन कवि, १५५ हरिलाल, १५६ परसराम, १५७. रूपकवि, १५८ बलदेव, १५६ अन्य कवि, १६० मेष कवि, १६१ निधि कवि, १६२. नवल कवि, १६३ भगवन्त कवि, १६४ दत्त कवि, १६५ सतन कवि, १६६ कृष्णलाल, १६७ मान कवि, १६८ गोपाल कवि, १६६ हरि जन कवि, १७० गुलाल कवि, १७१ मधुसूदन, १७२ सिह कवि, १७३ शिवनाथ, १७४ वृजचद कवि, १७५ मुरारि कवि, १७६ बीठल कवि, १७७ हृदेश कवि, १७८ चतुर्भुज कवि, १७६ ऋषिनाथ, १८०. मकरद कवि, १८१ रूपनारायण कवि, १८२ अन्य कवि नवम, १८३ मोतीलाल, १८४ दयादेव, १८५ अकबरसाह, १८६ अहमद कवि, १८७ अभिमन्य कवि, १८८. चैनराम कवि, १८६ गणिनाथ (? सोमनाथ), १६० मकुदलाल, १६१ परधान, १६२ रामदास।

इन कवियों की आरभ मे सूची दे दी गई है।

सख्या ३४५ रत्नसाटिका, रचयिता—रामहित सिह वर्म, निवासस्थान—सुचित ग्राम (काशी स इक्कीस कोस उत्तर), कागज—देशी, पत्र—६५, आकार—७॥ × ५। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—८३१, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० रामहर्ष जी, ग्राम—गाहँवा, डाक०—कैथौला, जिला—प्रतापगढ।

आदि—

. मे पलं सुष पाइ। ६

इति विश्नबीसी फलम् अथ रुद्र विशति स्थूल फल

दोहा

वेस देस विस्मै अमित वृद्धि हीन सब लोग।
अृष्टि होइ छमान अति वुध वरनै अस भोग। ७

इति रुद्रबीसो स्थूल फलम् अथ ब्रह्म विशति सवत्सर नामानि

दोहा

प्रभव विभव अरु शुक्ल पुनि अरु प्रमोद पहिचानि।
येक प्रजापति नाम लषि अरु अगिरा वषानि। ८
श्रीमुख भाव जुवा कहत धाता येक कहन्त।
ईश्वर अरु वहु धान्य ए पुनि प्रमाथि वरनत। ६
विक्रम अरु वृष जानिये चित्रभानु स्वर भानु।
तारण पार्थिव व्यय कहतु जो वुधजन गुनवानु।१०
:o. o. o:

इति श्री रामहित सिह वर्म विरचितायां रत्नशाठिकाया विश्न विशति सूक्ष्म फलम् वर्णनं नाम वृतियो विश्राम॥

अत—

कातिक अगहन महग विकाई। पूष माघ वरषा पुनि गाई।
फागुन सचित होइ एह जानो। तामादिक सब महग वषानो।
उत्तर जाइ विके यह जानो। सुर रिषि ग्रथ विदित हरभानो।
चैत आदि षटमास अकाल। आस्वनि तें सुभकाल रसाल।
वरषो विन उदवेग सताबै। कहुँ कहुँ सारात होइ वुध गावै।
याके पर नरलोक सुषारी। तम स्वामी को फल नौरधारी।७५
रिति छय नाम सवत्सर फलम् ६० अथ कविता अस्थान वर्णन दोहा॥
कासी ते लषि उत्तरहि कोस यक्कइस जानि।
ग्राम सुचित विश्राम है जन्मभूमि कविधाम।७६
बाहुज बस सिहेल पव भे कुल भूप अनेक।
बरिआसम नृप नाम अब बिबित कहुं सुबिबेक।७७

ता कुल भे कवि राम हित लघुमति पर आधीन ।

—अपूर्ण

विषय—ज्योतिष (साठ वर्षों के फल का वर्णन) ।

संख्या ३४६क. आभूषण मत्र, रचयिता—गुरु रामानद, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—६८⁄₁₀ × ५६⁄₁₀ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—माई रामदास जी, कुटी ग्राम—महेरू, डाक०—बेलाखारा, जिला—रायबरेली ।

आदि—ॐ स्वामी जी जंग जहु रायग का तोडा पाग का खडाउः वकलंवरि कजरि सूत मूंज की लगोटी : मूंज का आड़बंद सूत की लगोटी : सूत का आड़ बन्द काठ की लगोटी : काठ का आड़वद प्रेम का अचला लै बालका अखड भभूत अवधूता नागा निर्वान आया नागा पहिरें नाग फनी हनुमत पहिरे लाल लगोट बाल गोपाल पहिरे कोपीन नौनथ चौरासी सिद्धन की औठ हाथ की चौपिया . हाथ की आसा बगल की कूबरी हथ का छाता बाघ का बाघंबर मृग की मृगछाला हाथ की सुमिनी हाथ की माला राम नाम जपजाप रसाला पापी पाखंडी का मुह काला जती सतो का बोलबाला मूज की जनेऊ मूज का धागा हाथ की सुमीनी हाथ का कमडल राम नाम सो लागा कंठ का हीरो गले की भगवति : द्वादश तिलक माथे का मतंगा इंट की सेली : मोरपंख की कलगी सिर पर राजे ॥

इति श्री गुरु रामानंद जी का अभूषण मंत्र संपूरण ॥

—पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—रामानद सप्रदाय का गुरुमत्र ।

संख्या ३४६ख. पचमात्रा, रचयिता—रामानद स्वामी, कागज—देशी, पत्र—११, आकार—६ × ५½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—म० १९२९ वि० (सभवत), प्राप्तिस्थान—श्री शभुप्रसाद जी बहुगुना, हिंदी अध्यापक, आई० टी० कालेज, लखनऊ ।

आदि—श्री गोपालया नमः ॥

ॐ अव जागे श्री गुरू रामानद अवधूत सेली सिगी ज (?जो) जगोटा ॥ पत्र फावरी डंड का छुटा ॥ झुली झडा चमर अडाणी ॥ दिनि अलष काम सहदानी ॥ कुवजा कडा सुर्मनि माल ॥ भेष की लाज भगवान रषवाला ॥ साकर सेष गुदरी तुमि ॥ वाज मोचग मुरलि पुगी ॥ अचला टोपी मोर कलगी ॥ ए राखे साधु वहुरगी ॥ पाव साकरी गोरष धधा ॥ साध सुरती करी राषे वधा ॥ कडीया का दंड आड वद अजरा ॥ वटुवा सुई सुई का धागा ॥ चोला षल का सीवन लागा ॥ धोला काला डोरा ॥ ए साधु का चोला षुट कुल्हारी फरसी गुपति ॥ देषि परघटन ही छपति ॥ पग का डाड आसा तपसा ॥ भरम पर तो भार चलावे ॥ मेट गुरून को दोजक जावे ॥ अजरा जर विचार सोई ॥ साध संत कोई ॥ विरला होई ॥ सरोता सुपारी हनुमत राषे ॥ हेत करी जानिउ अचारी राष ॥ पावका तोडा जंग जजीरा ॥ लोहे को आड़ावद वज्र की कछ । कंठ का हीरा कान की कुची ॥ सीस की सन. . . कादिस ॥ माथे को मुकुट ॥ सोंदुर की श्री ॥ अगुली की अगुठी ॥ हाथ का कड़ा जाहा सुमीरो जाहा हनुमत षड़ा ॥ चकुचि पिया चकमक मतगा पथरी ॥ गो (पी) चंदन गंगा की रज चेला विलम गुरू साषी ॥ श्री सरस्वंती जी उपदेस वताए ॥ क्षमा दास गुण अगम समाए ॥ मन करी पाई मात्रा चीत करी पायो जोग ॥

इति श्री गुरू रामानंद जी की पचमात्रा सपूर्ण ॥ १ ॥

अत—अथ विभूती प. . . . .त काया कोई सिधन को जोग सादक न पाया ॥ ॐ उलटे षल टेडे जोग ॥ श्री गुरू रामानद जी कहा वच जोग ॥

इति श्री रामानद जो. . . (? विर)चित सिद्धात पटल सपूर्ण सवत ॥२९॥ तीज कु लीषतं भावनगर मधे. . . (? पठ)नारथी गंगादास ॥ श्री गोपालाय नमः ॥ कृष्ण कृष्ण श्री कृष्णावली. . . . . .

विषय—मन्त्रादि विषयो का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना न तो विशुद्ध पद्य ही मे है और न तो विशुद्ध गद्य ही मे। अधिकाश स्थलों मे तुक मिलाए गए है। परतु जिन पदो के तुक मिलते है, वे मात्रा या वर्णों की दृष्टि से समान नही। अत इसको गद्य ही मान लिया है। बहुधा योगी और सतो का प्राचीन गद्य इसी तरह लिखा मिलता है।

संख्या ३४६ग. रामरक्षा, रचयिता–स्वामी रामानद, कागज—आधुनिक (सफेद), पत्र—६, आकार—६½ × ३¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७४ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—प० कालीचरण जी, ग्राम–रामनगर, डाक०–बेलाखारा, जिला–रायबरेली)।

आदि—श्री रामाय नमः ॥

ॐ शंध्या तारणि सर्व दोष निवारणि ॐ शंध्या उचरे विघन टरं ॥ पिंड प्राण की रक्षा ॥ श्री नाथ निरंजन करं ॥ ज्ञान धूम मन पुहुप इंद्रि ध्यतासनं क्षमा जाय शमाधि पूजा ॥ ॐ नमो देव निरंजन निराकार ॥ ॐ श्री परम गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ श्री परापर गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ परमात्म गुरुभ्यो नम ॥ ॐ आत्मा गुरुभ्यो नम. ॐ आदि गुरुदेव अनादि गुरुदेव ॥ ॐ अनंत गुरुदेव ॐ अलख गुरुदेव जी के चर्णारविंदे नमो नमस्कार ॥ ॐ हरत सर्व व्याधि सोक संताप दुःख दारिद्र कलह कलपना रोग पिडा सकल विघ्न खड खडनन ॥ ॐ तस्मै श्रीराम रक्षा निराकार वानी ॥ अनमं तत्व निरमं मुक्ति जानि ॥ ७ ॥ बाधिया मुल देषिया स्थुल गजिया गगन घुनि ध्यान लागा ॥ त्रिगुण रहित सील सतोष मे श्री राम रक्षा ?॥ लिये प्राण प्राणीं ऊकार जाग्या ॥ पांच तत्व पचभूत पचीस प्रकृति ॥ पच भूतात्मा पंच वायु ॥ सम दृष्टि समधरी आई ॥ पान अपान उद्यान व्यान समान मिले ॥ अनहद शब्द कि खबर पाई ॥ उलटिया सूर गगन भे दे नवग्रह डक छेदन कीया ॥ पेषिया चंद्र जहा कला सरी अग्नि प्रगट भई जरा बेदन जरी ॥ डाकिनी साकिनी घेरी मारी ॥ धरणि आकास विच पथ चलता किया ॥ अगम निगम महारस अमृत पिया ॥

अत—त्रिकुटी सार खास रामानद निज तत्व ते होते ब्रह्म जानी ॥ श्री राम रक्षा लै उधरं प्राणी ॥ राजद्वारे पथे घोरे सग्रामे शत्रु कटे जाई लागे तीर ॥ श्री रामचंद्र उचरते ॥ लक्ष्मण जी सुनते जानकी सुनते हनुमान जी सुनते ॥ पाप ना लियते पुण्य ना हरंते ॥ संध्या काले प्रातले जेन रामरक्षा पढते सुनते ॥ मोक्ष मुक्ति फल पावते ॥

इति श्री रामरक्षा रामानंद जी कृत रामरक्षा सपूर्णम ॥ सवत् १८७४ लीषितं गोसाई लाल गिरि जी गगा तीरे ॥ श्री ॥।

विषय—राम का स्तोत्र वर्णन ।

सख्या ३४६घ रामरक्षा, रचयिता–स्वा० रामानद जी, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६¾ × ३¼ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—४२, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि— . . . .

. . . . . .प मुक्तिपानि ॥ ४ ॥
बाधिया मुक्त देखिया स्थुल गजिया गगन घन ध्यान लाग्या ।
त्रिगुण रहित सिलु सतोष ॥ मे रामरक्षा प्राणीः ऊँकार जाग्या ॥ ५ ॥
पाच तत्व पचभुत पचिस प्रकृति पच भुतात्मा पच वाई सम दृष्टि समघर आई ।
प्राण आपन उदात व्यान समान मिलो अनहद सब्द खा खबर पाई ॥ ६ ॥
उलटिया सुर गगन भेदिया नवग्रह डके छेद कीया ।
पोषिता चद जहा कला सारी अगनी प्रगट भई तु ए वेदन नरी
कीनि संकी निवेर मणि धरणी अवर विच पथ चलता कीया ॥ ७ ॥

अगम निगम महारस अमृत पिया भूत प्रेत दैत दानवा संघारया ।।
वज्र को कोठरी बज्र का दंड ले वज्र को रुम खडग सु काल मारया ।। ८ ।।
गरुड पंक्षी उडा नाग नागनि डस्या विष की लहरि सुनिप्रान कंपे ।
पिंड निरमल हुवा पिंजरे पहै सुवा रोग पिडा मथ वाई देहन व्यापे ।। ६ ।।
रूंम रूंम रंरंकार उचरंच वाणि श्रवण सुनत ।। सम दृष्टि मुष्टि
भेरदा झिलि मिलिया जोनि झणकार झणकत रहै नाद विंदु मिलि भया रग रल्या ।।१०।।
सुन्य का नेहरा सुझता रहै अपसु आप मिलि जाय लाग्या ।
श. . .सुशरिर मिलि शरिर परसत रहै जीव सु जीव मिलि ब्रह्म जाग्या ।।११।।
अंत— विष का दरद सबहु दुर भागा ।
कमल दल जोत उजला जलै भवर गुंजर जाय आकास लाग्या ।।
रूंम नाडी तुचा रक्त विंदसो पत गर्जत वाणी ।
गरजंत गगन वाजंत संख सब्द धुनी कुटी बीच वास रामानव ब्रह्म चीना सोई
सोइनि जत ब्रह्म ज्ञानि ।।२५।।

।। इति श्री आध्यात्म ।।

श्री रामरक्षा सुनते उचरते राजद्वारे संग्रामे सत्रु संकटे भवते रामनद श्री रामरक्षा ।। उचरंत जीवजत उधरंते ।।२६।। पुन जन्म नधते ।। ॐ श्री रामचद्रा उचरंत सीता लछिमन सुनत मोक्षमुक्त फल लभते ।।२७।। श्री रामरक्षा लिख्यते श्री रामचद्राय नमः ।। ॐ सद्गुण तारणी सर्व दुख निवारणी संध्याकाले विघ्न टले ।। पिड प्राण की रक्षा श्री रघुनाथ करे ध्यान धुप मन पुरन कंप च इद्रिय भूतासनम् ।। ॐकार विद से युते ।।२८।।

इति श्री स्वामि रामानद वीरचित रामरक्ष्या सम्पूर्ण ।। :०: ।। स्वामी रामानंद की रामरक्षा सम्पूर्णम् ।। ।। शुभ भवतु ।। श्री ।।

विषय—श्री रामानद सप्रदाय का गुरुमत्र ।

संख्या ३४६ङ. रामरक्षा स्तोत्र, रचयिता—(?) रामानद, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—१२ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० बद्री प्रसाद जी द्विवेदी, ग्राम—इटौरा, डाक०—मानिकपुर, जिला—प्रतापगढ ।

आदि—श्रीमते राघवानदाय नमः ।।

करि शव गुरु शेवा लहे पर्म मेवा शुनी रांरक्षा निरकार वानी ।
तजी सव विकारा गहीमत्ता सारा अनुभो तत्व लेनी भा मुक्ति ज्ञानी ।
वाधियो मूल पुनि देखियो थुल तव गजि गगन धुनि ध्यान लाग्यो ।
त्रिगुन सो रहित करि सील सतोष भरि 'रामरक्षा' कीयो जाति जागो ।
पाचहु तत्व पच्चीस परकीर्ति मिलि पच भुतात्मा पच वाइ ।
प्रानापान अरु व्यान समान उद्यान मिलि शव्द आनावे खवरि पाइ ।
उलटियो सुर मेरि दण्ड छेदन कियो पोषियो चंद जह कला शारी ।
अग्नि वहु परजल्यो तनुहि वेदन डरयौ डकनि शषनी घेर मारी ।
धरनि आकास विच पथ वहता कीयो भुत प्रेत दइत्य दानव सघारे ।
वज्र के कोठरी वज्र के ताल दै वज्र के खडग लै काल मारे ।

अंत—
चरन अरु सीस लो रामरक्षा करी गुपुत की जाय ते गुपुत सीध्या ।
जीति संग्राम देवादि रविचंद विपरीत पुनि रीति करि चरन रिध्या ।
उलटि अमृत पीया रूप परसन कीया विष की लहरि सव दूरि भागे ।
कमल दल कमल सव जोति ज्वाला जरे भंवर गुंजार अंकार जागा ।
रोम नाडी तुषार कत मल विंदु सव सोषियागा ।

जिया गगन धुनि मुक्ति बानी ।
गुरु रामानंद ब्रह्म चिन्हते सो ब्रह्मज्ञानी । ए ते रामरक्षाते उधरे प्रानी ।
गिरिवर गयथे घोरे सग्रामासुर सकठे श्री रामरक्षा स्तोत्र मत्र रामचद्र उच्चरंत लक्षिमण कुमारादि शुनतं श: १८७३ कार्त्तिक

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या ३४६च. रामरक्षा स्तोत्र, रचयिता—रामानंद, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६॥ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—४४, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—श्री प० भगवानदत्त जी, ग्राम व डाक०—हरिहरपुर, जिला—बस्ती ।

आदि—रम्यो नम. ॥ आदि गुरुदेव ॥ अनादि गुरुदेव ॥ अनत गुरुदेव ॥ अलख गुरुदेव ॥ सरन गुरुदेव ॥ चर्ण गुरुदेव ॥ श्रो श्री गुरुदेव के चरनारविंद नमो नमस्कार ॥
हरत सब व्याध सोक सताप दुष दालिद्र कलह कलपना रोग पीरा ।
सकल विघन षड षडतम्मं श्रीरामरछा निराकार वाणी ।
अनभेव तत लेई निरभ मुक्ती जानी ॥
बांधिया मूल बेजिया अस्थूल गरजिया गगन धुनि ध्यान लाग्यौ ॥
त्रिगुण रहत सील सतोष मे रामरछा लिय प्राण ओकार जाग्यौ ।
पंचतत पंचमत पच्चीस प्रक्रीती पच भूतात्मा पच वाई ।
समदष्टी राम घर आई ॥
पान अपान उछान व्यान समान मिलि अनहद सब्द की षवर पाई ॥
उलटिया सुर गगन मेटिया । नवग्रह छेदन किया ॥
पेजिया चद्र जहाँ कला सारी ।
अग्नि प्रघट भई जरा वेदना जारी ॥

अत—रोम नाडी तुचा रकत बिद सोधता रहे ।
सोषत गरजत वाणी ।
गाजत गायन बाजत बयन सब सब्द करिले
त्रिकुटी सार दास रामानद ब्रह्म चीन्हा सोई निज ततु ब्रह्मज्ञानी ॥
इति अध्यातम श्री रामरछा पठते सुणते गुणते उचरते राज द्वारे सग्रामे सत्रु संकटे भवते श्री रामानद श्री रामरछा विचरते जीधते उधरते पुनरेव जन्म न विद्यते श्री रामचद्र उच्चरते सीता लषन सुनते मोछ मुक्ति फल लभते । इति रामरछा सुपुरण ॥

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश ।

संख्या ३४७. ज्ञानलीला स्तोत्र रचयिता—रामानद, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—४। × ३। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—१६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८२६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० महेशप्रसाद जी, ग्राम—ओझापुरा, डाक०—मैथैना जिला—प्रतापगढ ।

आदि—॥ श्रीमाय नम ॥
मूरिष तूं तन धरि कहा पवायो ।
राम भजन बिनि जनम गवायो ।
पसु ज्यो उद्र भरे भरि सोयो । पायो लाल अविरिथा षोयो । १
राम भजन गति जाणी नाही । भूंदू भूल्यो धधा माहीं ।
मेरी मेरी करतो फिरयो । हरि समरण कवहू न करयो । २
नारी सेती नेह लगायो । कवहू हिरदै राम न आयो ।
सुत मा या सूं षरो पियारो । कवहू सुमिरयो सिरजन हारो । ३
जोबनि मदिमातो अभिमानी । परिघर भटकत सक न मानी ।
स्वार्थ माहि बहु दिसि धायो । गोबिद गुण कवहू नहि गायो । ४

पर अंस षाय म्हा रुचि मानी । कबहूं हिरदै दया न आनी ।
अैसे अैसे करत व्योहारा । आपे साहिब तणा हरिकारा । ५
बधे काल कीये चौरगा । सुत वित नारि कोई न चालै संगा ।
जो तै कर्म कीये थे भारी । सो अब चलि लार तुमारी । ६
जम आगे ले बाता कीन्हा । धर्म राय बूझण को लीन्हा ।
कहैं धौ कौण कीये तै कामा । काहे न सुमिरयौ पूर्ण रामा । ७
जिनि पाणी सौ पैदा कीनो । नर सरूप तोकूं हरि दीनो ।
सो तु विसरयो मूरिष अधा । तौ तू आयो जम प बधा । ८
हरि की कथा सुणी नादाना । तौ तु नाहो जम सूं छाना ।
साधु सगति मे कवहू न रहियो । मुष ते राम कवहू न कहियो । ९
सो हरि विना प्राणी दुष पायो । धर्म राय यो कह समझायो ।
हरि की भक्ति करो नर नारी । धर्म राय यो कह्यो बिचारी ।१०
मोकौं दोस न दीजो कोई । जैसा करै भुगताउ सोई ।
पाप पुण्य को न्यारा छाणूं । जो तू कर्म कर सोहू जाणूं ।११
तुम्हारे कर्म तुमको भुगताऊ । आदि पुरुष की आग्या पाऊ ।
साहिब की आग्या है मोको । म्हा कसोटी देहू तोकूं ।१२
घडी घडी का लेषा लेहू । कर्मादिक तेरे भरि भरि देहू ।
है हरि विना न कोइ रषवारो । चित दे सुमिरो सिरजन हारो ।१३
सकट तै हरि लेत उबारी । निसिदिन सुमिरो नाव मुरारी ।
रामानद यो कहै समझाई । हरि सुमिरया जमलोक न जाई ।१४
ज्ञान लीला सुणै अरु गावै । सो नर वैकुठा वासा पावै ।१५

इति श्री ज्ञानलीला रामानद जी कृत स्तोत्र सपूर्ण ।

—पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—भक्ति विषयक वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रथ मे कुल पद्रह भक्ति तथा ज्ञानोपदेशक विषयक छद है । विषय की दृष्टि से पुस्तक महत्वपूर्ण है ।

सख्या ३४८. लीलारतन चूडामणि, रचयिता—रामानद, कागज—देशी, पत्र—६६, आकार—११$\frac{9}{10}$ × ६$\frac{6}{10}$ इच, परिमाण (अनुष्टुप)—१३६७, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत भवानी शकर जी याज्ञिक, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—अथ श्री लीला रतन चूडामनि लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

श्री गुरुदेव गुपाल को पद पकज मकरद ।
मन मधुकर पीवत सदा पूरन परमानद ॥ १ ॥
जयति मित्र वदनेस कौ सुत सपति अविनास ।
जहा जोति सूरज सरज सरस दुष्ट तिमिर कौ नास ॥ १ ॥
व्रज मे जेते थावर चर सब के नाऊ सीस ।
गौर श्याम लीला रतन लिलित करौ वकशीश ॥ ३ ॥

:o: :o: :o:

"रामानद" गोपाल कौ निरषत सोभा हरषे ।
मानौ त्रिभुवन संपति आये वृजमडल मे वरषे ॥३५॥

इति श्री लीलारतन चूडामणि वर्णने श्री विलास वनघन वर्णन ॥

अत—"रामानद श्री गोपाल को चरन गहे वतराय ।
हित वदनेस सुजान सनेही मद मद मुसिकाय ॥५८॥

नवल किशोरी आज्ञादीनी लीलारतन बनाय ।
उनकी आज्ञा बल उर धरिके कछु इक कथी सुनाय ॥५९॥
वक्ता श्री गोपाल क बालक अतिहि अयान ।
श्रोतामिश्र वदनेश सुत व्रज के राजा रसिक सुजान ॥६०॥
जो लीला इक मन करिकें चितहित सुने सुनाई ।
विपत्ति विदारे जनम सुधारे मन वाछित फल पाय ॥६१॥

इति श्री शास्त्रसारार्थ दर्शनी अनन्य रसिक सत समोदिनी श्री रामानद आनंद दायिनी श्री लीला रतन चूडामणि वर्णन श्री राधाकृष्ण गृह आगमन द्यौस लीला सपूर्ण नाम द्वात्रिशति तम प्रसग ॥३३॥ समाप्त ॥ शुभ भवतु ॥ सवत् १९३१ ॥ शाके १७९६ ॥ मिति असाढ शुक्ला २ ॥ बुधवार ॥ घटी ॥ ३८ ॥ पल २७ ॥ नक्षत्र ॥ लिषित चुनीलाल लेखक मध्ये बुधकीहाटमे पठनार्थम् ॥ श्री श्री श्री फोजदार जी श्री श्री श्री वषतावर सिघ जी बरसानीया ॥ जात ब्राह्मण ॥ श्लोक . .

॥ दोहा ॥

गढ़ भरतपुर पोथि लिषि राजा जसमर्तसिघ के राज ।
भूल चुक होय तो लिजो शुद्ध विचार ॥ २ ॥

श्री दाऊजी सहाय ॥

विषय—भक्ति और श्रीकृष्ण लीला वर्णन ।

सख्या ३४९ यो०ग मा० (योग शास्त्र), रचयिता—रामेश्वर भट्ट, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—९॥ × ८॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० बब्बन गोस्वामी, ग्राम—ताहिरपुर, डाक०—सिकरारा, जिला—जौनपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नम

विवेक मारतड की वाम पाचाल अस्थान मे सुलतान गयासुद्दीप्तते या भाति रामेस्वर भट्ट ने योग शास्त्रे निरूपन कोये अनेक ससा के सुष भोगवतं दुनिया का विवाद देषि कें यथेछ सरीर रख्या जाइ ग्यान उपजे सो एमा राजयोग है तिसके भेद क्रिया योग १ ग्यान योग २ चरचा योग ३ हठ योग ४ कर्म योग ५ लय योग ६ ध्यान योग ७ मत्र योग ८ लक्ष्य योग ९ वासना योग १० शिव योग ११ ब्रह्म योग १२ अद्वैय योग १३ राजयोग १४ सिद्ध योग १५ साधक योग १६ क्रिया योग के लक्षन जिसके अत करन मे क्षमा विवेक वैराग्य शाति सतोष निस्पृहता इत्यादिक उपजे और कपट हिसा तृष्णा मत्सर मच्छर पना अहकार रोष भय लज्जा आलस पाखड भ्रात इद्री का विकार काम क्रोध लोभ मोह राग द्वेष दिन जिसके मन मे छूटे ते जाइ सो क्रिया योगी कहिये अथ राजयोग के भेद . .

अत—हठयोग का भेद कहते है रेचक पूरक कुभक इत्यादिक पवन साधना अर षट कर्म धौती १ बस्ती २ नेती ३ त्राटक ४ तौली ५ कपाल भस्त्री ६ इति षट कर्म ए साधे से सरीर के समस्त रोग शुद्ध होते जाहि विसै मल निश्चल होता है निश्चल हूये से आद रूप प्रगट होइ हठ योग से चित शून्य वीच लीन होइ काल नजीक आइ न सकै हठ योग का दूजा भेद करते हैं पाव सो सिरताई अपना सरीर कोटि सूर्य का तेज समान सुपेत पीत नील लाल कोइ एक रग रूप का ध्यान कीये से सारे अग के रोग जलि जाहि उमर वढती होइ ज्ञान सग के भेद कहते हैं स बाभ्यतर बनस्पती १ . —अपूर्ण

विषय—योगशास्त्र के भेदाभेद, उनके लक्षण और नियमादि का वर्णन ।

सख्या ३५० गुसिद्धातोत्तम, रामखड (उत्तर काड), रचयिता—रुद्रप्रताप सिह महाराज, निवासस्थान—माडा राज्य (बनारस), कागज—देशी, पत्र—२८६, आकार—१३॥ × १०॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, चद्रप्रभा प्रेस, बनारस मे प्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप)—६१५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८८३ के लगभग, मुद्रणकाल—सन् १९११ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री महत जी गुरुद्वारा, ग्राम—शाहाबाद, डाक०—मानिकपुर, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री महाराज रुद्रप्रताप सिंह विरचिते सुसिद्धान्तोत्तम राम खण्डे

उत्तरकाण्डः

श्री गुरु चरन सरोज वरन पल्लव सम रागे ।
करन सकल सुख सरन भएउ जनमन अनुरागे ।
धन गन दंपति लोक भूरि संपति रस बागे ।
पुत्र प्रपौत्र प्रसूति भूति गज स्यंदन लागे ।
दातारं अरथादि फल करतारं गुन पुंजवइ ।
हरतारं सरवापद भरतारं हरि कुंजवइ ।
:o: :o: :o:
एहि विश्राम पुनरकथा करता को कुलगान ।
वसावली प्रबधमत कीन्हो चहत वखान ।
मानिक्य चद नरेस को न्रिप अल्लदेव महावली ।
कलहार कानन कुजराम प्रचड सत्रुन को दली ।
माहुल्यदेव सुता सो नदन देस पालन कीन्हेऊ ।
भूमि आदिक दान नाना भूमि देवन दीन्हेऊ ।
पुनि भूप भीखमदेव छितिपति जेहि करहि सेव ।
फिरि भरतदेव नरेस जसमिल भरत अवधेस ।
तेहि सोम सत्य सा भूप जलजात वाधव रूप ।
पुनि देव चाहिर राव जग विदित जासु प्रभाव ।
रूपदेव नरनाह तेहि देव रूपवत रूप ।
देवव्रत निसि देवता रूप किर्त्ति अनुरूप ।६५२।

माहुल देव तनय ताही के । सधवा धरा पाय वाही के ।
न्रिप धर्माकदेव तिनही के । कीत्ति परीछित ते अति नीके ।
मिश्र देव तेजी क्रिसानु से । किर्त्तिवान जो धवल भानु से ।
पूरन मल्ल सुवल्ल असीम से । कलि प्रगटे जनु परम भीम से ।
पुनि तालाख्य देव जगतीपति । नम्र होहि जेहि दीपन दीपति ।
अलखदेव नृप पाल खलक के । रोंक धनी कर एक छलक के ।
तेहि जय जाह सिहनर नायक । गुडाकेस सम जाकर सायक ।
पुनि भू रार्जासह ताही के । कुजरवत भुज वल वाही के ।
तिनके तिनि तनय सुनय गेह पराक्रम वत ।
जत्र तत्र होय भजे त्रय भए गोरी नर कत ।
तजि सरकार कडे रन हारे । हरि सम ऐरावतिहि निहारे ।
खस केरातन भीलन मारी । माझिल करुरव देस अधिकारी ।
:o: :o: :o:
मध्यातर एक केरल देसा । पूर्व सुवस भए तत्र नरेसा ।
देवदत्त अस ताकर नामा । करुप्रापी इव सक्र ललामा ।
कइअउ पुरुख राज तिन्ह कीना । रोहितास्व गढ़ दुर्ग प्रवीना ।
सेरसाह छल तें तित भूपा । नाम दलेल सिह सुभ रूपा ।
इति मध्यम भुग्र राज सुत कुल को करत बखान ।
आग्रह करि जिन्ह जवन तें राखेउ पथ हिदुआन ।

अंत— दोहा

ओडप सिन सुधनांत पद तथा नव पद राखि ।
दस वइसनव मइथिलनि नाम असेखित भाखि ।

इमि वइस्नव नामावली गाई । तथा पथ उपपंथ सोहाई ।
अमर सप्तसर द्वैत मते के । दुइ अद्वइत केर मत टेके ।

:o: :o: :o:

श्री सकर वर मार्ग को कर कहिहउ विस्तार ।
स्वल्पहि ते विहदत्व जेहि भूम्रित सरिस सुद्वार ।

विषय—रामकथा वर्णन ।

रचनाकाल

विक्रमार्क भूपाल के सवत्सर विख्यात ।
एक सहस अरु आट सइ उपर तिरासी जात ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल भूमिका के आधार पर है । वशावली इसप्रकार है—

मानिकचद (सोमवशी राजा जयचद के भाई)

- आल्ह देव (कनउज के राजा)
  - माल्ह देव
    - भीष्म देव
      - भरतदेव
        - सोमदेव (बनारस के पास मगरोरा गाँव)
          - चाहिर देव
            - रूप देव
              - माहन देव
                - धमार्क देव
                  - मिश्र देव
                    - पूरन मल्ल
                      - ताल देव
                        - अलख देव
                          - जयराज देव
                            - भुम्रराज सिंह
- तानह देव (मारवाड गए)
  - गुमान सिंह
    - भोजसिंह (दतिया)
    - मनोरथसिंह (ओडछा)
    - वीर सिंह (पन्ना)
  - जयशाह
- लखन देव (मारे गए)
- धर्मजित देव
  - सबलसिंह
  - मुचकुद (मेरठ)

देवदत्त (मुसलमान हो गए)   गूदनसिंह (माडा)   भारतीचंद (काहूंडार)

आल्ह देव गोरी से पराजित होकर अपने पिता मानिकचंद के साथ कडे भाग आए और मानिकपुर बसाया।

संख्या ३५१. वदीमोचन (?), रचयिता—लक्ष्मीनाथ, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—७॥ × ३॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—८४, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० केदारनाथ जी मिश्र, ग्राम–हुलासपुरा, डाक०–भदोही, वाराणसी।

आदि—

....

खर्ग उपारि वव करी धावा॥
तव वंदी एकर चउपाइ। छन एक सींघ आगे चली आइ॥
मारेव सगीन असुर की छाती। मरत वार मस्तक देइ छाती॥
एही वीधी रक्तवीज संघारी। अस्तुती करै देव सव भारी॥

॥ अस्तुती ॥

जै जै दीगंमरी देवी सुंदरी रन भुवन की चडिका प्रवल जन्म तव भए भंजनी। कुसुम मारी सो चंडीका तव चरन रीद्धी सीद्धी सो माताल देवी गुननाथल प्रलंकाल वीसभरी।
वीस वीस तो करु करु भेव जा विकट रूप भं आवही।
धरत धरत धर गीरत गवागद लछीमीनाथ अगोचर गावहीं।
धन्य तव वदी माई जी।

॥ दोहा ॥

रक्तवीज के एह वीधी मारेव वदी माइ।
सुभ निसुभ एह मरम सुनी तव व्याकुल भयो।

॥ चौपाई ॥

सुभ निसुभ एही सुधि पाइ। जुध्य करन कै सैन्य वुलाइ।
कोटिन वीर चले तव जोधा। आवा तुरीत महा एक जोधा।
गर्जही असुर भयकर भारी। ठोकही जाघ वजावही तारी।
तव वंदी एक जुगुती वनाई। नख पर चक्र वहु ओर घुमाई।

अत—

॥ दोहा ॥

वंदी माइ राम परगाटे भइ सहाइ।
तेहि केवल हनुमान तव एतना रचा उपाइ।
तल्याए राम के देवन अस्तुति कीन्ह।
जै जै भव तीहु लोक मह सुमन वरखं।
अव करही वीचारी प्रभु धन्य तुम वदी माइ।
अस गाढे मे आइके राम पर भई सहाइ।
तुम जगत की तरनी वदी मातु भवानी।
महीमा अगम अपार है तुमही सील गुन खानी।
एतना अस्तुती कीन्ह प्रभु पुलकित मन हरखाइ।
सींघ चढी वदी माइ

—अपूर्ण

विषय—रक्तबीज की मृत्यु तथा शुभ निशुभ आदि के युद्ध का वर्णन और वदी माँ की स्तुति।

संख्या ३५२. श्रेणिक चरित्र या श्रेणिक महाराज चरित्र, रचयिता—**लखमीदास** (?**लक्ष्मी दास**), कागज—देशी, पत्र—६२, आकार—१४ X ७८⁄₆ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—२१००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७३३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर (बड़ा मंदिर), चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ।

आदि— ॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

राज विलावल ॥ दोहा ॥

गणपति श्री अरहंत पद महावीर भगवान।
घात कर्म मिथ्यात तम हरि उदयाचल भान॥ १ ॥
समय सरण लक्ष्मी दीपं महिमा अगम अपार।
इंद्र आदि चरणा प्रतै नमैं भूमि सिर धार॥ २ ॥
प्रभु समीप श्रेणिक नृपति छाइक समकित पाइ।
होनहार तीर्थं सपद पद्मनाभि जिन राइ॥ ३ ॥
तिन्ह चरित्र भाषा मई भई कहन रुचि मोहि।
पूरव आचारज वचन सुनि करि कहिस्यौ सोहि॥ ४ ॥
प्रथम देव अरिहंत नमि प्रभु मुष वानी सार।
गनधरादि निरगंथ गुरु रतन त्रय पद धारि॥ ५ ॥
पंच परम गुरु भवि सरण प्रणमूं मन वच काइ।
नाशै विघन अनेक जे प्रभु मो होइ सहाइ॥ ६ ॥
आचारज सुभ चंद्र तिन गह्यौ ग्रंथ परमान।
सुनि करिहूं भाषा रच्यौ ढाल विविध विधि आन॥ ७ ॥
महाराज श्रेणिक कथन वहु विस्तार हवंत।
तुछ वुद्धि म्हारी कहूं संषेपे विरतंत॥ ८ ॥
पदमनाभ भाविक प्रभु सुनो भवतर सार।
अशुभ करम अघ भव भ्रमन नासै सिव दातार॥ ९ ॥

॥ ढाल चौपाई मैं ॥

जंबू दीप लक्ष जोजन मान। तामधि भरत षेत्र सुभ जान॥
अधिक छवीस पाच सै भला। जोजन जान और छह कला॥१०॥
तामहि षट षड पाच मलेछ। छठौ आरज व्रत उपदेस॥
मगध देस तामा है सार। वहु जन धन परिपूरण धार॥

अंत—

श्री सरस्वती गछ गण वलात करन्वय कूंद कूंद महान।
नद्याम्नाय भव्य चितमल सुपद्मनंद जिन भान॥सुनो॥८८॥
तिनके पट श्री सकलकीर्ति मुनि भव जीव समोधवि वाई।
सुकवि सरल वानी करी महोपल वुध जन मन रंज वाइ॥सुनो॥८९॥
तिनके पट श्री भुवन तम कीर्ति भवन पसरान।
भाता तत्व पुराण काव्य करता जिन विंव प्रतिस्टा वितान॥सुनो॥९०॥
तिह पदम श्री ग्यान भूषन विराजं परकाम सुभ ग्यान।
निज वचनं दिनकर सम उदये अघ तमन्यास भव्यान॥सुनो॥९१॥
तिनपट विजय कीर्ति जयवंत गुरु अन्यमती परवत समान।
स्यादवाद वज्रै करि फोडत तिन सिष्य सुभ चंद्र जान॥सुनो॥९२॥
जिन पुनि पुरुष पुरान पवित्र सुभ कहियो सुभग वषान।
नाकयिमद थंनकीत्ति अहंकार जिनमत प्रमोद लहान॥सुनो॥९३॥

निज अवहरण कारण ग्रंथ संस्कृत ता मुनि संषेप नाम ।
भाषा करी ढाल चौवन मैं लषमीदास बुधि ठान ॥सुनो॥६४॥

:o: :o: :o:

गढ रिणथंभ सिरोमनि तलै सेरपुर वास ।
षडेलवार सुवस मैं चांदूवाड गोत तास ॥६८॥

चाहा सुत चा साहू चंद्रभान । ता सुत मानकुल परधान ॥
पूजा दान राज कर मानो । ता सुत जीवराज धन बानी ॥६६॥
ताके भोजराज सुविचक्षन । बुधि विद्या चातुर्य सुलक्षन ॥
जिन मारग रुचि सहु सुषदाई । ताकैं सुत दोय जिन पद ध्याई ॥१७००॥
जिनवर सरनै लषमीदास । चितामणि लघु नाम प्रकास ॥
उदय करम दुरजन संग जानि । ललषमीदास तजियो पुरथान ॥

॥ सोरठा ॥

देस ढुंढाहर माहि राजथान ग्रावावती ।
भूप प्रताप दिवाहि राम सिघ राजैं तहां ॥ २ ॥
ता समीप सगावती धन जन जुत परपूर ।
देवस्थल महिमाघनी भला ग्रहस्थ सनूर ॥ ३ ॥
पडित दसरथ सुत सुभग सदानद तस नाम ।
ता उपदेस भाषारची भविजन को विसराम ॥ ४ ॥
सवत सतरा सैं उपरि तेतीस ज्येष्ट सुदि पाष ।
पचमी त दिन पूरन लहि मगलकारी भाव ॥ ५ ॥
फेरि लिषी गुन पाच मै लषमी दास निज वोधि ।
भूलो चूको मदा कोऊ बुध जन लीजौ सोधि ॥ ६ ॥

इति श्री श्रेनिक महाराज चरित्र भाषा लषमीदास कृत संपूर्णम ॥ शुभं भूयात् ॥

विषय—जैन धर्म कथा साहित्य के अनगत श्रेणिक महाराज चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

सवत सतरा से उपरि तेतीस ज्येष्ट सुदि पाष ।
पचमी ता दिन पूरन लहि मगलकारी भाष ॥ ५ ॥

संख्या ३५३ लछिमन, रचयिता—लछिमन, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—७½ × ८⅞ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—१६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—

हरि कौ वसि कै परतीति वढै पढि मत्र वसी कर ग्रानि किए ।
व्रजनायक के मुह लागत ही मन मोहन जतन छोडि दिए ।
तन नैसक सी बहुरग भरी गनजानत मै उरिजात हिँए ।
वजि तानन कानन को मग ह्वै वँसुरी सबके मन छीनि लिए ॥२७॥
रजतै सब भूषन सेत घटा गिरि बुँद पिदूषन के वरसै ।
उर मोतिन हार विराजि रह्यो मुष चँदु चहूं दिसि कौं दरसै ।
सुचि अगन मै सब धर्म धरै जयमाल रही करमै सरसै ।
'लछिमनु' देषै तिहि मानुष के रसना इमि भारती कठ बसै ॥३०॥
सेसाचल मैं सुष धाम बन्यो सकतौं तहँ तेइ सुकर्म जुरी ।
वही दारिद दुष्ष घोरि सबं अभया बर देति हैं माहेसरी ।
हरै पल एक ही मे अघ वृंद सुधर्म करावति प्राणेसुरी ।
छिनु एकु रमं वाला घर मैं धन धान्य करै अन्नपूर्ण सुरी ॥३१॥

वेषि सुर संबन सरन सुष वासु लीन्हो व्याकुल भई है मनो परी है कहल में ।
बार बार जकि जकि चकृत विर्पुरि उठै शेसाचल वास विन होति हौं सहल में ।
सेवा करि सूरज की मागिरथ आई चढि चटक सौ उतारि कै अभिरी टहल में ।
टिको ना सकोहै कहूं आतुर ह्वै धाइ आइ लोकन की सोभा लगी बाला के महल में ॥३२॥
गगन परम सो इमारति रजत रग तापर छहरि उठै चमक चुनीन की ।
विमल कनक षभ रतन जटित बनै विच बीच सोहति है झलक कनीन की ।
सुरपति छत्र ते सरस सोभा राजै छाति उपमा न पावै सुधि सारद प्रवीन की ।
पलक न पारै पुरवाला सुष मदिर मै सुषमा की लहरै उज्यारी है मनीन की ॥३३॥
—पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—श्री शारदा और अन्नपूर्णा की स्तुति मे कवित्त रचे गए है।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक का केवल एक ही पत्र उपलब्ध हुआ है। इसमे छद सख्या २६ से ३३ तक है। इससे विदित होता है कि जिस पुस्तक का यह पत्र है, उसमे और बहुत से छद रहे होगे।

प्रस्तुत सब कवित सवैये एक ही शैली के है और विषय भी इनका देवियो की स्तुति विषयक ही है अत यह सभव है कि इनका रचयिता 'लछिमन' ही है।

सख्या ३५४क दुकूल चितावनी, रचयिता—लाल कवि, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६$\frac{8}{10}$ × ७$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८६८ वि०, लिपिकाल—स० १६०७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री साहित्य सदन, सार्वजनिक पुस्तकालय, गूढा, डाक०—खजुरौ (वछरावाँ), जिला—रायबरेली।

आदि—

राधामगरी	कसव	षामा	जामेवार	नैनसुष	तिरछा	पीतावर	तनसुष
अतलस	वरमायो	नैनू	आडा	चिकन	तोसक	भागलपुरी	डोरिया
लाही	षातिरी	भागलपुरी	डोरिया	चारषान	जारीलोट	नैनू	आडा
सिमिटी	चुनरी	पीतांवर	तनसुष	गाटा	अधर	षासा	जामेवार
धोती	अधर	कसव	जामेवार	वावरलोट	तिरछा	चुनरी	तनसुष
सारी	जारीलो॰	वरियाई	आडा	तनजेव	तोसक	षातिरी	डोरिया
तनजेब	तोसक	षाति री	डोरिया	मीठा	नैनसुष	सिमिटी	पीतांवर
बाबरलोट	तिरछा	चुनरी	तनसुष	मलमल	चिकन	लाही	भागलपुरी
पगरी	चारखाना	अतलस	नैनू				
मीठा	नैनसुख	सिमिटी	पीतांवर				
सारी	जारीलोट	वरियाई	आडा				
बाबरलोट	तिरछा	चुनरी	तनसुष				

ॐ श्रीगणेशाय नम. अथ दुकूल चितावनी लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

तोहि मनावन हौं अली आइ तेरे ग्रेह ।
मान छोयि भूषन सजो 'पगरी' स्याम सनेह ॥१
कहे न मानत माननी कहि हारी हित बात ।
फेरि पीछे पछताइहै 'मलमल' दोऊ हाथ ॥२
मान छोडिकै हित करौ पिय सो जोरौ नैन ।
मनको मैल न राषिये 'मीठे' बोलो बैन ॥३
चलि प्यारी जमुना निकट करि नहान मो संग ।
नौसत साजि सिगा(र) सब पहिरे धोवत संग ॥

अंत—मान छोडि प्यारी मिली हरष्यो नद कुमार ।
अरस परस दोउ मिले, तन सुष वढ्यो अपार ॥३१॥
स्यामा स्याम मिलाइ कै वाम चली सुष पाय ।
मिलन देषि हरषित भयो कह्यो लाल कवि गाय ।
हरिहर मोपर करि कृपा दीन्हो यही असीस ।
मानवती के बदन पर दोहा सव तेतीस ॥३३॥

८ ६ ८ १
वसु निधि वसु चव पुनि भादौ कृष्ण वषान ।
चौदस मान विलोकि सुभ कीन्ह्यो ग्रंथ सुजान ॥ १ ॥

संवत १६०७५। मीती पूष वदी चारसी

॥ दोहा ॥

सुर तिय नर तिय नाग तिय सभ सभ ही कर जोई ।
हुलसी हुलसी की(र)त है तुलसी सो सुत होई ॥

पोथी लिषी हरि प्रसाद सुकुल ॥

विषय—प्रत्येक दोहे में श्लेष से एक वस्तु का उल्लेख कर राधा का मान वर्णन किया है।

रचनाकाल

वसु निधि वसु चव पुनि भादौ कृष्ण वषान ।
चौदस मान विलोकि सुभ कीन्ह्यौ ग्रंथ सुजान ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना साहित्यिक और मनोरंजक है। इसके साथ निम्नलिखित रचनाएँ और हैं—

१ ककहरा—लाल कवि ।
२ वैराग्य संदीपनी—गो० तुलसीदास।
३ कृष्ण ग्वालिनी झगरो—सगम ।

संख्या ३५४ख. ककहरा (राधा वृजराज जस), रचयिता—लाल कवि, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६$\frac{1}{10}$ × ५$\frac{2}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप)—६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८६६ वि०, लिपिकाल—सं० १६०७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री साहित्य सदन सार्वजनिक पुस्तकालय, गूढा, डाक०—खजुरी (बछरावाँ), जिला—रायबरेली।

आदि—श्री गणेशाय नमः

. .ॐ कार करि कहत हौ गणपति चरन मनाय।
सी. . षा वृजराज जस कहौ जथा प्रति गाय॥
जब से हरि मथुरा बसे व्रजवासिनि विसारि ।
तब से वृज गोपी सबै विरह विथा अकुलाय॥ २ ॥
एक दिना ऊधो चले मि(ल)न हेत जदुराई ।
उधौ आवत देषि हरि मिले सषा उर लाई॥ ३ ॥
मिलि बैठे हसि हसि कहत मोहन वृज की बात ।
ऊधौ सुनत वियोग रस कहत स्याम सो जात॥ ४ ॥
तब हरि ऐसे कहि उठे करौ सषा मम काज ।
आ . .क. . .समुझाइयो विदा कियो रथ साज॥ ५ ॥
ऊधौ चलं प्रनाम करि आये वृज समुहाय ।
नद जसोमति देषि रथ परे चरन अतुराय॥ ६ ॥
ऊधौ आवत सुनि सबै वृज गोपी अकुलाय ।
धाय चरन आतुर परी कहत व्यथा निज गाय॥ ७ ॥
'क' का कवन काज आये इहा किन पठयो है तोहि ।
कवन नाम करके सषा कहा चले कहि मोहि॥ ८ ॥
'ष' षा षिन षिन षेद विलोकिये षानपान कछु नाहि ।
षवर न पाई स्याम की कवन भांति से आहि॥ ६ ॥

अंत—बरन तीसरे मे भयो 'मनसाराम' सुजान ।
सुवन तीनि तिनके भये तिनको करत बषान ॥४७॥
जेठे बेचूलाल पुनि दूजे 'हीरा लाल' ।
तीजे सुत 'बृजलाल' जे तिनके कहत हवाल ॥४८॥
बृजलाल के सुत भयो कहत सबै 'कविलाल' ।
मैं सुमिरयो घनस्याम के दूरि भयो दुख जाल ॥४९॥
मि. गुनाम गुरु की कृपा पूरी मन अभिलाष ।
उ. क. आयसु पाय क कहो जथा मति भाष ॥५०॥
प्रति छन्द दोहा कहे सब को करि परिमान ।
पच दहाई ऐक अरु कहे सब सुभ जान ।

॥ चौपाई ॥

        ६ ६ ८ १
संवत अंक रस वसु चंदा । माघ सुदि तिथि बात अमदा ॥
वार सनीचर अति सुषदाई । कहो लाल कवि सब सुषपाई ॥

संवत् १९०७ मिति भादो सुदी सत्यमी दिन शुक्रवार । पूथी लिषी हरि परसाद सुकुल १॥।

विषय—नायिका के प्रसंग के अंतर्गत दोहा छन्दों में श्री कृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपियों का विरह वर्णन किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सं० १८६८ वि० और लिपिकाल सं० १९०७ वि० है।

संख्या ३५५ विक्रम विलास, रचयिता—लाल कवि (नवजी लाल), कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—१२ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, अप्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२५, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० गंगाप्रसाद जी पांडेय, ग्राम—बरडीह, डाक०—रानीगंज, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री भवानी शंकराभ्यां नमः ॥
जिहि न भन्यो हरिवंश जि विक्रमसाहि विलास ।
तजह नवे रसराज वर तनय जनम सुख रास ॥
कथा माधवानल करी नाटक उखा हार ।
त्रिपिति न मानी लाल तव 'नवरस' कियो विचार ।
निरसु गहे नहि भावरस रसिक भय रस भाज ।
गाडी चले न सलिल मे सुखे चले न नाज ॥ ३ ॥
पहिले कहो विभाव द्वै बहुरि भाव अनुभाव ।
नौ रस निरवाहि के पीछे गौरह हाव ॥ ४
आलंबन विन होइ नहि नवरस को अवतार ।
तातें पहिले 'लाल कवि कियो विभाव विचार ॥ ५

अथ विभावलक्षण ॥

उपजे जामे सबै रस के जाने अधिकाइ ।
सो विभाव पहिचानियो लछन वरण दयो लषाइ ॥ ६
आलंबन उद्दीपन कहे विभाव परकार ।
आलंबन तिय पुरुष है सो रसो को आधार । ७
जो मह जो रस पाइयो ताहि बढावे ताहि ।
उद्दीपन सो विभाव यह रसिक र सराहत जाहि । ८
ता रस मे सो जानियो जा रस को जा भाव ।
ए सब आगे भाषियो अनुभावादि विभाव ॥ ९

उतपति सबही भाव की आलबन परमान् ।
तातें नायक नायका लक्षण पहिले जान् ॥१०
इति श्री लाल बिरचिते विक्रम विलास से अनुक्रमणिकायां परिछेद १ ॥

अंत— अथ सावि ॥

साम्म सो कहिए प्रिय बचन भूषन छत्र दे दान् ।
बसिकरण सविद्वार जो भेद नाम सो जान् ।४४
घर पतन तिजानि विसवन अवज्ञा होइ ।
कोप हरण रसादि ते कह्यौ रसंतर सोइ ॥४५
नायक पाचु उपाय ते हरे मानिनि होइ ।
शृगार की तान वेइन दानु ॥४६
मानि को न मनावइ अधमु जानिवो ताहि ।
नीर सुवनु बिने प्रभु को जीवन मृतक सु आहि ।४७
बिनु सनेह नहि होइ मय बिईरघान काम ।
प्रेमु वढावे बुहुन को मानु होइ अभिराम ॥४८
:o: :o: :o.

इति मान ॥ अथ प्रवास ॥

बल्लभु चले बिदेस को जह प्रवास सो होइ ।
हेत विरह को बुहुन को कष्टय वहे सोइ ।२५२

अथ विशेष ॥

चलन कहेते चलन मे चले पोय के होइ ।
उदाहरन न जानिवो वहुत भा .

—अपूर्ण

विषय—नवरस विषय वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता ने कथा माधवानल और उखाहार नाटक के पश्चात् विक्रम विलास नामक ग्रथ रचा—

कथा माधवानल करी नाटक उखाहार ।
त्रिपिति न मानो लाल तव नवरस कियो विचार ॥

संख्या ३५६. मान मजरी, रचयिता—लाल (?), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६ × ५॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—७०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० आद्याप्रसाद जी, ग्राम—परमा का पुरा, डाक०–रानीगज, जिला–प्रतापगढ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ मान मजरी लिषित ॥

दोहा

कृष्ण रूप चैतन्य घन तन सत मुकुर प्रकास ।
सदा सनातन एक रस विहरत विपुल विलास । १
एक समें रस रास में रसक रसीली संग ।
दामिनि ज्यो दमकें दुरें पिया पीय के अंग । २
निरखत प्रतिबिंब तनमन सभ्रम भयो ग्लानि ।
रुठन उठी कछु मानकी ओर त्रीया संग जानि । ३
चपल चली तिहि ठोर ते कीनो कठिन सुभाय ।
बेठी जाय रिसाय कें गरव सिंघासन छाय । ४

ललित वचन कवित्त ॥

ठाढे रहे अक से जक से न कहें कछु कान्ह घरें दुखिते से ।
तोल्यो कहू निरख्यो ललिता तब पूछत आज कहा कुच तेसे ।

नेकलों धीर धरो मन मे तव सैन में वेन कह् रुचि तैसे ।
ल्यायह्रो जाय लिवाय मनाय हसाय जिलाय करो सुचते से । ५

श्री ठाकुर वचन

मैं तो कछू न कह्यो विन सो ऊन काहे ते मानु महा मन ठान्यो ।
कै कछु निर्तत रास मे काहु को मोकर सो परस्यो कर जान्यो ।
रचक दोस कोलेस नहि हूँ अपने हिय हेर हिरानो ।
मो मन चूक परी कछु के सिय तेरी सो तोते कहा कछु छानो । ६

अंत— कवित्त

आये मौन मुष लाल लोचन सजल कीये
.. ..कर लीने है ।
आगे लै लै धरत करत मनिहार अति
पायन परत करि कैसे डारि दीन्हो है ।
मोहन मनावत उठावत चिवुक गहि
जतन वनावत न सोहे चष कीन्हे है ।
छूवत सकात पै न रह्यौ जात जिय अति
अकुलात जैसे मीन जल हीने है ।२७
अहो हठीलो हठु छाडि दीजे रस कीजे लाल
मिठ बोलि सुअवोलो कीजियत है ।
. . . ..को सुष देखे सुष सपति सरस आवे
अ . .मोहन सो मान कीजियत है ।

—अपूर्ण

विषय—शृगार रस की कविता ।

संख्या ३५७. मभाविलास, रचयिता—लाल कवि, काग़ज—देशी, पत्र—२६, आकार—१२॥ X ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—८३८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८७० वि०, लिपिकाल—सन् १२६३, प्राप्तिस्थान—श्री प० कृष्ण कुमार जी शुक्ल, ग्राम—रामदयाल का पुरवा, डाक०—सग्रामगढ़, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ शभाविलास लिष्यते सोरठ०

विघन हरन गनराय मूषक वाहन गज वदन ।
गनपित चरन मनाय तवँ काज कछु कीजिये । १

दोहा

आनन भावत स्वाद इमि परचौ गह्यौ सुमलिद ।
कृष्ण चरन अरविंद कर पियत सदा मकरद । २
ममता भ्रमता के मिटे उपजे समता ज्ञान ।
रमें जु रमता राम सो जमता गहै न मान । ३
साध शक्यो न तु साध सग लाय न सक्यो समाध ।
विषै विषाध उपधि तजु हरि पल आध अराध । ४
निगम रु गीता ने कह्यो पर्म पुनीता नाम ।
वीत्यो जन्म जुजात है भजि ले शीताराम । ५
मन को मिटे मलीनता होय लीनता साथ ।
नीको यहै प्रवीनता भजिये दीना नाथ । ६
जिन्ह पायो हरि रस मरम मिटे भरम भ्रम योय ।
गहौ धर्म अपकर्म तजु मान परमगति होय । ७

अंत—संग्रह करि कवि लाल ने रच्यौ काव्य रस रास ।
धरचो नाम या ग्रंथ को यातें 'सभा विलास' । १
जदपि काव्य भूषन सहित दुर्जन दोषन ताहि ।
बिगरे देत बनाय हैं सज्जन साधु सराहि । २
खं ऋषि वसु चंद्रहि गनौ संवत को परमान ।
असार सुकुल चतुरथी ज्यों कियो ग्रथ निरमान । ३

इति श्री शभाविलाश शमाप्त शुभमस्तु सन् १२६३ ।।

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश विषयक छदो का सग्रह ।

रचनाकाल

० ७ ८ १
खं ऋषि वसु चद्रहि गनौ संवत को परमान ।
असार सुकुल चतुरथी ज्यो कियो ग्रथ निरमान ।।

संख्या ३५८. रामब्याह कवित्त, रचयिता—लोकनाथ, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—९$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{6}{10}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—१९५, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१५ वि०, प्राप्तिस्थान—ठा० भवानीदयाल सिंह जी, ग्राम—ऐतवारा, पोस्ट—सथिन, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—

. . . भूप स्यंदन शुरन मनरंजन जो प्रवल प्रभंजन निरषि गति लाजते ।
जोरे चार घोरे अनि दिन नाके बोरे ताहि होत है कलोलं केतो किंकिनि के बाजते ।
छत्र शीर . . . मात चामर चा झूमत दुमत पात के अस मन मे विराजते ।
सहित भरत सत्रुसूदन मगन मन बढि उपमा न यक शासन समाजते ।
"कवि लोकनाथ" रघुनाथ किवत जात वजत निशान अस मन मे विराजते ।।१५।।
वनि वरात चतुरग चलत वहु वाजन बाजत ।
नभ सुर किन्नर नारि निरषि वर आरति शाजत ।
तेहि दिन कियो मोकाम उतरि शरजु सरि पावन ।
लहेउ शभन सुष विविध भावन से अधिक सुहावन ।
कवि लोकनाथ उदए विजवा किरिनि दिवाकर को परौ ।
हनि निशान नृपजन चढि जनक नगर को पगु धरौ ।।१६।।
शगुन शुभग मगु मिलत दिह दुंदुभि वहु वाजत ।
प्रतिपुर की सव नारि निरष सो आरति शाजत ।
नित नव वढत आनंद चलत भ्रम कोइ न मानत ।
जहं जहं करत मोकाम सुषद गृह से अति जानत ।
"कवि लोकनाथ" मिथिला निकट अवध धनि वल जव गयौ ।
सुनि सुचह नर नारि शव पुर प्रमोद वर भर भए ।।१७।।

अंत—

यहि भांति व्याह उछाह वरनन जथा वुधि अनुमानिकं ।
"लोकनाथ द्विज" सुचि चरित भाष्यो राम सिय हिय राषि कं ।
सुभ कथा परम सोहावनि स्रवन सुनि हरषाइ है ।
यहि लोक सुष वहु भाति करि पुनि भक्ति प्रभु पद पाइ है ।।९३।।
अधम अग्य अभाग्य जो नर राम जिन्हहिं न भावही ।
सो सुभग उत्सव सुनि तुरत हिम्र मो परम दुष पावहि ।
सुचि संत साधु सयन जो नर राम सीय प्रिय जाहि के ।
हर्षित सुनहि सो चरित सुंदर प्रानते प्रिय ताहि के ।।९४।।

॥ दोहा ॥

घनुक भग दसरथ गमन सिय रघुवर विवाह ।
"लोकनाथ प्रभु" पद सुमिरि बरन्यो सहित उछाह ॥६५॥

इति श्री लोकनाथ विरचिते राम व्याह कवित समप्त सुभ भुयत ॥ सवत् ॥ १६१५ सम १२६५ मिति चैत्र १क पुस्तक लिष रछपाल वंस मोकाम वंती गयादीन हेतवे जथा प्रति रहि तथा लिष मम दोषो न विद्यते ॥ सीर.. ......

विषय—राम जानकी विवाह वर्णन ।

संख्या ३५६क. जातकालकार भाषा, रचयिता—लोचन सिंह, कागज—देशी, पत्र—२२, आकार—१३॥ × ७॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—४८५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६१० वि०, लिपिकाल—म० १६३० वि०, प्राप्तिस्थान—प्रतापगढ राज्य पुस्तकालय, प्रतापगढ ।

आदि—अथ जातकालकार भाषा दोहा अरिल चौपाई मे लिख्यते ॥

वन्दो चरण सरोज युग श्री गुरु गणपतिनाथ ।
हरिहर विधि गिरिजा गिरा जोरि हाथ नय माथ । १
सीतल सुभग स्वभाव शुभ द्विजकुल श्री रघुलाल ।
जिनके सेवक अधिक प्रिय लोचन सिंह विसाल । २
तिनको शुभऽस्थान प्रभु नगर राजमल दीन ।
सुख समाज कोविद कवी गुण गण गणिक प्रवीन । ३
श्री गुरु अनुशासन करी कृपा दृष्टि सुख केतु ।
भाषा जातक कीजिये सकल जगत के हेतु । ४
और देव देवी सकल तिनको करौं प्रणाम ।
विमल बुद्धि वर दीजिये होय सुपूरण काम । ५
एक सहस नौ सैकडा सवत दस सुख धाम ।
पौष कृष्ण कुज द्वादसी रच्यो ग्रथ अभिराम ।

अथ द्वादस भाव लिख्यते तस्य नाम

१ तन २ धन ३ भातृ ४ माता ५ पुत्र ॥

अत— अथ ग्रह दृष्टि विचार

पूर्ण दृष्टि सनीचर जानि । तीजे दसये घर परमानि ।
नवम पाचवें गुरु की कही । पूरण दृष्टि कही मै यही ।
अष्टम चौथे मगल मानो । पूरण दृष्टि कहा सो जानो ।

अथ स्त्री पुरुष सज्ञा ग्रह

रवि अगारक देव गुरु कहे पुरुष ये तीन ।
शुक्र कलानिधि नारि जे बुध शनि क्लीव जु चीन ।

इति श्री भाषा जातकालकार सपूर्णम सवत् १६३० ॥

विषय—ज्योतिष विषय वर्णन ।

रचनाकाल

एक सहस नौ सैकडा सवत दस सुख धाम ।
पौष कृष्ण कुज द्वादसी रच्यौ ग्रंथ अभिराम ॥

संख्या ३५६ख. जातकालकार भाषा, रचयिता—लोचन सिंह, निवासस्थान—नगर राजमल, कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—१० × ६॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—१०४५ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६१० वि०, लिपिकाल—स० १६३१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० गोमतीप्रसाद जी, ग्राम—विशुनपुरा, डाक०—कप्तानगज, जिला—बस्ती ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ जातकालंकार भाषा

॥ दोहा ॥

वन्दो चरण सरोज युग श्री गुरु गणपति नाथ ।
हरिहर विधि गिरिजा गिरा जोरि हाथ नय माथ । १
सीतल शुभग स्वभाव शुभ द्विज कुल श्री रघुलाल ।
जिनके सेवक अधिक प्रिय 'लोचन सिंह' विशाल । २
तिनको शुभ अस्थान प्रभु नगर राजमल दीन ।
सुख समाज कोविद कवि गुण गण गणिक प्रवीन । ३
श्री गुरु अनुशासन करी कृपा दृष्टि सुख केतु ।
भाषा जातक कीजिए सरल जगत के हेतु । ४
और देव देवी सकल तिनको करौं प्रणाम ।
विमल बुद्धि वर दीजिए होय सो पूरण काम । ५
एक सहस नौ सैंकड़ा संवत दस सुख धाम ।
पौष कृष्ण कुज द्वादशी रच्यौ ग्रंथ अभिराम । ६

अथ द्वादश भाव लिख्यते ।

तन धन भ्रात माता पुत्र शत्रु कलित्र मृत कर्म ।
राज्य लाभ व्यय भाव से समझो पंडित मर्म । ७

अंत— अथ विंशोत्तरी लगायवे की विधि

छप्पय

कृतिका सूर्य षट् वर्ष रोहिणी शशि दश जानो ।
मृग मंगल कहि सात राहु शिव दशमो मानो ।
दिति गुरु सोलह वर्ष पुष्य शनि कहि उनईशा ।
सर्व बुद्ध की दशा वर्ष सत्रह सुख ईशा ।
मघाकेत वर्ष सात की पूर्वा भृगु विंशति कही ।
क्रम करि विचार 'लोचन' गिनो सुपरासर मत ते लही । १

इति श्री भाषा जातकालंकार समाप्त संवत् १९३१ ।

विषय—ज्योतिष विषय वर्णन ।

रचनाकाल

एक सहस नव सैंकडा संवत दस सुख धाम ।
पौष कृष्ण कुज द्वादशी रच्यौ ग्रंथ अभिराम ।

संख्या ३५९ग भाषा जातक, रचयिता—लोचन सिंह, निवासस्थान—नगर राज्य (बस्ती), कागज—देशी, पत्र—४३, आकार—७॥ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टप)—४५१ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१० वि०, लिपिकाल—सं० १९४१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० महादेवप्रसाद जी मिश्र, ग्राम—मिसरवलिया डाक०—रुद्रनगर, जिला—बस्ती ।

आदि—श्री गणेशाय नमः दोहा ॥

वन्दो चरण सरोज युग श्री गुरु गणपति धाथ ।
हरिहर विधि गिरिजा गिरा जोरि हाथ नय माथ । १
सीतल सुभग स्वभाव सुभ द्विज कुल श्री रघुलाल ।
जिनके सेवक अधिक प्रिय 'लोचन सिंह' विशाल । २
तिनको शुभ अस्थान प्रभु नगर राजमल दीन ।
सुख समाज कोविद कवि गुण गण गणिक प्रवीन । ३

श्री गुरु अनुशासन करी कृपा दृष्टि सुख केतु ।
भाषा जातष कीजिए सकल जगत के हेतु । ४
और देव देवी सकल तिनको करौं प्रणाम ।
बिमल बुद्धि वर दीजिये होय सुपूरण काम । ५
एक सहस नव संकडा स्मवत रस सुख धाम ।
पौष कृष्ण कुज द्वादशी रच्यौ ग्रंथ अभिराम । ६

अथ द्वादश भाव लिष्यते

राज्य लाभ व्यय भाव यो सभ जो पडित मर्म ।
लग्न मूत्ति तन अग वपु उदय कल्प युति कर्म ।

अंत— छप्पय

कृतिका सूर्य षट वर्ष रोहिणी शशि दश जानो ।
भृग मगल कहि सात राहु शिव दश अठमानो ।
विति गुरु शलह वर्ष शनि वहि उनईश ।
शर्य वुद्धि की दशा वर्ष मत्रह शुष ईश ।
मघा केतु वर्ष सात की पूर्वा भृगु विशति कही ।
क्रम करि विचार 'लोचन' गिनो सु पारासर मत लही ।

विषय—जातकालंकार भाषा ज्योतिष विषय वर्णन ।

रचनाकाल

एक सहस नव संकडा स्मवत दस सुखधाम ।
पौष कृष्ण कुज द्वादशी रच्यौ ग्रंथ अभिराम ।।

संख्या ३६० दस्तूर मालिका, रचयिता—बसीधर, कागज—देशी, पत्र—४४ आकार—१०३/८ × ८६/८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—११००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य लिपि—नागरी कैथी मिश्रित, रचनाकाल—सं० १७६५ वि०, लिपिकाल—सं० १९०२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री रामशरन लाल जी श्रीवास्तव, ग्राम—पूरे रामदीन शुक्ल (मर्जरिया इदरिया), डाक०—बाजार शुक्ल, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—श्री गनेसए न्महाँ श्री सरसुए न्महाँ श्री परम गुरभे न्महाँ अथ लिषते दस्तुर मालिका ।।

।। दोहा ।।

जो धारती गनपती वती धन जगती के लोए ।
गुनी ववती इक वत के सुर मुनि जन सब कोए ।। १ ।।
हिए चख अघ दुज पग परसि प्रग्या पाइ प्रसाद ।
बसीधर बनरनि किलं सुनत होति अह्लाव ।। २ ।।
जदपि दुनी देषं घनो लेषं के करितार ।
भटकति विन दस्तुर जे अटकति वारमवार ।। ३ ।।
सुधा पथ जो जनि रिगे पहुचं मजलोउ तालो ।
राह विना विमराए है सकट वंकट जालो ।। ४ ।।
पातीसाह आलम अमल सालिम प्रवलि प्रताप ।
छवसाल भुवपाल को राजत राजत विसाल ।। ५ ।।
सकल हिंदु जिहि जाल मैं मनो इन्दु दुति जाल ।
तिनके भइल सौभिजं 'सकती सिंघु' वलिवान ।। ६ ।।
उग्रसंन नर नाहि के नद द्रोह वलवान ।
सहर सकतपुर राज ही सुष समाज सुष ठौर ।
परम धरम सुभ कम्म जह सव जागन सिर मोर ।। ८ ।।

संवद संवा सैकरा पैसठ अधिक पुनीत ।
कव वरनत एह ग्रथ कौ दिए चरन कवि मीत ।। ६ ।।

अथ कपरा षरीदवे को दस्तुर

।। दोहा ।।

जेते रुपए मोल को गज प्रत जो पट लेए ।
गीरह एक आना तितं लंष लिषारी देए ।।१०।।
आना ऊपर हौए जे प्रत गज रुपए अक ।
तीन दाम अठ अस वदि प्रति गज लिषा नसक ।।११।।

अंत—दड एक गज दोए को कोस सहस विवि डड ।
कोस चार को जानिए जोजन एक अषड ।।१६४।।

सपुरनं मिति कुवार वद ।।३।। सन् ।।१६०२।। मु० जवनपुर लिषते रमजान खां पठान जो वाचै सुनै ताकौ वंदगी पहुचै भज राम राम

विषय—भूमि लेनदेन और व्यापार आदि मे प्रयुक्त होने वाले गणित का वर्णन ।

रचनाकाल

समद सवा सैकरा पैसट अधिक पुनीत ।
कव वरनत एह ग्रथ कौ दिए चरन कवि मीत ।। ६ ।।

संख्या ३६१क. तिब्ब अहसानी, रचयिता—अहमान अली (अनुवादक—प० वंशीधर), निवासस्थान—मथुरा, कागज—देशी, पत्र—३३, आकार—६।। × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, मम्बै अल उलूम शिलायत से प्रकाशित, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, मुद्रणकाल—सन् १८६३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री प० भोलानाथ जी त्रिपाठी, ग्राम—मलकिया, डाक०—भीगुर, जिला—प्रतापगढ ।

आदि—श्री गोपाल जी सदा सहाय । तिब्ब अहसानी का उल्था नागरी मे लिख्यते ।

पहिला गुण—आदि मे तिब्ब विद्या गुप्त थी सबसे पहिले बकरात नामी हकीम यूनानी को मिली हकीम जाली नूस से प्रकट की गई क्रिया राजी से सचित हुई और इसको बू अली सीना ने यथोचित प्रकार से नियत किया ।

(२ गुण)—तिब्ब विद्या से आरोग्यता और रोग की दशा पहिचानी जाती है और रोग दूर हो सकता तथा आरोग्यता की रक्षा हो सकती है ।

(३ गुण)—उस मनुष्य की आरोग्यता स्थिर रह सकती है कि जिसमे पाँच गुण उपस्थित हो, एक तिब्ब का नियम आप जानता हो वा हकीम की सेवा मे तत्पर रहे । २—धनी हो कि खानपान श्रेष्ठ और उत्तम वर्ताव मे रख सके । ३—स्वतंत्र हो कि हर एक वस्तु को उचित समय पर काम मे ला सकै । ४—कृपण अथवा कजूस न हो । ५—उस पर ख्वाहिश नफसानी यानी मनोभिलाषा प्रवल न हो सकै ।

(४ गुण)—आरोग्यता से परहेज करना ऐसा है जैसा कि रोग मे परहेज न करना कि शरीर और प्रकृति को निर्वल करता है ।

(५ गुण)—दूध को खट्टी वस्तु अथवा मछली के संग और दूध चावल को अंडे के साथ और सिरके को भात के साथ और दही को मूली के साथ खाना और ऐसे ही जल्दी पच जाने वाली वस्तुओ को देर में पचने वाली वस्तुओ के संग खाना बडे बडे रोगो को उत्पन्न करता है ।

अंत—मोवि-कलातलहम खवीसह—यानी वे दवाई जो घाव से वुरे मांस को काटें और दूर करें ।

अनजरूत, नोन, मुर्दा संग, तांबे का मैल, सफेदा सिंदूर, सींप की भस्म, जंगाल, नीला थोथा, चूक ।

मुजलिलयात कुरहे—यानी वे दवाई जो घाव को कीड़े पीप आदि से शुद्ध करें ।

कंकोल जफत शोरा नोन मिश्री वनफशे की जड, शहत गधक हरताल, हब्बल साकांजी ।

कातिलात दूद —यानी वे दवाई जो घाव के कीड़े को मारें ।

बाय विडव, इफ संतीन, अबरवेद, सूखा जूफा, हालम पोदीना, कवेला, कलौंजी, झाडू के पत्ते, झालर, जीरा रूमी, दुरमनह ।

:o: :o: .o:

मान आतनफजूहम—यानी वे औषधी जो घाव रुधिर के प्रवाह को बंद करें ॥

मुर्मा, जरिश्त, गुफ़बलूत, मूंगा, दम्मुल, अखवेन, गेरू, रसोत, कहरुवा, कपूर, कुदरु गोद, वारतग, पेठे के बीज, अजवार की जड, बड की दाढ़ी, जीरा, मस्तगी, गेहूँ का सत्त, माजू, कत्था, रेवंदशावता, खुरासानी अजवायन, सूखा धनिया, माई, कहुरियन, सर्व का फल ॥

इति श्री

तिव्व अहसानी पहिला भाग जिसको प० वशीधर ने उर्दू की पुस्तक तिव्व अहसानी अहसान अली कृत से उल्था करा । सन १८९३ ई० मे छपी ।

विषय—वैद्यक ग्रथ जिसमें स्वास्थ्य के नियम, रोग की उत्पत्ति का कारण तथा उसके निराकरण के उपाय एव औषधियो का वर्णन है ।

संख्या ३६१ख भोज प्रबधसार (पहला भाग), रचयिता—प० वशीधर, कागज—आधुनिक, पत्र—३२, आकार—८$\frac{6}{10}$ × ५$\frac{1}{10}$ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, प्रकाशित, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—भोज प्रबध सार भूमिका

इस भरतखड मे बहुतेरे राजा बडे २ प्रतापी और बलवान हो गये प्रजा का पालन भी खूब करते रहे पर उनमे से किसी ने भी प्रजा के पढाने लिखाने की ओर कुछ दृष्टि न की हा थोडा बहुत राजा भोज ऐसा हुआ कि जिसने प्रजा का पाल और विद्या वृद्धि भी अच्छा की पर वह भी सब जगह अपने राज मे एक सी विद्या न फला सका किंतु केवल राजधानी उज्जन नगर के भीतर पढाने लिखाने का प्रचार बहुत करता रहा और सो भी इस प्रबध के साथ कि मेरे नगर मे केवल पंडित ही बसे, मूर्ख हो सो निकल जाय ऐसा करने से उस नगर में बढई लुहार तमोली आदि सबके सब पढ़े लिखे हो गये इसके सिवाय उसने यह भी किया कि गुणी मनुष्यो का जो उसके पास आते आदर सन्मान करके लखो रुपये देता

:o· o o:

अब इसलिये कि राजा और वादशाहो के अच्छे २ इतिहासो का हिंदी या उर्दू मे उल्था करवाकर प्रचार करने मे जो साहिब डैरेक्टर आफ पब्लिक इन्स्ट्रेक्शन बहादुर उद्यत हैं उनकी आज्ञानुसार पण्डित वशीधर भोज प्रबधसार का और बीच २ मे सामयिक श्लोक लिखकर उनका भी उल्था हिंदी मे करके नीचे लिखता है इति ॥

अंत—इस दंड के सुनते ही सबके कान हो गये और थोडे ही दिनो मे बारहखड़ी पूरी की इस प्रकार राजा भोज और रानी लीलावती ने क्रम २ उज्जेन नगर मे विद्या का प्रचार किया और नाम पाया ॥

आगे साहिब डैरेक्टर आफ पबलिक इनस्ट्रकशन की आज्ञा होगी तो दूसरा भाग भी बनेगा ॥

विषय—महाराज भोज के न्याय और यश का वर्णन ।

संख्या ३६२क भक्तामर चरित्र, रचयिता—विनोदीलाल, कागज—देशी, पत्र—२०८, आकार—१०$\frac{9}{10}$ × ७$\frac{2}{10}$ इच, परिमाण (अनुष्टुप)—४७३२, अपूर्ण (केवल प्रारभ के पत्र नही), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७४७ वि०, लिपिकाल—स० १९०९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मंदिर (बडा मंदिर), नर्डीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—

. . . .

. . . . नहुव देषौ ससार ॥

चंद्रा प्रभु निकलंकित देव । वदौ तिविधि करौ पद सेव ॥ ९ ॥

पुष्पदंत जिनवर गुण धाम । वंदौ चरन जपत तुम नाम ॥
सीतल नाथ जाहर अघ हरं । वदौ भव समुद्र लं तरं ॥१०॥
श्री श्रेयांस् नाथ ग्यारमो । वदौ चरन रैन दिन गहौं ॥११॥

अंत—

परम कथा भक्तामर तनी । काव्य काव्य की रचना घनी ॥
मंत्र सहित सब कहे विसेष । विस्व भूनि टोका देषि ॥
औरंगसाहि वली के राज । पायो कविजन परम समाज ॥
चक्रवर्त सम जग मे भयौ । फेरत आवे उदधि लौ गयौ ॥४६॥
बाढौ साहि चकत्ता वस । तिमिरलिंग सर प्रगटयौ हंस ॥
तिनकी भई सकल अवलादि । और साहि सब कीने वादि ॥४७॥
तिनके तषत वषत परचंड । वव्वर साहि भये परचंड ॥
:o: :o: :o:
ता सुत साहि हमाऊ भयो । जिनको राज दुष सबको गयौ ॥
:o: :o: :o:
तिनके साहि अकव्बर भये । नाम लेत दुष दालिद्र गये ॥
:o. :o: :o:
"जगत गुरु" जग मे सब कहै । राना राउ सक मे रहै ॥
.o: :o' .o'
तिनके जहागीर जग जये । साहि सलेम नूरदी भये ॥
हिंदू पति प्रगटयौ जग माही । ताकी उतमा दीजे काहि ॥५२॥
तिनके साहिजहा सुलतान । भयो तेज जिमि ऊगत भान ॥
हठ कौ धनी हठीलौ साहि । भयौ कि राना सान जगमाहि ॥
तिनके तषत वषत के जोर । वैठो औरंग साहि मरोर ॥
:o' .o. 'o.
आलमगीर कहावै सोय । जाहि सरम आलम की होय ॥
अपने जोर छत्र सिर धरयौ । इक छत राज विधाता करौ ॥५५॥
राना राऊ न कोऊ रहै । भव कमान के गोसे गहै ॥
वलक बुषारौ लियौ छिनाय । दछिन दोहाई फेरि जाय ॥१६॥
:o: :o: :o:

॥ दोहरा ॥

पातिसाहि सक वध हुव प्रगटयौ आलमगीर ।
करामात जाहिर जगत भयो औलिया पीर ॥१८॥
:o: :o: :o:

चौपाई

ताके राज परम सुष पाय । करी कथा हम जिन गुन गाय ॥
साहिजादपुर सहर मझार । रहौ सदा जिनके आधार ॥२०॥
काष्ट सघ आदि जिन तनौ । माथुर गछ उजागर धनौ ॥
पुषुर गन गुन गन में सार । जैन धरम कौ परम सिंगार ॥
कुमाम सेन मुनि की अम्नाय । प्रगटयौ श्रावक धर्म सहाय ॥
वंस वस मे उदि्वत महा । जैन धर्म करुनालय लहा ॥
तापर त्याग महा गभीर । अगरवाल गुन आगर धीर ॥
गर्ग गोत उतिम गुन सार । अष्टावस गोतनि सिरदार ॥
अनषचूर है मेरी अल्ल । अनष मोहि लागं ज्यौ सल्ल ॥
:o: :o: :o:

मंडन को परपोता भलौ । पारस पोता को जस चल्यौ ॥
वरिगह मल्ल को सुत गुणधाम । लाल विनोदी मेरो नाम ॥
:०: :०: :०:
संवत सत्रह से संताल । सावन सुदि दुतिया रविवार ॥
सुभ दिन कथा संपूरन करी । प्रथम जिनेंद्र तनी गुन भनी ॥६८॥

॥ सोरठा ॥

कही विनोदी लाल सारद गुर परताप ते ।
पूरन भई रसाल अद्‌भुत कथा सुहावनी ॥७३॥

इति श्री प्रथम जिनेंद्र स्तवन श्री भक्तामर चरित्रे भाषा लाल विनोदी कृत चौपई बंध अठतीसमी कथा सपूर्ण ॥ सवत १९०६ पोथी लिषी जग्गी मल श्रावग अपने पठनार्थं हेत लिषी ॥

विषय—आदिनाथ तीर्थंकर के विषय मे स्तोत्रो का सग्रह तथा तत्र मत्र ।

रचनाकाल

सवत सत्रह से संताल । सावन सुदी दुतिया रविवार ॥

संख्या ३६२ख भक्तामर चरित्र, रचयिता—विनोदीलाल, कागज—देशी, पत्र—२०७, आकार—११$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—५२७८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७४७ वि०. लिपिकाल—स० १८६३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर (बडा मदिर), चूडीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—ॐ ॥ श्री वीतराग जी सहाय ॥ अथ भक्तामर चरित्र भाषा लिष्यते ॥

॥ दोहरा ॥

ॐकार अर्द्ध सविंदु है वदौ मन वचकाय ।
नमो नमो पुन फिर नमो बहु विधि सीस नवाय ॥ १ ॥
जामै गर्भित पचपद महामत्र नवकार ।
ताको प्रनमो प्रथमही मुक्ति भुक्ति दातार ॥ २ ॥

अत—

सवत सत्रह सं सताल । सावन सुदि दुतिया रविवार ॥
सुभ दिन कथा सपूरन करी । प्रथम जिनेंद्रतनो गुन भरी ॥६८॥
:०. :० :०:
सकल कथा पूरन भई वानी विमल विसाल ।
विश्व भूषन प्रति देषिकै रची विनोदी लाल ॥७१॥
पढत सुनत आनद वढै ज्यौं दुतिया कौ चद ।
पुन्य वढै पातिक घटै उपजै परम आनद ॥

॥ सोरठा ॥

कहो विनोदी लाल सारद गुर परताप तं ।
पूरन भई रसाल अद्‌भुत कथा सुहावनी ॥७२॥

इति श्री प्रथम जिनेंद्र स्तवन श्री भक्तामर चरित्रे भाषा लाल विनोदी कृत चौपई वध अठतीसमी कथा समाप्त ॥ मिती वैसाष सुदी ॥ ५ ॥ संवता ॥१८६३॥ पोथी लिषी वनीराम अगवाल ने लषन के मध्य लषनऊ मो राज जापना नसुद्दोहइदर ॥ कथा की संख्या इसलोक ॥ ३७६० ॥ सुभ ॥

विषय—जैन धर्म सबधी कथाओ का वर्णन ।

रचनाकाल

संवत सत्रह सं संताल । सावन सुदि दुतिया रविवार ॥

संख्या ३६२ग. श्रीपाल विनोद या श्रीपाल चरित्र, रचयिता—विनोदीलाल, कागज—देशी, पत्र—५५, आकार—१३$\frac{२}{८}$ × ६$\frac{६}{८}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—१७८७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७५० वि०, लिपिकाल—सं० १८८७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर (बड़ा मंदिर), चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ।

आदि—ऊँ नमः सिद्धेभ्यः ॥ श्री नाभिनंदन चरनांबुजाय नमः ॥ श्री वग्वादिनीभ्यौ नमः श्री गुरुभ्यौ नमः अथा श्री श्रीपाल चारित्र भाषा विनोदीलाल कृत कथा लिख्यते ॥ सुभं ॥

श्री नाभिनंदन जिनंद पदंबुजानां वावम्यहं त्रिविधि मुर्द्धनि धृष्ठ पाठे ।
श्री सिद्ध चक्रव्रत पावन मुक्ति श्रेणी श्रीपाल भूपति विनोद कथां सुवक्षे ॥ १ ॥

:o: :: :o:

॥ दोहरा ॥

वंदौ श्री अरिहंत पद वसु गुण सिद्ध मनाइ ।
अचारज उवझाइ फुनि साधु चरन चितु लाइ ॥ ४ ॥

अंत—

संवत सत्रह सं पचास । दूंज उज्यारी अगहन मास ।
रवि वासर पाई सुभ घरी । ता दिन कथा सपूरन करी ॥२४॥

:o: :o: :o:

नवरंग साहि वली के राज । आलमगीर साहि सिरताज ॥

:o: :o: :o:

तिसरौपन मेरो भयो आई । तातें वुधि कहां ठहराई ॥
साठो वुधि नाठो सव कहै । यह कहवत सव जग मे यहै ॥२६॥
तापर वरष अधिक दस गए । हम सतरहा वहतरा भए ॥
वृद्ध वृद्ध वालक सम आहि । वूढे वारे सव कहैं ताहि ॥२७॥
तापर लाल विनोदी नाऊ । भोग देत मैं वहुत लजाऊं ॥

:o: :o: :o:

जाति वानियो अगरवार । गोत अठारह मैं सिरदार ॥
गर्ग गोत जदुवंस प्रधान । अनपचू मुझ अलल महान ॥
परदादे को मंडन नाम । कुल मडन हुवो सो धाम ॥
दादो पारस तासु समान । जथा नाम तैंसरे गुण जान ॥
दरिगह मल्ल तात मुझ तनो । सील सुमेर सुवरसन मनो ॥
ताको अनुज विनोदी लाल । मैं यह रचना रची विसाल ॥

:o: :o: :o:

संजम तासु कथानकं सुभ तरं स्वर्गोभवे पंचमः ॥१३४७॥

इति श्री सिद्ध व्रत विधाने श्रीपाल विनोद नाम कथा लाला विनोदी कृत भाषा चौपाई वंद्ध श्रीपाल मोक्ष वर्ननो नाम पंचम सर्ग सर्व कथा संपूर्ण ॥ संवत १८८७ वदी १३ ॥

विषय—जैन धर्मानुयायी श्रीपाल का चरित्र वर्णन।

रचनाकाल

संवत सत्रह सं पचास । दूंज उज्यारी अगहन मास ॥
रविवासर पास सुभ घरी । ता दिन कथा संपूरन करी ॥२४॥

संख्या ३६२घ. श्रीपाल चरित्र या श्रीपाल विनोद, रचयिता—विनोदीलाल, कागज—देशी, पत्र—५२, आकार—१४$\frac{३}{४}$ × ८$\frac{१}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—१७३८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७५० वि०, लिपिकाल—सं० १८९४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर (बड़ा मंदिर), चूड़ीवाली गली, चौक, लखनऊ।

आदि—ॐ नमः सिद्धेभ्य नमः ॥ अथ श्रीश्रीपाल चरित्र भाषा विनोदी लाल कृत भाषा लिख्यते ॥

श्री नाभिनंदन जिनद पदवुजानां । वादम्यह त्रिविधि मूर्द्धनि धृष्ट पीठे ॥
श्री सिद्ध चक्रवत पावन मुक्ति श्रेणी । श्रीपाल भूपति विनोद कथा सुवक्षो ॥

.o. .o: :o:

॥ दोहा ॥

बंदौ श्री अरहत पद वसु गुण सिद्ध मनाइ ।
आचारज उवझाय पुनि साधचरण चितु लाइ ॥ ४ ॥
नाभि नदन श्री आदि जिन जुगला धर्म निवंब ।
श्री वृषभनाथ वृषभांक जिन वंदौ त्रिभुवन चंद ॥ ५ ॥

:o: .o: :o:

अब श्रीपाल नरिंद्र की वरनौ कथा रसाल ।
मन दै सुनियो भविक जन कहत 'विनोदी लाल' ॥२८॥
आठ सहस वनिता वरी भुज सौ तिरौ समुद्र ।
ताकी कथा गभीर अति कहन को मो मति क्षुद्र ॥२६॥

:o. :o: :o:

ताके उर कन्या अवतरी । सो मैं रतन मजूषा धरी ॥
मेरे तात ने व्याही आइ । लछन अग सकल गुन चाइ ॥६७॥
तह ते यह मोको लै चल्यौ । जन पत्र पर चढि लै भल्यौ (? भग्यौ) ॥
धवल सेठ यह पापी महा । मोको देष पाय मनगहा ॥६८॥
इन मालिभसो करायो सोर । मछ येक उठियौ यहि ठौर ।
यह देषन कौ दौरो जाय । दियौ समुद्र मे याहि गिराय ॥६९॥

अत—

सवत सत्रह सै पचास । द्वैज उज्यारी अगहन मास ॥
रवि वासर पाई सुभ घरी । ता दिन कथा सपूरन करी ॥
करी चौपई बद्ध बनाय । विचि विचि दोहा छद मिलाय ॥
कहो अडिल्ल सोरठा धरे । अहि प्रियात त्रोटक विरतरे ॥१३॥
या विधि सो रचना विस्तरी । सस्कृत की मैं भाषा करी ॥

:o: ·o :o:

नवरग साहि वली के राज । आलमगीर साहि सिरताज ॥
आलमगीर कहावै सोय । जाहि लाज आलम की होय ॥१५॥
दीनदार दिल्ली पातिसाहि । ताकी उपमा दीजै काहि ॥
पै मगल सम जग मै भयौ । फेरत आनि उदधि लौ गयौ ॥१६॥
राजनीत जाकै सब होय । माफिक सरे कही है सोय ॥
ऐसो भयौ न होहै और । पातसाहि साहिम सिर मौर ॥२०॥
भयो चकत्ता वस उद्योत । साहि अकब्बर को परपोत ॥
जहागीर को पोता वली । साहिजहा सुत प्रगटयौ वली ॥
नाम जाम को नवरगा साहि । और साहि सब कपं जाहि ॥
ताको कविजन देय असीस । दिन दिन तेज वढै जगदीस ॥२१॥
जाकै राज महासुष पाय । नीकी कथा विचित्र बनाय ॥
नाम कथा श्रीपाल विनोद । पढत सुनत मन होय प्रमोद ॥२२॥

:o· o: :o:

तिसरो पन मेरो भयो आय । ताते वुद्धि कहा ठहराय ॥
साठो बुधि नाठो सब कहै । यह कहावत सब जग मै यहै ॥२६॥
तापर वरष अधिक दस गये । हम सत्तरा वहत्तरा भये ॥

:o: :o: :o:

तापर लाल बिनोदी नाऊ । भोग देत मैं बहुत लजाउ ।।
कोविद लोग हसैगो मोहि । तातें कविजन विनवो तोहि ।।२८।।
जाति वानियो अगरवार । गोत अठारह मैं सिरदार ।।
गर्ग गोत जबुवंस प्रधान । अनघच् मुझ अलिल महान ।।२९।।
परवावे को 'मंडन' नाम । कुल मंडन हुवो सो धाम ।।
दावो पारस तासु समान । जथा नाम तैसो गुण जान ।।३०।।
दरिगह मल्ल तात मुझ तनो । सील सुमेर सुदरसन मनो ।।
ताको अनुज विनोदी लाल । मैं यह रचना रची विसाल ।।३१।।
व्याकर्णादि अमर नहि पढो । काव्य छद पिंगल नहि रटो ।।
भक्ति भाव सो जौन्यो करी । लघु दीरघ की सुद्धि नही परी ।।३२।।

:o: :o: :o:

वत्स देस गगा तट थान । साहिजादपुर नगर प्रधान ।।
उत्तम ठौर महा सुष वास । तह मैं वैठो करी बिलास ।।३६।।
काष्टासंघ जैन मत सार । तिन मे माथुर कक्ष उदार ।।
पुष्कर गण गुण गण अधिकार । कुमार सेनि गुर की आमनाय ।।३७।।
लाल विनोदी तिनको दास । तिन यह कीन्हो परम विलास ।।
नाम याहि श्रीपाल विनोद । कीन्ही मन धरि अति अनमोद ।।३८।।

:o: :o: :o:

श्री श्रीपाल कथा अवतार कथने श्री सिद्धं चक्राभिधे ।
महात्मे व्रत सत्तमे सुचरिते धर्मोपदेसान्वते ।।
साध्यौ भव्य जनस्यकर्ण हृदयेमानव संप्राप्यते ।
संजम तासु कथानक सुभ तरु स्वर्गोभवे पंचमः ।।४७।।१३४७।।

इति श्री सिद्ध चक्रव्रत विधाने श्रीपाल विनोद नाम कथा लाल विनोदी कृत भाषा चौपई वद्ध श्रीपाल मोक्ष वर्ननो नाम पचमो स्वर्ग कथा सपूर्णन मिती जेठ सुदी ।।२।। सवता ।।१८९४।। लिषो वेनी राम अपने पढने निमित्त और जो कोई पढं ताको पुन्य की प्राप्त होय ।। पोथी लिषी लखनऊ मध्य लखनऊ मो राजन सुदी हइदर जायनाका सुभ नाम ।।

विषय—जैन कथा साहित्य के अन्तर्गत श्रीपाल राजा की कथा का वर्णन ।

रचनाकाल

सवत सत्रह सै पचास । द्वैज उज्यारी अगहन मास ।।
रविवासर पाई सुभ घरी । ता दिन कथा संपूरन करी ।।

संख्या ३६३ कोकशास्त्र, रचयिता—विप्र (?), कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—७६/१० × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—५६७, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि—कैथी, रचनाकाल—सं० १६७५ वि०, प्राप्तिस्थान—डा० महादेव सिंह जी वैद्य, ग्राम व डाक०—मनिक मऊ चोवारा, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नम· श्री रामजी सहायः पोथी कोक साश्तर लीष्यतेः

वरनो गनपति विघन विनासा । जेहि सुमिरत गति मति परगासा ।।
सब दिन सुमीरो शरशती माता । वदो सकर सुधी वुधी दाता ।।
वंदो हरी विप्र करपाश्रा । जगती व्यापित जाकी माश्रा ।।

:o: :o. :o:

वरणो किसुन पछ रवीवारा । जेहि दिन 'विप्र' कथा अनुसारा ।।
तिथि तेरसि हम तेहि दिन पावा । हस्त नछत्र हमही मन लावा ।।
सीधी जोग कर उपमा सोई । यह बिधि काम सिधि तह होई ।।
साह सलेमा जग सुलताना । आही नेवास आगरा थाना ।।
सेर जहागीर औ सुलताना । तीन पाय पटणा नीज थाना ।।

॥ दोहा ॥

सोरह सौ पचहतरी ममत हम जो सुना दहवीस ।
साराद पत्र हस देष्या यक हजार पचीस ॥

॥ चौ० ॥

नादीकेन पडीत यक अंऊ । पहीजे कोक ग्ररथ उन्ह कीएऊ ॥
पुर्णा पुत्र कर्वो ग्रनी मन माना । काम कला रम उन्ह भल जाना ॥
उनके मने ग्रथ हम देष्या । कछु सक्षेप वीचार विशेषा ॥
कामकला वरनो रवी सोइ । सुरात रिशाल रसीक वम होई ॥
रशीक नीति विरावो नरनाहा । कामकला रती रस ग्रौगाहा ॥

॥ दोहा ॥

बहुते ग्रथ वीचारते होय बहुत दिन छेप ।
बालबोध के काररो कीयऊ कथा सक्षेप ॥

ग्रत—भगरा का सीरा गारी कै गुर का सीरा मो तीनौ मे साठौ गोली रोज षाइ तौ बाल सीम्राह होइ ॥

॥ नगुन मतरी का लिष्यते ॥

:o: °o :o:

विषय—कामशास्त्र का वर्णन ।

रचनाकाल

सोरह सौ पचहतरी समत हम जो सुना दहदीस ।
साराद पत्र हम देष्या यक हजार पचीस ॥

संख्या ३६४ समरसार भाषा तिलक, रचयिता—विश्राम शुक्ल, कागज—देशी, पत्र—५६, आकार—७½ × ८¾, इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—७३०, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५५ (सम्भवतः), प्राप्तिस्थान—ठाकुर श्री अचल सिंह जी, ग्राम—मजुरा, डा०—बछरावा, प्राच—खजुरौ, जिला—रायबरेली ।

आदि- - . .भूरिश· ॥ वक्ष्ये युद्ध जयोपाय धार्मिकाना पहीजिताम् ॥ १ ॥

:o: .o :o:

॥ अथ जय पराजय चक्रम ॥ भाषा तिलक ॥

बार हार रेखा ठा ढ ढा ढ खिंच ॥ श्रौ छ ६ रेखा वेड वेड । लिखव ॥ आठ ८ आठ ८ आठ ८ नव एहि अकन्ह क लिखव ॥ फिरि तेहि के तरे विसर्ग स्वर नपुंसक स्वर: अ: ऋ ॠ लृ लॄ एहि स्वरन्ह क बरार कै वाकी जेहहि ॥ अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं एन्ह क लिखव फिरि तेहि के तरे तीनि पाती विषे ई कं ड ञ ण अ ञ र व व र ३ के हकारातल हि लिखव ॥ तति कै जाई के नाम कर अ ञ र अलग कै कै अक लेव ॥

ग्रत—अपने दाहिने हाथ क माथे पर राषव ॥ तति के देषव जौ पहुचा पातर देषि परै तौ छ ६ महीना तलुक मृत्यु कै भय न कहव ॥ फिरि दूनौ हाथ का सपुट कै कै माथ पर धरव ॥ तति कै ग्रोहि सपुट के भीतर देषव ॥ जौ शरिके फूल कै आभा देषि परै तो छ ६ महीना पर मृत्यु कै भय कहव ॥ फिर जल विषे आपन सिर उपराइ तौ छ महीना तलुक मृत्यु कै भय कहव ॥

:o: :o :o.

आचार्य्य जन जेहहि से सब कहत है ॥

:o: °o: °o:

इति श्री समरसारे युद्ध शास्त्रे विश्राम शुक्ल कृत भाषा तिलक समाप्तं शुभ मस्तु ॥ यादृशं पुस्तक दृष्ट्वा तादृशं लिखित मया ॥ शुद्धव पढिवा शुद्ध मम दोषो न दीयते ॥

८ १ ५ ५

नागेन्दुशर वर्णि च वतसरे सौम्य वासरे ॥ कृष्ण पक्षाश्विने मसि शिष्यार्थ लिखितमया ॥१

विषय—शुद्ध ज्योतिष का वर्णन ।

संख्या ३६५. फूल चरित्र, रचयिता—विश्वम्भरदास, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—४॥ × ३॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० रमाकांत जी शुक्ल, ग्राम—पुरे गरीबदास, डाक०—पड्वारा बाजार, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—

॥ १ ॥ पुरविल प्रीतम जानि कै तन मन जोबन दीन्ह ।
जीव धन्य केन राखिए सब नेछावरि कीन्ह । २
बिरह दग्ध तन देत है सहि नहि सकै शरीर ।
सहि नहि सकै तो उठि तकै कवल ठरै जम नीर । ३
बान बिरह का ए सखी जेहि लागै सो जान ।
केतिक धिरजा. . . . . ।
पुरविल पीतम जानि कै तन मन जोबन दीन्ह ।
मैं सहो छिन छिन निकसै प्रान । ४
आपु भला तो जग भला चित मनि करो उदास ।
सिर रासि कहु नारी सुनु राखु दिआ पर आस । ५
रात बिताए रोइ कै दिवस बितायो सोइ ।
पिअ बिन तन पाडर भए सो जिव दादुर भा मोहि । ६
जेहि दिन प्रीतम अइहै सेंदुर पहिरब माग ।
घर घर रग मजीठ को धुनक नैन लगि रग । ७

अंत—प्रेम पंथ पगु राखिए जो मन साचा होइ ।
प्रीतम प्रीन ग्राब है जिव की जाने कोइ । ३०
वालानन बिरतत भा काम के की आइ ।
रूप मंजरी देखते पिअ तो रहि तिलताइ ।३१
'फूल चरित्र' को भेद सुनि कहहि विश्वम्भर दास ।
मन मिलि कै हथ कन्दर राखु पिआ पर आस ।३२

सम्वत १८८२ शाके १७४७ इति श्री फूल चरित्र समाप्तम् ॥

विषय—खडकाव्य स्फुट रचना, फूल चरित्र वर्णन ।

संख्या ३६६ आह्निक तिलक प्रकाश, रामचन्द्राह्निक (टीका), रचयिता—विश्वनाथ सिंह जी देव (?), कागज—देशी, पत्र—६५, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—२३४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६०७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री लाला श्रीकंठनाथ सिंह जी, धेनुआवा, जिला—बस्ती ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ दोहा ॥

श्री गुरु गणपति गौरि जै जै हरि गुरु प्रियदास ।
बंदि चरन रज करहु मै आह्निक तिलक प्रकास ।

शक्ति रिति जिन पुरुषन के शक्ति जो है काव्य को बीज रूप सस्कार विशेष सो रही है अरु कविता जो काव्य ताके अरु लोक के वृत्तांत ताके अरु शास्त्र आदि पद तें इतिहास पुराणादिक इनके दरसन ते प्रवीन हो है तथा काव्य गान करने वारे कवि तिन की सिक्षा करिकै अभ्यास वी नही है या प्रकार काव्य बनाइवे के वारन ते रहित ते बीजा की छाया ते बहुत गुन ते जुत जो वाच ताहि करे है परु अलभ्य साधन करि कै सिद्धि करिवे लायक नहीं अर्थात स्वतंत्र अैसो जानकी रघुनंदन विषे जो प्रेम नमस्कार करो हो । छंद स्रग्धरा । श्री रामचंद्र ।

अंत—जीव को मन करिकै गम कैसे तामे प्रमाण भागवत को यतो यतो धावति देव. . . . पुनि कैसे हौ रार रहो नही हरै कहे भय जिन काते अरा कहावे है और ए इंद्रिय तिनके विषे अरा होइ कहे अभया होइते रा रा कहा विषयो ते विषयिन करिष्यति कहे मारे यो रा रर होइ हैं कैसे

हो रा र र कैसे होइ है ताको साधे है 'अन्येष्वपि दृश्यन्ते' या सूत्र ते प्रत्यय होइहै ङित्व ते टीको लोप होइहै ॥ इति सिद्धि श्री महाराजा श्री राजा बहादुर सीताराम कृपा पात्राधिकारी विश्वनाथ सिंह जू देव विरचिते रामचन्द्राह्निके टीकायामष्टमोयाम ॥ सं० १६०७ ॥

विषय—रामचन्द्राह्निक (संस्कृत ग्रंथ) की टीका ब्रजभाषा गद्य में।

संख्या ३६७. बारहखड़ी, रचयिता—विसनदास, कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—५३/४ × ८३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—१४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५१ वि०, लिपिकाल—सं० १८६६ वि० संभवतः, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री गणेसाय नम ॥

प्रथम गणपति ध्याईये पाछ करीय काज ।
विघन हरन मंगल करन राषो जन की लाज ॥
दुरगा दया निधान है जग मे जोत प्रकास ।
पतत उधारण नाम हं राषो जन की लाज ॥
संवत १८५१ । सावण सुदी तिथ दोज ।
"विसनदास" बाराषडी कही देवता पूज ॥
कहो देवता पूज गुसाईं भगत नाम उचारा ।
अडतीस अक्षर वरनन की हिरदेव उजारा ॥
गुरका ध्यान धरो मन माहो किरपा भई अपार ।
विसनदास गुर की कृपा हिरदै प्रकासा ॥
क का कीनो रूप सब काम धेन को धार ।
ब्रह्मा पै वसुधा गई अपनी करन पुकार ॥
अपनी करन पुकार गई जब भोले के ढीग भेजी ।
मोपै पाप भयो अतभारी करनाकर सुन लीजे ॥
संकर शुनत तुरत उठ धाये रिष ब्रह्मा संग लीनो ।
बिसनदास भुरकर एक ठौरे सब सेतो कह दीनौ ॥ १ ॥

अंत—विसनदास झाझर को बासी दज जन कीरती गाई ।
ढढीराम सुष की किरपा सू जग विच सोभा पाई ॥

संमत १०६६ (१८६६ ?) च मिती असाढ सुदी पंचमी सुक्रवार दसषत मना बाई के हाथ के

विषय—संक्षेप में कृष्णलीला वर्णन।

रचनाकाल

संवत १८५१ । सावण सुदी तिथ दोज ।
विसनदास बाराषडी कही देवता पूज ॥

संख्या ३६८. विष्णुपद (?), रचयिता—विष्णु रसिक, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—८॥ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, अप्रकाशित, परिमाण—(अनुष्टुप)—३५, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० रामगुलाम जी, ग्राम—शक्लपुर, डाक०—मानधाता, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—

रसीली तेरी चितवन जादू की भरी ॥ १
बार कहीं द्रग कोर विलोकत हर लीन्हो सुधि बुधि सिगरी ॥ २
तब ते मुहि तिहु पुरन सुहावै सुष न लहौं छिन एक घरी ॥ ३
जिन तू लखनि लखी तिन मं ते कहु प्यारे किन धीर भरी ॥ ४
'विष्णु रसिक' समगति भई सबकी सोना मोरा पुन सिवरी ॥ ५

बिछोही जीवन तें पूंछी जाइ ।। १
कैसी बिथा विरह की होई कैसिक उर घबराई ।। २
कैसे सुरत लगं भावन पै कैसिक ध्यान बढाइ ।। ३
कैसे भावन सुधि वियोग में सारी रैन सिराइ ।। ४
कैसिक कहत बात भावन की श्रवन करत बिललाइ ।। ५
कैसिक कबहुंक अनुमानतही भावन रूप करवाइ ।। ६
कैसिक भावन हितकारी कह सन्मानत हित पाइ ।। ७
'विष्णु रसिक' निर छोभि न जीवै इह कथनी न सुहाइ ।। ८

अंत—

लागी लगन कहो कस छूटै ।। १
घट को लगन लगं धृत सों जेंव नाहि मिटं जद्दपि घट फूटै ।। २
चहों कोऊ मारै चहों कोऊ तोरं चहों कोऊ अंग अंग गहि कूटै ।। ३
जीव को तार देह ते छूटै प्रेम लगन को तार न टूटै ।। ४
'विष्णु रसिक' को विष्णु रसीलो प्रान मान तन मन सब लूटै ।। ५

दोहा ।। सोरठा

रसिकन हृदय उमग रहत रसीले मिलन की ।
अतरग वहरग उभय ठौर समता लखौ ।। १
विष्णु की लखनि लखि मन हुलसात ।
करकत.. अतर ते आनद उर न समात ।। २
लखि मूरत...त्यौ औरहू प्रेम नीर अधिकात ।
द्रग झपकान मधुर मुख विहसन अत्सय उर चुभिजात ।। ३
विष्णु रसिक के द्रगन मनोहर विष्णु वदन बरसात ।। ४

दोहा

रसिक रसीले दोइ भले तीजे को कहा काम ।
ब्रह्म जीव द्वइ ते जगत माया नामहि नाम । १
लगन लगें लज्या रहै इह कहौ कैसिक होइ ।
रैन दिवस कहू मिले है इह जानत सब कोइ ।। २
लज्या हू के तजे ते जोपै सीजै काज ।
तौ तौ पावै रसिक जन तीन लोक को राज ।। ३

—अपूर्ण

विषय—ईश्वर भक्ति वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—छद अत्यत सुदर तथा सरल सरस और ओजपूर्ण भाषा मे लिखे गए है । भाषा तथा भाव का इस प्रकार सामजस्य विरल ही मिलता है । काव्य की दृष्टि से रचना अत्यत उच्चकोटि की है ।

संख्या ३६६. रति रहस्य, रचयिता—वीरभानु देव, कागज—देशी, पत्र—२३, आकार—११।। × ४।। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी, सभा, वाराणसी ।

आदि—

......श्लोक......४२ ।। उपराव वी पौंडुरी स्त्री ।। २ ।। एक पुरुष रमं ।। सुस्त्री कदंवकु ।। पुरुष द्वै मदोन्मत्त स्त्रीहि रमहि सुनर कदंवकु ।। ..श्लोक ४३ ।। ..यह जु है विचित्र रति विधि कहि । लिग अरु जोनि कौज्जु है परिघट्टना चालनु सु तीनि प्रकारा मद पीडन अरु वाराहादिक जिहहि रत मे दति मं नाही या यथ महाति मं छाडेहहि ।।...श्लोक ४४ ।।...... ।

हैयू लिंग करि भग के उपर ताडनु करै अथवा भग के अधस्तात ताडनु करै ।। अथवा भग के वाम वक्षिरण करि ताडनु करै ।। परि जव स्त्री मन्मथाकुल होइ तव पुरुष आपणे हस्त करि लिंगु करि ताडनु करै ।। तव स्त्री सुष ते असी चेष्टा करे । जैसे आमीले श्लोक महमहि ।। श्लोक. . . ४५ ।। . . .

दृष्टि कौ भ्रमु देषियं ।। योनिहि सकोचं ।। नेत्रनिमीलनु करै मूर्छना होइ ।। भाव को लक्षणु . . . श्लोक . . . ४६ ।।

वार वार जघ चापं ।। सीत्कार करै ।। गर्लाज करै ।। एकुलि वक्षमाण सुरत के लक्षण ।।

अन्त— . श्लोक ६८ ।। । जहाँ नायक आपुणी भार्याहि दूतत्व विखे नियोजै ।। सु जुहै दूतत्व विखे नागरिक ताहि करै । सुभार्या दूती कहियै ।। जैसे औरु कोऊ जानई । तैसे द्वय अर्थकरि जिहि धानि वचन कह्यो है । सु विश्राता दूती कहियै ।। इतनो दूती होहि ।। दासी ।। सखी ।। कुमारी ।। विधवा ।। थौडी ।। सैरध्री ।। मित्रादि कुकर्म करै स्ववश रहै । सुसैरध्री ।। मालिनी ।। गाधिक स्त्री ।। धोविनी ।। मसवा सीधनोनो।। धाई ।। पेरोसीनी ।। ए दूती होहि ।। अरु सुवासारे । ए फुणि विदग्धा हू की प्रतिमा भई रहहि ।। अन्त.पुर मध्य फुणि वासी हू की द्वारा ए लोक प्रविष्ट होहि ।। सुभैऐ प्रकारन कहैइ ।। श्री श्री श्री इति श्रीमत्तोमर वशावतस श्री मन्महाराधिराज श्री विक्रम सेन देवात्मज श्री वीर(भानु देव विरचिते रति रहस्य विवरण म्यार दारिको नाम नवम परिच्छेद ।। ९ ।।

—अपूर्ण

विषय—रति विषयक वर्णन ।

सख्या ३७०. शनिश्चर की कथा, रचयिता—वृदावन, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—१०.८४ × ६.६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—२१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७८३ वि०, लिपिकाल—स० १९१४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगवर जन मदिर (बडा मदिर), चूडीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—अथ सनिश्चर की कथा भाषा लिष्यते ।।

।। दोहरा ।।

नृपति नाम सुत जग प्रगट मगल कारक देव ।
मन वच काय लगाय कै इद्र करै सत सेव ।। १ ।।
:o. .o: :o:
विस्व भूषन चरनाब्ज जग वदो सुष करतार ।
मन वछित पूरन करै महिमा अटल अपार ।।
:o: :o 'o:
जा सुत सन ग्रह देवता मन मे जानो सब कोय ।
रवि गृह के अति तेज मे अस्तु न जाको होय ।। ९ ।।
व्यतर षग गन देवना सेव करै मनु लाय ।
जा आगे सब कोय के व्याधि कलेस मिटाय ।।१०।।

अंत—

यही कथा सपूरण भई । विद्रावन मैं सो निरमई ।
जो कोई नर पढै सुनेय । ताको सनिकहू दुष न देय ।।१६३।।
सवत सत्रह से छब्बीस । अगहन(न) सुदी दसमी रजनीस ।।
ता दिन पूरन भई यह कथा । विद्रावन ने भाषी जथा ।।१६४।।

इति श्री सनिश्चर की कथा सपूरण ।।

पोथो श्री छोटे मदिर जी मे वीने नन्हे मल ने मिती कातिक वदी १४ रज सूकवार संवत १९१४ ।।

विषय—शनिश्चर की कथा का वर्णन ।

रचनाकाल

संवत सत्रह से छब्बीस । अगहग(न) सुदी दसमी रजनीस ॥
ता दिन पूरन भई यह कथा । विद्रावन ने भाषी जथा ॥

संख्या ३७१. श्री कृष्ण खण्ड, रचयिता—वैद्यनाथ, कागज—देशी, पत्र—५६ आकार—७॥ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—७५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३७ वि०, लिपिकाल—स०१९३९ वि० प्राप्तिस्थान—श्री पं० अमरनाथ जी शुक्ल, ग्राम—उग्राडाडी, डाक०—बादशाहपुर, जिला—जौनपुर ।

आदि—

सुमिरो आदि जोति जगदंबा दुर्गा विंध्यवासनी माय ।
महाकालिका को सुमिरन करि आदि सरस्वति होहु सहाय ॥
मैं हर गावो मै सारद को कवरु सुमिरि कमच्छा माय ।
पुनि मै गावो हिंगुलाज को जिनके लोग दर्स को जाय ।
कोट कागडे की जगदंबा यहि अवसर अब करो सहाय ।
तेरे भरोसे मै गावत हौं माता दीजे पार लगाय ।
:o: :o: :o:
पुरी वखानो मै मथुरा को जहं पर कृष्ण लिहा अवतार ।
फेरि गावो गोकुल वृन्दावन जह बालक होइ किहा विहार ।
नदी वखानौ मैं जमुना को जेनकी लहरें स्याम तरग ।
पहिले आई है वसुधा मे पीछे मिली प्राग मे गग ।
:o: :o· :o:
चरण सरोरुह सवके वदौ जिनके संग विहरे नदलाल ।
कोखि वखानो मै देवकी का जह पर कृष्ण लिहा अवतार ।
गोद वखानो श्री जशुदा का जाके गोदन किहा विहार ।
जमुना मे कालीदह सुमिरो जह हरि नथे कालिया नाग ।
नाच किये ससहौ फन ऊपर वेन वजाये मधुरी राग ।
मैं पद वदौ सूरदास को पुनि वदो वृजवासी दास ।
श्री हरि भक्त को सुमिरन करि वन्दौ वावा तुलसीदास ।
:o: :o: :o:
(बादशाहपुर) दिल्लीपति है नाम नगर को तेहि के उत्तर डाडह जाम ।
(अयोध्या) रामचद्रपुर पीता हमारे झारिखड शिव मेरा नाम । (वैद्यनाथ व वैजनाथ)
(यवनपुर) मुसल्मान के नाम वेद मे सोइपुर है जिला हमार ।
(मछलीशहर) मीना पाटन के तसील मे पिटना परिगन लेव विचारि ।
सम्वत वनइस सै सैतिस मे देखो आल्ह खंड मैं जाय ।
नर की कीरति जिय समुझै यहि विधि कहिहौं हरि गुन गाय ।
सम्वत वनइस सै सैतिस में फागुन सुदी दुइज ससिवार ।
नखत धनिष्ठा श्री काशी में कीने कृष्ण खंड विस्तार ।

अंत—जद्यपि हौं मै हीन कुटिल मति सव विधि हौं ऐगुन की खान ।
पावन पतित विरह माधो के तरिहैं दास आपनो जान ।
गज की टेर सुनित उठि धाये वाहन त्यागि उवाहन पाय ।
हमरी वेर देर क्यो लखत कीधौं आई वैस वुढ़ाय ।
हे जदुनाथ अनाथ पियारे वैजनाथ जन भयो अनाथ ।
आरत हरन राधिका माधो मेरे धरो माथ पर हाथ ।

संबत् वनइस से बंतालिस सुन्दर लगा पूस का मास ।
बदी ग्रमावस भौमवार को पूरन भयो वनारस खास ।५१०

इति श्रीकृष्ण खण्ड भाषा वंद्यनाथ विरचिते समाप्तं शुभ मस्तु । १६३६ वि०

विषय—(कृष्ण खण्ड) कृष्ण चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

सम्बत बनइस सं सैतिस मे फागुन सुदी दुइज ससिवार ।
नखत घनिष्ठा श्री काशी मे कीने कृष्ण खंड बिस्तार ।

संख्या ३७२. पिंगल, रचयिता—व्रजनाथ, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—६$\frac{5}{8}$ × ४ इञ्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—५०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० जगन्नाथप्रसाद जी, ग्राम—उसरहा, डाक०—शिवरतन गंज, जिला—रायबरेली ।

आदि—

:o: :o: :o:

. . . वर्ण छ भनत । लेहु जानि सत ।।
यथा
बासुदेव राम । दोउ गौर स्याम ।।
वारि डारे काम । भक्त लेत नाम ।।३०।।
अथ धीस छंद
तोरोई सो धीस । भाषे फनी ईस ।।
छा वर्ण ये आनि । सो छंद ले जानि ।।
यथा
भो देव वागीश । श्रीकंठ रमेश ।।
वागीश नागीश । जै जै जगदीश ।।
अथ सख नारी छंद
यदो सख नारी । भवै भूमि धारी ।।
फनी नाग राजा । छयो वर्ण साजा ।।
यथा
हरे कृष्ण केसौ । हरो मो कलेसौ ।।
गदा चक्रधारी । नमो पाप हारी ।।३२।।
अथ मदनक छंद
जुगल नगन । मदन कमन ।
जहल हुवन । कहव छुफन ।।

अंत—

एक उदिष्ट समान । भरहु अंक पूरन पर जान ।।
तजहु प्रथम जो पावहु अंक । वर्ण पताका यह अति वंक ।।
अथ मात्रा मेरु
द्वं द्वं कोठा लिषहु समान । प्रथम अंक सो अंतहु आन ।।
तासु आदि पुनि एक सुअंक । प्रथम मांहु . .निशंक ।।
पीवा अंक के शीश ते परे अंक जो होइ ।
तासो कोठा पूरिवे उबरे कहत सुकोइ ।।
अथ. पताका
उदिष्टासरि अंक अरोप । वाम भाग ते प्रलं लोप ।।
एक लोप ते इक गुए जानु । द्वं ति. . . . . ।

—अपूर्ण

विषय—पिंगल वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता का नाम व्रजनाथ है जो एक दोहे मे इसप्रकार आया है—

एहि विधि करिके चरन सम कोठा कवि 'व्रजनाथ'।
एक`ऊन गुन भेद सब आवत नीके हाथ॥

संख्या ३७३. कर्मविपाक, रचयिता—शकर (?), कागज—देशी, पत्र—२५, आकार—७। X ४। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—५००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८५० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० राम नारायण जी चौबे, ग्राम-मलौली चौबे, डाक०-धनघटा, जिला-बस्ती।

आदि—कर्मविपाक श्री गणेशाय नमः

॥ चौपाई ॥

जो धरं परम चीत धर्म जो ग्याना।
शो पंडित नर सोइ सुजाना।
धर्म पाप कर कीय पसारा।
गौरा शकर करहु विचारा।
जे नर जैसेहि लावहिं ध्याना।
तस मक्तहि कृत कर्म अपाना।
कैसे धातु सकल ससारा।
भाषहु 'शकर' करहु विचारा।
वीषया नीर मह जे जीति पिआवें।
अमृत पानि भोजन पावें।
एक जन्म जौ जल कहु देई।
सात जन्म सुख पावें शोई।
पुत्र नारि धन सुष सो पावें।
तो मास जे नीर पिआवें।
जो जन्मे ससारक सारा।
पावें पुत्र अति लछिमी पीयारा।
गोआ चोराई जो नर लेइ।
हरहि त्यागि मन अनतहि वेइ।

अत—

एकर सकर करहु विचार। कौने धर्म से उतरं पार।
रात गौअ वस्त्र दोज भरं। पंचा अग्नि होम विधि केरं।
सुनु गौरा तव पातष जाई। धर्म करत सब दोष नसाई।
साषी वोलै करै निआउ। षोरि अगुरि होइ बुइ...।

:o· ·o: :o:

कुर्म वीपाक कर्म वसि होइ। ईस्वर गोरा भाषही सोई।
कुकर्म काटं कर्म वीपाक। कथा वाचि निश्चै रहै पाक।

इति श्री कर्मवीपाक पोथी संपूर्ण सम्वत १८५०।

विषय—कर्मविपाक वर्णन।

संख्या ३७४क ज्योतिष भाषा, रचयिता—शकर, कागज—देशी, पत्र—२२, आकार—६॥ X ५॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—२६, परिमाण (अनुष्टुप)—७८६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० प्रभुनाथ जी पाडेय, ग्राम-मऊ, डाक०-बेलवार, जिला—जौनपुर।

आदि—श्री गणसय नमः अथ जोतिष भाष लिषते लग्न प्रकास ॥

दोहा

समुझि परत नहि सस्कृत जाकी जग मैं साख ।
जाने जोतिष भेद कछु बरनत भाषा भाष ॥
अथ दस कर्म निरूपते । अथ विवाह का विचार ।

कवित्त

रेवती औ उत्रा रोहिन मगसिर मूल अनुराधा हस्त सुभ स्वात उर आनिये ।
तुला वृष कन्या मिथुन गन लग्न चार सो मे बुध सुक्र गुरु सदा जानिये ।
माग अनुमाह सुभ फागुन वंसाख ज्येष्ठ परमा औ दुतीय तीज पाचं ठीक ठानिये ।
छठ अरु सातं आठ ग्यारा औ त्रदस जान परम समेत विधि. व्याह की वषानिये ॥२

अथ दुरागमन को विचार
कवित्त

चित्रा स्वाति रोहनी औ श्रवन धनिष्ठा मूल रवि गुरु सौम सुक्र बुधवार आनियं ।
कन्या धन मक्र तुला मिथुन गन लग्न पच वरजित नषत मास और जानियं ।
'संकर' कहत एते जतिक प्रमान जानि ऊनी सुभ वर्ष मे दुरागमन वषानियं ।३

अंत— अथ वे भाव फल ।
नेत्र पगन अति पीर होइ । राज समीपी तुल्ल होइ ।
रिप तास सुत चित तं नु होइ । गुदा व्यसे वहु पीर होइ ।
वर्खवत वहु विधि वषान । वे भाव केत यह फल निधान ।१२

इति श्री भाषा जोतक लग्न प्रवेम भाव फला फल वर्ननो नाम सवत् १८८८ ॥

विषय—ज्योतिष विषय वर्णन ।

संख्या ३७४ख ज्योतिष लग्न प्रकाश, रचयिता—शंकर, कागज—देशी, पत्र—२३, आकार—१०६/१० × ४५/१० इन्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—६०४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० जदुनाथ चतुर्वेदी, ग्राम—बदली चौबे का पुरवा (मयाम), डाक०—मुसाफिरखाना, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ अथ भाषा योतिष लग्न प्रकास ग्रथ प्रारंभः ॥
समुझ परत नही ससकृत जको जग मे साष ।
ताते जोतिस भेद कछू बरनत भाषा भाष ॥
॥ अथ दश कर्म निरूपन प्रथम विवाह कवित्त ॥

रेवती और उतरा रोहिनी मृगसिर मूल अनुराधा हस्ति सुभ स्वात उर आनियं ।
तुला वृष कन्या मिथुन गणि लग्न चार सौमे बुध शुक्र गुरुवार सदा जानियं ।
मार्ग अरु माहु सुभ फागुन वैसाष ज्येष्ट परवावौ दुतिया तीज पाचं ठीक ठानियं ।
छठी पुनि आठं सातं ग्यारा वो त्रदश जानि परम समेत विधि व्याह की बषानियं ॥ १ ॥

॥ अथ द्विरागमन ॥
कवित्त

चित्रा स्वात रोहिनी औ श्रवन धनिष्ठा मूल सर्व गुरु सौ शुक्र बुधवार आनियं ।
फागुन वैसाष मार्ग परमा औ दुतीया तीज सातं पाच ग्यारा औ त्रयोदश ठीक ठानियं ।
कन्या धन मकर तुला मिथुन गनि लग्न पाच वर्जत नषत मास वार औ जानियं ।
'शंकर' कहत येते योतिक प्रमान जानि ऊनी शुभ वर्ष मे द्विरागमन वषानियो ॥

अंत— ॥ मृत भाव ॥
वाहन सुदीर्घ की घात जान । गुडा पीउ वहु विविध मान ।
कन्या, मिथुन वृष कर्क जान । अर्थ भाव मृत केत जान ॥

॥ धर्म भाव ॥

बुध नास फल मलेक्ष जान । भुज रोगी निश्चं बखान ॥
तप दान हास्य जानहु जु सोई । य धर्मभाव फल केत होई ॥

॥ लाभ भाव ॥

दरब नीक बहु बचन हो कुल उदित बेदार्थ होई ।
उज्जिल के बास बहु भाग्य ही।...........

—अपूर्ण

विषय—ज्योतिष विषय वर्णन ।

संख्या ३७५ दश अवतार, रचयिता—शंकराचार्य, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—८॥ X ३॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—६६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७६५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० शिवबालक राम जी, ग्राम—कपुरीपुर, डाक०—करहिया, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ दश अवतार लिख्यते ॥ अजपा सूर्य मंत्र । सात वार सताई नक्षित्र पंद्रह तिथि जुगे जुगि नारायण अवतरे ।

ऋषि थापे दानव सहारे ।
हरि अवतार सुणो चित लाय । वधे धर्म पाप क्षय जाय ।
.... नारायण नरसिंह रूप अवतरे
नरसिंह की माता चद्रावती । पिता ऋषि गुरु अवृत नेत्र ऋषि ।
छेत्र मुलतान पुर पठण । निरदलति हरणाकुस दानव ।
ले उधरति च्यार बेद चौदह शास्त्र अठारा पुराण ।
नव व्याकरण । सध्या तर्प गायत्री षटकर्म ।
अंत—हरि अवतार सुनहु चित लाय ।
वाधे धर्म पाप क्षय जाय ।१०
बतीस हाथ मर्द अठारा हाथ षडा ।
अमृत धारा छुरी मेधवृं वर छत्र स्वेत ।
घोडा खेत पलाण । अवतरे नाही अउतरेगे ।
माघ मासे शुक्ल पक्षे दशमी सभल दीपे ।

इति श्री शंकराचार्य विरचित दश अवतार संपूर्ण संवत् १७६५ ॥

विषय—ईश्वर के दस अवतारों का वर्णन ।

संख्या ३७६ देवीस्तोत्र, रचयिता—शंकराचार्य, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—५॥ X ३॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—१४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० चन्द्रशेखर जी पांडेय, ग्राम—मनहार, डाक०—करहिया, जिला—रायबरेली ।

आदि—राम जी सते देवी स्तोत्र लिख्यते ॥

कपाली काली तु करवर कपाली रस भरी । १
भवानी वानी तु सकल सुषदाता दुष हरी ।
छकी हाला ज्वाला सुभट सुरमाला वरधरी । २
सुरंगी मातंगी सम कनक अंगी छवि वनी ।
गला नारी सारी सिर लसत प्यारी सुष सरी । ३
कृपा कीजे दीजे मन सुधि जु लीजे मम जनी ।
सुरेसे वंदे वतु रति सुधि लेव तुम मुनी ।
श्री गानैनी अबे अघ हरन तेरे चरन है । ४
इही जानौ जिय मे श्रुति सकल तेरी सरन है । ५

मसानी कल्यानी सकल जगरानी जस भरी ।
समारुढं गूढ अगनि गुन गूढ बुति करी । ६
धरा धारी प्यारी असुर गुनहारी दुष हरी ।
छवीली भवलीली निस दिन रसली मनि मना । ७
उमा रामा श्यामा सिव जयति नामा ।
छिन छिन नासती गीता सीता सुख अतीता गुन गिना । ८
अखडी ब्रह्मांडी पलक लन चंडी तुम विना ।
तुही कन्या धन्या पदरज सरन्या निस दिना । ६
सदा सेवा देवा निगम नहीं भेवा वरत है ।
तुही ब्रह्मा विष्णु सिव सभ्र गनेसो अगन है ।१०
अंत—तुही कर्ता हर्ता पवन जल पृथ्वीगगन है ।
तुही वेदोव्यासी सम सुष विलासी मगन है ।११
तुही माता दाता जन सकल तेरी सरन है ।
तुही भुवतो मुवती चरन मेरे लगन है ।१२

इति श्री मत्सकराचार्द विरचिते देवी स्तोत्र संपूर्ण ।। सवत् १८८० ।।

विषय—देवी स्ताव वर्णन ।

संख्या ३७७क कवित्त, रचयिता—शंभु (शंभनाथ त्रिपाठी), कागज—देशी, पत्र—१, आकार—७$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—१६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री राम जू सहाइ ।।
लचकि लचकि जात कटि कुच कच भार ल भागनि की बलि बलि जाइए ।
ब ग .जात लखि षजन लजात "सभु" सुकुमाद. .एसी पूर पुन्य पाइए ।
याको ऐसी ए . नि कहै गोई लीजै मानि तुम हो जू वड नि रहसि रिझाइए ।
हारीहौं विहारी (? यो) हि गारीदेत न्यारी यह प्यारी ह तिहारी मनहारी करि ल्याइए ।
क्यो क्यो रह्यो अवलो जिय तूँ अब आयो वसतु कछू न वसैहै ।
"सभु" सुगंधित सीतल मद समीर नेपीर गभीर उठै है ।
औठ हरेगो करेगो कहा जब कोकिल कूकिकै कूक सुनैहै ।
औरु. . .फवैगो कछू वल सग कहूके तूहूँ कढि जैहै ।। २ ।।
खेलन द्वैहै न सग तिहारै करौ उन कोटि उपाय विहारी ।
क्यो करि खेलु बनै जल मे बुति लाडिलो की जनु केसरिगारी ।
बूडै न पैयतु "सभु" तुम्है जलमधि तिहारी छपं छविकारी ।
क्यौं घन मध्य विनै विजुरी जमुना मधि त्यो व्रषभान दुलारी ।। ३ ।।
. . .क कहै सुषमा लहरै मनके चढिवे को सीढीए पेषै ।
कन्हको टोनो कियो कछु काम ववीसुर एक इहा अब देषै ।
राधिका की त्रिवली को वनाउ विचारि विचारि इहै हम लेषै ।
यासी न औरन औरन और है तीनि षचाइ दई विधि रेषै ।। ४ ।।
मन बच करम लगनि की लिषी है किधौं हरितीनि लोक लिषी सुवदन पानी की ।
एक तीनि ग्राम की कहत रेषा तीनि सब कलनि समेत वसिगिति वृक्षि वानी की ।
छवि तीन्यो लोक की लगाई विधि याते तीनि रेष मिस तीन्यो लोक छविकी निसानी की ।
पीव जीव जरमुषवा जीव कोनो वसतु सुषमा की सीव गीव राधा ठकुरानी की ।। ५ ।।
कढि मागत वारि किधौं लछिमीहि सरोज सो आनि सिवार अरे ।
किधौं आरसी केवर तें उत "सभु" समूह पना छवि के वगरे ।

इमि राधिका के मुह की उँहि ओर विराजत वार महा सुथरे ।
मजि बंबु चल्यो विचल्यो रनतें तम वृंदमतो जुरि पीछे परें ।।
—पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—शृंगाररस विषयक कवित्त सवैयों का संग्रह ।

संख्या ३७७ख. कृष्ण विलास या भागवत (दशम स्कंध), रचयिता—शभूनाथ त्रिपाठी, कागज—देशी, पत्र—२१२, आकार—७३/४ × ४१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—२२२६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत अस्पष्ट है, लिपिकाल—सं० १९२३ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० लक्ष्मीशंकर जी वाजपेयी, ग्राम—वाजपेयी खेडा, डाक०—वेहटा, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। अथ श्री मद्भागवत दसम स्कंध भाषा लिष्यते ।।

।। दोहा ।।

छवि कदंम लषि अंब के उमडत मोद अषड ।
कलरव करि करिवर वदन फेरत संडादड ।।
:o: :o: :o:
सभा मध्य बैठे हुते येक समै रघुनाथ ।
मत्री मित्र पडित सुभट बधु वृंद लै साथ ।। २ ।।
:o: :o. .o:
तेंह कवि संभूनाथ को लीन्हो निकट बोलाइ ।
सादर नजरि सुकरि हिये परम प्रेम उपजाइ । ४ ।।
दुरित हटैं जाके पढ़ें कटैं विकट भवबंध ।
कह्यौ हमैं करि दीजिए भाषा दसम स्कंध ।। ५ ।।
तिनको आयसु पाइके हिये हरषि कवि संभु ।
गौरि गनेसहि पूजिकै ताछन कियो अरंभु ।। ६ ।।
६ ७ १
साको बीति गयो तहाँ रस पर्वत औ भूप ।
सगुन उज्यारी पंचमी भादौ मास अनूप ।। ७ ।।
कान्हु कुवर वृज वधुन को वरन्यो यामैं रास ।
नाम धरचौ यहि ग्रथ को याते "कृष्ण विलास" ।। ८ ।।

अंत— ।। पद्धटिका ।।

जव सुनी गोपिकन मधुर तान ।
ह्वै गई मुरछित गुन निधान ।
ह्वै गए सिथिल भूषन दुकूल ।
कुस केसन ते छुटि परे फूल ।।७१।।
:o: :o: :o:
अरे कुशील कुमति अपकारी कहाँ अधम अव जैहै ।
कोटिन जतन किए न वाँचि है तोहि काल धरि खैहै ।
यह कहि वपटि धरचौ मधुसूदन छीनि गोपिका लीन्ही ।
छीनी अमल मनि लई अधम की बड़ी चोप सिर दीनी ।।७५।।

इति श्री मद्राव वंशावतंस राव रघुनाथसिहाज्ञया त्रिपाठी संभूनाथ कृते कृष्णलीलायां शंखधर उद्धारनो नाम पच त्रिंशोध्यायः ।।३५।।

।। दोहा ।।

ह्याँ लगि वरन्यो दसम मे रामकृष्ण के ख्याल ।
विधि वस ते फिरि ह्वै गयो सभु नाथ को काल ।। १ ।।

समाप्तं ॥ शुभमस्तु ॥ सवत् १६२३ ॥ कार्तिक मासे शुभे कृष्ण पक्षे तिथौ एकादश्यां ११ शुक्रवासरे समाप्त भवति ॥ श्री महारानी श्री वडी दुलहिनि साहेब हेत पठार्थं शुभं ॥ लिष्यतं भंरोंदस कविसरेनी ग्रामा ष्यास्ति ॥

विषय—दशम स्कध भागवत की कथा का वर्णन।

रचनाकाल

साको बीति गयो तहाँ रस पर्वत श्री भूप।
सगुन उज्यारी पचमी भादौ मास अनूप॥

संख्या ३७७ग जानक चद्रिका, रचयिता—शभुनाथ, कागज—देशी, पत्र—४८, आकार—६॥ × ५॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—१०८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० प्रभुनाथ जी पाडेय, ग्राम—मऊ, डाक०—बेलवार, जिला—जौनपुर।

आदि—श्री गणेशाय नम. अथ यातक चद्रिका लिष्यते ॥

मेष वृष मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक सु धन मकर कुभ मीन जानिए। क्रमही . जानि औचर स्थिर दु स्वभाव पुनि एकहै पुरुष एक नारी पहिचानिए॥
. . . . (पढ़ने मे नही आता, अक्षर उड गए है)।

अथ त्रिशास

गुरु बुध कुज शनि शुक्र धरि तातर धरिए अक।
पच पच वसु मुनि विशिष क्रमते कहे निसक।५१
विषमरास के होइ जो क्रमते गनि एताहि।
समको उलटो जानिए सत कवि कहत सराहि।५२
पुनि असन की रीति सो टिकै जासुतर आइ।
ताही ग्रह की रासि को सो प्रगटत होइ जाइ।५३
विषम रासि की होइतौ विषम रासि को लेइ।
समको जो ग्रह होइतो समही मे मन देइ।५४

इति श्री शभुनाथ क्रिते जातक चद्रिकाया अमभावफलम् प्रथम प्रकासः॥

अत—

भोगी मानी धनी विनीत। आनद सहित अलापै गीत।
पूजै विप्र सदा गुरु देवा। करै जनक जननी की शेवा।
रूपवत अति परम उदार। रुचै सुगध कुसुम के हार।
जलमय होइ पाँचई वर्ष। अठई वरष वडे ज्वर कर्ष।
वरस वाइसौ मे दुषु पावै। पुनि चौवीस वरष जव आवै।
पूरव दिशा गमन तव होइ। गनिकै कहत गनक सव कोइ।
आश्वन शुक्ल द्वोज गुरुवार। नषत कृतिका कहत उदार।
सायकाल मरै नर सोइ। जो ससि मीन रासि को होइ।१२

इति श्री शभुनाथ विरचिते जातक चद्रिकाया नाम एकादश प्रकाशः सवत् १८८८॥

विषय—जातक चद्रिका भाषा (ज्योतिष विषय)।

संख्या ३७७घ मुहूर्त चिंतामणि या मुहूर्त मजरी, रचयिता—शभूनाथ कवि (स्थान—बैसवारा), कागज—देशी, पत्र—६८, आकार—८६/१० × ५९/१० इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—१६८३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८०३ वि०, लिपिकाल—स० १८५२ वि०, प्राप्तिस्थान—प० रामेश्वर त्रिपाठी महत, मोहल्ला—सूर्जपुर रायबरेली, जिला—रायबरेली।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥

सघन अघन के दलन को तुव समान को होइ।
हरज विनायक को हरै विघन विनायक तोहि॥ १॥

:o: :o: :o:

अति सुवेश मय आचरन वेशन को सिरताज ।
सब सुषकर वगिसर जहा वंश भूप को राज ॥ ३ ॥
:o: :o: :o:
प्रगट भयो तेहि देश मे जाको वेश प्रभाऊ ।
अरिकुल मरदन सुषसदन मरदन रंश्रा राउ ॥ ५ ॥
तेहि मरदाने राय के प्रगट भयो अचलेश ।
जाके गुन गन की कथा वरनि सकत नहि सेस ॥ ६ ॥
जेत पत्र जग जिन लयो सव समूह नसाइ ।
निज वसि करि तुरकान बल करेहु मुठी मे आइ ॥ ७ ॥
सभा मध्य वैठे हुते एक समै अचलेश ।
तिन कवि संभूनाथ को कीन्हो इहै निदेश ॥ ८ ॥
जैसे जातक चद्रिका करि दीन्ही करि नेहु ।
त्यों मुहूर्त चितामन्यो भाषा मे करि देहु ॥ ९ ॥
तिनको आयसु पाइकै तब कवि संभूनाथ ।
गनपति गिरिजा गिरीस को गुर को नायो माथ ॥१०॥
सवत वीति गए तहाँ अग्नि व्योम वसु चद ॥१८०३॥
ग्रंथ मुहूर्तमंजरी करी प्रगट सानंद ॥११॥

अत—अथ गृह प्रवेश विधि

॥ घनाछरी ॥

तानिए वितानि मुकतानि सो समेत गान मंगल के कानन सुधासी पीजियतु है ।
वेद धुनि सुनत नगर सुर पूजि गुरजन पुरजन सो असीस लीजियतु है ।
गनक चितेरे और लोगये घनेरे नेरे योहित पुरोहित दान दीजियतु हैं ।
विहसत वदन सुमन दुरदन चढि नूतन दसन कों गन कीजियतु हैं ॥१५॥

इति श्री मन्महाराजकुमार श्री अचलसिहाज्ञाया त्रिपाठी संभूनाथ विनिर्मितायां मुहूर्त-मजर्यां गृह प्रवेश प्रकरण समाप्त ॥ कवित्त सख्या ॥ ८८७॥

अथ आशिर्वाद ॥ घनाक्षरी ॥

जौलौ कौल नायकु कलानिधि कलपतरू कमठ की पीठि मे निवास जौलौ सेस को ।
देव मुनि मनुज दनुज गंधरव जौलौ मषन मे अग्रभाल पूजत गणेश को ।
जौलौ हिमगिरि पर गिरिजा समर्त्ता सभ जौलौ अमरावति अमल अमरेश को ।
मानसरवर जल प्रफुल्लित कौलौ जौलौं तौलौं राज राजे राजवशी अचलेश को ॥

॥१८५२॥ माघ शुक्ल सप्तम्या चद्रवासरे ॥ लिषित नंदकिसोर त्रिवेदी मिदं पुस्तकं ॥ यादृशं पुस्तकं द्रष्ट्वा तादृशं लिषितमया । यदि अशुद्धम शुद्धंवा मम दोषो न दीयते ॥१॥ श्री गणेश जू सहाइ सदाँ ॥ श्री महादेव जू सहाइ सदाँ ॥ रामच जू सहाइ सदा ॥

विषय—मुहूर्त चिंतामणि ज्योतिष ग्रथ का हिंदी मे पद्यबद्ध टीका ।

रचनाकाल

संवत वीति गए तहाँ अग्नि व्योम वसु चद ॥१८०३॥
ग्रथ मुहूर्तमजरी करी प्रगट सानद ॥११॥

संख्या ३७७ड. मुहूर्तमजरी, रचयिता–शभुनाथ, कागज—देशी, पत्र—६५, आकार–१२$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{4}{5}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११ परिमाण (अनुष्टुप)—१६०६, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८०३ वि०, लिपिकाल—स० १८८६ वि०, प्राप्तिस्थान —प० रामजियावन जी, ग्राम व पोस्ट–निगोहाँ, जिला–लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ मुहूर्तमर्य्यंज लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

सघन अघन के दलन कों तुंद समान को होहि ।
हरज विनायक को हरं विघन विनायक तोहि ॥ १ ॥
:o: :o: :o:
अति सुदेसमय आचरज देसन को सिरताज ।
सब सुख कर बगिसर नगर वयस नृपति को राज ॥३॥
अमल चरित तेहि देसको ज्यों सुरसरि को सोत ।
जहाँ धरम आचार सुष दिन दिन दूनो होत ॥ ४ ॥
प्रगट भये तेहि देस मे जाको देस प्रभाव ।
अरिदल मरदन सुखसदन मरदन रंया राव ॥ ५ ॥
तेहि मरदाने राय ते प्रगट भये अचलेस ।
जस कदंब जाके विमल वरनि सके नहि सेस ॥ ६ ॥
जयत पत्र जग चिन्ह लयो सत्रु समूह नसाय ।
निज बस करि तुरकारादल करचो मूठि मे आय ॥ ७ ॥
सभामध्य बंठे हुते एक समै अचलेस ।
तिन्ह कवि संभूनाथ को कीन्हो यहै निदेस ॥ ८ ॥
जंसे जातक चंद्रिका करि दीनी करि नेहु ।
सों मुहूर्त चिंतामनौ भाषा मे करि देहु ॥ ६ ॥
तिनके आयसु पाय कं तब कवि संभूनाथ ।
गणपति गिरिजा गिरीश को गुरू को नायो माथ ॥१०॥
सवत बीति गयो तहा अगिनि व्योम वसु चद ।
ग्रंथ मुहूरत मजरी करी प्रगट सानद ॥११॥

अंत—

॥ अथ प्रवेश विधि ॥

घनाक्षरी

तानिए वितान मुकुतान सो समेत गान मगल के कानन सुधासो वीजियतु है ।
वेद धुनि सुनत नगर सुर पूजि गुरू जन सो असीस लीजियतु है ।
गनक चितेरे और लोग है घनेरे जो हित पुरोहित न दान दीजियतु है ।
विहसत वदन सुमन द्विरदन्ह चढि नूत सदन को गमन कीजियतु है ॥११॥

इति श्री मन्महाराज कुमार श्री अचलसिंहाज्ञया त्रिपाठी सभूनाथ विनिर्मितायां मुहूर्त-मंजर्य्यां गृह प्रवेश प्रकरणम् ॥१०॥ सवत् १८८६ अश्विन मासि कृष्ण पक्षे तिथौ अष्टम्यां सोम वासरे मिद पु० समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥ पुस्तकमिद लिखित रामवकस त्रिपाठी पठनार्थं कुरसति त्रिपाठिना ॥

विषय—ज्योतिष विषयक सस्कृत ग्रथ मुहूर्त चिंतामणि का हिंदी अनुवाद ।

रचनाकाल

३ ० ८ १
संवत बीति गयो तहा अगिनि व्योम वसु चद ।
ग्रथ मुहूरत मजरी करी प्रगट सानद ॥११॥

संख्या ३७८क काली विजय, रचयिता—शभूनाथ शुक्ल, (स्थान—ग्राम—छपिया), कागज—देशी, पत्र—६०, आकार—१०॥ × ६॥ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण—(अनुष्टुप)—१६२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६१२ वि० (?), लिपिकाल—स० १६३५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० सरजू प्रसाद दुबे, ग्राम—लच्छीपट्टी, डाक०—मेगरामऊ, जिला—जौनपुर ।

आदि—श्री भगवती काली जी की क्रिपा से

सुकुल वंश भव गर्ग कुल छपिया ग्राम निवासि
शंभुनाथ काली विजय ग्रंथ जगत परकासि
काली विजय
मतवं सुवह् सॉविक सीतापूर में छापी गई (मुनशी कृशनलाल साहिब की फरमायश से)
सूचीपत्र
छनद हरगीत
भुवनेश्वरी भुवनेश शङ्कर चरण पङ्कज ध्याइके
श्री कृस्नलाल विशालमति प्रियबाल हित सुखराइ के ।
काली बिजं छाया करावत गुरो अज्ञा पाइके ।।
द्विज शंभुनाथ कृपाल स्यामानाथ शिवमुन गाइके
दोहा
रम्य ग्रंथ काली विजय जेती कथा वितानि ।।
शंभुनाथ ताकर लिखत सूचीपत्र वखानि ।।
चौपाई
प्रथम देव काली गुन गाथा ।। वर्णन कियो राधिका माथा ।।
पाठेश्वरी चरित पुनि वर्णा ।। जो प्रतिपाले भूपति कर्णा ।।
वधी चंदन केरि बड़ाई ।। वर्णेहु इंद्र यथा सुखपाई ।।
वर्णेउ जोग माहि सभ भोगा ।। प्रिय मातहि जेहि सुनि बुध लोगा ।।
तव नवरात्र केर इतिहासा ।। वर्णेउ मुनिते ऋषि दुर्वासा ।।
कामबीज महिमा तंहगाई ।। जेहि जप सभ बांगछित फलपाई ।।
राज सुदर्शन चरित वषाना ।। देवीमय जो कीन जहाना ।।
काली थाप कोन सभ मामा ।। जीति असंख्य राज संमामा ।।
पुनि भाषे नवरात्र विधाना ।। जेहिकरि मनुज होइ सुखबाना ।।
पुनि मुनि कहे शुभा शुभ कर्मा ।। श्री वसिष्ट गुनि नृपहि अधर्मा ।।
अखय नरक वर्णन तव कोना ।। जेहिते डरत सुधर्म प्रवीना ।।
तव वर्णेउ उद्रान्त वडाई ।। जेहि विधि शिवनिज सुतहि सुनाई ।।
छठी व्रत तव कहेउ कृपाला ।। जासे त्रियसुष पावें बाला ।।
पुनि शीतला देवि व्रतगावा ।। जगत प्रगट जेहि केरि प्रभावा ।।
दोहा
शंभुनाथ द्विज कहेउ तव दश विद्या शत नाम ।
सुने पढे जो भुवन मह परिपूरन सम काम ।।
:o: :o: :o:

अंत—
दोहा
श्री वसिष्ट मुनि कहि नियस भूष सुदर्शन पास ।
सो मुनि नृप हर्षित भये जानिन नृपति शुवास ।
जे जन श्री काली विजं पठिहै करि विश्वास ।।
रिधि सिधि कीरति संपदा पैहै विना प्रयास ।
पढिहै जे काली विजै पलिहै ताहि हमेस ।।
स्यामा वसिहै तेहि हृदै हरिहै विघुन गनेस
छन्द
हर्ष कर वर्ष वर्षेस से अर्क भिमात्य वैसाष रवि सनुवारा ।।
संभुतिथियावनीसंव मनभावनी सांम्वशिव प्रीतकारा ।।

॥ श्री ॥

बब्बमह धारा धन लब्धलब्ध वर्ण वर्णितपसो मणि
तपरिणत त्रिवेणी तदात्मज शम्भुनाथ कृते दुर्गाभक्ति सुधार्णवे ॥

तमाम हुई ॥ स्मवत १९३५ रोज शेमवार ॥

विषय—काली विजय वर्णन ।

रचनाकाल

हर्ष कर वर्ष बसैसर्स अर्कमिमात्य वैसाष रवि सनुवारा ॥
समुतिथियावनी सेव मनभावनी साम्वशिव प्रीतकारा ॥

संख्या ३७८ख. काली विजय, रचयिता—शभुनाथ शुक्ल 'द्विज', (स्थान—छपिया शुक्ल, बस्ती), कागज—देशी, पत्र—५६, आकार—६॥ × ६ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप)—१५७१, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० केदारनाथ जी शुक्ल, ग्राम—छपिया शुक्ल, डाक०—हरैया, जिला—बस्ती ।

आदि—श्री काली विजय लिखते श्री गणेशाय नम. ॥

दोहा

बंदौ चरण विरचिके यो भव निधि करतारु ।
जो प्रगटेउ षल सज्जनहि गरल सुधा तन धारु ।
काली कुल सर्वस्व लषि शक्ति सहिता जानि ।
शंभुनाथ काली विजय भाषा कथा पुरानि ।
पूछेहु श्री यदुराज से श्री राधा महरानि ।
केहि विधि काली अवध वसि रघुहि दियो वरदानि ।

चौपाई

केहि विधि मानति निज जन स्यामा । कवते कौन अवधपुर धामा ।
केहि बल श्री रघुशंव नरेशा । जीति सुजस कीनेहु सबदेशा ।
कवतं शंव न प्रथम प्रशसी । आदि शंव भैं रघु रविवंशी ।
शंव शिरोमणि राम कहावैं । तुम शाक्त वर वुध जिमि गावैं ।
लस मूर्ति शिव पावेहु रामा । जीतेहु रावण कर सग्रामा ।
शिवहि सुनावहु भक्त पियारा । रावणा शंव समर कस हारा ।
तव श्री कृष्ण कहेउ सुनुरानी । भक्ति वश्य शिव आदि भवानी ।
अति उदार शिव कामि निकाली । भक्ति गह गुनि धावहि हाली ।
दान देत कालिहि नही बेरी । देअ अभय वर जन कह घेरी ।
शील रूप अव दया अधारा । काली पालति यह ससारा ।

दोहा

शंवराज रघुवश जस पूछेहु प्राण पियारी ।
ताकर हम वर्णन करत सुनु वृषभानु कुमारि ।

अंत—

छन्द चार

असख्य सौख्य दायिनी पाप नासिनी ।
असंख्य देव मापिनी असख्य पुन्य भासिनी ।
असख्य दुख हारिनी असख्य दास तारिनी ।
असंख्य कार्य सिद्धिदा असख्य वित कारिनी ।
अनत देव कामिनी अनत देव कामदा ।
अनंतदेव नामिनी अनंत देव धामदा ।
अनत कांति सालिनी अनंत साति सिद्धिदा ।

अनंत संत पालिनी अनंत वृद्धि वृद्धिदा ।
अनंग बान वासिनी अनंत बान तेजदा ।
अनंग बान मोहिता अनंग बान सेजदा ।
अनंन्द वृंद दायिनी असंद बुद्धि वृद्धिदा ।
असेष दुःष नासिनी असेष सौष्य रीद्धिदा ।

—अपूर्ण

विषय—काली (देवी) का युद्ध मे विजय प्राप्त करना तथा यश वर्णन आदि ।

संख्या ३७८ग. काली विजय, रचयिता—शभुनाथ, (स्थान—जनश्रुति—छपिया ग्राम, बस्ती), कागज—देशी, पत्र—७२, आकार—१२ X ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—२१६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६१३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री डा० अबिका प्रसाद सिंह, ग्राम—पिपरा ससारपुर, डाक०—वाल्टरगज, जिला—बस्ती ।

आदि—अशंभुनाथ कृत काली विजय ।। श्री गणेशाय नम. ।।

छन्द हरिगीता

भृति वक्ष दक्षिण कालि कांश भवा समक्षिति पालिका ।
अघ वैरि कौरव सूर पिसूर विदेह सूर रति वालिकाम् ।
प्रणमामि राम वधूम् महं प्रणतार्ति सोच विमोचनी ।
भृत पकं जाल प्रचारु पकज लोच नीम । १
:o: :o: :o:

दोहा

बन्दौ चरम विरचि के जो भाव निधि करतारु ।
जो प्रगटेउ खल सज्जर्नाह गरल सुधा तम धारु ।
काली कुल सर्वस्व लखि शक्ति सहिता जानि ।
'शमुनाथ' 'कालीविजय' भाषति कथा पुरानि ।
पूछेहु श्री यदुराइ से श्री राधा महरानि ।
केहि विधि काली अवध बसि रघुहि दियो वरदानि ।।

चौपाई

केहि विधि मानति निज जन श्यामा । कवते कौन अवधपुर धामा ।
केहि बल श्री रघु शंव नरेसा । जीति सुयश कीन्हे सबदेशा ।

अंत—

सोरठा

काली नाम हजार दस विद्या सतनाम जुत
जे पढ़िहै ससार ते पैहै चारिव फलो ।

छन्द

सुत सपदा सुख पाइहै निति छाइहै तन छेम सों ।
श्री वालिका जस नाम जे जन गाइहै नित प्रेम सो ।
कहि शंभुनाथ महेश श्यामा पालिहै तेहि व्यालसो ।
तेहि दर्श सोमक रोग भागिहैं होइ नहि उर काल सों ।
ध्रुव साधि सुत तव जनक सो अप मृत्यु बस बन मे मरे ।
वड़ शंव लखि तेहि नारकी जन नरक सेइ तनि सरे ।
रघुवंश साक्त वतंस तेहि कह श्वास किमि नृप नर्क सो ।
अंधकार को उरहोत क्यो जन जोउ होतक अर्कसों ।

दोहा

:o: :o: :o:

पढ़िहै जे काली विजय पलिहैं ताहि महेश ।
स्यामा बसिहै तेहि हृदं हरिहै विघ्न गनेश ।

:o: o :o:

संम्वत् १९१३ साल मिती

विषय—काली विजय वर्णन (संस्कृत ग्रंथ देवी भागवत के आधार पर)। शुभ निशुभ तथा कालिका के युद्ध का वर्णन।

संख्या ३७८घ. तारा विजय, रचयिता–शभुनाथ, (स्थान—जनश्रुति–छपिया ग्राम), पत्र—२९, आकार—१२ × ६।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०८ वि०, लिपिकाल—सं० १९०८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री अंबिका प्रसाद सिंह, ग्राम–पिपरामसारपुर, डाक०–वाल्टरगंज, जिला–बस्ती।

आदि—श्री गणेशाय नम. ।।

दोहा

सुनेहु महा लक्ष्मी चरित विध वासतो कीर्ति ।
कहहु नाथ लरा सुजस लगी मोहि बडि प्रीति ।
स्यामा केहि वारन लई श्री तारा अवतार ।
मोहि सुनाई कृतार्थ करु नाथ मृकाण्डु कुमार ।

चौपाई

सुनि मृकाण्डु सुत मानि हुलासा । बोलेहु सुनहु सत दुरवासा ।
तारा चरित अगम्य अपारा । कहि न सकै जे बदन हजारा ।
बरणेहु कछुक बुद्धि अनुसारा । जेहि विधि भाषेहु नद कुमारा ।
सुभ निसुभ तत्य हकारी । कीन्ह महातप विधि व्रतधारी ।
पच सहस्र वर्ष तेहि वीता । ब्रह्महि सेराहि प्रेम पुनीता ।
सेवा बस ब्रह्मा तह आए । वरमागहु अस वे न सुनाए ।
सभु निसभु परे विधि पाये । पूजाकरि बहु स्तुति गाए ।

:o. o. .o:

दोहा

ब्रंह्मा बोले सुभते सेवक जानि दुलारि ।
हमरे सिव हरि के किये मृतु न होइ तुमारि ।।

अंत—

छंद छप्पै

विधु दिन मास असाढ सुदी नवमी तिथि चित्रा ।
सम्वत् सत् बत्तेस आठ अति सुभग विचित्रा ।
शभुनाथ गुरु कृपा रचेहु सामवी चरित्रा ।
यह दुर्गा भक्ति सुधार्णव ग्रथ पूर्ण विरचित चयत ।
सभ सिद्धि रिद्धि जस वृद्धि प्रद जपद देव काली अयत ।

दोहा

तुलसी कृत रामायनहि सुनत जथा हनुमान ।
सोस स्यामा शिव सुजस सुनि करु भैरव कल्यान ।

:o: :५ :o:

इति श्री शभुनाथ कृते दुर्गा भक्ति सुधार्णव तारा विजय वर्णनोनाम पचमस्तरंग ।

विषय—देवी भागवत के आधार पर सुभ निसुभ के साथ तारा देवी के युद्ध और उनकी विजय का वर्णन किया गया है।

संख्या ३७८ङ. देवाज्ञाभरण, रचयिता—शंभुनाथ, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—१०॥ × ४॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५, परिमाण (अनुष्टुप)—१०५, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि-कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० विधि नारायण जी पांडेय, ग्राम—गंगिया, डाक०—महसो, जिला—बस्ती।

आदि—

. . . .
देवदत्त गुरु चरण युग अब वन्दौ कर जोरि।
जेहि को मानेउ प्राण प्रिय सुत गिरि राजकिशोरि।
प्रथमहि माखेउ भाव फल जेहि विधि कहेउ गणेश।
जेहि लषि भावं जोतिषी जन सुष दुष उपदेश।
सौम्य स्वामि युत दृष्ट जो भाव वृद्धि कहु तासु।
पाप विलोकित. . . . . ।
:o: :o: :o:
श्री गणेश शुकदेव मत जो भाषेउ श्रुति माहि।
'शंभुनाथ' शिशु बोध हित भाषा विरचत ताहि।
लग्न मूर्ति तनु उदय वपु प्रथम भाव को नाम।
कोश अर्थ धन दूसरो गेह जानु मति धाम।

अंत—

आपनो गेह सम पूर्ण बल खेचरो त्रिमित्र गृह अर्द्ध बलवान भोगा।
शत्रु गृह मेषचर एक चरणांश बल अस्तगत खेट नहि वीर्य योगा।

दोहा

श्री गुरु राम दयालु प्रभु चरण सरोरुह ध्याइ।
शंभुनाथ यह ग्रंथ मो रचि संज्ञा अध्याइ।

इति श्री मंत्राधाराधन लब्ध लब्ध वर्ण वर्णित प्रकाण्ड यशः काण्ड मंडित पंडित त्रिवेणी दत्तात्मज शंभुनाथ कृते देवाज्ञाभरणे संज्ञाध्याय . .

—अपूर्ण

विषय—ज्योतिष विषय वर्णन।

संख्या ३७८च. प्रबोध पारिजात, रचयिता—शंभुनाथ, निवासस्थान—छपिया ग्राम, कागज—देशी, पत्र—४८, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—१४४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६०७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री अंबिका प्रसाद सिंह, ग्राम—पिपरा समारपुर, डाक०—वाल्टरगंज, जिला—बस्ती।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥

दोहा

मारकंडेय पुराण मत देषि ब्रह्मवैवर्त।
शंभुनाथ दुर्गा चरित किछु एक वर्णन वर्त।

सोरठा

विश्वामित्र मुनीस कहेउ परासर सुनुते।
दुर्गा केर चरित्र मोहि सुनाइ पवित्र करु।
जे दुर्गा के दास त्रास हरन भव फास को।
तेहि को सुजस प्रकास कृपा रासि प्रभु सरण मुनि।

छन्द हरगीत

जो नाम दुर्गा केर जो जस काम कर सिय राम के।
तुम कहहु ताकर अर्थ नाम समर्थ हो तप धाम के।

जो जपिसि जो फल पाइ नाथ बुझाइ मोहि सुनाइये ।
द्विज शभुनाथ महेश दुर्गाभक्त मोहि बनाइये ।

दोहा

दुर्गम दैत्य विदारिणी तेहिते दुर्गा नाम ।
जो दुर्गति हर लोक को पूर्ण करत सम काम ।

अत—अत विप्र दपती गये महेश गेह को ।
शंभुनाथ शभु नेह है फलो सुदेह को ।
नित्य जो प्रबोध पारिजात को गाइहै ।
पुत्र पौत्र कीर्ति सपदा सु पाइहै ।
ताहि चित्त मो बसे सदा उमा महेश्वरो ।
पालिहैं सदैव विघ्न घालिहै गणेश रो ।

इति श्री मदषरणवो मडित पडित त्रिवेणी दत्तात्मज शभुनाथ कृते . . . प्रबोध पारिजात तृतीय स्तरग

·०·　　०　　·०:

वर्ष वसंस स सत्ममित हर्ष कर खास तपमास तिथि शंभु केरी ।
शुक्ल दल माहि दिन शुक्र शिव धान धर ज्ञान गुनखान जह रिद्धि घेरी ।
ग्राम मसार पुर धाम जेहि के रहै साभवी नाम पर जासु नेहा ।
ग्रथ परबोध परिजात यह पूर्ण भो भूप भैरो वाम सिह गेहा ।

.०.　.　०.　:०:

छद हरिगीतिका

रस चद्र नभ नव भूमि समित सौम्य सवत् मास मे ।
सुदि पौष तिथि चतुराननी शशि दिवस शिव व्रत खास मे ।

विषय—मार्कडेय पुराण ब्रह्मवैवर्त खड के आधार पर दुर्गा चरित्र वर्णन ।

सख्या ३७८छ विद्याविलास, रचयिता—शभुनाथ, निवासस्थान—छपिया ग्राम, कागज—देशी, पत्र—११२, आकार—१२॥ × ६॥ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—३३६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६०३ वि०, लिपिकाल—स० १६१३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री अबिका प्रसाद सिह, ग्राम—पिपरा समार पुर, डाक०—वाल्टरगज, जिला—बस्ती ।

आदि—शभुनाथ कृत श्री विद्या विलास ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

दोहा

महाकाल सहिता मत लखि देवी पौराण ।
शभुनाथ बरनत करत श्री विद्या उपख्यान ।
श्री विद्या को गुन अमित हरि विधि सकै न गाइ ।
शभुनाथ तेहि कहतु है बाल रीति मत लाइ ।

चौपाई

एक समय श्री रिषि दुरवासा । कहेउ मृकंडु तनय ते भासा ।
स्यामा श्री शकर को व्याही । गौरी शिव किमि जग कहै ताही ।
शकर सत्य गुनी निरवानी । कवते भये रजोगुन ग्यानी ।
केहि विधि श्री विद्या अवतारा । अद्या धरि राजसी आकारा ।
कहिए नाथ तौन इतिहासा । जेहि सुनि वढै भक्ति विस्वासा ।
मार्कंडेय सुनो रिषि वातें । श्रद्धा देषि प्रेम रस माते ।
लागे जथा कहन मृदुवानी । दुर्गा भक्ति सुधा रस सानी ।

अत—

छन्द हरिगीत

करि प्रेम श्री विद्या विलास कथा सुनेम सुने कहे ।
नव निद्धि श्री जस सिद्धि वुद्धि समृद्धि मुक्ति फलो लहे ।

द्विज शंभुनाथ विनिर्मिता सुनि साम्य शिवहित मानिहै ।
पितु मातु को सुतरात सुत करवात ज्यौ सुखदानि है ।

दोहा

श्री विद्या जस गाइहैं जे जन सुने हमेस ।
भैरव करिहै तेहि अभय हरिहै विघुन गनेस ।।

इति श्री मत्प्रस्त निस्तल जसास्तोम प्रशिस्त पंडित० त्रिवेणी दत्तात्मज शंभुनाथ कृत दुर्गा भक्ति विद्या विलासो नाम द्वितीयोस्तरंग

छन्द हरगीत

भुवनेस्वरी भुवनेस शिवपद भक्ति जेहि हिय सालनी ।
कवि गोत सोल सुभाव कीर्ति सुभाउ कुँवरि नृपालिनी ।
कल हस कल अवतंस भैरो वकस सिह कुआर मो ।
यह ग्रथ श्री विद्या विलास प्रपूर्ण भो गुरुवार मो ।

दोहा

संवतसर वनैस सै तीनि सूक सुक मास ।
पूर्ण दशहरा को भयो श्री विद्या जस रास ।
:o: :o. :o:
सवत वन्नैस से रह्यौ अरु तेरह सुभ मान ।
रितु वसत अरु पचमी वार सुक को जान ।

इति श्री विद्या विलास सपूर्णम्

विषय---देवी भागवत के आधार पर देवी के यश तथा महात्म्य का वर्णन किया गया है।

रचनाकाल

संवत सर वन्नैस सै तीनि सूक सुक मास ।
पूर्ण दशहरा को भयो श्री विद्या जस रास ।

सख्या ३७८ज. शिवतत्व प्रकाश, रचयिता--शभुनाथ द्विज, निवासस्थान---छपिया ग्राम (बस्ती), कागज---देशी, पत्र---७५, आकार---१० X ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)---२६, तमन्नाई (शहर लखनऊ से प्रकाशित), परिमाण (अनुष्टुप)---२६२५, पूर्ण रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, रचनाकाल---स० १६०७ वि०, मुद्रणकाल---स० १६३८ वि०, प्राप्ति-स्थान---श्री प० गोमती प्रसाद जी, ग्राम--विशुनपुरा, डाक०--कप्तानगज, जिला--बस्ती ।

आदि---श्रो श्री गणेशाय नमः

चतुःपदी छद

शिव भक्ति अगारा परम उदारा द्विल मुखराइ कुमारा ।
गुरु आज्ञामानी द्विज सुखदानी कृष्न लाल नृप प्यारा ।
दुर्गा शिव ध्याई छाप कराई यह शिवतत्त्व प्रकाशं ।
सीतापुर ग्रामा जपि शिवनामा शभुनाथ सुख भासं । १

यह शिवतत्व प्रकाश मो कहो जतिक इतिहास ।
शंभुनाथ ताको लिखत सूची पत्र प्रकाश ।
श्यामनाथ शिव अष्टकहि प्रथमहि वरण कीन्ह ।
शंभुनाथ श्री शंभु प्रिय जेहि आदरहि प्रवीन ।
:o: :o: :o:
वन्दौ श्री गुरु शंभुपुर काशीपुरी समान ।
जहं विश्वेश्वर नाथ सो श्री गरु दयानिधान ।
कर भेवर अरु अभय लै करत जगत कल्यान ।
वचन सुधा मुख शशि श्रवत हरत तिमिर अज्ञान ।
:o: :५: :o:

सो०

शिवगुन वर्णहु व्याज जो ब्रह्मोत्तर खंड में ।
यह शिवतत्वप्रकाश 'शम्भुनाथ' तेहि लखि कहत ।

अंत—   दो०

प्रेम नेम न सुनेहु जे यह शिवतत्वप्रकाश ।
चारिउ फल ते पाइहैं मिटहिं पाप दुख पाश ।
साल वसुंस शत रुद्र मित्त कार्त्तिके मासि सुदिशी शुक्रवारे ।
ग्रथ शिवतत्वप्रकाश यह पूर्ण भो ग्राम ससार पुर सद्धि वारे ।
राज राजेश भैरव सदृश राजहीं साज कुल शील शशि शीस धारे ।
भूप कल हंस शुभ वस अवतंस कुलहस भैरव वकस सिंहद्वारे ।

इति श्री मद्राधाराधन लब्ध लब्ध वर्ण वर्णित प्रकाड पंडित त्रिवेणी दत्तात्मज शंभुनाथ कृते दुर्गा भक्ति सुधार्णवे शिवरात्रि कथा वर्णनम नाम सप्तमस्तरगः ॥श्री॥ सवत् १६३८ वि०

विषय—शिव तथा दुर्गा भक्ति विषय वर्णन ।

सख्या ३७८क. शिवतत्त्वप्रकाश, रचयिता—शभुनाथ, निवासस्थान—छपिया ग्राम (बस्ती), कागज—देशी, पत्र—६६, आकार—१२॥ × ६॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—२६७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६०७ वि०, लिपिकाल—स० १६१० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री अंबिका प्रसाद सिंह, ग्राम—पिपरा ससारपुर, डाक०—वाल्टरगज, जिला—बस्ती ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

दोहा

वन्दौ श्री गुरु शभुपुर काशीपुरी समान ।
जह विस्वेस्वर नाथ सो श्रीगुरु दयानिधान ।
कर मे वज्र अरु अभय लै करत जगत कल्यान ।
वचन सुधा मुख ससि श्रवत हरत तिमिर अज्ञान ।
:o: o   :o:

सोरठा

सदानद आचार्ज विरचित वाख्य विलास जो ।
बैद्यनाथ सम आर्ज स परदूषण रुज हरण ।
शिवगुण वरणहु व्यास जो ब्रह्मोत्तर खड मे ।
यह शिव तत्व प्रकाश शभुनाथ तेहि लषि कहत ।

चौपाई

कृष्ण कथित शिव कथा बितानी । मार्कंडेय सुना जब ज्ञानी ।
गए बसी विध्याचल माही । ध्यावैं शिव कह सुरसरि पाहीं ।
विध्याचल मे करं निवासा । श्यामाशकर कथा प्रकासा ।
तह पहुचे श्री रिषि दुर्वासा । शकर अस तेज रवि भासा ।

अंत—   छद झूलना

संभु की कीर्त्ति यह प्रीति कै जे सुनै भक्त के रीति तेहि चित्त आए ।
करन सब जोग कै इद्र सम भोग कै राज राजेस सो वित्त पाये ।
भान सो तासु छवि तेज बाढ़ै नितैं होइगो काम सब सिद्धि दाता ।
बुद्धि की वद्धि जस निद्धि सो पाइहै सर्वदा समंदा सर्व त्राग ।
कालिका बालक संव जन पालक नौमि श्री भैरवं चद्र भालं ।
आपु दुखारन भक्त जन तारन सर्व सुख करन सुकृत पालं ।
बारमास्यं ॐप्रभु ज्ञान प्रानवद विघ्न हरति सवयं सुभेसं ।

श्री महेस प्रियं बाल सूर्ज श्रियं नौमि देवी सुरां श्री गणेशं ।
साल वन्नैस सत रुद्र मित कार्तिके मासे सुदि चौवसी सुक्रवारे ।
ग्रंथ शिवतत्व परकास यह पूर्णभो ग्राम ससार पुर सङ्कि वारे ।
राज राजेश भंरो सदृश राजहीं साज कुल सील ससि सीस धारे ।
भूप कलहंस शुभ वंस अवेतंसकुल हंस भंरो बकस सिंह द्वारे ।

इति श्री मव. . .श्री त्रिवेणी दत्तात्मज शंभुनाथ कृते दुर्गा भक्ति. . .शिव रात्रि कथा वर्णनं सप्तमस्तरंगः

:o: :o: :o:

संवत बनइस सं बस भाई । कंधई लाल लिखेउ सुखदाई ।

विषय—शिवरात्रि कथा तथा माहात्म्य वर्णन ।

रचनाकाल

साल वन्नंस सत रुद्र मित कार्तिके मासे सुदि चौवसी सुकवारे ।

संख्या ३७६. प्रदोष व्रतकथा, रचयिता—शभुनाथ द्विज, कागज—देशी, पत्र—१३, ग्राकार—६ × ४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (ग्रनुष्टुप)—२५१, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १६१४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० दशरथ प्रसाद जी, ग्राम—बेलघाट, डाक०—पैकवलिया, जिला—बस्ती ।

ग्रादि—

. . . . दण्डै ।
चाहै जो गिरि गिरि शिव मण्डै ।
चहै काल जो हनै प्रचण्डै ।
रहि प्रदोष जन रहै ग्रखण्डै ।

उसो चहै जेहि पन्नगराशी । चहै देन जो धल ठग फाशी ।
जरन लगें जे जन वन दावा । सोउ बचं शिव भजन प्रभावा ।
ग्रपर एक इतिहास बखानौ । जेहि सुनि बढ़ं भक्ति विज्ञानो ।
रहै विदर्भ देश एक राजा । नाम सत्यरथ भट शिरताजा ।
राज भोग कीनेउ बहु वर्षा । पालेहि प्रजा रहे सहर्षा ।
वृद्ध वय क्रम तेहि कर ग्रावा । तेहिपुर चढ़े शत्रु करि दावा ।

दोहा

भूप सत्यरथ केर ग्ररि शाल्व राज बरजोर ।
सो घेरेउ वैदर्भपुर रोर भयो चहु ग्रोर ।
निज परजन कर दुःख लखि लड़े सत्यरथ वीर ।
कटक विकट बहु भट कटे हटे न ठटे ग्रमीर ।

चौपाई

तब धो भूप लड़े परिचारी । मारेउ साल्व ताहि तरवारी ।
जूझि सत्यरथ गे सग्रामा । लं ग्रपसरा गई सुर धामा ।
शाल्व विदर्भ नग्र बसि लीना । रोवहि नर तेहि नगर मलीना ।
सतिवती तेहि नृप कर नारी । गर्भवती तेहि भई दुखारी ।

:o: :o: :o:

वैठि सत्यरथ भामिनी विमल सरोवर तीर ।
विधिवस तहं प्रेरण कियो रानी प्रसव समीर ।

ग्रंत—चतुरग संग तुरंग राजत रंग मत्त मतंग मा ।
वइदर्भ पुर गे हर्ष करि दुर मर्ष नांहि हनि जंग मा ।

४५

तब सत्यरथ सुत राज पायहु कीर्ति छायहु लोक मा ।
निज मातु मानि उमं उमा सम जी प्रतोषेउ शोक मा ।
निज भ्रात शुचि व्रत कांहि जानं शभु भक्ति हृदं धरो ।
कहि शभुनाथ प्रदोष व्रत सुरवृक्ष समफल को फरो ।

दोहा

दश हजार मित वर्ष लगि कीन ग्रकटक राज ।
धर्मगुप्त शुचि व्रत दोऊ शैवन के शिरताज ।
ग्रशुमती सग राज्य सुष कीनेउ इंद्र समान ।
धर्मगुप्त राजेंद्र वर ग्रन्त पाइ निर्वान ।

सोरठ

शंभ भक्ति मनि धारि कथा सुनेहु प्रदोष व्रत ।
ते पैहैं फल चारि शभु प्रेम मनमो वढं ।

प्रदोष कथा समाप्ति पौष कृष्ण ११ समत् १६१४ ॥

विषय—विदर्भ नगर के राजा सत्यरथ से शाल्व के युद्ध का वर्णन । सत्यरथ की मृत्यु तथा व्रत मे शिव भक्ति के कारण सत्यरथ के पुत्र धर्मगुप्त न पुन विदर्भ राज्य प्राप्त कर राज्य किया ।

शिव भक्ति तथा प्रदोष व्रत कथा वर्णन ।

सख्या ३८० धर्मसार, रचयिता—शिरोमनि दास, कागज—देशी, पत्र—४१, आकार—१०$\frac{4}{5}$ × ६$\frac{6}{10}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—१०६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर (बडा मदिर), चूडीवाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—श्री वीतरागाय नम ॥ ग्रथा धर्म्मसार ग्रथ भाषा लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

प्रथम प्रनमि जिनदेव को बहुरि प्रनमि सिधराय ।
साध सकल के चरन को प्रनमो सीस नवाय ॥ १ ॥
नमो जिनेस्वरदेव कं जगत जीव सुषकार ।
जस प्रसाद षटपद पुलं लहिए वृद्धि अपार ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

वीर जिनेस्वर पुनि वदेव । इद्र नरिद्र कर तित सेव ॥
ग्ररु वद्दतु ह्वं गए जिनराय । सुमिरत जिनके पाप नसाय ॥ ३ ॥
वर्तमान जे जिनवर ईस । करजोरे निज नाऊ सीस ॥

अत—

जे नर धरमसील मन लावं । धर्मसार सुनि कं सुष पावं ॥४०॥

॥ दोहा ॥

धर्मसार सुवर महा सव ग्रथन मे सार ।
जो चित दे वाचं सुनं सो उतरं भव पार ॥४१॥

इति श्री धर्मसार ग्रथेन भट्टारक श्री सकलकीर्ति उपदेस तम पडित सिरोमनिदास विरचिते श्री तीर्थंकर के पच कल्यानक गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वान पच कल्याणिक ग्रंधनेक प्रश्न करर्णनो नाम सप्तमोधिकार सधि ॥ ७ ॥ सपूर्ण इति श्री धर्मसार भाषा ग्रथ संपूर्ण सुभं भूयात् मंगल ददात् ॥ ग्रसाढ़ मासे सुकल पक्षे तिथि द्वितियायां सवत् १८६४ दिन मंगरवार को संपूर्ण भया लिषित पुस्तक बिद्रालाल पुत्र तस्यात्मज रतनलाल मुसाहेव गज के रहनेवाले सो लषनऊ मे ग्राय श्री नेमीनाथजी के मदिर मे धर्मसार ग्रथ संपूर्ण किया सुभमस्तु ॥ ग्रपने पठन ग्रर्थ लिषा........

विषय—जैन धर्म का सार वर्णन।

संख्या ३८१. अवतार चरित्र, रचयिता—सिव (?), कागज—देशी, पत्र—८, आकार—७६/१० × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—१२६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥

॥ दोहा ॥

पुर्ष सीधी परकास निसि प्रगट बराबर नाथ।
रघुकुल मनी मम स्वामी कही सीव नाउ माथ॥
नीज धर्म नाही समुझही ग्यानी। प्रभु पर मोह धरही इमी स्वामी।
जथा गंगन घट पटल नीहारी। झापही भानु कहही कुविचारी॥
चितवत लोचन अगुली लाए। प्रगट जुगल ससी तेही के भाए॥
उमा राम बीषई अस मोहा। नभ तम धूंम धुरी जीमी सोहा॥
बीषए करत सुरजीव समेता। सकल एक ते एक सचेता॥
सब कर धर्मप्रकासक जोई। राम अनादी अवधपती सोई॥
जगत प्रकास प्रकासक रामु। माआधीस जगत गुन धामु॥
जासु सत्यता को जग माआ। भा सोइ सत्यइ बम्ह सहाआ॥

अंत—

तब पुनी धरेउ कुंभ औतारा। मही वुडत हरी जगही उबारा॥
हरीनाकस भं अतीबल भारी। सप व्रह्म धरे बनवारी॥
तब पुनी जाए ताही कह मारा। नष चढाए लीन्ह मही भारा॥
बहुरी दोसर हरीनाकस भअऊ। जन प्रहलादही अति दुष दयऊ॥

॥ दोहा ॥

धरे रूप नर सीह हरीनाकस नर सो हातेऊ।
राषे जन को सीव प्रभु भजन दारुन बीपती॥

विषय—भगवान के चौबीस अवतारों का संक्षिप्त वर्णन।

संख्या ३८२. अलंकार शृंगार टीका सहित, रचयिता—शिवदास, कागज—आधुनिक पीला, पत्र—२, आकार—१३ × ८६/१० इंच, परिमाण (अनुष्टुप)—७८, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्यपद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६४२ वि० के लगभग, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्णबिहारी जी मिश्र, ब्रजराज पुस्तकालय, गधौली, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ अलंकार शृंगार लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

विघन हरन गज मुख धरन मोद भरन जग आस।
देहु बरन भूषन करन चरन शरन शिवदास॥ १॥
सुने ग्रंथ कवितान के अलंकार बहु भाय।
तिनही को मत पाय कै बरनत बुद्धि उपाय॥ २॥
सबं रसन मं कहत कवि अलंकार निरधारि।
पं सरसावत रस सरस बुध बहु वित शृंगार॥ ३॥
जैसे भूषन के सजे सुंदर सरसं जोति।
तैसे कविता की प्रभा अलंकार ते होति॥ ४॥
केते सरस उदाहरन कीन्हे मति अनुसार।
नाम धरयौ या ग्रंथ कौ 'अलंकार' शृंगार॥ ५॥

अथ अलंकार लक्षण

॥ दोहा ॥

शब्द अर्थ की चतुरई रस पोषक दरसाय।
अलंकार तासो कहत सकल महाकवि राइ॥ ६॥

अथ उपमा लक्षण

कह्यौ भांति शोभा जहा दुहू एक सी होइ ।
उपमा बरनत है तहाँ अलंकार कवि लोइ ॥ ७ ॥

॥ वार्त्तिक ॥

उपमा को अरार्थ रूप कहिये उपमान ताको मा कहिये शोभा सो उपमेय मे हुई ॥

अंत-- उपमान धर्म वाचक लुप्ता

बोलि बोलि पिक वैन पुनि मुकरि जात मतठानि ।
लोप धरम वाचक करै तिय उपमान सुजानि ॥२३॥

टीका--पिक बैनी यह केवल उपमेय है धर्म वाच उपमान को लोप है पिक बैन उपमान है ते नहीं केहे ताते उपमान हू को लोप है अर्थ सिंगार पक्ष मे धर्म वाचक को कहा वचन को धर्म सु लोप करति है प्रिय यामे उपमान नहीं कहा वडाई नही है और अलकार पक्ष में अर्थ को लोप है यहां धर्म वाचक को त्रिय कहिये तेरो विन उपमान सो जानिये ॥

अथ उपमान की

.० ० :०:

--अपूर्ण

विषय--अलकार विषय का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--इसमे वार्तिक भी दिए है । इस रचना के साथ निम्नलिखित ग्रथ भी हस्तलेख मे है--

१ सार सग्रह--प्रवीन कवि ।

२ टिकैत राय प्रकाश--श्री बेनी कवि ।

संख्या ३८३क. ज्ञान कवित्त, रचयिता--शिवदीन दास, ग्राम--गगापुर (प्रतापगढ), कागज--देशी, पत्र--७, आकार--१२॥ × ६। इच, पन्क्ति (प्रति पृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप)--१७५, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--स० १९९१ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री ठाकुर जगदबा सिह जी, ग्राम--गगापुर डाक० कोहडौर, जिला-प्रतापगढ़ ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥ अथ ज्ञान कवित्त शिवदीन दास कृत लिखितं ॥

कवित्त

पवन तनय हौं करौ विनती अरु सीस नवाइ कहौ कर जोरे ।
यह ज्ञान कवित्त कहै जो सुनै तिन्ह को कल्पद्रुम कामद सोरे ।
मगल मोवन मोद करै अरु सत सभा रुचि होइ न थोरे ।
जन 'सिवदीन' निहोरि कहै लिखि दे निज हाथन कागद कोरे । १
गुरु पकज रेनु सो अजन कै दृग लाइ निहारिलै आपु हिए ।
झलकै पुलकै उर अतर मे वह स्वाद सुधारस पान किए । २
वह भीतर बाहेर पूरि रह्यौ नहि दूरि कहू मुष देषि जिए ।
'सिवदीन' विचारी कहै मन सो करि प्रेम निरतर नेम लिए ।
झूमि रह्यौ गज बाजि घटा औ भटानि की भीर न द्वार समातु री ।
अवर विभूति की कूति सकै सत कोटि सतक्रत देषि लजातु री ।
है यह काल कराल महा पल मे धरि कै सब को यह षातु री ।
'जन सिवदीन' विचारि कहै जग हाट सी देषत ही उठि जातु री । ३ ॥
मन मूढ़ सिषावत तोहि थके औ बके दिन राति अकारथहि रे ।
तजि कै हरवा छल लोलुपता करु सत समाज के साथहि रे ।
जग त्यागहु जागहु मोह निशा औ बलो सब को नै माथहि रे ।
'सिवदीन' विचारि कहै मन सो अजहू भज कोशल नाथहि रे ॥ ४ ॥

मन श्रौरन दौर जिय मे कहु ठौर नहीं भजु रामहि रे ।
वनिता सुत बंधु अरु संग सखा तजि कै गृह को सब कामहि रे ।
ह्वं जंहै सुअंक कुम्रक लिखा करनी विधि की प्रति वामहि रे ।
'सिवदीन' विचारि कहै मन सो ह्वं रहो हरि के विनु वामहि रे । ५

अंत—— नाराच

करिकै निरंतर नेम । पठिहै जो सहित सप्रेम ।
पावहि सकल मन काम । नहि भेद पुरुषरु बाम ।
एहि माहै नाम उदार । श्रुति वेद मे है सार ।
चिन्तामनिन्ह की खानि । चितन सकल सुखदानि ।
हिय मे सुमिरि हनुमान । पावहि सो पदनिर्वान ।
जो विमुख है वह नाम । पावै न कहु विश्राम ।
यह जानि भजु वह चरन । है कमल दल के वरन ।
'सिवदीन' सुमिरि अचेत । ऊसर सो भयो सुखेत ।५२

इति श्री सिवदीन दास कृत ज्ञान कवित्त समाप्त शुभ मस्तु सम्वत् १८९१ ।।

विषय——भक्ति तथा ज्ञानोपदेश विषय वर्णन ।

संख्या ३८३ख. पद, रचयिता——शिवदीनदास, निवासस्थान——गगापुर (प्रतापगढ), कागज——देशी, पत्र——६, आकार——१२ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)——१०, परिमाण (अनुष्टुप)——१८०, अपूर्ण (खंडित), रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——श्री ठा० जगदंबा सिंह जी, ग्राम——गगापुर, डाक० कोहड़ौर, जिला——प्रतापगढ़ ।

आदि——

. . . .
अरुम्के पिय प्यारी रस वातन सो ।
नन्हि नन्हि वुन्दिया मेह झरि लायो वूंद वचावन पातन सो ।
श्रमकन वुद इंदु मुख ऊपर भिजि रह्यो दोउ गातन सो ।
सिर रुह सघन मधुप अवली रस लेत नयन जल जातन सो ।
जमुना तीर कुटीर कुंज मे वात करत रस घातन सो ।
जन 'शिवदीन' दीन पावर अति वच्यो नाम के नातन सो । ६
भारी रे गगरिया मोरि अवले उतारि ।
पनिया भरत मोरी कमर लचकि गै अगिया मसकि गै सारी ।
हा हा करति हौ, पंया परति हौ सुनि ले अरज विहारी ।
मोरी तोरी आलगी तवही ते जवहि रही मै वारी ।
लागी देर सवेर आइकै घर मैं जाउगी मारी ।
तनिक मुरलिया को धरि देती यह चीर करेजवा भारी ।
यह सुनि प्रीति प्रतीति रीति की जग मैं वजैगी तारी ।
'जन शिवदीन' दीन करुना मैं मिल्यौ अंक भरि नारी । ७

अंत——

विषय मे लागै मन न पावै ।
बैठि रहौ नित सत सभा मे निसि वासर हरि के गुन गावै ।
होइ संतुष्ट पुष्ट करि मन को स्वान की नाइ घर घर मति धावै ।
जौ कहु संग असंग परै तोहि मानसि जिनि कतनो वहकावै ।
ज्यो तरवारि मलत सिकिली गठ तैसे भजन सो मैल छुडावै ।
दीप शिखा सम युवति केश वह तह कुनयन जनि सलभ पठावै ।
चारि चोर है यह नगरी मे तासो जनि यह महल मुसावै ।
जो करि कउल उहाते आयो तासो कवनि हवाल जनावै ।

विषय वारि मन मीन भयो जहं तहां प्रेम की डोर बनावै ।
'जन शिवदीन' दीन ह्वं के जग करि वशी पद बंधि लपावै ।
राति गोइया कन्हैया न सोवं रे ।
ना जानो कहू नजरि लगीहै दूध पियावत रोवं रे ।
मचलि परं अंगनाई कन्हाई मोतिन की लर खोवं रे ।
प्रात होत जोगी एक आयो चरण कमल वह धोवं रे ।
करि जलपान कान लगि कहि कछु रोग शोग सब खोवं रे ।
ना जानो कित रमि गयो रावल नाम अपन वह गोवं रे ।
'जन शिवदीन' समुझि करि देखा जानि परत शिव रोवं रे ।

विषय—भक्ति विषयक पद ।

संख्या ३८४ कविकुल कुमुद कलाधर, रचयिता—शिवनरेश सिंह (स्थान—जगतापुर, बहराइच), कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—९।। × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप)—११५२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३१ वि० (?), मुद्रणकाल—सन् १८९२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० पुरुषोत्तम उपाध्याय, ग्राम—शेखपुरा, डाक०—तेजी बाजार, जिला—जौनपुर ।

आदि—कविकुल कुमुद कलाधर । श्री गणेशाय नमः । मन बचन काय समः । राज मुखहरायभ्रमः कृतमंगलाय क्रमः ।।१

छप्पय छंद

सिद्धि सदन यक रदन द्वय रदन बदन कदन खल ।
भाग बाल शशि वसत नयन त्रय लसत व्याल गल ।
सिंदुर राजत शीश विराजत उन्दुर बाहन ।
देनहार फल चारि चारुचित चौगुण चाहन ।
उर धरत ध्यान आवत त्वरित आनन तें सुवर वरण ।
जयईश नरेश हमेश जय जय गणेश अशरण शरण ।
०. ०. .०:
एक समय बैठे सभा रसिक जनन के वृन्द ।
कविता जिनकी आदरें सविता और फणिन्द ।११
होत तहाँ बहु भाँतिसो अपनी अपनी उक्ति ।
सबहिन के मन मे परी तब यहि विधि की युक्ति ।१२
सकल नायिका भेद युत पिंगल रचो बनाय ।
सीयातें क्रम क्रम कहो आदि अन्त ठहराय ।१३
यह मेरेहू मन परयो पिंगल ऐसो हैन ।
नयो ग्रंथ अवलोकियो रसिकत ह्वैहै चैन ।१४
:० ०: :०:
१ ३ ९ १
सम्वत सु शशांके हुत भुक अंके निशिनायक गुरुवार ।
तम भाद्र भुजंगे रोहिण संगे हर्षण योग उदार ।१६
.०: ०. :०:
पि कहियतहै पिंड को नामे गुरु लघु लाम ।
गुरु अरु लघु को पिंड जेहि पिंगल ताको नाम ।१७

अंत—प्रथम पढ़ै पढि पिंगलहिं बहुरि पढ़ै कछु और ।
चपल बुद्धि अति होय तेहि जाको कछू न छौर ।२१२
जे जन पढिहै शुद्धकरि भूल्यो पद को दीख ।
ते युग युग जग मे जिअैं मेरो यह आशीष ।२१३

सवैया

औधप्रदेश जिला बहराइच में जगतापुर ग्राम सुहावत ।
डाकको सदम्य सटेशन जासु प्रयागपुरी दिशि उत्तर भावत ।
श्री विजयीनृप सून सुधी रविवंश तथा रय क्वार जनावत ।
गावत गोविन्द के गुणको शिवशंकर ईश नरेश कहावत ।२१४

इति श्री मद्रंकवार वंशोदभूत ठाकुर गंगासिंह पौत्र विजयी सिंह पुत्र शिवनरेश सिंह विरचितायां कविकुल कुमुद कलाधराख्य ग्रथ शशुभमशुभ्

विषय---पिंगल ग्रथ ।

रचनाकाल

सम्वत सुशशांके हुतभुक ग्रके निशि नायक गुरुवार ।
तमभाद्रभुजगे रोहिण सगे हर्षण योग उदार ।

प्रस्तुत ग्रथ मे निम्नलिखित छदों का वर्णन किया गया है---

छप्पय, कामधेन्वाकर, तोटक, शिखरिणी, भुजगप्रयात, सोरठा, मरहठा छद, दोहा, सवैया, कामछद, महीछद, शशीछद, प्रियाछद, रमणछद, मृगेद्रछद, नगानिका छद, हारी छद, शेखरछद, तिलकाछद, शखनारीछद, प्रमाणिकाछद, समानिकाछद, करहैचीछद, विद्वन्मालाछद, मानवक्रीडाछद, तुगाछद, महालक्ष्मीछद, विवाछद, जलमुखी, तोमर, अनुष्टुप, रूपमाली, मणिवध, सयुत्ता, चपकमाला, मत्ता, सुखमा, भुजगी, दोधक, शालिनी, सेनिक, मागधी, इद्रवज्रा, इमेद्रवज्रा, स्वागता रथोगाता, धग्छद, द्रुतविलबितछद, मौक्तिकदाम, मोदक, प्रतिमाक्षरा, वशस्थ, कदछद, माघछद, इद्रवशा, पकावली, चामर, वमत तिलका, निशि पातीका, मालिनी, नराव, चचला, ब्रह्मरूपक, नीलछद, भ्रमरावली, शिषरिणी, चर्चरी, शार्दूल, शभु, गीतिका, श्रग्धरा, सुदरी, मत्तगजेद्र, किरीट, वाम, शोभन, चकोर, कमला, सूभर, मजरी, मदिरा, दुमिला, विजया, कुसुमावली, गगोदक, वसुधाधर, नील, मनहरण, कलाधर, कृप्पण, जलहरण, अनग शेखर, डमरूपति, सुधानिधि, रोला, चौपैया, प्रभटिका, चौबोला, पद्मावती, अडिला, दोबई, झूलना, रोला, कुडषा, नफा, राजशेणी, अमृत ध्वनि, शुद्ध ध्वनि, मधुभार, आभीर, दीपक, हरिदीपिका, शशिवदन, त्रिभगी, हीरक, वरवै उद्धता, विमदा, हरिप्रिया, बेतवै, ताटक, गजराज, गौरी, आदर्श, मरहठा ।

संख्या ३८५. सतवाणी (?), रचयिता---शिवनारायण, कागज---देशी, पत्र---१०, आकार---६।। × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)---१३, परिमाण (अनुष्टुप)---५७, अपूर्ण (खडित), रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---कैथी, प्राप्तिस्थान---नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि---

. . . .
बोलो अपनो नम जो चाहो नीज धम
'सीव नरायन' सामुझ मन मे होत पुरनी कया
सत मता मोरीग मत छडो देह वहु ततु
सता पथ निरधरा तेजो अवर आधरा
उतारो भो परा छडो चरा वो कुचर
देखी घर जहु जम न मय सेखहु
आपु देखी चले सांत बइठे सभ उपराजह आंता
सत अपु देचले सता पवे सभकर आंता
चलु समदरसी तो कहे देखी तारसी
होना नीरमोही छडो दोह कोह अव छोह
जो होना नीरमोही तव कही नही छोही
जव करम आस वीसरो तव कस आप न मरो

स्वद देख परखे स्वदे नीरखे ऐक
स्वदे सुरती तार धरी स्वदे चलन टेक
दोह
स्वदे सतत ग्रापन स्वदे सकल जहन
स्वदे से सभ सरसभ स्वदं जन् परायन
दोह
स्वदे वट घट हुए स्वदे पथ नीरधर
स्वदे संतत बीचरते स्वदे उतारात पर
दोह
स्वदे गुर सीख मत चीत स्वदे बंधु सुतानरी

—अपूर्ण

विषय—सत मतानुसार ज्ञानोपदेश।

संख्या ३८६ रामतत्वबोधनी टीका (विनै पत्रिका की टीका), रचयिता—शिवप्रकाश, (स्थान—डुमरांव, बिहारप्रांत), कागज—देशी, पत्र—४१६, आकार—१०×६⅞ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—६४२७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६३५ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री रामचंद्राय नम: ॥ अथ श्री तुलसीदास विनैपत्रिका प्रारंभः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

कवित्व

तुलसीप्रभाव हिय हुलसी श्री रामकृपा सोई भवसागर के पुलसी उर लसी है।
जाकी कविताई सर्वानर्थ तरु टगा सम गगा की प्रवाह भक्त जन मन धसी है।
परम धरम मार्तंड उर व्यौम उग्यौ काम क्रोध लोभ मोह तम निसि नसी है।
वाही के प्रकास जमगन के मुह मसी लाई अति सुषदाई जिय मेरे ग्राय बसी है।

प्रथम श्री मद्ररामायण ग्रंथ को सदर्भ सतसग विलास नाम किए तह श्री गोस्वामी तुलशी दास जू के अनुग्रह ते उनके किए ग्रथन को अर्थ यथा भाषातिकचित् वूझिपरचौ श्री विनय पत्रिका श्री गोस्वामी को अत ग्रंथ है सर्व सिद्धात को निरूपण यह ग्रंथ के विचारे ते प्रतीति होति है तहा यद्यपि ग्रंथ अत्यत कठिन है तथापि श्री गोस्वामी के कृपा को औलब करि यथामति कछु अर्थ लिखंहै श्री महाराज रघुवीर कृपाते गणपति शब्द ते ऐश्वर्य शूचित किये जग वदन पद करि जगत् पूज्यत्व जनाए सुग्रन ग्रौ नदन दोनो पद पुत्र वाचक है तह पुनरुक्ति पद देवे को आसै ऐसो है की कोऊ को मात श्रेष्ट होय है कोऊ को पिता श्रेष्ट

गाइये गणपति जगवदन शकर सुग्रन भवानी नंदन।
सिद्धिसदन गजवदन विनायक कृपासिंधु सुंदर सब लायक।
मोदक प्रिय मुद मगलदाता विद्या वारिध बुद्धि विधाता।
मागत तुलसीदास कर जोरे बसहि रामसिय मानस मोरे ॥ १ ॥

इहा पिता माता दोउ की श्रेष्टता जनाएवे निमित्त पुनरुक्ति पद दीये यहा सिव जी के पुत्र भवानी के नन्दन नाम ग्रानद कर्त्ता यहि हेतु तेकी श्री गणेश जू को गर्भ ते अभिर्भाव नही है सर्व सिद्धिन्ह के गृह ग्रर्थात श्री गणपति कृपा वितरेक काहु के कोऊ सिद्धिकी प्राप्ति नही होति गजवदन पद ध्यान के अर्थ जानना विनायक नाम विघ्नन्ह के स्वामी जो कोउ जीव ध्यान पूजन पितरेक कार्य ग्रारभ करेहै कृपा के समुद्र ग्रर्थात् सिघ्र दयालु होवे को सुभाव जाको...

अंत— चौपाई

प्रथम कियो सतसंग विलासा। श्री रामायण तत्व प्रकासा ॥
दूसर भजन रसार्णव ग्रामृत। भजन तरगन्ह करिसो ग्रावृत ॥

भगवतरस संपुट तीसर है । जामो रस को उठति लहर है ॥
अद्भुतरसतरंग है नाम । चौथ सो सव सिद्धांत ललाम ॥
इतिहास ,लहरि पंचमसो भयो । कहत सुनत जेहि नित सुष नयो ॥
भगवत तत्व भासकर षट जो । अज्ञान तिमिर नासत झटपट जो ॥
सप्तम विनै पत्रिका टीका । रामतत्व वोधिनी सुनीका ॥१२॥
:o: :o: :५:

कवित्य

जयते जस जगत अरु सचुन्ह ते जय विये सुष को प्रकास जो प्रकास जिय आयेते ।
अति कृपा पात्र मे तौ अपनो भाग्य कहाकहू सेवक सब सुषी भये सरणागत पायते ।
सोई है कर्त्ता सव ग्रंथ अरु चातुरी को चतुरन्ह मोगिरा गये जाके समुझायेते ।
यह रीति प्रीति अरु प्रतीति को विलास गुप्त समुझेगो सज्जन्ह कोउ राम के जनायते ॥२२४॥

इति श्री गोस्वामी तुलसीदास जू कृत विनयपत्रिका ग्रंथ रामतत्ववोधिनी टीका समाप्त सुभम् ॥

॥ दोहा ॥

भोजवंस अवतंस कहि जंप्रकास महाराज ।
रजधानी डुमराव मे है तिन सुभग समाज ॥
तिनके लघुभाई सुहृद "सिवप्रकास" जेहि नाम ।
तिनने यह टीका करी सकल शास्त्र को धाम ॥२३॥

कार्तिक शुक्ल पक्ष ७ सवत् १९३५ गुरदीनदाश वैष्णव लिषौ विनैपत्रिका ग्रंथ पठन हेतु निज आपने तुलशीदास को पथ ॥ १ ॥

विषय—विनैपत्रिका की हिंदी गद्य मे टीका ।

संख्या ३८७ जयदायक (समरसार), रचयिता—शिवप्रसाद, (स्थान—भगरौग ग्राम, लखनऊ), कागज—देशी, पत्र—१, आकार—१०॥ × ४॥ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—१८, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० शभुनाथ जी अध्यापक, ग्राम-शुक्लपुर, डाक०—मानधाता, जिला-प्रतापगढ ।

आदि—श्री गणेशयनमः दोह

प्यामै सुर सिधि्र वणी जल थल पूरि ।
सूमिरत्त मन मे भारती दुर्गति भागति दूरि । १
(ब्र)ह्मादिक ध्यावत सदा सतत गुण गण गढ ।
जक्त जननि दाया करौ ज्ञान लहै नर मूढ । २
अगन अशुभ अरु वाण्पक्षल जो कक्षु कहत वनेन ।
क्षमियो सभ अपराध सो पटत होइ मन छैन । ३
राम अनुज के नगर ते पूरवदिसि परमान ।
कोस अगरह जानियो कहत सभै गुनमान । ४
भगरौगहै नाम ग्राम को वसत कलानी तीर ।
तमे करत निवास नित सुमिरत श्री रघुवीर । ५

चौपाई

विप्र भक्त कोमल चित चारू । सील सिधु अति विमल विचारू ।
रामषवस रणधीर अपारा । भयो दिवाकर वस उदारा ।
पर उपकार हेत अस कहेउ । अति लघु ग्रथ रच एक चहेउ ।
अग्यातासु पर्महित जानी । 'शिवप्रसाद' कहवं वदि भवानी ।
कहिहौं ग्रंथ जथा मति मोरी । सुनिर्हाहि विदुष न देहहि षोरी ।

दोहा

सो विचारि अब कहत हौ कहवो जो प्रथमहि ईश ।
जं दायक जप देत है ज्यो जनको जगदीश ।

चौपाइ

करण सकल परिपूरण कामा । रच्यौ ग्रथ जयदायक नामा ।
समर सिधु को सुँदर सेतु । जो कोउ जानि पढै हित हेतु ।

अथ धगण

दोहा

सरह राहु नक्षत्रेते जीव पक्ष ल जानि ।
मेव रहे मृत पक्ष सो करत गन मे हानि ।
राहु रिक्ष मुष होत है . ।
--आद्योपात उद्धृत ।

विषय--युद्ध ज्योतिष वर्णन ।

संख्या ३८८. रचयिता--शिवप्रसाद, कागज--देशी, पत्र--७, आकार--१३॥ × ५॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--८, परिमाण (अनुष्टुप)--१७५, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १६०० वि०, प्राप्तिस्थान--राजपुस्तकालय, किला प्रतापगढ, प्रतापगढ ।

आदि--श्री गणेशाय नम । अथ ढेक चरित्र ।

दोहा

गुर गणपति गौरीश के चरण कमल धरि शीश ।
पुनि वदौ सारदा वुधिवर देहु अशीश । १
सुभ सवत वनईस सै तपस मास रविवार ।
दुतिया तिथि महिपाल नृप मन मह कियो विचार । २
शिवप्रसाद ते हँसि कह्यो नृप षेलत जो ढेक ।
एक छद मे कीजिए जो सब वस्तु अनेक । ३
हुकुम पाइ नरनाथ को मन मह करि करि गौर ।
वस्तु जोरि ममला सहित रह्यो दोहरा और । ४
कवि कोविद वुधिवर नृपति षेलत होत प्रसन्य ।
कविताई की रीति यह जो जानत सो धन्य । ५

कवित्त

कामिनि कहार की कनौज ते कटारी गई कुजर सवारी और कैथ तरे वास है ।
असन कचौरी लै कटोरा मे करोरी पानि ककन कलित और किचुकी विलास है ।
कौल काल ह्वै रहो है लोगन लोगाइन मे ढूढि ढूढि लेत सवै दीरघ उसास है ।
औचक ही आ गई वदन देखाइ दई काँष तरे वाल वस हर हहास है । १

दोहा

कविकुल कोविद प्रथमही गणपति चरित अनंत ।
विविध भांति वरनन कियो विधि हरिहर वुध सत । २

अंत--

दोहा

इंद्रासन आसन करै राम नाम धरि ध्यान ।
तहि जग जन्म वृथा परै जिमि पाला को पान ।५८

कवित्त

ऊटे पर ऊट हाररिनि आई उलदासें उमरी घर लेषा ।
ऊमरि तरउ षडाकरि भोजन उतरो आठे परके रेषा ।
ऊसर पानी ऊदा पहिरे कानऊलआव .....सपेषा ।
ऊचे चढिके हमहू वेषा थारो घर घर एकै लेषा ।५६

दोहा

उतरि जाइ भौपारते राम नाम रुचि ले (इ) ।
भूले भटके मति रहौ नाम कामना देइ ।६०

कवित्त

एक मन पाच पसेरी ये कौनाते जाइ एकौ निहि वासर रहा ।
एक्का चढि कै लिहै एकहु लायक लोइ या मह पानी कहा ।
एषनी पीएक लाइ लीन्हे एतरी पहिरै अगुरिन गहा ।
लेप लेपि भल पेड मोटाइनि एक नीवि गावे सिल लहा ।६१

दोहा

एक टेक हरिनाम की रसना रासै राम ।
धर्म कर्म वरु ना सरै एक प्रेम से काम ।६२

इति श्री ढेक चरित्र समाप्त सुभमस्तु

विषय—टेक चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

सुभ सवत वनईस सै तपस मास रविवार ।
दुतिया तिथि महिपाल नृप मन मह कियो विचार ।

संख्या ३८८क कृष्ण विलास, रचयिता—शिवराज महापात्र, कागज—आधुनिक, पत्र—८, आकार—$८\frac{3}{10} \times ६\frac{1}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—१०४, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ददन मदन, अमेठी, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—

.. ..

हो सकुचाइ तबै सुनु मै तौ एतौ अपराध न कीनो ।।८८।।

इती कृष्ण विलासे 'सिवराज महापात्र' विरचिते धीरादि भेद वर्नन नाम द्वितीयो उल्लास ।। २ ।।

।। अथ परकिया लछन दोहा ।।

दुरे दुरे पर पुरुष सो मिलिवे को अभिलाष ।
ताको परकीया कहै पढे ग्रथ जे लाष ।।८९।।

।। जथा कवित्त ।।

लवनी लवग लवा लपटी कदम्बन तें
अम्बन की मंजरी सुगधन झरा करें ।
माधवी को कुज जहा गुजत मधुप पुज
कोकिला कुहुकि कल प्रानन हरा करें ।
कहूँ 'सिवराज' वृजराज के मिलन
. ...

अंत— ।। भूत त्रितीय अनुसयना जथा सवैया ।।

मोहन सो अति मोहि रहो मन अग अनग के ताप तई है ।
नेकु कहो थिरताई नही चित जाइ अटा पर ठाढि भई है ।

कंत एकंत मे आयो तुरंत ह्वं मंन गई पछिताति दई है ।
देषत ही उर लाल के चपक माल सो वाल के साल भई है ॥२३॥

॥ अथ मुदिता लछन ॥

॥ दोहा ॥

चित चाही जो बात लषि सुनी कि श्रवनन मांह ।
मुदित होइ मुदिता सोई कहे कविन के नाह ॥२४॥

॥ जथा कवित्त ॥

प्रान प्यारो . . . .
·०· ·०· :०:

—खंडित

विषय—नायिकाभेद वर्णन ।

सख्या ३८६ख रससागर, रचयिता—शिवराज महापात्र, निवासस्थान—श्री रामपुर (?), कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—८३/४ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—५०४, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८६६ वि०, प्राप्तिस्थान—टैगोर पुस्तकालय, विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—

. . . .

. फल के दायक ।
सिवराज कहत जापर ढरत नेकु कृपा करि बुधि सदन ।
गिरिजा गिरीस नंदन सुषद जयति जयति सिंधुर वदन ॥

० ० .०

ध्यावत धरा मे नेकु पावत परमपद
गावत गनेस सेस वेस मति जाकी है ।
जाही की कृपा ते दीह कटत कलेस जग
होत सुष सपति सरस छिति ताकी है ।
मोहतम तोम दूरि करत तनक लषे
जाके पद नष सोभा सूरज प्रभा की है ।
ऐसे गुर चरन सरोज मन सेउ मेरे
छोडि भव भावना भरम भ्रम ताकी है ॥ २ ॥

श्री मुनि भट्ट मयूर मे सूरज कला प्रताप ।
जाके ध्याए जगत मे कटत कोटि सताप ॥ ३ ॥
गडक तट तेहि निकट (नगर मझौली मध्य) मे कीन्हो तप बहु भाँति ।
सूरज कर तेहि गहि कियो सूरज सम तन काँति ॥ ४ ॥

॥ कवित्त ॥

अंगिरा अगस्ति श्री परासर वसिष्ट . . . .
·०: ·०· :०:

तिनको जगत जस छाइ । सुभ इदु सो सुष दाई ॥
नरपाल सेनि जो और । फिरि भए नर सिर मौर ॥
तेन्ह को सुजस प्रताप । रवि अगिनि सो चहु व्याप ॥
फिरि कृपा सेनि सुजान । भए भीम कर्ण समान ॥
जेन्ह षोइयो षल षोज । छितिपाल सम छिति वोज ।
बिगपाल सेनि उदंड । सुत तासु के परचड ॥
मे अवनि ज्यों सुर राज । पर काज लाज जहाज ॥
सुत धर्म सेनि मे तासु । किय धरनि धर्म प्रकासु ॥

बलि भोज सो जस जासु । बुज बीन पूरन श्रासु ॥
जयपाल सेनि सु श्रौर । तेहि बंस मे तेहि ठौर ॥
जेन्ह जीतियो रिपु जाल । बिकराल काल कराल ॥
भे भगत सेनि नरेस । सुत तासु के तेहि देस ॥
..भव सेनि भूपति चारु । तिन्ह के लियो श्रवतारु ॥
...मय श्रमर सेनि सो नाउ । नृप तासु के तेहि गाऊ ॥
...हरपाल सेनि विचार । फिरि लियो है श्रवतार ॥
पृथु भरथ पारथ सान । तेन्ह को जगत परिमान ॥

॥ छप्पै ॥

माधव सेनि महीप भए सुव तासु श्रवनि पर ।
गहत तेग हथ वेग होत वहु हरष हिए हर ॥
ता सुव बावन सेनि जगत बुध गावत जाको ।
कुव ईदु सो धवल धरनि जस धावत ताको ॥
सिवराज कहत फिरि ता तनय महावल सेनि नरेस धर ।
सव राज राज पूजत तेन्है भो तेहि वस बिसेन वर ॥
राम नरायन सेनि भए ताके नृप भूषन ।
कलि कल्पद्रुम दुजन दीह दारिद दल दुषन ॥
ताके भूधर सेनि ज्ञान गनपत्ति वषानो ।
रहो तेज छिति छाई तरणि तीषन भुवि मानो ॥
सिवराज कहत ताके भए केहरि सेनि श्रनद मय ।
देत रहे निति जाचकनि धन मनि मकुता दति हय ॥

छद हरिगीतिका

सुत सुषद केहरि सेनि के गधर्व सेनि वषानिए ।
करतार सेनि भए सो ताके गगन सेनि सुजानिए ।
फिरि जगत मे जगनाथ सेनि सुभए ताके नद है ।
लषि सुजस जाको धरनिधर दुतिचद लागत मद है ।
सुत सभु सेनि भए सो ताके सभु सम सुष साज है ।
देत के नहिवार लावत कविन को गजराज है ।
ज्ञान सेनि गनेस मूरति भए ताके सुवन है ।
श्रवनि मे नहि बचत छिन मे मारी देत दुवन है ।
भानु सेनि भए सुतेहि छिति भोर भानु प्रताप है ।
सकि सकि नरेस जाके जपत जाको जाप है ।
दवन सेनि भए सो तह फिरि नृपति सुभ तेहि वंस है ।
कहत सब छिति माह ताको विष्णु को वह श्रस है ।
राव सेनि छितीस ह्वै तह लीन्ह तेहि श्रवतार है ।
दान दुज सनमान को निज भुजन राजत भार है ।
ताहि के सुत भाव सेनि भए भगत रघुराज के ।
दुवन दूषन भुवन भूषन सुवन पूषन साज के ।
रूप सेनि भए प्रगट भट्ट महा उदभट्ट श्राई कै ।
तासु के श्रवतार लीन्हो जगत सेनि सुभाइ कै ।
भगत सेनि सुभए तिनिके विवुध जग जस गावही ।
जाचि जाचि श्रजाच जाचक होत एहि विधि पावही ॥

छप्पै

रुद्र सेनि से नाम भए सुत छिति मे जाके ।
जीति जीति संग्राम लियो गढ पल मे बाँके ।

हुकुम सेनि अवतरो आई तेहि कुलकरि साके ।
हुकुम तासु भुवि माह कवहु कोऊ नहि नाके ।
सिवराज कहत भो भीम सो भीम सेनि तेहि कुल प्रगट्ट ।
मरकट जिमि भागत समर जाहि लषे उदभट्ट विकट्ट ।
लाल सेनि सो नाउ जासु सुत तासु सो हायो ॥

. . . .

तेहि सुव प्रसिद्धि सिवराज कहि भूप जुधिष्ठिर सेनि हुव ।
सव राज राज जाको सुजस सुषद अजौं राजत जो भुव ॥

॥ छंद तोमर ॥

सुष चंन सेनि सु आई । अवते तह सुष पाई ।

. . . .

तिन्ह के सुलछन सेनि । फिरि भए जग सुष देनि ॥
सुभ कर्म सो जेहि प्रीति । निसि दिन सदा हिय नीति ॥

॥ छंद नग सरपिनी ॥

भए मकुंद सेनि से महीप तासु वस है ।
कहै सबै वुधेस है मकुंद ही को अम है ।
कृपान दान मो समान आन नाहि पाइए ।
सुदेस देस मो नरेस जासु कीर्त्ति गाईए ॥

॥ दोहा ॥

ताके सुत श्री सेनि सो भए प्रगट जो आइ ।
जाको सोवत छाह मो राजा राजा राइ ॥
ता कुल मे प्रगट भए श्री नल सेनि नरेस ।
इंदु कुव सो जगमग जाको जस चहु देस ॥
मोहन सेनि लसै सुत जाके । इस्वर सेनि भए फिरि ताके ॥
जीति सबै जगती जेन्ह लीन्हो । षोडस दान महा तेन्ह दीन्हो ॥

॥ हरिगीतिका ॥

कर्ण सेनि भए सु ताके कर्ण सम उनमानिए ।
ध्यान सेनि सुजान ता सुत सुषद सुंदर जानिए ॥
विस्व सेनि भे विस्व के पति विस्वनाथ सुभाव के ।
पूरियो जेन्ह आस जग मे चारु राजा राव के ।
पुस्ति छपन रही पदवी सेनि चारु विसेन को ।
फेरि दिल्लीपति दियो है 'मल्ल' पद सुष देन को ॥
कियो विक्रम महारन मे कहै को जस तासु है ।
जथा मति अनुसार कहिहौ वर्णि के सुनु आसु है ।
चढि वाजि पै सुभ साहिवी सम लेत है सुर पालकी ।
महि मध्य मे कहि को सकै सव सूरता रन ध्याल की ।
जग कीर्त्ति गावत वेस है समता सदा रवि जाल की ।
वर वर्णिए वसावरी श्री विसेन वम भू . ॥

(९वाँ पत्र लुप्त है) ।

:o· :o· :o.

१०वें पत्र से—

आन मल्ल अवतरो फेरि डवर मल जानो ।
दुजोधन मल्ल भए तासु सुअवनि वषानो ।

सोभन मल्ल महोप फेरि भुव भूषन गावं ।
जा जाचक ढिग जाइ सदाँ मन बंछित पावं ।
जयति जयति जय श्रीय मल्ल ता सुत भय ह्वौ अवतरघौ ।
तीरथ राज प्रयाग सो गया अकर जग जेन्ह करघौ ।।
भीषम मल्ल उदार भए भीषम सम सोभन ।
ताके बुल्ह मल्ल पुहुमि तन तनक न लोभन ।
गावत गुनी अनत छलाक छिति पर जस छायो ।
दान क्रिपान समान आन उपमान न पायो ।
तेहि कुल प्रसिद्धि सिवराज कहि चदन मल्ल विसेन बर ।
पूरन प्रताप राजत सदाँ परिपूरन जेहि भक्ति हर ।।
बुद्धि मल्ल बुद्धि पर जीति भीति कबहू नहि ल्याए ।
भीम मल्ल ता तनय कर्ण सम समर सोहाए ।
ताके मल्ल विलास विबुध गावत अवनी के ।
राजा नारायन लषे सब लागत फीके ।
फिरि राज मल्ल भूपाल भो ताकुल मो सिवराज कहि ।
गब्बर गनीम गढ कव्वि कै लइ आए छिन माह गहि ।
विक्रम मल्ल नरेस भए अरि विक्रम तूरन ।
बतिस कला निधान चतुर्दस विद्या पूरन ।
भोज मल्ल ता सुवन अवनि पर परम प्रवीने ।
:o: :o: :o:

।। दोहा ।।

भए भोज मल्ल भूप के जुगल सुवन छिति मांह ।
जाहि सराहत सर्वदा दिल्लीपति नर नाह ।।
बड़े भए श्री महराज पटना सरजू तीर लो जाको राजत राज ।
लहुरे सुषद सनेह सुभ महावीर जुवराज ।।
नगर मझौली मध्य मे सोभित सरस समाज ।
दान कृपान जहान मे राजत ज्यौ सुर राज ।।
तातें श्री महराज ते वतकहाउ के माह ।
सहो परो नहि तेज ते रूसि कढो नर नाह ।।
आए वनवध बीच से चलो वेगि जुग राज ।
जथा वुद्धि वरनन करत ताको सकल समाज ।

।। कवित्त ।।

गंगा तट निकट विचार कै टिकन काज,
उदभट्ट भर्टान सैन जेन्ह साजी है ।
ग्रीषम तरनि तेज तीषन प्रताप जाको,
दाप ते दवित ह्वौ दुवन भए माजी है ।
ससकि ससकि सक मानि राजधानि जेवै
मसकि मसकि उर आपुही ते मजी है ।
तृण गहि दतनि तें धाइ छिति कतनि तें
आइ मिली आपुही ते राजन की राजी है ।।

।। दोहा ।।

तपो तरनि परताप छिति भए तिमिर अरि दूरि ।
जपै जाय वनवध सकल रहो सुजस भरि पूरि ।

बसो परगने पाँचि तिन जाहिर सकल जहान ।
रामपुरा ढिग वस सुषद अरु डेरवा अस्थान ॥
मनिकपुर सिगरोर अरु जह वावन उमराउ ।
गर्दो जी को गर्व करि छिनि लियो सब गांउ ॥
पातसाहि ढिग जाइ जेन्ह पायो वहु सनमान ।
मनसब सहित किताब जेहि दीन्हो श्री सुलतान ॥

॥ कवित्त ॥

दीन्हो सुलतान मूलतान श्री मुहेम ताहि
कीन्हो कतलान ते गनोन कोट थांयां को ।
गव्वर गनीम गहि लीन्हो है पलक माह
जव्व रहे न कोऊ देस भेस नाया को ।
कहै 'सिवराज' श्री विसेन वस सिरताज
हाजिर हजूर मे भयो है जग आंया को ।
पातसाह साहेब जो कीन्हो है मुसाहेब सो
दीन्हो है हिताब सो किताब राय राया को ॥

॥ दोहा ॥

कियो मल्ल ते राय तब दियो नयो फरमान ।
विदा कियो जुवराज को दिलीपति सुलतान ॥
तबते राय कहावही रामपुरा अनीप ।
श्री विसेन वर सुजस जग जाहिर जबू दीप ॥
आए अपने नगर मे वडो महा उत्साह ।
जाके रन विक्रम विविध सदा सराहत साह ॥

·o· o ·o·

जहा एक देषियत हाथ दड दडिन के
जहा एक विध रीति काम केलि धुर मे ।
चारिहु वरन वसे आपने धरम जुत
मारिवो जहा है एक दारिद के उर मे ।
महावीर वैरीसाल कोटिक वरस जीवै
राम कैसी राज जाकी राजै रामपुर मे ॥

॥ छद हरिगीतिका ॥

एहि भाँति तें जग वीच सोभित चारु सय सुषपाल की ।
कलि माह पूरन करत है निति आस जाचक जाल की ।
सिवराज कहि नृप नीति जाके ज्यौ वसै सुरपाल की ।
वर वसिगए बसावली वर वीर वैरीसाल की ॥

इति श्री महापात्र सिवराज कविराज विरचिते रस सागरे वर विसेन वसावल्यां श्री रामपुर नगर भूपते. श्री राय वैरीसाल वर वसावली वर्णन नाम प्रथमो तरग:

॥ कवि वस वर्णन ॥

॥ दोहा ॥

महापात्र के वस मे प्रगट महा कविराज ।
जाहिर जबू दीप मे वर विद्या सुष साज ॥ १ ॥
ताके सुत भे जगत मे सदानद मति धीर ।
कालिदास यम हीप पर गुन सागर गभीर ॥ २ ॥
ताके भे सुखलाल छिति धीर धर्म के साज ।
कृपा नेम आचार को राजत ज्यौं रवि राज ॥ ३ ॥

ताकुल मे भो मद मति महापात्र सिवराज ।
करत ग्रथ प्रारंभ है भाषा जो रसराज ॥ ४ ॥
राए श्री वैरीसाल नृप रामपुरा नरनाह ।
ताको जगवर बस कहि करत ग्रंथ छिति माह ॥ ५ ॥
ग्रथ गढ़न के हेत जो कहो न कछु विस्तार ।
अब वरनत हौ ग्रंथ जो जथा वुद्धि अनुसार ॥
भाषा जाके बस मो कबहू न बोलत कोइ ।
ताकुल मे 'सिवराज' अब भाषा कवि भो सोइ ॥
वरनत परै जो चूक कछू सुनहु सकल कविराज ।
लीजो सोधि सुधारि सो विनै करत सिवराज ॥
काव्य हेतु कछु वर्णए कै दूषन भूषन साज ।
तब कहिवो सिंगाररस नवरस को सिरताज ॥
सवत अठारह सै सुषद छासटि अति सुष पाइ ।
ज्येष्ट सुदी रवि सतमी... . ... ।
:o: :o: :o:

अनुराग सोहत सोहात माथे अवधि सुघर की ।
सिवराज महामंजु बोलनि विनीत वर चलेनि चितोनि प्रतिव्रत कै निकर की ।
जामे सोहै सिधि निधि लोक लाज जलनिधि नलिनी सी रची विधि सोभा सुघसर की ।
सुरतरु लवलासी रूपरासि अवलासी किधौ हर नवलासी कमलासी धरम की ॥

॥ दोहा ॥

सो तिनके हिय हानि सी सषियन हिये उछाह ।
सिधि सी पाइ गेह सब निधि सी पाइ नाह ॥

॥ मुग्धा लक्षन ॥

वोरै षिनै षिन मे पहिरै नव भूषन हौस कै अग सोहाए ।
आषिन के हटते लरिकापन के सब षेलत ष्याल षेलाए ।
मजु महा छवि छोटे छोटे छतिया पर आनि उरोज दिषाए ।
आपन कै तरु भायन थापन मानो मनोज हरोल पठाए ॥
द्वै मुग्धा के भेद ए वरनत कविजन सुद्ध ।
बूझे ते वुध जोवना बूझे विना अवुद्ध ॥

अवुध जोवना जथा

वार वार जाइ धाइ धाइ सो अरति आइ
करै न उपाइ कछू चारु चित चाहे तें ।
ज्यौं ज्यौं वह अकुला (? इ) त्यौं त्यौ वह मुसकाइ
ससकि सकार अति जैसे चंद राहे तें ।
'सिवराज' प्रान प्यारे भागन ते उलहे है
मजुल वै मोद कज देषो एक माहे तें ।
बड़ो विधि निरदइ विना काज निरमई
कहत उपाधि नई भई उर काहे तें ॥

॥ दोहा ॥

मे छतिया दुम्मल भए वेदन नेकु न वाल ।
जो पेषै एनको कहूं ताके होत वुसाल ॥

॥ अथ वृद्ध जोबना जथा ॥

कवित

नलिनी दल दीरघ लोचन भे मुनि की मनसानि लोभावहिंगे ।
रति केलि कलापन मे सुकृति मन भावन के मन भावहिगे ।
कुच कच कली सरि भे सजनी अति ही दुति को दरसावहिंगे ।
वह धर्म निधान दिवाकर सो जेहि के करतें सुष पावहिंगे ॥

॥ दोहा ॥

नीरज कलिका कुट भए झलक्यौ मनसिज राग ।
उलही कच नवेलि सी बुलही बुलह भाग ॥

:o: :o: :o:

मध्य— अथ षंडिता यथा

अन्य सुरत के चिन्ह जुत आवै पीतम गेह ।
ताको ह्वै विलषी लषै जानु षडिता एह ॥

मुग्धा षडिता जथा

कवित्त

प्रात समै प्यारो आली अतिही मुदित मन
आयो अलसात गात पूरे प्रेम पाग्यो है ।
भूले पट प्यारो वोढि आयो भोन नवला के
प्यारी कहो तातें जाते वोरे जेव जाग्यो है ।
बसि भाँति वीजै रगि मेरी सारी पीतम जू
पीत रग अमर सो नील रग राग्यो है ।
षेलिवे के मिस करि आषि मूदि रस करि
प्रान प्यारे हस करि वेगि कठ लाग्यो है ॥

॥ दोहा ॥

तिय चरित्र जानै नही रस वातनि नहि विज्ञ ।
नामा ही को नर रूप जो सो नायक अनभिज्ञ ॥

॥ सवैया जथा ॥

राती है वंक है चदकला सी उरोजन मे विधि नै उपजाइ ।
दीजै बताइ क्रिया करिकै अव उत्तम वोषद कोन लगाई ।
घुघुट मे मुसक्याइ कै वैद वधू के हंसी सुनि अतर आइ ।
भेट दै वैद को दीन ह्वै कै निज प्रानपियारी की व्याधि जनाइ ॥

॥ दोहा ॥

नायक वरने नेम सो भानु मतो पहिचानि ।
नर्म सचिव तिनके कहो लछन लच्छ वषानि ॥
पीठमर्द पहिले कहो दूजे विग वषानि ।
तीजे चेटक जानिवो चउथ विदूषक जानि ॥
कोपवती वर नारि को कोप छोड़ावन हार ।
पीट मर्द तासो कहत क.. ... . ॥

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—नवरस और नायिका भेद वर्णन ।

रचनाकाल

संवत अठारह सं सुषद छासटि अति सुष पाइ।
ज्येष्ट सुदी रवि सतमो................॥

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख खडित है। आरभ का पत्र तथा सख्या ३, ४, ६, १३, १५, १६, १७, १८, १६, २०, २१, २२, २५, ३१, ३२, ३३, ३४, ४७, ४८, ४६, ५०, ५१, ५२, ६०, ६१ और ६२ के पश्चात् के पत्रे लुप्त है।

रचनाकाल स० १८६६ है। लिपिकाल हस्तलेख के अपूर्ण होने के कारण अज्ञात है। इसमे वशावली का वर्णन इस प्रकार है—

नरपाल सेनि
|
कृपा सेनि
|
दिगपाल सेनि
|
धर्म सेनि
|
जयपाल सेनि
|
भगत सेनि
|
भव सेनि
|
अमर सेनि
|
हरपाल सेनि
|
माधव सेनि
|
बावन सेनि
|
महाबल सेनि
|
रामनरायन सेनि
|
भूधर सेनि
|
केहरि सेनि
|
गंधर्व सेनि
|
करतार सेनि
|
गंगन सेनि

|
जगन्नाथ सेनि
|
सभु सेनि
|
ज्ञान सेनि
|
भान सेनि
|
दवन सेनि
|
राव सेनि
|
भाव सेनि
|
रूप सेनि
|
जगन सेनि
|
भगत सेनि
|
रुद्र सेनि
|
हुकुम सेनि
|
भीम सेनि
|
लाल सेनि
|
जुधिष्ठिर सेनि
|
सुखचैन सेनि
|
सुलछन सेनि
|
मुकुन्द सेनि
|
श्री सेनि
|
श्रीनन्द सेनि (ये श्री सेनि के पुत्र नहीं थे, उसके वंश मे थे ऐसा ज्ञात होता है)
|
मोहन सेनि
|
ईश्वर सेनि
|
कर्ण सेनि

ध्यान सेनि

|

विश्व सेनि (यहाँ तक सेनि पदवी रही पीछे दिल्लीपति ने मल्ल की पदवी दी)

|

ज्ञान मल्ल (इनके और विश्व सेनि के बीच मे कितने राजा हुए, पत्र के नष्ट हो जाने से विदित नही)

|

दुरजोधन मल्ल

|

सोभन मल्ल

|

श्रीयमल्ल

|

भीषम मल्ल

|

दुलह मल्ल

|

चदन मल्ल

|

जुद्धि मल्ल

|

भीम मल्ल

|

विलास मल्ल

|

राज मल्ल (विलास मल्ल के पुत्र विदित नही होते। उनके कुल मे थे।)

|

विक्रम मल्ल

|

भोज मल्ल

- महाराज (इनका राज्य पटना तक फैला)
- महावीर (भाई से कहा सुनी हो जाने पर देश से निकल गए। दिल्लीपति ने इन्हे 'राय' की पदवी दी।)
  - वैरिसाल (इनके और महावीर के बीच कितने राजा हुए, पत्र के त्रुटित हो जाने से विदित नहीं। इनको महावीर के कुल मे समझना चाहिए।)

संख्या ३६०क. रामायण माहात्म्य, रचयिता—शीतलदास, कागज—आधुनिक, पत्र—८, आकार—८$\frac{6}{10}$ × ५$\frac{3}{10}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—१२६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६२६ वि० प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ रामायन माहात्म

अश्लोक

वंदे रामायन श्रीमत् तुलसी कृत मानसं ।
रामरूप प्रदातार धर्म कामार्थ सिद्धिदम् ।। १ ।।

।। सोरठ ।।

गननायक गुन खानि सिधि सदन गज बदन प्रभु ।
करहु कृपा जन जानि सुफल मनोरथ होहि मम ।।
जं सियराम वोदार लछन सत्रुहन भरथ प्रभु ।
सुमिरत पवन कुमार होत मनोरथ सिधि सब ।। २ ।।

।। दोहा ।।

जं जं श्री गुरुदेव प्रभु पद नख रज उर धारि ।
जेहि सुमिरत जग विनाहि श्रम मलत पदारथ चारि ।। ३ ।।

.o. o. :o:

ताहि समं चित अस वढि आइ । तुलसीकृत को महातम गाई ।।
कोन अरभ सुमिरि भगवाना । जस कछु सुनेउ सो करउ बषाना ।।
समत वनइस स वनतीसा । मार्गसीर्ष यकादसि दीसा ।।
सुक्ल पक्ष मगल सुभ वारा । रचो महातम पर्म वोदारा ।।

।। दोहा ।।

सव विचारि मन ठीक है देषि सकल परकाम ।
सतनमुख महात्म सुनि वरनत "सीतलदास" ।।

अंत—

कह हनुमान रामगुन गावा । भाषा करि जग ताप नसावो ।।
तुलसी कहा कहा अमज्ञाना । चरित सिधु अपार भगवाना ।।
कह हनुमान लिषत तुम जाहु । जह सदेह होइ रहि जाहू ।।
सो तव मम मंदिर धरिदेहू । कलम दुआईत पटदं लेहू ।।
हम लिषि देव मिटहि सदेहा । प्रारभ करो सहित सनेहा ।।
सुनि तुलसी मन हर्ष भएऊ । पोछे फिरि विचार एक ठएऊ ।।
रामायन के हे अधिकारी । मो पर कृपा जो करहि पुरारी ।।
तौ वरनौ कछु सस नाही । ठीक दीन तब निज मन माही ।।

विषय—तुलसीकृत रामायण माहात्म्य वर्णन ।

रचनाकाल

समत वनइस सै वनतीसा । मार्गशीर्ष यकादसि दीसा ।।
सुक्ल पक्ष मगल सुभ वारा । रचो महातम पर्म वोदारा ।।

संख्या ३६०ख रामायण माहात्म्य, रचयिता—शीतलदास, कागज—आधुनिक, पत्र—२६, आकार—८¾ × ५¾ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—४०६, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२९ वि०, प्राप्तिस्थान—शारदा सदन, पुस्तकालय, रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नम ।। अथ रामायण माहात्म्य लिख्यते ।।

।। श्लोक ।।

वंदे रामायण श्री म तुलसी कृत मानसं ।
रामरूप प्रदातार धर्म कामार्थ सिद्धिदम् ।। १ ।।

:o; :o. :o:

॥ सोरठा ॥

गणनायक गुणखानि सिद्धि सदन गज वदन प्रभु ।
करहु कृपा जन जानि सुफल मनोरथ होहि मम ॥ १ ॥
जै सियाराम उदार लषण सत्रुहन भरथ प्रभु ।
सुमिरत पवन कुमार होत मनोरथ सिद्धिसब ॥ २ ॥
:o: :o: :o:

तुलसीदास पद वंदि कै रचहु महातम जासु ।
कृपा करहु जन जानि मोहि होइ बुद्धि परकास ॥

॥ चौपाई ॥

वंदौ गुरु पद कज सुभ खानी । शेष सारदा रामरु भवानी ॥
जगम जे हरिभक्त सयाने । रामायण तुलसीकृत जाने ॥
तिनते बिनै करौ करजोरी । क्षमा करब लखि मम मति भोरी ॥
मम अभिलाष भयो जिय जानी । वरनौ कछु हरि यस शुभ खानी ॥
ताही समय चित चढि आई । तुलसी कृत महातम गाई ।
कीन्ह अरभ सुमिरि भगवाना । जस कछु सुनेऊ सो करेउ वखाना ॥
सम्बत वनइस शं वनतीसा । मर्गसीर एकादसि दीसा ॥
शुक्ल पक्ष मगल शुभ वारा । रचौ महातम पर्म उदारा ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

कहा शेष यह कथा शुभ "पदमपुराण" मे गाय ।
"सीतलदास" जो पढई तेहि सीताराम सहाई ॥
यह वरन्यौ मे यथामति सुन्यो जो सतन पास ।
पढै सुनै जन प्रीति करि सेवक सीतलदास ॥
अवधपुरी कै नैरिति षट जोजन परमान ।
"सीतलदास" वसत द्विज प्रभु दीया अस्थान ॥
ग्राम नाम वहरामऊ परगन नाम सवेह ।
सीतलदास सुविराजते सीताराम सनेह ॥

॥ छद ॥

जो पढै समुझै सुनै हितकरि सकल विधि वंछा फलै ।
करिहै कृपा हनुमान वरन्यो तुलसी जेहि अज्ञा भले ॥
जो राम भक्ति की चाह मन मे रामयस सुनि है सोई ।
माहात्म पढि हैं सहित रुचिदास सीतल कृत जोई ॥

इति श्री रामचद्रायने सकल कलि कलुष विध्वन्सने सीतलदास विरंचितायां श्री तुलसी कृतमानस रामायण महातम संम्पूर्णम् ॥

विषय—पद्मपुराण के आधार पर तुलसीकृत रामायण माहात्म्य वर्णन किया गया है। इसमे गो० तुलसीदास जी का थोडा सा वृत्त है जो लगभग सर्वत्र प्रचलित है। एक दो बाते विशेष है, जैसे श्री गोस्वामी जी को गोंड कुलोद्भव तथा बाल्मीकि का अवतार मानना। बाल्मीकि के अवतार मानने मे वशिष्ट सहिता से उद्धरण दिया गया है—

कथा वसिष्ट संहिता माही। देखि लेहु कछु संशय नाहीं ॥

श्लोक

बालमीकेर्तुलसीदासः कलौ देवि भविष्यति ।
रामायण मतिः साध्वी भाषा रूपी करिष्यति ॥
:o: :o: :o:

रचनाकाल

संम्वत वनइस शं बत्तीसा । मर्गसिर एकादसि बीसा ।।
शुक्लपक्ष मुगल शुभ बारा । रचौं महातम पर्म बदारा ।।

संख्या ३६०ग विवेकमाल, रचयिता—शीतलदास, (स्थान—जोहरामऊ, अयोध्या—से नैऋत्य दिशा मे १२ मील गोमती के दक्षिण १ कोस), कागज—देशी, पत्र—२७, आकार—१०४/४ × ६८/८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप)—४५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १८६८ वि०, लिपिकाल—सं० १६४३ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेसए नम्ह अथा वीवेक माल ।।

ओनम भगती गुरू कंवल्य गग तुलसी ओहरी सत हरी उछीष्ट नौ जानीए ।
आवत मरन सर्व साधी कर तल होत पातष मीटत मुद मगल की षनीए ।
श्री भरथ महाराज प्रेमहु वीवेक नीधी सप्ताचार नोती नीत वेदन वषानीए ।
सीतल कहत सर्वस गुरु दया प्रभु धीरदसाभारी नीज वोर मोही आनीए ।

सवैया

नीज बोध के हेत कहो मनते एह तत्व को भेद अपार महा ।
कही नेती नीरूपत वेद अनादी अवधी जो अज भगवंत कहा ।
इछा प्रथमं तेहिते जो भइ महतत्व भयो अहतत्व तहा ।
तेहीते ओकार भयो तेहीते गुर तीनी को भेद वीभाग जहा ।। २ ।।

अंत— **।। दोहा ।।**

चारी वेद षटसास्त्र मत अरु पुरान को सार ।
भजहु राम तजी काम सब जो अज सभ अधार ।।१०६।।
सवत सत अष्टादस नवे आठ रीतुराज ।
सीतल वरनत नामएहो वीवेकमाल सुभसाज ।। १ ।।
ओधपुरी की नोरीती षट जोजन ही जवास ।
जोहरामऊ गोमती दछिन जोजन अर्ध प्रकास ।। २ ।।

इती श्री सीतलदास वीरचिते वीवेकमाला संपुर्ण ।। सवत १६४३ मीती वैसाख वदी १२ वार सक्रवार क प्रती लीष जो प्रती देषा सो लीष मम दोष न दीयते. . . .व० भेरोसींघ वछ गोती साकीन इसमाइलपुर ।।

विषय—ब्रह्मज्ञान का विवेचन किया गया है ।

रचनाकाल

सवत सत अष्टादस नवे आठ रीतुराज ।
सीतल वरनत नामएहो वीवेकमाल सुभसाज ।। १ ।।

संख्या ३१०. पांडव पुराण, रचयिता—शुभचंद्राचार्य, कागज—देशी, पत्र—३३५, आकार—१२५/८ × ६६/८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, खंडित, रूप—नया, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६०८ वि०, लिपिकाल—सं० १६८६ वि० प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर, अहियागंज, टाटपट्टी मोहल्ला, लखनऊ ।

आदि—. . . . . मकर और क्षोभ रहित थे उनके वचन पाप को हरनेवाले थे वे साक्षात् भिक्षु थे बडे बडे राजा महाराजा भी उनके पैरो पडते थे वे दीक्षित थे कर्म शत्रुवो को नष्ट करने के लिए सदा उद्यत रहते थे और बडे उत्साही थे इस समय रात बीत चुकी थी और सूरज के उदय का समय था अत' वे अपने शरीर के तेज से ऐसे जान पडते थे मानो कि सूरज ही हैं इसके सिवाय वे चार प्रकार के सघ से युक्त थे उन्हें देखते ही पांडु उनके चरणकमलो में पड़ गया और नमस्कार कर अपने योग्य स्थान मे बैठा मुनि ने धर्म वृद्धि देकर राजो के राजा पांडु

से कहा कि राजन इस संसार वन मे जीव हमेशा ही चक्कर लगाया करते है कहीं कभी भी स्थिर नहीं हो पाते जैसे अरहट की घड़ी कभी भी ठहर नहीं पाती हमेशा ही चला करती है इसलिए जो पुण्य के अर्थी हैं उन्हें सदा धर्म सेवन करना चाहिए धर्म के दो भेद हैं ।। एक मुनि धर्म और दूसरा श्रावक धर्म

:o: :o: :o:

उसने अपने युधिष्ठिर आदि पांचो पुत्रो को बुलाया और उन्हे राजभार से विभूषित कर तथा धृतराष्ट्र के हवाले कर धृतराष्ट्र से कहाकि भाई तुम इन मेरे पुत्रो को अपने पुत्र ही समझकर इनका पालन पोषण करना आपसे अधिक कहने सुनने की आवश्यकता नही है।। आप कुरु वश के रक्षक हैं।। इसके बाद उसने पुत्रो के पालन पोषण के सबंध में कुन्ती को भी उचित शिक्षा दी और वह संसार देह भोगो से बिल्कुल ही उदास हो परलोक साधन के लिए तैयार हो गया ।।

अंत—— भावार्थ

इस पुराण के रचे जाने का समय विक्रम सवत १६०८ भादो सुदि दूज है ।। यह वागड प्रात के सागवाडा नगर स्थित श्री आदिनाथ भगवान के मदिर मे रचा गया ।। यह चिरकाल तक रहे ।।

इति शुभ चद्राचार्य विरचित पाडव पुराणभाषा सपूर्ण ।। ६ ।। मिती आस्वन शुदि ।। सप्तमी ।। ७ ।। गुरुवार ।। सम्वत् विक्रमार्क १६८६ उगनिस सै छियासी तादिन ग्रथ लिषकर समग्र भयौ ।।

।। श्लोक ।।

धर्म करत ससार सुष धर्म करत निर्वाण ।
सुर्म पथ साधनविना नर तिर्य च समान ।

जलरक्षे ।। तैलरक्षे ।। रक्षे सीतल बधनाम् ।। मूर्ष हस्ते न दातव्य ।। एते पुस्तक रक्षक ।। २ ।। समाप्तोय पाडवपुराण ग्रथ ।। श्री रस्तु सुभ भवतु कल्याणमस्तु ।।

विषय——पाडवो की कथा का वर्णन ।

रचनाकाल

श्री मद्विक्रम भूपते द्विकहतस्यष्टाष्ट सख्ये शते रम्येऽष्टाधिक वत्सरे सुप दरे भाद्रे द्वितीयातिथौ ।। श्री मद्वागवरनी वृर्ता दम तुले श्री शाकवाढेपुरे ।। श्री मच्द्री पुरुषाधाभिनव विरचित स्थेयापुराणचिर ।।

सख्या ३६२ स्वरविलास, रचयिता——श्याम कवि, कागज——देशी, पत्र—— ४, आकार—— १३।। X ५।।। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)——६, परिमाण (अनुष्टुप)——६६, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——श्री प० चन्द्रपाल जी त्रिपाठी, ग्राम—नजाताना, डाक०—लालगज, जिला—प्रतापगढ ।

आदि——श्री गणेशाय नम· अथ स्वर विलास लिष्यते ।।

सिद्धि सदन गज वदन वर विनय सुनहु यह मोरि ।
देहु ज्ञान अरु भक्ति को वरणत हौ करजोर । १

अथ रागन के स्वर वर्नन बरवै छद

सप्त स्वरन्ह कहु षाडव भैरव राग । मालकौश हिंहोलत जैरिपुभोग । २

सोरठ

मेघ कियो मधहीन श्री दीपक गम धात जात ।
भारथ मत्त परबीन सप्त स्वरन्ह क्यौरो सजत । ३

अथ रागिनी के स्वर वर्णनं कवित्व

सोहनी खंभाइच विहाग री त्रिवन पर्ज षट विशाष पूरिया धनाश्री री हीन है ।
भैरवी गूजरी गोडगिरी में निषाद नहीं ईमन वराडी आसा कहत प्रवीन है ।
ईमन पूरिया आसावरी तजे मध्यम को गौरी पूर्वी मह धैवत सो अलीन है ।
गोंय धूरिया गधार कियो भिन्न परस्पर 'स्यामकवि' रागिनीये स्वरन षट लीन है । ४
तैरा और हमीर शुद्ध मारवा भोपाली खेम गुनकली विभास औ केदार नाटकामोद ।
एती निधहीन रागनी है सुनो भार्य मत सारग गधार्रान गत्यागे सोइ अति विनोद ।
सोरठ सावंत सक्ति वल्ल भामेग धत्यक्त कहो गुनीजन सो वचन सुनो परमोद ।
पंचमनियदूरि धनाश्री रिम लागें नहिं मधमाधमिन्न निध ओडव स्वर सामोद । ५

सोरठा

और कहत हो 'स्याम' रिषम निषादहि हीत करि ।
कोडव एती वाम भनत 'स्याम कवि' मोद भरि । ६

अत— सोरठा

सावती केदार पुरिया जलधर कहत वर ।
मारु एक केदार षट केदारा परस्पर ।१७

दोहा

एक शकरा भरन है वहुरि शकरा करन ।
तीजे है शक्रावली चौथ शकरा अरन ।१८

इति श्री सुरविलास समाप्तम सुभमस्तु श्री राधा कृष्णाय नम श्री राम चद्राय नम राम अथ पचराज लिष्यत

डम डम डमरू वाजे नृत तथ्यै थ्यै पच परनिपच ताल पचराग पंचानन तियइय प्रमान । ताल विताल अनुताल प्रति ताल तिनको सज्ञा मम विसम अतीत अनद्यात ।

नवस्वरसमान

विषय—स्वर तथा राग रागिनियों का वर्णन ।

संख्या ३९३ हनुमान विजय, रचयिता—श्रीधर, कागज—आधुनिक, पत्र—८, आकार—६$\frac{1}{2}$ X ८$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—५२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९२१ वि०, प्राप्तिस्थान—प० रामकुवेर शुक्ल, ग्राम—नगरडीह, पो०—विमुडी, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नम ।। अथ हनुमान विजय लिष्यते ।।

।। दोहा ।।

स्वति श्रीपति पशुपति गणपति मृगपति माय ।
श्रीधर जगपति वगपति ववौ नगपति राय ।। १ ।।
विजय हनु वर्णन करू हृदय घनू आनद ।
श्रीधर मारुत नंद को दरशन परमानद ।। २ ।।

।। छद कडखा ।।

ऊ नमः सार सारदा सुमति मन मै वसो कुमति का अध को फद तोडै ।
ह्रीं नम. हाक हनुमान महावीर की मीर का दुःख को मुख मारै ।
श्रीं नम सर्वदा सपदा आप श्री लक्ष्मीनाथ के हाथ पावै ।
क्लीं नमः क्लेश संताप दुःख दूर कौ विजय हनुमान नर नाम गावै ।। १ ।।

अंत—

साल इकवीस उगणीस सत उपरं जेठ वद दशम शुभ काव्य गावं ।
प्रीति सौं प्रघट श्री वरद खेडापती रीति सौं पढन धन धान्य पावं ।
गौड "श्रीधर" कहै सलेमावाद मै सुवस शुभ नग्र के सर्व लोगा ।
दुष्ट कै चोट दे पुष्ट सो रोट ले भाव मै वरतीये भाव जोगा ॥२१॥

॥ दोहा ॥

"श्रीधर" वीजय कपीश की पढं सुणं मनलाय।
महावीर खेडापति पूरेमन का चाय ॥ २२ ॥

॥ अथ इकीस कबित्त की अनुक्रमणिका ॥

॥ कवित्त ॥

ऊं नमः प्रथम जगत में विजय हनुवाली की विपत वे फिकर बाटी ।
पैड़े है गवो गढ कोट परवशानन कोट गट नाम को वास घाटी ।
नटयों निशि अखिलहि बीर की राम को होत हु पुण्य केयान साटी ।
राग का नाम सै राम को चरित है ताल इकवीस कवि काव्य छाटी ॥ १ ॥

इति श्री हनुमान विजय श्रीधर कृत संपूर्ण ॥

विषय—हनुमान की स्तुति वर्णन ।

रचनाकाल

साल इकवीस उगणीस सत उपरं जेठ वद दशम शुभ काव्य गावं ।

संख्या ३६४क. समरसार, रचयिता—श्रीराम वाजपेयी, कागज—देशी, पत्र—२१, आकार—६ × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री रा० रामहरख गुसाईं, गुसाईं का पुरा, दाईबीगो ग्राम, डाक०—कादीपुर, जिला—सुलतानपुर।

आदि—बारह रेखा ठाढ लिषव औ छ रेखा वेंड लिषव ततिकै ऊपर वाले कोठा विषे क्रम से पांच पाव तीनि तीनि तीनी छ छ आठ आठ आठ नव एहि अकन्हक लिषव ॥ फिरि तेहिके तरे विसर्ग नपुंसक स्वर ॥ अ. अ ऋ ॠ लृ लॄ एहि अक्षर के वराइ वै वाकी जे हहि अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं एन्ह कें लिषव ॥ फिरि तेहिके तरे तीनि पाति विषे ककार आदि ङं कं ड ञ दुइ अक्षर वराइ कै ॥ इकारांत लहि लिषव ॥ ततिकै जापी के नाम के अक्षर औ स्वर अलग कै कै अंक लेव एक जागह संख्या धरव ॥ फिरि स्थायी वराइकै ॥ ककारादि हकारांत अक्षर लिषव ॥ ततीकै दुनहु योद्धा के नाम के अक्षर औ स्वर जुदा करिकै अकन्ह कै संख्या दै कै जापी औ स्थायी कै जुदाध १० के नाम के अक्षर औ स्वर अलग कै कै ॥

अंत—पुष्पार्क योग जेहि दिन परै ॥ तेहि दिन अ को हर कै जरि ॥ वा लक्ष्मण वा शरको काकै जरि ॥ वा मठेछी कै जरि ॥ वा मोर शिषा कै जारि ॥ वा सहदेई कै जरि ॥ आनिकै वाहु विषे ॥ वा शिर विषे रावे तौ शास्त्र के समूह के वरावै ॥ अथवा एन्ह को भोजन करै तौ जब. . . . . .

इति श्रीराम वाजपेय विरचितः समरसार समाप्त शुभ भूयात् संवत् १८४३ श्रावण

विषय—समरसार (युद्ध ज्योतिष) वर्णन ।

संख्या ३६४ख. समरसार, रचयिता—श्रीराम वाजपेयी, कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० रामलाल जी, ग्राम व डाक०—महुली, जिला—बस्ती।

आदि—वाल कुमार युवा वृद्ध सूना जानव
फिरि एक महीना के दिन क ३० ग्यारह ११ से भाग देव ।

लब्ध पाइव दिन २ घरी ४३ पल ३८ एतना दिनादि करिकै उदय वालेस्वर कौं आदि दै कै अतरोइय जानव ।

फिरि अपने जीव स्वर सें गणव ।

वाल १ कुमार २ युवा ३ वृद्ध ४ मृत ५ शुभकार्य विचारव इति जीवस्वर । मात्रा स्वर कै संख्या एक मां जोरि कै पाँ..... .. . .

फिर अपने पिंड स्वरकों आदि दइकै अन्तरोयय वालेस्वर को गणव । वार १ कुमार २ युवा ३ वृद्ध ४ मृत ५ फौज के वनावै मा विचार । इति पिण्ड. स्वर मात्रा स्वर वर्ण स्वर. ग्रहस्वरः जीवस्वर. राशिश्वर नक्षत्र स्वर पिण्डस्वर. कै सख्या इकट्ठा जोरिक पांच से भाग देव एक अक वुइ इकार तीन उकार चारि एकार पांच ओकार योगस्वर जानव ।

अत—अपने दहिने हाथ के माथे पर राखव ।

ततिकै देषव जौ पहुचा पातर देषि परै तौ छ महीना मृत्यु कै भय न कहव फिरि दुनुहुन हाथ कर संपुट कै कै माथे पर धरव ततिकै ओहि सपुट के भीतर देषव जौ केराके फल कै आभा देषि परै तो महीना तलुक मृत्युकै भय न कहव । फिरि जहा विषै जौ आपन लिगि न उतराइ तौ छ महीना तलुक मरणकै भय कहव एइसव मुख्य शकुन जानव सत्यहीहि ॥८२॥

विषय—युद्ध ज्योतिष ।

संख्या ३६५. भजन, रचयिता—सकठाप्रसाद तिवारी, (स्थान—हरिदासपुर), कागज—आधुनिक, पत्र—१६, आकार—८½ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—३८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०३, वि०, लिपिकाल—सं० १९८९ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० हृदयनारायण तिवारी, ग्राम व डाक०—हरिदासपुर, जिला—रायबरेली ।

आदि—हरी ॐ तत्सत् ॥ श्री गणेशाय नम ॥ गणपति वन्दना ॥

॥ ठुमरी ॥

प्रथमहि गणपति को मै ध्याऊं । जाते भक्ति दानवर पाऊं ॥
गजानन है नाम तिहारो । वक्र तुन्ड कहि विनय सुनाऊं ॥
लम्बोदर अरु मूशक वाहन मोदक भोग लगाऊं ॥ २ ॥
सुमिरत विघ्न मिटत है कोटिन मन वांछित फल पाऊं ॥ ३ ॥
रिधि सिधि दोउ चमर करत है घर मे सोहित ठाऊँ ॥ ४ ॥
शकठा को प्रभु विनती सुनिये दृढ भक्ति वर पाऊं ॥

॥ राग दीपक ॥

खेलत दोनो भया सम्भु लिगा खेलत दोनो भया ।
गजानन तव नाम जो कहिए विघ्न को दूरि करैया ॥ १ ॥ सम्भु ॥
खडानन तव नाम जो कहिये सत्रु को मारि भजैया ॥ २ ॥
माता तुमरी पारवती है पित है जगत के रचैया ॥ ३ ॥ सम्भु ॥

अत—

॥ ठुमरी ॥

मेरा ससुरवा वा दूरि है सजनी पीतम के घर जाना होयगा ॥ टेक ॥
राध परोसिनि आयो मिलि लेइ फिरि कभी नही आना होयगा ॥ १ ॥ मेरो ॥
चार जने डोलिया लै के आये चादर वोढ कै जाना होयगा ॥ २ ॥
मात पिता सव रोवन लागे मोको रोवत जाना होयगा ॥ ३ ॥
"शकठा प्रीत करो प्रीतम से मेरो निवहना होयगा ॥ ४ ॥

विषय—भक्तिपूर्ण भजनो का सग्रह ।

संख्या ३९६. श्रीकृष्ण ग्वालिनी को झगरा या दानलीला, रचयिता—सगम (?), कागज—देशी, पत्र—७, आकार—६८⁄₁₀ × ७½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—६३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६०७ वि० के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री साहित्य सदन सार्वजनिक पुस्तकालय—गूढ, डाक०—खजुरी (बछरावाँ), जिला—रायबरेली ।

आदि—॥ ॐ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री कस्न ग्वालिनी को झगरा लिष्यते ॥

गुरू गौरि गनेस को सीस नावो ।
झगरा ग्वालिनी कृष्ण जो को बनावो ॥
कियो कान्ह लोला कहौ तौन भारी ।
सुने प्रेम बाढै महामोदकारी ॥
जहा कान्ह जू जाइ गाई चरावै ।
तहा लै दही ग्वालिनी नित्त आवै ॥
सबै दान देती तहा जाइ गोपी ।
लखै कान्ह को चाइ सो चित्त चोपी ॥
तहा ग्वालिनी सो नई एक आई ।
अकेली लषी ताहि रोक्यो कन्हाई ॥
कह्यौ ताहि सो रीति जानी तिहारी ।
दगा दै दगा तै नितै जात प्यारी ॥
भलै देषि पायो तुम्है आजु गोरी ।
किती कौ दिनौ की षुली चारु चोरी ॥
चलो छाह बैठो कहा ही विचारौ ।
दही दान दीजै रहौ रोज वारौ ॥
नितै बेचि जाती कछू ना सकाती ।
सुई दान लेहौ छपायौ जु छाती ॥

अंत—ग्वालिनी भौन को आपु ऐई ।
उतै कान्ह वन्मे रहे सुःषदाई ॥
झगग्वालिनी कृष्ण जूँ को बनायो ।
भयो संगमै संगमै सो गनायो ॥
कहै दान लीला सुनावै जु कोई ।
सदा कुंज ध्यामै करै वा(स) सोई ॥

॥ दोहा ॥

अनरस हू रस पाइहै रसिक रसन की षानि ।
औठ मीठो दूध ज्यो संगम कह्यौ वषानि ॥ १ ॥

राम राम ॥ सीता राम ॥

विषय—श्रीकृष्ण और गोपिया की दानलीला का वर्णन ।

संख्या ३९७. अध्यातम लीलावती, रचयिता—सत या सतन कवि, निवासस्थान—जाजमऊ (रायबरेली), कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—७८⁄₁₀ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—११७, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अध्यातम लीलावती को प्रमानीका ॥

सुडांड प्रचड वृत नवखंड नीरकान ।
वदीत देव अदेव नग (नाग ?) नर सिद्धि भगवान ॥

एक वंत है नयन दुई गुण चारि वहु वार ।
पंच बदन सुत गानी भ्रानुज षट बदन चद धर ।।
वीघान वीवारीन दलीद्र हरन असरन सरन महावीर हे ।
श्रब वीलंबो सतन सोक वीलंबो लवोदर हौ उपजै है सुत नहुष के
श्री जाजती बलबीर । ताको जजमऊ सुरतवर है सो गंगा का नीर ।
तहा बसत कबी संत है चारीउ वरन समीत ।
प्रकृत श्रौ पुनि सतकृत (?सस्कृत) भाषा कसरीस नीकेत ।।
भाषा करै जे कवी कली काल महा प्रवीन ।
समुझाए समुझै नही ग्यानक गनी कहै गुढ ।
'सतन' भाषा सुगमते जानत मुढ श्रमुढ ।।

।। श्रर्थ ।। पावक रस भाषा प्रमानिका ।।

'संतन' वीस वरीठ को पनु करी लेहु वषानी ।।२०।। १ ।।
सोरह पन को द्रुम है सोरह द्रुम को नीक ।।
कवि संतन एह जोग ते परीभाषा सो सीक ।।

श्रंत— श्रर्थ ।। भीट नायका

पनारी मस्टीका कर गहै ताको राह मीलाउ ।
ताके दुगुण हीन करी वहुरी श्रधे भाग मीटाउ ।।
१६ + १५ + २४ + १४ + २४ + २५ + २२६ + ११४।। + ।।।।४।। +

श्रर्थ श्रानार जत्रीक पाके दरीमा कर गहै ताके गनै काना ताके दुने चौगुने छगुने वीज वीचार + २ + ४ + ६ + ८ + १६ + ३८४ + वीजपत्रीक हीन करी सकल चौबीसौ करी मीलाउ ताके डवढ़े श्रक धरी जामीते पाच वढाऊ + २४ + १२ + ५ + ४१ + ४२५ +

:o: :o: :o:

—श्रपूर्ण

विषय—सस्कृत ग्रथ लीलावती का श्रनुवाद ।

संख्या ३९८ भक्त विलास भाषा, रचयिता—सतदास, कागज—देशी, पत्र—२३, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—४४३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९११ वि०, लिपिकाल—स० १९१७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री महत जगदेवदास जी, ग्राम—पडरी गनेशपुर, डाकघर—रायबरेली, जिला—रायबरेली ।

श्रादि—श्री गरणेशाय नम. ।। श्रथ भक्त विलास भाषा लिख्यते ।।

।। दोहा ।।

गौरी गिरीश गनेश के चरन सरोज मनाय ।
भाखहु भक्त बिलाश यह मति श्रनुसार बनाय ।। १ ।।
गौरीसुत श्रानदभवन विघन विनासन ध्याय ।
वरनहु भक्त विलास को हरिसोभा सरसाय ।। २ ।।
सुमिरि सुगुरु पद पद्म जुग यह मन कीन विचार ।
जक्त हेत करिये कछू भक्त विलास श्रपार ।। ३ ।।
वदौ रघुपति कमल पद पुनि वदौ हनुमान ।
रामकथा भाखा रचौ सत सुनौ धरि ध्यान ।। ४ ।।
कमलापति को ध्यान धरि ब्रह्म कीन विचारि ।
ब्रह्मसिला सुचिजज्ञ मे श्रांवहि राजकुमार ।। ५ ।।

।। चौपाई ।।

एक समै त्रेता जुग माही । करि विचार श्रपने मनमाही ।।
हृदयप्रीति श्रति बारंबारा । हरि हित जज्ञ कीन श्रनुसारा ।।

ब्रह्मसिलै सीतापति ऐहैं । जुग जुग कीर्ति वेद सब गैहैं ॥
करि उपचार वस्तु सब मागे । प्रीति बढाय करन जन लागे ॥
हाट बाट मंदिर बनवावा । नगर सँवारि विचित्र रचावा ॥
विपुल मनिन तँह जटित बनाई । अति विचित्र सो वरनि न जाई ॥

अंत---रामकथा अद्भुत कही नर नारिन के काज ।
कहै सुनै हरि पद लहै निवसै देव समाज ॥

इति श्री संतदास विरचितं भक्तविलास सपूर्ण शुभमस्तु सवत् १६१५ शाके १७८० वैशाख कृष्णे त्रयोदश्या चद्रवासरे शुभमभूयात् ॥ श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नम ॥ श्री ॥

एक सहस पुनि नवसत एकादस करसाल ॥१६११॥
सतदास हरिकृपा ते विरची कथा विसाल ॥
माधव मास पुनीत लखि उमगाप्रेम अपार ॥
कृष्ण पक्ष की तीज को कीन कथा अनुसार ॥
दालिभपुर को परगना च्यवनी शुचि धाम ।
दक्षिन दिसि गंगा वहै देहिं मनोरथ काम ॥
दालिभपुर ते कोस द्वइ पश्चिम दिसि है ग्राम ।
सतदास तँह वसत है जपत रामको नाम ॥
:o: :o: :o:
च्यवंती भार्गवीदात्री गौपाली मौजिका स्थली ॥
गांगिका ब्राह्मिका शार्ङ्गी जाह्नवी दलिभकापुरी ॥
दर्शता जह्नवी तीरे पारावार निवासिका. ॥.
सर्वमंगल मागल्या. कलौमोक्ष प्रदायिका. ॥ १ ॥
श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नमः.............
श्री शत्रुघ्नाय नमः ॥ राम ॥ ....

विषय---सक्षेप मे रामचरित वर्णन ।

रचनाकल

एक सहस पुनि नंद सत एकादश करसाल ॥१६११॥
सतदास हरिकृपाते विरची कथा विसाल ॥
माधव मास पुनीत लखि उमगा प्रेम अपार ।
कृष्ण पक्ष की तीज को कीन कथा अनुसार ।

सख्या ३६६. सामुद्रिक, रचयिता---सत्यकवि, कागज---देशी, पत्र---१६, आकार---१० X ७॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)---२४, परिमाण (अनुष्टुप)---४८०, पूर्ण,रूप---प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य गद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---श्री तामेश्वरप्रसाद जी मिश्र, ग्राम-बगही, डाक०-गायघाट, जिला-बस्ती ।

आदि---श्री गणेशाय नमः ॥ रामाल
अथ सामुद्रिक ग्रथ भाखा सटीक लिखते ॥
इस्त्री के वाया पुरुष के दहिना हस्तरेखा फल ॥

दोहा

सिवपद शिव सुत सुमिरी कै वाणी पद सिर नाई ।
कहत चरित्र सुचि 'सत्यकवि' भाषा छद बनाई ॥
श्री गुरुपद नख रवि निरखि मो मन जलज फुलान ।
यह चरित्र मकरंद सुचि सुवुध छपय छकि जान ।
रमा रमन वारिज भवन वन्दि सिवा सनकादि ।
कहों नर अंग लछन सकल रेखा सामुद्रिक आदि ।
सुमिरि राम सिया संत गुरू गणपति गिरा सुखदानि ।
वर्णो ग्रथ सामुद्रिक मत रेखा अग पहिचानि ।

अथबंपार लछन

मीन चिन्ह जेहि हस्त मे परै गदोरि अंजाई ।
सब बेपार में लाभ करी धनी पुत्र सुख पाई ।

:o: :o: :o:

दोहा

चक्र सख जेहि हस्त मे देखो चतुर सुजान ।
पडित बड विद्वान है भाखं वेद पुरान ।
पताका चिन्ह जेहि हस्त मे परै गदोरी जाई ।
वेदांती पडित धनी 'सहदेव' कहै गोहराई ।

अत--

चौपाई

बोन सुगध मदिरा सम होई । बडा सुखी भोगी नर सोई ।
सोच ब्रह्मा से कहैं बोचारी । सत्य वचन जानो नरनारी ।
बोज खार गध सम होई । अति निर्धनी कहै सब कोई ।

अथ छाती सुभ असुभ लछन

छाती उच बरावरी देखि परै नरनारी ।
धनपुत्र सुखी नर सो रहै व्यास मुनि कहै विचारी ।
उच नीच छाती रहै नहीं बरावरि होई ।
सो नर निरधन जानिऐ रहे कलेसित सोई ।

ईती श्री तत्र सामुद्रिक गोरी सवादे नरनारी लछन सपूरण ।।

विषय--सामुद्रिक (स्त्री पुरुष के लक्षणादि का वर्णन) ।

सख्या ४००. कर्ण पर्व (महाभारत), रचयिता--सबल सिह, कागज--देशी, पत्र--२९, आकार--६।। × ६।। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--१८, परिमाण (अनुष्टुप)--५०८, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १७३४ वि०, लिपिकाल--स० १९३६ वि०, प्राप्तिस्थान--नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि--श्री गणेशाय नम. अथ करन पर्व लिष्यते ।

प्रथमै गुरु के चरन प्रनामै । जाते होई सिद्धि सब कामै ।।
बदौ रामचद्र गुन सागर । सीतापति रघुवश उजागर ।
महिमा आय न कोउ जानहि । परम भक्त बदौ हनुमानहि ।
भूमि नाम गढ चद विराजत । मित्र सेनि तह भूपति राजत ।
जे नृप के पुरिषन मह आही । सबल साहि चौहान सिपाही ।
तिन यह ग्रंथ भाषा कीन्हो । जब अज्ञा श्री रघुपति दीन्हो ।
सुकुल पछ अस्वनि के मासहि । तिथि पचमि कियो कथा प्रकाशहि ।
सबत् सत्रह सै चौंतीसा । औरग साहि दिलीपति ईसा ।।

दोहा

रघुपति चरन मनाइके, व्यासदेव धरि ध्यान ।
कर्न पर्व भाषा रची सबल हरि चौहान ।

गुरू द्रोण जूझहि मैदानहि । दुर्जोधन तब आपु बखानहि ।
द्रोणी कर्ण सल्य से छत्री । औ अनेक बैठे दिग अत्री ।

अत--

चौपाई

जब यह बान सत्रुकर जैहै । तबहो करन तू मृत्युहि पैहै ।
बर औ श्राप द्रुह जब दीन्हो । सोस नेवाइ गमन तब कीन्हो ।
अर्जुन के जिय ससय रहो । ता कारन हरि यहि विच कहो ।
धर्मराज यह बात चलाई । मेरे जिय यक ससय आई ।
विप्र जानि के विद्या दीन्हो । छत्री जानि क्रोध कस कीन्हो ।

:o: .o: .o.

दोहा

जहां धर्म तहं कृष्ण है धर्म जगत परमान ।
करन पर्व भाषा रची सहवल हरि चौहान ।

इति श्री महाभारथे करन पर्व भाषा कृते सहवल हरि चौहान कहि पंचमोअध्याय । संवत् १६३६ ।

विषय—महाभारतातर्गत कर्ण पर्व का वर्णन ।

रचनाकाल

संवत सवह सै चौतीसा । औरंगसाहि दिलीपति ईसा ।

संख्या ४०१. भागवत भाषा (दशम स्कध), रचयिता—सबलस्याम, (स्थान—अमोधा नगर, अमोढा?), कागज—देशी, पत्र—६४, आकार—१० X ५।। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—२५३८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६८८ वि०, लिपिकाल—स० १६०६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री ठाकुर राम सिंह जी अध्यापक, ग्राम—वभनगावाँ, डाक०—अमोढा, जिला—बस्ती ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री कृष्णो जयति ।।
मुंजा पीत पवीत चारु जुगल पानौ चपके रुहं मुक्ताहार किरीट कुडल युत स्याम प्रफुल्लाननं ।।
गो वृंदे परितः परीत मणिश गोपी जनैः सेवित नित्वा वत्स पवत्स कान्त्रजगत वदे यशोदा सुतम्।।

दोहा

'सवलस्याम' प्रभु कमल पग भव भय हरण निधान ।
वन्दौं करण सरोज सोइ करन अखिल कल्यान । १

चौपाई

कह मुनि सुनिय भूप मतिमाना । कथा पुनीत करौं सोइ गाना ।
अस्ति प्राप्ति दोउ सवगुण खानी । कस महीपति कै पटरानी ।
निजपति निधन देखि दुखभारी । गई पितागृह परम दुखारी ।
लोचन सजल विकल अति दीना । निज वैधव्य निवेदित कीना ।

:o: :o: :o:

छद

जग परम प्रीतम तुमहि सम नहि अपर ममहित जानियो ।
मोंहि राखि सादर हृदय सतत विमल कीरति गाइयो ।
यहि भांति परम प्रकास वस प्रयास विनु मोंहि पाइयो ।
तजि अखिल विषय विराग वस मनु भक्ति मूरति मानिवो ।

सोरठा

'सवलस्याम' अभिराम सुखदायक सज्जन सुहृद ।
विषय विवस रसकाम मुचुकुदहि निखात विय ।२६

इति श्री हरिचरित्रे दशम स्कधे भागवते जमन वध मुचकुद स्तुति पचे पचासमोऽध्याय

अंत— **छंद**

जह दुस्तर काल को वेग नहीं जेहि हेतु महीप वने गवने ।
नहिं और उपाय किये मिलतो भगवान को भासित सोभवने ।
'सवलस्याम' सप्रीति सोगान कियो जो कथा रुचि रुकमिणि के रमने ।
करते हरि के पुर ताहि पयान निवारण कीन्हो कहो कवने ।

दोहा

बदन बदन हरि की कथा श्रवण रमन ध्यान ।
जोई करत सोई तरत कलि उपाय नहिं आन ।४२१
सम्वत सोरह सं अठासी जन्म भयो छिति आइ ।
सबल स्यामपुर पुण्यते नगर अमोघा मे परे देखाइ ।४२३
राजा सबलश्याम कृत दशमोत्तर असकंध ।
यह समाप्त प्रमुदित भयो मयूत छद प्रबंध ।४२४

इति श्री भागवते दशमस्कंधे सबलश्यामकृत समाप्तो नवचतुर्थ अध्याय

९ ० ९ १
निधि नभ निधि शशि स्युतं चंद्रमास रविवार ।
शुक्ल पक्ष प्रद्वितियपद षष्टमी उत्तरार्ध समाप्त ।

विषय—भागवत के दशम स्कध का (छद बद्ध) भाषानुवाद ।

जन्मकाल

सवत सोरह सं अठासी जन्म भयो छिति आइ ।
सबलस्यामपुर पुण्यते नगर अमोघा मे परे देखाइ ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ स्वामी जो रचयिता के वश के है, उनके द्वारा प्राप्त पत्र के अनुसार रचयिता का विवरण तद्वत् इसप्रकार है—

वभनगावाँ—अमोढा—बस्ती

२—६—५१

श्री माननीय महोदय ! आपका पत्र २८।५।५१ को प्राप्त हुआ । आपने सबलस्याम (शवल सिंह) श्री मद्भागवत के रचयिता के सम्बन्ध मे यथार्थ जीवन चरित्र माँगा है । निम्नाकित सेवा मे अर्पित है । महाराजा इक्षाकु सूर्यवशी अयोध्या के राजा थे जिनके वश मे श्री भगवान रामचन्द्र जी हुये उन्हीं के पुत्र महाराज कुश जी थे जो अयोध्या के राजा थे उन्ही के वश के महाराजा सुमित्र जी थे जिनके बाद अयोध्या नगरी से सूर्यवशी राजाओ का आधिपत्य नष्ट हुआ । इन सुमित्र जी के बाद तेरह पीढ़ियाँ सूर्यवशीय राजाओ की बदायुं, पीलीभीत, बरेली, मुरादाबाद आदि जिलो के क्षेत्रो मे रह इसी तेरहवी पीढ़ी मे महाराज शालिवाहनदेव जी सूर्यवशीय राजा हुये जबकि शाके शालिवाहन चकवैश्य वैश्य क्षत्रियो के राजा थे जिनसे शाका सम्वत प्रचलित हुई है उसी समय जब शाके शालिवाहनदेव जी वैश मार डाले गये तभी शालिवाहनदेव जी सूर्यवशी भी उन्ही की सहायता मे गये थे हार जाने पर ये सूर्यवशीय राजा हिमालय गलने या तपस्या की भावना से कमायुँ पहुँचे वहाँ की पहाड़ी जाति वालो ने इन्हे प्रार्थना कर के पूरा परिचय प्राप्त के उपरान्त कमायुँ का राजा घोषित किया । आप कमायुँ के प्रथम सूर्यवशीय राजा हुये कुछ काल अपरान्त कमायु राज्य के दो भाग हो गये—१ कमायुँ २ स्कोट जो शारदा नदी के तट पर जिला अलमोडा मे है हुये । महाराजा शालिवाहनदेव के ३६ छत्तीसवे पुश्त मे महाराजा सिन्धुराज हुये उनके दो पुत्र प्रथम कमायु के राजा हुये दूसरे स्कोट के राजा हुये यही महाराजा कसदेव जी (कसनारायण जी) अलमोडा (अस्कोट) से अयोध्या (अलमोढा से आने के कारण अमोढा इसका नाम रक्खा गया) आये सरजू के उत्तरी तट पर जो पहले लोहगाजर (बहराइच, गोडा—बस्ती—गोरखपुर) कहा जाता था १२ भर जाति के राजा राज्य करते थे उनमे विसई नाम का राजा अमोढा स्थान मे था उसे मारकर राज्य स्थापित किया सन् ११३४ ई० हिजरी ५५३ विक्रमी ११९१ में अमोढा के प्रथम राजा कसदेव जी (कसनारायण) हुये इनके २७वें पुश्त मे राजा दलसिंह जी अमोढा के सत्ताइसवे और कमायुँ के ६४ चौसठवे पुश्त मे हुये इन्ही दलसिंह जी की शादी (दलसराय) हडाहे राज्य जिला बाराबकी मे रैकवारो का था हुई इनके तेरह पुत्र चार शादी से थे प्रथम राजा वीरसिंह थे दूसरे फतेहशाह तीसरे सबलशाह (सबलसिंह)

या ग्रन्थ मे सबलश्याम के नाम से सम्बोधित हुये। ये लोग औरंगजेब बादशाह के समय मे हुये औरंगजेब राजा दलसिंह को कैदकर लिया था सवलश्याम छोटे थे एक दाई औरंगजेब के यहाँ दिल्ली ले गई एक कहानी इनके द्वारा बुझाई गई कोई भी न बूझ सका तब औरंगजेब ने इनसे पूछा कि इसका उत्तर बता दो जो मागो दे दूँ। इन्होने पिता को छोडने को मागा बादशाह ने राज्य और राजा को छोड दिया।

कहानी—ऊँच खेत नीच (कियारी) कियारी, जामैं जामत है अकुर है नाही

उत्तर—दही (दही मटका मे जमाया है उसका सिरा ऊचा होता है सतह नीची, जामने पर दही मे अँखुआ नही होता है)।

इनके प्रथम पुत्र वीरसिंह के राजा हुये। फतेहशाह जी रामगढ के बाबू हुये तीसरे सवलशाह जो अमोढा से १ मील पश्चिम प्रतापगढ मे कोट बनाकर रहने लगे थे ये सम्वत १७२६ मे भागवत का लिखना आरम्भ किये

सम्वत सत्तरह सौ सोरह दस। कवि दिन तिथि रजनीसवेब रस।।
माघ पुनीतम कर गत भानुँ। असितपक्ष ऋतु शिशिर प्रमानुं।।

दोहा

रचेउ विरंचि नगर एक पोढ़ा।
तासु नाम जग विदित अमूढ़ा।।
तँह रह नृपति वीर वर।
तरणि वंश अवतस नृपतिवर।।
वीरसिंह अनुशासन पाई।
सवलश्याम तव रचेउ उपाई।।
गढ़ अति तुंग परिघ चहुँ ओरा।
कठिन अथाह नीर कर जोडा।।

इन्होने कोट, बाग आदि का वर्णन किया है।

परिचय—ननिहाल (दलसराय) हडाहे राज्य जिला बाराबकी मे था वहाँ इनके तेरहवे भाई विश्रामसिंह को राज्य मिला पहले रैकवारो का राज्य था। शवलस्याम जी की पहली शादी रामनगर धमेडी मे रामसिंह जी रैकवार के बहिन के साथ हुई थी दूसरी शादी राजा वाँसी श्रीनेत ठाकुरो के यहाँ राजा के भाई के पुत्री के साथ हुई थी। ये मलार गाते थे इनके गाने पर पानी अवश्य बरसता था।

सवलश्याम जी के चार पुत्र चारो वीर थे। लक्षणसिंह, ककुलतिसिंह किसुनसिंह थे ये चारो भाई अली व अलावल मुसलमान वीरो को स्थान देवरिया अलावल जिला गोंडा मे गोंडा से उतरौला जानेवाली सडक पर १२ मील पर बाये तरफ है, मारा था और लच्छनसिंह और भी मारे गये थे। अलावल की कब्र वहाँ है।

मेरा परिचय—सवलश्याम (सवलशाह) के पुत्र किसुनसिंह जी उनके शावलसिंह उनके दलेलसिंह फरकसिंह फूलसिंह भवानीसिंह अवधूतसिंह लालबहादुरसिंह शिवसरनसिंह के सेवक रामसिंह वभनगावाँ नवीनकोट (अमोढाखास) बस्ती महाराजा वीरसिंह के पश्चात् सग्रामसिंह राजा हुये, ताके (पुत्र) जाये सिहसाहेबसिंह ताके जाये महाराजाधिराज महाराज जालिमसिंह जी थे ताके जाये राजा पृथापतिसिंह जी थे इनके भाई अर्भसिंह हुये इनके भतीजे युवराजसिंह जिनकी शादी रीवा राज्य मे हुई थी राजा जगबहादुरसिंह जी इनकी पहली शादी गौतम राजा-नगर (बस्ती) और दूसरी शादी अगोरी राज्य जि० मिर्जापुर मे हुई थी आपका १८४८ ई० मे स्वर्गवास हुआ और १८६३ ई० को रानी तलाशकवरी (अगोरी राजकुमारी) ने १३ साल राज्य किया १८५७ मे राजा को बागी घोषित कर के राज्य जब्त कर लिया और गजट मे गलत लिखा गया कि राजा जगबहादुर सिंह जी अगरेजो के बागी थे क्योकि वे १८४८ मे ही स्वर्ग पधारे थे रानी राज्य करती थी।

शेष—सवलश्याम जी की बनाई हुई पुस्तके—बालविस्तर रामायण १ रुकमिणी

हरणाभूग हरिगीत मे ३ श्री मदभागवत दशमस्कन्ध को सरल नागरी हिन्दी भाषा में अनुवाद किया है १७२६ सम्वत मे जब कि हिन्दी मे दूसरा कोई अनुवाद नही हुआ था। कूटसागर सवलश्यामकृत—जिसके कुछ पद दिये जा रहे है।

१. सावन मे टेढ़ मेड, भादो मे सरहर—कहै सवलसिंह बूझौ नरहर ॥

नरहरि कवि (गोसाई जाति के थे जो इन्ही के दरबार मे रहते थे उनकी समाधि यहाँ पर उपस्थित है। जा पाखना सडक गोरखपुर मे फैजाबाद जाती है उसी पर बस्ती से २४ मील पर मौजा खेसुआ मे मिट्टी की समाधि बनी है इस स्थान पर पूजापाठ कथा ब्रह्मभोज आदि मगल के दिन होता है।

(१) उत्तर—लेयु माटी धोइयुँ हाथ, ई तौ होय चैइत कै बाट ॥ रास्ता ॥

अर्थ—रास्ता सावन मे टेढा रहता है चैत मे सीधा हो जाता है।

(२) प्रश्न—रामनगर धमेडी का पत्र लिखो है

जल थम्मन वैराग्य रूप पथ को वाहन जौन।
कहत सवलसिंह, भेज देव तूँ तौन ॥

आपकी स्त्री वही थी उत्तर उन्ही द्वारा मिला रामसिंह रैकवार उत्तर न दे सके।

गाँजा नेक मिरगाटी चिडिया गोझिया

उत्तर—सभा बिगाडन जगहसन, काम दहन रति भग।
ऐसे कपटी मित्र से कब से किहेव प्रसग ॥ गाँजा ॥
वाइस ढोलना जात है लिहेव इसीसे जान ॥

(३) यहाँ चूत (नेबू) चूते नहीं वहाँ चूत की खान।
सो फल हमको भेज दो रामसिंह रैकवार ॥ ॥ नेबू ॥

(४) प्र०—आधी जर्द आधी हर्द, बूझौ न तौ निमर्द ॥
उत्तर—सुनौ भइय्या छोटी इन होय किहनी ई होय सिरगोटी ॥
॥ सिरगोटी चिड़िया ॥

(५) प्र० खुरपर खुरी खुरी पर आँतो कानन दाँत जमायौ है।
कहत सवलसिंह खूब बनी जब तर ऊपर हाथ लगाय बहै ॥

उत्तर—॥ सारगीबाजा ॥

(६) प्र०—आनकं मर्द आनकं जोय, बिन घर गये काम न होय ॥

उत्तर—(रुई)

(७) सरसहिमारे निरस कर गहे ॥

सनासी राज्य गोरखपुर मे जा रहे थे तो कोहार की स्त्री कडा बीन रही थी सूखे कडे उठाकर झावा मे रखती थी। रसदार को पैर मे मारकर उलट देती थी। उसी पर सवलश्याम जी ने कहा था।

कोहारिन ने उत्तर मे कहलवाया कि मेरे प्रश्न का उत्तर दे।

छः माह का लडका बरस दिन का पेट ॥
कहि विहेव सवलसिह से अहिरिनिया का संदेश ॥ ॥ गोझिया ॥

गेहूँ से बीच मे गुड डालकर बनाया जाता है गमोसे की तरह ॥

श्रीमान् जी ये सूर्यवशीय महाराजा दलसिंह अमोढा नरेश के तृतीय पुत्र थे उपरोक्तपूरा सबूत उपस्थित है सवलसिंह चौहान दूसरे रहे होंगे (मुझे बहुतो के बात चीत से यह पता चला था कि सवलसिंह चौहान को प्रसन्न करने के लिये उनके यहाँ के पडितो ने उनके नाम से छपवा दिया है मगर यह सवलश्याम सिंह जी अमोढा निवासी कवि का बनाया हुआ है। मेरे पास इसकी कोई यथार्थ पुष्टि नही है आप इनके पुस्तको की शैली को देखकर निर्णय कर सकते है।

ओ३म्

आपने कायस्थो का राज्य अमोढा मे पूछा है। अमोढा का राज्य प्रथम २१ कोस का था जिसमे से ११३६ ई० मे बाधल गोती ठाकुर जो महाराजा कसदेव जी सूर्यवशी के सेनापति थे

कोस का राज्य पाये और उनके वशज के लोग आजतक बस्ती जिले के पश्चिम गोंडा जिले में जूद है।

कायस्थ वशावली मे यह दिखाया हुआ है कि जगतलाल विठूर के सूबेदार थे जो अमोढा राजा हुये थे।

विवरण १ अमोढा राज्य पहले तीन भागो मे बटा १ बाधलगोती क्षत्रियो ने लिया ४ कोस बचा उसी मे से ३॥ साढे तीन कोस का राज्य मनोरमा नदी के उत्तर का भाग त्रिफला ा के पाडे बाबा धर्मदत्त जी आचार्य को दिया जो स्थान पतिजिया बुजुर्ग मे था। अवध तिरहुत वे पर छपिया स्टेशन गोंडा बस्ती जिलो के बीच मे है स्टेशन मे १ मील दक्षिण है दिया था।

२. अकबर बादशाह के समय मे जगतलाल टाडरमल के खानदान से बताते है इसका लेख चारी मे मौजूद है फारसी लिपि म है परन्तु उस पुराने कायस्थ वशावली के लेखानुसार ार्थ मे गलत है क्योकि लाला जगत लाल जी चकलेदार विठूर के ७०६ हिजरी मे थे यानी १२८७ के सन्निकट थे इससे राजा अमोढा द्वारा ३॥ कोस का अमोढा का राज्य जगतलाल को ला यही कायस्थवश प्रथम राजा अमोढा के पच्छिमी भाग के हुये अब राज्य चार भाग हुआ भाग ७ सात कोस का सूर्यवशीय राजाओ का उत्तर भाग त्रिफला पाडे वशो का ३॥ कोस पच्छिम ग बाधलगोती राजपूत जो मनिकापुर राज्य के अन्तर्गत है ४ भाग कायस्थ वशो का बीच का ग मिला कायस्थो के प्रथम राजा——सन् १२८७ ई० यानी ७०६ हिजरी मे सूर्यवशी राजा प्रसन्नता मे ३॥ का राज्य जगतलाल को दिया उस उपकार का पता नही मिलता। राजा अमोढा राज्य और पाडे वशवालो ने पाडे की पदवी दी तब ये ३॥ कोस के राजा हुये इनके वश के चार ही राजा थे और वह भाग अब भी इन्ही सरकारी वश के कायस्थो के अधीन है पहला राजा—

१ राजापाडे जगतलाल जी
२. राजापाडे पुरुशोत्तमलाल जी
३ राजापाडे बनवीरलाल इनका अपना नाम भी
४ राजापाडे बादराज जी। ५

। चार पुश्त के बाद राज समाप्त हो ... चारी—सिकन्दरपुर—... —कटरा दि मे मौजूद है। इन्ही कायस्थ वश ... राजेन्द्रप्रसाद जी भी ... इनके ज गद्दी मे ... ।

श्रीमान् ... (...) ... सूर्यवश ... इक्ष्वाकु वशीय थे। ... कुछ ... इतिहास ... कुछ और आवश्यकता ... इस विषय पर ... ।

आपका सेवक——
रामसिह
... अमोढाकोट,
पो०—अमोढा, जि०—बस्ती

सख्या ४०२ वैत समन तेज का, रचयिता——समन (अनुमान से) कागज——आधुनिक ला, पत्र——१२, आकार——८-५/१० × ६-४/८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)——६, परिमाण (अनु-प)——१०८, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——कैथी और नागरी मिश्रित, प्राप्तिस्थान—— देवी गिरि, स्थान व पोस्ट—तिलोई जिला—रायबरेली।

आदि——

श्री लीष्यते वत समन तेज का ॥
देषो जहानाबाद म आए सो सौदा क्या किया।
देखा सैर बजार का ना कुछ लीआ ना दीआ ॥ १ ॥
देषो जहानाबाद मे ऐ ... सब आए भरे।
बीर्ष का सौदा ... से सब गले ॥ २ ॥

देषो जहानाबाद मे सब जीव षौवं जात है।
नफा टोटा कुछ नही सब अंत को पछतात है ॥ ३ ॥
देषो जहानाबाद मे इस षेल को नहि जानते।
कहे सो जग मे कौन है तीस को नहीं पहचानते ॥ ४ ॥
देषो जहानाबाद में बाजी रची सो कौन है।
एह षेल है करतार का बाजी रची सो तौन है ॥ ५ ॥
देषो जहानाबाद मे षेल तो ऐह षुब है।
चस्म षोलि के देषिए सोइ तो महबूब है ॥ ५ ॥
देषो जहानाबाद में बडे अचारज सब भए।
इस षेल को जाना नही नाहक भटकते सब गए ॥ ७ ॥
देषो जहानाबाद मे ब्रह्माबी आदमी आदि है।
इस षेल को जाना नहीं सुन्य भटके वाद है ॥ ८ ॥
देषो जहानाबाद मे महमद ऐसे हो गए।
इस षेल को जाना नहीं सुन्य वादी सो भए ॥ ९ ॥
देषो जहानाबाद मे महंमद कही कोरान है।
कहै अलह और है उमत भई बेरान है ॥१०॥

अंत—अलन हंक मनसुर बोला तन गया रहना न था।
अब व्यापी है षोदाए ना पट गया वहना न था ॥
सीर कटा अभएत जालीम न समझिऐ सजा।
जो नहि समझै रमज को उसे तो कहना क्या रवा ॥७६॥
देषो सषुन अभएत का गफलत परी समझा नहीं।
देषें सभी आलम षडी सीरकटा चसका नहीं ॥७७॥
जाने का भेद षोदाए का मैंषोअ अचर कौन की।
सीर गया सीर ना गडे स्तमएत से प्रवीन की ॥७८॥
जैसे है मोती वोमका होत दफे लगेहवा।
ऐसे है रहना षलक का करना गरूरी क्या रवा ॥७९॥
आस्क जो मैने दीलवरे तुही अजब हराफ है।
षरा षोटा तु परषता इसक मवमें तु वडा सराफ है ॥८०॥
॥ सपुरन ॥

विषय—ज्ञानापदेश वर्णन।

सख्या ४०३ पिंगल काव्य विभूषन, रचयिता—समन या समनेस, कागज—देशी, पत्र—१८०, आकार—११।। × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—४५००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल— स० १८७९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री गयाप्रसाद जी कायस्थ, ग्राम—नौबस्ता, डाक०—लालगज, जिला—प्रतापगढ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ अथ पिगल काव्य विभूषन ॥

दोहा

जा मधु मुनि मधु पगन पियतन कवहु अघात।
सोक समन श्रिय सुष सदन वदौ पद जल जात। १

कवित्त

साझ समै तुलसी वनतें निकसो वनि वेनु वजावत चारू है।
नीरज नील से नैन बडे ससि आनन रूप सुधा सुष सारू है।
गोल कपोल निकुडन लोन अमोल हियें मुकुतानि को हारू है।
तोनिउ ताप नसावत धावत आवत यो व्रजराज कुमारू है। २

दोहा

जदुपति गीताही कह्यौ नरपति अपनो अंस ।
तातें, कछुक कह्यौं प्रथम प्रछित दिलीपहिं बंस ।

छप्पय

तिमिरिलग भो प्रथम साहि मीरा को भनि । सुलता महमद अव सैद अरू उमर सेष गनि ।
ववर हिमायू वहुरि अकवर जहंगीरो सुकूर । साहिजहा दारासुजा साहि औरग वहादुर मौकिरु ।
आलमगीर फिरि महमद अहमद वर वषत । पुनि आलमगीरो गौहरोसाह अकव्वर अव तवत ।

दोहा

वरनत वहुरि वघेलकुल लषि हिंदुन की मेड ।
वंस चलन जाने सकल चले पुन्य की पेंड । ५

:o: :o: :o:

रामसाहि तनय को नृप अवधूत वुझाइ ।
सोप्यौ केसवराइ को गोरवी वृत्ति वनाइ ।५२
तासु तनय सिववास भो हरिपदप्रेम विसेष ।
मति मानन के मध्य में जासु प्रथमहीं रेष ।५३
तासु तनय समनेस भो कोटी अवगुन षानि ।
नृप अजीत जयसिंहऊ मानो निज जन जानि ।५४
जगतनाथ समनेस सो करि सनमानि सनेहु ।
कह्यौ छद भूषन रसनि वरनि ग्रथ करि देहु ।५५
पढेये कई ग्रथ के भाषा पूरन होइ ।
येसो ग्रथ वनाइये समुझि पडै हम सोइ ।५६
लहिनिदेस विस्वनाथ को मति माफिक समनेस ।
न्यारे न्यारे कहत है पहिले पिगल वेस ।५७
छद विभूषन नायका नायक नवरस चारु ।
दूषन भूषन गुन वहुरि सामान्या लकार ।५८

:o: :o: :o:

. . .श्री विस्वनाथ सिंह देव प्रोत्साहि वकसीत समनेस विरचिते काव्य विभूषने . . .

अंत— दोहा

सवत निधि मुनि सिधि अवनि रामनौमि रविवार ।
पिगल काव्य विभूषनहि किय समनेस तयार ।११३

इति श्री विस्वनाथ सिंह प्रोत्साहित वकसी समनेस विरचिते पिगल काव्य विभूषने प्रेम आसीर्वाद क्रम कवि भेद रीति नियम गगना लक्षन कठिन समस्या पूरन गद्य प्रसस्ति वर्ननं नाम एकादसोल्लास ११ शुभ

विषय—पिगल विषय वर्णन ।

प्रथम उल्लास—नृपवश वर्णन तथा गुरु लघु, गन विचार ।
द्वितीय उल्लास—मेरु, पताका और मर्कटी आदि ।
तृतीय उल्लास—अर्थ और शब्दालकार, नायक नायिका वृत्त ।
चतुर्थ उल्लास—सखी, दूती, आदि का वर्णन ।
पचम उल्लास—भाव, विभाव, स्थायी, सचारी आदि ।
षष्ठ उल्लास—कवित्व दोष आदि ।
सप्तम उल्लास—सामान्यालकार आदि ।

अष्टम उल्लास—बीस उपमाओ का वर्णन।
नवम उल्लास—व्यंग लक्षण आदि।
दशम उल्लास—सम, विषम, मुक्तक और दडक आदि।
एकादश उल्लास—'कवि' भेद रीति तथा समस्यापूर्ति।
समस्त ग्यारह उल्लास है।

रचनाकाल

सवत निधि मुनि सिधि अवनि रामनौमि रविवार।
पिगल काव्य विभूषनहि किय समनेस तयार।

सख्या ४०४. लक्ष्मरण शतक, रचयिता—समाधान, (स्थान—चरखारी, बुदेलखड), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—१० × ८॥। इच, पक्ति (प्रति पष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप)—८१६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६५० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री ठाकुर कामदेव सिंह जी, ग्राम-भिटारी, पोस्ट-लाला बाजार जिला-प्रतापगढ।

आदि—श्री गणेशाय नम' अथ लक्षिमरण शतक लिष्यते।

॥ दोहा ॥

रामरमा रामानुजहि प्रणवो पवन कुमार।
श्री गुरु गणपति चरण भजि श्रीमत शम्भु उदार। १
श्री वागेश्वरि पद पदुम प्रणवौं परम पवित्र।
मेघनाद के युद्ध मे वरणा लषन चरित्र। २
श्री रामानुज मनुजनहि धरणी धारण धीर।
बन्दौ जनदुख अच्छमन लच्छ लच्छमन वीर। ३

कवित्त

प्यारो सीताराम को उजियारो रघुवशहू को अनियारो जमपै जमहारूरो रण को।
रविकुल मण्डन प्रचण्ड बलवण्ड वीर वड भुजदड सो खडन खलन को।
'समाधान' रक्षक अपक्ष पक्ष लक्षिमन अच्छमन लक्षमन कुच्छ दीन जन को।
सिहनिको सर्भ गर्भ वतन को गर्भगज अभ अवधेश को सगर्भ सत्रुहन को। ४
भूपदशरत्थको नवेलो अलवेलो रनरेतो रूप भेलो दल निस्वर्रनि कर को।
'समाधान' कीरति उमण्डो खल खण्डो चण्डी पति सा घमडी कुलमडी दिनकर को।
इद्र मद गजन को मजन प्रभज तने ताको मनरजन निरजन उभर को।
रामगुन ज्ञाता मन वाछित को दाता हरिभक्तन को त्राता सुन्य भ्राता रघुवरको। ५

अत—जय लक्षिमन रनधीर वीर वीराधि वीर वर।
जै उदण्ड भुजदण्ड चड को दड दड धर।
जय अमद आनद कद खल फद निकदन।
वृंत वृदारक वृद चरण अरविंदन वंदन।
जय जय समत्थ दशरत्थ सुत हत्थमत्थ दशमत्थ सुत।
जन वानि जानि 'समधान' शिवधरहु पानि वरदानयुत।१२६

इति श्री चरखारी नगर वुदेलखड वासी समाधान कवि वदीजनकृत रामाखडल पथे शिवा शिव संवादे श्री लक्ष्मरण शतक समाप्तम् शुभ चै० व० ८ सम्वत् १६५० मस्तु

विषय—लक्ष्मरण जी की वीरता तथा उनकी प्रशसा और स्तुति वर्णन।

सख्या ४०५क प्रह्लाद चरित्र, रचयिता—सहजराम, कागज—देशी, पत्र—२३, आकार—६$\frac{8}{10}$ × ४$\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—१७२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पुत्तूलाल शुक्ल एम० ए०, ग्राम—पैंदापुर, डाक०—बिसवॉं, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेसाय नमः श्री प्रहलाद चरित्र लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

उमा बचन सुनि सूलधर लगे कहन इतिहास।
जो सुनि ससं सोक भ्रम होइ मोह मद नास॥ १॥

॥ चौपाई ॥

कनक कस्यप राछस बलवाना। सुत प्रहलाद जासु जगजाना॥
संडा मर्का कुल गुर जाये। कनक कस्यप द्वौ निकट बोलाये॥
सुत प्रहलाद प्राणप्रिय मोरे। सो पौ तुमहि कहौ कर जोरे॥
कोजे इन्हहि पढाइ सचेता। स्वल्प ताडना लाज समेता॥
सुनि नृप बचन विप्र अनुरागे। ॐ नमसिद्ध पढावन लागे॥
लिषी पाटी दीन्ही कर वामा। सो लिषि लोपि लिष्यौ हरि नामा॥
विहसे बालक वृंद विलोकी। राजकुमार सकं को टोकी॥
हसत देषि पूछे द्विज दोऊ। संनहि वाल वतावत सोऊ॥

॥ दोहा ॥

राम नाम अक्रुत निरषि महिसुर मन मुसुकाई।
लिष्यौ वहुरि लोप्यौ वहरि बालक हसे ठठाई॥ २॥

अंत— ॥ दोहा ॥

सहजराम ऐसे प्रभुहि भजहि जाइ प्रभु आन।
सो पावर सो मव मति सो नर परम अयान॥२८॥
बार बार सनमानि सुर हरि भे अतर्ध्यान।
देव दिगोस मुनीस गन प्रमुदित कीन्ह पयान॥२९॥

इति श्री रघुवंस दीपे सहजरामकृत हिरन्यकस्यप वध नाम चतुर्थस्सर्ग प्रहलाद चरित समापित सुत मस्तू भादौ कृस्न पछे त्रतीयाया सुक्र वासरे सवत १८६४ दसषत देवी बो नाथे वनिये जो प्रति देषा सो लिषा मम दोषो न दीयते जो कोई पढे तेहि का सीताराम वृभन का परनाम ॥

विषय—प्रह्लाद की कथा का वर्णन।

सख्या ४०५ख. हिरण्यकशिपु वध, रचयिता—सहजराम, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—७$\frac{8}{10}$ × ६$\frac{4}{10}$ इच, पक्ति (प्रति पष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—१६५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० कृष्णविहारी मिश्र, ब्रजराज पुस्तकालय, गधौली, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥

॥ दोहा ॥

उमा बचन सुनि सूलधर कहन लगे इतिहास।
जो सुनि ससय शोक भ्रम होइ मोह मदनास॥ १॥

॥ चौपाई ॥

कनक कशिपु निशिचर बलवाना। सुत प्रह्लाद जासु जग जाना॥
सडाकर्म कुल गुरु को जाया। कनककसिप सो तुरत बोलावा॥ २॥

सुत प्रह्लाद प्रान प्रिय मोरे । सौंपौ तुमहि कहौ कर जोरै ॥
कीजै इनहि पढाई सचेता । स्वल्प ताडना लाज समेता ॥
:o: o· :o:

दोहा

"शहजराम" जिनके अजहु राम चरण पर प्रीति ।
जमगरण सकं न छाह छुइ रिपुगरण मकं न जीति ॥१७॥

अंत— ॥ दोहा ॥

"सहजराम" जस प्रभुहि तजि भजहि जाहि प्रभु ग्रान ।
सोइ पावर सोइ मदमति सो नर परम अयान ॥२६॥

दोहा

बार बार सनमान करि हरिमय अतरध्यान ।
देव विगीस मुनीस गन प्रभु मुदित कीन्ह पयान ॥२७॥

इति श्री रघुवस दीपक मते हिरण्यकसिपु वधनो समाप्त शुभ मम अस्वन वदि षष्ठीयां भृगुवासरे संवत् १६१७ ॥

विषय—प्रह्लाद की कथा का वर्णन ।

संख्या ४०५ग. प्रहलाद चरित्र इतिहास, रचयिता—सहजराम, कागज—देशी, पत्र—१७, आकार—१२॥ × ७॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—३७४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल स० १८०० वि०, प्राप्तिस्थान—प० रघुनदन पाडेय, ग्राम—चौकिया, डाक०—लभुआ, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः ॥ अथ प्रहलाद चरित्र लिष्यते ॥

रघुपति कथा कहौ मै गाई । सुनहु उमा सादर मन लाई ।
एक वार सनकादि मुनीसा । गये वैकुठ जहाँ जगदीसा ।
पुरी पुनीत न जाइ वषानी । जहा वसत श्री सारगपानी ।
पचग्रह जोजन विस्तारा । जोजन सहस उतग अपारा ।

॥ दोहा ॥

सेसाचल दछिन दिस उत्तर दिसि सुरसग ।
जबू नदमे कोक नद पियत मधुर रसभृग ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

हरि दरसन के मदिर जेते । सुर सुरभी सुरदायक तेते ।
दिव्य वाटिका पर्वत पावन । दिव्य लता फल फूल सोहावन ।
दिव्य विमान पार्षत सोहे । दिव्य निकेत लेत मन मोहे ।
जह न अविद्या केर प्रचारा । जह सुष सदा न दुष व्यौहारा ।
पुन्य छीन जह कवहु न होई । जहा गए फिरि फिरै न कोई ।
:o: o: :o:

॥ दोहा ॥

गय विलोकत लोक छवि ववरि द्वार मुनिवारि ।
विसरी देह सनेह वस रचना रुचिर निहारि ।

अंत— ॥ दोहा ॥

करत आरती भारती वाती घृत घृतसार ।
आसिष देत मुनीस तव करपसारि करतार ।

॥ चौपाई ॥

धांय धांय धुनि धरनि अकासा । हरषे हरि विलोकि निज दासा ।
सेवक सुष विलोकि सुष पावा । कृपासिधु निज निकट बोलावा ।

तव मन जदपि कामना नाही । मोर दरस अमोघ जगमाही ।
ताते तात पुरदर पाछे । करहु राज सुरपति पुर आछे ।
असकहि हरि अतरहित भयेऊ । निज निज लोक देव सब गयेऊ ।
यह इतिहास कहो मे भाषी । जेहि प्रकार हरिजन हरि राषी ।
प्रथमहि मे हरिगुन गन गाये । मति अनुरूप अनूप सोहाये ।
कनकस्यप हाटक दिग दोऊ । रावन कुभकरन भये सोऊ ।

॥ दोहा ॥

नारायन के पारषद जै अरु बिजै सुजान ।
भये असुर मुनि श्रापते तेकरी बषान ।

इति श्री प्रहलाद चरित्रे इतिहास समाप्त संपूर्णम् ॥ सवत १८०० श्रावण वदि १४ बुध

विषय—प्रह्लाद चरित्र वर्णन जिसमे प्रह्लाद का पिता के लिये भी भगवान से मुक्ति की प्रार्थना आदि का वर्णन है ।

संख्या ४०५घ. प्रह्लाद चरित्र, रचयिता—सहजराम, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—१० × ४॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—१८४, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६११ वि०, प्राप्तिस्थान—राममनोरथ जी पाडेय, ग्राम—धवरहरा, डाक०—अमरगढ, जिला—प्रतापगढ ।

आदि—श्री रामचद्राय नम ॥ शिव उवाच ॥

रघुपति कथा कहौ मै गाई । सुनहु उमा सादर मन लाई ॥
एक वार सनकादि मुनीसा । गय वैकुठ जहा जगदीसा ॥
पुरी पुनीतन जाइव वानी । जहा वसत श्री सारंगपानी ।
पच पदुम जोजन विस्तारा । जोजन सहस उतग अगारा ।

दोहा

शेसाचल उत्तर दिसि दछिन दिसि सुरगग ।
जमुना नद मै कोक नद पियत मधुर रस भृग । १

हरिदासन के मदिर जेते । सुर सुरभी पावप तेते ।
दिव्य वाटिक परवत पावन । दिव्य लता फल फूल सुहावन ।
दिव्य वेवान पारषत सोहै । दिव्य निकेत लेत मन मोहै ।
जह न अविद्या केर प्रचारा । जह सुष सदा न दुष व्यवहारा ।
पुन्नि छीन जह कवहु न होई । जहा गए पुनि फिरै न कोई ।

अत—

ताते तात पुरदर पाछे । करहु राज सुरपति पुर आछे ।
असकहि हरि अतर हित मयऊ । निज निजदेव लोक सब गयऊ ।
यह इतिहास कहेउ मै भाषी । जेहि प्रकार हरिजन रुचि राषी ।
प्रथमहि मय हरिजन गुन गाये । मति अनरूप अनूप सुहाये ।
कनककसिप हाटक द्विज दोऊ । रावण कुभकरण भे सोऊ ।
दत वक्र अवर सिसुपाला । पायेउ गति सोह तेउ गोपाला ।

दोहा

नारायन के पारषद जै अरु विजय सुजाना ।
भए महामुनि श्रापते ताते करौ बषान ।४७
सुभग चरित प्रहलाद कित अभिमत फलदातार ।
प्रेम सहित गावै सुनै नहि जन्मै ससार ।

इति श्री प्रहलाद चरित्रमानसे सहजरामकृते......प्रहालद चरित्र संपूर्ण ॥ संवत् १६११ ॥

विषय—प्रह्लाद चरित्र वर्णन।

४०५. हनुमान लीला या हनुमान बाल चरित, रचयिता—सहजराम, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{5}{8}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—११२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री महंत जगदेवदास जी, ग्राम—पडरी गनेशपुर, डाक०—रायबरेली, जिला—रायबरेली।

आदि—श्री गणेशाय नम ।। श्री मते रामानुजाय नम. लिखिषं हनुमान लीला सहजरामकृत ।।

।। दोहा ।।

विधि हरिहर गनपति गिरा श्री गुरपद सिर नाय ।
बाल केलि हनुमान की कहौ जथा मति गाय ।।
पूरब कल्प रुद्र तनुधारा । भये कीस केसरी कुमारा ।।
सुरमुनि असुर वदि व्रषकेतु । जाहि सदाहरि दरसन हेतू ।।
जब हरि निकट उमापति आवहि । प्रथमहि पूजि चरन सिर नावहि ।।
भयो मदन रिपु मन सदेहा । पूजनहेतु धरी कपि देहा ।।
अब यहि कल्प कथा अति पावन । कहो सकल दुष दोष नसावन ।।

.o o· :o:

जाय समीप सुरेस सर्व विलोका । मारतड मडल कपि रोका ।।
देषा कीस सस सनागन गारी । धावा सन्मुष वदन पसारी ।।
तब सरोष सुरपति पवि लीन्हा । कीस हनु हनि घायल कीन्हा ।।
मुरछि मही कपि परो अधीरा । सुत हत देषि सरोष समीरा ।।

अंत—

राम उपासक मन वच कर्मा । सपने जान न दूसर धर्मा ।।
करहु जाय तिनकर मतसगा । मिलिहै रकुकुल कमल पतगा ।।
सुनि जननी सिष आसिष नीके । पूरन भये मनोरथ हीके ।।

।। दोहा ।।

सहजराम मागी विदा अतिहित वारहि वार ।
मुनि आगस्ति के आश्रम गये समीर कुमार ।।
बाल चरित हनुमत कथा बालमीक मत देषि ।
करी सुमगल दायनी मगलवार विसेषि ।।

इति श्री हनुमान बालचरित कथा समाप्त सुभमस्तु ।। सवत् १८२८ ।।
समय नाम चैत्र वदि दसम्या तिथौ सुभ वासरे रवि ।। .....।। पठनार्थ नेवाजी लाल लेषनीए बेनीवत्त पांडे ग्राम लालपुर ।। २ ।। श्री गोपाल

विषय—हनुमान चरित्र वर्णन।

संख्या ४०६. कविता कल्पतरु, रचयिता—सागर कवि, कागज—देशी, पत्र—११५, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—१५५२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१७८८ वि०, लिपिकाल—१७८६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री युत प० लाल श्रीकंठ नाथ सिंह जी, धेनुगांवा (बस्ती)।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ ग्रंथ कविता कल्पतरु लिख्यते ।।

मंगल मगल करन रूप मगल छवि छाजत ।
बुधि बसाल गुन जाल बाल ससिभाल विराजत ।
फरस पानि वरदानि दुषदवा तदवदल षडन ।
एकदंत नितिमत मत्त दती मुष मडन ।

जिह जोग काज जग जपतही लहत सिद्धि सिव सिद्धि सुव ।
वल रस भूषन भूषन करन देहु उकतिगन ईस सुव । १

× × ×

ब्रह्म` रूप ह्वं के सव जगको बनावत है ।
विष्णु रूप ह्वै के करै पोषन क वात कौं ।
सिव रूपधरि कै संहार करै त्रिय लोक कै कूर्क उरूप धरि दैतन की घातकौं ।
भेव न लहत वेद नेति नेति भावै दिन देत नवरस कछु तम रूप गात कौं ।
'कविता कलपतर' रचना रचन हेत दीजिए सकति तो सकति मात तात कौं ।

अथराजवंस वर्ननम दोहा

देव अंस राजा भए रघुकुल के अवतंस ।
लषिमत पूरव कविन के वरनत हौ तिनवस ।

छंद पद्धरी

नप ईस धर्म ग्वालरछीन । तिन पुत्र सोठ भय अति प्रवीन ।
सुत दुलहराज जमवाइ भाइ । विय वड गूजरमी नाउ डार ।
कुलता सकल सकाकिल नरेस । सुत हनूराय हनमत भेस ।
जग जानऊंदे तिनके सपूत । जिन मार लई धरनी अभूत ।
जिनकंप जोन सामत भेस । जीते कमद्ध कनवज्ज देस ।
ता पुत्र मलैसी वड ववेक । गिर नारि आदि जीते अनेक ।
वीजल नरेस तिनकै गरूर । नृप राजदेव तिन वस सूर ।
कहि कोल्हण दे भयता सनद । सुतकूं तिल लीनै अति अनद ।
सुनि जौन सिह ता पुत्र मानि । वर उदै करण ता पुत्र जानि ।
तिनकं नरेस नरसिह गाव । भुजवधु दुतिय स्यौ वृभराव ।
स्यौ वृभ प्रगटि स्यौ वृभ रूप । तिन जुद्ध जोरी जीते अनूप ।
जिन वस भोज पग दानसग । रणमल्ल तासकं रण अभग ।

दोहा

रणमल कै नाथू भयो दुतिय पचाइण वीर ।
आसल जी सुत तीसरौ जुटै जग तवधीर ।
पुत्र पचाइण कै भयो दिन मनि देई दास ।
सुतगुपाल तिनके भयौ जिमि गुपाल वृजवास ।१६

कवित्त

बारह वरिस कै सघारिवड़ गूजरिनि तीनि वेर वेत परयौ चवलै लराई कौ ।
सुत गुपाल के ह्वै भयो इकगनि भोपति राव ।
कहौ वेतसी दूसरौ रिणसो तिनको चाव ।
भीमरूप भोपति तनय रावत राघौदास ।
फतेहसिह डूंगर प्रवल अरिकुल करनं भास ।१९

:o: :o: :o:

फतेहसिह के केसरी सिघ सिह कै भाइ ।
चतुरसिह वनकरि प्रवल पुनि सुजान सिह गाई ।

:o: :o: :o:

फतेहसिह के रावदेवसिघ देव प्रगट्टिव ।
नीदरपति वलभीम षग्गवल दुज्ज घट्टिव ।

:o: :o: :o:

देवसिंघ कै कवरत्रिय वषत सिंह जुम्भार ।
जोरावर सिंह जोरवर अरिमारै गहिसार ।२५

जोरावरसिंह जोर वर लषि जयसिंह नरेस ।
राजभार सौंप्यौ सरस थप्यौ मालवोदेस ।
किला रामगढ़ निकट इक गाव भानपुर चार ।
तहां कविन को करि सभा कोनौ कावि विचार ।
तहां बाघोरा भाट इक चद नद सुषधाम ।
वासी गढ़ ग्रांवेर को निज कवि नान्हू राम ।
तिन कवि कौ कीनो हुकुम सव सुष दे सुष पाइ ।
रस कविता भूषन वलित वरनौ गुल्य वनाइ ।
हुकुम सकति सम पाइके ममट मतको पाइ ।
वरनौ कविता कलपतरु ग्रथ नाम ठहराइ ।
संवत् सतरह सत सुनौ वरस ग्रठासी गान ।
नवमो ग्रादि ग्रषाढ पष रचनाग्रथ प्रमान ।
लक्षिन सुनि लै प्रथम ही वहुरि प्रयोजन पाइ ।
ता पीछै कारण कवित क्रमतें क . .
(पत्र ७ . ८ खडित) ।

.०: ० :०:

ग्रत—
कविता कौ भेद पुनि सवद ग्रर्थ भेद समुझि कै महा ग्रग ग्रग मोद मढैगो ।
रसको सरूप जानि भूषन पिछानिकै उकति जुकति कै ग्रनेक ग्रग वढैगो ।
चरचा चमतकार चकित सभा को करि चाह चौपगहै चित भूपन के चढैगो ।
वडे कवि रीझि कै कहैगे कविराज तोहि जवै कवि कविता कलपतरु पढैगो ।
हुकुम समान कीनौ कविता कलपतर पाइ इत तामे भेद कवि रस भीनो है ।
चौंप करि चाहसौं सुनत भए भिन भिन ताहि वे रचित कौ उमंग ग्रौर कीनो है ।
जोइ जोइ चटयौ सोइ वीनौ मन चित फल वहुरि जगतमाझ ग्रैसो जस लीनो है ।
नान्हू राम कवि का किताव कवि सागर कौ जोरावर सिह धी रीझि करि दीनो है ।

दोहा

पुषि ग्रष्टमी भूमिसुत कातिक ग्रादिक पाष ।
सवै ग्रथ पूरनभयो पूरन कवि ग्रभिलाष ।२६०

इति श्री सहृदय रूप जोरावरसिह ग्राग्या प्रमाणग्रथ कविताकल्पतर कविसागर कृत ग्रर्थलकार सकर सृष्टि वर्नन नाम पचमो सर्ग सपूर्ण सवत् १७८६

विषय—ग्रलकार विषय वर्णन ।

रचनाकाल

संवत सतरह सत सुनौ वरस ग्रठासी गान ।
नवमी ग्रादि ग्रषाढ पष रचना ग्रथ प्रमान ।

सख्या ४०७, रसरत्न, रचयिता—साचार, कागज—देशी, पत्र—२४, ग्राकार—८ X ४॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (ग्रनुष्टुप)—४६८, ग्रपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा वाराणसी (दाता—श्री प० कुरुशेखर जी, ग्राम—मड़या मउ, डाक०—मानधाता, जिला—प्रतापगढ़)।

ग्रादि—ग्रथ मध्या लक्षण लक्ष्य च ॥

लाज काम सम जाहि कै मध्या कहे प्रकास ।
लषनि लजीली कोर सो लखै न सषि एरि त्रास ।२२

ग्रथ मध्या धीरा लक्षण लक्ष्य च ॥

वचन फेर सो रिस करै मध्या धीरा वाल ।
भलीं विराजति स्याम जू विन गुन की यह माल ।।२३

अथ मध्या अधीरा लक्षणं लक्ष्यं च ॥
मध्या कहै अधीर तिय कहै जो बैन कठोर ।
आवत हो जहं रस भरे जाहु रसिक तेहि ठोर ॥२४
अथ मध्याधीरा धीरा लक्षण लक्ष्यं च ॥
वचन रुदन सो होति है मध्या धीरा धीर ।
देखति हरि चाहति कह्यो भरि आए दृग नीर ॥२५
इति मध्या ॥ अथ प्रौढा लक्षणं लक्ष्यं च ॥
केलि कलापति संग चतुर प्रौढा कही रसाल ।
हेरि फेरि हिय मे लगं चपक केसो माल ॥२६
अथ प्रौढ़ा धीरा लक्षण लक्ष्यं च ॥
रत मे होति उदास है प्रौढा धीरा नारि ।
पिय मुख लखि दरपन लियो तिय हिय रोस सभारि ॥२७
अथ प्रौढा अधीरा लक्षणं लक्ष्य च ॥
तर्जन ताडन आदि वै करै प्रौढ़ अधीर ।
देति मारु तिय फूल की लखि लखि श्रम अगतीर ॥२८
अथ प्रौढ़ा धीरा धीरा लक्षणं लक्ष्यं च ॥
रत उदास डेरवावती प्रौढा धीरा धीर ।
कहा दुखी सी रहति है तुम्हें लखै उर पीर ।२९
इति प्रौढा अथ ज्येष्ठा कनिष्ठा लक्षण लक्ष्य च ॥
बढे घटे प्रिय प्रीति ते ज्येष्ठ कनिष्ठा हेत ।
एकहि फूल तुराइ हरि एक अग भरि लेत ॥३०
इति श्री तारानाथात्मज साधार विरचिते रस रत्ने स्वकीया भिधान नाम प्रथमो मयूखः

अत—इति व्याज स्तुति ॥ अथ आछेपाल कर लक्षण लक्ष्य च ॥
कही वा जहँ हेल लखि वरजत तहाँ आछेप ।
ल्याई घन घनसार सखि की है चदन लेप ।१८
यथावा
श्लोक... . ...' ।
इति आछेप अथ विरोधालकार लक्षण लक्ष्य च ।
क्रिया द्रव्य गुनको जहा होत विरोध विरोध ।
—अपूर्ण

विषय—लक्षण ग्रथ, काव्य के लक्षणों तथा अलकारो का वर्णन ।

सख्या ४०८. बिराहचद्रिका, रचयिता—सारगधर, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—८। × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—१६२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १७७४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० कृष्णशरण जी शुक्ल, ग्राम—भादी, डाक०—मझउआमीर, जिला—बस्ती ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।
गुरु गोविन्द गणपति पिउ गिरिजा होहु सहाय ।
भाषा आसन कइउ सोनार की कहत बनाइ । १
दूरि करत सम तम गणहि सुखवाया सु पहिचानि ।
सो वाराह बुध चंद्रिका सारगपाणि । २
कवित्वम्
करउ सोनार भाषा वूलनिवो कहिब ठारहु करहु श्रो विराह विज्ञ मानिए ।
थाहत जनोरत बोविन्द तत्त गत्त यानु वित्त उत्तुहै जानत लहर विप्र मानिए ।
ववि तमकार दोऊ नाम कही प्रवि अनुसेरु आवनिक शूद्र लावर वषानिए ।
योग कही पवन वो भाट वुलि वक आहि नाऊ को पर आवा वारि पत्तहासा ठानिए ।

भाट को ठवेली बूजी अभिधा यो कहित को हरि हरियरा सो अहिर बकार है ।
कोग तवु कारक ही धुनिया ओ जोलहा को थुकहा ओ मटिकार बोलिए कोहार है ।
कोलि हासो भूज कहु वाजी को वकौंहा कहु करि सिगी भैंसकहु ठाकु वार वार है ।
बकियस बूधमाषु देषु को कल्हार कोऊ ग्रह डाहडिक जनि का वसि सोनार है ।
ओघटि घटि जनि तूंग सितानहु ठारे ठाल ।
तिग तट तोरा विज्ञ है मोहै वे रस गोपाल ।

भाषा । वेरस वडा वेरसा वढ़ा । कही तेल अरु तेली को लटिका ओ लटिकार । विजुकी ठाढी जानिए विजुका षोरहि वार । अथ धातु नाम ।

सोनरूप शत सीस तांव रांग अरु सार ।
अष्ट धातु पारा सहित भाषत ग्रंथ सोनार ।

अत—

कवित्त

पोषत कं विमरी द्विविध देषि लीजिअत टहरी ओदवनी जंजीर मोर लीजिए ।
फेर फार बूझि लीजे कइउ सो जो सवदा कीजे पलरा वोका निरषि मोह तानिए ।
धरि आर वना सो डाडी भरि तोरु तर द्विविध डसौरी काटु ओष थीरी भानिए ।
बक्क सुई वो सहाई भंवना को पहिचानु हडिक कविहराको भले पहिचानिए ।
इति योषत कर आसन । अथरती मासा तोरा कर प्रमान ।

कवित्त

चाउर आठ प्रमान रती भरिओ यव चारि सोई मनमानी ।
आठरती भरि मासा को मान है वारहमासा सो तोरा वषानी ।
साठे सलाई प्रमाण रुपया सवादश वोदश सारगपाणी ।
साढे एगारह देश के भेद सो जानो विराह सव मनमानी ।

।। भाषा ।। पयाग करेटी सहिवादेपुर साढे एगारह मासा हमरे मध्यदेश साढेदश मासा वारानसी दश मासा अयोध्या सवादश मासा ।।

इति सारगधर विरचिताविराह चद्रिका समाप्ता भवान्य नम सवत् १७७४ मार्ग शुक्ल प्रतिपदा ।

विषय—शब्दकोश । सानारी बोली के शब्दो के अर्थ ।

संख्या ४०६क. वानी (दोहावली, शब्दावली तथा कवित्त), रचयिता—बाबा सिध्यादास, निवासस्थान—हरिगांव, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—४६, आकार—८½ × ६⅞ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—६८६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६६० वि०, प्राप्तिस्थान—महत श्री गुरुप्रसाद जी, स्थान—हरिगांव (सिध्या बाबा की कुटी), डाक०—पर्वतपुर, जिला—सुल्तानपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नम ।। अथ दोहावली वानी वावा सिध्यादास जीउ कृत लिष्यते ।।

।। दोहा ।।

श्री जगजीवन जक्त गुरु दूलन दानिवदार ।
सगुन सरवहित जानि सुभ सिध्यानाम अधार ।। १ ।।
नयन के भीतर अैन है मयन कोटि छवि जासु ।
तासु चरन तर मन वस्यो सिध्या निरषि हुलास ।। २ ।।
नाम अैन है राम को दोष मत करि ग्यान ।
ताहि नयन विच रैन दिन बाँसुरी धरे कदम तर ध्यान ।। ३ ।।
:o: :o: :o:
साषी सब्द पवारथ उर भरि राषै कोई ।
सिध्या समुझे सुनेते सुमिरन को फल होइ ।।१३।।

॥ इति श्री सपूरन ॥

अथ सब्दावली ग्रंथ साहेब सिध्यादास जीउ कृत लिष्यते ॥

॥ सब्द ॥

हनोमान पिआरे हौ तुम्हरी वलिहारी ।
पवन तनै बलधाम राम प्रिय दीनन के हितकारी ॥ १ ॥
बाल जती सत स्वामी धर्म रत अतरनाम अधारी ।
जुग जुग ध्यान धरत सत मति को टारे टरत न तारी ॥ २ ॥
भक्त उजागर सब गुन सागर आगर जस विस्तारी ।
दास हेत तुम प्रगट तवौ अब सकट देत नेवारी ॥ ३ ॥
सब सुषदायक नायक जनके कपि कुल मनि उपकारी ।
सिध्यादास भक्ति वर पावै निस दिन विनै पुकारी ॥ ४ ॥

अंत—

कवित्त लिष्यते

सिर मुकुट वाल भाल वदन रिसाल लाल
लाली छवि नयनन की पकज लजावते ।
नासिका कपोल चारु चिवुक अमोल अधर
रत विंव बोल विहसत मन भावते ॥ १ ॥
कानन के कुडल सुडौल लोल डोलत हैं
मानो निज जनन के मनन को बोलावते ।
कहै द्विज चेरा प्रभु हाथ है निवेरा गुरु
चरनन की धूरि भूरि सीस पै चढ़ावते ॥ २ ॥

:o: :o: :o.

॥ कुडलिया ॥

चेरा दूलन दास को वास करै हरिगाँव ।
चरन कमल आधार है रटत निरतर नाव ॥ १ ॥
रटत निरतर नाऊँ दाऊँ अस वहुरि न भाई ।
बड़े भाग ते अइ जन्म द्विज के ग्रह पाई ॥ २ ॥
कछू न लागै सग अग यह आहि न तेरा ।
लेहु परषि पहिचानि सीस पर साहेब चेरा ॥ ३ ॥
चेरा विरही नाम को चढत न देहीं मास ।
नयन पलक लागै नहीं मद मद चलु स्वास ॥ १ ॥
मंद मद चलु स्वास पास प्रभु निरषि दिढाई ।
सुरति सत्य ठहराइ सुर्गत चरनन लपटाई ॥ २ ॥
अष्ट जाम धुनि नाम परम सुष सागर हेरा ।
लोक मान अपमान त्यागि भयो सतगुरु चेरा ॥ ३ ॥

कुडलिया ॥ २ ॥ इति सपूरन ॥

:o: ·o· :o:

अष्टादस सै समय दस मारग मास पुनीत ।
सिध्या हेरत आपु मे परषेऊ आपन मीत ॥१६॥

इति श्री विरससत ग्रथ साहेब सिध्यादास जीउ कृत सपूरन सुभमस्तु ॥ वैसाष मासे कृष्ण पक्षे तिथौ ५ श्री सम्वत १९९० ॥ दोहा ॥ लेषक गुरु प्रसाद कवि वासा रमई ग्राम । जो प्रति सो लिषा सिद्ध करै श्री राम ॥ परमधाम के निकट है गुरु प्रसाद अस्थान । प्रभु दूलन दाता जहा जानत सकल जहान ॥२॥ क्रम दाहन तीरथ तहाँ सतन का दरवार । गैबी नौबति जह झलै सब्द होई धुधकार ॥ ३ ॥ लेषक श्री गुरुप्रसाद दास ब्रह्म महाचार्ज सर्मा जिला राय बरेली पोस्ट तिलोई ॥

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या ४०९ख. विरहसत, रचयिता—बाबा सिध्यादास, निवासस्थान—हरिगाँव (सुल्तानपुर), कागज—देशी, पत्र—१०२, आकार—११ १/३ × ६ ५/८ इञ्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप)—२३४६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१० वि०, प्राप्तिस्थान—महंत श्री गुरुप्रसाद दास जी, स्थान—हरिगाँव (सिध्यादास बाबा की कुटी), डाक०—पर्वतपुर, जिला—सुल्तानपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ पोथी विरह सतसाहेब सिध्यादास कृत लिष्यते ॥

॥ अश्लोक ॥

आनद मूल गुन पल्लव तत्व साध्य वेदात पुष्प फल मोछि रसादि पूर्णं ।
चेतो विहग हरि तुग तरु विहाय ससार सुख विटपे वद किरतोस्मि ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

श्री गनेस सभू सहित गिरिजा गग समेत ।
जनसिध्या विनती करै देहु दया करि चेत ॥ १ ॥
सतगुर दीन दयाल प्रभु तुम लायक सब जोग ।
द्विज सिध्या चरनन परो मति मलीन बसि भोग ॥ २ ॥
सतगुरु दाता नाम सम जन सिध्या अति दीन ।
चरनन परिवर मागो चरन कवल मन लीन ॥ ३ ॥
:o: :o: :o:
विरह सत यह पोथी सहर जवन पुर कीन्ह ।
सिध्या पिय पहिचानि निज चरनन तर चित दीन्ह ॥१५॥
अष्टादस सै समै दस मारग मास पुनीत ।
सिध्या निरषत आपु महँ परख्यौ आपन मीत ॥१६॥

अंत—

पुरुष प्रकृति लै ब्रह्म समाना । ज्यौ को त्यौं यह वेद वषाना ॥
माया मेटि जीउ पद राखै । वह जिउ सतगुर पद अभिलाषै ॥
जियत रहै मरि मरै न सोई । सतगुर मिलै अमर पद होई ॥
सतगुर ईस एक जब भासै । माया ज्ञान वनाइ विनासै ॥
ईस वहै जब ब्रह्म समाई । चारिउ भये येक पद भाई ॥
:o: :o: :o:

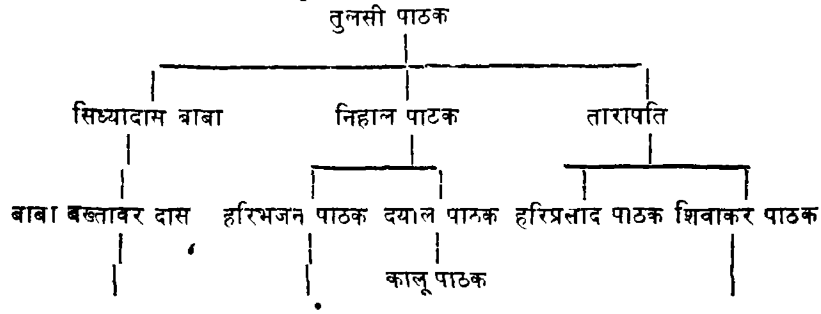
—अपूर्ण

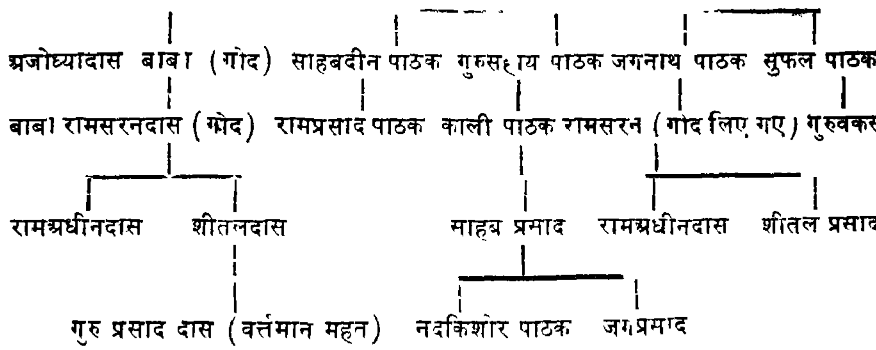
विषय—पुराणो के आधार पर भक्ति तथा ज्ञानोपदेश पूर्ण कथाओ का वर्णन ।

रचनाकाल

अष्टादस सं समै दस मारग मास पुनीत ।
सिध्या निरषत आपुमँह परख्यौ आपन मीत ॥

विशेष ज्ञातव्य—इनका वंशवृक्ष इस प्रकार है—





इनकी निम्नलिखित रचनाएँ है--

१ दोहावली, २ शब्दावली, ३ कवित्त तथा कुडलिया, ४ विरहसत, सभी रचनाएँ विषय की दृष्टि से उत्तम है। ये जौनपुर मे भी कुछ दिन रहे थे जहाँ इनकी एक कुटी स्थापित है।

संख्या ४०६ग. विरहसत, रचयिता--बा० सिध्यादास, निवासस्थान--हरिगाँव (सुलतानपुर), कागज--आधुनिक रूलदार सफेद, पत्र--६, आकार--८ ३/१० × ६ ६/१० इंच, परिमाण (अनुष्टुप)--६१, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १८१० वि०, लिपिकाल--स० १९८७ वि०, प्राप्तिस्थान--प० रतननारायण जी, ग्राम--जगदीशवापुर, डाक०--इन्हौना, जिला--रायबरेली।

आदि-- **॥ कवित्त ॥**

सिर मुकुट बाल भाल चदन रिसाल लाल
लाली छवि नयनन की पकज लजावते।
नासिका कपोल चारु चिवक अमोल अधर
विवरद बोल विहसत मन भावते।
कानन के कुडल सडोल लोल डोलत है
मानो निज जनन के मन को बोलावते।
कहै द्विज चेरा प्रभु हाथ हैं निवेश गुरु
चरनन की धूरि भूरि सीस पै चढ़ावते।
दिढ ज्ञान नहीं मन मे सुनि कोटिन बातन एक दिढावत है।
श्रुति सत पुकारत मारग जो नहि आवत एक न भावत है।
हरिनाम निरतर लेत नहीं मन मे करि साच न ध्यावत है।
द्विज सिद्धा कहे हरि आपुहि भा पहिचान न आवत ध्यावत है॥

अत-- **॥ दोहा ॥**

सिद्धा यहि ससार मे कत निरखि पहिचानि।
अहै निरंतर पास ही अपने मन दिढ जानि॥
सिद्धा नाम जिकिरितें चौसाठ धरी बिताउ।
कत दरश की लालसा छिन छिन चाउ बढाउ॥
'विरह सत्य' यह पोथी शहर जवनपुर कीन।
सिद्धा पिय पहिचानि निज चरनन तर शिवदीन॥
अष्टादस सै समै दस मार्ग मास सुपुनीत।
सिद्धा होत आपु मे परखेहु आपन मीत॥

इति श्री विरहसत्य सपूर्णम्।

रामसुमेर व ऋषिप्रताप स्थान चिलुली पाठशाला तिलोई प्रोइसरी ता: १७-३-३२ ई०

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

रचनाकाल

अष्टादश सै समै दस मार्ग मास सुपुनीता ।
सिद्धा होत आपु मे परखेहु आपन मीता ॥

संख्या ४०६घ शब्दावली, रचयिता—बाबा सिध्यादास, निवासस्थान—हरिगाँव (सुल्तानपुर), कागज—आधुनिक (रूलदार शीट), पत्र—२६, आकार—८$\frac{3}{10}$ × ६$\frac{6}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप)—२६३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९८९ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० रतननारायण, ग्राम—जगदीशवापुर, डाक०—इन्हौना, जिला—रायबरेली ।

आदि—॥ अथ शब्दावली ग्रंथ लिष्यते ॥

॥ शब्द ॥

हनुमान पियारे हौं तुम्हरी बलिहारी ।
पवन तनय बलधाम राम प्रिय दीनन के हितकारी ।
बालयती सत स्वाना धर्मरत अनरनाम अधारी ।
युग युग ध्यान धरत सत मान को टारे टरत न तारी ।
भक्त उजागर सबगुन सागर आग यस विस्तारी ।
दास हेत तुम प्रगट तबो अब सकट देत नेवारी ।
सब सुखदायक नायक जन के कपि कुलमणि उपकारी ॥ १ ॥
सतगुर कहत हरिहर ध्याउ । ताते बारबार चेताउ ।
त्यागि इत उत भटक मन रे शरन सम्मुख आउ ।
दीन ह्वं लौलीन अंतर अधिक प्रीति बढाऊ ।
होनिहारी होई जो तकि मनहिना भरमाऊ ।
कर्म की अनहारि दुख सुउ मर्मुझि मो विसराऊ ।
लागि निशि दिन पारी अजपा अधर लै ठहराऊ ।
निरखु नैनन रूप निर्मल रहै ना पछिताऊ ।
दास सिध्या आस के गुरु चरन चोगुन चाउ ।

अंत—

कहाँ का जानत तुमही ।
जल थल घट घट व्याप रह्यौ है मोरहु तन मनही ।
मनमा जवन तवन तुम जानत मर्मुझि के सकुचि रही ।
जो तुम कहत होत है सोई दूसर अवर नहीं ।
निसि दिन प्यास नाम रटना की सूरति फिरत बही ।
राखहु सरन दयाल दया करि हित उपदेश कही ।
छवि रस चाखि सुनै धुनि अन्तर सुख सतोष लही ।
सिद्धावास पास लखि अपने सतगुर चरन गही ॥८८॥

इति श्री सिद्धावास जी की शब्दावली सम्पूर्ण ॥

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या ४०६ङ शब्दावली, रचयिता—बाबा सिध्यादास, निवासस्थान—हरिगाँव (सुल्तानपुर), कागज—आधुनिक (पीला), पत्र—४३, आकार—८$\frac{1}{5}$ × ६$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—७०९, खंडित (आरंभ का एक पत्र नहीं है), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री महंत गयाप्रसाद जी, ग्राम—भीखीपुर, डाक०—राज फत्तेपुर, जिला—रायबरेली ।

आदि—

सिद्धा वचन गरीब का सुखियन नहीं सोहाय ।
ज्यो गुम्मज पर फेकिये गुरा नहीं ठहराय ॥१३॥
भूखे भख विसरं नही नहि प्यासे को पानि ।
सिद्धा सुमिरउ नाम अस सर्ववानि रुचि मानि ॥१४॥
नाम भक्ति विन मानवा ज्यो सेवर के फूल ।
फरि पाके फूटत भयो पटहि लग्यो न तूल ॥१५॥
भक्ति छिपाये नहि छिपं ज्यो रवि उदय प्रकास ।
निशा समय रवि अस्त है निशि दिन भक्ति प्रकाश ॥१६॥
सिद्धा नर तन पाइकं जो न भजे सत नाम ।
जैसे कूआ जल विना खन तो कौने काम ॥१७॥

अंत—साईं दूलन अब करहु सभाँर ।
जन सिद्धहि दे चरन कगार ॥
कहौ का जानत सब तुम्हहीं ।
जल थल घट घट व्यापि रह्यो है मोरहु तन मनही ॥
मनमा जवन तवन तुम्ह जानत समुझि सकुचि रहो ।
जो तुम चहत होत है सोई दूसर अवर नहीं ॥
निस दिन प्यास नव रचना की सूरति फिरत वहीं ।
राखहु सरन दयाल दया करि हित उपदेश कही ॥
छवि रस चाषि सुनं धुनि अन्तर सुख सतोस लहि ।
सिद्धादास पास लखि अपने सतगुर चरन गही ॥८८॥

इति श्री सिद्धादास जी कृत शब्दावली सम्पूर्ण ॥

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन ।

सख्या ४०९च. साखी, रचयिता—बाबा सिद्धादास, कागज—आधुनिक (सफेद रूलदार), पत्र—१८, आकार—८$\frac{3}{10}$ × ६$\frac{1}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—१४२, पूर्ण, रूप- प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६८६ वि०, प्राप्तिस्थान—प० रतननारायण, ग्राम—जगदीशपुर, डाक०—इन्होना, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गनेशाय नुम

॥ साखी ॥

श्री जगजीवन जगत गुरु दूलन दानि उदार ।
सगुन सर्वहित जानि शुभ 'सिद्धा' नाम अधार ॥ १ ॥
नैन के भीतर ऐन है मैन कोटि छवि जासु ।
तासु चरन तर मन वस्यो सिद्धा निरखि हुलास ॥ २ ॥
नाम ऐन है राम को दीख सत करि ज्ञान ।
ताहि नयन विच रैनि दिन करि सिद्धा मधि ध्यान ॥ ३ ॥
बजं रंनि दिन बाँसुरी धरे कदम तर ध्यान ।
सिद्धा ताको का करं कर्म कीट परमान ॥ ४ ॥
सिद्धा भव जल जगत सर तामे माया जार ।
मीन जीव सब जानि कं खेलन काल शिकार ॥ ५ ॥
नाम भजन ते जीव यह जल स्वरूप ह्वं जाइ ।
जाल बीच आवै नहीं काल देखि पछिताइ ॥ ६ ॥
सिद्धा जगत बजार है बजारी सब लोग ।
सौदा नेकी वदी दुइ करि भुगतउ निज भोग ॥ ७ ॥

अंत—देखि रीति ससार की कहत वनत नहि बात ।
सिद्धा गूंगा ह्वं रहा समुझि समुझि पछितात ॥१२८॥

नाम ककहरा के पढ़ै समुझि परै सत पंथ ।
सिद्धा अपने मोह बस त्यागि दियो सब ग्रंथ ॥१२९॥
ग्रंथ पढ़ै तौ अति भला हित कै सुमिरै नाम ।
इहां उहा आराम है सिद्धा पूरन काम ॥१३०॥
साखी शब्द पदारथ उर भरि राखै कोइ ।
सिद्धा समुझे सुने ते सुमि रन को फल होइ ॥१३१॥

विषय—भक्ति, नामस्मरण और ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या ४१० पदमाला श्री गजन्नाथ जी, रचयिता—सिपहदार खाँ उपनाम वेगुन दास, निवासस्थान—कोल निवासी (सम्भवत दक्षिणा थे), कागज—देशी, पत्र—११, आकार—६$\frac{1}{8}$ × ५$\frac{7}{8}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप)—२०६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१२ वि० के पूर्व, प्राप्तिस्थान—नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—पदमाला श्री जगन्नाथ जी ४४ पद ॥ सिपहदार खाँ कोलवासी ने बनाई स्वाम मनोहर छापेखाने मै छापी गई सम्वत १९१२ मथुरा ॥

राग रामकली ताल तेताला

कब दरसन मोहि देवेगे । नाथ तुम कब दरसन मोहि दउगे ॥टेक
मोहि उमाहो लगो चरणन को दरसन परसन देवोगे ॥ १ ॥
बइया पकर मोहि ले चले स्वामी मोहि अपणा कर लेवोगे ॥ २ ॥
ध्यान तुम्हारो रहे घट भीतर सकट कू हर लेवोगे ।
जगनाथ जगतारण स्वामी मन वांछित फल देवोगे ॥ ३ ॥

.०. ०. :०.

इमन की झझौटी तेताल

मन मेरो लागि रहो मेरी वीर ॥ टेक ॥
निस दिन ध्यान रहत है तिहारो मूको जात शरीर ॥ १ ॥
जगनाथ स्वामी तुम बिन मेरी कोन धरै वह धीर ॥ २ ॥
वेगुन चैन परत अब नाही प्रिय दरसन रघुवीर ॥ ३ ॥

अंत — मलार ध्रुर्य

नाथ मेरो देषत मन हुलसायो ।
दरसन पाइ मगन भयो मन मे सुंदर रूप समायो ॥टेक॥
जा दिन ते मेरो प्रेम लगो है सकट आव सहायो ।
'वेगुन' पाप कट जुगजुग के हरि दर्सन जब पायो ॥ २ ॥४४॥

इति वार्ता जगनाथ सवद ॥

विषय—जगन्नाथ जी विषयक पद ।

संख्या ४११ सुद्रष्ट तरंगिनी, रचयिता—सीतल जैन, कागज—देशी, पत्र—४९९, आकार—१३$\frac{6}{10}$ × ८$\frac{4}{6}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—१६२१७, पूर्ण, रूप—नया, गद्य पद्य, लिपि— नागरी, रचनाकाल—सं० १८३८ वि०, लिपिकाल—सं० १९७० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मंदिर, अहियागंज, टाटपट्टी मोहल्ला, लखनऊ ।

आदि—ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ अथा श्री सुद्रष्ट तरगनी नाम गथ प्रारंभते ॥

॥ दोहा ॥

श्री अरहत महत के बदौ जुग पद सार ।
गृथ सुद्रष्ट तरंगिनी करौ स्वपरहित कार ॥ १ ॥

॥ गीतका छंद ॥

हौं सिद्ध बदौ अष्टगुन जुत सूर गुन छत्तीशहो ।
उपभाय गुन पनवीशधारो साधुगुन वसु बीसहो ।

ए पंच इष्ट अनिष्ट हरता समंकरता जांनियें ।
मन वचन तन त्रय सुद्ध करकें शदा तिनहि प्रनामियें ॥ २ ॥
:०: :०: :०:

॥ गाथा ॥

नज विहोया तिलधातादी मूंम जल षडोल वारभ सुहवरण जो विरणरि सो विनय ग्रावेयो॥४४॥

अर्थ––हिस्याकारी वनज तजवे जोग है ॥ तिल लोहि कूं ग्रादधात का व्योरेपार तजनें हैं ॥ यौर जामैं ग्रल्प ग्रारभ होय सो सुभभ वनज करना ॥ जामें हिंस्या नाही यैशे वनज है ॥ भावार्थ ॥ जे सम्यक द्रष्टी धर्मात्मा है ॥ सो वनज करनें में यैसें गेय हेय उपादेय हैं ॥ सो विषाइए हैं ॥ तहां शुभ ग्रशुभ वनज का समुश्रय जांनना सोतौ गेय हैं ॥ ताके द हैं ॥ एक सुभ वनज हैं एक ग्रसुभ वणज है ॥ तहा जो हिंस्या झूट चोरी दोष रहित । सुभ वनज हें ॥ जहा हीरा मौती इत्यादिक जद्दार सोधा लेना सोधा ही देना सचय कर ए राषना निरदोष वनज उपादेय है ॥

अत––

॥ दोहा ॥

यह सुद्रष्ट की तरग है ताकौ यह विस्तार ।
सागर समजो यह तरं सम्यक टेक सोधार ॥ ३ ॥
:०: ०: :०:
सीतल जिरण जनम थल गृंथ समापत कींरण ।
विघनमिटें मगल थए भए पाप सव षीरण ॥
टेक गई ग्रघ कारनी रही टेक पुन्य दाय ।
मो यह भौ भौ टंक हम मिलौ टेक धर्मदाय ॥ ६ ॥
सवत् ग्रष्टादस सतक फिर ऊपर ग्रडतीस ।
सांवरण सुद एकादसी ग्रर्धनिस पूरन कींरण ॥ ७ ॥

इति श्री सुदृष्ट तरगिनी नाम गृथम गृथ मद्धे बालबोध वर्णनोनाम बयालीसमीसंध ॥ ॥ ४२ ॥ इति श्री सुद्रष्ट तरगनी नाम गृथ सपूर्ण ॥ श्लोक ॥ मिती वैसाष वदी । सवत् ॥ १९७० ॥

विषय––जैन धर्म का प्रतिपादन किया गया है ।

रचनाकाल

संवत् ग्रष्टादस सतक फिर ऊपर ग्रडतीस ।
सांवरण सुद एकादसी ग्रर्धनिस पूरन कीरण ॥ ७ ॥

संख्या ४१२. शकुन विचार, रचयिता––सीताराम (?), कागज––देशी, पत्र––२, ––८।×४॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)––११, परिमाण (ग्रनुष्टुप)––३७, ग्रपूर्ण त), रूप––प्राचीन, पद्य, लिपि––नागरी, रचनाकाल––म० १८२७ वि०, प्राप्तिस्थान–– देवीप्रसाद जी तिवारी, ग्राम–पाऊँ, डाक०–गायघाट, जिला–बस्ती ।

ग्रादि––श्री गरणेशाय नमः

दोहा

वन्दौं पुरुष ग्रनाधि को सव उपाधि करतार ।
जनमन जाननि हार हर जनमन जाननि हार । १
७ २ ८ १
सागर कर वसु एकरि सम्वत् सन नृप वक ।
माघ कृष्ण रवि द्वंज को धरव वाम गति ग्रक । २
एक समं सव गुन मई मुनि नारद ग्रभिराम ।
ग्राए बूझन सगुन सुभ ऋषि गौतम के धामं । ३

करि प्रनाम आगे लियो ऋषि गौतम गननीय ।
बूझि कुमल आसन दियो प्रेम राषि रसलीन । ४
समं उचित ऋषिराज ते बूझी ब्रह्म कुमार ।
कहिए सब गुन को सुदर सरिस विचार । ५
कहत ऋषीस मुनीस तें तुम सब जाननि हार ।
पूछन प्रेम अतीस हित सुनिए सगुन विचार । ६

अंत—अरि करि मारो सिंह ह्वं कि कोउ अकुलात ।
सुमिरत सीताराम को सबं पाप कटि जात ।
काज अत मव देषियत अवही न हे मुनीस ।
प्रति दिन मुमिरन के रह्यौ प्रनत पाल जगदीस ।
सगुन सुमगल मूल यह अब पूरन सब काज ।
सुमिरत सीताराम को होत सिद्धनि राज ।
मनहद्रित कीन्धौ जको सौ जसवे लो लाल ।
सुमिरत सीताराम को सगुन सुमगल माल ।
अवही कछु देषो नही देषो करो अगत ।
प्रतिदिन मेवन कं रहे स्याम रूप भगवत ।

—अपूर्ण

विषय—शकुन विचार विषय वर्णन ।

सख्या ४१३क. वशावली (या काव्यकल्पतरु), रचयिता—सीताराम, निवासस्थान—बलीपुर (बाराबकी), कागज—आधुनिक (सफेद), पत्र—५५१, आकार—८$\frac{1}{2}$ × ७$\frac{5}{6}$ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—६०६१, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८२२ वि०, प्राप्तिस्थान—प० माताप्रसाद जी उपाध्याय, ग्राम—जगतपुर, डाक०—शिवरतनगज, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नम ।। अथ वशावली लिख्यते ।।

मार्दूल विक्रीडित छद ।। श्लोक ।।

नत्वा ब्रह्म निरजन श्रुति नुत वदात वेद्य प्रभु ।
यो विस्व विरचय्य विस्व भरगे महारगे यो पढु ।
यस्मिन्नडकटाह भ्रामति मदा पाताल पाद शिर. ।
मत्य लोकमय प्रभुविजयते दोषापनोदो गिरा ।। १ ।।

।। मनहरन दडक छद ।।

बदौ गनराज अहिराज देवराज पुनि विधि हरिहर दिन राज षग राज को ।
भूसुर कविद बुध सुर मुनि गन जेते सत जे अनत कोटि बदो बेद चारिको ।
बाल्मीक पुरौ दशरथ विदेह व्याम वोदरषल्लाये सीताराम येते काज को ।
मुनि वश भूप कान्ह बस अवतस भनो पावों बुद्धि सुधि छुटै जडता गुलाम को ।।

.o. o :o:

।। दोहा ।।

हैबरगढ के जाम द्वं कोस बलीपुर ग्राम ।
जाति उपाध्या अवनिपति वस भनोगनि नाम ।। ६ ।।
जज्ञपाल नृप इक सुनि भूपति होत अमान ।
तिन कवि सीताराम को बोलि कीन सनमान ।। १ ।।
पिगल मत करि सरस कछु धरहु जथारथ भेउ ।
कान्ह वस अवतस गनि छद रीति कं देउ ।। २ ।।
तिनकी अज्ञा पाइकै श्री सारदं प्रशस ।
तबही सीताराम विज कहन लाग नृप वश ।। १२ ।।

नेत्र पछ नउ भूमि को धरो ग्रंक की रीति ॥१६२२॥
उर्ज्जमास सित वारण ५ तिथि रच्यौ ग्रंथ ग्रति प्रीति ॥१३॥

ग्रंत—

प्रमुदित महा मछद नरेसा । चल्यो निसान वजाय स्वदेसा ॥
बीच बीच मग करि बिश्रामा । जात भयो मछंदपति धामा ॥

—ग्रपूर्ण

विषय—रायबरेली जिला के ग्रतर्गत तिलोई के राजाग्रो की वशावली ग्रौर उनके कार्यो का वर्णन । इन राजाग्रो का मूल पुरुष राजा कान्ह था जो सोढि मुनि की गहरवार वश की पत्नी से उत्पन्न हुए थे ।

रचनाकाल

नेत्र पछ नउ भूमि को धरो ग्रक की रीति ।
उर्ज्जमास सित वारण ५ तिथि रच्यौ ग्रथ ग्रति प्रीति ॥

सख्या ४१३ख. रसिकबोध, रचयिता—सीताराम, (स्थान—बलीपुर), कागज—ग्राधुनिक, पत्र—५, ग्राकार—८$\frac{9}{10}$ × ५$\frac{4}{10}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (ग्रनुष्टुप)—१५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६२५ वि०, प्राप्तिस्थान—प० माताप्रसाद जी उपाध्याय, ग्राम—जगतपुर, डाक०—शिवरतनगज, जिला—रायबरेली ।

ग्रादि—श्री गणेशाय नम. ॥ ग्रथ रसिक बोध लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

गणपति ग्ररु भाषा चरण धरउ शीश रत ध्यान ।
करहु मनोरथ सिद्धि मम हरहु विघ्न ग्रज्ञान ॥ १ ॥
वसत तिलोई चक्कवै कान्ह वस नृपराज ।
जज्ञपाल ग्रसनाम जेहि वडो गरीबनिवाज ॥ २ ॥
तिन कवि सीताराम पर कीन्हौ चारु सनेहु ।
कह्यो नायका नायकनि थोरेमा कहि देहु ॥ ३ ॥
तिनको ग्राज्ञा मानिकै तब कवि सीताराम ।
विरचै ग्रथ ललाम लघु रसिकबोध धरि नाम ॥ ४ ॥
नवरसपति श्रृगार रस वरनो तासु प्रसग ।
सुरस नायका नायकनि ग्रालवन को ग्रग ॥ ५ ॥

॥ ग्रथ प्रथम नायका निरूपन ॥

॥ घनाक्षरी ॥

सुकिया है ग्रपनी परकीया पराई वाम गणिका है वाही जासो दाम ही सो काम है ।
कहै सीताराम झलकत तरुनाई नई ग्रावै ग्रंग ग्रग सोई मुगधा ललाम है ।
जाने विन जोवन ग्रज्ञात जाने ज्ञात होत डरपै नवोढा सुनि प्रीतम को नाम है ।
विस्रब्ध नवोढ़ा पतियात पति कासो नेक मध्या कही वाको सम जाके लाज काम है ॥ ६ ॥

ग्रंत—निसाकर को रितु वाहुल मास ।
सुदी रवि तिथ्य दिवा गुरुवास ।
५ २ ६ १
सुवाण जमाक छपाकर ग्रब्द ।
रच्यौ नृप ग्रायसु सो लघु शब्द ॥४५॥
वहु रस ग्रंथन सारलै रसिकबोध मै कीन ।
जे करिहै कठाग्र ते ह्वै सुकवि प्रबीन ॥

वासी सीताराम द्विज वहिरेला सुचि देस ।
ग्राम मवैया तासु पति अर्ज्जुन सिंह नरेस ॥४७॥

इति श्री मनि. . . शिरोमणि कवि सीताराम कृते रसिकबोध के प्रथमस्तरंग समाप्तम् ॥

विषय—संक्षेप में नायिका भेद वर्णन ।

रचनाकाल

निसाकर को रितु बाहुलमास । सुदो रवि तिथ्य विवागुरु वासु ॥
सुवाण जमांक छपाकर अब्द । रच्यौं नृप आयसु सो लघु शब्द ॥४५॥

संख्या ४१४. सुंदरकली हुद हुद का बारहमासा, रचयिता—सुंदरकली (मुसलमान स्त्री), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—$६\frac{७}{८}$ × $६\frac{२}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—१४८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सन् १२६८ हि०, प्राप्तिस्थान—परमेसर लुहार, ग्राम—रायपुर (अमेठी), पोस्ट—रायपुर (अमेठी)।

आदि—वीसमोल्ला. ॥ सुन्दकली हुद हुद को बारहमासा सुरु होता है ।

सुनो सखीआ षोदा की पाक है जात ।
महंम्मद की भली मेहराज की रात ।
जो ऐसी रात हो पी को मोलावे ।
गलों से गला लगाकर संग सोलावें ॥
आया मास आषाढ निपट गरमी पड़ेरे ।
पसेना तनसे तोधारा चलेरे ॥
मेरे तन मे वीरह की आग लागी ।
अगीन के बीच मे जलती अभागी ॥
अगीन ने तन को इस तरह जारा ।
हमारा तन हुआ सारा अगारा ॥
न ऐसा है कोई तपन को वुझावें ।
वुझावे वोह जो षवर पी को लावें ॥
अरे हुद हुद पीआ के पास जा तू ।
मेरा अहवाल सारा सुना तु ॥

॥ दोहा ॥

माता पीता वैरी भए सो काहे कीयो वीआह ।
स्वामी वीछुरे देसषी में हरदम ताकों राह ।

अंत—बारह मास एह सुंदर कलीका । हुआ पूरा वचन सब रंग रलीका ॥

॥ दोहा ॥

रंगरस करी सो रहीहैं गले सो गले लगाए ।
करवट ना फेराए सखी सोइ छाती मीलाए ॥

॥ दोहा ॥

वीते बारहमास जब पीय आए तब धाम ।
हील मील दोउ मीली रहे पुजे सब मनकाम ॥

॥ इती ॥

सुंदर कलीका बारहमासा संपुरन सन १२६८ हि० साल मोती चैइत वदी ११ मोकाम सहर कलकत्ता साकीन जानवाजार फेरी इस्कूल इस्ट्रीट ११ नंबर का दोकान है बाबु पीतमार बाबू के कोठी के पछीम दरवाजा के सामने दोकान है पोथी का वोकान के मालीक पचमराम कुरमी औ वसवत देआलवास का सो सही. . . . .

विषय—सुंदरकली और हुद हुद का बारहमासा ।

संख्या ४१५. हनुमान जन्म, रचयिता—सुखलाल कायस्थ, निवासस्थान—अवध, कागज—देशी, पत्र—४८, आकार—७$\frac{२}{१०}$ × ४$\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—३१२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१८ वि०, प्राप्तिस्थान—मुंशी सुखदेव राय जी, ग्राम—शुक्ल का पुरवा, डाक०—शिवरतनगंज, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ हनोमण जन्म की पोथी लिष्यते ।।

श्री गणपति पद वंदि कै सुभदाएक प्रम उदार ।
सीध सदन करिवर वदन मदण लजीवण हर ।। १ ।।
जटा मुकुट सीर सीध मुनि चव वीराजत भाल ।
अस मूरति मण मा वसं कसना मिटै भ्रम जाल ।। २ ।।
जेहि पूजत सुर सीध मुनि सुफल फले मम काम ।
सोई समरथ के सरण मं जसु गावत गुर नाम ।। ३ ।।

।। चौपाइ ।।

प्रीथमं सुमीरौ श्रीगुर चरना । परसत जाइ सकल दुष हरना ।।
असरन सरन वेद जस गाये । गुर प्रासाद दुष दोष नसाये ।।
जग मंगल गुर चरन विचारी । सुमिरत सुर मुनि नर तनुधारी ।।
हनिवत जन्म कथा अनुशारा । गुर पितु मातु सहाइ हमारा ।।
:o: :o: :o:
मोरि सुधारहि सो हनिवंता । जाके ह्रिदं वसं भगिवंता ।।
सौरथि लागि करचौ गुणगना । सोइ स्वारथ जाणं हनौमाना ।।
मैं काएस्थ कासी को वासी । गुर प्रसाद भएउ अवध को वासी ।।
नहि कछु वल वुधि नहि चतुराई । आपन काज लागि गुण गाइ ।।
:o: :o: :o:

।। दोहा ।।

मोहि भरोस बहुत है हनिवत इस्ट हमार ।
मन वाछित फल फाइहौ दाता पवन कुमार ।।
विमल चरित हनोमत सगुण उदित भानु कुल भान ।
गुण गावत सुषलाल के उर अनद अधिकान ।
हरि चरित्र हनमत कथा कहै सुनं जो गाइ ।।
तिनकी प्रीत पुनीत लषी सीताराम सहाइ ।।

अंत—

रघुपति कृपा करहि वहु भांति । हनिवत मगन रहै दिन राती ।।
चित दै कथा सुने जो कोई । सकल काज तेहि पुरन होई ।।
गाढ परं सुमिरं हनोमाना । तुरित होइ संकट अौसाना ।।
पुत्रक फल तुरतं पावौ । जो हनिवत चरित चित लावौ ।।
रघुपति भक्ति मिलं पुनि ताही । हनिवत चरित प्रीति है जाही ।।
हनिवत जलम सकल जग जाना । सेव दरस श्रुति सेस वषाना ।।
:o: :o: ·o·

।। दोहा ।।

हनिवत जल पुनित हैं गावहि वेद पुरान ।
ताकं सकल मनोरथ सिध करहि त्रिपुराण ।।

।। इति श्री हनोमान जल स्मपुरन ।। सवत १९१८ दसषत दरवारि लाल

विषय—हनुमान का चरित्र वर्णन किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—नामोल्लेख के स्थल इस प्रकार हैं—

मैं कायस्थ कासी को वासी। गुर प्रसाद भएउ अवध को वासी ॥

:o: :o: :o:

विमल चरित हनोमत सगुण उदित भानुकुल भान।
गुण गावत सुखलाल के उर अनंद अधिकान ॥

चौपाई में आए गुरुप्रसाद का एक अर्थ गुरु के प्रसाद से भी हो सकता है। दोहे में आए सुखलाल शब्द का कोई दूसरा अर्थ नहीं होता।

संख्या ४१६. विवेकसार या सुषसागर, रचयिता—सुखलाल, कागज—देशी, पत्र—७४, आकार—६$\frac{3}{4}$ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—५१८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४४ वि०, लिपिकाल—सं० १६४१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री महंत बाबा रामशरनदास जी, कबीरमठ, ऊँच गाँव, पोस्ट—बाजार शुक्ल, जिला—सुलतानपुर।

आदि— छंद

सुनो तासु पुत्री सु हिर्स्या वषानी। महाभीम रूपी सबै दुख दानी ॥
सषो तासु कूमत विख्यातु सगा। करै पापिनी विस्व कौ अंग भंगा ॥१७॥
सवा छुति लौडी करै धाम सेवा। ठगै विस्व कौ सत कौ कोटि भेवा ॥
कहै को कहा लौ जहाँ लौ मलीना। महामोह के धाम सो वास कीन्हा ॥१८॥

सवैया

लालच पुत्र निलज्ज महा अरु पाप भनै जन दोष विचारै।
जाय कहूँ वन घाटन वाटन लूटत है सठ जीवन मारै।
मोदीत तासु ऊभै दुषहै सुष आतुरता सिर चौरहि ढारै।
डिभ नछत्र कि छाहन सौ नृप को वरनै गति देषि अपारै ॥१९॥

॥ दोहा ॥

मोह राज भ्राताप्रबल काम क्रोध रन धीर।
लोभ गर्भ बलवानए महा भयकर वीर ॥२०॥

सोरठा

अहं सिघासन फूलि बैठत नृप अति प्रीति सौं।
पाषड मंत्री भूल कपट उजेरी सगसदों ॥२१॥

अंत—मत विवेक सागर सूमत मज्जन पैठि अन्हाय।
दया गरीवी ज्ञान जल जहाँ पुर्स तह जाय ॥७४॥
सुषसागर "सुषलाल" कहि सत सरोवर ऊव।
सूझो अजन ज्ञानदै मजन करमत षुव ॥७५॥

॥ सोरठा ॥

सूकलपछ तिथि तीज मास असाढ सुहावनो।
आदितवार कही जू ग्रथ भयौ पूरन तवै ॥७६॥

॥ दोहा ॥

संवत सत्रासै असी वीस वीस फिर वीस।
ऊपर चार विचार कै सम्मतसर कहि दीस ॥७७॥
ऐतो श्री सपूर्ण कहि सागर नाम विवेष।
आगर वुद्धहु दै हिये चलिहै याको देस ॥७८॥

॥ दोहा ॥

वंदत हौ कर जोरि कै श्री गुर पर्म उदार ।
चूकभूल गन अगनको मम सिर नाहिन भार ॥७६॥
वाँचै सुनैं जो ग्रंथ को वंदत तेहि कर जोर ।
चूक भूल वकसै मिलै आनि मोर मति थोर ॥२८०॥

इति श्री विवेकसागर ग्रथ सम्पूर्ण ॥ मिती भादो सुदी सतमी ७ दिन बुध ॥ संम्वत् ॥ १६४१ ॥ दसषत सूर्ज वकस मिसौर के वास्ते लिषा शिउरतनदास का ॥

वि य—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

रचनाकाल

संवत सत्रा सै असी वीस वीस फिर वीस ।
ऊपर चार विचार कै सम्मतसर कही दीस ॥७७॥

संख्या ४१७क. परिचर्यी बाबा मलूक दास जी की, रचयिता—सुथरादास, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—१०$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{3}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप)—३८७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि–कैथी और नागरी मिश्रित, लिपिकाल—स० १७८४ वि०, प्राप्तिस्थान— डा० त्रिलोकीनारायण जी दीक्षित, प्राध्यापक हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—राम मलूक दयाल लिषित परिचई मलूक दास
नमो नमो गुर चरनन नमो पुरष करतार ।
जुग जुग धारो जीव हित सत रूप औतार ॥
श्री गुर चरनन को सिर नाऊ । हर्षवत होइ मगल गाऊ ॥
आदि पुरुष यह कीन्ह विचारा । महा दुषित जीव ससारा ॥
जुग जुग संत जाहि धरि देहा । ताते जीव लहै पद नेहा ॥
नाम देव कबीर रैदासा । जाते जीव लहो विस्वासा ॥
एहि विधि साधु अनकन भए । बहुतक जीव मुक्ति होइ गए ॥
.o. :o. :o:
बैसाष वदी तिथि पचमी सवत सोरा सै एकतीस ।
जगता गुरु प्रगट भए मलूक पुरुष जगदीस ॥

अत—सवत सत्रह सै बोनतालीस वर्ष वैसाषे मास ।
क्रिस्न पछ चतुर्दसी वुध दिन रमित मलूकदास ॥
:o: ·o: :o
ईस्वर साधु एक ही रूप । ताको जस को कहै अनूपा ॥
मलूक की भगिन सुत जोई । मलूक को सिष पुनि है सोई ॥
तेन प्रीति सहित परचई भाषी । वसं प्रयाग जगत सब साषी ॥
श्री मलूक को सिख है सोई । सुथरा नाम प्रगट जग होई ॥
प्रीत सहित परचई भाषी । गुर मरजाद सो सब चित राखी ॥
देषी कही सुनी सब वरनी प्रेम हुलास ।
छाप परी साधुन मे गावै सुथरादास ॥

जै राम मलूक

इती श्री मलूक परचई गाई सुथरादास सपूरन सुभ मस्तु सवत १७८४ समं कातिक वदि अमावस जैयंती वार मंगल वाको मिधभई लिषा वरगमनि दास दयाल दास के दासनिवास ॥

विषय—बाबा मलूकदास की परिचर्यी वर्णन की गई है ।

विशेषज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रथ के साथ निम्नलिखित ग्रथ भी है—

१ ज्ञानपरोछि—मलूक दास ।

२. ज्ञान बोध—मलूकदास।
३. विभै विभूति—,,।
४. ध्रुव चरित्र—,,।
५ मयूरध्व चरित्र—,,।

संख्या ४१७ ख. परिचई बाबा मलूकदास जी की, रचयिता—सुथरादास, कागज देशी, पत्र—६७, आकार—८¾ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप) २०१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—डा० त्रिलोकीनारायण जी दीक्षित (हिंदी विभाग), लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

आदि—परचई बाबा मलुक जी ॥

श्री गुर प्रसाद अनभै कथा जैशाभा परगास।
अभीलाषा अती बाढीवै भषी गावै सुथरादास॥ १॥
श्री गुर मलुक को कहा है मत उनमान।
जैसे का तैसा लिषा सरबशपद जीअजान॥ २॥
नमो नमो श्रीगुर चरन नमो पुरुष करतार।
जुग जुग धरो जीउ हीत सेस रूप औतार॥

॥ चौपइ ॥

श्री गुर चरनन्ह को सीर नाऊ। हरषवंत होइ मंगल गाऊ।
आदी पुरुष अह कीन्ह वीचारा। मह बुषीत जीउ संसारा॥
जुग जुग मत धरे जहा देहा। ताते जीऊ लहे पबु नेहा॥
नामदेव कबीर रैदासा। उन्हते जीवन्ह लहौ स आसा॥

:o: :o: :o:

बैसष ववी तीथि पांचमी सवत सोरहसै एकतीस।
जगत गुरु प्रगट भये मलूक पुरुष जगदीस॥

अंत—सोलह सै एकतीसमो प्रगट भए ससार।
सत्रह सै बनतालीसम कुच कीआ नीरधार॥
मारग अलष वेअत है सेसनास के संभार;
श्री मलुक को परचौ भयो मन बुध परे वीचार॥
देषी सुनी अनभै कही अपनी मती उनमान।
महीमा अगम अपार अती जानै श्री भगवान॥

इति श्री परचइ संपुरन नम राम सुभ मस्तु जैराम सवतसरगत

विषय—बाबा मलूकदास जी की परिचयी।

संख्या ४१७ग. परिचयी बाबा मलूकदास जी की, रचयिता—सुथरादास, कागज देशी, पत्र—४७, आकार—८⅚ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप) ५१७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, कैथी मिश्रित, प्राप्तिस्थान—डा० त्रिलोकीनारायण जी दीक्षित, हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

आदि—श्री गनेसाये नमह ॥ श्री पोथी परचई बाबा मलुक जी का

॥ दोहा ॥

श्री गुरप्रशाद अनभै कथा जैसा भा प्रगास।
अभीलाषा अती बाढी भाषा गावै सुथरादास॥
श्री परचई गुर मलूक को कहा है मत उनमान।
जैसा का तैसा लिषा सत सबद जी जान॥
नमो नमस्ते गुर चरन नमो पुरुष करतार।
जुग जुग धारेव जीव हीत सत रूप औतार॥

श्री गुर चरनन को सिर नाऊ । हरषवंत होई मंगल गावो ॥
आव पुरुष एह कौन बीचारा । महा कुषील जीव ससारा ॥
जुग जुग संत धरेव जहां देहा । ताते जीव लहेव पद नेहा ॥
नामदेव , कबीर रैदासा । उनते जीव लहे बीस्वासा ॥
एही बीधी साधु अनेको भए । बहुत जीव मुकुत होई गए ॥
अब एक अंसा जाई संसारा । पावे जीव मोछ का दुवारा ॥
मारग सतलोक का रहो । तब करता की धार एह कहा ॥

अंत—सोरह सै एकतालीस मे प्रगट भए ससार ।
सत्रह सै बीनतालीस मे कुच कीया नीरधार ॥
मारग अलष वे अत है सेस न सकै सभार ।
श्री मलुक को परचय मन बुध परे बीचार ॥
देषी सुनी अनभै कही अपनी मत उनमान ।
महीमा अगम अपार अती जाने श्री भगवान ॥

इति श्री मलुक परचई भाषा सुथरादास सपुरन सुभ भूय लेषक पाठयो ॥

विषय—बाबा मलूकदास जी की परिचर्या वर्णन की गई है ।

संख्या ४१८. शालिहोत्र, रचयिता—श्रीधर (राजा सुब्बा सिंह), कागज—आधुनि सफेद, पत्र—२१६, आकार—७⅛ × ६⅝ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अ ष्टुप)—४४५५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९६ वि लिपिकाल—सं० १९४५ वि०, प्राप्तिस्थान—टैगोर पुस्तकालय, लखनऊ विश्वविद्याल लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ शालहोत्र प्रकासिका भाषा राजा सुव्वासिह कृ लिख्यते

॥ दोहा ॥

श्री गणपति गौरी गिरा हरिहर के पद ध्याइ ।
श्रीधर विरचत ग्रंथ को हय कुल को सुखदाइ ॥ १ ॥

छप्पै छद

सिर पर लसत किरीट भाल मे तिलक विराजत ।
कुंडल कानन माहि गरे बनमाला छाजत ।
पीतावर कटि कसे हाथ दछिन ताज नवर ।
स्यंदन मे आरूढ अस्वरस्सी वाँये कर ।
ढिग पारथ सो मुसकात लषि भीषम को सेना डरै ।
यहि वेष गोविद अनदमय मंगल श्रीधर को करै ॥ २ ॥
ब्रह्मा के सुत अत्रि अत्रि के चद बषानौ ।
जल स्वरूप भो तासु तनय गुन ज्ञान निधानौ ॥
तासु वश मे भये मुनिंद महीपति जानौ ।
प्रगट सालमल द्वीप तासु राजा उर आनौ ॥
तिनने परसराम सो जुद्ध करि देह छोडि सुरपुर गयो ।
मृत भूप भए वही देस मो सकल उपद्रव वहु भये ।

॥ दोहा ॥

तव रिषि वत्स विचारि गये परसराम के पास ।
भाष्यौ वश मुनिंद को किहि विधि होइ प्रकास ॥ ४ ॥

॥ कुंडलिया ॥

भाष्यौ है रिषि वत्स सो परसराम सुषदाइ ।
अनल कुंड अस्थान मे जज्ञ करावो जाइ ॥

जज्ञ करावो ग्राइ तासु ते पूरुष होई ।
चारि भुजा को धरे ताहि मानहि सब कोई ॥
ताको सुनिये नाम चाहि राजा रिषि राख्यौ ।
ग्रौचलि है चौहान वंस याही ते भाख्यौ ॥ ५ ॥

॥ चौपाई ॥

मुनिके वत्स जज्ञ करवाई । ताते उपज्यौ सुत सुखदाई ॥
परसराम जू जैसे कह्यौ । वत्स (?वल) स्वर तैसो लह्यौ ॥

॥ दोहा ॥

मात पिता स्वाहा ग्रनल वत्स गोत्र चौहान ।
त्यहि वस मो प्रगट भे शकर नृपति सुजान ॥ ७ ॥
उपजे शकर वश मे पृथ्वीराज महाराज ।
जाहिर जवूदीप मै करं धर्म के काज ॥ ८ ॥
पृथीराज के वस मे हाल देव भे दानि ।
मोरा तजि षीरो विषै राज कीन्ही सुखदानि ॥ ६ ॥
सोहै सूबे ग्रवध मो षीरो परगन माहि ।
इखवा वैल उदड लषि वास कियो नरनाह ॥ १० ॥
हाल देव के वश को मानसिह भो भूप ।
दाता ज्ञाता ग्रति वलि राज्यौ धर्म सरूप ॥११॥
मानसिह नरनाह तासु सुत भयो ग्रपरबल ।
दान कृपान विधान वस्य कीन्हो भुव मडल ॥
पुनि भो नृपति ग्रनंत तासु को पुत्र महीपर ।
दिये दानि व भात सकल विविध पूजि जमवर ॥
भेताहि नृपति के दोय सुत वडे नृपति गजराज कहि ।
भो तासु ग्रनुज लघु ग्रति प्रवल हेम सिंह महराज महि ॥१२॥
हेमसिंह नृप के भये वषत सिह त्यौ नद ॥१३॥
वखतसिह के चारि सुत जेठे नृप रघुनाथ . ।
. वहरि सुजालिम सिह भो तासु ग्रनुज उमराऊ ॥१५॥
तासु ग्रनुज लघु जानि सुष्वा जानौ नाम तेहि ।
श्रीधर नाम वषानि विरचत छद प्रबध मैं ॥१६॥

॥ दोहा ॥

विद्वन्मोद तरगिनी ज्यौ कीन्ही रसषानि ।
त्यों विरच्यौ वहु छद लै सालहोत्र सुखदानि ॥१७॥
सारगधर ग्ररु नकुल मत सालहोत्र लषि ग्रथ ॥
समुझि सरुचि भाषा करो लै ग्रौरौ कछु पथ ॥ १८ ॥
तिनके मतहि प्रकासिका कातिक वदि रविवार ।
सवत षट ६ नव ६ वसु ८ शशी १ त्रयोदशी ग्रवतार ॥१६॥

ग्रत—

॥ सोरठा ॥

षट ग्रानन पद ध्याय गौरिनद गिरिजा गिरिश ।
हरिकुल को सुखदाइ श्रीधर कीन्हो ग्रथ यह ॥१६॥

॥ दोहा ॥

शालहोत्र परकासिका पढै सुनै चितुलाइ ।
वाजी ताके वहु वढै गिरिजा होइ सहाइ ॥१७॥

इति श्री शालिहोत्र प्रकासिकाया श्रीधर सुकवि विरचिताया चिकित्सा काडे दाना दीवे की विधि वर्नन नाम चतु चत्वारिंशोध्याय ॥४४॥ शुभ मस्तु शुभ भूयात् ॥ ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ पूर्णिमाश्या शनिवाशरे ॥ श्री संवत ॥ १६४५॥

विषय—शालिहोत्र विषय का वर्णन।

रचनाकाल

तिनके मतहि प्रकासिका कातिक वदि रविवार।
सवतं षट नव वसु शशी त्रयोदशी अवतार॥

संख्या ४१६क. उमरावकोष, रचयिता—सुवश शुक्ल, कागज—आधुनिक, पत्र—६२, आकार—१२$\frac{6}{8}$ × ७$\frac{6}{8}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप)—३०३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८६४ वि०, लिपिकाल—स० १९४२ वि०, प्राप्तिस्थान—प० कृष्णविहारी जी मिश्र, ब्रजराज पुस्तकालय, गधौली, जिला-सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नम. अथ उमराउकोष लिष्यते

॥ दोहा ॥

सिद्धि करन असरन शरन दारिद दलन दयाल।
मन भायक दायक सदां गोगायक गणपाल॥ १॥
:o: :o: :o:

अथ राजस्थान वर्णन घनाक्षरी

जामे चारौ वरन करन के समान देषे वेभरम चारौ पाय धरम हसत है।
देवी देवता से नरनारि नीति रीति गहे प्रीति देवता की दिन दिन सरसत है।
सुकवि सुवश कहे रतन अमोल जटे मानौ भूमिभागकौ विभूषन लसत है।
देश देश जाहिर नरेशयौ वखान करें बश औधमडल मैं विसवाँ वसत है॥ ३॥
·o· :o: :o:

श्री उमराउ प्रकाशमे कह्यो वश विस्तार।
बालचंद महिपालते वरनौ मति अनुसार॥१३॥
:o. ·o: :o:

बालचद महिपाल के अमरसिंह भो नंद।
यो शोभित भो नृपन मे ज्यों उडगन मे चद॥१५॥
:o: :o: :o:

सुत बालचद महिपाल को एक सिंह दूजे अमर॥१६॥
अमरसिंह नरनाह के प्रगट भये द्वै नंद।
भूमडल मे यों लसें जैसे सूरज चद॥१७॥
प्रथम नाम शिवसिंह नृप भयो धीर गभीर।
भयौ भवानीसिंह पुनि तासु अनुज वरवीर॥१८॥
:o: :o: .o:

महीपाल शिवसिंह के पाँचौ पुत्र उदार।
धीर धरन यश के करन हरन भूमि के भार।
जेठे धौंकलसिंह फिरि भूपसिंह उमराऊ।
दानसान सनमान को सदा चढाये चाऊ॥२१॥
श्री वषतावर सिंह अरु भयौ ईश्वरी सिंह।
अरिकरिदल के दलन को राजत जैसे सिंह॥२२॥

अत—

चौपाई

वर्ग विशेष विघ्नद्वै मित्र। सहित अनेक अर्थ विचित्र॥
द्वै सै छव सततरि दटर। कांड तीसरे मै है वुधिवर॥

॥ दोहा ॥

युग रस वसु अरु निसापति सवत वर्ष विचारि।
माघ कृष्ण प्रतिपदा को भयो ग्रंथ अवतार॥ ४॥

ग्रंथ संज्ञा

१ ६ ८ १

वर्ग वीस कांड वं छिति रस वसु शशि छंव ।
भाषा शुक्ल सुवंशकवि करिकै महा अनंव ॥ ५ ॥

इति श्री विश्वनाथ पुरा षड मंडल धराधीश चौधरी शिवसिह वंशावतंश उमरावसिह कारिते शुक्ल सुवंश विरचिते उमराउ कोषे तृतीयकांडे अनेकार्थः ३ समाप्ति ॥ श्री शुभसंवत्सर १६४२ कार्तिक शुक्ल नवम्यां चद्रवासरे लिखितमिवं पुस्तकं युगुलकिशोर मिश्रेण स्वार्थम् शुभमस्तु श्री रस्तु श्री चण्डिका देव्यै नमः ॥

विषय—शब्दकोष वर्णन ।

रचनाकाल

४ ६ ८ १

युग रस वसु अरु निसापति सवत वर्ष विचारि ।
माघ कृष्ण प्रतिपदा को भयो ग्रथ अवतार ॥ ४ ॥

सख्या ४१६ख ढेकी, रचयिता—सुवस, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—६ × ३६/१० इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—१८३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ ढेकी लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

अमल कमल गनपति चरण शुमिरि सुवंस. . .सुचित ।
करौ अकार छकार को दोहा सहित कवित्त ॥

कवित्त

आसन येक लहौ. . .हरि राधिका चंदन षौरि इतै उत रोरी ।
परदन पीत पिछौरी इतै उतै घाँघरो चूनर सो रग वोरी ।
मौर इतै सिर फूल उतै घनस्याम इतै उतै तन गोरी ।
भाषै सुवंस सुनौ मन मेरे लषौ निसि द्यौस मनोहर जोरी ॥ १ ॥
आई ती हरि भजन को ओटै लगी कपासु ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

इतै अनोषी ग्वालिनी उतै रसिक नंदलाल ।
वरनौ रस अगरो सुनौ झगरो परम विसाल ॥
इवी सी लसै जहा इन्दुमुखी तडिता तन मे घन मे चकसारी ।
सभू समान उरोज दोऊ कटि केहरि डीठि महा अनयारी ।
भाष सुवस मरालन को गनै मत्त मतगन की गति हारी ।
जाति चली दधि वेचन को तृया लेन जगाती जहा गिरधारी ॥
गरे लागि परोसिनि निवाहु कैसे ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

उवै उमग सो लाल जिउ गूढ ग्वालिनी देषि ।
निकट अति चटक सो कनकलता सो लेषि ॥

अंत—ससि सारद नारद सो सब लोकन मे जसुतासु मढो ।
दुष दीरघ दुष्कर दुरी करी अरु आनद सो उर माही वढो ।
वह सत्य सुवस विचारि कही गजराज नवाजि मेसु चढो ।
सुत सपति सजुत भक्ति लही नट नागर. . . . . . ॥

:o: :o: :o:

छंद दोहरा औरउ कवीत गोपीवान ।
कहउ अकरा छकरा लौ औ प्रसावं उपथान ।।
छुटत अक्षु मध्य प्रसव सोतर तुम बुधवंत जानो ।
और उपाउ न देषा परो तब वर डोलख को मत उनो ।।

विषय—श्रीकृष्ण और गोपियो का विहार वर्णन ।

संख्या ४२०क. नागलीला, रचयिता—सूर (? सूरदास), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—७३/४ × ५३/४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६३१ वि० प्राप्तिस्थान—प० चद्रभूषण जी, ग्राम व डाक०—राही, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गनेस जी सहाए ।। श्री सरस्वती जी सहाय ।। श्री गंगाजी सहाए ।। श्री पोथी नागलीला लिष्यते ।।

।। दोहा ।।

चलो चलो सषी जहा जाइए तहा नंद के लाला भए ।
धन धन जसोदा भाग तेरो गोकुला के दुष हरे ।।
कोउ सषी गावं कोउ बजावं कोउ वांधं वंधन ।
कोउ केसर लोचई बोलाइए ब्रीजराज पडीत ।।
सोधीए सुभ आनवघरो ।
एह कस मारन सत तारन आनी प्रगटे तब नरहरी ।
भए नगारा तीनि पुर मह असुर के सका भए ।
तब कंस पठए पोताना को तरन को तब गोकुल गई ।।
अब एक दिन हरी हरीमाआ जानीके अनषन दीए ।
तब सएन जानी के प्रभु चव दोषी कब भए ।।
षेलत षेलत गए जमुनातट गेद तो वह मो गए ।।
सषा सो मुरझाए बालक कुवी जमुना मो गीरे ।
जहा नाग सोवं नागीनी जागं कुअर पहुचे जाइके ।
तब कहत हरी सो बात नागीनी जाहु बालक भागी के ।।
षबरी तोहारी जो नाग पइहै उठीहै नाग रीसाइ के ।
अब नाग जागे हमही लागे अवतो भागे ना वने ।
होनी होए सो होए नागिनी नाग तो नाथे वने ।।
अत—अब नाग उपर फुल लादो जाइ जुहारे कस को ।
अब नाग नाथे वेद भाखे मथुरा नगर वसाइ के ।
अब सूर के प्रभु नागलीला रहत हरी गुन गाइके ।।

इति श्री नागलीला सपुरन समापत । सुभमस्तु साल समत ।। १६३१ ।। महीना सावन वदि ।। ५ ।। ऐतवार ।। लिषा पडित रामनराएन रावलपिडी सदर बाजार मं ।।

विषय—श्रीकृष्ण की नागलीला का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख मे गिरिजा इद्रकृत "दानलीला" और परमानददासकृत "दधिलीला" भी लिपिबद्ध है ।

संख्या ४२०ख. विमातिन लीला, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६।। × ५ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—१६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० दूधनाथ जी चौबे, ग्राम—पीथापुर, डाक०—अमरगढ, जिला—प्रतापगढ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ विसातिन लीला लिख्यते ।
एक समै वृज चन्द नन्द सुत मन मे यहै विचारी ।

करिकै भेष बिसातिन जी को छलिये राधा प्यारी ।
कीनखाब को लहंगा पहिरे अवल जरकसी सारी ।
अंगिया खास लाल मडल की अति छबि देत किनारी । २
मोतिन की पहिरे नकवेसर झालरदार बनाई ।
मानो रति पति गठी आप कर कहि न जात सुघराई । ३
करनफूल कानन में सोहै माथे बीज जडाऊ ।
ता ऊपर अति लसत वन्दनी मोतिन माग भराऊ । ४
कंठ लसै दुलरी औ तिलरी गजमोतिन के हारा ।
मानो गिरि सुमेरु को विहाय धसी गंगा की धारा । ५
गरे हमेल माल मोतिन को औ पहिरे खग वारे ।
मानहु कान आपने कर मे रुचि रुचि बीज संवारे । ६
वाजूवन्द वरन भल सोहै औ वहियाँ भुज माही ।
हरी चुरी बिच पटरा पहिरे उपमा को कोउ नाही । ७

अत—अरस परस राधे सो करिके फेर जवहरिन वोली ।
लीजे माल विसाल राधिका चीजे वहुत अमोली ।

:o: :o: :o:

जसुदा कही सुनो हे लालन सव दिन कहा गमाये ।
बालन सग कलेवा करिके तव से अव फिर आये ।
खेलत रहौं ग्वालिन के सग वसीवट के छाही ।
नई कुज जह नेक लगाई जमुना तक मांही ।८६

:o: :o: :o:

नव लाय हरि भोजन कीन्हो बीरा मुख मे दीन्हो ।
सोए आय पलग के ऊपर हर्ष मातु सुख दीन्हो ।६१
जुग जुग जीवो कुवर राधिका जुग जुग कुवर कन्हाई ।
'सूरदास' भक्तन के सेवक जिन यह लीला गाई ।६२
जो कोउ कृष्ण विसातिन लीला सुनै सुनावै गावै ।
तरि वैकुठे जाय सकल मनकामना फल पावै ।६३

इति विसातिन लीला समाप्त सवत् १८८४ ॥

विषय—कृष्ण विसातिन लीला वर्णन ।

सख्या ४२०ग. सूरसागर, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—२७०, आकार—११॥ × ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—६७५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि– नागरी, लिपिकाल—स० १८८५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० गयादीन जी पाडेय, ग्राम–आशपुर डाक०–अमर. इ, जिला–प्रतापगढ ।

आदि—

... .
प्रेम सहित सुनि हिरदे आनि ।
जो यह कथा सुनै चित लाइ । ......रि वैकुठहि जाइ ।
जैसे सुक नृप सौ समुझायो । सूरदास त्यौही कहि गायो । २
कहौ सुक श्री भागौत विचारि ।
हरि की भक्ति जुग जुग विरधैगी आन धर्म दिन चारि ।
चिंता तजौ परीक्षित राजा सुनि सिषि साष हमार ।
कमल नैन की लीला गावत कटत अनेक विकार ।
सत जुग सत त्रेता तप कीनौ द्वापर पूजा चार ।
सूर भजन, कलि केवल कीजौ लज्या कान निवारि । ३

राग भैरो

आदि सनातन हरि अविनासी।
सकल निरतर घट घट वासी।
पूरन ब्रह्म पुरान बषानैं।
चतुर .... । —खंडित

अंत— सारग

सुनियत मोहन व्याह सषी री हम वेषन नाँहि पायौ।
आसा लगो रही मेरे मन क्यौ नाँहि बोलि पठायौ।
जद्दिप ही परतीति कान्ह की कौने गुरू पढायौ।
जननी जनम भूमि यह गोकुल नैंको वहुरिन आयौ।
वचनहु की माता नाँहि मैंटत जो नाँहि जसुधा जायौ।
पछिलो प्रीति बिचारि सूरज जो लै गोद वठायौ।५८
श्री रुकमिनी विवाह कथा ।। विलावल ।।

:o: :o: :o:

....।। १३६७ ।।..... ......

इति श्री सूरसागर के पद तेरह सै तिरसठि ।। सवत् १८८५ चैत कृष्ण..... ।

विषय—सूरसागर के १३६७ पदो का सग्रह ।

सख्या ४२१. भाषा पचपक्षी, रचयिता—सूषण, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६ X ३।। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—६७, खडित, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० सरजू प्रसाद दुबे, ग्राम—लच्छी पट्टी, डाक०—सेगरामऊ, जिला—जौनपुर ।

आदि—

... .
रिक्ता तिथि भृगुवार को कुकुट षडभ समेत ।
तुला लिये चढि वृष .शुभ देत ।१८।।
पूर्ण पचम वार शनि मकर कुभ को पाइ ।
देषि शुभाशुभ चाइ ।।१६।।

।। अथ वीचार ।।

कुक्कुट वली मयूर कज्वते तीनो तें वली स्येन ।
चारचो ते प्रभु वली द्रोण है कहत शभु निज वैन ।।२०।।
सतवे वली द्रोण है नृप जू ताते दुर्वल स्येन ।
सेन ते कुकुट कुकूतें अति कुज्व दुवरो ऐन ।।२१।।
नीलकठ सवतें अवल इहै वीचारो वीर ।
पक्षि वलावल देषि कै प्रस्न कहो मति धीर ।।२२।।

।। अथ मित्रामित्र विचार ।।

अत—जेहि दिन उदय उकार की नृप जू तेहि दिन युवा मयूर ।
तेहि क्षण युद्ध किये महि मडन कादर जीतहि सूर ।।६७।।
जेहि दिन निज स्वर होइ युवा नृप सत्रुन को स्वर अस्त ।
तेहि दिन रिप चारि कीजियै है सभक गस्त ।।६८।।
एहि विधि वाल कुमार युवा नृप जानिय वृद्धा अस्त ।
वूहत जानि जोतिषी सव रहत सदा मदस्मत ।।६९।।

इति श्री सूषण कवि विरचिया भाषा पच पक्षी समाप्त ।।

विषय—ज्योतिष ग्रथ । पच पक्षियो द्वारा फलाफल एव शुभाशुभ विचारादि वर्णन । प्रथम, द्वितीय और पचम पत्र नही हैं ।

संख्या ४२२. चाणाक शास्त्र भाषा (चाणक्य शास्त्र भाषा), रचयिता—कवि सेनापति, कागज—देशी, पत्र—२१, आकार—६½ × ५⅛ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनष्टुप)—२४८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ।। श्री गणेशाय नमः ।। अथ चाणाक शास्त्र भाखा लिखते ।।

।। दोहरा ।।

प्रणवत हो श्री विष्णु को जो त्रिलोक को राइ ।
चाणाके भाखा करो जो तुम होहि सहाई ।। १ ।।
बहुशास्त्र अवलोक के सुदर वचन निकार ।
राजनीत संव्यूह को वरनन करो विचार ।। २ ।।

।। छपै ।।

जो यह शास्त्र परै सो नर चातुरतावै ।
जो यह शास्त्र परै धर्म उपदेस दृढावै ।
जो यह शास्त्र परै विना करना अन करना ।
जानै सुभ अरु असुभ करना रहना अरु जरना ।
जिह माहि वुध को विध रचै वहु शास्त्र भाखा करो ।
सरवग होइ जो नरु परै रतन वचन यामै धरो ।। ३ ।।

।। दोहरा ।।

तजहु कुपुत्र कुमारजा तजहु कमित्र कुदेस ।
तजहु कुराज कुमत्र तजहु यह साचो उपदेस ।। ४ ।।
पूत कुनारि त्रिआ मित्र कुमित्र कुदेस ।
नृप कुभूप कुमत्रिआ थे खट महा कलेस ।। ५ ।।

अंत—

छपै छद

बीणा वाणि मनमथ एक चतुत ब्रह्मण चतु विवेक अस्वगरुण छेत्र इक जात ।
गिआनि आनु हरि जनु हरिवात ।
सासु सुकल विचार के मथ काढिओ यह सार ।
नाराइण भजीए सदा करीए पर उपकार ।। ६ ।।
गुर गोविंद की सभा मै लेखक परम सुजान ।
चारणाके भाखा कीए कवि सेनापति नाम ।।१०।।

इति त्रिज (?वृद्ध) चानाके भाखा सपूर्ण समाप्तम् ।।

विषय—वृद्ध चाणक्य नीति का हिंदी म पद्यानुवाद ।

सख्या ४२३. सर्वग्रथमत, रचयिता—सेनापति, कागज—देशी, पत्र—४१, आकार—६ × ७ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—६५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६३३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री ठाकुर कामदेव सिह जी, ग्राम–भिटारी, डाक०–लाला बाजार, जिला–प्रतापगढ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ बँधक सर्वमतः ।।

दोहा

गनपति गिरिजारवन के चरन मनाइ वनाइ ।
जे सव विधि मगल करन करिहै ग्रथ महाइ ।

सुरसरि तीर निवास है अब 'सेनापति' नाम ।
तिरवेबोकुल जानियो जपत सदा हरिनाम ।
सब ग्रंथन की अवौषधी काहू लिषी कुभाइ ।
देषि भूप बरिवंड जू हमसो कह्यो सुभाइ ।
छन्द रीति याको करो प्रगट सुभाय बषानि ।
जेहिमत से सब रुजन सं बस सुधा की षानि ।
सर्व ग्रंथ मत नाम है लीजौ सुमति विचारि ।
रुज को यह वेसो गनो ज्यो अरिको तरवारि ।

अथ नाडी गति

आदिवात पुनि मध्य पित अंतहि कफको लेषि ।
अब नाडी गति कहत हौं जानहु सुमति विसेषि ।
दादुर वायस कुरंग गति पित की नाडी जान ।
हंस कला पिक पोत कफ अहिज लोक हरिमान ।
तीतिर लवा वटेर गति सो नाडी सनिपात ।
जवही आवं छीन ह्वौ तव जमलावं घात ।

अंत—

चौपाई

दालचिनी अरु लौगहि लीजं । जावित्री जंफल धरि दीजं ।
सुरपति जव अरु दाख मुनक्का । वीज के वाच के लीजं पक्का ।
वीजवंद मस्तगी मगावं । गावजुवातज चवन पावं ।
देवी चंदन सालीम साची । सुखारी के वीज इलाची ।
लेहु वालछरि मूसरि स्यामा । सित मूंसरि कुलिजन अभिरामा ।
लेहु वालछरि मूसरि स्यामा । सित मसूरि कुलिजन अभिरामा ।
............वरकी मूल । तालमषारा गुलाव क फूल ।

दोहा

जिस औषधी................लीजं छानि ।
कद सेरभरि घोरिए सुरसरि जलको आनि ।
ता सरव मे औषधी दीजं सकल मिलाइ ।
घट में भरि मुषवंद करि कछुदिन घाम लषाइ ।
उठं जवहि तव छानिकं सीसा मे धरिदेहु ।
छा मांसे नित षाइये करिकं परम सनेहु ।
छुधा वढावं वल धरं धातु वढं सो जानि ।
यहि प्रकार की औषधी तिनसो सरस वषानि । ४

इति श्री सर्व ग्रंथ मत त्रिवेदी सेनापति विरचित वैद्यक सर्व सग्रह समाप्त सवत् १६३३ ।।

विषय—वैद्यक विषय वर्णन ।

संख्या ४२४. हितहरिवश जस और मगल आदि, रचयिता—सेवक, कागज—देशी, पत्र—२५, आकार—५$\frac{3}{4}$ × ३$\frac{5}{8}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—१८७, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत शभुप्रसाद जी बहुगुना, अध्यापक, आई० टी० कालेज, लखनऊ ।

आदि—............लज्जित सुकोकगन ।
अद्भुत विहार हरिवंश हित निरषि वासि सेवक जियति ।
विस्तरित सुनत गावत "रसिक" सुनित नित लीला रस पियति ।। ६ ।। ८ ।।

॥ सवैया ॥

कर्म धर्म कोऊ करौ वेद विधि कोऊ बहु विधि देवतनि उपासी ।
कोऊ तीरथ तप ज्ञानध्यान वृत श्रघ कोऊ निर्गुन ब्रह्म उपासी ।
कोउ जम नेम करत अपनी रुचि कोऊ अवतार कदब उपासी ।
मन कम वचन त्रिशुद्ध सकल मत हम श्री हित हरिवंश उपासी ॥ १ ॥
जाति पाँति कुल कर्म धर्म व्रत संश्रित हेत अविद्या नासी ।
"सेवक" रीति प्रतीति प्रीति हित विधि निषेध शृंखला विनासी ।
अब जोई कही करै हम सोई सोई आयसु लियें चलै निजदासी ।
मन कम वचन त्रिशुद्ध सकलमत हम श्रीहित हरिवश उपासी ॥ २ ॥

अत—

धरमिनि मांझ प्रसन्न ह्वै बैठत जाय विधर्मिनि मांझ उपासित ।
लालच लागै जहां जैसे तहां तैसे सोई सोई तिन मध्य प्रकासित ।
वादही होत कुम्हार को कूकर घाली ह्वैगुरु रीति न मानत ।
काचे धरमनि के सुनौ छब धरमी धरम मरम न जानत ॥ १ ॥
नाजात रंग करत छिन छिन रोवत रैटन लार संभारत ।
तछिन प्रेम जनाइ कहत जुमेरी.................. ।

—अपूर्ण

विषय—श्री हित हरिवश जी का यश और मगल तथा राधावल्लभ सप्रदाय सबधी भक्ति का वर्णन ।

सख्या ४२५ शातिनाथ पुराण, रचयिता—मेवाराम कवि, कागज—देशी पत्र—२३२, आकार—१२$\frac{९}{१०}$ × ६$\frac{१}{२}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—६४०६ पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३४ वि०, लिपिकाल—सं० १६०६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैनमदिर (बडा मदिर), चूडी वाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—श्री वीतरागाय नमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ अथ शांतिपुराण लिख्यते ।

प्रणम्य परमानंदान् देव सिद्धात सदगुरून ।
शांतिनाथ पुराणस्य भाषा सद्धितनौम्यह ॥

॥ दोहरा छद ॥

नमो शांति जगशाति कृत परमशाति दातार ।
कर्म समूह विनाश हर भरन सपदा भार ॥ २ ॥

:o: :o: :o:

मिश्र षुस्याल सहित मनलाय । साति पुरान रचौ सुषदाय ॥
महिमा लायक पूजित लोय । पढ़त सुनत सुष सपति होय ॥४१॥

:o: :o: :o:

असख्यात दीपोदधि मांहि । जंबूदीप लसै अधिकाहि ॥
जोजन लक्ष कुडलाकार । लवनार्नव जुत परम उदार ॥
हाटक मेरु मुकुट सिर धरै । नदी हार वक्षस्थल भरै ॥
चैत कुंडला विभूषित कर्न । जिन मदिर ककन भुज मर्न ॥६६॥

अंत—देस महा मालव सुभग काठल सहित सुढार ।
तामै नगर नरेस जुत देव दुर्ग अवि...र ॥
. .ल्ल नाथ मंदिर विषै रच्यौ पुरान महान ।
अति प्रमोद रस रीति सो धर्म वृद्धि उर आन ॥४८॥
वासी.........तो उर मल्ल कृपाल ।
ता प्रसंग को पायकै गह्यौ सुपंथ विसाल ॥४६॥

गोमट साराविकन में सि............र।
प्रवर बोध जिनके उदं महाकवी निरधार ॥५०॥
पुनि ताके तट दूसरो राजमल्ल बुधिराज।
जु......ये जुरे और मल्ल केहि काज ॥५१॥
:o: :o: :o:
देस् बुराहर आदि दें सबोधे बहु वेस।
रचि रचि ग्रंथ कठिन.........मल्ल महेस ॥५२॥
तिनही के उपदेस लहि सेवाराम सयान।
रच्यौ ग्रथ सुष पाय कें हर्षि हर्षि.. ..न ॥५३॥
सवत अष्टादस सतक पुनि चौतीस महान।
सावन कृष्ण वराष्टमी पुरो कियो पुरान॥
......र सुष सो वसें नगर देवगढ सार।
श्रावक वसें महाधनी दानपूज्य मति धार ॥५५॥
ता नगरी.... ....विभेस।
करें राजपुर पुन्य सो सावत सिघ नरेस ॥५६॥
ताके राज सुचैन मे रच्यौ ग्रथ.........।
अद्भुत ये द्वे थभ है राज सदन में दोय।
चार थंभ को भार यह जु. ....॥५६॥
जुगलन में रघुनाथ जो प्रीतिलता जलधार।
ताके लघु भ्रात परमधर्म्म व · ॥
· · नंद अनंद दुति तास नाम अवधार।
ता उर सम्यक धर्म ने आनि लयो औतार ॥६१॥
o: :o: :o:
तिन मिलन. . ...तेसो जाम।
उचित परम रुचि ठानिकें विरच्यौ सेवाराम ॥६३॥
राघव अरु रघुनाथ ये . .. . ।
तेसो सेवाराम को चहत जथा जिय प्रान ॥६५॥
ते इक दिन अति सुष भरे कहत भये वचसार।
श्री.........पुरान की भाषा रचौ विचार ॥६८॥
:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

पढें सुनें या ग्रथ को ते पावें सुष ठा .. ·
. ....यन भवनन विषें फेरि गहैं सिवाधाम ॥७७॥

इति श्री शातिनाथ पुराणादाचार्य्य श्री स.. ... .विचिताद्भाषा विचितात् लघु कवि सेवारामेन तस्या जिन न्यानोत्पति धर्म्मोपदेस विहा. म गमन निरूपनो नाम पचदसमोधिकारः ॥१५॥ इति श्री शांतिनाथ पुराण भाषा स...संवत् १६०६ ॥ मिती पौष वदी ८ पोथी लिषी नेमनाथ के मंदिर के वासते सुभ. लिषी जुगी मल्ल श्रावक पल्लीवार इक्ष्वाक वसी कासिपगोत्री नवावगग के वसे...चैत्याले मे पुरी करी॥

विषय—जैन तीर्थंकर श्री शांतिनाथ का चरित्र वर्णन।

रचनाकाल

संवत अष्टादस सतक पुनि चौतीस महान।
सावन कृष्ण वराष्टमी पुरो कियो पुरान॥

संख्या ४२६. प्रभुना रैदास गोष्टि, रचयिता—सैनदास (सैना), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६ $\frac{9}{10}$ × ६ $\frac{9}{10}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—१००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—डा० त्रिलोकीनारायण जी दीक्षित, प्राध्यापक, हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

आदि—
रैंदास महल में आए । प्रभुता से बचन सुनाए ॥
सुद्ध पुहुप की सेज बिछावहु । हम नैंन नींद उपजावहु ॥
तुम तजहु कत विष बानी । तुम कृस्न कृपा नहिं जानी ॥
अब सुनिए कत हमारे । तुम सेवहु क्रिस्न प्यारे ॥
हरि सुमिरना चेत लावहु । यह लोक लह बिसरावहु ॥
हरि सुमिरन विढ कौ लीजै । यह ब्रिथा जनम नहि कीजै ॥
प्रान गए कहा लैहो । तुम फिरि पाछें पछतैं हो ॥
कता छोडहु लोक बडाई । हरि बिनु नहि कहूं भलाई ॥
विषै बास जिन्ह खोयो । तिन्ह जनमत मरत जो रोयो ।
जे विषया मदमत वारे । तिन्ह हरि के चरन बिसारे ॥

अत—
यह प्रभुता कहि जो सुनाई । रैंवासहु समुझि समाई ॥
जौं होई पुर्ष की नारी । तौ तजै लोक ससारी ॥
जो यह सुनै सुनावै । सो भगति अभै पद पावै ॥
प्रभुता रैंदास की बानी । सो दास सेन बषानी ॥

इति श्री प्रभुता रैंवास गोस्टि संपूरन ॥

विषय—कबीर रैदास सवाद के रूप मे हरि भक्ति और ज्ञानोपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रचना मलूकदास कृत 'ज्ञानबोध' और 'करखा' के साथ एक हस्तलेख मे है ।

सख्या ४२७क बानी रचयिता—हजारीदास जी (सतदास) कागज—आधुनिक, पत्र—२०५, आकार—$६\frac{२}{१०}$ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—३८५६, खडित, रूप—प्राचीन, (जीर्ण), पद्य, लिपि,— नागरी प्राप्तिस्थान—श्री गुरुप्रसाददास जी स्थान व डाक०—अटरावाँ, जिला—रायबरेली ।

आदि— . . . .
सुक सारद नारद सनकादिक ब्रह्मादिक ज्यहि सुजस उचारन ।
सेस गनेस महेस थके कहि पावत नहिं कवइ पार अपारन ॥ ५ ॥
सोइ जन हेत निकेत कृपा के प्रगट होत जन लगन सुधारन ।
जन हजारि तव चरन सरन हरि देहु भक्ति निज अधम उधारन ॥ ६ ॥ २ ॥
वदौ जगजीवन जगदीसा ।
अद्भुत रूप अनूप अनामय अकथ अलौकिक अलष अनीसा ॥ १ ॥
सोभा सींव सुभग सुचि निर्मल निर्दूषन भूषन गोरीसा ।
चिदाकास प्रकास प्रमातम. . . . . ।
:o: :o: :o:
पावत पार न अति अनंत गति लावत अचल समाधि मुनीसा ।
गावत गुन नारद सनकादिक व्यास वसिष्ट जनक अवनीसा ।
जाकर नाम जपत गोपद इव तरत सहज नर भौ बारीसा ।
सोइ हजारि पद अवहु क्रिपाकरि देहु भक्ति निजवर बकसीसा ॥ ८ ॥ ३ ॥

अत—
मिलहि राम सुष धाम निरतर जो सुमिरन यहि भाति करै ।
तजि सब आसवास सतगुर पद स्वास स्वास सत नामररै ॥ १ ॥
विढ बिस्वास ध्यान यहि बिधि करि रात दिवस सुधि नहिं बिसरै ।
सुरति निरति सुर सब्द बुद्धिमन सब मह सुमिरन सभरि भरे ॥ २ ॥

कछु दिन जतन करै सुमिरन कै सुमिरत सुमिरत बान परै ।
फिरि नहि परै जतन करने कह विनहि जतन सुमिरन ठहरै ॥ ३ ॥
होत रहै आपुहि सु........................... ।

—अपूर्ण

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश ।

संख्या ४२७ख. विपर्जेक अठा (सुदरदास की रचना की छदो मे टीका), रचयिता—हजारीदास, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—८॥ × ५। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—२४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत पाडेय श्यामनारायण जी, रियासत-जगदीशपुर, जिला-बस्ती ।

आदि—**श्री गणेशाय नमः ॥ अथ विपर्जेक अंठा ॥**

मूल । सवैया ।

श्रवणहिं देखि सुनै पुनि नैनहु जिभ्या सूंघि नासिकहिं बोल ।
गुदाखाय इद्री जल पीवै विनहीं हाथ सुमेरहिं तोल ।
ऊचे पांव मुड नीचे को विचरत तीनिउ लोक मे डोल ।
सुंदरदास कहैं सुनु संतौ भली भाति या अर्थहि खोल ।

टीका

श्रवण सरूप जानि नैन नाम पहिचानि नाम सुनि रटत स्वरूप दृष्टि आयो है ।
जीभहूँ जिकिर करि सूंघ बस रस लहि नासिका नृसक रहि बोल सत गायो है ।
गुदा ग्यान खाव ध्यान इद्री अतिबार मान जलप्रेम पियत बहुत सुख पायो है ।
मनहै सुमेर तौल निर्विकल्प जानि जानि कहत हजारी अर्थ ऐसही स्वहायो है ।
ऊँच नाम श्रेष्ट को पराप्त पाव कहियत मूड अभिमान अरु नीचे कही त्यागहै ।
तिनिलोक काया तामे विचरै निसंक सदा अमल अद्वन्द वाके लागै नहि दाग है ।
ऊच पद पावै जब त्यागै अभिमान तव आतम विचार माही रहै नित लाग है ।
कहत हजारीदास वाक्य को विलास सत जानिहै विवेक मान जाके ग्यान जाग है ।

अंत—

मूल

सास्त्र वेद पुरान पढै किननौ व्याकरण पढै जो कोइ ।
संध्या करै गहै षट कर्महि गुन अरु काल विचारै सोइ ।
रासिक मत सबही वनि आवै सब तजि मनमे राखै दोय ।
सुदरदास कहै सुनु पडित राम विनु मुक्ति न होइ ।३७

टीका

सास्त्र षट वेद चारि पढ़ै सब झारि झारि पढिकै पुरान अष्टदल विधि कोई है ।
नौ व्याकरण पढ़ै सध्या तीनि भाति करै गहि षट्कर्म धर्म नीकी विधि कोई है ।
तीन गुन तीन काल जानत विचार हाल रासि षट द्वन चाल भली विधि जोई है ।
और विद्या दस चारि पढिकै सुधारि डारि विना राम नाम गति मुक्ति नहि होई है ।३७

इति हजारीदास कृते विपर्जै सुदरदासकृतेतस्य तिलक सपूर्ण ।

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश विषय वर्णन ।

संख्या ४२७ग. शून्य विलास, रचयिता—हजारीदास उपनाम "सतदास", कागज—आधुनिक, पत्र—१८, आकार—७$\frac{5}{10}$ × ६$\frac{5}{8}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—३२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९८८ वि०, प्राप्तिस्थान—प० त्रिभुवनप्रसाद जी त्रिपाठी, ग्राम—प्रानपाडे का पुरवा, पोस्ट—तिलोई, जिला—रायबरेली ।

आदि—अथ सुन्य विलास लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

प्रथम बंदि सतगुर चरन हरन भर्म भौ भार ।
स्तुति सत तृति राम जीउ बन्दौ तीनि प्रकार ॥ १ ॥
सर्वकाल जो एक रस ताहि कहत जड मूढ़ ।
जो उपजत विनसत रहै तापर सब आरूढ ॥ २ ॥
जड़ चेतनि दोउ सुन्य मे उपजि उपजि षपि जाहि ।
सुन्य न उपजै नहिं षपै मूरख षडित ताहि ॥ ३ ॥
शब्द सुन्यते होत है सुन्यहि मा मिलि जाय ।
सुन्य शब्द दोउ एक है कतूहूँ ना विलगाय ॥ ४ ॥

॥ कवित्त ॥

सुन्यतो अषड ताहि खण्ड करै मन्द मति जाको होत षंड ताको कहत अषड हैं ।
केते अवतार भये सुन्य ही मे षपिगए समुझै न मूढ बाद ठानत वितण्ड है ।
श्रुति पढि पढि गढि २ बहुविधि बात अति उतपात पक्षपात में प्रचंड है ।
सतवास ऐसे नर पावै दुष जम घर सुन्य के समाने विन मारै करत दंड है ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

अत—

गुष्टि को फकीर की वखान सुनि लेहु जन बोलो एक वचन मालिक कैसे पायो है ।
दुनियाँ औ तीन दोनो दई है विसारि मैने मालिक दिदारि मुझे तब दिषलायो है ।
दूजो बोलो आपने कमाल मेहनत तब यह मालिक दीदार दीद आयो है ।
आपु को मैं भूलि गया वाही को सरूप भया जित देषौ तित एक वाही दरसायो है ॥ ६ ॥

इति श्री ग्रंथ सुन्यविलास सपूरण शुभ मस्तु ॥

विषय—सतमतानुसार शून्य का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—इनके ग्रथो की सख्या लगभग १५ है। कुछ लोग यह सख्या ६० कहते है। ग्रथ स्वामी के देखने मे निम्नलिखित ग्रथ आए है—

१ काया विलास।
२ श्वास विलास।
३ शून्य विलास।
४ त्रिकाड बोध।
५ शब्दसागर तीन।
६ विपर्यय (मदरदास कृत) की टीका।

सख्या ४२८. शिखनख, रचयिता—हनुमान कवि, निवासस्थान—लखनऊ, कागज—आधुनिक, पत्र—६, आकार—$6\frac{1}{2} \times 5\frac{3}{8}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—२३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—बीसवी शती का उत्तरार्द्ध, प्राप्तिस्थान—प० केदारनाथ जी अवस्थी, ग्राम—रामनाथ खेडा, डाक०—विहार, जिला—उन्नाव।

आदि—शिषनष वर्णन हनुमान कवि'

वार

श्यामछवि तार है तमी के अवतार हैं कि मरकत तार है करम करतार हैं ।
शोभा के अतूल हे लछारे मखतूल है मदन चौर तूल है कतूहलं की सार हैं ।
ये अका कहीके हनुमान का कहीके समपारे काकहीके काकहीके पछवार हैं ।
अलि पिक नाग है ललन कहैं नाग हैं नगन वारे नाग हे कि नागरी के वार हैं ॥
असित पहार ताते जमुना अपार वही मजुल सेवार तामे पन्नग कुमार हैं ।
घोर घनकार अति कज्जल अकार कीन्हो तम को पसार वरषत जलधार है ।

हनुमान तिलक सिंगार ये सुकेसीवार मार के चमर सटकारे घुंघवार हैं ।
मरकत तार विरचेहैं करतार याते वार बार वरनत वनिता के बार हैं ।

अलक

घुघवारी नेह पारी सारी काकही की स्वच्छ जुत्थ जुत्थ ह्वं परी कपोल कुच वोगी हैं ।
सटकारी रतिवारी लतिका ललित कंधो लरकं मलं जमं विषम सुत भोगी हैं ।
डीठि डरकत मरकत कांति हनुमान मुनि गुनि कानन तजत जप जोगी हैं ।
छलकं यमुना बीच कलकं अलीन वृद अलकं विलोकि प्यारी पलकं वियोगी हैं ।।

पाटी

मदन महीप की पनाहै कंधों हनुमान राहु केतु युग सधि छेक्यो छपाकर को ।
कंधो घन मेचकी सुवासी उवया को कूट सुतत पटीर पर जोय विषधर को ।
यमुना पुलिन पर अलि विवि पंख पारि लेत है पराग कज मजु मानसर को ।
तेरे भात पाटी रूप भूप की कपाटी लखि परघो मन लाल याते हेरे ना अपर को ।।

वेनी

कंधो ब्रह्मलोक ते त्रिपथिगा की धार धाई कंधो रोम राजी प्रभा पृष्ठ पं परत है ।
मदन महीप जू को ताजनो तुरग मानि कहै हनुमान नित याही ते डरत है ।
यौवन की वाटिका मे उलही सिंगार बेलि पन्नगी कदली दल लहरे भरत है ।
येनी नेनी पिक वेनी वेनी तो त्रिवेनी जानि तिनि [काल लाल मन मज्जन करत है ।।

अत—— श्याम सारी

प्रात अरिवृ द (? कलिवृ द) पं मलि वृ द बंठे कंधो मरकत सपुट मै मनि धरि कामा की ।
कचन कुधर पै कलिंदी की लहरि लोल लोलघन मांझ विज्जु द्युति अभिरामा की ।
धूम धुज धूम मै की चद राहु एक भौन छाया की छनपं इदु वधु छवि छामा की ।
श्याम के सनेह श्याम मई भई हनूमान कंधो श्याम सारी शोभा वारो सारी श्यामा की ।।

सुकुमार

पलका ते पद भौन भूमि पं धरत नेकु पलका परत ततकाल पगतल मै ।
नाइन गुलाब झावो झूंवति जो हरे हरे झाईं परे आनन झवाई परं वल मैं ।
हनूमान कश्मीर आदिते अलेपतहू ऊर्वी रहै आपनेही रग परमल मै ।
सुर जामें नाग जामें नग जामें जल जामें सुकुमार देखी वृषभानुजा सकल मै ।।

झाकी

वाकी चारु चद्रिका विराजै भाल वाकी खौर वाकी भौंह चचल चितौन चष वाकी है ।
बांकी नकवेसर मधुर मुसक्यान वाकी कहै हनुमान बांकी अधर लला की है ।
सुख रासी भूषन सिंगार चद्रकला कीन्हे वाको परजक बंठी भूरि करुना की है ।
झुवि २ झूमि २ झाकि करे देव वधू कहै अनुपम शिरी राधिका की झाकी है ।।

।। विभौ ।।

कर जोरे किन्नरी तिलोत्तमा तबोर लीन्हे चौर चतुराननी करत छवि छाकी है ।
छत्र लैन छत्रपतिनिहु नाचं रभा ठाढी मकर पलाकी वारी कलपलता की है ।
यमलाना राधिका सी कमला है 'हनूमान' कौन कहै रसना फनेशहू की थाकी है ।।
तलातल वितल रसातल महातल की अतल सुतल की तं पगतल ताकी है ।।

कवि हनूमान कायस्थ लखनऊ निवासी श्री शिषनष सग्रह सम्पूर्ण शुभ भूयात

विषय—श्री राधिका जी का शिखनख वर्णन किया गया है ।

संख्या ४२६. नवीन संग्रह, संग्रहकार—हफीजुल्लाह खाँ, (स्थान—मुर्दरिस मदर्से बनापुर, जिलअ—हरदोई), कागज—आधुनिक, पत्र—७३, आकार—९३/४ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप)—२५०१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३९ वि०, मुद्रणकाल—सं० १९४८ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवनारायण तिवारी, ग्राम—जनई, डाक०—जनई, जिला—रायबरेली।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। नवीन संग्रह ।। पहिला भाग ।।

।। श्री परमात्मा की बन्दना ।।

सवैया

आलस नींद में मातोसदा अरु उद्यम हीन दूबेर खवैया ।
प्यास लगे नहिं पानी भरौं जो पास धरो उठि कै न पिवैया ।
ऐसे निकम्मन के "शुकदेव" कृपा के धाम हौ पेट भरैया ।
भोरते सांझ अरु सांझते भोरलौं मोसो कुपूत न तोसों देवैया ।। १ ।।

मध्य— **दूसरा भाग**

बीर कवित्त

स० ।।

कीजै न कोप कृपानिधि राम जोतौ गढ़ लंक उठाय मै लाऊँ ।
कोऊ को भय अरु शंक न मानिकै रावणरानि पै पानि भराऊँ ।
लच्छ कहैं कविराज समच्छ बिपच्छ ज शोणित सिंधि चलाऊँ ।
माथे मरोरि धरो दशकन्ध के नाथ के हाथ को पान जो पाऊँ ।। १ ।।

अंत—

सांची कहो हमसो मनमोहन काके कहे तुम प्रीति तजी है ।
आंखिन देखे विना नहिं चैन सो प्रीति की रीति कहा बिसरी है ।
का कछु मोहीं से चूक परी तुम्हरे चित की जो चाह घटी है ।
मै कपटी किधौं तू कपटी कितौ वह कपटी ज्यहि ऐसी ठटी है ।।

सो जानो आगे शुभमिति चैत्रशुक्ल १ संवत् १९३९ मु० २० मार्च १८८२ ई० ।।

प्रकट हो कि ग्रंथकर्ता ने इस किताब के छापने का हक इसी मतबे को दिया है इस कारण इस मतबे की आज्ञा विना कोई छापने का अधिकारी नहीं है ।।

मन्शी नवलकिशोर (सी० आई० ई०) के छापेखाने मे छपी मार्च सन् १८९१ ई०

विषय—परमात्मा की वंदना (द्रौपदी गंगा आदि के कवित्त), वीर कवित्त, षट्ऋतु कवित्त, विशेषरस कवित्त, बांसुरी कवित्त, स्वप्न, सिंहावलोकन, परस्पर वार्ता, उपमा, समस्या, फागहोली, फारसी भाषा संयुक्त कवित्त, गूढ़ार्थ, द्वयार्थक, फुटकर काव्य पत्र (बारहमासा, षट्ऋतु संगीत), आदि विषयों पर प्राचीन कवियों के कवित्त सवैयों का संग्रह ।

निम्नलिखित कवियों की रचनाएँ हैं—

१ शुकदेव, २ देव, ३ कृष्ण, ४ कवि माखन, ५ कादर, ६ अनन्य ७ अभयराम, ८ जैतराम, ९ बादेराय, १० ग्वाल ११ कवि चैन, १२ द्विज बलदेव, १३, कवि बेनी, १४ तुलसी, १५ छत्रसाल, १६ कवि दयाराम, १७ नाथ, १८ बालकृष्ण, १९. बंशगोपाल, २० रविदत्त, २१ मोहन, २२ दासपवार, २३ लच्छ, २४ पद्माकर, २५. केशवदास, २६ कालीदीन, २७ समाधान, २८ हरचरण, २९ कवि पुष्कर, ३० द्विजदेव, ३१ शंभू, ३२ मुबारक, ३३ कवि धीर, ३४, मशहेदत्त, ३५ श्रीपतिराय, ३६ ठाकुर, ३७. सुंदर, ३८ गंग, ३९ मशाराम, ४० ऊधोराम, ४१ मतिराम, ४२ हफीजुल्लाखाँ ।

संख्या ४३०. समरसार, रचयिता—हरकरण मिश्र (श्रीराम श्री सोया जी ?), निवासस्थान—रावलपिंडी (पंजाब), कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप)—५६७, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५० वि०, लिपिकाल—सं० १८६५ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० चंद्रभूषण शुक्ल, ग्राम—शुक्लपुर, (डेहरा), डाक०—विश्वेश्वरगंज, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—

. . . .

. . . . . .न सर्वसार मे ताव देव परि चित्य नृपः प्रवृत्तः ।

एकोपि कोटि भटलोल पतंग दीप लीलागदानुभवतु स्फुट कोतकेन ।। ३ ।।

।। टीका ।।

।। कवित्तः ।।

जो कछु याहि गिरंथ कह्यो मैं सोइ विचार चढ़ै ।
जब राजा एकुही कोटहू सें जाइ पड़ै ।
जैसे सिंह सयारो मैं जाय के गाजा एक ही ।
कोटन लोल भटैं हत डारैं मही भुज शत्रु समाजा ।
दीप पतगि वली लाजिवै करि आनद धार सुबृत्ति विराजा ।। ३ ।।

अंत— ।। दोहिरा ।।

पिडी रावल को सही वत्स मुनीश्वर वस ।
नाम मिश्र हरकर्ण द्विज जोगी दास कुल अंश ।।
देख ग्रंथ भाखा करी समरसार विचार ।
अस्त व्यस्त अनुसार मति कविकुल लेहु सुधार ।।

।। दोहा ।।

विद्या गुरु कश्मीर दामोदर क्षमा करत नुज ।
चपलापचल सरीर भाषा वर्णी जगत हित ।।

।। सोरठा ।।

सवत्सर विक्रम नृपत अष्टादश शत लेख ।
अर्ध शत पुनि सस्कृत भाषा वर्णी देख ।।

इति श्री सोयाजी श्री रामकृत समरसार समाप्तम् सवत् १८६५ पौष दि सप्तमी शुक्रवारादि लिखत राम कृष्ण १ श्रो राम शुभु ।।

विषय—समरसार ज्योतिष वर्णन ।

रचनाकाल

सवत्सर विक्रम नृपत अष्टादश शत लेख ।
अर्ध शत पुन सस्कृत भाषा वर्णी देख ।।

सख्या ४३१क. कविप्रियाभरणाख्या, रचयिता—हरिचरणदास, का० ज०—आधुनिक, पत्र—१६३, आकार—८३/४ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप)—५३७६, खडित, रूप—प्राचीन, गद्यपद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० लालबिहारी जी दुबे, ग्राम—लछीपुर, डाक०—नेहस्था, जिला—रायबरेली ।

आदि—।। अथ कटुकर्ण प्रयोग ।।

।। दो० ।।

कहत न नीको लागई सो कहिये कटु कर्ण ।
केशवदास कवित्त मे भूलि न ताको वर्ण ।।४६।।

कहत के अर्थ को सुनत जो अक्षर नीको न लागै भृगार में ट वर्ग आदि सो कटु कहावै ताको वर्णन मति करो अथ को उदाहरण दियो है अक्षर को नहीं ।।४६।।

मध्य— ।। विशेष लक्षणम् ।।

।। दो० ।।

साधन कारण विकल जहँ होय साध्य की सिद्धि ।
केशवदास बखानिये सो विशेष परसिद्धि ।।२४।।

इहां साधन को अर्थ साधक जो कार्य को सिद्धि करै सो व्याकरण रीति सो साधन भी कहावै औ साधक भी कहावै साधक जो है सो कारण कहिए हेतु ताकरिकै विकल होय हीन होय औ साधक हिये कार्य ताकी जहां सिद्धि होय जैसे कुम्हार है वाको चाक नहीं है परन्तु घट बनावै है ॥२४॥

॥ (यथा) सवैया ॥

साँप को ककरण मान कमाल जटान को जूटि रही जटि आतै ।
खाल पुरानी पुरानोइ बैल सुऔर की और कहै विषमातै ।
पारवती पती सम्पति देखि कहै यह केशव संभ्रम तातै ।
आपुन मागत भीख भिखारिन देत दई मुहमांगी कहाँतै ॥२५॥

भूखन के मारे आतरी लगि रही है इहा कार्य के साधक महादेव है कार्य है दान ताको सिद्धि करिवे मे हेतुकोक्त है भूम भंडार गज अश्व इत्यादि करि शिवहीन है साप के कंकरण आदि सो मुह सो मांगी जो वस्तु ताको दान की सिद्धि नही होति है ॥२५॥

अत—सूधो उलटो वाचिये औरहि औरहि अर्थ ।
एक सवैया सुकवि प्रकटत होय समर्थ ॥६८॥
एक ही अर्थ निकरै ॥६८॥
सूधो उलटो वाचिये एकहि अर्थ प्रमान ।
कहत गतागत ताहि कवि केशवदास सुजान ॥६९॥
सूधो वाचे और अर्थ उलटो वाचे और अर्थ ॥६९॥

०　　　　:०　　　　.०:

कं कं ऐमो चाहिये ताहि दामोदर को तू चलि . . . दामोदर श्री कृष्ण को तू मोही रही हैं वनमा .

—अपूर्ण

विषय—अलंकार नखशिख, यमक और चित्रकार आदि वर्णन ।

संख्या ४३१ख कवि बल्लभ, रचयिता—हरिचरनदास, निवासस्थान—चैनपुर, जिला–सारन (बिहार), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—१२$\frac{१}{२}$ × ५$\frac{४}{५}$ इच, परिमाण (अनुष्टुप)—७२८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि— . . . . .

बोलिबे मै प्रसिद्ध कविता मे नहीं प्रसिद्ध होय निहतार्थ तौ वोलिवे मै प्रसिद्ध जा अर्थ मे रहै कवि ताहि अर्थ मे नही राषै अप्रसिद्ध अर्थ मे राषै एताना सूछम भेद है

॥ दो० ॥

आवत पवन अषाढ को आये भास अषाढ ।
ताहि विधाता मारिहै देइ सिलीमुष बाढ ॥

पुन.

गोप व्रात मै जात हरि भिनुसारे बन ओर ।
अनचित . . सजनी करतै जोर ॥

जोर सब्द वल विषै प्रसिद्ध है पूरब मै रज्जु विसेष को कहत है इहाँ प्रसिद्ध मे नाही राष्यो जैसे मकर सब्द दैत्र मे प्रसिद्ध है जल मे नही जल विषै राषै तो यही दोष है अवर तै परै सवर की धार है

०.　　　　:०:　　　　:०:

अथ कष्ट सो अनुभाव व्यक्त

रुचिर हाँस जुत पिय निरषि फूल चलावनि हारि ।
तिरछी चितवनि वंत दृग काम वधू अनुहारि ॥

तिरछी चितवनि जामै रहै सो तिरछी चितवनि वंत द्रग के विसेषन करि नाइका को

विसेषन किये तिरछी चितवं है ऐसे नही कह्यो फूल चलावनो तिरछी चितवनि अनुभाव है सो जुदो नही कियो नाइका विना वाता सौं जुदो करि अनुभाव कौं जाननो यह कष्ट कल्पना ॥

अंत— **अथ कवि की स्थिति**

नवा पार सुभ देस मैं राज वढ़ैया ग्राम ।
श्री(वि) स्वंभर वस में वासुदेव भये धाम ॥
ताको सुत श्री रामधन कियो चैनपुर वास ।
परिगन्ना गौवा तहाँ चारि बरस सहुलास ॥
सालग्रामी सरजु की मिली गंग त्यौं धार ।
अंतराल मै देस तहँ है सारनि सरकार ॥
तनय रामधन सूर को हरि कवि किय मरू वास ।
कवि वल्लभ ग्रंथहि रचो कविता दोष प्रकास ॥
उदाहरन प्राचीन दै कोने कहूँ नवीन ।
रच्यो ग्रथ को....................

—अपूर्ण

विषय—काव्य दोष वर्णन ।

सख्या ४३१ग. हरिप्रकाश टीका (बिहारी सतसई), रचयिता—हरि चरणदास, नेवासस्थान—वढ़याग्राम, नवापार (सारन, बिहार), कागज—देशी, पत्र—१६०, आकार—१२॥ × ५। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—५७६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३४ वि०, लिपिकाल—सं० १८६८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० रामनारायण जी चौबे, ग्राम—मलौली चौबे, डाक०—धनघटा, जिला—बस्ती ।

आदि—श्री राधाकृष्ण विजयतेत राम ॥

अथ विहारी सतसई की टीका हरि प्रकास लिषोहौं ॥
तुलसी दल माल तमाल सो स्याम अनंग ते सुदर रूप सोहाहीं ।
श्रुति कुडल के मनि की झलकैं मुषमडल पै वरनो नहि जाही ।
सषि देषि पियूष मयूषहु तें सुषमा अति आनन की सरसाहीं ।
विहरै हरि गोप सुता सग कान्ह निशीथिन में वन बीथिन मांहीं । १

:o: :o: :o:

दोहा

मो हिय राधा कान्त को निसदिन वसौ विहार ।
जिहि सुमिरत प्रत्यूह के विनसत जूह अपार । ४
तीरथ सेवन करत हरि प्रेम भक्ति को मूल ।
धन्य कलिदी कूल लषि लोभे पीत दुकूल ॥ ५

अथ कवि की स्थिति

राजत सुबे विहार मे है सारनि सरकार ।
सालग्रामी सुरसरित सरजू सोभ अपार । ६
परगन्ना गोआ लसे गाव चैनपुर नाम ।
गंगा सो उत्तर तरफ सो हरि कवि को धाम । ७
सरजूपारी द्विज सरस वासुदेव श्रीमान ।
ताको सुत श्रीरामधन ताको सुत हरिजान । ८
नवापार मे ग्राम है वढ्या अभिजन जास ।
हरि सुविहारी सतसई टीका करत प्रकास । ६
फेर विहारी पढ़न को परै न काहू पास ।
ऐसी टीका करत है हरि कवि हरिपरकास ॥१०

पुरुषोत्तमदास जी को बांध्यौ क्रम है ताके अनुसार टीका ॥

:o: :o: :o:

मेरी भव इति ॥ मेरी हमारी जो भव बाधा फेरि फेरि जन्म लेनो सोहै दुष ताको हरो भव नाम जन्म को औ ससार को बाधा दुष । हे राधा नागरि प्रवीन तुम भक्त बत्सल हौ भक्त के दुष देषि तुमैं दया आवति है सो याको अर्थ प्रसिद्ध बेद पुरान तुमारी स्तुति करै है ।

अंत—सालग्रामी सरजुजहं मिली गंग सो आय ।
अंतराल मो देस सो हरि कवि को सरसाय । १
सेवी जुगल किसोर के प्राननाथ जी नावँ ।
सप्तसती तिनसो पढ़ी वसि सिगारवट ठाँव । २
जमुना तट सिंगारवट तुलसी विपिन सुदेस ।
सेवत सत महत जेहि देषत हरत कलेष । ३
पुरोहित श्रीनद के मुनि सांडिल्य महान ।
हम है ताके गोत मे मोहन मोज जमान । ४
मोहन महा उदार तजि और जाचिए काहि ।
सपति सुदामा को दई इद्र लही नहि जाहि । ५
गही अकसु मनु तात तें विधि सो वस लषाय ।
राधा नाम कहै सुनै आनन कान वढ़ाय । ६
सवत अठारह सै विते तापर तीसरु चारि ।
जन्माठं पूरो कियौ कृष्ण चरन मन धारि । ७

इति श्री हरिचरणदास कृता विहारी विरचित सप्तसती टीका हरि प्रकासाख्य पूर्ण । संवत् १८६८ ॥

विषय—विहारी सतसई की टीका।

रचना काल

सवत अठारह सै विते तापर तीसरु चारि ।
जन्माठं पूरो कियौ कृष्ण चरन मनधारि । ७

सख्या ४३२क. मसल विवेक, रचयिता—बाबा हरिदास जी, निवासस्थान—बबुरिहा का पुरवा (महाराजगज), रायबरेली, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—२७, आकार—१०½ × ७ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, शुक्ला प्रिंटिंग प्रेस, लाटूश रोड, लखनऊ से प्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप)—६७२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, मुद्रणकाल—स० १९९२ वि०, प्राप्तिस्थान—बाबा अवसानदास जी, ग्राम—बबुरिहा का पुरवा, डाक०—महाराजगज, जिला—रायबरेली ।

आदि—ॐ जानकी वल्लभो विजयते ॥ मसल विवेक ॥

कवित्त सवैया

नरदेह सुपाय विषै विष खाय गँवाय वृथा मनलाय विकारै ।
वनिता सुत दाम गुलाम भयो सब दूषन भूषन साजि सिगारै ।
परमारथ स्वारथ के पतिराम गहै नहि दाम चहै दुष पारै ।
कह दास हरी विगरी सगरै सो जरै वह सोन जो नाकहि फारै ।
नर देह सुपाय गँवाए वृथा हरि नाम नवाम महाधन लूटा ।
तिहुँ काल तिहुँ पन तिनिहु जोनि तिलोक न सोक लखेबहु टूटा ।
विषया वन भूलि चल्यौ खल फूलि मनोभव लोभ रिसो तेहि कूटा ।
कह दास हरी विगरी सगरो जिमि तीनि भुजाएँ भयो खल भूटा ।
नर देह सुपाय गँवाए वृथा मन लाय न राम भजेउ सठ जोना ।
नितही दुख कूटि न छूटि कवौ निकसी तन फूटि सियावर लोना ।

परिगे जमते जब काम हराम परे दुख मार करे मुख बोना ।
कह दास हरी उबरी करेरं जिमि आगि कहै लरिका नहि सोना ।।

अंत—

हैं गन नायक लायक सर्व सो खर्व न ध्यावत पावत ठेहै ।
गावत भेव पुरान यही तजिमान तेही सुरसेव सने है ।
बुद्धि विसुद्ध हुवे केहि भांति विना रवि राति सो नासक केहै ।
कह दास हरी सो बरी भव नीतिहि भीति जथा तल चित्र उरेहै ।।

विषय—प्रत्येक कवित्त और सवैया मे एक एक मसले (कहावत) का प्रयोग कर ज्ञानोपदेश किया गया है ।

संख्या ४३२ख. भक्तिविलास, रचयिता—बाबा हरिदास, स्थान—ववुरिहा का पुरवा), कागज—आधुनिक, पत्र—७२, आकार—७५⁄₁₀ × ६३⁄₄ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—१५१२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६३८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री बाबा अवसानदास जी, ग्राम—ववुरिहा का पुरवा, पोस्ट—महाराजगज, जिला—रायबरेली ।

आदि—सीताराम जी सहाय ।। श्री गणेशाय नमः अथ भक्ति विलास ग्रंथ लिख्यते ।।

।। दोहा ।।

वंदौ गुर पद कमलरज सदा जोरि जुगपानि ।
राम लषन सिय भक्ति रति देत सर्व सुष षानि ।। १ ।।
श्री गुर चरन सरोज रज मन मधुकर नहि जौन ।
दास हरि सियराम पद लहत भक्ति नहि तौन ।। २ ।।
श्री गुर नवकिशोर जिउ मोर परम हित कौन ।
राम नाम पावन परम भरम नसावन दौन ।। ३ ।।

।। कवित्त सिघालोकनि सवैया ।।

गन के पति न मति के गति के धन सपति दान तनोमन के ।
मन के सुनि कर्म कठोर किये हिय चोर न जोर चलै तनके ।
तनके सब रोग वियोग भये हरिदास न त्रास न विर्ष वनके ।
वनके रह पाय उमा सुत के जिन ध्याय न पाय सुषै गनके ।। १ ।।
गजानन है मुद मगल धाम जो दामदिए सुत वाम जहानन ।
हानन भे तबलो दुष दोष न तोष उमा सुत रोष समानन ।
मानन है सबही सुरके उरके अस नाम अमीरस पानन ।
पानन फूलन सो हरिदास जो सेइ जो लेइ समूह गजानन ।।

अंत—

कार है दीन सुदामहि धामसो कौन जो स्याम कुबेर पसार है ।
सार है भक्ति सदा सब सक्ति तजे नृप पाग कु साग पियार है ।
पार है पारथ को सोइ भारथ हाकि जो जान पुरानहु हार है ।
हार है सोइ सिगार करै हरिदास ररै जो रकार मकार है ।।५०५।।

।। दोहा ।।

कवित पाच सै पांच है सिघालोकनि छंद ।
भक्ति विलास प्रकास मै हरन मोह भर्म फद ।। १ ।।
वहु ग्रथन को सार तुलसीकृत मत षास ।
कवित्त सवैया झूलना घनअच्छरी विलास ।। २ ।।
वोनइस सै अरतीस को सम्मत है सनिवार ।
श्रावन सुक्ल यकादसी ग्रंथ पूर श्रुतिसार ।। ३ ।।

राय बरैली उत्तरै ओजन एक अप्रमान ।
गज दुरविजे सुर पुर बल्ला बीच अस्थान ॥ ४ ॥
है कुमार सुषसाहि के लाल साहि असनाम ।
तासु तनै हरिदास है आसमनै सियराम ॥ ५ ॥
छत्री कुल मे जन्म है गौर अमेठिया बंस ।
श्री मारुत सुत की कृपा भयौं काग सो हस ॥ ६ ॥

अथ भक्ति विलास समाप्त ॥ राम राम सीताराम ॥

विषय—भक्ति वर्णन ।

रचनाकाल

वोनइस सं अरतीस को सम्मत है सनिवार ।
श्रावन सुक्ल यकादसी प्रथपूर श्रुतिसार ॥ ३ ॥

संख्या ४३२. छदपयानिधि, रचयिता—हरदेवकवि, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—१३॥ × ८॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप)—१५०० पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८९२ वि०, लिपिकाल—स० १९१३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री ठाकुर श्रीकंठनाथ सिंह जी, धेनुगवाँ (बस्ती) ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ छद पयोनिधि । लिख्यते ॥

छप्पै छद

अतुल रूप गुन अमित नित्त नव जोवन तन छवि ।
वेदन पावत पार और को वरनि सकें कवि ।
कुजन करत विहार सषी सेवत सुखदानी ।
रसिक गुविंद गुर दई वताय वृंदावन रानी ।
जयति श्रीमती राधिका रमण सग शोभित सदा ।
करौ कृपा 'हरिदेव' पै मुदमगल देउ सु सर्वदा । १

अथ मत्त गयद छद

कूजत कोकिल गुजत और सुनावत मोर महा मुददाई ।
फूल लफी लत कानन कीच सरोज की सेज सवीन बिछाई ।
बैठे तहां हरिदेव दुहूँ मिलि हास विलासन की सरसाई ।
सो सुष मो हिय माँहि वस्यो नित श्री वृषभानकुमारि कन्हाई । २

अथ छद पयोनिधि

आदि अत दोऊ तट राजट पुनीत ताके छद क्रम चारु छरि छायो सरसाय है ।
नाना विधि वर्न अर्थ सोई रतनावलि है गुण गण जल जतु रहे सुष पाय कै ।
दंपति विहार फूले पकज पुनीत तामे कीने ये प्रवध ते तरग छवि छायकै ।
ऐसो हरिदेवकृत छद को पयोनिधि . ज्यो कवि वृ द आमे आनद वढ़ायकै । ३
है अति अगम अगाध दयोपथ सो सुगम . . . . ।
है हिय मम अपराध क्षमाकरो कवि जा. . . . . ।

:o: :o: :o:

जैसे वेद विहिन द्विज हीन लोक सो होय ।
त्योही छदो ग्यान बिन कहै कवं कवि लोय । अन्य छद व्याख्या . . . . . ।

:o: :o: :o:

इति श्री राधिकारमण पदारविंद मकरद पानानद अर्घालव श्री रतिराम आत्मज कवि हरिदेव विरचितायां छद पयोनिधे वृत्तविचारने नाम प्रथमो तरग ।

अत—यह प्रवध पूरनकियौ मै निज मति अनुसार ।
भूल चूक कहु होय जो लीजौ सुकवि सुधार ।१७९

मोहिं आपनो जानि जन छमियो यह अघभार ।
बड़े लघु पर हित करें जिमि गिरि सिर त्रिनधार ।१८०
धरौ नैन निधि सिद्धि ससि सवत् सुषद उदार ।
माघ शुक्ल तिथि पचमी रवि बंदन शुभवार ।१८१

इति श्री राधिकारमण पदारविंद पानानंद अलिंद श्री रतिराम आत्मज कवि हरिदेव विरचितायां छद पयोनिधे सेसवय पिंगल ग्रंथ सम्पूर्णम् अष्टमो तरग ८ शुभमस्तु संवत् १६१३ ॥

विषय—पिंगल विषय वर्णन ।

रचनाकाल

धरौ नैन निधि सिद्धि ससि संवत् सुषद उदार ।
माघ शुक्ल तिथि पंचमी रवि वदन शुभवार ।

संख्या ४३४. विष्णु सहस्रनाम, रचयिता—हरिभुवन दास, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८।। × ४। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—२६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—श्री प० जमुनाप्रसाद जी, ग्राम–बरहूपुर, डाक०–वलारामपुर, जिला–प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गनेसाय नमः ॥

श्री राम केस्न गोपाल दमोदर दिनानाथ मुरारी ।
मच्छ कच्छ वाराह विसम्भर वावन वौध वहारी । १
परब्रम्भ नरसिंह निरजन कैसो कलिमल हारी ।
रामनाथ रनछोर रमापति सीतापति सुखकारी । २
टीकम विश्न् विराट चतुर्भुज चक्रपाणि धनुधारी ।
पारब्रह्म परमेस्वर परमानद दीन हितकारी । ३
रकनाथ रघुनाथ रमेस्वर कसकाल वनवारी ।
निराकार नारायन नटवर कमल नाभ भं हारी । ४
अगुम अनत अनामं अनुभव गम्य गडुल असवारी ।
अवीनासी अनवध्य अनुपमु अजंनाथ असुरारी । ५

अंत—वरनत व्यास वसिष्ट सदा सुख सनकादिक ब्रम्भचारी ।
सुरपति गिरा गणेश महामुनी जथा सुमति अनुसारी ।१८
कहि ना सकै श्रुति सेस सहस्र मुख सैल सुता त्रिपुरारी ।
पतित पुनीत करन कारन नित जग कीरति विस्तारी ।१६
ऐक नामवली अपार अगम अति रघकुल तिलक तुम्हारी ।
हरि भुवन दास जन सुनै जे गावै तै न परै भौ भारी ।२०

इति श्री वीश्नो सहसरनाम समपुर

विषय—भगवान के एक सहस्र नामों का उल्लेख ।

सख्या ४३५ छद रत्नावली, रचयिता—हरिराम, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—६$\frac{3}{4}$ × ४इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—३६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८४६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत शभुप्रसाद जी बहुगुना, एम० ए०, आई० टी० कालेज, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

गुर गनपति गोव्यद को नाय सीस 'हरिराम' ।
पिगल मत भाषा विर्षै रचित रुचिर परकाम ॥ १ ॥
मत्ता वरन विभेद करि द्वै विधि लौकिक छद ।
पिंगल आदि अचारिजन कहे बाधि परबध ॥ २ ॥

तिनके लक्ष्य लक्षन सहित सुने जिसे हैं नाम ।
प्रगट करत इस ग्रंथ मैं भाषा करि 'हरिराम' ।। ३ ।।

।। छंद स्त्रग्विणी ।।

छद रत्नावली नाम यो ग्रंथ है ।
बाल बुद्धीन को या धरो पंथ है ।
छद की मदता याहि चालें मिटे ।
ज्ञान के मग्ग अज्ञानता ज्यू हटै ।। ४ ।।

।। अगण कथन दोहा ।।

बरन छद के बंध मैं तीन बरन गन मान ।
मन भय सतरज आठये पिगल करत बखान ।। ५ ।।
सब गलम SSSन ।।। भ S।। य ।SS आदि स ।।S त SS। अत्यम ध्यज ।S। र S।S जानि ।
महि दिव शशि जल अनिल नभ रवि अरु अनल प्रमान ।
रवि अरु अनल प्रमानि श्रेय बहु अपु सज सहि ।
बृद्धि भ्रमन धन नास रोग पुनि प्राण प्रन सहि ।।
गन गति गन पति गनज फलहि गुनि लेहु सकल अब ।
कहत दास हरि राम कहि यहि छद माहि सब ।। ६ ।।
ग के कहें गुर जानियो ल के कहें लहु लेखि ।
कछु गन युत गन नाम लखि कहू अकेलो पेखि ।। ७ ।।

अंत—

जाके पद माहि होहि वरण बतीस सब और भेद नहि कोपि अत्य लघु नित्य धरि ।
घनाक्षरी छद सोई सबै कवि लोग कहै सोला अरु सोला परि विरति विचारि करि ।
व्याजोकति जा इत्थ मिस तैं छिपावै बात वाग गई फूलनि कौ देह गयो खेह धरि ।
पिहित विचारि येम प्रात पिय आये घरि सेज दइ सुधारि कह्यो प्यार पौढिए सपरि ।।१०३।।

इति वृत्त बरन बत्तीस लौ वरने मो मतिमान ।
चूक्यो चतुर सुधारि है जेहै सब विधि जान ।।१०४।।
अब मैं करिबे कौ साची यह कहवति भरती भूषन ग्रद धरचो ।
इक सौनू और सुगध सदा हो एक शख अरु खीर भरचो ।।१०५।।
जिहि अर्थ करि कवित्त को चमतकार मन होय ।
अलकार तिह नाम को कवि धारो मन सोय ।।१०६।।
छवा नाम कित भेद लखि कवि जन मनहु खेद ।
कै देसांतर रीति है क आचारज भेद ।।१०७।।
ग्रथ छद रत्नावली सारथ याको नाम ।
भूषन भरतो तैं भयो कहै दास "हरिनाम" ।।१०८।।

इति श्री हरिराम कृत छद रत्नावली सपूर्ण ।। मगल लेखकाना च पाठकाना च मगलं मगल सर्व भूतानां भूमे भूपति मगल लिपि कृत राम रछिपाल ब्राह्मण श्री लोहागर छेत्र मध्ये सवत् १८४६ कार्तिक कृष्ण ८ भोम वासरे हरे नम. ।।

विषय—पिगल और अलकार वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रथ मे उदाहरण के रूप मे दिए गए छदों मे जो अलकार आए है उनका लक्षण सहित नामोल्लेख कर दिया गया है । कहीं कही छदो के उदाहरण और लक्षण तथा अलकारो के लक्षण और उदाहरण एक ही छद मे दिए गए है, जैसे—

।। घनाक्षरी ।।

जाके पद माहि होहि वरण बत्तीस सब और भेद नहि कोपि अत्य लघु नित्य धरि ।
घनाक्षरी छद सोई सबै कवि लोग कहै सोला अरु सोला परि विरति विचारि करि ।
व्याजोकति गानि इत्थ मिस तैं छिपावै बात वाग गई फूलनि कौ देह गयो खेह धरि ।
पिहित विचारि येम प्रात पिय आपे घरि सेज दइ सुधारि कह्यो प्यार पौढिए सपरि ।।१०३।।

इसमें छद घनाक्षरी का लक्षण और उदाहरण तथा व्याजोक्ति और पिहित अलंकारों के लक्षण एव उदाहरण दिए हैं।

इसमे सदेह नही कि इन विषयो का वर्णन अत्यत सक्षेप मे हुआ है।

ग्रथ की भाषा मिश्रित है जिसमे यत्र तत्र खडी बोली का भी मिश्रण पाया जाता है। ऐसी कुछ सभावना जान पडती है कि रचयिता दिल्ली की ओर का रहनेवाला था।

छद और अलकारो (रत्नो) का वर्णन होने के कारण ही रचना का नाम छद रत्नावली रखा गया है।

संख्या ४३६. चौरासी वैष्णवन की वार्ता (भावटीका), रचयिता—मू० गोकुलनाथ जी, भावकार—श्री हरिराय जी, (स्थान—गोकुल), कागज—देशी, पत्र—६१५, आकार—१४$\frac{6}{10}$ × ८$\frac{3}{10}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७० वि०, प्राप्तिस्थान— डा० दीनदयालु जी गुप्त, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

आदि—श्री कृष्णायनम अथ चोरासी वैष्णवन की वार्ता श्री गोकुलनाथ जी कीए ताको भाव श्री हरिराय जी कहत हे

चौरासी वैष्णव को कारण यह है जो दैवी जीव चोरासी लक्ष जोनि मे परे हे तिनमे ते निकासिवे के अर्थ चोरासी वैष्णव कीए सो जीव चौरासी प्रकार के हे राजसी तामसी सात्विकी निर्गुणए ॥ चारि प्रकार के गिरे तामे ते गुणामय राजसी तासी सात्विकी रहन दीए सो जिनको श्री गुसाइ जी उद्धार करेगे श्री आचार्य जी विना श्री गोवर्द्धनधर रहिन सके तो अपने अतरंगी निरगुण पक्षवारे चोरासी वैष्णव कीए सो एक एक लक्ष जोनि मे ते एक एक वैष्णव निर्गुणवारे सरणा ले चोरासी वैष्ण करि चौरासी लक्ष जीनि मे निर्गुनवारे के उद्धार वैष्णव द्वारा कीए

:o: :o: :o:

अब चौरासी वार्ता मे गूढ आसय श्री गोकुलनाथ जी कहे है ॥ तहा श्री हरिराय जी कछूक भाव प्रगट करत हे ॥ पुष्टिमार्गीय वैष्णव के अर्थ जनाइवे के अर्थ प्रथम ॥ अब श्री आचार्य जी महाप्रभुन के सेवक दामोवदास हरसानी तिनकी वार्ता को भाव कहत हे ॥

सो श्री आचार्य जी महाप्रभू दामोदरदास जिनको दमला कहते ॥ याते दमला सो अमला मल करि के रहत तहा यह सदेह होइ सो साधारन वैष्णव से मल नाही ॥ तो दामोदरदास मे केसे सभवे ॥ तो दामोदरदास कै दरसन ते इनका नाम लिए ते पाप जाई तो इनको नाम दमला अमलक हे ॥ ताको प्रयौजन कहा यह सदेह होइ तहा कहत हे ॥ यह भक्तिमारग मे श्री ठाकुर जी ते अधिक श्री आचार्य जी मे प्रीति होई तब अमल कहिए ॥ दामोदरदास की तो द्रढ भाव एक श्री आचार्य जी मे हे जो दामोदरदास की गोद में श्री आचार्य जी माथो धरि पोढे हते सो साक्षात् श्री गोवर्द्धननर पधारे ॥ तब वरजे जो निकट मति आयो श्री महा प्रभू जी जागेगे एसो दृढ भाव हे ॥

अंत—या प्रकार श्री आचार्य जी महाप्रभू सगरी स्नेह की रीति मिली मर्यादा सो आपु प्रगट कीए ॥. और श्री गुसाइ जी केवल स्नेह रीति को विस्तार कीए ताते यह पुष्टिमार्ग केवल रस रूप हे ॥

वार्ता चतुर्विसति ॥२४॥ इति श्री चोरासी वार्ता श्री गोकुलनाथ जी कृत ताको भाव श्री हरिराय जी वर्ननकीय सो सपूर्ण ॥ संवत १८७० फागुन मासे सुकल पछे तीथे त्रोदसीयां भ्रगु वासेरे दसखत मुनासींग के रजपुत चतुरामल सेठ की डीहढी (ड्योढ़ी) पर पुस्तक लीखी सहर लखनहू मे जो देखा सो लीखा मम दोस न दीजीय

विषय—पुष्टिमार्ग के चौरासी वैष्णवो की वार्ता। सूरदास, परमानददास, कृष्णदास अधिकारी, कुभनदास "अष्टछाप" का विशेष वृत्त दिया है।

संख्या ४३७. हरिवश पुराण, मूलकार—ब्रह्मजिणदास, भाषाकार—हरियराए कागज—देशी, पत्र—४२४, आकार—१० × ६३⁄४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—६२२२, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि–नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर, अहियागंज, टाटपट्टी, लखनऊ।

आदि—

....

...वय धान्य महावर साल। बहुविधि सस्य अलंकृत ताल॥८॥
कहियं नालिकेल फल पुग। चपक अव पजूर सूचग॥
वाष फली मडफ आकार। देषत चित्त हरं नर नार॥ ९॥
बहु प्रकार वणचर बहु जीव। कपि केकी आवृत सुसदीव॥
जोगीश्वर निर्भं विहरत। धर्म देसना करते संत॥१०॥
राजग्रही नगरी सोभत। इंद्रपुरी सम पुर राजंत॥
अस्ति स्वर्ग तिलक आकार। धर्म कर्म साधं नरनार॥११॥

:o: :o: :o:

॥ अरिल्ल ॥

दुर्जन सज्जन जु होए सबं अरि जीतिए।
पूरव पुन्नि सहाय परमरस प्रीति ए॥
एही जगत मं सार सुजस मुष भाषिए।
कहत ब्रह्म जिणदास सुहिरदं राषिए॥ ८॥

॥ दोहा ॥

कह्यो स्वयवर रोहिणी वसुदेव को सयोग।
बीर मिले सब घर गए 'हरिय राए' सब लोग॥ ९॥

इति श्री हरिवंस पुराणे आचार्य श्री सकलकीर्ति शिष्य ब्रह्म जिण दास विरचिते भाषा हरिराए कृत स्वयवर रोहिणी समुदविजय वसुदेव समागमः वर्णनो नामंकादशौध्याय सधि॥११॥

अंत—

॥ दोहा ॥

देषो मोह प्रभाव यहु नर सत दुर्जय धीर।
जानत पुनि मुचत नही मुग्ध भाव ह्वं वीर॥१३॥

॥ सवैया ॥

यहु जानि पुनि विपाक पडित वाइध ..... ।

—अपूर्ण

विषय—जैन हरिवश पुराण का हिंदी पद्यानुवाद। इसमे भगवान के अवतारो का चरित्र वर्णित है।

संख्या ४३८. व्रजविहार लीला, रचयिता—हरिलाल, कागज—देशी, पत्र—३८, आकार—६॥ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—५२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि–नागरी, लिपिकाल—स० १६०१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० रामनारायण जी चौबे, ग्राम–मलौली चौबे, डाक०–घनघटा, जिला–बस्ती।

आदि—श्री गणेशाय नम. अथ वन विहार लीला लिष्यते॥

उर्माठ सीस फेटा सजं मोरपछके अछ।
स्वच्छ स्याम व्रज रछ जो सदा हमारी पछ।
मोह निसा अध अतुल तम उदित अमल नख चद।
सदा प्रकाश करौ हृदं व्रजपति पद अरविंद।
व्रज विहार नित्यत निपुन गोपिन के चित चोर।
हरी लाल के इष्ट जो जैनं नंदकिसोर। २

चौपई

सबको सत संगति है कारन । तरे लोह काठ संग वारन ।।
मो को सतसंगत सुषकारी । मिले मह गोवर्द्धनधारी ।
जिनको दरसन मोको भयो । देषत बरस मगन ह्वै गयो ।
श्री भागोत देह करि मानत । श्री विंदावन रूप बषानत ।।

दोहा

जिनकी कृपा कटाछ सो देषे ब्रज के धाम ।
डार पात फल फूल में लहे स्याम अभिराम । ४

:o: :o: :o:

आचारज बेठे जहां तर तमालरे मूल ।
हरीलाल हरसो लपट रोम रोम रहै फूल ।
हरिलाल हिय ताल मो षिली कमोदन कुंद ।
प्रेम सुधा पीवन चहै कृष्ण मुदित मुष इंदु ।

इति श्री ब्रज विहार लीलायां तिय वन वर्ननाम प्रथमो विहार ।

अंत— दोहा

रावल राधाघाट है राजपुरा सो गाऊ ।
आदि ठोर वृषभान की कीरति को आराम ।
वृज पर कमा फिरचौ चोरासी रम लेत ।
देषि मधुपुरी भोमतो सपूरन सुष सेत ।
व्रज चोरासी कोस के धाम कहे हरलाल ।
कोटिक मूरति तीरथो कोटि कोटि हरलाल ।

:o: :o: :o:

इति श्री वृज विहार लीलायां श्री गोकुल वर्णन नाम पंचदसो विहार । सवत् १६०१ मिती. . . . .

विषय—श्री कृष्ण लीला वनविहार वर्णन ।

संख्या ४३६. बारहमासा, रचयिता—हरिवंश, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—१०।। X ४।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० श्रीनाथजी द्विवेदी, ग्राम—वासूपुर, डाक०—मानधाता, जिला—प्रतापगढ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

कवित्व बारामासा

लागे असाढ महा उवाद मा अयसो पवन चलै बदरा उठिधाये ।
वन्सी विरोग विरागभरी सुख सावरो सयोगिनि मन्दिर छाये ।
छाडि चलै उपभोग विदेसी जहा लैके सुषधाम सोहाये ।
राधे अधीनते वोलति है सषि आए असाढ पै स्याम न आये । १
वुन्द परै जब भुम्य चहू दिशा धूम उठै मनहोत अनयसो ।
सेत समूह चलै तनते अति अवर अग सो हाल तन कैसो ।
झापर झूएा वहै नदिया मुष वोलति हौ अपने गृह अयसो ।
'हरिवंश कहै' वृषभानु सुता कहू अयैज असाढ़ मे मोहन कैसो । २
दादुर सोर करै चहु ओर वकै पिक मोरन मो मन भाव ।
जैसे हरित भई भूमि चहूदिसि रग विरग वधूजो बनावे ।
पूजति है जुवती निषि नाग सोहाग सावनहू घनस्याम न अवै । ३

जौ रथ ऊपर बैठि चलैं तौ डगपयहि आय शुवे दुष पावैं ।
पंछी परोहन की गति है पर भीजि गये कहु कवन चलावैं ।
पाव पियादे चले कवहू नहि मोसे सुनो मैं तोहि वतावैं ।
'हरिवंस' कहै वृषभानुसुता कहु सावन महरि कंसे के आवैं । ४

अंत—

जेठ मे पौढ़ि पढौहे मे सोवति सेज विछाय पिया अरु प्यारी ।
सुवरपक कलेवर सीतल नीर सुगन्धधरे भरि झारी ।
प्यारिपियै पियको पियावतदत्त. ....रस व.ढ सातभारी ।
मै हरिवंस विरोगभरी वृज मे कव आवैगे गिरधारी ।२३
. ...रं कहै वृजरज चढे रथ पवनहुते अति आतुर धावैं ।
वनमालहिं किरीट लिहीं मुरली गरमाल विराजत मजु सोहाये ।
मेरे कहे जो रहो थिर होइ तौ नन्द कुमार जो आगन आये ।२४
जेठ के जामिनि मजहु भामिनि केलि करो अपने मन माही ।
पाय सषी सदेश तव मनहि न हरषत अली ।
पान फूल पकवान लै राधे पिय मिलन चली ।२५

॥ इति वारामासा ॥

विषय—बारहमास का वर्णन ।

संख्या ४४०. वराटिका प्रश्न, रचयिता—हरिवश द्विज, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—५।× ३।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—२६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी, (दाता—श्री प० गुरुप्रसाद जी मिश्र, ग्राम—हीगनगौरा, डाक०—कादीपुर, जिला—सुलतानपुर) ।

आदि—श्री गणेशाय नम

दोहा

मत लै भैरव प्रश्न कौ हृदयै राषि श्रीकृष्ण ।
भाषै द्विज हरिवस रा यह राटिका प्रश्न ।१।
१११ एक एक अरु एक जौ परि वराटि जाइ ।
मासा पूरन होयगी ससो देत मिटइ ।२।
११२ परि वराटिका जाइ जौ एक एक मिलि दोइ ।
अवै टलुहै काज कौ वैठि रहौ चुप होइ ।३।
११३ मिलि वराटिका जो परै एक एक मिलि तीन ।
आसा पूजै सर्वथा यह कहि गए प्रवीन ।४।
१२१ परि वराटिका प्रश्न मैं एक दोइ इक जात ।
अवौ टलुहै काज मैं सुनु पृच्छक यह बात ।५।
१२२ परि वराटिका जाइ जौ एक दोइ अरु दोइ ।
कछु विलव आगें सुफल काज सत्य ध्रुव होइ ।६।
१२३ एक दोइ अरु तीन जौ परि वराटिका माह ।
होत उपद्रौ काज मैं मन हुलास कछु नाह ।७।

अंत—

३३२ तीन तीन अरु दोइ जौ यह वराटिका उक्त ।
सुभ कौ लेसु कछू नहीं होइ असुभ सौ जुक्त ।२७।
३३३ तीन तीन अरु तीन जौ परि वाराटिका अस ।
आसा पूजैगी सही यह भावत हरिवस ।२८।

इति वराटिका प्रश्न सपूर्णम् . ... ।

विषय—वराटिका प्रश्न (रमल) विचार वर्णन ।

संख्या ४४१. गोविंद विलास, रचयिता—हरिविलास, (स्थान—लछमनपुरी, लखनऊ), कागज—देशी, पत्र—७०, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुष्टुप)—३५४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३३ वि० (?) (रामगुण निधि रोहिणीपति), प्राप्तिस्थान—राज्य पुस्तकालय, किला प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री राधा माधवाभ्यां नमः अथ श्री गोविंद विलास ग्रंथ नाम हरिवालास कृत लिष्यते।

दोहा

ज्ञान विराग विवेक मख तप योगादि अनेक।
अति दुस्तरि कलियुग समय सबहिन मो वितरेक।१।
तासो बुछ निश्चै कियो केवल इक हरिनाम।
भक्ति मुक्त कैवल्यदा सब लायक सुखधाम।२।
सुर दुर्लभ नर तनु मिल्यो भर्त खंड मो आय।
हरि चरिचा निशि दिन उचित कहै सुनै चितलाव।३।
पार करन भव सिंधु की कर्णधार विख्यात।
कर्ण मातु वधू तनै सुनहु कर्ण दैवात।४।
सुत वनिता ममिता अधिक मंद कर्म अभिमान।
कृष्ण विमुख जो मनुख वपु पशु विन पूँछ विषान।५।
निद्रा मयथुन अशन रुचि विशै गानमो प्रीति।
हरिविलास ताहित कहत ग...ल छंद हरिगीत।६।
नाम रूप गुण श्यामघन शेश न पावत पार।
हरिविलास केहि विधि कहे लीलावश अवतार।७।
श्री गुर चरन नवाय शिर निज मति के अनुसार।
श्रुति रसना पावन करन गावत गीति मुरारि।८।
या पुस्तक को नाम है श्री गोविंद विलास।
गान गरै अथवा सुनै मन अति होत हुलास।९।
श्री गणेश सिंधुर वदन कीजै देव सहाय।
हरिविलास हित हरिचरित्र देहु रसाल बनाय।१०।

मध्य— दोहा

शेश गिरा नहि कहि शकै गुण गणराम चरित्र।
हरिविलास निजमति यथा वानी कीन्ह पवित्र॥

इति श्री हरि विलास विरचिते गोविंद विलास नामग्रथे श्री रामचरित्र कथनम द्वितीयो विलासः २।

अथ श्रीकृष्ण चरित्र

॥ दोहा ॥

हरि विलास लघुमति कहा कहो चरित यदुनाह।
सागर अगम पपीलका कैसे पावै थाह।

अंत—इति विनय

अथ फल अस्तुति सोरठा श्री गोविंद विलास।
ग्रथ गजल के छंद में हरिविलास हरिदास।

हरिजन रसिकन हित रच्यो—राजपर्ज—

ससार सार एकै घनश्याम गानहै।
पौरान वेद आगम कीन्हो प्रधान है।

:o: :o: :o:

जो भूल होय मेरी जुत छद वरन मे कवि भक्त सोधि लीजै जान्यो अजान है ।
यह हरि बिलास भाष्यो द्विज साधु की कृपा श्री कृष्ण नाम निश्चय भव सिंधु जानहै ।

राग जयजयवती

अृष्टि हेत वशिष्ट प्रगटी इष्ट मुनि गण गोमती
नीर विमल अदोष पुनि फल चारि दायक सोभिनी । १
कलष ध्वस विध्वसिनी जिमि जूथ मृग गण केशरी
मध्य देश विहार ज्यो मदाकिनी अमरावती । २
तासु तट विख्यात जग रमनीक लछमन को पुरी
रूपचद निवास जामें रामकुल रामेगती । ३
तासु सुत यह ग्रथ विरच्यो नाम ताको हरिविलास ।
गुरु कृपा हरि कीर्ति शुभ गाई कछू जैसी मती । ४
राम गुण निधि रोहिणीपति वर्ष मगलदासदा
मास सित आषाढ अज दिनवार भृगु सुषदा अती । ५

दोहा

चौविशमोदश विदित है दशमो जानो दोय ।
द्वैको एकै जानिये हरिविलास भजु सोय । १

इति श्री हरिविलास विरचित श्री गोविंद विलास नाम प्रथमम्मोपदेश वा विनय कथिनंनाम पचमो विलास. ५ सपूर्ण शुभ दसाख्या ४६४ ॥

विषय—अवतारों के वर्णन । राम तथा कृष्ण चरित्र का वर्णन विशद रूप से किया गया है ।

रचनाकाल

३ ३ ६ १
राम गुण निधि रोहिणीपति वर्ष मगलदासदा ।
माससित आषाढ अज दिनवार भृगु सुषदा अती ।

सं० ४४२ शकुन ज्योतिष (?), रचयिता—हसन, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६॥। × ५ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—११२, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० चंद्रिकाप्रसाद जी उपाध्याय, ग्राम—पचपट्टी, डाक०—जगेसरगज, जिला—प्रतापगढ ।

आदि—

. . . ज । तादिन रवीवार मोज ।
ताही दिन की तिथि विचार । वह यह तोषा कर निरधार ।
वार अधिकता मधे लीजे । एक ठोर सव लेषा कीजै ।
आठ आठ ईनसो परहरो । बाकी रहै सो मन मे धरौ ।
पहिलै पूरव दीजे ऐक । दूजा ईसान कोन विसेष ।
तीजा उतर देहु सुजान । चवथा वाय कोन निदान ।
पचम पछिम सुन हो लोई । यह विधि अष्ट दिसा कु जोई ।
यह गनना जो होवै पूरि । तिहि दिस सवको राषा दूरि ।
कर चोरी तसकर तहाँ आवै । धरो घोर तु हसन बतावै ।१७।
जो कोई मन मे चीते वार । ताकू कह दीजे यह निरधार ।
पाछे कहै उन चितनहार । रवीवार सु गन तेहि वार ।
तामह पाच जो और मिलावै । सात सात परहर मन भावै ।
बाकी रहै सो पूछे ताकू । सोई वार उन चितन होवै ।१८।

ग्रंत—

सुनौ हो जगत ग्ररु भेव बताऊं । ग्राप विराना बालक जाऊ ।
भयौ पुरुष सें कैं न रहै ग्रौर । ताके बताऊ ठिकाने ठौर ।
मृग नछत्र जो दिन होई । बहु बालक जो रनतै होई ।

उन कुकर्म पलका पर कियौ

सनमैं वारस तिथ बखानैं । चित्रा नछत्र जो दिन ग्रानैं ।
मारग उन किया छिनाला । बीज ग्रौर कौले उन डाला ।
मंगल सप्तमी तीथ दिषावें । नछत्र धनिष्ठा ता दिन ग्रावें ।
कियौ छिनाला भूम मझार । पलका छांड धरती निरधार ।
जा दिन गर्भनी जावें पूता । ग्रपनो नहीं विरानो सूता ।
यामों धोको जिनकर चिन्है । वारौ लेषा हसन कहि दीन्ह ।३५
ग्रपुर कोई पूछन ग्रावें । लेषा कर उन देव बतावे ।
जेही समय जो पूछें चौज । तेही समय को लग्न वीषोज ।
केतक गयो रहौ है केत । लछन ताको कहू जो मोता ।
याकी लग्न रहै जो लीजें । ताकी मनमें तिगुनी कीजें ।
उन तिगुनी को मन मे लैहौ । तेतो ग्राधु रहा उनकौ कैहो ।३६

श्री माघ सुदी ६ सवत् १८६० ।।

विषय—ज्योतिष विषय वर्णन ।

सख्या ४४३क. चौरासी पद, रचयिता—हितहरिवश जी, निवासस्थान—वृंदावन, ज—देशी, पत्र—५७, आकार—७$\frac{6}{10}$ × ५$\frac{6}{10}$ इच, परिमाण (ग्रनुष्टुप)—५१३, , रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य पुस्तकालय, मौरावाँ, ा—उन्नाव ।

ग्रादि—श्री राधावल्लभो जयति ।। श्री हित हरिवश चन्द्रोजयति ।।

।। राग विभास ।।

जोई जोई प्यारो करै सोइ मोहि ग्रावें
भावै मोहि जोई सोई सोई करै प्यारे ।
मोको तो भावती ठौर प्यारे के नैनन मैं
प्यारो भयो चा......मेरे नैनन के तारे ।
मेरो तो तनमन प्राण प्राणहूते प्रीतम प्रिय
ग्रपनै कोटिक प्रान प्रीतम मोसो हारे ।
जै श्री हित हरिवश हश हंशनी शो वलगौर
कहो कौन करै जल तरगनि न्यारे ।। १ ।।
प्यारे बोली भामिनी ग्राज नीकी जामिनी ।
भेटि नवीन मेघ सो दामिनी ।।
मोहन रसिकराइ री माई तासो जो मान करै ऐसी कौन कामिनी ।
जै श्री हित हरिवंस श्रवन सुनत प्यारी राधिका रवन सो मिली गजगामिनी ।। २ ।।

ग्रंत— राग केदारो

ाव देखियत है प्यारो रंग भरी ।
न दुरति चोरी व्रषभान की किशोरी भिथिल कटि की डोरी नद के लालन सो सुरत लरी ।
ान की लर टूटी चिकुर चंद्रिका छूटी रहसि रसिक लूटी गडन पीक परी ।
ने ग्रालस वस ग्रधर बिंवन रस पुलकि प्रेम परस जै श्रीहित हरिवंश री राजति खरी ।।८४।।

।। इति श्री चोरासी पद संपूर्णम् ।।

ग्रथ फल स्तुति लिख्यते ।। छप्पै ।।

:o: :o: :o: :o:

॥ अथ राग प्रमाण कवित्त ॥

छपद विभास माझ सात है बिलावल है
टोरी मैं चतुर आसावरी मैं द्वै बनै ।
सप्त है धनासिरी मैं जुगल बसंत केलि
देव गंधार पंच दोउ सुर सों सनै ।
सारग मै षोडस है चारि है मलार एक गोड मैं
सुहायो नव गौरी राग सो सनै ।
षट कल्यान निधि कान्हरो केदारो वेद बानी
हित जू की सुनि चोवह राग मैं गनो ॥

इति राग प्रभाण समाप्तम्

विषय—श्रीकृष्ण भक्ति और राधा कृष्ण केलि रहस्य वर्णन ।

संख्या ४४३ख. बानी (फुटकर पद कवित्त आदि रचनाएँ), रचयिता—हितहरिवश जी, (स्थान—वृंदावन), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६$\frac{9}{10}$ × ७$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—१०८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत चंद्रभान जी विद्यार्थी एम० ए०, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—श्री हित हरिवंश चंद्रोजयति अथ श्री जी की बानी लिख्यते ॥

राग विलावल

बुरति रंग भरो देषियति है री राधे तेरहसि रमी मोहन सौं बरैनि ।
गति अति सिथिल प्रगट पलटे पट गौर अंग पर राजत ऐन ।
अलज कपोल ललित टकत लट भृकुटी कुटिल ज्यौ धनुष धृत मेन ॥
सुंवरि रहि वकहि वक्षचुकी कत कनक कलस कुच विच नख वेन ।
अधर विंव दल मलित आरस जुत अरु आनद के सूचत सषि नैंन ।
जं श्री हित हरिवश बुरति नहि नागरि नागर मधुप मथित सुषसैंन ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

रागमलार

भीजत अटके है वातन दोउ जन ।
नव निकुज के द्वारैं ठाढे अवर लपटे है गातन ॥
ललिता ललित रूप रस लोभी वूंद बचावत पातन ।
जं श्री हित हरिवश परस्पर वपति मिलवत रति रस घातन ॥१४॥

इति श्री स्फुट पद पूर्ण ॥ अथ कवित्त कुडलिया अरिल्ल छपै ॥

॥ कवित्त ॥

द्वावस चव कृतस्थल मगल वुद्ध विरुद्ध सुर गुर वंक ।
जद्दपि वसम भवंन भृगु सुत मद सुकेत जनम के अंक ।
अष्टमराहु चतुर्थ विनमनि तौ हरिवश करत्त न संक ।
जौ पै कृष्ण चरन अर्पित तन मन तौ करिहै कहा नवग्रह रक ॥ १ ॥

अत—

अरिल्ल

मानुष कौ तन पाइ भजौ व्रजनाथ कौं ।
दर्वी लैकें मूढ जरावत हाथ कौं ।
हित हरिवश प्रपच विषै रस मोह के ।
हरिहां विन कचन क्यौं चलहि पचीसा लोहके ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

सबसो हित निहि काम मत अरु वृंदावन धाम ।
श्री राधा वल्लभ लाल को हियें ध्यान मुषनाम ॥१०॥

इति कवित्तादि पूर्ण ।। पद ले ।।२३।। पूर्ण ।। श्री ।। श्री पोथी श्री मेहंत चतुरदास राधावल्लभी तिनके शिष्य राधा चरनदास जी तिनके शिस्य गुलाबदास जी जानें पोथी लिखाई श्री गोस्वामी हरिवंशजी कृत पद्य चौरासी जी की पोथी लिखाई नंदग्राम कोटा मध्ये लेखक राधाकृष्ण ने ।। श्री राधा ।।

विषय—भक्ति विषय का वर्णन ।

संख्या ४४४. चित्रकूट विलास, रचयिता—हृदयराम, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६।। × ४। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—१३६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० भिन्ना मिश्र, ग्राम व डाक०—वेलहर, जिला—बस्ती ।

आदि—श्री मते रामानुजाय नमः

प्रथम गुरुन के चरन रज वंदो बारहि वार ।
जासुमिरे प्रभु पावही उतरे नर भव पार ।
चरन सरन गुरुदेव के जव लगि आये नाहि ।
नवन विपिन निज माधुरी क्यौ परसे मनमाहि । २
चित्रकूट गुन कहनको कीनो मन उछाह ।
जनक नदनी कृपा विनु कैसे होय निवाहु ।
येक आस विस्वास गहि करन कथा मति मोर ।
चित्रकूट सुखधाम को काहु न पायो वोर ।
महा अगम दुर्गम कठिन चित्रकूट निज भानु ।
जनक नदनी कृपा विनु कहि घोपावे कोन ।
सवप्रकार गुन हीन होयेह सोच मनमोर ।
श्री जानकी कृपते जो कछु होय सो होय ।
सोऊ कृपा कछु सुगम नहिं दुर्गम दुर्घट सोय ।
श्री जानुकी कृपाते जो कछु होय सो होय ।
पद पंकज गुरुदेव के अपने उरमे आनु ।
कृपाकरे जव जानुकी यह जिय निहचै जानु ।
रामचरन रज जानिके मनमें भयो हुलास ।
तेई उरमें आनिहे चित्रकूट सुविलास ।
जनक नदनी जानुकी करुना निधि सुकुमारि ।
वरनो रघुवर विपिन को तिनके चरन विचारि ।

अंत—चित्रकूट वैकुंठ को जो लो रघुकुल भान ।
जाके गुन गावत सदा पार ब्रह्म भगवान ।
फटक सिला श्री कामदा रामसेज विश्राम ।
भरतकूप कहिवो लही डोलहि अपने काम ।
रसना तू हरनाम रट मुख सो मूढ़ न भाष ।
विपिन फिरे उनमत होय 'हृदयराम' को राष ।
ग्रह वन विपिन सुहावनो सोहत परम अनूप ।
लतारहीत हलूम के विधाचल गिरि भूप ।
गुप्त आन गोदावरी प्रगट भई तेहि ठोर ।
मुनिजन तह मज्जन करे सुरतनु धरि धरि ओर ।
प्रगट भई तेहि ठोरते गुप्त गोदावरी गग ।
मानो गिरि तनु धारिके वेठो आनि अनग ।
गंगा मजन जे करे ते वड़ भागी लोग ।
वनके वासीसंत जनहैं सव.........:

—अपूर्ण

विषय—चित्रकूट वर्णन ।

संख्या ४४५. महाभारत वैराट पर्व, रचयिता—हेमनाथ (?), कागज—देशी, पत्र—५२, आकार—९$\frac{3}{8}$ × ५$\frac{3}{8}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—१०२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७५ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। लीषीते महाभारत वैराठ पर्व भाषा ।।

।। दोहा ।।

गणपति गौरी महेस अज रमा समेत कवींद ।
गुर सुर मुनिवर भुमिसुर कवी सबके पदवंद ।

।। जनमेजे उवाच ।।

।। चौपाइ ।।

मुनिहिं प्रसंसि जोरि जुग पानी । कहत त्रिपति अदु मंजुल वानी ।।
नाथ कृपा मम ससं गएऊ । सुनि सुभ सुजस सुषद मन भएऊ ।।
अब कृपाल करि कृपा घनेरी । सुनिओ न विनति यक मोरी ।।
पडव सुत जव कानन गयऊ । काह चरित्र करत्र सो भयऊ ।।
कहिय मोहि सो कथा रसाला । करुनाकर मुनि दीन दयाला ।।
जानिदास निज मोहि मुनि नाथा । कही सुकथा प्रभु करिय सनाथा ।।
सुनि त्रिप वचन विनीत सोहाया । वैसमपाल मुनिवर मन भाया ।।
कहि मुनीस मृदु मजुल वैना । धर्मसु सतु नीति सुष ऐना ।
रत प्रभु सुजस सो तव अनुरागा । सकहि सराहि न अहिपति भागा ।।
सावधान सुनु ससि कुल नायक । प्रभु जस विसद चरित अब लायक ।।

।। दोहा ।।

धर्म सुवन जा दिनहि ते गयो वनहि जुत वधु ।
सोइ सुभ कथा प्रकास करि सुनु त्रिप श्रवन प्रबध ।।

अंत— ।। दोहा ।।

'हेमनाथ' जदुनाथ जेहि रहत जो सदा सहाइ ।
सकल मोद आनद तेहि सपनेहु असुभ न ताइ ।।
पाइ राजु निज पडु सुत श्री जदुवीर सहाई ।
पालत प्रजा सो वेद विधि जिमि पुरुव हरषाई ।।
कहि वैराट सो पर्वकी कथा सकल समझाइ ।
परत श्रवन अघ हरत है पढत सुषद अधिकाइ ।

इति श्री महाभारते वैराट पर्व समाप्त ।। शुभ मस्तु ।। जो ।। यावत्पुस्तक दृष्ट्वा तावसं लिषित मया ।। असुद्ध भव सुद्ध वा मम दोष न दीयते एहि पुस्तक लिषित्वा सुभ सोई ।। पडित नाम बुजे सुभ जोई ।। लिषायत वीरेस्वर सिपाइ सो सुभ मस्तु ।। समत सं अठारह पचिहेतरी ।। १८७५ ।। पोश शुक्ल त्रितिया वुधवासरे ।। सिधि करो सिधेस्वरी जगदवा गुन षानि ।। मातु करो मोपर कृपा वोर आपनी जानि ।। श्री कृष्ण पुडरीकाक्ष वृदावन विलासीनं ।। ।। राधा कृष्ण

विषय—महाभारत विराट पर्व की कथा का वर्णन ।

तृतीय परिशिष्ट

अज्ञातनामा रचयिताओं की कृतियों के उद्धरण

तृतीय परिशिष्ट

अज्ञातनामा रचयिताओं की कृतियों के उद्धरण

संख्या ४४६. अंबुसागर, कागज—देशी, पत्र—७०, आकार—९ × ७½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—९८०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री महंत रामशरनदास जी, कबीरपंथी मठ ऊँचगाँव, पो०—बाजारशुक्ल, जिला—सुलतानपुर।

आदि—सतनाम, सत सुकृत आद अवली अज अचिंत पुर्स मुनींद्र करुनामै कबीर सुत जोग संतायना धनी धर्मदास मुक्तमनि नाम चूरामनि नाम सुदरसन नाम कुलपति नाम प्रमोध गुरबाला पीर कवॅलनाम अमोलनाम सुंत सनेही साहेब की दया बस ब्यालीस की बया सौं लिषते श्री गीरंथ अंबुसागरा धर्मदासौ वचन ॥

सोरठा

धर्मदास सिरनावो विने कीन्ह कर जोकै।
तुम वहीयें जीव आये करहु अनुग्रह दास कौ॥
:o: :o: :o:

छंद

आद ग्रीम्ह आतम्ह अकल अभेद अवरन आगरं।
सर्व व्यापीक अर्ज वीरज आनंद धामी सागरं।
तुम चरन रवि परकास अबीचल सकल काल कर्म हारो।
अधम जीव अघोर षल जे वीनाश्रम भौ जील तरो।

सोरठा

हंसराज कहु कंथ जीव घारेउ पंथ जीमी।
अंबू सागर ग्रंथ सो बरनन ब्रह्म कीजिये।

सतगुरु वचन

धर्मदास पुर्स गुण गाऊ। जुग जुग लेषा नाम सुनाऊँ॥
तुम बूझौ जीवन के काजा। सत्ते सत्ते भाषंव साजा॥

अंत— **॥ छंद ॥**

करूनारयण चिते देषेदय अघ बाँनी बोऊ जाहु।
ग्यानी कीन्ह आयसु जीव बंधन षोलीऊं।
आय धर्महीं मारंत ता षिन कौलव हमसौ कीन्हीव।
वसंहायं पाँन पावत ताहे हम नही लीन्हा षाय॥

सोरठा

कौल कीन्हा...................... ।

—अपूर्ण

विषय—कबीर और धर्मदास के प्रश्नोत्तर के रूप में ब्रह्मज्ञान का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण है। कुल ७० पत्र उपलब्ध है। पश्चात् का अंश नहीं है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का नाम भी अविदित है।

संख्या ४४७. अपभ्रंश की रचना (काव्य), कागज—देशी, पत्र—१, आकार—१०$\frac{3}{8}$ × ४$\frac{7}{8}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—२१, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—. . . . .

तणत्थि राग्र उलं तणत्थि घरम्र देउ उलपि तणत्थि ।। जत्थ म्र म्रारण कुविदा दो सिरिण रवलारण दोसती ।।

अर्थ—तन्नास्ति राजकुल तन्नास्ति गृह तद्देव कुलमपि नास्ति यत्र अकारण कुपिता द्वौ वा त्रयो खलान दृश्यते ।। सर्वत्र खलान तिष्टति..! ।।

दीसइ विविह चरिम्र जाणिज्जइ सुम्रण दुज्जण विसेसो म्रघाण चक लिज्जइ हिडज्जतेण पुहवीए ।।

अर्थ—दृश्यते विविध चरित ज्ञायते सुजन दुर्जन विशेष. आत्मान च कलये चतुरं अचतुरं भाग्यवत अभाग्यत्वेन हिडिगमने दृश्यते गम्यते पथिवी वीभ्रमणे एतादृश ज्ञात भवत्यर्थः ।।

भमरा ज.णइ रसांवरस जो चुवइ वहु फुल्ल जाइ ।।
घुण कि जाणइ वप्पुरा सुखो लाकरी खाइ ।।

अर्थ—भ्रम रा जानति रस विरसौ ये चुवति पुष्प जातानि समूहानि घुणः कीट विशेषः वप्पुरा निकृष्ट देशी ।। घुणेन निकृष्टेन कि ज्ञायते सुष्क काष्ट भुक्ता लाकरि काष्ट देशी ।। अप्प त्थावे भणिग्र ग्रसरिस मयोसु गाइग्र गीग्र ।। मामा भणिग्र सुरए तिण्णिवि लोएण ग्रग्घंति ।।

अर्थ—अप्रस्तावे भणित असदृश मार्गेषु गान गीत । मा मा निषेध वचन सुरते त्रीनपि लोकान अर्घ्यंति । न पूजा कुर्वंति न प्रशस्तानि त्यर्थ. ।।

मेहस्स जल चंदनस्स सीग्रल दिनकरस्स करप्पस ।। सप्पुरिसाण वित्तं जीवनं सम्रल लोग्रस्स ।।

अर्थ—मेघस्य जल चंद्रस्य सीतल दिनकरस्य करस्पर्श. सत्पुरुषाण वितं जीवन सकल लोकस्य

हरिणा नाणति गुणावसि उण गीग्र माहप्य ।। ताणविग्र णत्थि धण जीग्र वाहस्स ग्रपेण्इ ।।

अर्थ—हरिणा जानति गुणान् वने उपविश्य गीत माहात्म्य तेषामिव नास्ति धन जीव वाहस्यार्पयति वाहो घाटित व्याध. गीत लोभेन पशवोपि प्राणान् त्यजनराणा का वार्तोतभावतः ।।

वाहस्स गोयमाणे हरिणा ग्रग च जीवि ग्रदत ।। धणो कुरग णाहो वलि कर्णपराजितौ वलिकर्णाभ्यां शरीर जीव वान दत ।।

—पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—सूक्तियों का संग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक का केवल एक ही पत्र उपलब्ध है । इसको देखने से पता चलता है कि या तो यह पूर्ण रचना है या कहीं से नकल की हुई पूर्ण प्रति है । इसमें जो कुछ लिखा हुआ है वह पूरा है, खंडित नहीं । केवल इतनी कमी है कि इसमें आरंभ करने की विज्ञप्ति और अंत में पुष्पिका नहीं दी है ।

संख्या ४४८. अमरकोश, कागज—देशी पत्र—५ आकार—६। × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—७५, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० सुधाकर जी, ग्राम—मदनपुर, डाक०—उसका बाजार, जिला—बस्ती ।

आदि— **मधु स्वब्द**

मधूवसंतम चैत्र जल मधु मदिरा मकरंद ।
मधु नम मधुपय सुधा मधु सूदन गोविंद ।

काली स्वब्द

कलि कलेस कलि सूरमाकलि निषंग संग्राम ।
कलि कलियुग में वनरहिं केवल केसव नाम । ७

आत्मा स्वब्द

मनः वुद्धि चित्त सुभाव तनुधर्म जीव अहकार ।
कृष्णन कहिय आत्मा पारमत्मा अधार । ८

धनय स्वब्द

अग्नि धनंजय कहत कवि पवन धनजये आही ।
अज्जुन वहुरि धनजय कृष्ण सारथी जाहि । ६

अज्जुन स्वब्द

अर्जुन द्रुम अर्जुन धवल अर्जुन कंचं होइ ।
सहस्रवाहु अर्जुन कहेउ अर्जुन पाडव सोइ ।१०

पत्र स्वब्द

पत्र पर्णवो पत्र रथ वाहन पत्र सुवित्त ।
पत्र पंथ विधि नहि वियउ उड़ि उडि मिलत सो मित्र ।११

अंत—

वाण सव्द

वाण कहत है वलितनै विसिख आसि पुनि वाण ।
वान कहत न स्वर्ग को श्री हरि पद निर्वान ।४३

वरुण सव्द

वरुण कहत 'कवि' नोर को वरुणास्य वरको नाम ।
वरुण कहत रेज वनइ तव कैसे धाय साम ।४४

गोत्र सव्द

गोत्र नाम को कहत 'कवि' गोत्र सयस सूँडि यत्र ।
गोत्रवंत सोय धन्य नर गोविद गोरिण गुणिवत ।४५

तणु सव्द

तनू सरीर विस्तार तनु सुक्ष्म तण तात ।
तनु विररो कोऊ जगत मे जावै हरि रसवात ।४६

वाल सव्द

वाल सरोरुह वाल शिशु मुक कहावै वात ।
वाल सोई है जगत मे जाणे हरि रसवात ।४७

जाल शव्द

जाल गुरोस्वा जाल गगन जाल दम अरुमंद ।

—अपूर्ण

विषय—शब्दकोश ।

संख्या ४४९. आदिपुराण (जैन), कागज—देशी, पत्र—५३३, आकार—१५$\frac{3}{4}$ × ८$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर, अहियागंज, टाटपट्टी मुहल्ला, लखनऊ ।

आदि— . . . . .यं कमलनि के वन कूं प्रफुल्लित करै ।। ७ ।। हे नाथ जो अज्ञान रूप अतरंग का अंधकार ।। चंद्रमा की किरणनि करि तथा सूर्य की किरणनि करि दूरि न होइ ।। सो तुम वचन रूपकिरणनि करि लीला मात्र मे दूरि करो हौ ।। ८ ।।

:o: :o: :o:

अर अति सावधान चारण मुनि एकाग्र चित्त होय चितै रहै ।। अर विद्याधर आसंका सहित देषि रहेजु यह कहा है ।। ऐसा दैदीप्यमान जल का प्रवाह ।। सुमेर के सिर पर वह्या ।।२१।।

इती श्री भगवज्जिनसेनाचार्य विरचिते त्रिषष्टि लक्षण महापुराण के संग्रह विषै भगवान का जन्माभिषेक वर्णन नाम [illegible] पर्व पूर्ण भया ।।१३।।

अंत—सो महा देदीप्यमान तीन लोक का सिरोमणि सुषनि की विधि अविनस्वर पद विषें तिष्या ।।६७।। अर वृषभसेन गणधर आदि मुनिनि मे मुक्ष सरव जीवनि. . . . . .

—अपूर्ण

विषय—जैन धर्म के आदिपुराण का हिंदी पद्यानुवाद।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ आदि अंत से खंडित है। समस्त ग्रंथ का अनुवाद ब्रजभाषा गद्य मे है।

ग्रंथ का मूल संस्कृत मे है, जिसका रचयिता जिनसेनाचार्य है।

संख्या ४५०. ऊषा चरित्र, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—६ × ४$\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—३०८, खंडित रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—

:o: :o: :o:

. . . . .भस्म होइ क्षय चाहै सोई।
बहुगन रिक्ष जाल दरबारा। सोहै सुभट सैन परिवारा।।
एक दिवस राजा भ्रम मान्यौ। टूटी धुजा अग थहरान्यौ।।
कूष्म सचिव राज सब बोले। राज मंत्रना सिवकर डोले।।
नृप मद भरो महा सठ रेका। सिव पर मागो दुर्मति. . . ।।
वचन वान की आन न मानो। ताको ततु मंत्र अज्ञानी।।
देव अमर गण अरु गधर्व सब। किंनर जछ मनुज जेते अब।।
करिहै कौनु नृपति तोसौ रनु। हरिहर चढै आइ तो सौ अनु।।
तब जीतै तोको नृप कोई। सुकृत सराहु आपना होई।।

।। दोहा ।।

टरै वचन नहि देव को सुनि तिन कहो निदान।
धुजा टूटि रनु होहिगो यह नृप कहो प्रमान।।
वानासुर की पुरी सुहाई। तापर उडते गीत हकुलाई।।
अपसगुननि लषि राजा कहै। मंत्री पुरवासी दुष लहै।।
कछु भयभीत राज यह होई। अजय आउ की देषत सोई।।
परम काज यह राज विचारौ। देव वचन को साजु सम्हारौ।।

।। दोहा ।।

द्वापर जुग की है कथा गावत सुक अरु व्यास।
कृष्ण नाम करुनाकर सो भावा भई प्रगास।।

अंत—

हरे कुमर अनुरुध कुमारा। तिनकी षवरि कहू ना पावा।।
रामकुमरि महलनु दुषु पावै। भरै नैन मन मैं विलषावैं।।
कुमर विना अति ही आधीन। जौ जल विनु तलफत है मीना।।
देस देस कौ दूत पठाए। चहू दिसि फिरे षवरि नहि लाए।।

।। दोहा ।।

नारद रिषि हसि कै कहो अटकै है कहुं जाई।
जैसी तुम पाछै करी कुमर करी सति भाई।।
जब यह वात सुनी जदुराई। तब रिषि कौ मंदिर लै जाई।।
उठीं रुकिमिनी चरन पषारे। माथे तिलक करै उजियारे।।
तबही पूछहि नारद स्वामी। जानत सकल तिहूपुर गामी।।
नारद रिषि हसि कहै तुरता। श्रोणितपुर वालकु भगवता।।

बानासुर की राजकुमारी । ऊषा नाम सो प्रान पियारी ॥
सोवत कुमरु सेज सुखरैनी । निरखी एक कुमर मगनैनी ॥
अति सुंदरी वहुत वह वाला । सपने देषि थके नंदलाला ॥
कुमरि प्रीति और घरी बढाई । निरखत कुमरु व्याकुल ह्वै जाई ॥

॥ दोहा ॥

सुपनै मै सुषु उपजो वाढो प्रेम अपार ।
प्रात भयो चकत भए कुमरु रहे विकराल ॥
चित्रलेषा सो तिहि की वासी । नृषि विकल......... ॥

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—ऊषा अनिरुद्ध कथा वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—आदि अत तथा बीच के बहुत से पत्र नष्ट हो गए है । खडित होने के कारण रचनाकाल, लिपिकाल तथा रचयिता का कोई पता नही चलता ।

सख्या ४५१. कबीर नानक गोष्टी, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—८$\frac{३}{१०}$ × ६$\frac{६}{१०}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—२२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८३४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री महत बाबा रामशरन दास जी, कबीर मठ, ऊँचगाँव, पोस्ट—बाजार शुक्ल, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—सत्यनाम सत गुर कबीर धर्मदास की दया ॥ लिषितं कबीर नानिक की गोष्टी ॥ सतगुर कबीर उवाच ॥

सुनहु दत्त तुम सब्द संदेसा । नव अवतार निरंजन भेसा ॥
आदि सोसांइ जौ निरवारा । काहे को होत परपंच पसारा ॥
रावन हरत सीह कत नारी । राम लरत नहीं सैन सुधारी ॥
वधेउ दइत्र सव सैन सकेला । तब नहि होते जमधर बेला ॥
जौ होते आपं मुक्ति सनेहा । गर्भवास नहि धरतें देहा ॥
गर्भ वास मह जो यिव आवा । जम के द्वार सबहि सिरनावा ॥

अंत— **समौ**

नानिक दावा मेटि कै सरन गहहु चित जाणि ।
अब तुम्र हंस उवारेऊं कवहिन होषै हांनि ॥

ऐती कबीर नानिक की गोष्टि संपूरन सुभमस्तु सवत् १८३४ ॥ समय नाम चैत्र कृष्ण पक्षे तिथ्यौ चौवसि वार एतवार मोकाम तेजवापुर मे ॥ दसषत षरगदास वैरागी के ॥ सकल संतन्ह को दास सत्य सही प्रमान ॥

विषय—नानक और कबीर का ब्रह्मज्ञान सबधी वार्तालाप ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल स० १८३४ वि० है । रचयिता का नाम अविदित है । जान पडता है कि किसी कबीरपथी की यह बहुत पीछे की रचना है । प्रस्तुत रचना के साथ निम्नलिखित ग्रथ एक ही हस्तलेख मे है—

१. विवेक सागर ।
२ कुर्मावली ।
३ जोग ध्यान ।

संख्या ४५२. गीतगोविद टीका, कागज—आधुनिक, पत्र—६६, आकार—७$\frac{८}{१०}$ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१० वि०, प्राप्तिस्थान—ठा० महादेव सिह जी, ग्राम—रजनपुर (गगा सिह का पुरवा), पो०—तिलोई, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री राधामाधवयोर्जयतिः ॥ अथ गीतगोविंद टीका प्रारंभ्यते ॥

॥ श्लोक ॥

मेघैर्मेदुरमंबरं वन भुवः स्यामस्तमाल द्रुमैर्नक्तंभीरूरय त्वमे वदिति मं राधे गृहं प्रापय ।
इत्थं नद निदेस तश्चलितयो प्रत्यध्व कुंजद्रुम राधा माधवयोर्जयति जमुनाकूले रहः केलय ॥ १ ॥

॥ टीका ॥

ग्रथ के आदि श्री जयदेव जी श्री कृष्ण जी कौ स्मरन करि मगल करत है । श्री राधा माधव जी की यकात केलि अधिक जमुना कै तति सोभित है ॥ सु कैसे है राधा माधव जो इहि भाति मार्ग विषै कुज कुज प्रति चले है ॥ श्री नद जी की अज्ञा तै ॥ सु कैसी है नद जी की अज्ञा ॥ श्री नद जी कहत भये अहो राधा आकास मेघनि करि छायो है ॥ अरू वन कीज भूमि ते तमाल वृक्षनिकरि स्याम भइ है ॥ अरु कृष्ण रात्रि विषै काप रहै डरपत है ॥ ताते तुमही इनही गृह लै जाहु ऐसी भाति श्री नद जी राधा जी स्यौ कहत भये ॥ २ ॥

अंत—इह राम लक्ष्मण कौशिकानुज्ञया सुरसरित्कृत नमस्कारे ।
भणित मति माधवे धीर जयदेव कवि सारयति भव जलधि पारे ॥ ८ ॥

इहि भांति राम अरू लक्ष्मण जु कौसिक जु है विश्वामित्र तिनकी अज्ञा पाइ करि सुर सरित जु है गगा जी तिनको नमस्कार करत भये अरु परम धीरज है जयदेव कवि ते कहत है अहो गंगा जू तुम भव जलधि जु है संसार समुद्र ताके पार उतारत हो ॥ ८ ॥

इति श्री गीत गोविद महाकाव्ये जयदेव कृते श्री गगाष्टपदी पचविशति सपूर्णम ॥२५॥ शुभ भूयात् सवत १६१० ज्यष्ट कृष्ण तीथौ षष्टी वार मनि पुस्तक सपूर्ण पडित जनसो विनती मोरी घट वढ अछर लेवा जोरी जो देषा सो लिषा मम दोस न दयते ॥

विषय—गीतगोविंद की टीका ।

संख्या ४५३. गीता (टीका), कागज—देशी, पत्र—१७०, आकार—४५⁄₁₀ × ४५⁄₁₀ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, खंडित, रूप—प्राचीन (जीर्ण), गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२३ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—   ॥ ४ ॥ अर्जुनोवाच ॥

अर्जन श्री कृष्ण भगवान को प्रष्ण करे है ॥ कि हे श्रीकृष्ण भगवान जी करमों को त्यागु सन्यासु कहो हो ॥ अरु वहुडि कम जो कहो हो ॥ सु एक बाति मुझे निश्चे करि कहो जिसते मेरी कल्याण होहि ॥

श्री भगवानो वाच ॥

अर्जन के प्रसन का उतरु श्री भगवान जी कहे है ॥ कि हे अर्जन जोगु अरु कर्मु जोगु ए दोनो कल्याण के दाते है ॥ इन दोनो मे जो कर्म त्यागणे जु है सन्यासु तिसते कर्म करणे कर्म जोगु भला है ॥ सुनिति सन्यासी है ॥ कैसा जु समनो बातोहु के हर्ष सोताते हंतु (रहित) है ॥ ऐसा जु है निरदुदु सु है ॥ हेम्हा वाहो अर्जन मु सुषेन ही ससारि के बधहुते मुकति होइ ॥ अवि अर्जन अऊरु सुण साषि को अरु जोग को भिन भिन बालक कहते है ॥ पडित नाही कहते ॥ जोग कहिए ॥ मेरे सुमरण साथि जुडि रहणा ॥ अरु साषि कहिए मेरी ग्यानि गोष्टि कथा वार्ता करणी ॥ सो इह दोनो एक ही है । अरु इन दोनो का फलु भी एक ही है ॥ जिस मेरे प्रमपद असथानि को साषिवाला पावे है ॥ तिसी असथान को जोगीजाइ प्रापति होए है ॥

अंत—अरु वार वार भी प्रम हर्ष भी होता है हे राजा जी अवि मेरी निमचै करि बाति सुण ॥ तिस उड जुगेस्वरहुके ईस्वर श्री कृष्ण भगवान श्री वाजिमान है अरु जिस ओडि गाढीव धनष का धारण हारा जु पार्थु अर्जुन है सु तिसी ओडि श्री लक्ष्मी है ॥ मेरी सति विषे इह बानि निसचै करि है । इहु बाति तूं भी निमचै करु अपणे मनिविषे ॥ इहु बाति जाणि छठि ॥ यथा बाति जिनके माथे प्र श्रीकृष्ण भगवान परंब्रह्म बिराजमान है ॥ ऐसे जु वडभागी पांढव है ॥ तिनकी जैइ होइगी ॥ पाढुव जीतहिगे ॥ अरु तेरे पुत्र अधर्म होते हारहिगे ॥

इति श्री भागवत गीता सूपनपत्र सु ब्रह्मविद्यायां जोग सास्त्र श्री कृष्ण अर्जुन संवादे सर्व सासत्रि निरने ।। मुष प्रम जोगोनाम अष्टदसोध्याय ।।१८।। गीता सपूर्न होई ।। श्री ।। लिषितं ब्राह्मण मनिसारामदासेन शुभ ।। महते गोपालदास पठनार्थे शुभ सवत् १८२३ वर्षे शाके १६८८ मासोत्मासे चंद्रमासे शुक्लपक्षे तृतीग्रा बुधवासरे लिखी देश शिव स्थान स्थिति ।। शुभं ।। भवत ।। ।। कल्याणमस्तु ।।

विषय—गीता का गद्य मे अनुवाद है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खडित है । आदि और मध्य के कितने ही पत्रे नही है । प्रथम चार अध्याय तो है ही नही ।

टीका खडी बोली के गद्य मे है, इसलिए महत्वपूर्ण है । लिपिकाल की दृष्टि से यह गद्य स० १८२३ के पहले का है अत लल्लू जी लाल और सदल मिश्र की खडी बोली गद्य से यह प्राचीन है । खडी बोली के गद्य के इतिहास की दृष्टि से यह बहुत ही महत्व की रचना है ।

संख्या ४५४. गीतामाहात्म्य, कागज—देशी, पत्र—२३, आकार—$4\frac{3}{8} \times 4\frac{1}{8}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—१८१, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८२३ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री हरिः ।। ॐ न्म प्रमात्मने ।। अथ भगवत गीता क प्रथ्म अध्या का म्हात्म लिष्यते ।।

।। दोहडा ।।

बदो देव प्रणव सदा जा करि सब विस्तार ।
ब्रह्मा विष्णु महेस को सोहै बीज अपार ।। १ ।।
गुररचर सची गणपते बदो आनद पाइ ।
श्रीधर कृष्ण स्वरूप वर इहै बसे रिद आइ ।। २ ।।
कृष्ण अर्जन सवाद से भगवत गीता भाउ ।
ताहि म्हात्म सुनि सुमति उमगी कछु इक गाऊ ।। ३ ।।
सुन्यो म्हात्म ससकृति स्मुझ सक्यो नही मोहि ।
ताते भाषा करतु हो क्षिमो बुधीसर मोहि ।। ४ ।।

।। अथ म्हात्म ।। दोहरा ।।

श्री नारायण श्रीपते सिव पारवती जोगु ।
कहो म्हात्म सुधधि मथि भाषन भोगु ।। ५ ।।
जो या मनमुष श्रवन लै ताहि महाबल होइ ।
भवके बधन काटि के मुक्ति पराइन सोइ ।। ६ ।।

।। अथ नवम म्हात्म ।।

नरवदा के तीर नंगरी वाग्मती सुनाम ।
तहां माधो नाम ब्राह्मण रहतु था इकु धाम ।।
बहुतु दिवस कमाई धनु तहा जग्म लागा कर्न ।
देवता के निमत्यि बकरा आनि बाध्यो धर्न ।। १ ।।
मारत्ये बोल्या अजा सुनि विप्र मेरा बाति ।
अनित्य फलके काज काहे कट तुम्हारो गातु ।।
एहि वचन सुनि अजया के दिन करचो ताहि प्रणामु ।
पूछीयो तब कौनु हो तुम कहो अपुनो नाम ।। २ ।।

:o: :o: :o:

पंथी सुनत गाऊ दिसि हुआ । पूछता फिरचा कौनु इति मूआ ।।११।।
सुपचू मरचा था.. .. ..

—अपूर्ण

विषय—गीता का माहात्म्य वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—नवाँ अध्याय तक पूर्ण है। दशवाँ अध्याय अपूर्ण है। लिपिकाल सं० १८२३ इस आधार पर है कि प्रस्तुत रचना भगवतगीता की टीका के साथ एक हस्तलेख मे है, जिसका लिपिकाल यही है।

संख्या ४५५. गुरुमहिमा, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—६¾ × ५¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—२१२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री महंत बाबा रामशरणदास जी, कबीरपंथी मठ, ऊँचगाँव, पो०—बाजार शुक्ल, जिला—सुलतानपुर।

आदि—सातीनाम ॥ सती सुकीत ॥ आदी आवली ॥ आर्ज अर्चीत ॥ पुर्स मुनींद्र ॥ करुनामे कबीर ॥ सुंती जोग सताएनी ॥ धनी धर्मदास की दाय ॥ सो लीषते। ग्रंथ गुरमहीम

॥ चौपई ॥

धर्मदसो वचन

धर्मदास कं जोरे ठाढे। यक टक सुंती प्रेम चीत बाढे॥
करहु दया तुम निगुन स्वामी। वचन कहौ मोही आंतरजामी॥
गुर मुरती कैसे कै जानी। कैसे सतगुर सब्द समानी॥
कीमिगुर ध्यानबखान कीजै। करहु सुदीस्टी मोही कही दीजै॥
जा पाद जीव तरं भौसागर। सो कहीय हसन पती आगर॥
जो मारग सोषी गुरपद लागु। तजी धन धाम होय अनुरागु॥

अंत—

छंद

दस (?दरस) पाए निपाती (?नृपति) जीव सब रूप भौ प्रगासा हो।
आमो फल जब पाय हस दीप दीप बीलाना हो।
सुमन सेज्यो छत्रा सोहै बैठे हस समाज हो।
भाय हंषीत (? हर्षित) रावरानी कीन्ह लोक नेवास हो॥

॥ सोराठा ॥

ईमी हसन प्रासगा जुग बधे सो हस है।
लोक लजा तजी रग ते पहुचे आमरापुरी॥

ईती ग्रथा ॥ गुरा महीम ॥ सपुराण ॥ सुभमास्तु ॥ जो प्रतीदेषसो लीष माम दोस न दीयने बाचै सुनै तीनको बदाग ॥ साध सतासो बीनतो मोरी टुत आठरा बाचेहू जोरी ॥ मीती सब ॥ बदी परेव ॥ बारा सुक ॥ समत ॥ दासषन चोषेदास के ॥ लीष गुरा महीम ॥ राज मोहन को बोध ॥ बाचै सुनै तीनको सती कबीरा ॥ दाय करै ॥ सधमहता दाय करौ मो परा ॥ मै हौ सरान तुम्हारे ॥ जगनाथदसाव लीष ॥

विषय—गुरु महिमा वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकाल दिया नही। 'जग्य समाज' ग्रंथ के आधार पर, जो प्रस्तुत ग्रंथ के साथ एक ही गुटके मे है, संवत् १९३० है।

ग्रंथ धर्मदास और सतगुरु के प्रश्नोत्तर के रूप मे है। विदित होता है कि बहुत पीछे किसी कबीर पंथी की यह रचना है।

संख्या ४५६ गृहस्थ धर्म, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—१० × ४। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—१२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२५ वि०, लिपिकाल—सन् १२९१ साल, प्राप्तिस्थान—श्री दुर्गाप्रसाद जी कुर्मी, ग्राम—सेहरी, डाक०—इटवा, जिला—बस्ती।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ गृहस्त धर्म लिख्यते

। दोहा।

अविनाशी अद्वैत है व्यापक ब्रह्म अभेद।
गति वाकी अदभुत अहै जानत नाहीं वेद। १

सकल लोक व्यापक अहै पावत नाहीं कोइ ।
नाना जन यहि मार्ग में प्राण दियो है खोइ ।
शक्तिमान कर्ता अलख निराकार भगवान ।
परमेश्वर सरवग्य है सरै न तहं अनुमान ।
बुद्धि ज्ञान वानी दृष्टि तेहि लग पहुँचत नाहिं ।
सबतें न्यारा जानिए लखिए सब तेहि माहिं ।
:o: :o: :o:

गाँव में वर्तने के विषय में

पुरवासिन सो मीत करि मेल मिलाप बढाइ ।
व्याह आदि सब जज्ञ मे करिए जाइ सहाइ ।
कौनहुं वेला गाँव में सोरादिक जो होइ ।
तुरतहि तहवां पहुँचिए रहिए नाहीं सोइ ।
वेर न काहू सन करहु राखहु सब सन प्रीति ।
वर दु.ष का मूल है समुझि लेहु तुम मीत ।
अत—तकै पराई नारि जो झूठ गवाही देय ।
चोरी हिंसा जो करै छान नरक सो लेय । ८
पांच दिनाह्यौ वास है भूलि न कर विस्वास ।
नाम बढ़ावहु जगतमे केवल नाम कि आस ।
शिव आनन भुज गृह लिषो तामह चव मिलाय ।
सम्वत विक्रम जानिए पुस्तक दियो वनाय ।११
काव्य कोष जानौ नहीं नहीं कविन सो नेह ।
रहो चिन्ह यहि जगत में यहि लगि रचौ मैं येह ।१२
कवि लोगन सो जोरिकर बिनवौ सीस नवाय ।
लखै चूक मेरी जदपि देवैं ताहि बनाय ।

इति श्री गृहस्त धर्म सिरोमनि सपूर्ण सन् १२९१ ।।

विषय—गृहस्तो के कार्य तथा उनके धर्म का वर्णन । जैसे—गाँव मे वर्तने योग्य व्यवहार, बालको के सुधार की बातें, सफाई, कृषि कर्म, वस्तुओ का व्यवहार तथा उनका यत्न, उपार्जन तथा व्यय आदि ।

संख्या ४५७. चित्रकूट विलास, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—१०$\frac{9}{10}$ × ६$\frac{6}{10}$ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—२३१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल- स० १८३५ वि०, लिपिकाल—स० १९२४ वि०, प्राप्तिस्थान—प० शिव कैलाश त्रिवेदी, ग्राम—पुत्रलाल त्रिवेदी का पुरवा, डाक० अबारा (पछिम) जिला—रायबरेली ।

आदि—श्रीमते रामानुजाय नमः

।। दोहा ।।

प्रथम गुरू के चरन रज वदौ वारहि बार ।
जासुमिरे प्रभु पाइये उतरै नर भवपार ।। १ ।।
चरन सरन गुरदेव के जब लगि आयौ नाहि ।
भवन विपिन निज माधुरी करौ परसै मन मांहि ।। २ ।।
चित्रकूट गुन कहन को कोनो मन उत्साह ।
जनक नंदनी कृपा बिनु कैसे होय निबाह ।। ३ ।।
येक आस विस्वास गहि करत कथा मति मोर ।
चित्रकूट निज धाम को काहु न पायो वोर ।। ४ ।।

अत—अठारह सै जु पंतीस मैं धरि प्रभु अग्यासीस।
दोहा बरनै ग्रंथ के सत अरु चावालीस ॥४५॥

इति श्री चित्रकूट विलास सपूर्णम् ॥ सम्वत् ॥ १९२४ ॥ राम राम

विषय—चित्रकूट वर्णन।

रचनाकाल

अठारह सै जु पंतीस मैं धरि प्रभु अग्या सीस।
दोहा बरनै ग्रंथ के सत अरु चावालीस ॥

संख्या ४५८ जग्या समाज (? यज्ञ समाधि), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—६३/४ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२ परिमाण (अनुष्टुप)—२८८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री महंत बाबा रामशरनदास जी, कबीरपंथी मठ, ऊँचगाँव, पो०—बाजार शुकुल, जिला—सुलतानपुर।

आदि—साती नाम ॥ सत गुरा ॥ कबीरा की दाए ॥ सब सतन की दाय ॥ सब महतन की बाय ते लीषते ॥ ग्रथ जग्या समजा

धर्मदासो वाचना

धर्म दास चरनन सीस नावा। दोय कर जोरी वोनै उठी लावा॥
द्वापारी माही बुदीस्टील राजा। कैसे कौन जान्या को सजा॥
तीन के कंम कटे को नही। श्री कृमन की सेव कराही॥

सतगुरोवचन

सुन धर्मदास तोही समुझवऊ। कृष्ण चरीत्रा भेद वतलाऊ॥
तीन लोक जब ऊतपानी कीन्हा। प्रालै करी जीवन दुष दीन्हा॥
आवै जाइ जगता मझारा। फीरी फीरी जन्म धरै ससारा॥
लीला कै जग्ता सवानासु। तसो चहे मुक्ति नेवसु॥
ताही कीस्ना क सुनऊ तमामा। पडौ दीन नेक मा वासा॥
अत—
पडौ केर कीन अपमान। और भगता को चतुरा सुजान॥
तुम वुझौ धंमनी मम आस। औ सम जौ जौ चीन्है वस॥

साषी

कीस्न केर प्रसग आती वुझे हम हमारा।
कहे कबीर धर्मदास सो पहुचै लोक मझारा॥

ईते ग्रथ जग्या समज ॥ सपुराण ॥ समप्ते ॥ सुभमस्तु ॥ समत १९३० के सल ॥ मोनी सवना ॥ सुदी ३ ॥ वर यतवार ॥ दमषत चोषे दास के ॥ मम दोस न दीयेते ॥ जो जो प्राती देष सो लोष ॥ सध महता से मीनती मोरी टुट आछर वाचव जोरी ॥ वचै तीसा क वदागी। सुनै तीन को वदागी ॥ सगुरा कावीर केवल नाम ॥ सती सहेव ॥

विषय—सुपच भक्त और पांडवों के यज्ञ का वर्णन।

संख्या ४५९ ज्ञानकालकार भाषा, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—११ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप)—१८९, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, मुद्रणकाल, सं० १९३० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० शारदा प्रसाद जी दुबे, ग्राम—नवगवाँ, डाक—लभुआ, जिला—सुलतानपुर।

आदि—अथ द्वादश ग्रह फलम् ॥

द्वादश ग्रहको ईश जो जन्म लग्न मे होय॥
रूपवान सुन्दर वचन सशय करो न कोय॥२९॥

बारहें घरको ईश जो द्वादश घर में होय।
ग्राम युक्त वहु वश तहाँ लोभी जानो सोय।१३०
अथवा नवमे घरको जो द्वादश को ईश।।
करे बहुत तीरथ गमन सर्व नवावे शीश।। १३१

इति श्री भाषा जातकालंकारे द्वितीयोऽध्याय ।।

:o: :o: :o:

पाप ग्रह को सग लै धर्म देव मृति 'नाथ'।
चाहिए ता घरमें परे रहै गृहणी साथ।। ३।।
धर्म द्वेव मृति नाथ पर होय पाप ग्रह दृष्टि।।
यह तुम निश्चय जानियो ताकी तरुणी भृष्टि।। ४।।
अष्टमेश षष्टेश जो कुज बुधियुत सुख गेह।।
सो नर नहि निज तात ते निश्चय कहो जु एह।। ५।।
धर्मनाथ अरु नाथ दोउ चाहै ताधर होय।।
पाप युक्ति जे होय तो निज पितु ते नहि सोय।। ६।।

अंत—अथ विशोत्तरी दशा लगायवे की विधि ।। छप्पय ।।

कृतिका सूर्यषट् वर्ष रोहिणी शशि दश जानो।।
मृग मंगल कहि सात राहु शिव दस अठमानो।।
दिति गुरु सोलह वर्ष पुष्य शनि कहि उनईश।।
सर्प बुद्धि की दशा वर्ष सत्रह सुखईश।।
मघा के नवर्ष सात की पूर्वा भृगु विंशति कही।।
क्रमि करि विचार गनो सुपास सरमत ते लही।।

अल्पायुर्दिन नाथस्य शत्रो ::

इती श्री भाषा जातकालकारे समाप्त सपूर्ण।। लिखित कालिका प्रसाद कायस्थ रहने वाले लखनऊ मोहल्ले दुगावा सम्वत ।। १६३० ।। मे।

विषय—भाषा ज्योतिष वर्णन।

सख्या ४६०. जोगध्यान, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—८$\frac{1}{6}$ × ६$\frac{5}{6}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप)—१८२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८३४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री महत बाबा रामशरन दास जी, कबीरपंथी मठ, ऊँचगाव, पोस्ट—बाजार शुक्ल, जिला—सुलतानपुर।

आदि—सत्य सहो सामर्थ कबीर धर्मदास की दया।। वस बयालीस की दया।। साहेब सुरति गोपालदास की दया सकल संत महंथन की दया।। लिखितं ग्रंथ जोगध्याण।।

जोगध्याण षोजहु टकसारा। जिमिसब नग ऊपर मनिरे सिगारा।।
नगके पारिष जोहरी करई। मनितकेश्वर के सिर रहई।।
निरालंब षेल एक षेला। बाती बरे दिया विनु तेला।।
सीतल बाती वड उजिआरा। जोग ध्यान एह कथा अपारा।।
विना जल को तिर्थहि जावे। विनु थणग्रेनु काज नहि आवे।।

अंत— समौ

जोग ध्यान बड़ ग्रंथ है कहत जो भुष बताए।
देषत सबरग चढि गयो षायें हृदय जुडाए।।
मधुप विर्छ जनध्यान है लहरि कुंडल है डार।
जोगध्यान पहुपरसवह अमलसाधु सिंगार।।
जोगध्यान सुष अमल है साधु पिवहि जो जाए।
मुष मूदं स्रवनन्ह पिवें सतसुकृत जोति समाए।।

ऐसो ग्रंथ योगध्यान संपूरण सुभमस्तु।। संवत १८३६।। रम्मयनाम चैत्र कृष्णपक्षे

तिथि द्वावसी वार सुक्रवार मोकाम तेजवापुर में ।। दसखत धरमदास बैरागी के बंदा सतगुर कबीर को ।।

विषय—योग विषय का वर्णन ।

संख्या ४६१. तत्वज्ञान तरंगिणी, (मूलकार—भट्टारक श्री ज्ञानभूषण), कागज—देशी, पत्र—८५, आकार—१३६/१० × ८७/१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—२२६५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री दिगंबर जैन मंदिर, अहियागंज, टाटपट्टी मोहल्ला, लखनऊ ।

आदि—ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।। अथ सनातन जैन ग्रंथमाला ।। १४ ।। भट्टारक श्री ज्ञानभूषण विरचिता तत्वज्ञान तरंगिणी लिख्यते ।।

श्लोक

प्रणम्य शुद्ध चिद्रूप सानंद जगदुत्तमं ।
तल्लक्षणादिकं वच्मितदर्शी तस्य लब्धये ।। १ ।।

अर्थ—निराकुलतारूप अनुपम आनंद भोगनेवाला समस्त जगत में उत्तम शुद्ध चैतन्य-स्वरूप को नमस्कार कर उसकी प्राप्ति का अभिलाषी मैं (ग्रंथकार) उसके लक्षण आदि का प्रतिपादन करता हूँ ।।

भावार्थ—इस श्लोक मे शुद्ध चिद्रूप और सानंद एवं जगदुत्तम उसके विशेषण है ।। यहा पर शुद्ध आत्मा की जगह शुद्ध चिद्रूप ऐसा कहने से यह आशय प्रकट किया है कि ज्ञान आदि-रूप चेतना और आत्मा जुदे पदार्थ नहीं ज्ञान आदि रूप ही आत्मा है ।। अनेक महाशय आत्मा को आनंदस्वरूप नहीं मानते उससे आनंद को जुदा मानते है इसलिए उनके समझाने के लिए सानंद पद कहा है अर्थात् आत्मा आनंदस्वरूप है ।। नास्तिक आदि शुद्ध चिद्रूप को मानते नही और उनकी दृष्टि मे वह उत्तम भी नहीं जचता इसलिये उनको बोधनार्थ यहां जगदुत्तम पद दिया है अर्थात् लोक के समस्त पदार्थों मे शुद्ध चिद्रूपही उत्तम है ।। १ ।।

अंत— श्लोक

वदैव विक्रमातीता. शतपंचदशाधिकाः ।
षष्टि संवत्सराजातास्तदेय निर्मिता कृतिः ।।२३।।

अर्थ—जिस समय विक्रम संवत के पंद्रह सौ साठ वर्ष (शकसंवत् के चौदह सौ पचीस अथवा ख्रीष्ट संवत के पंद्रह सौ तीन वर्ष) बीत चुके थे उस समय यह तत्वज्ञान तरंगिणी रूपी कृतिका निर्माण किया गया ।।२३।।

श्लोक

ग्रंथ संख्यात्र विज्ञेयालेखकैः पाठकैं किलः ।।
षष्ट त्रिंशदधिका पंच शती श्रोतृजनैरपि ।।३४।।

इति मुमुक्ष भट्टारक श्री ज्ञानभूषण विरचितायां तत्व ज्ञान तरंगिण्या शुद्ध चिद्रूप प्राप्ति क्रम प्रतिपादकोऽष्टादशोऽध्याय ।।१८।। इस प्रकार मोक्षभिलाषी भट्टारक ज्ञानभूषण द्वारा विरचित तत्व ज्ञान तरंगिणी मे शुद्ध चिद्रूप की प्राप्ति के क्रम का प्रतिपादन करनेवाला अट्ठारहवां अध्याय समाप्त हुआ ।।१८।। इति श्री तत्वज्ञान तरंगिणी संपूर्ण ।। इति मिती अगहन सुदी ।। ७ ।। हस्ताक्षर— पंडित इच्छाशंकर त्रिपाठी के

विषय—तत्वज्ञान विषय का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रचना का मूल संस्कृत मे है जिसका रचयिता भट्टारक श्री ज्ञान-भूषण है जिन्होंने संवत् १५६० वि० मे इसकी रचना की थी ।

संख्या ४६२. द्रौपदी इतिहास, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—१०।। × ४।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—१३८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री ठाकुर कामदेव सिंह जी, ग्राम—भिटारी, डाक०—लाला बाजार, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

॥ दोहा ॥

जन्मेजय सो मुनि कहेउ कपट जुवा उपहास ।
दुर्पदी की पति राषि प्रभु शो सुनिये इतिहास । १

चौ०

कृष्ण सहित पांडव इकवारा । बैठे सकल सभा परिवारा ।
अगिनि देव तेहि अवसर आये । आसिष दयनि कथा सुनाये ।
मारुत नृप मख कीन्हे जवही । साठि सहस मन घृत परु तवही ।
भयो अजीरण कछु न सोहाई । चरउ षण्डि वन करहु सहाई ।
कृष्ण कहा अर्जुनहि बोलाई । षंडी वन वन अगिनि जेवाई ।
सुनि अर्जुन रथ चढि हरषाई । षंडी वन वन अगिनि लगाई ।
पावक जरत देषि रषवारे । सुरपतिपुर तेहि काल सिधारे ।
निकट जाय चरनन सिरनाई । सकल कथा येहि भाति सुनाई ।

:o: :o: :o:

दोहा

सीसनाम अर्जुन कहेउ केहि विधि जीतव देव ।
हृदय राषि मम वचन येह करहु कृष्ण की सेव । ३

अंत— दोहा

भीमसेनि सो प्रभु कहेउ मानहु कहा हमार ।
जो कछु मुषते निकरै करत न लावहु वार ।१४

चौपाई

मले दले सठ पासा परई । करै भीम जो प्रभु कछु कहई ।
प्रान जात तिन्ह कौन विचारा । भीम को दाउँ परो यहिवारा ।
अस विचारि प्रभु तुरित हकारा । दारु पास नहि लावहु वारा ।
जीते पाडव अति हरषाई । कंवरो सम्पति मनहु गवाई ।
कह दुर्जोधन सुनहु मुरारी । बिपिन गवन लाये यहि वारी ।
विधि आगेहि लिषि राषेउ भाला । भूलि गये अस कहेउ गोपाला ।
कह पाडव सन दीनदयाला । हरष विसाद भयेहु तेहि काला ।

दोहा

पांडव प्रभु के चरन गहि विनय कीन्ह कर जोरि ।
त्रिभुवनपति पति राषेउ निरषि आपनी ओर ।

इति श्री दुर्पदी इतिहास शम्पूर्ण शुभमस्तु

विषय—पाडवों तथा विशेषकर द्रौपदी के चरित्र का वर्णन ।

संख्या ४६३. धनतर सहिता, कागज—देशी, पत्र—२३, आकार—१०⅝ × ८⅞ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी और कैथी मिश्रित, लिपिकाल—सं० १९०२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री रामशरन लाल श्रीवास्तव, ग्राम—पूरे रामदीन शुक्ल (मजरिया इदरिया), डाक०—बाजार शुक्ल, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—श्री गनेसयान्म्हां श्री सरसुतीएन्म्हां श्री परम गुरुभेन्म्हां अथ लिष्यते धनतर सहिता नारी परीछ्या ॥

वात तैं नाडी चक्र चलत है ॥ लितते नाडी चंचल चलत है ॥ कफ तैं नाडी मंध चलत है ॥ अरु नाडी गरइ होए तौ रकतविकार जानिए ॥ अर संनपात होए तौ नाडी मोटी चलत है जल्दी औ अगनी गत वुध तैं जानीए अरु जैसे विना कोत सरब रोगन को कहत है तैसे नाड़ी सरब रोगन को कहत है ॥ सो अभ्यास करे ते जानी जात है ॥

अथा नाडी जानव को मंत्र

ॐ न्मो रुद्राय महाकालाए उडाचारे स्वाराए नाडी कद्रग्याए तुभ्ये नम जैसो सध्या असाध होए सो जानि परे ।।

अंत—   अथ अस्त्री पटवे की

जाके वेरी होती होए ताको बडा घोडा लवा होए ताकी पेसाव लेए पीछे को मुत तामे जाएकर पीस के ववावे तौ पुत्र होए निस्चे करके ।।

इति श्री धनतर सहिता पिसकोज वैदक मते सरव रोग निदान ओषद वरननो नाम नमो अध्याय समापत ।। ६ ।।

इति श्री धनतर सहिता ग्रथ समापत सपुरन समापता मिति अघन सुद ५ सन १६०२ मु० जवलपुर

।। दोहा ।।

प्रत को अछर देष के लिषी सोध परवान ।
भूल चूक जो जानवी लैवी सोध सुजान ।।
राम नाम भजते रहो जौलौ घट मे प्रान ।
अतकाल पसतावगे जव जम घेरत आन ।।

सपुरन समापता सपूरन समापता सपूरन ।।

विषय—धन्वतरि सहिता का हिंदी अनुवाद ।

सख्या ४६४ नायिका भेद, कागज—देशी, पत्र—७८, आकार—५ × ४६/७ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—८४७, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—

. . . .
. . . . कान्ह सो मेरेई व्याह की वाते ।।४७।।

।। दोहा ।।

ये परकीया तरुनि के भेद छ ओरौ जानि ।
पहिलेई गुप्ता कही बहुरि विदग्धा मानि ।।४८।।
बहुरि लछिता कहि कही कुलटा मुदिता नारि ।
त्रिबिधि अनुसयाना बहुरि सुकविन कही बिचारि ।। ४ ।।
भयो रु ह्वै है होत यो सुरती त्रिविधि विचारि ।
ताहि छपाए होत है सुरत गोपना नारि ।।५०।।
सुरत छिपावै जो सुवह सुरत गोपना होइ ।
क्रिया वचन को चातुरी कहै विदग्धा दोई ।।

।। भयो सुरत ।। यथा ।।

बाग की वावरी पानी को सासु पठावतु मोहि झुके पर बोलै ।
तापर ए सिगरी मिलि मेरे चवाइहि की बतिया गहि छोलै ।
भौरें धौ कहि कें भोर भिरे हठि काटति ओठ डुलाए न डोलै ।
कटीली है बेलें तहा लगे जात मै गात परी हे खरी खर होलै ।।५२।।

अत—   ।। दोहा ।।

निद्रा के विच्छेद में करिके मन में सोधु ।
इद्रिय प्रथम प्रकास मो पंडित कहत विवोध ।।३६३।।
तहा दृगनि को मीडबों अरु अगिरांनि जम्हानि ।
अरु मोरन अगुरीनिकी ए सुभाइ मन आनि ।।३६४।।

॥ यथा ॥

बैठी प्रिया उठियो भोरहिं सेज मे आरसी में मुख देखि लजानीं ।
केलि के मंदिर तें घर आपुनें जाहिबे को अतिही अकुलानी ।
कोटिक टूक भइ अंगिया जबहीं उचके कुचके अंगिरानी ।
चाहि के चोगुनि चोप सो प्यारे गरो गहि केलि वहे फिरि ठानी ॥३६५

॥ दोहा ॥

मेंटचौ चहिये ओर को अहंकार जिहि ठोर ।
अमरख कहत तहा सबे सुकविन के सिरमौर ॥३६६॥

॥ यथा ॥

अग को रंग देषि सुभाइहि को मिटि कुवन ही को मजेज गई ।
बिन पान नही अधरा रग देखत ईंगुर को दुति फीको भई ।
दृग अजनहू विन कजन को अरु खजन की छवि छीन लई ।
ससि के मद्यु मेटिबे कोन पिया मृग.................. ।

—अपूर्ण

विषय—रस और नायिका भेद वर्णन ।

संख्या ४६५. नायिकाभेद, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—८ X ४॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—८८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १८६० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० भारद्वाज मिश्र, ग्राम—बरगदवा, डाक०—मेहदावल, जिला—बस्ती ।

आदि—..............................

औचक आइ जोवनवा मोहि दुषदीन ।
छुटि सो सग गोइयवा नहि भल कीन । ५

नवोढा

पहिरत चूनि चुनरिया भूषन भाव ।
नैनन्ह देत कजरवा फूलनि चाव । ६

विश्रब्ध नवोढा

जंघन जोरत गोरिया करत कठोर ।
छवनन पावे पियवा कज कुचकोर । ७

मध्या लक्षन

निसुदिन चाहन चाहत श्री वृजराज ।
लाज जोरावरि कै वसि करत अकाज । ८

प्रौढा लक्षन

भोरहि बोलि कोइलिया बढ़वत ताप ।
धरो यक धरि अलिया रहु चुपचाप । ६

इति स्वकीया अथ परकीया

सुनि धुनि कान्ह मुरलिया वागन भेद ।
गैलन छाडत गोरिया गनत न खेद ।१०

अंत—

सोसा करन

यके बैठि गोड़वरिया मोजहु पाउ ।
पिय तन पेषि गरमिया वेन गलाइ ।१११

उपालभ वरन

चुप ह्वै रहे सनेसवा सुनि मुसुकाय ।
पिय निज हाथ विरौना दोन पठाय ।११२

परिहास

बिहसत भौंह चढ़ाए धनुक मोनोज ।
लावत उर उमठनवा औंठि उरोज ।११३

श्री सम्वत् १८६०.........

विषय—नायिका भेद वर्णन ।

सख्या ४६६. नायिका भेद और अलकार, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८३/८ × ३५/८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—८८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० जगन्नाथप्रसाद जी, ग्राम–उसरहा, पोस्ट–शिवरतनगज, जिला–रायबरेली ।

आदि—अथ नायका लक्षन ।।

निजपति मे रति सील सुभाय ।
सुकिया यहै कवि रति ।।११।।

मुग्धा

अभिनव जोवन जाके अग ।
सो मुग्धा जानौ परसग ।। २ ।।

।। ज्ञात यौवना ।।

जानै जोवन जो निज गात ।
ज्ञात यौवना वह विख्यात ।। ३ ।।

नवोढा

पराधीन रति जाकी होय ।
कविजन कहत नवोढ़ा सोय ।। ४ ।।

विश्रब्ध नवोढा

कछु प्रीतम सो करै प्रतीत । कहि विश्रब्ध नवोढ़ा रीति ।।

मध्या

लज्या मदन जो होय समान । तासो मध्या कहत सुजान ।। ६ ।।

अत—

स्वभावोक्ति

वरनन जानि सुभाय । सुभावोक्ति ठहराय ।।३८।।

आक्षेपाल०

वर्जै नीको भांति नहि वर्जो जान्यो जात ।।
गूढा धे पनिहारिए वर्णत मति अवदात ।।३६।।

समासोक्ति

अप्रस्तुते प्रस्तुत ज्ञान । समासोक्ति ताहि पहिचान ।।

चपलातिसयोक्ति ल०

हेतु सुनत हो कारज जहा । चपलातिसयोक्ति है तहाँ ।।

प्रस्तुत प्रससाल०

समसमान रचना जह होय । ताको सम वर्णै कवि लोय ।।

इत्यलकार भेदः

विषय—नायिका भेद और अलकारो का सक्षेप मे वर्णन ।

सख्या ४६७ नासिकेतकथा, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—७।। × ६।। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७६५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० गयादीन जी, ग्राम–जगन्नाथपुर, डाक०–रानीगज कैथौली, जिला–प्रतापगढ ।

आदि—.................................।
जमराज महात्रास देत है ।। ताते पुत्र ग्रह कौ फिरि चलौ ।।

।। नासकेत उवाच ।। अहो पिता हम तुम्हारी वचन नाही खंडित करिहै ।। जमपु जैहो तुम्हारी वचन मानिकै ।। तुम सोच मति करौ ।। सुचित्त रहौ ।। तुम्हारे प्रतापते जमपु होइकै ।। हम इहो वेगि आइहै ।। तुम्हारो वचन पालिहै ।। आकास के विषै मध्यम पानी है चन्द्रमा सूर्ज चौदह भुवन उदौ करत है ।। सत सो बधे है ताते मै तुम्हारो वचन सति करि मानिहौ सतके बधे राजाबलि पाताल को गये ।। सहस्र जग्य जिन्ह कीन्हे है ।। तुम सोक सताप जिनि करौ

:o: :o: :o:

नासकेत आसिरबाद दियो राजा जमराज की ढिग जाइ वैठ्यौ ।। अरु बहु भांति अस्तुति करी ।। बालक पांच वर्ष के जमराज पास प्राप्ति भये ।। इति श्री नासिकेत पु जमराज मिलनो नाम पचमो अध्याय ।।

अंत—अजो कोइ अतकाल गोविंद को भजन करै ।। ताको अच्छी विधि लै आवो साधुन मे जाइ राखौ ।। ताते जे साधु जनन है ।। तिनको गम लै आवतु है ।। इति श्री नास पुराने धरम चरचा बरननो नाम पदसो अध्याया ।। १५ ।। वैसपान उवाच ।।

तव रिषीस्वर नासिकेत कौ पुछत है ।। तुम जमपुरी कौ विष्यातु कीन्यौ ।। तव नास कहत है ।।...
बोरा होई ।। वहिरा होइ ।। अधा होइ ।।........[1]

संवत् १७६५ ।।

विषय—नासकेत कथा वर्णन ।

संख्या ४६८. पचविशति ग्रथ, कागज—देशी, पत्र—२५०, आकार—१३ $\frac{6}{10}$ × ८ $\frac{8}{10}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, खडित, रूप—नया, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—श्री दिगबर जैन मदिर, अहियागज, टाटपट्टी मुहल्ला लखनऊ ।

आदि—.......... की वार्ता है ।। जो ऐसी दसा मदिरा पीवने वाले देखें अर तौ भी इस मदिरापान की अभिलाषा नाही छाडै ताते इसकूं अपवित्रता की अरु पाप अर दुर्गति के दुःखनि की मूल जानि करि कै बुधिमानन कूं मदिरापान तजना जोग्य है ।। मदिरापान का निषेध किया ।। आगै वेस्या विसन का निषेध करते सतै कहै है ।।

मध्य—तैसै यह हू सर्व यतीनि का इद्र जो श्रीपद्मनदिनामा आचार्य ताका मुषरूप मे उपजी है ।। बहुरि कैसी है । जैसे जल की वृष्टि धान्य कूं उपज्यावे है । तैसें यह हू सम्यग्ज्ञ रूप धान्य कूं उपजावने वाली है ताते सत्पुरुषनि के हृदय विषै यह अनित्य पंचासत् अमृत जल वर्षा है सोही निर्विघ्न प्रतिष्टौ ।। ऐसा अधिकार के अत विषै मगलाचरण किया ।।

इति श्री पद्मनदि कृत पद्मनदि पचविशतिनामा ग्रथ की देसभाषा मय वचनिका विषै चोपन काव्यनिविषै अनित्य पचाशत् अधिकार तीसरा समाप्त किया ।। ३ ।।

अत— काव्य
संसारस्तनुयोगएषविषयो दुःखान्यातो देहिनो ।। विन्हे लोह समाश्रितस्य घः यातायथा तुष्टरात्याज्यातेन तनु मुमुक्षुभिरिययुक्तया महत्पातयो ।। नोभूयापिय यात्मनो कृतेतत्संनिधिर्जायते ।। ७ ।।

।। अर्थ ।।
यो सरीर के रोग ही संसार है ।। ससार तै प्रानीनिकै दुःख होत है ।। लोह....
—अपूर्ण

विषय—जैन धर्मानुसार ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ आदि और अत से खडित है । प्रस्तुत रचना मूल सस्कृत ग्रथ अनुवाद है । मूल ग्रथ का रचयिता आचार्य पद्मनदि है ।

संख्या ४६६. पक्षी प्रश्न, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—६॥ × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—२७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८८ वि० प्राप्तिस्थान—श्री प० प्रभुनाथ जी पाडेय, ग्राम—मऊ, डाक०—बेलवार, जिला—जौनपुर।

आदि—श्री गणेसयनम. चौपाई ॥

बनमे एक महमुनि आए। द्वादस पछी निकट बुलाए।
अपनी अपनी बानी कहिये। तुमते सगुन लियो कछु चाहिए।
ते बेले पुनि अपनी बानी। ताते सुगुन परिक्षा जानी।
प्रथम विप्र की पूजा करै। ले पुगोफल आगे धरै।
जो पूछे सो चित मं धरै। हरि सुमिरन मैं करै।

१ प्रथम ममोला

षजन। हो षजन तुज्जल वदन मुष देषै जो कोय।
धन प्राप्ति सुष लाभ अति मन चीत्यो फल होय।
—कार्य सितावी से होगा।

१ चकवा। सुनि चकवि श्रि मुनि सिगई बीत्यौ तिमिर वियोग।
कमल उदित आदित उदितहू है सष सजोग।
—कार्य कछू थोरी सी ढील सो होगा।

वकुल। वको वहुत कै जिनि वकै कहत वचन वनराज।
नह भोजन जिहि भाल मे होत न मनको काज।
—कार्य कछु थोरी सी ढील सो होगा।

तोता। करि सतोष सभारि प्रभु वसहु उत्तम ठाउ।
अति आनद सुष पायै कलि है जोवन राउ।
—कार्ज धीरज सो होगा।

मुर्गा। कहि तमचर सुनि तमचरी तिमिर गयो सवदूरि।
भयो भोर दिन मणिउ औ वहु प्रताप जगपूरि।
—कर्ज सितवी सो होगा।

हजारदास्ता। पिस्तैक कहि पिरे वदन पियमो रह्यो वियोग।
वहु विलाप निसदिन करत नहि पावत सजोग।
—कार्ज होग नाहि।

मोर। विरह तु चिता जिनिकरै धीर धरावत मोर।
रितुपावस आगम कियौ होहै अति घनघोर।
—कार्ज धीराज सो होगा।

कोइल। कहि कोकिल सुन कोकिला करि मनमे आनद।
पाके विमल रसाल फल मिटै सबै दुख दद।
—कार्ज सिताबि सी होगा।

कपोत। कहि कपोत चित लगी गयो रहो तरस की रीति।
वहुज देवस अव चाहियो परे वहुरि प्रतीति।
—कार्ज वहोत देवस मा होगा।

सारो। कहि सारक सुनि सारका या वनमे सुष नाहि।
वधिक वहुत जित तित फिरत कपट धरे मन माहि।
—काज होग नाहीं।

चील्ह। वहुत गोध मन मोलन रुचि दिष्टि धरी सतकोस।
कसुन भोजन देषियेत मन मारत हिमसोस।
—काज होग नाहीं।

मुर्गावी । जलपक्षी जिन चितकारी वढिहै नीली बीसाल ।
अति जु महासुष पायौ मिटै सबै जजाल ।
—कार्ज सितावी सो होगा ।

इति श्री पक्षी प्रश्न संपूर्ण सवत् १८८८ ॥

—आद्योपांत उद्धृत—

विषय—शकुन विषय वर्णन ।

संख्या ४७०. पिंगल. कागज—देशी, पत्र—३, आकार—१०$\frac{४}{८}$ × ४$\frac{६}{८}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—४५, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—

कला	६	५	४	३	२।१	कल होइ ३ गन चारि कल तीन कल ढगन णगन कलदोइ ४
भेद	ट	ठ	ड	ढ	ण।	क्रमते तिनके भेद ए जानि लेत सब जान ॥
१	SSS	ISS	SS	IS	S	तेरह आठ रु पाँच पुनि तीनि दोइ परमान ॥४६॥
२	IISS	SIS	IIS	SI	II	अथ प्रस्तार सूत्र
३	ISIS	IIIS	ISI	III		देहु प्रथम गुरू के तरे लघु पुनि सम करू पाँति ।
४	SIIS	SSI	SII			उवरे गुरू लघु दीजिए सब लघु लों या भाँति ॥ ४ ॥
५	IIIIS	IISI	IIII			तोलौ रचना कीजिये जौलौ सब लघु होइ ।
६	ISSI	ISII				यहै रीति प्रस्तार की जाने विरला कोइ ॥४८॥
७	SISI	SIII				अथ छक्कल प्रस्तार गन नाम
८	IIISI	SIIII				सिव ससि दिन पति सुरपति सेष सरोज सराहि ।
९	SSII					धाता अरु कलिचद ध्रुव धर्मसालि करू आहि ॥४९॥
१०	IISII					परगट तेरह भेद ए छक्कल के निरधारि ।
११	ISIII					प्रकट पच कल के कहत अब सव नाम विचारि ॥५०॥
१२	SIIII					इद्रासन अरू सूर कहि चापही रू लषि लेहु ।
१३	IIIIII					सेषर कुम समो अहिगनो पायगनो कहि देहु ॥५१॥
						एसब परगट करि कहे पच कलनि के नाम ।
						मत्ता के प्रस्तार ए आवत हैं सब काम ॥५२॥

अत—अथ सप्तदसाक्षर प्रस्तारः

॥ दोहा ॥

जगन सगन पुनि जगन दै सगन यगन निहारू ॥
विरति आठ नव पर करहु प्रत्थी छद विचारू ॥१६६॥

॥ प्रत्थी जथा ॥

बडे गुन निधान ह्वै विगुन हार राखै हिये ।
पटीर तजि लाल क्यौ लसत लाल टीकौ दिये ॥
प्रभा अरून कीए रे जुनु सरोज लाली बढी ।
कछुक यह आजु है दृगन ओप औरे चढी ॥

—अपूर्ण

विषय—पिंगल विषय वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना खडित है । केवल सख्या ८, ५ और ३४ के, समस्त ३ पत्ने उपलब्ध है ।

संख्या ४७१. पिगल, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—११$\frac{३}{८}$ × ५$\frac{४}{८}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—४९, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—

. . . .
गुरू लघु वरन लक्षन पुनि ग रीति ।
छंदन के लछन कहे उदाहरन हरि प्रीति ॥ ३ ॥
पिंगल छंद अनेक हैं कहे भुअगम ईस ।
तिन तै लिये निकारि मै द्वादस अरू चालीस ॥ ४ ॥
राम नाम जस रहित जे विद्या व्रत तप दॉन ।
ते दुख प्रद सब जानियें कहै जु वेद पुरान ॥ ५ ॥
हरि जस रहित सुकाव्य हूँ सतन आदर देत ।
उदाहरन हरि नॉम जस मिले कहे इहि हेत ॥ ६ ॥
॥ अथ लघु गुरू लछन ॥
॥ दोहा ॥
मात्रा रहित सु जे वरन ते सब लघु करिमान ।
पिछौं कि कुमात्रा जहाॅ तेऊ लघुहि वर्षांनि ॥ ७ ॥
आदि संजोगी हू कहूँ लघु ही होत प्रकास ।
शरद जुन्हैया मोद प्रद करत कन्हैया रास ॥ ८ ॥
गुरू हूँ लघु की रीति सों पढ़ै सु लघु ही मान ।
मात्रा जुत सजोग के आदि सबै गुरू जानि ॥ ९ ॥

अंत— मैंनावती पादाकुल इन्हके लक्षन
॥ दोहा ॥
चारि भागन मैंनावली पुनि पादाकुल जानि ।
चारि ह्रस्व द्वै गुरू वही नगन यगन मय मानि ॥
मैंनावली को उदाहरन
हस्तौ भलै ज करै धर्म के काम ।
कानौ भले जे सुने श्री गुणग्राम ।
नैंनौ भलै कृष्ण सोभ लखै स्याम ।
जिह्वा भली जो रटै राम के नाम ॥
पादाकुल के उदाहरन
हरि गुन गावो । सब सुख पावो ॥
विमल न कोजै । वय नित छीजै ॥
कुसुम विचित्रा को लछन
नगन यगन पुनि नगन औ यगन जहाॅ थिर आॅनि ।
दापाकुल सौ द्विगुण सो कुसुम विचित्रा जानि ॥
कुसुम विचित्रा को उदाहरन
हरिभजि नारायण भगवता । जिहि जस गावै सुर मुनि सता ॥
विधि शिव जाके पद सिरनावै । तन मन अर्पै सब सिधि पावै ॥
पद्धरी को उदाहरन ॥ दोहा ॥
प्रथम मत्त दस बहुरि षट षोडस मत इक ठॉव ।
जगन अत मैं धारियै छ . . . . . ॥

विषय—पिंगल विषय का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना खंडित है । केवल दो पत्रे सं० ३ और ५ के प्राप्त हुए है ।

संख्या ४७२. पुष्पवाटिका, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६$\frac{१}{०}$ × ४$\frac{३}{०}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री सर्वेश्वोजयति० पुष्प वाटिका लिख्यते०

गुल्लाला० कुंजा० वेली० टेसू० सदावसंत० नागकेशरि० कुंद० पाडरि० कुमुदिनी० अडहुल० जूही० कमल० गुलाब० कदंब० करना० केतकी १ ।। चंपा० कदंब० कुंजा० सुदर्शन० सदावसंत० भृंगारहारा० कुंद० वंधूप० जूही० कुमुदिनी० मौलश्री० अडहुल० चमेली० कनइल० सूर्य्यमुखी० केतकी० २ ।। सेवती० मालती० कुशुंभ० कमल० करना० केवरा० नगेशरि० वेला० जूही० सूर्य्यमुखी० मौलश्री० भृंगारहार० चमेली० अडहुल० कुंद० केतकी० ।। ४ ।। कुशुंभ० टेसू० सुदर्शन० सदावसंत० रतनमजरी० कुंद० नगेशरि० भृंगाराहारा० मूंगा० गुलाब० कदंब० कनइल० सेवती० करना० सूर्यमुखी० केतकी ।। ८ ।। सेवती० मूँगा० मालती० नेवारी० करना० गुलाब० कमल० पाडरि० मौलश्री० सूर्य्यमुखी० कदंब० वंधूप० कनइल० अडहुल० कुमुदिनी० केतकी ।।१६।।

बड़ो आचरज आजु है प्रातहि आवत लाल ।
निरषत है सखिआं सवं पहिरं लाल गुलाल ।। १ ।। गुल्लाला ।।
चलहु सखी पीतम जहाँ कुंज वाटिका पास ।
फूलै चंपा सुघन होय पिय मिलवे की आस ।। २ ।। चंपा ।।
कर कपोल दै भामिनी बैठी मंदिर मांझ ।
कुंजा फूल सुहावनो ल्यावो मोहन साँझ ।। ३ ।। कुंजा ।।
प्रफुलित केवरि देखिकं सुंदर बास सुवास ।
सेज भई पावक सरस नहि पीतम है पास ।। ४ ।। केवरा ।।
कब आँवेगे सावरे पंडित पूँछौ तोंहि ।
विन गुण माला वेलि की एक न भावं मोहि ।। ५ ।। वेला ।।
चब्र बवन चंचल नयन चितवति है विन मूल ।
मंद मद विहसत सखी झरत चमेली फूल ।। ६ ।। चमेली ।।
कल न परं तलफत फिरं निशिदिन वारवार ।
अंग लगं वीथी झरं रचै जुही के हार ।। ७ ।। जुही ।।
दूतीन सघ विनती करं हिरदं वहुत उदास ।
रतन मजरी हाथ में ल्यायो मोहन पास ।। ८ ।। रतनमंजरी ।।
ऋतु वसत आयो सखी प्राण सांवरे साथ ।
टेसू फूल सुहावनो देखु पिया के हाथ ।। ९ ।। टेसू ।।
हरि दर्शन पायो नही फूल सुदर्शन हाथ ।
नयन मिलं तो मन मिलं तन न मिलं को साथ ।।१०।। सुदर्शन ।।
दिन दिन राति अनद है जो पं है घर कत ।
पिय के हाथ विराजही फूलयो सदा वसत ।।११।। सदावसंत ।।
हस चलत मृगलोचनी चितवत है चहु वोर ।
कुसुभी सारी पहिरि कं षडी पिया की ओर ।।१२।। कुशुंभ ।।
हरि आये निरषत सखी अपनी प्रीति निहार ।
केशरि कंशो भवत है और नगेशरि हार ।।१३।। नगेशरि ।।
हरि आये निरषत सखी गावत गीत मलार ।
भृंगारहार के फूल से पिय विलसं बहुवार० ।। ।। भृंगारहार ।।
मिलं जो पिय घर देषतं मन मं भई अनंद ।
भली भाति आये अज्यौं श्वेत फूल ज्यों कुन्द ।।१५।। कुद ।।
अलबेले हरि आइ सखि चलनि बाढयं झूल ।
हमहू का सखि जतन करि लिहें नेवारी फूल ।।१६।। नेवारी ।।
अति व्याकुल है पिय बिना आवि अत समसूल ।
हो निरषत सखि हाथ मे लिहे पाडरी फूल ।।१७।। पाडरि ।।

रति मूरति पिय की बनी शोभा सरस सरूप ।
रति जोवै पिय को खडो दिन प्रति फुल वधूप ॥१८॥ बंधूप ॥
लाल बिलोकत है सखी प्रति दिन फूल वधूप ॥१८॥ बधूप ॥
लाल विलोकत हौं सखी कामिनि करत अनद ।
वैसे पिय हमरे सखी जस कुमुदिनि के चद ॥१९॥ कुमुदिनि ॥
लालन साथ विहार करि फूल सुहावन हाथ ।
वाके काधे कर धरं फूल मालती हाथ ॥२०॥ मालती ॥
नयन कमल अरु मुख कमल चरन कमल सों वेश ।
पिय निरखत है प्रीति सों जैसे कमल दिनेश ॥२१॥ कमल ॥
भलै जो आये पिय घरं जोवन के अनुकूल ।
पलगाहाल विछाइए मौलसिरी के फूल ॥२२॥ मौलसिरी ॥
सावन सरस सुहावनो भादों अति गभीर ।
अडहुल फूल सुहावनो चाहु सखी अजीर ॥२३॥ अंजीर ॥
मेरे आँगन मूंगवा फूली सरस सुवासु ।
देखै सखि भावै नही जो पीतम नहि पास ॥२४॥ मूगा ॥
एक समै सखि प्रेम से बैठी मदिर माँझ ।
आछे फूल गुलाब के ल्यावो मोहन साँझ ॥२५॥ गुलाब ॥
करि सिगार गजगामिनी प्रिय से बोलनहार ।
अग अग कदर्प द्युति उर कनइल के हार ॥२६॥ कनइल ॥
सखी न आयो साँवरो कुजहि भई अवार ।
ललित दलन ज्यो कदव है तहाँ बनायो हार ॥२७॥ कदव ॥
सोवत देवा नखिन सग हिरदै भा विश्राम ।
सेवत देव महेश को प्रिय सो वचन सकाम ॥२८॥ सेवती ॥
सज्जन विछुरे हे सखी भरि जोवन महिमत ।
करनाफूल सुहानो क्या करना विन कत ॥२९॥ करना ॥
प्रतिदिन बाला कामिनी श्याम हेत सखि साथ ।
सूर्य मनावत है सखी सुर्यमुखी लिय हाथ ॥३०॥ सूर्यमुखी ॥
प्रीतम आये है सखी मै प्रसून सम गाथ ।
वंदौं चरण महेश के फूल केतकी हाथ ॥३१॥ केतकी ॥

इति श्री पुष्प वाटिका समाप्ता ॥ राम ॥

—पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—प्रत्येक दोहे मे एक फूल का उल्लेख कर शृगार वर्णन किया गया है ।

सख्या ४७३ पोथी औषधि,कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—६$\frac{6}{10}$ × ५$\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६२ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० बदरीप्रसाद जी, ग्राम—खारे, डाक०— शिवरतनगज, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ नारो स्थित होने की औषदि ॥ पीपर की छालि पैसा तीनि भरि पुरानी ईटि पैसा २। भरि दीजौ तौ नीको होय १

अथ इन्द्र वारुणी को उपचार

पुष्य नक्षत्र आदित्य वार को इन्द्र वारुणी मूल उपवास करिकै लीजै पचाग उत्तर मुख ह्वै कै लीजै वार मुकराय कै पुनि निर्गुण्डी की अतर छालि को रस सो गोली बाँधे पानी सो घसि भाल मो तिलक करै तौ इच्छा भोजन मिलै २ यही गोली रक्त चदन सो घसि हाथ मो लगावै जाकै माथै हाथ धरै सो वस होय स्त्री वा पुरुष ३ यही गोली गोरोचन सो घसि टीका करै राजा भीरु जाइ ४ यही गोली राति मो मुख मै राखै तौ वीर्ज स्तभन होइ यही गोली की धूनि लेइ तौ ज्वर जाय ॥

अंत— दवा बुषोत की वा पित्त की

कारी जोरी पत्रज कास की जर तज नाग केशरि गोभी अफाफारे की बीज समद फल बेल को गूदा बंधु मात्र सम टंक ४ चारि चारि भरि सब औषधं सब कूनो षाड चीनी मिलाय दीजं अष्टावसेष मात्रा टंक ५क्नि सात दीजं बुषोत पित्त जरं इंद्रज अष्टावशेष करि पिआवं प्रस्तूतिका जाइ

औषधि सर्व समाप्तम् शुभमस्तु शिद्धिरस्तु श्री शुभ सम्वत १८९२ शाके १७५७ शुभ चैत्र कृष्ण १४ लिषितम्मिदा पुस्तक मुन्नाराम मिश्रेण स्वार्थाय न्यामति षा तालुकदार सातन पूरे के श्री यादृशो पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशी लिखितं मम जदि शुद्धम शुद्धवा मम दोषो न दीयते ॥

विषय—अनेक रोगो की औषधि वर्णन।

संख्या ४७४. पोथी प्रश्न कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—९ × ४$\frac{९}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १८८७ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० रतीपाल जी द्विवेदी ग्राम—पछिम बिसारा, डाक०—मुसाफिरखाना, जिला—सुलतानपुर।

आदि—भगवान जि पुछहु ॥ ० ॥ रोजिगार किहे प्रान जाइह कष्ट पंवेहु ॥ १ ॥ बाग जिनि लगावहु वंर उपजिहि ॥ २ ॥ गाऊ गडा काज सब सिद्धि होईह ॥ ३ ॥ संग्राम गएते जीत होइह ॥ ४ ॥ उधार विहेते शंपति होइह ॥ ५ ॥ गाउ जिनि वसहु राजदंड होइह ॥ ६ ॥ कोट करहु सुफल होइह ॥ ७ ॥ जुआ षेलहु जितवेहु दक्षिन पीठी देइ कै ॥ ८ ॥ भुइहारी करहु आनद होइह ॥ ९ ॥ संसं जिनि करहु निहफल है ॥१०॥

वलिना पूछहु ॥ उधार का जिनि नाहु धरा ही रहहु ॥ १ ॥ गाऊ जिनि जाहु उवास है ॥ २ ॥ सग्राम गए वंरी बहुत होवेह ॥ ३ ॥ उधार विहे वंर बहुत होइह ॥ ४ ॥ गाउ जिनि बसहु चोर भं होइह ॥ ५ ॥ जुआ जिनि षेलहु हरवेहु ॥ ६ ॥ बाग लगाए थिर है लावहु ॥ ७ ॥ भुइहारी कीहे उपद्रो है जिनि करहु ॥ ८ ॥ संसं माह भं है जिनि करहु ॥ ७ ॥ कोट कीन्हे थोरे दिन मा झगरा होइह ॥ १ ॥

अंत—मस्विहि पुछहु ॥ ससंते कछु बडी उपद्रो है ॥ १ ॥ चाकर राषहु आगे बड़ी उपद्रो है ॥ २ ॥ बाग जिनि लावहु न लागिह ॥ ३ ॥ गाउ गए ते षवार राहब ॥ ४ ॥ सग्राम जिनि करहु नीर्फल है ॥ ५ ॥ उधार दीन्हे ते टूटि नि होइह ॥ ६ ॥ गाउ बसेते दड होइह ॥ ७ ॥ जुवआ षेलहु दछीन पीठी देइ के जित हौ ॥ ८ ॥ रोजिगार करहु नीक है ॥ ९ ॥ भुईहारी करहु निर्हिचत रहौ ॥१०॥

इति श्री पोथी प्रश्न कं संपूर्ण सम्वत् १८८७ लीषा सीतल तिवारी चैत वदि अष्टमी बुधवासरे लिषितां श्रीरस्तु कल्याण मस्तु ॥ सुभ मस्तु ॥

विषय—शुभाशुभ फल वर्णन।

संख्या ४७५. प्रह्लाद चरित्र, कागज—देशी, पत्र—११, आकार—१७$\frac{३}{१०}$ × ६$\frac{१}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—३८५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०८ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० रामनारायण जी मिश्र, ग्राम—सैंवमी, पोस्ट—शाहमऊ, जिला—रायबरेली।

आदि—श्री गणेशाय नमः गुर ब्रह्मा गुरूर विष्णु गुरुरदेवमहेश्वरम। गुरुरेउसाक्षातपरब्रह्मत्समई श्री गुरुवे नमः ॥

॥ दोहा ॥

हरषित हर कैलास मा वंठे उमा समेत।
ज्ञानभक्ति पूछी सिवा सुनि बोले ब्रषकेतु ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

रघुपति कथा कहा मैं गाई। सुनहु उमा सादर मनलाई ॥

येक वार सनकादि मुनीसा । गये बैकुंठ जहा जगदीसा ॥
पुरी पुनीत न जाई बषानी । जहां वसत श्री सारंगपानी ॥
पाच पदम जोजन विस्तारा । जोजन सहस उतंग अगारा ॥

॥ दोहा ॥

सभा अँचल दछिन दिसा उतर दिसि सुर गग ।
जमु नव मय कोकनद पियत सुधारस भ्रिग ॥ १ ॥

अंत—

प्रथमहि मैं हरिजन गुन गाए । मति अनुरूप अनूप सुहाये ॥
कनककसिप हाटक एइ दोउ । रावन कुभकरन भे सोऊ ॥

॥ दोहा ॥

नारायेन के पारषद जै अरुविजै सुजान ।
भये असुर मुनि श्रापते ताते करऊ वषान ॥४८॥

इति श्री प्रहलाद चरित्र इतिहास सपूर्णम् ॥ जो प्रति...... ॥ सवत् १६०८ सन् १२८५ चइतमासे कृष्ण पक्षे तिथौ ३ सोमवासरे समाप्तं सपूर्ण सुभ मस्तु ॥

विषय—प्रह्लाद चरित्र वर्णन ।

संख्या ४७६. प्रह्लाद चरित्र, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—९ × ४ इंच, पन्क्ति, (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—५२, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० वासुदेव जी त्रिपाठी, ग्राम व डाक०—चौखडा जिला—बस्ती ।

आदि—

निरषि गुरू से भौह चढाई ।
औ सभ कहेमि दोस सव तोरा ।
एह वालक का जानै मोरा ।
जेहि की आदि अंत नहि जाती ।
ताकर नाम लेत दिन राती ।
राजै भाषेउ वचन उदासा ।
एहिते होइहि सभै कुलनाशा ।
मंत्री सभै भये उठि ढाढा ।
करुना सहित वचन मुष काडा ।
राजनेती प्रभु करिअ विचारा ।
कतहू पितै वालक नहि मारा ।
एहसव दोस गुरू कर अहई ।
गुरु पढ़ावै सो सिष कहई ।

दोहा

राजै क्रोधवत होइ भाषेउ सिवकै आनि ।
अपने हाथ वधौ तोहि जौ भाषसि भगवान ।

अंत—

प्रहलाद कहा करजोरी ।
सुनहु कृपा निधि विनती मोरी ।
छिमा करहु एह कृपा अपारा ।
तीनि लोक मह परा षभारा ।
संत वचन मानि प्रभु लीन्हा ।
महा सरूप तवहि हरि लीन्हा ।
एहि विधि क्रोधतजा प्रभु जवहीं ।
आए निकट देवसव तवही ।

निकट गए नरसिंह के आगे ।
अस्तुति चरण करण तब लागे ।
तुव ओवर मह समकर वासा ।
सभ घट भीतर तुमार प्रवेशा ।
धन्य प्रहलाद दरस जेन्ह पावा ।
औ हमका एह रूप देषावा ।
प्रहलाद चरित्र सुनें मनलाई ।
महापाप ताकर छं जाई ।

दोहा

प्रहलाद चरित्र पढं जे सुनं मन चित लाइ ।
जमतेहि छुअं न पावं विष्णु लोक चलि जाइ ।
राम नाम एकं रती पापं क कोटि प्रहार ।
वलिहारी हरिनाम की जारि करं जरि छार ।

इति श्री प्रहलाद चरीत्र संपूर्ण सम्वत् १८६४ ॥

विषय—प्रह्लाद चरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खडित है। समस्त आठ पत्रे थे, जिनमे पहला तथा छठाँ और सातवाँ पत्र नही है। केवल पाँच पत्रे उपलब्ध है। रचयिता तथा रचनाकाल का कोई उल्लेख नही, परतु लिपिकाल स० १८६४ वि० से ग्रंथ प्राचीन प्रतीत होता है।

सख्या ४७७ वन्दावली (वाँदावली), कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—१२ X ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—७३८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्यगद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० रामदत्त दुबे, ग्राम—भटेहरा, डाक०—घनश्यामपुर जिला—जौनपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ हनुमान जी सहाय ॥ अथ वन्दावली लिष्यते ॥

॥ कन्यापुत्र होय का परिक्षा ॥

नागेसर घ्रित गायका पीपर सम जो होय ।
पान करं तीआ जानि कं परसवती होय ॥७९॥

॥ वाभ्क परिक्षा पुत्र होय कं ॥

षाहु शीर शीषारसम दुध शोवाली आन ।
गर्भ रहे का भाति से त्रिया पिए रति जानि ॥८०॥

॥ अथ थंभन गर्भ रहे का उपाए ॥

मुल मजुर के करको दुध से पिए शोए ।
अव लछमना भ्फल पिशी पुत्रवती होए ॥८१॥

॥ वसोकरन करने को उपाए ॥

रोहि पिता गौ लोन घशिकं तिलकं शवेरि वनार ।
नारी नर नृप वसी करं कोरन कहे वेकार ॥८२॥

॥ छाही का औषट ॥

अंत—इलाज शाक का ॥ २५ ॥

नेनुआ तो गधक घेरी के गोत मे अवटं तौल क तेल शहीत खाए तो शाक जाए गेहु की रोटी खाए ॥ तीतो लमकी के रस मे कलमी सोरा षल करं षाय केराव बरावर तो चगा होए ॥

॥ उपदरमा ॥ २६ ॥

इति श्री वन्दावली पुस्तक समाप्तम ॥ सम्वत सरवत षान काल १९०१४ शाके १७०७९ ॥

विषय—वैधक ।

संख्या ४७८. बिहारी सतसई की टीका, कागज—देशी, पत्र—२७, आकार—१०$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{3}{8}$ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—६११, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्यपद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि— . . . .
. . . . र ॥

॥ दोहा ॥

दरसन पिय सुख हेतु है नैन होत सुख काज।
होतु न कारज हेतु जह विशेषोक्ति कविराज॥

॥ मू ॥

को जाने ह्वैहै कहा जग उपजी अति आगि।
मन लागे नैननि लगं चलै न मग लग लागि॥२७१॥

॥ टीका ॥

सखी का वचन नायका से॥ कौन जाने होगा क्या जगत मे उपजी अचरज की आग॥ आँखो के लगने से मनमे लगं है इससे तू प्रेम की बाट निकट लग मत चलै॥ लगने के दो अर्थ मिलना औ जलना॥

॥ प्रश्न ॥

लाग शब्द होता तो यह अर्थ ठीक था पर यहाँ लागि शब्द है तिससे यह अर्थ न बना॥

॥ उत्तर ॥

॥ दोहा ॥

गुरुजन मखि सिक्षा इहाँ मो सग लागि चलै न।
मग लग पहुँचाऊँ सुज्यौ ठगिया तोहिँ ठगै न॥

असगत्यलंकार—

॥ दोहा ॥

नैननि सुलगै लगति पुनि मनहि जाय अति आगि।
अलंकार सु असगतै कहुँ लागे कहु लागि॥

अंत— ॥ प्रभात वर्णन ॥

॥ मू ॥

कुंज भवन तज भवन कौ चलिये नंदकिशोर।
फूलति कली गुलाब की चटकाहट चहु ओर॥५४८॥

॥ टी ॥

सखी का वचन नायक से॥ कुंज की मंदिर छोंड मंदिर को चलिये हे श्री कृष्ण॥ फूलती है कली गुलाब की औ चिड़िया बोलती है चारौ ओर॥

॥ प्रश्न ॥

॥ दो० ॥

कुंज छुड़ावति सखिनरस अरु तज भवन जु अर्थ।
कुंज चलौ घर तज शबद बनै न बुद्धि समर्थ॥

॥ उत्तर ॥

कह्यो कहूँ काहु सखी चलौ भवन यह बैन।
सुनिवर सखि बोली सुजिन थपै यही मत.. ॥

—अपूर्ण

विषय—बिहारी सतसई की टीका की गई है।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के आदि, अंत और बीच के कितने ही पत्रे लुप्त हो गए है। टीकाकार का नाम अप्रकट है। टीका खड़ी बोली के गद्य मे है।

संख्या ४७९. बीजमंत्र, कागज—देशी, पत्र—२२, आकार—५॥ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—१६८, खंडित (केवल प्रथम पत्र), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १८७९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री विदेश्वरीप्रसाद जायसवाल, ग्राम व पोस्ट—मड़ियाहूँ बाजार, जिला—जौनपुर।

आदि— ....

अनर अमर सोहोइ भवानी। ताते केहि विधि कहो वखानी।
तव ओजा कर वचन सोहाई। जवि सकल प्रभु देहू मगाई।
तव संकर चितए करि क्रोधा। भक्ती जीव सकल सब जोधा।
आवी पकी पुल जीव जड़ा रहाई। सब खन सब चले पराई।
जीव रहीत गती देखी क्रीपाला। बइटी दाम मगाइ रिपुछाला।
ढीग बइठी ओजा अनुरागी। तव सीव बीज सुनावन लागी।
जेही तरुवर बइठे गिरिनाहा। तहा एक सदन कर रहा।

॥ दोहा ॥

जनेता मादी मे आइ एक घरी खगलेइ गएऊ।
जो भाती सो न मीठे सुनए दुदोस्टोल गइ।

॥ चौपाई ॥

वीज मंत्र सीव उनहि सुनावा। अंडनी वसुन वे मनही लावा।
कहत सुनत उपजत सुखनएउ। वारह वरख वीती जव गएऊ।

अंत— ॥ दोहा ॥

अवर कथा अव भाखौ चित देइ सुनहु नरेस।
रुकमीनी सुत के कारन अंत के पुजी गनेस।

इति श्री पोथी वीजमंत्र सपुरन जो प्रती देखा सो लीखा संवत् १८७९ साल मिती सावन सुदी पुरनमासी

विषय—बीजमंत्र वर्णन। (उमामहेश्वर सवाद)।

संख्या ४८०. ब्रह्मविचार (शिष्य सवाल), कागज—आधुनिक, पत्र—६, आकार—६३/४ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—८५, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—पं० हजारीलाल जी द्विवेदी वैद्य, ग्राम—कुकहा रामपुर, डाक०—शिवरतनगंज, जिला—रायबरेली।

आदि— संत मरन १ संतपती॥ जो सहाए सवद ग्रंथ ब्रह्म वीचार प्रथमे आरंभ होत सहो

....

काआ न होता तो काहा होता जीव।
चवरना होता तो काहा होता सीव॥
मुष न होता तो काहा होता निरंजन।

गुरवचा०

हीदेआ ना होता तो आनुप होता मन।
नाभी ना होता तो नीरंजन होता पवन।
अनहद ना होता तो उरध मो होता सवद।
नीरतर ना होता तो अभीगमी मे होता प्रान।
ब्रह्मड ना होता तो अभीनासी मे होता हस।
आनुपन होता तो आस मे होता सुन्य।
कवल ना होता तो सुन्या मे होता काल।
काआ ना होता तो सीव में होता जीव।

चंदर ना होता तो नीरजन मे होता सीव ।
सुषमन ना होता तो अलमे होता नीरंजन ।

अंत—राज चसमा करु तषत को करु दरवाजा ।
आथा वस्ती त्रीनाम हाड मासु ना चाम ।
रोम धरती की एही प्रकृती है ।
रकत ग्रींद कस मुत्र पसेवा ।
आवकी एही प्रकृती है ।

जम्हुआइ । त्रीषा । छुधा । नींद्रा ।। क्रोध ।। तेज ।। वाए ।। एही प्रकृति है ।। हरषसोक ।। मन ।। लाज । भैए ।। आस ।। एही प्रकृती है । तंत परचै चततन्यास र सीष सवाल सपुरल संत पार सबद ब्रह्म वीचार संपुरन संत वचन परमान संत पार पार पार

विषय—सृष्टि तत्व और ब्रह्मज्ञान वर्णन ।

सख्या ४८१ भद्रवाहु चरित्र, कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—१२३/८० X ६१/२ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, अपूर्ण (आरभ का पत्र नही है), रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—स० १८७४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर, (बडा मदिर), चूडी वाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—

. . . . देखिए नाही । अरु कदाच मति की हीनता करि राजादिक बड़े पुरुष होइ नीच पुरुष कौ पुजै ।। अरु माता पिता भी बुद्ध की हीनता करि पुत्रादिक को पूजै ।। तो वह हास्य निवा पावै ।। कौन दिष्टात : सिंघ होई अरु स्याल कौ सरने रहै ।। तो वह हास्य ने पावै ही पावै : यह जुगत ही है ।। तैसे धरम विषै अरहतादिक उतकिष्ट देव ने छोड अरु कुदेवादिक को पुजै ।। तो काइ इहि लोक विषै हांस्य कौ नाही पावैगा ।। अरु काइ परलोक विषै नाना प्रकार के नरकादिक विषै दूष अरु क्लेस कौ नाही सहेगा न अवस्य सहेगा ।। २ ।। सो क्यो सहैगा : आठ कर्म विषै मोह नामा कर्म है : सो सब कर्म का राजा है ।। ताकै दोय भेद है : एक तो चारित्र मोह है ।। अरु एक दर्सन मोह है ।। सो चारित्र मोह तौ इहि जीव कौ नाना प्रकार की कषम करि अकुलता उपजावै है ।।

अत—तौ एक सर्वग्य वीतराग जो जिनेस्वर देव ताकौ वचन जो अंगीकारी करि ।। अरु ताका वचन के अनुसार देव धर्म गुरु का श्राधान करि देहरा कटि टेढो घिसी ।। अरु औदोमुख होई ।। कष्ट कष्ट करि जो लीषो ।। जतनराराषीए सोई ।।

इति सपूर्ण समाप्तः ।। संवत १८७४ मी० वैसाष सुदी १३ भोम वासरे ।।

विषय—भद्रवाहुमुन केवली का जीवन चरित्र वर्णन है । ये जैनी थे और चद्रगुप्त मौर्य के गुरु थे ।

सख्या ४८२. भागवत एकादश स्कध टीका, कागज—देशी, पत्र—६२, आकार—६ X ४३/४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६०१ वि०, प्राप्तिस्थान—ठा० महादेव सिंह जी, ग्राम—रजनपुर (गगासिह का पुरवा), पोस्ट—तिलोई, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशायनमः

नारायण नमस्कृत्य नर चैव नरोत्तमं ।
देवी सरस्वती व्यास तजोजयमुदीरसत् ।। १ ।।

प्रथम श्री कृष्ण को डडवत क अोरु जे श्रीकृष्ण के उपासकी तिनकी प्रभाते अति श्रेष्ट है। उन चरनारविंदनि की रज जो भगत अपने माथें धरै भगत वैष्णव तौ इद्रादिकन की लछमी प्राप्ति होइ अव यकतीस अध्याय का दसस्कध मे मुक्त कही है नव जोगेस्वरन के तहां पाष्यान सर्व कथा करि अरु नारद वसुदेव को सवादु श्री भागवत उद्धव को सवादु विस्तार सो भगवत तत्व स्थान

वैराग्य जुगुति करि तहां पहले अध्याय करि जदुवंस को छलिबो कहिबो सो कथा पहिले अध्याय महं कहियतु है ॥

अंत—और श्री परमेस्वर जू की भगति उपजै और सकल पापनते छूटैं भगति ते परम मोक्षहि पावै और सुखी होइ और श्री कृष्ण की भक्ति हृदय ते न टरैं प्रेम इति श्री भागवते महापुराने यकादस स्कंधे श्री कृष्ण वैकुंठ आगमनो नाम बज्रसेनि मथुरा राज्य करनो नाम पांडवाहिमारं (?लं) गमनोनाम यकतिसमोऽध्याय ३१ आषाढ मासे कृष्ण पक्षे षष्टम्या बुधवासरे सम्वत् १६१ लिषा हनुमानसरण कनकपुरिया सांगोपुर के जो देषा सो लिषा ॥

विषय—भागवत एकादश स्कध की हिंदी गद्य मे टीका।

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकाल अस्पष्ट है पर अनुमान से सवत् १६०१ है।

संख्या ४८३. भूगोल पुराण, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६ × ५॥ इच पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—१५८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १८४६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० राम अविलाख जी, ग्राम—आमापुर डाक०—पट्टी, जिला—प्रतापगढ।

आदि—श्री गनेसाहइ श्री भवानी जी सहाइ श्रो पोथी श्री गौरीशकर मो श्री पारवती वो वाच ॥ इसामी भुमी का कथो परमान उतपती स्टो का कथो वषान केता धरती केता आकास। केता मरु पमडल कवीलास। केता दीप समुद्र वौ खड। केता प्रवत सकल ब्रहमड। केत तारा मंडल मेघा। कौम परकार रचो वोरवेल। नही ते ताहा कोस वीधी कीआ। कौन कौन परवार वुदी का हीआ। श्री महोदय वाच सुनो देवी पारवती। आदो आविवेती नीरजान नीरालवो नीरालेपो नीराधायो नीराकारो। नीराधारो ताहाहोत सन्य का परवेस ताहा होए आचेतरुप आलेखता आलेखते

अत—दया पर जुग परमान है। ता मध्ये अवतारवुइ

:o: :o: :o:

आथ कलिजुग प्रमान चारीलाख वतीस सहस्र कलिजुग परमान

:o: :o: :o.

इती श्री महापुराने भागवते उमा माहेश्वर समादानो गोरट भोगल पुरान सपुरन समापत सवत् १८४६ साल

विषय—भागवत पुराणातर्गत भूगोल विषय का वर्णन।

संख्या ४८४. माधवानल कामकदला, कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—७६/१० × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—७२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री डा० भवानीशकर जी याज्ञिक, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ।

आदि—ॐ नमो श्री सर्वज्ञाय ॥

प्रणम्य परयाभक्त्या हंसयानां च सरस्वती।
तस्या प्रसाद मासाद्य करिष्यामि कथामिमा॥ १॥

:o. .o: :o:

अस्ति पुष्पावती नाम नगरी तत्र गोविंद चद्रो नाम राजा तस्य राज्ञीना सप्त शतानि तासां मध्ये रुद्र महापट्ट राज्ञी श्रेष्ठ वर्तते ॥ यत: श्यामा यौवन शालिनी मधुर वाक् सौभाग्य भाग्योदयात् कर्णतायतलोचनाति चतुरा प्रागल्भ्य गर्वोन्विता रम्यावाल मराल मथर गतिस्मे तेभकुभस्तनी विंबोष्टी परिपूर्ण चद्रवदना सा नायका पद्ममी॥ इति पद्मिनी ॥

.o: :o· :o·

उक्तच

दीसइ विवह चरिय जाणीज्जइ सज्जण दुज्जणविसेसो।
अप्पाणेण कलिज्जइ हींढी जइतेण पुहमीए॥

:o: :o: :o:

अथ दोहडा

केस कला श्रौ पोरमर सु अलि फुनि गए लगाइ ।
अहि पटतर केउ पाइहै जाइ पताल लुकाइ ॥ १ ॥
बदन सुसोभित तासु है सरद समं ससी जोति ।
अवुज अरुन न पूजइ तार तिमिर भं मोति ॥ २ ॥

o: .o. :o:

धम्मह सब सुष ऊपनं धम्मह भोग बिलास ।
धम्मह जस कीरति वढं धम्मह पूजं आस ॥१३॥

इति काम कदला रूप वर्णन् ॥

अत—— काम कदला जाचोक्त

हे माधव त्व मम निज गुणान् दवर्श ॥ त्व महा गुणिनः सतियतः ॥
जजह रसेन रसिय सोत पिरवेण अमीय सारिछ ।
भसला रम्मति णलणी घुण कोडा सुष्क कट्ठाइ ॥
भमगे जानं रस विरस जो चुवइ वनराइ ।
घुण क्या जाणइ वापुरा जं सूषा लकरा करा षाइ ॥

o .o. :o:

क्रमेण शैल मलीलेन भीद्यते । क्रमेण कार्य विनयेन सिध्यते ॥
क्रमेण शत्रु कपटेन हन्यते । क्रमेण मोक्ष युक्तेन गम्यते ॥

इति माधवानल कामकदला कथा पूर्ण

विषय——माधवानल कामकदला की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य——प्रस्तुत रचना की विशेषता यह है कि इसमें संस्कृत के साथ साथ प्राकृत, अपभ्रंश और हिंदी (प्राचीन) के भी वर्णन मिलते हैं । प्राकृताभास और अपभ्रंशाभास हिंदी के भी नमूने मिलते हैं ।

संख्या ४८५. योग रत्नाकर, कागज-देशी, पत्र——२६, आकार——१०$\frac{3}{8}$ × ६$\frac{1}{8}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)——१६, परिमाण (अनुष्टुप)——९८८, खंडित, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि-नागरी, लिपिकाल——सं० १९०७ वि०, प्राप्तिस्थान-नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि——. . . . .

धातु थभण उपाय

हिंगलो टां १ होरा बोलटा १ अ (?फी)ण टां १ विणीऊ कपूर टां १ . . . . . . मां प्रहर २ वाटोइ गोली १ साके लीजे चणा बोर प्रमाणे वालोइ पछेली बुरी . . . .गन ऊपर ऊनो कर वोवू सोइ घडो ४ धातु थभण थाइ पछे लिवु . . .

अथ अडवधीनो ऊषध

ऊखलोट टा १ जिरु टा १ गायना छाणना रस सूं भींजवी वाटी ऊपर षरड कीजे माथे एरडोऊ तेल चोपडवो माथे एरडनो पांन बाधवो अग्नो थी सेक करवो अड वृद्धि मिटे ॥

अथ माथा ना गुवडानो ऊषध छे

पारो छु १ भार गधक छु १ ॥ भार हीरा दवण १॥ बोदार सिंदूर छु १ मणसल छु १ फटकडी छु १ भार सोना गेरु छु १ ए सर्वे ऊषध वाटीणाअना घी मा वाटीने माथे चोपडवा गूंवडा करो लिया वावर सर्वे मिटि जाये ॥

अत—— ॥ अथ घोडा चोलीनो गोलीनो पाठ लिख्योछे ॥

पारो टा ४ वछनाग टा ४ हरताल टां ४ गधक आमलसारो टा ४ मणसिल टां ४ हरडे मोटी टां ४ बहेड़ा टा ४ सुठ टा ४ पोपर टा ४ टकणषार टां ४ अजेपाल टां ४ आटा मां अजेपाल पचवीइ वछनाग दूध मां डोलका जत्रं पचवीइं पछे मरच माहि भेलो वाटणो पारो मणसल भेला वाटीए बीजा सर्व ओषध भेला वाटी जै पछे सर्व ओषधने जल भागरानां रसना पट ७ दीजं पछे

चिरणीया बोर प्रमाणें गोली कीजें ।। अथ गोलीनां गुण लिष्यते ।। षड अमरां मिसूं दिज तो कामा मा बलवत होए नागर वेल सूं दीजें तो महा प्राक्रमी थाइ ।।

:o: :o: :o:

मध सें दीजे तो सर्व व्याधी रोग टले ५०

इति श्री घोड़ा चोली नां गोली नो कलप सपूर्ण ।। इति श्री योग रत्नागर ग्रथे ऊषध नांम गुण सपूर्ण ।। श्री सवत् १९०७ ना वैशाक विद १४ गुर वासरे ।। भुज नगरे लिषावितं ठकर श्री ५ जे राम वोर्द्धमान् गोकुलदाश ।। लिषीत गुगली ज्ञातीय परसोतम सीव जी आत्मीतेन लिख्यते वैद्यक ग्रथम् ।।

विषय—रोगों की औषधियों का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रथ के साथ निम्नलिखित ग्रथ और है—

वैद्य मनोत्सव—नयनसुख कृत ।
रामविनोद—राचद्र कृत ।

सख्या ४८६. रागमाला, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—$६\frac{१}{१०}$ × $५\frac{२}{१०}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—१०५, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—नादभेद वर्णन ।।

जगमे सुव सुरतिकिहे वाजा साढे तीन ।
षाल तार अरू फूंक के अर्द्धताल सुर हींन ।।२४।।
षाल नगारा ढोल डफ और वशाउज जान ।
तार तबूरा वीन है अवर खाव वषान ।।२५।।
फूंक नफीरी वासुरी आसुर नायक नाय ।
ताल षाकरो झाझ है बाजा दियो बताय ।।२६।।
बैठे आसन उठधितव शुद्ध होय आलाप ।
चलते लेटे सुरभो मानो महा कलाप ।।२१।।

।। षटरितु वर्णन ।।

भौरौं सारद कार्तिकी (?कौसिकी) सिसिर हिडोल वसत ।
दीपक ग्रीषम हेम श्री मेघ सो पावस अत ।।२८।।

।। अथ औषध वर्णनं ।।

सिंगावली जो मुलहठी विरहनि यासो आन ।
हर्द कूठ एवरा सोधा जीरा जान ।।२९।।
भगरा अवर अमोद है बहुरि सतावरि ल्याय ।
समके पीसं छानि करि प्रात समय मुष देइ ।।३०।।
येक हथोरी भरिस साधं दिन चालीस ।
हृदि उपजावे बहुत कं विद्या वृधि जगदीस ।।३१।। इति ।।

अत—राग छयौ श्रीराग याको गुर देवता ।

याको वषत घरोदस ।। गावत सांझ समय ।। याकी रागिनी पाच ।। प्रथम रागिनी मालवा ।। वषत घरी दुइ ।। याकी भार्या तीनि ।। गौरी वषत पल चालीस ।। भार्या दुसरी ।। पुरियां वषत पल चालीस ।। रागिनी दुसरी त्रिवेनी वषत घरी दुइ ।। भार्या दुइ ।। वैराठ वषत घरीयेक ।। द्वितिये अहेरी वषत घरीयेक ।। रागिनी कल्यान वषत घरी दुइ ।। भार्यायेक ।। ईमन ।। वषत घरी दुइ ।। रागिनी चौथी कान्हरा वषत घरी दुइ ।। भार्यायेक ।। आमहिया वषत घरी दुइ ।। रागिनी पचई केदारा वषत घरीदुइ ।। भार्या येक ।। मारू वषत घरी दुइ ।।

इति रागमाला संपूर्ण ॥ राग छा ॥ रागिनी तीस ॥ भार्या अड़तालीस ॥ यें सब मिलाइ कैं चौरासी ॥ तिन अरोहि चढावैं ॥ फेरि उतारैं ॥ ऐसोई विश्राम संभारैं ॥ ॥ सपूर्ण ॥

विषय—राग रागनियो का वर्णन ।

सख्या ४८७. राधासुधानिधि (काव्य) टीका, मूलकार—हितहरिवश जी, टीकाकार—अज्ञात (स्थान—वृंदावन), कागज—देशी, पत्र—४६, आकार—६ × ५½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप)—१८७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६५२ वि० प्राप्तिस्थान—श्री हिंदी साहित्य पुस्तकालय मौरावाँ, जिला—उन्नाव ।

आदि—............स्तन की सोभा सुमेर की सोभा कु विस्तारे है ॥ रास में चरण धरिवे की आधा रत्नन के मडल पै ऐसी सोभा दिये है मानो गुलाब की पांखुरी विछाई है श्री प्रियाजी के पीछें चलें ऐसी जो ब्रज सुदरीन की समूह ताहिमें भावना करूं हू ॥८६॥

मूल

देवानामथ भक्त मुक्त सुहृदामत्यत दूरचयत्प्रेमानद रस महासुख करचोच्चरितं प्रेमतः । स्वप्रेम्ण श्रृणुतेजयत्यथ मुदा गायत्यथा लिष्यय जल्पत्यश्रु मुखोर्हरिस्तदमृ त राधेति मे जीवन ॥६६॥

टीका—देवतान कू हरि भक्ति के मुक्त सुहृदतिनकू दूरि है राधानाम नाम कैसो है प्रेमानद को रसरूप है महासुख के करनवारो है जा नाम कूं जो प्रेम सो उच्चार करैं तब लालजी प्यारसों सुनैं आप जं गान करैं सखीन मैं प्रेम के आसू लाल के आय जाय वाकू हृदयसो लगावें सो अमृत रूप राधानाम मेरो जीवन है ॥६८॥

अंत— मूल

अद्भुतानदलोभश्चे नाम्नारस सुधानिधि. स्तवोध कर्णचलशं ग्रंहीत्वा पीयतावुधा ॥२७०॥

अर्थ—आनद तो है ही पर जो अद्भुत आनद को लोभ होइ तो है विवेकी हो रस रूप की निधि जो यह स्तोत्र है ताहि कर्णकलसन मैं करिकैंपान करौ ॥२७०॥ इति वृंदावनेश्वरी चरण कृपा मात्र विजृभत श्रीराधा सुधानिधिस्तव श्री हित हरिवंश गोस्वामीना विरचितः समाप्तः लिखित रामप्रसाद पाठक आत्मार्थ मिति मार्ग शीर्ष शुक्ल प्रतिपदाया रविवासरे संवत् १६५२

विषय—राधा सुधानिधि काव्य का अनुवाद ।

सख्या ४८८. रामगीता या ब्रह्म जिज्ञासा, कागज—देशी, पत्र—६०, आकार—७८⁄₁₀ × ५४⁄₁₀ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, रूप—प्राचीन, पूर्ण, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८७ वि० प्राप्तिस्थान—श्रीयुत गोपालचद्र सिंह जी, विशेष कार्याधिकारी, हिंदी विभाग (अनुवाद विभाग), प्रातीय सचिवालय, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेश रूप गुरुवे नम ॥ अथ रामगीता लिष्यते ॥ ब्रह्म जिज्ञास ॥ ॐ ॥ श्री शिवोवाच ॥

श्री जो है लक्ष्मी सो दुइ प्रकार की है ॥ एक ऐश्वर्य रूप ॥ दूसरी सचितानंद रूप जिसको नित्य कहते है जिसको चितघन कहते है जिसको आनद कहते है जिसको गुण और रूप तें रहित कहते है जिसको आनद रूप कहते है जिसको सभ ते परे सभते उत्तम कहते है जिसको राग द्वेष तें रहित शुद्ध कहते है ऐसी जो ब्रह्म लक्ष्मी शुध कहते है इस ब्राह्मी लक्ष्मी को अरु अणमादि ऐश्वर्य रूप लक्ष्मी कर जो युक्त हो वरण सो कहिये श्री शिव शिव कहिये कल्याण रूप सो श्री शिव कल्याण रूप पार्वती को कहत भये ह हे पार्वती कहिये हिमालय पर्वत की जो है पुत्री सो कहिये पार्वती अर्थ यह जो पार्वती जो ब्रह्माकार वृत्ति रूप है सो सचिदानद रूप शिव को सन्मुख देषती है अरु हिमालच पर्वत कहीये निर्मल जो सात्विकी ॥ अतहकर्ण है सीतल हिम रूप राग द्वेष उष्णता तें रहित सो कहिये हिमालय पर्वत तिसकी जो कदरा होवे सो कहीयेपार्वती अर्थ यह जो निर्मल हो सीतल अतहकर्ण विषै ब्रह्माकार वृत्ति उपजती है ॥ ऐसी जो ब्रह्म विद्या रूप पार्वती

है तिसको सचितानंद रूप शिव जी कहत भये अर्थ यह जो जीवों के कल्याण नमित्त शिवजी पार्वती कों रामजी का संवाद कहत भये

प्रश्न---जो सत क्या हे अरु असत क्या हे सत जो पुण्या है तिसकी ओर प्रीति कर्त्ता है और असत की ओर तें विरक्त होता है तब क्रम कर साधन चतुष्टय प्राप्त होते है वैराग्य विवेक षट संपदा रूप जो एक साधन है शम दम उपरत तितिक्षा श्रद्धा समाधान एह षट संपदा रूप एक साध......जी को उपदेश करी जीवो के कल्याण नमित्त जो इसको पड़ेगा अथवा सुणेगा भक्ति कर्के सो मुक्ति कों प्राप्त होवेगा इस विषे संदेह नही

इति श्रीमत अध्यात्म रामायणे उमा महेश्वर संवादे रामगीता वर्ननं नाम पंचदशो-ध्यायः ॥१५॥

लिपि कृतं ठकुरु प्रीतम रामेण भाइ निधाह्या रामस्य पठनार्थ ॥ संवत १८८७ मिती श्रावण वदि ११ भृगु वासरे लेखक पाठकयोर्मंगल ॥

विषय---अाध्यात्म रामायण के आधार पर शिव पार्वती सवाद के रूप मे ब्रह्मज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य---ग्रथ खडी बोली गद्य मे है, जिसके कारण यह महत्वपूर्ण है । यह गद्य स० १८८७ के पहले का है । यह काल लल्लू जी लाल के समय के लगभग है । पुष्पिका मे स्पष्ट लिखा है कि लिपिकर्ता ठाकुर प्रीतम राम है जिन्होने स० १८८७ मे यह नकल की । अत मूल रचना इस काल से पहले की होगी, यह निश्चित है ।

संख्या ४८६. रामचरित्र कवित्तबध, कागज--देशी, पत्र--७, आकार--९ X ६३/४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप)--१५४, खडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--स० १९११ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री हिंदी साहित्य पुस्तकालय, मौरावाँ, जिला--उन्नाव ।

आदि--

:o: :o: :o:

....तासो पुनि छानो ।
समथ और कहू न सुना हम मौन धरैं यहि भाति को बानो ।
छोडि रमापति जानकी जीवन ना अपने मन मे कहू आनो ।
पापिन को हवै पाप सुनासन दीनदयाल न दूसर जानो ॥१७॥
जान्यौ न जानकी जीवन बावरे कारज सुद्ध न येकऊ औरे ।
भूलि गए धन धाम धरा लषिते सपने हमते समु बौरे ।
आज लगे सुत दारा सहोदर ताके लये सब भाँतिन दौरे ।
नाहिर कै है सवासही तब ज्वाब करैं जमते जब रौरे ॥१८॥

अंत--

निलज निकाम निरबुद्धि नीच भांति भांति
औरि बात जानत न तीनि जून पाइ के ।
कपटी कुचाली कूर कायर कपट वारे
कुटिल कृतघ्न विधि विधि कौन विधि भाइके ।
मानुषि जनम पायो हरि के न गुन गायो
साधु बिसराइ डारयौ मन वच काइके ।
हाइ हाइ सौतुष की कहत कहानी कौन
सपने न सेवक कहायो राम राइ के ॥६६॥

इति श्री रामचरित्र कवित्त बंध समाप्तं ॥ माघ मासे सुक्ल पक्षे तिथौ षष्टम्यां भौम वासरे संवत् १९११ शाके १७७६ श्री रामोजयति श्री रामचद्राय नमः श्री राम राम श्री राम लिष्यतं बेनप्री साद कवि सरेनी के राम ।

विषय—रामचरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना प्रारंभ मे खंडित है। प्रस्तुत ग्रंथ के साथ निम्नलिखित ग्रंथ एक हस्तलेख मे है—

१ रामायण राम लवु चरित्र—नाथ (?) या दुनियापति।

२ भागवत (दशम स्कंध)—गिरधारी ।

संख्या ४६० राम पचाध्यायी, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—५३/४ × ३५/८ इंच, पंक्ति(प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—७, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—श्री शंभुप्रसाद जी बहुगुना, अध्यापक, क्रि० डी० ए० वी० कालेज लखनऊ।

आदि—

. . . . . ब ग्रहपति वधु बिसारे ।
बरसत मदन गोपाल मनोहर मनसिज ताप निवारे ।
हरषित वदन वक अवलोकनि सरस मधुर धुनि गावैं ।
मधुमय साम समान अधर धरें मोहन बेनु बजावैं ॥ १ ॥
राम रच्यौ बन माही ।
विमल कलप तरु छाहीं ॥
विमल कलपतरु तीर सुपेसल सरद रैनि वर चदा ।
सीतल मंद सुगंध पवन बहै तहा खेलत नदनदा ।
अद्भुत ताल मृदंग मनोहर किंकिनि शब्द कराहीं ।
जमुना पुलिन रसिक रससागर राम रच्यौ बन माहीं ॥ २ ॥
देषत मधुकर केली ।
मोहे षग मृग बेली ॥
मोहे मृग धेनु सहित सुर सुंदर . . ।
.०· :०· ·०.

—खंडित रचना की पूर्ण प्रतिलिपि

विषय—श्रीकृष्ण और गोपिया के रास का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना खंडित है। केवल संख्या ४६ का एक पत्र उपलब्ध है। रचना उत्तम होने के कारण ही विवरण दिया गया है।

प्रस्तुत रचना 'रसिक अनन्य' सेवक या सेवक दास कृत 'हरिवंश यश' आदि रचनाओं के साथ एक हस्तलेख में है। इस दृष्टि से अनुमान होता है कि प्रस्तुत रचना भी उन्हीं की होगी और यदि उनकी नहीं है तो किसी राधावल्लभी की है।

संख्या ४६१ वास्तु प्रदीप, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—१४, आकार—८५/८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६१७ (?) वि०, लिपिकाल—सं० १६६१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री बदरीनाथ जी पांडे, स्टेशन मास्टर, स्थान व पोस्ट—मोहनलालगंज, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ गृह विचार ॥ भाषा में याको अर्थ कहते है वर्णन पर ॥ अ वर्ग के स्वर ८ यहि आदि दै कै आठौं वर्णन का पूर्व दिशा आदि दै कै जानव औ फिरि मनुष्य के वर्ग का स्वर और दिशा के वर्ग का स्वर एक मा जोरि देव आठ से भाग कै कै जे शेष रहैं तौने गृह कै दशा जानव

एक शेष रहै तौ सूर्य कै दशा दुई शेष रहै तौ चद्र दशा। तीनि शेष रहै तौ मगल कै दशा चारि शेष रहै तौ बुध पांच शेष रहै तो शनि दशा छा शेष रहै तौ गुरु दशा सात शेष रहै तौ राहु कै दशा आठ शेष रहै तौ शुक्र कै दशा जानव सूर्य दशा वर्ष ६ चद्रदशा वर्ष १५ भौम दशा वर्ष ८ बुध दशा वर्ष १७ शनि दशा वर्ष १० गुरु दशा वर्ष १६ राहु दशा वर्ष १२ शुक्र दशा वर्ष

२१ जेहि ग्रह कै दशा पहिले ग्रावं तेहिते ग्रादि दै कै ग्राठऊ ग्रह कै ग्रापने ग्रापने वर्ष के प्रमान कै कै जानव

ग्रंत— **भाषा**

लवा जं हाथ होइ तते हाथ लेइ ग्रौ जं हाथ चाकलि होइ तं हाथ लेइ इन सबका एक तीर करं तेहि का तिगुन करं तेहिमा एक छोडि देइ वाको रहै तिनका नवते भाग लेइ एक बचं तौ दाता द्वि २ बचं तौ नृपति क्रम ते जानव ।।

इति श्री वास्तु प्रदीपे गृहारंभ गृह प्रवेश विचार समाप्तम् सं० १६१७ ।।

विषय—वास्तुशास्त्र का वर्णन किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकाल स० १६१७ है। अनुमान से विदित होता है कि यही लिपिकाल रचनाकाल भी है।

प्रस्तुत रचना मूल संस्कृत ग्रथ की टीका है।

संख्या ४६२ वास्तु विद्या (भाषार्थ), कागज–देशी, पत्र—१३, आकार—१०$\frac{६}{१०}$ × ४$\frac{५}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० भीष्मदत्त जी दीक्षित, ग्राम–नराइन का पुरवा, डाक०–लालगंज, जिला–रायबरेली।

ग्रादि—श्री गणेशाय नमः

ग्रब वास्तु विद्या कहियत है याके उपरांत प्रवीन ज्योतिषी के प्रीति के निमित्त ब्रह्माते गर्गादिक मुनिन करि परंपरा ते पायो ऐसो वास्तु ज्ञान कहियतु है ग्रब वास्तु उत्पत्ति कहियत है कोऊ एक बडो ग्रसुर स्वर्ग की भूमि को ग्रपनी देह बढाइ कै रोकत भयो ताको देवगण शीघ्र ही तरे को मुह करिकं दे मारत भए जहा वाको घेर गिरयौ तहा वाको लीन्हे देवगण तहाई रहत भए ग्ररु याको ब्रह्मा देव मय वास्तु पुरुष करत भये ग्रागम को कह्यौ है ग्रब राजा ते लैकरि द्विज पर्यंत पाँच पाँच घर कहत है नृप को मुख्य घर एक सौ ग्राठ हाथ को चोरौ कीजै ग्ररु चारि घर ग्राठ ग्राठ हाथ करि घाटि कीजै १०८।१००।६२।८४।७६। ग्ररु पाचौ घरन की चकराई ते सवाई सहित लवाई कीजै १३५।१२५।११५।१०५।६५ इतने हाथ पाँचौ घर की लबाई कीजै ग्रब सेनापति के घर को प्रमान सेनापति को मुख्य घर ६४ चौसठि हाथ को विस्तार कीजं ग्रौर चारि घर छ छ हाथ घाटि कीजै ६४।५८।५२।४६।४० ग्रब यामे षष्टाश षष्टाश युक्त कीजं तौ पाँचौ घरन की लवाई प्रथम घर की लबाइ हाथ ७४ ग्रांगुर १६ दूसरे घर की लवाई हाथ ६७ ग्राँगुर १६ तिसरे घर की ६०।१६ चौथे घर की ५३।१६ पांचयोघर की ४६।१६ लवाई जानि लीजै

ग्रत–भूरि पुष्पनिकर सा तोरण होय पूर्ण कल वं उत्तर पश्चिम शिरहानो न करिये नग्न न सोइयै ग्रोदे पाइन न सोइयै जो श्री चाहै ग्रब गृह प्रवेश मे लक्षण बहुत है पुष्प समूह जामे तोरण भरे कलशन करि शोभित धूप गंध बलि इन करि पूजित देवता द्विजन के वेद शब्द सहित ऐसे घर में प्रवेश कीजै

इति श्री भट्टो० श्री महा० ग्रचलसिंहाज्ञया भाषार्थ कथनं वास्तु विद्याध्यायः

विषय—वास्तु विद्या का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता का नाम अविदित है। केवल इतना विदित होता है कि महाराज अचलसिंह की आज्ञा से प्रस्तुत अनुवाद हुआ है। यदि ये अचलसिंह डौडियाखेरा (अवध) के राजा हों तो ग्रंथ का काल स० १८०७ वि० के लगभग मानना उचित होगा क्योंकि इस काल मे राजा अचलसिंह राज करते थे।

संख्या ४६३. विवेकसार, कागज–देशी पत्र—१०, आकार—८$\frac{१}{१०}$ × ६$\frac{६}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप)—६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८३३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री महंत बाबा रामशरनदास जी, कबीरपंथी मठ, ऊँचगांव, पोस्ट–बाजार शुकुल, जिला–सुलतानपुर।

आदि—सत्यसही सांमर्थ कबीर धर्मदास की दया ॥ वस बयालीस की दया ॥ साहेब सुरति गोपालदास की दया ॥ सकल संत महतन की दया ॥ लिषितं ग्रंथ विवेकसागर ॥

सत्य पुर्स कों करहु प्रनामा । पावहु प्रेम वृद्धि विस्रामा ॥
वेउँ सुमति मै सुमिरौं ताही । पर्म पुर्स गति कोइ जानत नाही ॥
कहै कबीर सुनहु धर्मदासा । भवसागर तें होहु उदासा ॥
॥ समौ ॥
वीप ज्ञान वड़ ज्ञान है सुष संतोष समान ।
कहैं कबीर विवेक वल पावहु पद निर्वान ॥

अंत—विवेक सागर जो पढ़ै सुनावै । मोक्ष्य औ मुक्ति पर्मपद पावै ॥

॥ समौ ॥
मेटेउ सर्भ विवेक वल अटल भयौ दल साजि ।
अव तौ मरण निर्मल भयौ गयो मोह दल भाजि ॥
जब लग नाहि विवेक मत तवलगि लागु न तीर ।
भवसागर नामी तरे असकथि कहहि कबीर ॥

एतो ग्रंथ विवेक सागर सपूरन समाप्त सुभमस्तु ॥ सवत ॥ १८८३ ॥ समय नाम: फागुन कृष्ण पक्षे ॥ तिथ्यौ त्रुतिय वार एतवार ॥ जो प्रति देषा सो लिषा मम दोसे न दीयते ॥ मोकाम महुलारे मे ॥ दसषत षरगदास वैरागी के ॥ सतगुर कबीर धर्मदास की दया ॥ सकल सतन्ह को दास ॥

विषय—सतमतानुसार ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—विदित होता है कि किसी कबीरपंथी ने इसकी रचना बहुत पीछे की है । प्रस्तुत रचना के साथ एक ही हस्तलेख में 'कुर्माविली' भी है ।

संख्या ४६४. शकर कवच, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—१०८, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८३५ वि० ।

आदि—सुमीरण करत ॥

अरोहीण जगनहरहत मीरनाम लेत सप्रेम ॥
नहो टरइ ताको नेम ॥
ॐ जयहिइत्र नाम ॥ सो सकल वीधी गुन धम ॥
सुमिरं मृत्युजय जेही ॥ ते जन्म कवहु न लेही ॥
जय महादेव सुधीर ॥ तन सुभग मोति वलवीर ॥
तव नाम नाथ अनेक ॥ सुमीरत समेत विवेक ॥
नरहोही भाग्य निधना ॥ सुख सुजस मेरु समन ॥
पुनि कहै श्रुति मत नीक ॥ जग वीदीत अहै सलीक ॥

अंत—

तनु अछात सुभ गुन गरोहो । वीनु तरनी भव निधि तरोही ॥
यही वचन नहीं चीत धरोहो । सो विखम ज्वाला जरोही ॥
हरकहत कटत कलेस । सीव कहत हो ही नरेस ॥
सभु कहत वुदेह । कौ लखं श्रुति को भेव ॥
संकर कहत धनवान । नरहोहि परम सुजान ॥
गोरीसनाम पुनीत । कहो होहि समर अजित ॥
जो चवसेखर कहै । सोनीकज सतत रहै ॥
पसुपती कहै नर जोइ । पसु जोइनी भ्रम नहीं सोइ ॥

त्रीपुरारो......शंकर कवच समत् १८३५ ॥

—अपूर्ण

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या ४६५. शब्दसुरति संवाद, कागज—आधुनिक, पत्र—३२, आकार—८६/१० × ६६/१० इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—३२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—लिष्यते सब्दसुरति संवाद ॥

॥ सोरठा ॥

निरमल अमल अपार आदरस अकह सोहावनं ।
है आ अंक अषड प्रमप्रकास अनास जू ॥
महाप्रकास ब्रह्मंड तामें आदि ब्रह्म है ।
निराधार निह अंक निरभै अवबुद रूप जू ॥
जांने भेदी संत तासे सति ब्रह्म है ।
षोडस ब्रह्म तेहि अस कारन कारज कीन्हेउं ॥
सुनो सुरति सो जस आदि इक्षा पुनि कीनेऊ ।
जीव सोहं देइ साथ उलंघनि अभ्यचेतनि ॥

अंत—भर्म अनेगन नार है जो समुझै चितलाये ।
आड़ अटक कछु नार है अस्थिर पद सो पाये ॥
महाप्रकासपद बरनत आदि अंत मिलि जाये ।
काल कर्म यहवार है हस अगपद पाये ॥

सुरति शब्द सपूरण सम्वाद संम्पूरण ॥

विषय—शब्द और सुरति के सवाद रूप मे ब्रह्म ज्ञानोपदेश वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना जिस हस्तलेख मे लिपिबद्ध है उसमे जवाहिरपति की दो रचनाएँ 'शब्दप्रकाश' और 'साखी' भी है । इससे यह अनुमान लगाया गया था कि प्रस्तुत रचना भी जवाहिर की है । परतु समस्त रचना को पढने मे ऐसा कुछ भी विदित न हो सका । अत इसको किसी अज्ञात कवि की रचना मान लिया गया है ।

सख्या ४६६. षट्पद के भेद, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—११६/१० × ४६२/१० इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—१८०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशायं नमः ॥ सरस्वत्यै नमः ॥

॥ दोहा ॥

गुरु लघु लो कुसुमनि वहे नव रस मे रसलीन ।
षट पद के अवतार को समुझो सुकुवि प्रवीन ॥ १ ॥
अजय विजय के भेद को समुझो सकल सुजान ।
कियो न और उदाहरन याही ते पहिचान ॥ २ ॥

अजयनाम षट्पद यथा

आवंता जे वुग्ग धीर वीरा गाजंता ।
मातंगा उतुंग जग जुट्टे भाजंता ।
सावता जुज्झार षग्ग धारा धावंता ।
पीवंता जे संगि जुझ्झ जुझ्झे भावंता ।
गावती जिते अक्षरी रूरा सूरा सचए ।
रामो लंका रूसंतए सो देवा सिद्धा नंचए ॥ १ ॥

SSSSSISISSSSS.
SSSSSISISSSSS.
SSSSSISISSSSS.
SSSSSISISSSSS.
SSSSSSISSSSSSIS.
SSSSSSISSSSSSIS.

गु० ७० ल १२ अक्षर ८२॥

अत—॥ कुदनाम षट्पद यथा

गिरत रथ्थि सारथ्थि सूर रन रग ठारज्जिय ।
भिरत मत्त मातग जग करिवार तरज्जिय ।
निरत संभु कप्पाल माल धर पद्य लरज्जिय ।
तिरत भूत वेताल सिधु सोनिल भरज्जिय ।
बाजत जीति निसानवर धीर वीर भारथ्थ किय ।
सावत भीर गभीर मथि सो सुग्ग मग्ग पारथ्थदिय ॥२८॥

IIISISSISIIISIISII.
IIISISSISIIISIISII.
IIISISSISIIISIISII.
IIISISSISIIISIISII.
SSISISSIIISISISSIII.
SSISISSIIISISISSIII.

गुरु ४३ ल ६६ अक्षर १०६
कमल नाम षट पद यथा

—अपूर्ण

विषय—छह पदो वाले छप्पय (षट्पदी) छदो के निम्नलिखित भेदो का वर्णन—१ अजय, २ विजय, ३ वलि, ४ वर्स्स, ५ वीर, ६ वेताल, ७ वृहत्, ८ मक्कल, ६ हरि, १० हर, ११ ब्रह्म, १२ इदु, १३ चदन, १४ सुशुभकर, १५ श्वान, १६ सिघ, १७ शार्दूल १८ कुभ, १६ कोकिल, २० खर, २१ कुजर, २२ मदन, २३ मत्स्य, २४ तालक, २५ सेल, २६. सारग, २७ इष्ट, २८. शर, २६ सुशर, ३० कुद और कमल ।

सख्या ४६७ सप्तव्यसन, कागज—देशी, पत्र—१६०, आकार—८$\frac{1}{8}$ × ६$\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—२५२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६३७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर (बडा मदिर), चूडी वाली गली, चौक, लखनऊ ।

आदि—ॐ नमः सिद्धेभ्यः अथ सप्त व्यशन लिख्यते ॥

॥ छदमाती ॥ सवैया ॥ २३ ॥

श्री जिनदेव सिद्धारथ नंदन के जुगपाद सरोज निहारे ।
पोत भवोदधि के सुथरे जगजीव अनेकन पार उतारे ।
अतम तीरथ के करता मदमान महान विदारण वाले ।
सो प्रभु सन्मति सन्मतिदायक दूरि करो दुष दोष हमारे ॥ १ ॥
राजत नाभिनरेस्वर के घर मे रजनीकर श्री करनीके ।
नरतत नष्ट निहारि तिलोत्तम जानि विषै सुष लागत फीके ।
फोरि मिथ्यात कुलाचल निश्चल नाथ भए त्रयलोक महीके ।
आपतरे अर औरण तारत पाद सरोज नमो जिनही के ॥ २ ॥

अत—

तब श्री राम लषन दोउ वीर । आए जनकसुता के तीर ॥
देषिराम शिय हरषित हियो । परम प्रीति करि बुख भागियो ॥१६॥

श्री जिनधर्म तने परभाव । आनंद मंगल होत बधाव ।।
शीलरतन कौं जतन समेत । राष्यो शियापरम सुख हेत ।।१७।।
जो नरनारि शील कौं धरै । निश्चै मुकति रमनि को वरै ।।
शीलवंत के किंकरदेव । आप करैं निति बरनन सेव ।।१६।।

।। दोहा ।।

नरक तीसरे माँहि जो रावन पहुँचो जाय ।
ताके दुख बरनन करत कौन कवीश्वर आय ।।१६।।
ऐसो भविजन जानिकरि त्यागि पराई नारि ।
सम्यक दृढ वृत राखियैं सुरग मोक्ष सुखकार ।।२०

इति श्री परस्त्री विसन कथा सपूर्णं ।। इति सप्त व्यसन सपूर्णं ।। लिखितं अषाढ़ सुक्ल ।। ५ ।। चंद्रवार ।। सवत् १६३७ ।। श्री ।। श्री ।।

विषय—सात व्यसनो—जूवा, मासाहार, मदिरापान, वेश्यागमन, तस्करी, आखेट और परस्त्रीगमन के दुष्परिणामो का वर्णन। उदाहरण के लिये प्रत्येक व्यसन पर एक एक कथा कही गई है।

संख्या ४६८. साठिका (सवत्सर), कागज—देशी, पत्र—२६, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८१७ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—।। अथ शठिक लिष्यते ।।

प्रवभः संवत्सरो नाम ।

मेघा घना वरषै सी मास ४ भरि वर्षेगे मध्य देश मवी राज नवौ पीरा होईशी अन्यत्र देश सुषी राज चैत्र

इति विभवनाम सवत्फलम् ।

विश्नु स्वामी सुकाल १२ विल्पव स्वामी नरो धना होइशी लोग हरती तीलग देश महा पीरा राज भगु कुकुन देश मुलतान देश अन्य देश सुष कल्यान इतिभव नाम सवत्फलम्

इति शुक्ल नाम सवत्सर फल

उत्साह प्रचैत्र अन्न सग्रह करिवौ वैशाख ज्येष्ठ फराक आषाढ श्रावन भादौ दुभिक्षं अस्वनि वरषा सुनी सकल अन्न सफलंतु अवर मास मस्तभल शेष सब विधाकरौ मनुष्यादि कुजर·

सुकुल नाम सवत्सर फलम्

मेघ घना वरषैशी अन्न शुफल फलैशी चैत्र वैशाख रौ रष मध्य वैसाख मे छव सताप पीरा तथा मेवत दश।. पीरा वैशी विराषुउरा डरैशी मनुष्य भरैसी छना हस्तिनापुर तीलगदेस दरभग होइसि भमिफपुहोइसि ज्येष्ठ आठ स्रावण भादौ भादौ आश्वनि वरषा तथा अन्न मदौ अवर मास समस्त भल पश्चीम पी.ा पूर्व विग्रह जीम गाउ अति पीरा चतुर्थह अतिमहर्घ अति प्रमोव नाम सवत्फलम्

अत—इति क्रोधी सवत्स फलम् ।५६

सौराष्ट्र वारादेस कुकु नेप वराननै चैत्र कलह वैशाख उत्पात होइशी अन्न सदार्घ ज्येष्ठ आषाढ श्रावण भादौ दुभिक्ष अल्पमेघ आश्विन वर्षा नास्ति साषा सोषेशी अर्द्धभाग उपजैशी जुनारिनाजु उपजैगे कार्तिक मार्गशीर्ष मदौ सालि शेऽिका उपजैगे अन्नसग्रह करिवौ अगिले चौमासे माहा दुकाल परैशी पौष माघ फाल्गुण अन्न समहर्ष इति छय नाम सवत्सर फलम ६० इति साठिक सपूर्ण सवत् १८१७ समय

विषय—ज्योतिष। सवत्सर साठिका वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रथ संस्कृत मे है जिसकी टीका हिंदी मे की गई है। ग्रथ मे साठ वर्षों के (सवत) फल लिखे गए है।

संख्या ४९९ सारंगधर वैद्यक, कागज—देशी, पत्र—३१, आकार—१०।। X ४। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५, पूर्ण रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० ब्रजभूषण पाठक, ग्राम—बस्तारनपुर, डाक०—कजा, जिला—जौनपुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। अथ नाडी परीक्षा ।।

हाथ के अगूठ की जड मे जो नाडी चलती है सो जीव की साक्षी है ।। वैद उसकी चेष्टा गति देषि कै सुष दुःख पहिचान लेई ।। वाय प्रधान नाडी जोक सर्प की नाई चलती है ।। पित्त प्रधान नाडी गौरा कौ आमेध की चाल चलती है ।। कफ प्रधान नाडी हस और कबूतर की चाल चलती है । दो दोष की नाडी कही धीरी कही जलदी चलती है ।। जो नाडी अपने स्थान को त्याग देती है सो प्राण की हनने वाली है ।। जो नाडी दश पाच वेर चल के वद होय औ अति धीरी चलै औ अति ठडी होय तौ रोगी न जीयेगा ।। ज्वर की नाडी गरम है ।। जलवती है ।। कामातुर की नाडी औ क्रोध की जलदी चलती है । चिता औ क्षय की नाडी छीण होती है ।।

अत—पित्त ज्वर पर नील कमलादि हेम ।। नील कमल ।। वलिपारा ।। दाख ।। महुआ ।। मरेठी ।। खस ।। पद्माख ।। खभारी फल ।। फालसा ।। यह शीत ज्वर प्रलाप भ्रम छर्दि मोह तद्रा सर्व हर्ता है ।। जीर्ण ज्वर पर गुडच्यादि हिम ।। गुरच के हिम से जीर्ण ज्वर जाता है ।। रूसा के हिम से कास रक्तपित्त ज्वर जाता है । धनिया का हिम प्रात शकर डारि पीये से अतर्दाह तृषा मूत्ररोध ए रोग नाश होए ।। रक्त पित्त पर धनिया हिम ।। आवरा ।। रूसा ।। दाख ।। पित्त पापरा ।। इस हिम से रक्त पित्त ज्वर दाह तथा कठ शोथ सब दूर होय ।। इति श्री शार्ङ्गधरे हिम कल्पना ध्यायो चतुर्थ समाप्त सवत् १८४८ ।।

विषय—(सारंगधर वैद्यक) राग, उनके लक्षण तथा औषधियों का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ शारंगधर (संस्कृत) का अनुवाद है जो संपूर्ण ग्रंथ का अनुवाद नहीं मालूम होता। कुछ ही अंश का अनुवाद करके छोड दिया गया है, ऐसा प्रतीत होता है। ग्रंथ आद्योपात गद्य में है। लिपि स्वच्छ स्पष्ट तथा भाषा सुबोध है। अब तक के मिले शारंगधर वैद्यक से प्रस्तुत ग्रंथ भिन्न प्रतीत होता है।

संख्या ५०० साबर (साखाहूली), कागज—देशी, पत्र—७, आकार—६$\frac{6}{10}$ X ३$\frac{3}{10}$, इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—७३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७६३ वि०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा वाराणसी।

आदि—ऊ नमो ओदस गुरू कूं ।। साषाहूली सेवज· गोरा सोवन देय ।। बांधी सांकुल फडि पडै भूषा भोजन देय ।।

मेरी भगति गुरू की सकति फुरो मत्र ईस्वरो बाचा ।। ई मत्र सूं साषाहूली न्योत जे ।। अवले बाकी बिधि कहे छै ।। गहै न होय तब तलाव मैं पैसि अर यो मत्र जपवू कीजे ।। ।। ऊ सषि सरब तन मनोहरी नाम स्वाहा ।। गहै न उगै रह्या पाछै· नगन होय अरसांषाहूली लीजे: समूली उपाडि लीजे ।। उपाडता यो मत्र कहैजे ।।

ॐ साहुली बन मैं फुली ईसर देषि गोरज्या भुली ।।
सांषाहुली आवै तो राजा प्रजा पाय लगावै ।।
मेरी भगति गुरू की सकति फुरो मत्र ईसुरो बाचा. ।।

यो मंत्र बार ईकईस पढि लीजे ।। पूजा कीजे गूगल षेव जेताई मैं राषजे ।।

अत—अऊँ नमो आदेस गुरू कूं ।। चोवा चवन परिमल भोग कपूर कसतूरी अमर सजोगः भेवजवादिमलेगरोघसिए अचलनाथ गोरषमनि कहिए. ईसी बिधि लावो सूंधा अगः कधी न छोडै भरता सग मेरी भगति गुरू की सकति फूरो मत्र ईस्वरो बाचा ।।

।। लिषितंसाध उधवदास लिषायत साध मनोह(र)दास जी ।। संबत् १७६३ मध्रिषेति आघैन सुदि १ बारे सोत ।।

विषय—मारण, उच्चाटन, वशीकरन और समोहन आदि मत्रो का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत मत्र "सावरमत्र" के अतर्गत है । प्रथम पत्र की बाईं ओर ऊपर कोने मे 'शावर" लिखा भी है । शावर के पहले का अक्षर पढने मे नही आता । अनुमान से 'रु' विदित होता है । यदि यह ठीक हो तो मत्रो का नाम "रुद्रसावर" होगा ।

प्रस्तुत रचना का महत्व मत्रो की दृष्टि से तो साहित्य क्षेत्र मे कुछ नही, पर भाषा की दृष्टि से और उसमे उल्लिखित नामो की प्राचीनता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है । इधर जो सावर मत्र मिले भी है वे अधिक प्राचीन नही मिले । जो प्राचीन जँचते भी है तो उनमे सवत् नही मिलता और जिनमे सवत् मिलता है वे प्राचीन नही जचते । प्रस्तुत प्रति स० १७६३ वि० की है । इससे केवल भाषा की प्राचीनता के सबध मे प्रकाश पडता है ।

सख्या ५०१. सीता वनवास कथा, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—७ × ५$\frac{1}{10}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२, खडित, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—

.... । .... ॥
.... । जहवा देषहु अगम गभीरा ॥
ताही नीकुज वन भीतर शीता मेला लवाइ ।
काकर गहा षाड़ शी कठ करहु गे घाउ ॥
अग्या लछन भटन पारा । राअत निशर पार दुआरा ॥
बाहर पौरी परा मुरछाइ । जानहु बोष के वरोआ षाई ॥
शारथी शो बोलै बालषाइ । रथ एक शाजा आनुरे भाई ॥
शारथी रथ शाजा ले आवा । शोक मुरछाए लछन च .. ।
ल शोता के आगे ठोकारथ घ. ... . ।
हर्षमान भो शीता लछन दुआ.. . ॥
रातो जा शाध पुछ... . । प्रातही शो रथ दीन्ह पठाई ॥
जशे पछो पानी पीआशा । आपनो उकुता न देष लाशा ॥
शत शत शीता मन पतोआना । ब्राभन आजु देवो मै दाना ॥
तव भडार शो वस्तु ले आवा । रथ उपर शभ आनो चढ़ावा ॥
षन एक रथ बालभावहु लछन मोर गोशाइ ।
च्लौ लगी शाशु शमदो के पलटो चढै रथ आए ॥
शाशु के चरनन्हो शीता परई । जुडा शातलो क आशोषा पाई ॥
का मिनुशारे चलहु तुरता । वहुत उताहुली देषौ पुता ॥
शीता कहा उताहुली अहउ । ...माता शो आएऊ कहेऊ ॥
रामचन्दर नाशो पुछा माही । शीता शाध अहै कीछु तोही ॥

अत—

रोअही चाद शुरज औतारा । दशोहु दीशा रोअही दीरवाला ॥
रोअे जे लछन वनशपती पा । वन म आगा रोअहो जो आ · ॥
आपन बालक जो देही लडाई । शीते चेतु लछन कीहु छाही ॥
पछी वानर रोअहो वन माहा । .... ॥
पहर एक दीवश जव गेएऊ । शीतहो अलप चेत कीछु भएऊ ॥
शीते कहा लछन मुष जोई । काहे लछन मरत हहु रोई ॥
नाही नाक कीन्ह रघुनाथा । तोह कह पठाईन्ह हमरे शाथा ॥
जाणी प्रीह भभाछन राजा । तोह कन्ह पठाइन्हो एशे काजा ॥

विषय—सीता वनवास की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रथ के केवल चार पत्रे उपलब्ध हो सके है, जिनकी पत्र संख्या क्रमश. १२, १३, १४ और १५ है ।

भाषा से इतना तो जान पडता है कि रचना बहुत पुरानी है। यहाँ तक कि रामचरितमानस से भी पुरानी हो तो असभव नही। दो तीन मास पूर्व ईशरदास कृत 'भरत विलाप' मिला था जो स० १५४६ वि० से १५७६ तक दिल्ली के बादशाह शाह सिकदर के समय की रचना है। प्रस्तुत ग्रथ की भाषा 'भरत विलाप' की भाषा मे, जो अवधी मे है, बहुत मिलती जुलती है।

सख्या ५०२. हसवार स्वरोदय, कागज—देशी पत्र—१४, आकार—८ × ३।।। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० हरिहरदत्त द्विवेदी, ग्राम—बहरा, डाक०—तियरा, जिला—जौनपुर।

आदि—श्री गणेशाय नम. ।। जय आद्ये ।।

हशवार का जो रूप है ।। सोनिश्चय करिकै ।। विशेष सो मै कहता हो जिस हंशवार का ज्ञान सो जोगो होत है। भूत भविष्य वर्तमान तिनो काल का ज्ञान जानत है ।। सभ लोक का मान्य होत है ।। हंशस्य वरण हशवार' ।। हश कहिये जिव को तिस्का जो बल नाम मध्या सो निकलना पैठना तिस्को कहिये हशवार ।। १ ।।

आगे हश का मूल जगह कहता हो ।। गुद लिग के विच मे मुलाधार है. दो अगुल प्रमान वा है. रश मूलाधार के ऊपर नाभि कमल है तिश के आठ पत्र है. बहुत सुन्दर है ।। २ ।।

इस अष्ट पत्र नाभि कमल के वीच मे कुडलिनि करिकै माहाशक्ति है जिसका शामरथ सो येह जिव सर्ध कार्य कारण करत है से शर्प शरिषि है वर्तुलाकार है इस कुडलिनि का नाल विवा नावि है०

अत—पूर्ण नाडि के तरफ होइ के कोइ पुछै इस गर्भ से वेटा होइगा कि वेटि होगि करिकै तौ वेटा होगा कहना सुन्य नाडि के तरफ होई कै पूछे तो वेटि होयगी कहना। आगे एक तरफ से पुछै पिछे दुसरा तरफ जावै तो वीयन्तु गर्भ मे है कहना एक तरफ स्वोसाध टिकै दोसरा तरफ बढ़ जाते वेला मै पुछे तो गर्भपात होगा कहना ।।५८।। प्रेस्न कहिये भेजना आवना तौ मालु है येह सव दहिने सूर मे करिये ।।५६।। येह सव कर्म वाश सूर मे करिये ६० स्वासा इधर उधर वलावना प्राणायाम्य के रीतसी वुझना ।। ० ।।

इति हशवार स्वरादय टिका विधि समाप्त समत १८६३ ।।

विषय—स्वरोदय विचार।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रथ मे स्वरोदय विचार सविस्तार वर्णित है। स्वर चलने के अनुसार प्रश्न और उनके उत्तर और फलाफल का विचार है। ग्रथ आद्योपात गद्य मे है। इससे प्राचीन गद्य शैली पर प्रकाश पडता है।

सख्या ५०३ हरिवश, मूलकार—जिनसेनाचार्य, कागज—देशी, पत्र—८३५, आकार—१२३/४ × ८१/४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, खडित, रूप—नया, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री दिगबर जैन मदिर, अहियागज, टाटपट्टी मोहल्ला, लखनऊ।

आदि—

:o: ·o· :o:

.........नि के वरिक तिमि करि सोभित है ।। ३ ।। ता देसका कहा वरनन करै जहां सुष का निवास ।। अर धर्म का प्रकास सो बडे बडे राजा इक्ष्वाकु वंस आदि क्षत्रीन के वंसे विषे स्वर्ग ते चय करि उपजै है ।। ४ ।। ता देस विषै कुंडल पुर नामा नगर मानूं सुष रूप जल का कुड ही सोहै है सब सुषनि का समूह है। आखडल कहिये इद्र ताके नेत्र तेइ भये भ्रमरनि के समूह तिनि कूं कमलनि के समूह नि की पंकति सोइ भये भ्रमरनि के समूह तिनिकूं ।।

मध्य—ए कृष्ण के आठ पटरानी और सोलह हजार रानी तिनि करि सेव नीक तिन सहित मनमोहन सुष सूं राज करै ।।४६।। पुन्य रूप वृक्ष करि उपजे नारायण पद के भोग रूप

फल तिनकूं भोग वता लोकनि के समूह कूं आनंद देता भया कृष्ण के राज में कोऊ ही पुरुष दुखी नाही सब ही आनंद करें है वह मुकुंद जिन धर्म का धोरी जे सत्रु सन्मुष आये अर लड़े तिनि कूं क्षण मात्र मे तृण की नाई उपारि डारें अर महाश्रेष्ट देवांगना सारिषी वधू वरता भया ।। अर विना ही यत्न जाके बहुत रत्न आप प्राप्त भये तातें जो भव्य जन जिन धर्म का सेवन करें सो मन मोहन की नाई मन बांछित सुष पावें ।।

इति श्री अरिष्ट नेम पुराण संग्रहे हरिवंसे जिनसेनाचार्य कृतौ जांववत्यादि महादेवी लाभ वर्णनो नाम चतुःश्चत्वारिंशः सर्गः ।।

अंत—एक दिन ये नदीस्वर द्वीप विषें जिन पूजा के अर्थि गई हुती सो इनकू वैराग्य उपज्या तब इन इह प्रतिज्ञा करी जो या देव गति विषें तौ तप नाही आया मनुष्य भव पाय महातप करेंगी जाकरि स्त्री पर्याय मिटै बहुरि भव भ्रमण न होय इह प्रतिज्ञा करि ए तिष्टि तहा ते चय करि साकेतापुरी विषें राजा श्रीवण के रानी श्री काता तिनके पुत्री भई . . . .

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—श्रीकृष्ण चरित्र और अन्य पौराणिक कथाओं का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत पुराण को पढने से पता चलता है कि जैन पुराणों और आर्य पुराणों की कथाओं में कोई अधिक भिन्नता नही । जैन सप्रदाय और वैदिक धर्म में अनेक समानताएँ है, जैसे—स्वर्ग, नरक, देवी, देवता, नारायण और उसके अवतार शिव, ब्रह्मा आदि को दोनो धर्मो के अनुयायी मानते है । कर्म जन्म सस्कार, आत्मा की अजर अमरता ससार की निस्सारता आदि बाते भी समान हीं है ।

संख्या ५०४ हितोपदेश टीका (सुहृद भेद), कागज—देशी, पत्र—६७, आकार—$६\frac{3}{10}$ × ४ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—१७५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८०२ वि०, प्राप्तिस्थान—ठा० महादेव सिह जी, ग्राम—रजनपुर (गगासिह का पुरवा), पोस्ट—तिलाई, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। अथ सुहृद्भेद द्वतीयकथा ।।

।। चौपाई ।।

राजपुत्र बोले इमि फेरी । मित्रलाभ भाष्यौ द्विज टेरी ।।
सुहृद्भेद कहौ कहानी । जामे राजनीति पहिचानी ।।
विस्नु सरम बोले सुखपाई । सुहृदभेद सुनिए चित लाई ।।
यको प्रथम वोहर जानै । राजनीति के गुन पहिचानै ।।

।। दोहरा ।।

व्रषभराज मृगराज सो वन वाढ्यो अतिप्यार ।
दगावाज दभी लुवध सुष तोरयो सठ स्यार ।। १ ।।

अंत—

राजपुत्र सुषमाने बोले । बड़ी कथा के काठ षोले ।।
सुनिके सुहृद भेद सुषमान्यो । धरमराज नीति को तान्यो ।।
विस्नुसर्म तव दई असीसा । जाके सिर सोहै रजनीसा ।।
सोहर हरं तुम्हारी बाधा । राजहेत देवन्ह औराधा ।।

इति श्रीहितउपदेसे सुहृदभेद द्वतीय कथा समाप्त ।। संवत् १८०२ अगहन वदि चौथि ।। लिषितं देवीदास उपाध्या राइबरौली शुभथान ।।

विषय—हितोपदेश की पद्यवद्ध टीका ।

संख्या ५०५. कवित्त दोहा सग्रह रचयिता—विविध कवि, कागज—देशी, पत्र—६५, आकार—$७\frac{1}{2}$ × $४\frac{6}{10}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—८४५, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री डा० दीनदयालु जी गुप्त, अध्यक्ष हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदि—

:o:　　　:o:　　　:o:

......के कुवले दल मौलि बन्यो वन्यो तन स्याम विराजत जाको ।
मूरति वत लएँ सरिता सग सिधु वरे मनो सेल सुता कों ॥१२६॥
उलसे तुलसी दल मजुल से मुलसे कुलसे कुल मौलि रसालहि ।
नो द्रुम मे कदव द्रुम फूल फल घुघुचा फल सो छवि जालहि ।
आलम डार सुठारनि छोरनि नीरज नील लये सर नालहि ।
मेन विसेखि तू लेखि महा सुख देखि सखी घनस्याम तमालहि ॥१३०॥

:o.　　　·o　　　.o.

अपनो मनु ले उनके मन सों तुम तोलिधो देपा तुला तुलको हों ।
भोर 'नरायन' फूली लता रसु लेजु फिरयो फुलको फुलको हाँ ।
एसो तो काहू हाँ दखति नाहि न वाहि के दाखव को जुल कीहों ।
जोइ भए नदलाल लटू तुम एसा धों गोकुल को कुलकी हों ॥१३८॥

.o　　　.o　　　:o:

कोन वेर कोन फेर दुहिवे के मिस आइ दुहू वेर दूध मुसक्याइ दुहि दे गयो ।
ता दिन तैं हो तें जात नैनोन तें टयो नाहि सुध बुध गइ सबलोक लाजले गयो ।
'कवि परवत' अब कहा करा कसी करों एसा बाल प्यार मधुसूदन तूं वे गयो ।
दीयो है बिडारि नन डारयो डारयो फिरत हे तन मन डार डार पात पात ह्वे गयो ॥१४७॥

o　　　.o　　　:o.

भौंहनि मे रिस रह आंखिन मे लाज रह अग मे मकुच सब छवि ही को सग हे ।
'अनत' तमासो मानो प्रथम समागम हे एसो सुख सुखदाई दुहूँ को अनग हे ।
कोक कला कोविद कुवरि कमनाय कान्ह यहो एक कोक के कलान हाँ को अगु हे ।
रस मे रुठाई हा हा खाई कें मनाइ फरि रम काजे सुख काज मारा एक अगु हे ॥१७८॥

o.　　　.o.　　　.o.

जेसें मृगराजनि के छोना गजराजनि को छोटे छोटे हाथनि करत जाइ घाउ हे ।
एसें लारकाई हाँते एलाच बहादुर तें भारो फोजें मारा सिरदारा दीनो पाउ हे ।
कहे 'अभिमन्यु' सब दच्छिन त जेह कोनो अब कोंन देस पर मूछ देत ताउ हे ।
वाद तें सरस वायु वायु तें सरस आपु महाबलो वेरम के वस को सुभाउ हे ॥१८३॥
अकबर साहि जू के महावलि दानिसाह पूरब कों प्रथम पयानो कीजयतु हे ।
हाथी घोरा आरवोनि भार हे पताल पेठ्यो पन्नग प्रबल छितिधर दीजियतु हे ।
कहें कवि गग दिग्ग धोंसा की धमक सुनि अरिन के उर मानों आरा दीजियतु हे ।
एते मान गरद मे समुद समोइ गयो फलगू के तोइ लों करोइ लीजियतु हे ॥१८४॥

अत—　　　.o·　　　.o·　　　.o:

जाको ध्रुव धरा पे धरयो हो ध्यान सात द्योस सोई प्रहलाद वाद खभ मे बतायो हो ।
वेही प्रभु पूरन प्रगट सब ठाह रहे द्रोपति का लाज काज द्वारिका ह्वे आयो हो ।
छोड़ि के सिघासन दे पीठि पन्नगासन जू गज को गरज सुनि नागेपाइ धायो हो ।
'आनद' विचारि जन कहत गोवर्द्धन यो वह। गोकुलेस जिहि गोकुल बसायो हो ॥१६३॥

·o:　　　.o.　　　:o:

रसना गोकुलनाथ कहि सिख मेरी मानु ।
न खिले और सवाद सब लखिले यह सयानु ॥
लखिले यहे सयानु माल टारी न गरे त ।
'जगत प्रसिद्ध' जिहि तजि तेव घटिहे न मरे ते ॥
ठोर ठोर चहूँ आर फिरे फिट कारे जसना ।
जानु यहे निरधार कहूँ जीवन मे रसना ॥२५६॥

भजिहों तुलसीमाल कों रजिहों करि यह माऊ ।
लजिहो नेकु न जगत मे तजिहो गोकुल गाऊँ ॥
तजिहों गोकुल गाव साहि सो बोले हठ कें ।
लेहो काको पानि कोरि बसवंय्या मठ के ॥
'जगत प्रसिद्ध' अब जात खेम सोरो को सजिहौं ।
करिहों कछु न कलेस ठोर नजि अनतन भजिहो ॥२५७॥
:o: :o: :o:
सम्मन रस की रीति वृझो सीखो ईष वें ।
रस ही मे विपरीति जहाँ गाँठि तहाँ रस नहीं ॥४०॥
:o: o :o:
ए दिल दिल जाकों दियो कियो हिये मे भौंन ।
तासो सुष दुष कहन की तथा रही धों कौंन ॥४३॥
:o: .o: :o.
मीन काटि जल धोइये खाँएँ अधिक पियास ।
वलि 'कासिम' या प्रीति की जो मुएँ मित्त की आस ॥५१॥
भयो जातु कहि कौंन पें इती अचरची मूक ।
प्रगट देखि वरनी 'ललन' अलि चातक की चूक ॥४१०॥
जाकें साची स्वाति सो लषियति फल अनुमान ।
विना हेत ह्वैवो कठिन चातक सीप समान ॥४१२॥

विषय--शृंगार और भक्ति विषयक कवित्त और दोहों का सग्रह । निम्नलिखित कवियो के कवित्त और दोहे हे--

१ आलम ।
२ शेख ।
३ कवि दत्ती ।
४ ब्रह्म ।
५ नरायन ।
६ मडन (खान साहिब तुरकमान का उल्लेख है) ।
७ जगन ।
८ परबत ।
६ अनत (जहाँगीर का उल्लेख किया है) ।
१० अभिमन्यु (सभवत अब्दुर्रहीम खानखाना के आश्रय मे) ।
११ गग (अकबर बादशाह के पुत्र दानिसाह (? दानियाल) का उल्लेख किया है) ।
१२ नवल सुजान (दारा साह का उल्लेख किया है) ।
१३ आनद ।
१४ प्रसिद्ध या जगत प्रसिद्ध (माला और तिलक छाप दूर करने की जहाँगीर की आज्ञा का विरोध करने मे गो० गोकुलनाथ जी का यश वर्णन । अधिक कवित्त है) ।
१५ कवि नाइक (साहिजहाँ का यश वर्णन किया है) ।
१६ भगवत ।
१७ अकबर साहि (छप्पय है--दिन प्रति अकव्वर साहि जपत दिनकर) ।
१८ दया देव (अधिक कवित्त है) ।
१६ रहीम ।
२०. गोकुल सुकवि (अधिक कवित्त है) ।
२१ सम्मन ।
२२ एदिल ।
२३ कासिम ।
२४. लाल्लन या ललन (इनके सबसे अधिक दोहे है) ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत सग्रह मे पहले कवित्त हैं और पश्चात् दोहे । बहुत से कवियो ने अपने कवित्तो मे आश्रयदाताओ का उल्लेख भी किया है यथा मडन ने खान तुरुकमान का, अनंत ने जहाँगीर का, गग ने दानियाल (अकबर बादशाह के पुत्र) का, नवल सुजान ने दारा साह का और कवि नाइक ने शाहजहाँ का उल्लेख किया है ।

प्रसिद्ध या जगत प्रसिद्ध ने तो जहाँगीर के उस फरमान का भी उल्लेख किया है, जिसके अनुसार वैष्णवो को माला, कठी और तिलक छाप दूर करने की आज्ञा दी गई थी । इसका बडा विरोध किया गया था । उस समय गो० गोकुलनाथ ने बडा पुरुषार्थ दिखाया था । उक्त घटना के कारण ये सोरो चले गए थे ।

चतुर्थ परिशिष्ट

(क) परिशिष्ट १ और २ में आए उन रचयिताओं की नामावली जो प्रस्तुत खोज मे नए मिले है ।

(ख) प्रस्तुत खोज मे प्राप्त नवीन रचनाओ की सूची ।

(ग) संग्रह ग्रंथो (पद सग्रहो और कवित्त सग्रहो) मे आए नवीन रचयिताओ की नामावली जो पहले अज्ञात थे तथा जिनका उल्लेख पिछले खोज विवरणो मे नही मिलता ।

परिशिष्ट-४क

खोज में मिले नवीन रचयिताओं की सूची

सवत् २००४–२००६ वि० (सन् १९४७–४९ ई०)

क्र स	रचयिताओ के नाम	विवरणिका सख्या	शताब्दी	ग्रंथो की सख्या	विशेष
१.	अमरसिंह	५	१९वी	१	
२.	अवधेश	८	..	१	
३.	अहमकशाह	९	.	१	
४.	अहलाददास	११	१९वी	१	
५.	आत्माराम	१२	.	२	
६.	इद्रजीत 'जैन'	१६	१९वी	१	
७.	इक्ष्यागिरि	१७	१९वी	१	
८.	ईश्वरदास गोसाईं	१९		१	
९.	उतमदास (उमरावसिंह)	२१	२०वी	१	
१०.	उदोत कवि	२२	१८वीं	१	
११.	कमलनयन	२५	१९वी	१	
१२.	कान्ह द्विज	२९	२०वी	१	
१३.	प० कालिप्रसाद वैद्य	३०	२०वीं	१	
१४.	काशीप्रसाद शुक्ल या कासीराम	३१	.	३	
१५.	कासीदास 'जैन'	३३	१८वी	१	
१६	कीर्तिकेशव या केशवकीर्ति	३६	.	१	
१७.	कुबेरदास	३७		१	
१८	कृष्णविष्णु पडित	४३	२०वी	१	
१९	खुसिआल	४७	..	१	
२०.	खैरातीलाल	५०	..	१	
२१	गगन	५३	..	१	
२२.	गगादास	५४	..	२	
२३.	गणपति	५८	१९वीं	१	
२४.	गणेशदत्त मिश्र	६०		१	
२५	गदाधर त्रिपाठी	६२	२०वीं	१	
२६.	गदाधर शुक्ल	६३	१९वी	१	
२७.	गिरिधारी	६६	१९वीं	२	
२८.	गुरुदत्त	६७	..	१	
२९	गुरुदीन	६९	..	१	
३०.	गुलाबराइ मोतीराइ 'जैन'	७०	१९वीं	१	
३१.	गुलाबहसन पीर	७२	१९वीं	१	
३२.	गैवा	७४	१९वीं	१	
३३.	गोपाल या दास गोपाल	७८	..	१	
३४.	गोबिंद कबि	८१	१९वीं	१	

क्र. सं.	रचयिताओं के नाम	विवरणिका संख्या	शताब्दी	ग्रंथों की संख्या	विशेष
३५	गोविंद कवि	८१	१९वी	१	
३६.	गोविंद कवि द्विज	८२		१	
३७	गोविददास	८३		१	
३८	गौरा (?)	८६		१	
३९	चदनराम, चद या चदन कवि	९१	१९वी	२	
४०	चतुर्भुज	९२	१७वी	१	अकबर बादशाह का आश्रित
४१	चितामनि या ऋषिचितु	९५		१	
४२	चितामणि दुबे	९६	१९वी	१	
४३	चिरजीव भट्टाचार्य	९७		१	
४४	चेतनदास	९८	१९वी	१	
४५	चापसिंह 'चाप'	९९		१	
४६	छत्र नृपति	१००		१	
४७	छत्रसाल सिंह नृप	१०१		१	
४८	छीतम या जनछीतम	१०३		१	
४९	छोटेलाल	१०८	२०वी	३	
५०	जनज्वाला	११२	२०वी	१	
५१	जनबेनम	११३		१	
५२	जयदयाल	११६		१	
५३	जवाहिर	११८		१	
५४	जवाहिरदास, अहलाददास, गिरिधरदास	११९	१९वी	१	
५५	जवाहिरपति	१२०	२०वी	२	
५६	जानकीदास	१२५		४	
५७	जानकीदास	१२६		१	
५८	जानकीदास	१२७		१	
५९	जानकीदास गोसाई	१२८		२	
६०	जानकीबाई	१३१	२०वी	२	
६१	जियराज	१३३	१८वी	१	
६२	जीवदास आचार्य	१३४	१९वी	१	
६३	तारानाथ	१३८	१८वी	१	
६४	तुरसी	१४१		१	
६५	तुलसीदास	१४४		१	
६६	तुलसीदास	१४६		१	
६७	तुलसीदास	१४८		१	
६८	दासराम	१५६	१८वी	१	
६९	दीनदास बाबा	१५९	२०वी	२	
७०	दुनियापति	१६०	१९वी	१	
७१	दुर्गादत्त द्विवेदी	१६१		१	
७२	देवदत्त कवि 'जैन'	१६४	१९वी	१	
७३.	देवीदास कायस्थ	१६५		२	
७४	दौलतराम जैन	१६९	१८वी	१	

क्र सं.	रचयिताओं के नाम	विवरणिका संख्या	शताब्दी	ग्रंथ संख्या	विशेष
७५	धर्मादास	१७१	.	१	
७६	धारू	१७२		१	
७७	धिरजाराम	१७३	१८वी	१	
७८	नद या नदलाल	१७८	१७वी	२	
७९	नत्थन	१८०		१	
८०	नवलसिह 'नवल'	१८४		२	
८१	नाथ	१८७		१	
८२	नाथूलाल	१८८	२०वी	१	
८३	नामदेव	१९०		१	
८४	नारायणश्रम स्वामी परम-हसकाचार्य	१९१	२०वी	१	
८५	पन्नालाल	१९८	२०वी	१	
८६	परमानद	१९९	१९वी	१	
८७	परमेश्वरदत्त	२००	२०वी	१	
८८	परिमल्ल कवि 'जैन'	२०२	१७वी	१	
८९	पानपदास	२०५	१८वी	८	
९०	पीतमदास	२०६	१९वी	१	
९१	पीताबरराय	२०८		१	
९२	पुरदरकवि	२०९	२०वी	१	
९३	पुरुषोत्तमदास	२१२		१	
९४	प्रयागदत्त	२१४		२	
९५	प्रवीन कवि	२१५		१	
९६	प्रानसुख	२२०	१९वी	१	
९७	प्रियादास	२२१		१	
९८	बख्तावरसिह की स्त्री (अयोध्यानरेश की रानी)	२२४	१९वी	१	
९९	बदनराउ (भाट)	२२५	१९वी	१	
१००	बहमन	२३४		१	
१०१	बागेश्वरभारती	२३६		१	
१०२	बालकृष्ण	२३७		१	
१०३	बेधा	२४२	१९वी	१	
१०४	बैजनाथ या वैद्यनाथ	२४५	२०वी	१	
१०५	बोधदास	२४९		१	
१०६	भगनदास	२५०		५	
१०७	भगवानदास	२५१	१९वी	१	
१०८	भगीरथप्रसाद त्रिपाठी	२५२	२०वी	१	
१०९	भवानीचरण	२५४		१	
११०	भवानीप्रसाद	२५५		१	
१११	भानुजसिह	२५७		१	
११२	भावन (?)	२५९		१	
११३	भुवनदास	२६५	.	१	
११४	भूप या भूपति	२६७		१	
११५.	भोजदास	२६९		१	
११६.	मंगलदास बाबा	२७३	२०वी	१	

क्र. स.	रचयिताओं के नाम	विवरणिका सख्या	शताब्दी	ग्रंथ सख्या	विशेष
११७.	मगनलाल पडित	२७४	२०वी	१	
११८.	मगनानद	२७५		१	
११६	मदनसाहब	२७७		२	
१२०.	मनमोहनदास	२७६		१	
१२१	मनसुख	२८२		१	
१२२	मल्लिकानाथ	२८६		१	
१२३	महाम्रानदसाह	२६०		१	
१२४	महेश या महेशजू	२६२		१	
१२५	मायाविप्र	२६७	१६वी	१	
१२६	मालीराम	२६८		२	
१२७	मुकुददास	३००		१	
१२८	मुरलीधर	३०४		१	
१२६.	मुसाफिर (?)	३०५		१	
१३०.	मेहरवान	३०७		१	
१३१.	मोतीसखि	३०८	.	१	
१३२	मोहन साईं	३०६		७	
१३३	मोहनमत्त	३१०		१	
१३४	मोहनलाल	३११		१	
१३५	यज्ञप्रसाद	३१२	१६वी	२	
१३६	रगपाल	३१३		१	
१३७	रखनराम	३१५	.	१	
१३८.	रघुनाथ	३१६		१	
१३६	रघुनाथकवि	३१७		१	
१४०	रणविजय बहादुर सिह	३१८		१	
१४१	राधादास	३२२	१६वी	१	
१४२	राम	३२३		१	
१४३	रामकवि	३२४	२०वी	१	
१४४.	रामकिंकर	३२५		१	
१४५.	राम जीवन	३२६	१६वी	१	
१४६	रामदास	३२२		१	
१४७	रामनारायण	३३५	१६वी	१	
१४८	रामभजन त्रिपाठी	३३८		१	
१४६	अलिफनामा	३४१		१	
१५०	रामसुधिकरन बाबा	३४२	२०वी	१	
१५१	रामस्वरूप	३४४	२०वी	१	
१५२	रामानद	३४७	१६वी	१	
१५३	रामानद	३४८	.	१	
१५४	रामेश्वर भट्ट	३४६	. .	१	
१५५.	लक्ष्मीनाथ (?)	३५१	.	१	
१५६.	लछिमन	३५३		१	
१५७	लालकवि	३५४	१६वी	२	
१५८	लोकनाथ	३५८	.	१	
१५६.	विप्र (?)	३६३	१७वी	१	
१६०.	बिश्राम शुक्ल	३६४	. .	१	

क्र. सं.	रचयिताओं के नाम	विवरणिका संख्या	शताब्दी	ग्रंथ संख्या	विशेष
१६१.	विश्वंभरदास	३६५	..	१	
१६२.	विष्णु रसिक	३६८	..	१	
१६३.	वीरभानुदेव	३६९	..	१	
१६४.	वैद्यनाथ	३७१	२०वी	१	
१६५.	शंकर (?)	३७३	..	१	
१६६.	शंकराचार्य	३७६	..	१	
१६७.	शंभुनाथ द्विज	३७८	२०वीं	६	
१६८.	शभुनाथ द्विज	३७९	,,	१	
१६९	शिव	३८१	.	१	
१७०.	शिवदास	३८२	..	१	
१७१.	शिवनरेशसिंह	३८४	२०वी	१	
१७२	शिवप्रकाश	३८६	,	१	
१७३	शिवप्रसाद	३८७	.	१	
१७४.	शिवप्रसाद	३८८	१९वी	१	
१७५	शुभचद्राचार्य	३९१	१७वी	१	
१७६	श्यामकवि	३९२	..	१	
१७७	श्रीराम वाजपेयी	३९४	..	१	
१७८	सकठाप्रसाद तिवारी	३९५	२०वी	१	
१७९.	संगम	३९६	..	१	
१८०	सत या सतन कवि	३९७	..	१	
१८१.	सतदास	३९८	२०वी	१	
१८२	सत्यकवि	३९९	.	१	
१८३	समन (?)	४०३		१	
१८४	सागर कवि	४०६	१८वी	१	
१८५	साचार	४०७	.	१	
१८६	सारगधर	४०८	१८वी	१	
१८७	सिपहदार खाँ 'वेगुनदास'	४१०	२०वी	१	
१८८.	सीतल जैन	४११	१९वी	१	
१८९.	सीताराम	४१२		१	
१९०	सुखलाल कायस्थ	४१५		१	
१९१.	सुखलाल	४१६	१९वी	१	
१९२	सूषण	४२१	.	१	
१९३	सेनापति त्रिवेदी	४२३		१	
१९४	हफीजुल्ला खाँ	४२९	२०वी	१	
१९५	हरकर्ण मिश्र	४३०	१९वी	१	
१९६.	हरिभुवनदास	४३४	.	१	
१९७.	हरिराय या हरियराय 'जैन'	४३७		१	
१९८	हरिलाल	४३८		१	
१९९	हरिवश	४३९	.	१	
२००	हरिवंश द्विज	४४०	.	१	
२०१	हसन	४४२	..	१	
२०२	हृदयराम	४४४	.	१	
२०३.	हेमनाथ	४४५	..	१	

—:००:—

परिशिष्ट—४ख

खोज मे प्राप्त नवीन रचनाओ की सूची

मवत् २००४–२००६ वि० (सन् १९४७–४९ ई०)

क्र स	ग्रथो का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका सख्या	
१	अक कौतूहल (सक्षिप्त लीलावती)	१८८८ वि०		२०६	
२	अबिका चरित्र	१९६६ वि०	१९६६ वि०	२५२	मूलप्र
३	अब्रु सागर			४४६	
४	अग्यारी विलास			३१५	
५	अग्रज्ञान		सन् १३८२ साल	१५४क	
६	अघनासन		१९४२ वि०	१५९ख	
७	अद्भुत विलास	१६९९ वि०		१४०	
८	अध्यात्म लीलावती			३९७	
९	अनेकार्थ मजरी			२२	
१०	अपभ्रश की रचना (सूक्ति काव्य)			४४७	
११	अमरकोश			४४८	
१२	अयोध्या माहात्म्य			५०	
१३	अरस अइनिवानी			३०९क	
१४	अरस अरिल ककहरा			३०९ख	
१५	अरस अरिल वानी			३०९ग	
१६	अरस आसिक गदा			९	
१७	अरस आशिक विनय			२९०क	
१८	अरस नाम ककहरा			३०९घ	
१९	अरस पियापानी			३०९ङ	
२०	अरस भक्ति बोध			३०९च, छ	
२१	अलकार (?)			२६१ख	
२२	अलकार शृगार (टीका सहित)		१९४२ वि०	३८२	
२३	अलिफनामा		१९५० वि०	३४१	
२४	अवतार चरित्र			३८१	
२५	अष्टछाप के कवियों की वार्ता			७६	
२६	स्तुति श्री बजरग की		१९२१ वि०	१८३क	
२७	आदिपुराण			४४९	
२८	आभूषण मत			३४६क	
२९	आरतमोचन	१८८५ वि०		२५१	
३०	आह्निक तिलक प्रकाश (रामचद्राह्निक टीका)		१९०७ वि०	३६६	
३१	इश्क गर्क ग्रथ			२०५क	

क्र. सं.	ग्रंथो के नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
३२.	इश्कपेचा	..	..	३०५	
३३	उत्तरपुराण	..	१८६७ वि०	१६४	
३४.	उत्तरपुराण	१७९९ वि०	१८७३ वि०	४८क, ख	
३५.	उत्तरपुराण भाषा	१८४० वि०	१८६७ वि०	१६	
३६	ऊषा चरित्र		.	४५०	
३७.	ऊषाहरण (ओषाहरण)	१५१२ वि०	१९१३ वि०	१९९	
३८.	ऋषि पचमी की कथा	१८६० वि०	१८६० वि०	५८	
३९	औषधि सुधा तरगिणी	१९३१ वि०	१९४१ वि०	६२क, ख	
४०.	ककहरा अरल के		१९२२ वि०	२०३ख	
४१.	ककहरा (राधा वृजराजजस)	१८९९ वि०	१९०७ वि०	३५५ख	
४२.	कका बत्तीसी		.	८३	
४३.	कडखे			२०५ख	
४४.	कबीर नानक गोष्टी		१८३४ वि०	४५१	
४५.	करखा	.		२८८क	
४६	करीमा		१९०६ वि०	१६५क	
४७	कर्मविपाक		१८५० वि०	३७३	
४८	कविकुल कुमुद कलाधर	१९३१ वि०	१९४९ वि० (मु०)	३८४	
४९.	कविता कल्पतरु	१७८८ वि०	१७८९ वि०	४०६	
५०.	कवित्त			३७७क	
५१.	कवित्त	.	१८७३ वि०	२६०क	
५२	कवित्त			२१४क	
५३	कवित्त			१७२	
५४.	कवित्त			१२५क	
५५	कवित्त			८८क	
५६	कवित्त			८०	
५७	कवित्त			३१क	
५८.	कवित्त			३५३	
५९	कवित्त			८	
६०	कवित्त			३१७	
६१	कवित्त	..		३१३	
६२	कवित्त	.		१४क	
६३	कवित्त रामायण	.	१९६३ वि०	२७३ख	
६४.	कवित्त सग्रह	१८५८ वि०		४४२	
६५	कवित्त सग्रह वसत के			३५	
६६.	कवित्त सवैया	.		४७	
६७.	कहलनामा		१९६८ वि०	८५क	
६८	काम कलासार	१८३७ वि०	१९२२ वि०	१७	
६९	कामरत्न	१८४० वि०		१८७	
७०.	कार्तिक तरंग			३३२	
७१.	कार्तिक माहात्म्य	१८४८ वि०		३२२	
७२	काली विजय (दुर्गाभक्ति सुधार्णव)	१९१२ वि०	१९३५ वि०	३७८क, ख, ग	
७३	कीरति विलास	..	१९०७ वि०	१२७	

क्र सं.	ग्रंथो के नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
७४.	कुण्डलिया या सतचौंतीसा	..	१९३८ वि०	१५०	
७५.	कुजाला कथा	.		२४ग	
७६.	कृष्णचंद्रिका			२३३	
७७	कृष्णजन्म			२७०	
७८.	कृष्णदत्त भूषण	१९३७(?) वि०	१९५१ वि०	७५क, ख	
७९	कृष्ण विलास (भागवत दशम)	१८०६ वि०	१९२३ वि०	३७७ख	
८०	काकशास्त्र	१६७५ वि०		३६३	
८१	ख्याल जारी को			२९८ख	
८२	ख्याल बनजारे का			२९८क	
८३	गणेशकथा	१८७३ वि०	१८७३ वि०	९६	
८४	गणेशजयति		१८६५ वि०	३३९क	
८५	गीतगोविंद टीका		१९१० वि०	४५२	
८६	गीता		१८२३ वि०	४५३	
८७	गीताभाषा		१९१८ वि०	५४क	
८८	गीता माहात्म्य		१८२३ वि०	४५४	
८९	गुजा कल्प		१९१८ वि०	८६	
९०	गुरु उपदेश और गुरु वंदना		१९२२ वि०	१६६क	
९१	गुरुगाष्टी (पवन गुजार)		१८९४ वि०	२५०क	
९२	गुरु प्रनाली			३११	
९३	गुरु महिमा		१९३० वि०	४५५	
९४	गुरु महिमा		१८७६ वि०	२५०ख	
९५	गूहदीपक		१९०४ वि०	२५४	
९६	गृहस्थ धर्म	१८२५ वि०	१२९१ माल	४५६	
९७	गोपीसागर		१८८१ वि०	३८ख	
९८	ग्रंथ कुडली चक्र		१९२२ वि०	३२५	
९९	ग्रंथनाममाला		१८९१ वि०	२४ङ	
१००	घडी खैराकी		१९२२ वि०	५१क	
१०१	चपूमाध्य (सामुद्रिक)	१६९५ वि०	१७१७ वि०	२६७	
१०२	चाणाकशास्त्र भाषा			४२२	
१०३	चार कथा का गुटका (कथा भाषा)		१९५३ वि०	२५८क	
१०४	चिकित्सासार सग्रह			३१६	
१०५	चिकित्सा सिंधु		१९५३ वि०	३१४	
१०६	चित्रकूट विलास			४४४	
१०७	चित्रकूट विलास	१८३५ वि०	१९२४ वि०	४५७	
१०८	चित्रकूट विलास	१८३५ वि०		४०	
१०९	चेतनकर्म चरित्र	१७३२ वि०		२५३ग	
११०	छदबध सूत्र, देवपूजा, पद	१९३२ वि०	१९५० वि०	१०४	
१११	छद महोदधि पिंगल	१९०४ वि०	१९३४ वि०	२१	
११२	छाया जोग		१९१० वि०	१२५ख	
११३.	छैढालो	१८५८ वि०	१९०३ वि०	२४०	
११४	जबूस्वामी की कथा	१६४२ वि०	१७५१ वि०	१३२	

क्र. सं.	ग्रंथों के नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
११५	जखजी				
११६.	जज्ञासमाज (यज्ञ समाधि)		१८२६ वि०	१०३	
११७.	जयमगल	..	१९३० वि०	४५८	
११८	जयदायक		१८८८ वि०	२५७	
११९.	जलहरण दडक		..	३८७	
१२०	जातकालकार भाषा	.		९१ख	
१२१	जानकी प्रकाश	..	१९३० वि०	४५९	
१२२	जानकी प्रकाशिका	१९३५ वि०	१९३५ वि०	१३१क	
१२३	नाजकीराम मगल	१९३५ वि०	१९३५ वि०	१३१ख	
१२४	जिनदत्त चरित्र भाषा	.		२३७	
१२५	जीवगति	१८७० वि०	१९०७ वि०	२५	
१२६	जुगलानद सुधासमुद्र, माधुर्य लहरी, सिकरावली, अष्टजामसेवा प्रकरण		१९१० वि०	२९३क	
१२७	जोखूराम यश वर्णन		१८७३ वि०	११६	
१२८	जोगध्यान		१९५७ वि०	१०१	
१२९	ज्ञान ककहरा	..	१८४४ वि०	४६०	
१३०	ज्ञानकवित्त		१९४४ वि०	१२८क	
१३१	ज्ञानपरीछि (ज्ञानपरीक्षा)		१८९१ वि०	३८३क	
१३२	ज्ञानलीला स्तात्र		१७८४ वि०	२८८ख	
१३३	ज्योतिष		१८२६ वि०	३४७	
१३४	ज्योतिष		.	१२५ग	
१३५	ज्योतिष या तुलसी शब्दादिप्रकाश			७४	
१३६	ज्योतिष भाषा या ज्योतिष लग्न प्रकाश	.		१४३क, ख, ग	
१३७	ज्योतिस्सारावली भाषा	१९३५ वि०	१८८८ वि०	३७४क, ख	
१३८	झूलना			२९क	
१३९	झूलना		.	३९	
१४०	ढेक चरित्र	.	..	१२६	
१४१	तत्वज्ञान तरगिणी	१९०० वि०	..	३८८	
१४२	तरगमेष मालिन या चौबोला	१८५७ वि०	..	४६१	
१४३	ताराविजय (दुर्गाभक्ति सुधार्णव)			२२०	
१४४	तिब्बग्रहमानी	१९०८ वि०	१९०८ वि०	३७८घ	
१४५	तीरथ के पडा		१९५० वि०	३९१क	
१४६	तीसायत्र	१८७६ वि०	१९२२ वि०	११९	
१४७	तुलसी चरित्र या रामायण माहात्म्य		१९०३ वि०	१४७	
१४८	त्रिकाडवल्ली ज्ञान दीपिका	.	.	५५	
१४९	दपति रसिक तरग (बारहमासी)		१९४८ वि०	१९१	
१५०	दानकथा		१९४४ वि०	२२८	
१५१	दिग्विजयभूषण तिलक		१९०३ वि०	२५८ख	
		१९१९ वि०	.	३४४	

क्र. सं.	ग्रंथो के नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
१५२.	दुकूल चितावनी	१८६८ वि०	१६०७ वि०	३५४क	
१५३	देवा स्तोत्र	..	१८८० वि०	३७६	
१५४.	दैवाज्ञाभरण	..		३७८ड	
१५५.	दोहा		१६५० वि०	२१२	
१५६.	दोहा	.	१६२२ वि०	८५ख	
१५७	दोहा और कवित्त	..	१६५० वि०	३ख	
१५८	दोहावली	१८४० वि०	१६१० वि०	१३४	
१५६.	दोहावली	.	१६३५ वि०	२६५	
१६०	दोहावली या अलखप्रकाश	..		२७३ख	
१६१	द्रौपदी इतिहास	..		४६२	
१६२.	द्वारिकाविलास	१८८० वि	१८६२ वि०	३३५	
१६३	धनतर सहिता	..	१६०२ वि०	४६३	
१६४	धर्मसार	१६११ वि०	.	२८०	
१६५	ध्रुव चरित्र	.	१७८४ वि०	२८८च	
१६६	नवधाभक्तिविधान	..	..	१४१	
१६७.	नवरत्नमाला	..	.	२८६	
१६८.	नवीन सग्रह	१६३६ वि०	१६४८ वि०	४२६	ग्रथ मुद्रित है।
१६६	नागकुमार चरित्र	..	१६८६ वि०	१८१	
१७०	नागलीला	..	१६३१ वि०	४२०क	
१७१.	नागलीला	..		५६	
१७२	नागप्रकाश	..		१८६	
१७३	नामनिधि	..	१८७६ वि०	२५०ग	
१७४.	नामप्रकाश	..	१६१५ वि०	२७७क, ख	
१७५	नायिकाभेद			४६५	
१७६	नायिकाभेद		.	४६४	
१७७.	नायिकाभेद (?)	..	..	१६४	
१७८	नायिकाभेद और अलकार			४६६	
१७६	नासिकेत कथा		१७६५ वि०	४६७	
१८०	नासिकेतपुराण			११८	
१८१	निरनैमार	.	१६४४ वि०	२४छ	
१८२	पचमात्रा		१६२६ वि० (?)	३४६ख	
१८३	पचविंशति ग्रथ	..	.	४६८	
१८४	पक्षी प्रश्न	.	१८८८ वि०	४६६	
१८५	पद	.		२७५	
१८६	पद	.		२०५ग	
१८७.	पद	.		३८३ख	
१८८	पद			१६७	
१८६.	पदमाला श्री जगन्नाथजी	१६१२ वि०		४१०	
१६०	पदावली			२०५घ	
१६१	पद रत्नावली			१००	
१६२	पद्मनाभिचरित्र		१६१३ वि०	२८१क	
१६३	परचुरणपद	..		१२क	

क्र. स.	ग्रथों के नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
१९४.	परिक्रमा प्रकरण	..	१९५५ वि०	२१८क	
१९५.	पाडवपुराण भाषा	१६०८ वि०	१९८६ वि०	३९१	
१९६.	पाखडदलन	.	१९४४ वि०	१२८ख	*
१९७	पार्श्वनाथ पुराण	१७८९ वि०	१८१८ वि० १८८२ वि०	२६६क, ख, ग घ, ङ	
१९८.	पिंगल	..	..	९२	
१९९.	पिंगल	..	सन् १२७६ साल	५४ख	
२००	पिंगल	..	..	४७०	
२०१	पिंगल	..	..	४७१	
२०२	पिंगलमाला प्रस्तार	.	..	६९	
२०३	पुण्याश्रव कथा कोसभाषा	१७७७ वि०	१७८६ वि०	१६८घ, ङ, च, छ	
२०४	पुण्याश्रव कथा कोस भाषा	१७९२ वि०	१८६४ वि०	१३३क, ख, ग	
२०५.	पुन्यपच्चीसिका	१७३३ वि०	..	२५३ख	
२०६.	पुष्पवाटिका	.	..	४७२	
२०७	पोथी औषधि	..	१८९२ वि०	४७३	
२०८	पोथी प्रश्न	.	१८८७ वि०	४७४	
२०९	प्रदोष व्रतकथा	..	१९१४ वि०	३७९	
२१०	प्रनालिका	..	१९५५ वि०	२१८ख	
२११	प्रबोध पारिजात	..	१९०७ वि०	३७८च	
२१२	प्रश्न मनोरमा भाषा टीका	१९२७ वि०		११२	
२१३	प्रश्नोत्तर विदग्ध मुखमडन	१८६७ वि०	.	९१क	
२१४	प्रसगपारिजात	१५१७ वि०	१९९९ वि०	९८	
२१५	प्रह्लादचरित्र		१९०८ वि०	४७५	
२१६	प्रह्लादचरित्र		१८६४ वि०	४७६	
२१७	प्रह्लाद चरित्र (रघुवशदीपक)	.	१८६४ वि०	४०५क, ख	
२१८	फते अली प्रकाश		.	३०४	
२१९	फलग्रथ (पिंगल)	.	१९४० वि०	१५८	
२२०	फलितभाषा	१८६२ वि०	१९१५ वि०	२९७	
२२१	फूल चरित्र		१८८२ वि०	३६५	
२२२	बदीमोचन			३५१	
२२३	बद्रीयात्रा कथा	१८८८ वि०		२२४	
२२४	बरवै	.	१८७३ वि०	२६०ख	
२२५	बराटिका प्रश्न			४४०	
२२६	बाँदाकली		१९१४ वि०	४७७	
२२७	बारहमासा	.		४३९	
२२८	बारहमासा		१९२२ वि०	१८०	
२२९.	बारामासा	.		२८२	
२३०	बालपुराण	..	१९५६ वि०	२३९ग	
२३१	बालबोध			१२५घ	
२३२	बिसातिन लीला		१८८४ वि०	४२०ख	
२३३	बिहारी सतसई की टीका	..		४७८	
२३४	बीजमत्र	..	१८७९ वि०	४७९	
२३५.	बीतक	..	.	२१८ग	
२३६	ब्रजलीला	..	.	१२ख	

क्र. सं.	ग्रंथों के नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
२३७.	ब्रह्ममाला और योगसिंधु		१७७५ वि०	६५	
२३८	ब्रह्मविचार या शिष्य सवाल			४८०	
२३९.	ब्रजविहारलीला	.	१९०१ वि०	४३८	
२४०.	ब्रह्मरहस्य			३२०	
२४१	ब्रह्मवादि या ब्रह्मवाद		१९३४ वि०	३१२क, ख	
२४२	भँवरगुजार		१८९४ वि०	२५०घ	
२४३.	भक्तउक्त कृष्ण आज्ञा	१७७१ वि०		१५६	
२४४.	भक्तविलास	१९११ वि०	१९१७ वि०	३९८	
२४५	भक्तिबावनी	१८४१ वि०	१८७१ वि०	१२३क	
२४६.	भक्तिमजरी	.		६७	
२४७	भक्तिविनोद			२६९	
२४८.	भक्तिविलास		१९३५ वि०	२२६ग	
२४९	भगवतगीता		.	२९४	
२५०.	भगवती स्तुति			३१ख	
२५१	भजन	१९३० वि०	१९८९ वि०	३९५	
२५२	भद्रबाहु चरित्र	.	१८७४ वि०	४८१	
२५३	भद्रबाहु चरित्र	१७८३ वि०	१८९१ वि०	३४	
२५४	भागवत एकादश स्कध		१९०१ वि०	४८२	
२५५.	भागवत की अनुक्रमनी		१९२१ वि०	२३९घ	
२५६	भागवत दशम स्कध			३३१क, ख	
२५७	भागवत दशम स्कध या गिरिधारी काव्य		१९११ वि०	६६ख, ग, घ	
२५८	भारतवर्षीय वृतात प्रकाश	१९२६ वि०	१९२६ वि०	२७४	
२५९	भावरसामृत	१८३४ वि०	१९०१ वि०	७१	
२६०	भाषापचपक्षी			४२१	
२६१	भाषा सम्यक्त कौमुदी	१७२२ वि०	१९०४ वि०	३३	
२६२	भूगोल पुराण	१८४९ वि०		४८३	
२६३	भ्रं ग्रथलीला			१९५	
२६४	मगलगारी (?)			२५९	
२६५.	मगलगीत और शब्दावली		१९८८ वि०	१८४	
२६६	मयूरध्वज चरित्र (मोरध्वज चरित्र)		१७८४ वि०	२८८ज	
२६७	मसल विवेक		१९९२ वि०	४३२क	
२६८	मसला			२८७ग	
२६९	महाभारत		१७८१ वि०	१९०	
२७०	महाभारत विराटपर्व		१८७५ वि०	४४५	
२७१	महाभारत विराट पर्व			८२	
२७२	मॉंझ	..	१९४९ वि०	३१०	
२७३	माला प्रस्तार, वर्णमर्कटी			२६१ङ	
२७४	माधवानल कामकदला			४८४	
२७५	मामकीमा		१९०६ वि०	१६५ख	
२७६	मारकडेयपुराण	.	१९५६ वि०	२३९ङ	
२७७	मोहमुग्दर		१९३९ वि०	१४४	

क्र. स.	ग्रथो के नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका सख्या	विशेष
२७८.	यशोधर चरित्र या जशोधर चरित्र				
२७९	युधिष्ठिर यज्ञ	१६७० वि०	..	१७८ग	
२८०	यागरत्नाकर	.	१९२९ वि०	१९	
२८१	यागसा० (?योगशास्त्र)		१९०७ वि०	४८५	
२८२.	रघुराजविनोद			३४९	
		१९००–४१ वि०	१९५६ वि०	२०९	
२८३	रतनमालसत				
२८४	रतिरहस्य		.	१६३ग	
२८५	रत्नकरड (वचनिकासहित)	१९३१ वि०		३६९	
२८६.	रत्नसाठिका			१९८	
२८७	रमल		.	३४५	
२८८	रमलप्रकाश	११२१ हि०		२३४	
२८९	रमलप्रकाश		१८१७ वि०	३२१	
२९०	रसरत्न		१९४८ वि०	३३८	
२९१	रससागर			४०७	
२९२	रागवारामास का मगल	१८६६ वि०		३८९ख	
२९३	रागमाला			५३	
२९४	रागमाला			४८६	
२९५	राजनीति शतक भाषा कुडलिया या अमरराज तिलक	१९३१ वि०	१९३२ वि०	१३८ ४१	ग्रथ मुद्रित है
२९६	राधासुधानिधि काव्य टीका				
२९७	रामककहरा		१९५२ वि०	४८७	
२९८	रामगीता			२०७	
२९९	रामगीता या ब्रह्म जिज्ञासा	१८८५ वि०	१९२१ वि०	१८३ट	
३००	रामचरित्र कवित्तबध	..	१८८७ वि०	४८८	
३०१	रामजेवनार (?)		१९११ वि०	४८९	
३०२	रामतत्व बोधनी टीका (विनैपत्रिका टीका)		१९३५ वि०	२ ३८६	
३०३	रामव्याह कवित्त				
३०४	रामरत्नसार सग्रह		१९१५ वि०	३५८	
३०५	रामरसिक रागमाला		१९५० वि०	३२७च	
३०६	रामशब्दावली		.	७८	
३०७	रामायण राम लघु चरित्र			३४२	
३०८	रामाश्वमेध (पाताल खड)	१८८७ वि०	१९११ वि०	१६०	
३०९	रासपचाध्यायी	१८४९ वि०		२२५	
३१०	लीलारत्नचूडामणि			४९०	
३११.	वशविभूषण		१९३१ वि०	३४८	
३१२	वर्षप्रदीप	१८६९ वि०		८१	
३१३	वाणियाँ	१९३१ वि०	१९३१ वि०	२००	
३१४	वाणी या सबदी	१८१२ वि०	१८८७ वि०	१०५ठ	
३१५	वानी			२०५ड	
३१६.	वानी		१९३४ वि०	१५९क	
		..	१९०७ वि०	२७९	

क्र. सं	ग्रंथों के नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
३१७	बानी		.	४२७क	
३१८.	बानी (दोहावली, शब्दावली)		१९९० वि०	४०९क	
३१९.	बानी या शब्द	..	१९५० वि०	१०क	
३२०.	वास्तु प्रदीप	१९१७ वि०	१९१७ वि०	४९१	
३२१	वास्तुविद्या भाषार्थ		.	४९२	
३२२	विक्रमनाटक		.	३१८	
३२३	विदग्ध मुखमडन			१७१	
३२४	विद्याविलास	१९०३ वि०	१९१३ वि०	३७८छ	
३२५	विभैविभूति	.	१७८४ वि०	२८८झ	
३२६.	विराह चद्रिका		१७७४ वि०	४०८	
३२७	विवेकमाल	१८९८ वि०	१९४३ वि०	३९०ग	
३२८	विवेक वैराग्य दशक	.		२४९	
३२९	विवेकसागर		१८३३ वि०	४९३	
३३०	विवेकसागर या सुखसागर	१८४४ वि०	१९४१ वि०	४१६	
३३१	विरागपद	.		३६८	
३३२	विष्णु सहस्रनाम			४३४	
३३३	वृतरत्नावली		१९०५ वि०	९७	
३३४	वैत समनवैज का		.	४०२	
३३५	वैद्यकल्प			१९६क	
३३६	वैद्यकभवन			३२९	
३३७	वैद्यक विलास			९४	
३३८	वैद्यदर्पन			१६१	
३३९	वैद्य प्रकाश	१९१७ वि०	१९१७ वि०	३०	
३४०	वैद्य शिरोमणि	१९०८ वि०		३२४	
३४१	वैराग बारहमासा			११३	
३४२	वैराग्य सागर	१७८८ वि०	१९३१ वि०	१८६ग	
३४३	वैष्णवविलास		.	६०	
३४४	व्यवहारवाद		१९०४ वि०	२२१	
३४५	व्रतविधान रासो	१७६७ वि०		१६९	
३४६.	शंकर कवच		१८३५ वि०	४९४	
३४७	शकुन ज्योतिष ग्रंथ		१८९० वि०	४४२	
३४८	शकुन विचार	१८२७ वि०		४१२	
३४९	शत्रुसंहार			१३५क	
३५०	शनिश्चर की कथा	१७२६ वि०	१९१४ वि०	३७०	
३५१	शब्द			२०५च	
३५२	शब्द		१९७५ वि०	२०४ड	
३५३	शब्द		१८७१ वि०	१२३ग	
३५४	शब्दगुजार		१८८४ वि०	२५०ड	
३५५	शब्दप्रकाश			१२०क	
३५६	शब्द सुरति सवाद			४९५	
३५७	शालिग्राम माहात्म्य			१४८	
३५८	शिखनख			४२८	
३५९	शिवतत्व प्रकाश	१९०७ वि०	१९३८ वि०	३७८ज, झ	

क्र. सं.	ग्रंथों के नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
३६०.	शीतलाष्टक	..	..	३१ग	
३६१.	शृंगार शतक	..	..	२६२	
३६२.	श्रीकृष्णखंड	१९३७ वि०	१९३९ वि०	३७१	
३६३.	श्रीकृष्ण ग्वालिनी को झगरा		१९०७ वि०	३९६	
३६४.	श्रीपाल चरित्र	१६४९ वि०	१८०७ वि०	२०२क, ख, ग, घ, ङ	
३६५.	श्रीपाल विनोद या श्रीपाल चरित्र	१७५० वि०	१८८७ वि०	३६२ग, घ	
३६६	श्रीप्रकास किताब की प्रकरन			२१८घ	
३६७	श्रीराम को परमधाम वर्णन		१९२० वि०	२५५	
३६८	षटपद के भेद		.	४९६	
३६९	सक्षेप तिमिर नाशक			४३	
३७०	सतवाणी (?)		.	३८५	
३७१	सतसहस्रनाम		१२७३ हि० (?)	३७	
३७२	सखीसमाज नाटक		१७६० वि०	३६	
३७३	सत्यप्रबध	१८४४ वि०	१८८० वि०	६३	
३७४	सप्तव्यसन		१९३७ वि०	४९७	
३७५.	समरसार		१८४३ वि०	३९४क, ख	
३७६	समरसार	१८५० वि०	१८६५ वि०	४३०	
३७७	समरसार भाषा तिलक		१८५५ वि० (?)	३६४	
३७८	समैहेत ग्रथ	१८७७ वि० (?)	१९५५ वि०	३१२ग	
३७९	सरजूशतक		.	२१४ख	
३८०	सर्वग्रथमत		१९३३ वि०	४२३	
३८१	सर्वग्रथोक्ति		.	१९६ख	
३८२	सर्वार्थपुराण	१८४४ वि०		२३९च	
३८३.	सहस्रनाम पाठ	१९०५ वि०	१९४० वि०	१२२	
३८४	साखी	.		१२०ख	
३८५	साखी			३००	
३८६	साखी, शब्द (?)			२७७ग	
३८७	साठिका		१८१७ वि०	४९८	
३८८	सामुद्रिक		.	३९९	
३८९.	सामुद्रिक		१९०४ वि०	३२३	
३९०	सारगधर वैद्यक		१८४८ वि०	४९९	
३९१	सारगधर सुधाकर (टीका)	१९२१ वि०		२४५क, ख	
३९२	सारभेद		१९३५ वि०	२४ङ	
३९३	सारसग्रह		१९४५	२१५	
३९४	सावर (सषाहुली)		१७६३ वि०	५००	
३९५	सिद्धातपदावली	.	१९०७ वि०	३९ख	
३९६	सियाराम गुणानुवाद	१८१४ वि०		११	
३९७	सीतावनवास कथा		.	५०१	

क्र. सं.	ग्रंथों के नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
३६८.	सूकुमाल चरित्र	१६१८ वि०	१६६७ वि०	१८८	
३९९.	सूखदेवपुरान	.	१६०६ वि०	२३६	
४००.	सुख सनास	१८४७ वि०		१६६ङ	
४०१	सुखसागर		१७८४ वि०	२८८ञ	
४०२.	सुदर्शन चरित्र	१६६३ वि०		१७८क, ख	
४०३.	सुदामा चरित्र	१७८७ वि०	..	१७३	
४०४.	सुदामा चरित्र	१८५८ वि०	.	२२७	
४०५	सुदामा चरित्र		१६६५ वि०	६६क	
४०६	सुद्रष्ट तरंगिनी	१८३८ वि०	१६७० वि०	४११	
४०७	सुमेर सिखिर माहात्म्य	१८४१ वि०	१८६१ वि०	७०	
४०८	सृष्टि की उत्पत्ति (?)	..	.	७२	
४०९	सेल्हा			३०६ज	
४१०	सोरठे			२०५छ	
४११	स्वप्नभेद	१८९९ वि०		५	
४१२	स्वप्नविचार		१८२९ वि०	२०८	
४१३	स्वरविलास			३९२	
४१४	हंसवार स्वरोदय		१८६३ वि०	५०२	
४१५	हजारा			१४६	
४१६	हनुमानछबीसी			२८३	
४१७	हनुमान जन्म		१६१८ वि०	४१५	
४१८.	हरिगुर स्तोत्र		१८७१ वि०	१२३घ	
४१९.	हरिजस			६६	
४२०	हरिवंश	.	..	५०३	
४२१	हरिवंश पुराण (जैन)			४३७	
४२२	हितहरिवंश जस और मंगल			४२४	
४२३	हितोपदेश टीका (सुहृदभेद)		१८०२ वि०	५०४	
४२४	हृदय प्रकाश		१६३८ वि०	३४०	
४२५	होरी		१८८२ वि०	३०८	
४२६.	होली		..	२०५ज	

— ०० —

परिशिष्ट—४ग

संग्रह ग्रंथो में आए नवीन कवियो की सूची

सवत् २००४–२००६ वि० (सन् १९४७–४९ ई०)

क्र स.	कवियो के नाम	विशेष
१	अनत	
२	अनन्यदास	
३	आनद	
४.	आसकरन	
५.	ईसर सुमति	
६	एक साध	
७	एदिल	
८	कवि पंम	
९	कवि बेग	
१०	कवि राम	
११.	कविलाल	नरहरि महापात्र का वशज
१२	कामताप्रसाद	,, ,, ,,
१३.	कासिम	
१४	कृष्ण	
१५	गगादास	सत
१६.	गुलाब	
१७	गोपाल	
१८.	जगतप्रसिद्ध (प्रसिद्ध)	इन्होने जहाँगीर के उस फर्मान का उल्लेख किया है, जिसमे वैष्णवो को माला, कठी, तिलक आदि न रखने का आदेश था।
१९	जच्चा (?)	
२०	जुगराज	
२१	ठाकुरप्रसाद	नरहरि महापात्र के वशज

क्र स.	ग्रथो के नाम	विशेष
२२	ताराकवि	
२३.	दयाल	नरहरि महापात्र के वशज
२४.	नदन	
२५	नवलसुजान	दाराशिकोह के आश्रित
२६	नागर	
२७.	बजरग	नरहरि महापात्र का वशज
२८	बलवतदास	
२९	भगतराम	
३०	भगवान हित रामराय	
३१	भगिवत	
३२	भवानीदास	सत
३३	भौन	नरहरि महापात्र के वशज
३४	मुकुद माधव	
३५	रामनाथ	नरहरि महापात्र के वशज
३६	रामनाथ	सत
३७	रामसखी	
३८	ललन या लालन	
३९	लाल स्वामी	
४०	विजयराम	
४१	विश्वनाथ	नरहरि महापात्र के वशज
४२	सकर	,, ,, ,,

— ०० —

पंचम परिशिष्ट

ग्रंथकार और उनके आश्रयदाताओ की नामावली

परिशिष्ट—५

ग्रंथकार और उनके आश्रयदाताओ की सूची

सवत् २००४–२००६ वि० (सन १९४७–४९ ई०)

क्रम स०	रिपोर्ट स०	ग्रथकार का नाम	आश्रयदाता का नाम	विशेष
१	१	अक्षर अनन्य	१. दतिया नरेश पृथ्वीसिह (स० १७६६ के लगभग) २ महाराज छत्रसाल ओडछा नरेश (स० १७०६ से १७८८ तक वर्तमान)	
२	६	अयोध्याप्रसाद वाजपेयी 'औध'	१ बौडी के राजा हरिदत्त सिंह (बहराइच) २ राजा सुदर्शन सिंह, चदापुर (रायबरेली) ३ राजा दिग्विजय सिंह, बलरामपुर (गोडा) ४ पाडेय कृष्णदत्त जी, गोडा ५ राव मुनीश्वर बख्श सिह (रियासत मल्लॉपुर)	
३	१४	आनदघन या घनानद	बादशाह मुहम्मदशाह	
४	१७	इक्ष्यागिरि	राज इलाहीखान सूबा (कूडा, जहानाबाद)	
५	१८	ईश्वरदास (इसरदास)	शाह सिकदर, दिल्ली (१५४६–७४ वि०)	
६	२०	ईसबीखॉ नबाब	राजा छत्रसिह (नरवर, ग्वालियर)	
७	२२	उदोत कवि	पूरनमल्ल (विहार प्रात के मत्री सथमलराम के पुत्र)	औरगजेब के समय वर्तमान
८	२३	ऋषिनाथ	दोहाराम के पुत्र रघुबर और भानजे सदानद	दोहाराम बनारस के राजा वरिवड सिंह के दीवान थे और जाति के कायस्थ थे।
९	२५	कमलनयन (कमलनैन)	राजा दलेलसिह (मैनपुरी)	
१०	२६	करनाराम	पडरौना नरेश राजा रमनी-राय (गोरखपुर)	
११	३३	कासीदास	जगतराइ (? गुहाणा राजस्थान निवासी)	औरगजेब का समय

क्रम सं०	रिपोर्ट स०	ग्रंथकार का नाम	आश्रयदाता का नाम	विशेष
१२.	४१	कृष्ण चैतन्यदेव 'निजजू'	बाबू हरखचद, बनारस (राजा शिवप्रसाद सितारे-हिंद के पिता)	
१३.	५७	गजन कवि	कमरुद्दीन खाँ (मीर मुहम्मद फाजिल) (दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह का वजीर)	
१४.	५६	गणेश कवि	राज राजमनि (मलावाँ, हरदोई)	
१५.	६०	गणेददत्त मिश्र	द्वारिकाप्रसाद पाडेय जमीदार (लरवाही, परगना, बलरामपुर, गोडा)	
१६.	६२	गदाधर त्रिपाठी	रगीलाल माथुर (?)	
१७	६३	गदाधर शुक्ल	रामसिंह ठाकुर (? पारा निवासी)	
१८	७५	गोकुल कायस्थ	राजा दिग्विजय सिंह, बलरामपुर, गोडा राजा कृष्णदत्त (? गोडा)	
१९	७७	गोपकवि	ओडछा के राजा पृथ्वीसिंह	
२०	८०	गोविंद कवि	सूबेदार कायम खाँ (? जहानाबाद का सूबेदार, वगस का पुत्र)	
२१	८१	गोविंद कवि	पढेरी (?) के राजा काशीराम	
२२.	९०	चदन कवि	राजा केशरीसिंह (गौड)	
२३	९२	चतुर्भुज	बादशाह अकबर	
२४	१०६	जगतसिंह	राजा दिग्विजसिंह विसेन (राज्य भिनगा)	
२५	१०८	जगन्नाथ या जनजगन्नाथ	सम्राट् अकबर	
२६.	१२४	जसुराम	राजा जीतराय (?) जगजीत या जुगजीत (?)	
२७	१३२	जिनदास पाडेय	दीपासाहु (? टोडरशाह के पुत्र)	
२८	१३५	जोखूराम द्विज सूरि	छत्रपाल सिंह नृप (?)	
२९	१३८	तारानाथ	जयपुराधीश महाराजा राम सिंह	
३०.	१५२	थानकवि	राजा दलेलसिंह चउरा (वैसवारा)	
३१	१५३	दयानिधि	राजा अचलसिंह डौडिया खेडा (अवध)	
३२	१५७	दीनदयाल गिरि	महाराज मानसिंह 'द्विजदेव' (अयोध्यानरेश)	
३३.	१६२	दुर्गाप्रसाद या दुर्गादास	प० राजाराम (?)	

क्रम सं०	रिपोर्ट सं०	ग्रंथकार का नाम	आश्रयदाता का नाम	विशेष
३४	१७३	धिरजोराम	बिष्णुसिंह राजा (?)	
३५	१८५	नवीन कवि	महाराज जसवत सिंह और उनके पुत्र देवेंद्र सिंह (नाभा नरेश)	
३६.	१९३	निधान	सैयद अकबर अली	
३७.	२०९	पुरदर कवि	राजा रघुराजसिंह, रीवा	
३८	२१४	प्रयागदत्त	जदुनाथसिंह (?)	
३९.	२१८	स्वा० प्राणनाथ	महाराज छत्रसाल (पन्ना नरेश)	
४०.	२२०	प्रानसुख	राजा विक्रमादित्य (ओडछा)	
४१	२२३	फतेहसिंह	महाराज सभासिंह (पन्ना)	
४२	२३०	बलदेवदास जौहरी	राजा कीरतिसिंह (धौलपुर नरेश)	
४३.	२३१	बलदेव द्विज	राजा दलथभन सिंह (हथिया नरेश)	
४४.	२४३	बेनी कवि	१ खूबचंद कायस्थ (बैसवाडा) २ राजा टिकैतराय (डलमऊ, रायबरेली)	
४५	२४४	बैजनाथ	बाबू सीताराम (बादशाहपुर ?)	
४६	२५४	भवानीचरण	राजा सर्वजीतसिंह (?)	
४७	२७४	मगनलाल पडित	मिस्टर हैडफोर्ड, डाइरेक्टर पब्लिक इस्ट्रक्शन (प्रात अवध)	
४८	२७८	मदनगोपाल	राजा अर्जुनसिंह (बलरामपुर, गोडा)	
४९	२८५	मनोहरदास	महाराज मानसिंह जोधपुर नरेश	
५०.	२९१	महादेव या महादेवसिंह	श्रीकृष्ण (?)	
५१	२९३	मातादीन शुक्ल	बाबू अजीतसिंह (?)	
५२	३०१	मुकुददास या जनमुकुद	जहाँगीर बादशाह	
५३	३०३.	मुरलीधर	मुहम्मदशाह बादशाह	
५४	३०४	मुरलीधर	फतेहअली (?)	
५५	३१७	रघुनाथ कवि	१ बख्तावर सिंह (?) २ शारदाप्रतापराजा (?)	
५६.	३४९	रामेश्वरभट्ट	बादशाह गयासुद्दीन	
५७	३५५	नेवजीलाल दीक्षित 'लाल'	राजा विक्रमशाही (?)	
५८	३६०	वशीधर	ओडछानरेश महाराज छत्रसाल	
५९.	३६१	वशीधर पडित	डाइरेक्टर पब्लिक इसट्रक्शन, युक्त प्रात	
६०.	३६३	विप्र (?)	जहाँगीर बादशाह *	

क्रम सं०	रिपोर्ट सं०	ग्रंथकार का नाम	आश्रयदाता का नाम	विशेष
६१.	३७७	शम्भुनाथ त्रिपाठी	राव रघुनाथ सिंह बैसवाडा (रायबरेली)	
६२	३७८	शम्भुनाथ द्विज	राजा भैरोबक्स सिंह (ससारपुर ग्राम बस्ती)	
६३	३८९	शिवराज महापात्र	राजा बैरिसाल (रामपुर)	
६४	४०३	समन या समनेश बख्शी	राजा विश्वनाथ सिंह (रीवा नरेश)	
६५	४०६	सागर कवि	राजा जोरावर सिंह (मालवानरेश)	
६६	४१३	सीताराम	राजा शकरसिंह (राज्य तिलोई, रायबरेली)	
६७	४१९	सुवंश शुक्ल	राजा उमरावसिंह और सूबासिंह (? सीतापुर अवध के राजा)	
६८	४२२	सेनापति	गुरु गोविंदसिंह	
६९	४२३	सेनापति त्रिवेदी	राजा वरिवड सिंह (? बनारस)	
७०.	४३१	हरिचरण दास	१ राजा विश्वसेन (नवा-पुर, बिहार) २ राजकुमार विरदसिंह (कृष्णगढ)	

— ०० —

ग्रंथों की अनुक्रमणिका

परिशिष्ट १, २, ३

संवत् २००४–२००६ (सन् १९४७–४९)

ग्रंथों की अनुक्रमणिका

ग्रंथो के आगे दिए हुए अंक परिशिष्ट १, २ और ३ मे आई क्रम संख्याएँ हैं।

— o —

ग्रंथकारों के नामों की अनुक्रमणिका

परिशिष्ट १, २

सं० २००४–२००६ वि० (सन् १९४७-४९ ई०)

ग्रंथकारों के नामों की अनुक्रमणिका

ग्रथकारो के आगे लिखे हुए अक रिपोर्ट के परिशिष्ट १ और २ मे दी हुई क्रम संख्याएँ है।

— ० —